१४ रानियों का [illegible] पर पृथ्वीराज का कूच करना। १९९३
१५ पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामंतों की वर्णन। ,,
१६ डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का मर्दन १९९४ करवा कर यमुनाजी में स्नान करने आना। ,,
१७ राजा का स्नान करके गोदान करना। ,,
१८ कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवाकर राजा का सब सामन्तों सहित भोजन करने बैठना। १९९५
१९ राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन। ,,
२० परस की विधि और जिनसों का वर्णन १९९६
२१ पकवान और मिठाई। ,,
२२ अचार वर्णन। १९९७
२३ चरवन वर्णन। ,,
२४ तरकारियां और गोरस का वर्णन। ,,
२५ दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन। १९९८
२६ पछावर का परस का वर्णन। १९९९
पूजदिन चलते समय राजा का
२९ धीकरने की तैयारी और प्रोहित
३० जाको मना करना। २०००
में सुधिकार के लिये तैयारी का गुप्त [illegible] २००१
३१ सतमी [illegible] मान बन की शोभा और देवी के [illegible]ओं का वर्णन। ,,
दान कर[illegible] जानवरों का कौतुक। २००२
३२ [illegible] जानवरों की स्वच्छन्दता और [illegible] शिकार होने का वर्णन। २००३
३२ नेतराव का सिंह को मारना। २००४
३३ बलिभद्र का सिंहनी को मारना। ,,
३४ राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना। ,,
का सूचना देना।
३६ राजा का सूचना पाकर सिंह की में चल पड़ना।
३७ होनहार का प्रभूति वर्णन।
३८ सिंह के धोखे से कन्दरा में धुआं करवाया जाना।
३९ धुआं होने पर कन्दरा के अन्दर सिंह मुनि को कष्ट होना और उसका [illegible] कर बाहर आना।
४० ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना।
४१ ऋषि का चुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।
४२ ऋषि का शाप सुनकर पृथ्वीराज का भयभीत होना।
४३ कविचन्द का ऋषि के पैरों पर गिर कर क्षमा मांगना।
४४ कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल में अपराध होजाय तो महात्मा लोग सहसा शाप नहीं देते।
४५ कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए। २०१
४६ ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।
४७ ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रयोजन करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा। ,,
४८ पुन ऋषि वचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे। २०११
४९ ऋषि के वचन सुनकर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना। ,,
५० पृथ्वीराज का अन्तर प्रबोध ज्ञान। ,,
५१ पृथ्वीराज का ऋषि के पैरों पड़ना और

वचन । ,,
न बचन । २०१२
न बचन । ,,
ने बचन । ,,
वि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । २०१३
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । ,,
७ मुनि बचन । २०१४
८ कवि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कवि बचन । ,,
मुनि बचन । ,,
कविचन्द और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना । ,,
७३ उक्त शाप का संवाद पाकर रानी सयोगिता का दुःख करना । २०१५
७४ डेरों से चलकर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलों में प्रवेश करना । ,,

(६४) धीरपुण्डीर नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ २०१७ से २१०२ तक)

१ सयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामन्त मडली के बल की परीक्षा करने की इच्छा करना । २०१७
२ पृथ्वीराज का कन्नोज से भागकर आने वालों से कहना कि सामंतों की परीक्षा के लिये जैतखम्भ बनवाया जाय । ,,
३ निगमबोध (तीर्थ) स्थान पर जैतखम्भ का बनवाया जाना निश्चय होना । २०
४ श्रावण मास वर्णन । ,,
५ नवदुर्गा में सामन्तों के पुजापाठ और उनके उत्साह का वर्णन । ,,
६ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को जैतखंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना । २०१
७ पृथ्वीराज का जैतखंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना । ,,
८ चन्द पुण्डीर के पुत्र धीर पुण्डीर का जालधरी देवी की उपासना करना । ,,
९ पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीरपुण्डीर का वर मागना । २०२
१० देवी का वरदान । २०२
११ धीरपुंडीर का कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना । ,,
१२ जैतखम का वर्णन और सामन्त नित्य प्रति अभ्यास करना ।
१३ धीर का जैतखम भेदने के लि
१४ धीरपुंडीर का अवस्था और वर्णन ।
१५ अश्व वर्णन ।
१६ धीर का खंभ के पास पहु
१७ पृथ्वीराज का ससैन्य जै और धीर का आना ।
१८ पृथ्वीराज का आज्ञा देना और का जैत खम भेदना । ,,
१९ पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना । २०२
२० राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना । ,,

२१ धीर का मस्तक नवाकर राजाना को स्वीकार करना । २०२४
२२ चामडराय का कहना कि धीर क्या लडकपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो,दोनों पच का बल तो तौलो।२०२५
२३ धीर का कहना कि मैंने जो कहा है वही कहूंगा । ,,
२४ धीर की वीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना । २०२६
२५ एक महीने पाच दिन में यह समाचार उडता हुआ शहाबुद्दीनके कानतक पहुचा । ,,
२६ जैत प्रमार और चामडराय के मन में धीर की ओर से डर पैदा होना । ,,
२७ अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिख कर मचना देना कि धीर सपरिवार जालधरी देवी की पूजा करने जायगा।२०२८
२८ आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना । ,,
२९ धीर का व्रत से पैदल चलना । २०२९
३० जालन्धरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकडने आ रहे हैं । ,,
३१ सप्तमी शुक्रवार को धीर का जाल धरी देवी के स्थान पर पहुँचकर पूजन और दान करना । ,,
३२ जैत प्रमार और हाढ़ा हम्मीर की शाह प्रति सूचना । २०३०
३३ शाह के धीर पकड लाने का बीडा रखना और गध्यरा लोगों का बीड़ा उठाना । ,,
३४ उक्त गध्यरों का योगी के भेष में जाल न्धरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना । ,,
३५ छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मागना । २०३१
३६ गध्यर लोगों का धीर को घेर के गजनी ले चलना । ,,
३७ धीर का गजनी पहुचना और नगर निवासियों का को तुक से उसे देखना
३८ राजद्वार पर दर्शकों की भारीभीड होना और गध्यर सरदार का शाह धीर की गिरफ्तारी का हाल ब करना ।
३९ धीर के पकडे जाने का समाचार चारों ओर फैलना । धीर के पचास ' वे का अधीर होकर अन्न जल छोड देना
४० बेजल पचास का स्वप्न देखना ।
४१ तत्तारखा का धीर से कहना कि यह क्या प्रतिज्ञा की ।
४२ शाह का सुपना ।
४३ दर्शकों का विचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है ।
४४ कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखने वाला बडा है ।
४५ एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा ।
४६ कवि का कहना कि मरनेवाले को कोइ बचा नहीं सकता और इस विषय जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण ।
४७ शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करनेवाला क्षत्री सच्चा नहीं है।
४८ धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है ।
४९ बादशाह बचन ।
५० धीरपुडीर बचन ।
५१ बादशाह बचन ।
५२ धीरपुडीर बचन ।
५३ बादशाह बचन ।
५४ धीरपुडीर बचन ।
५५ बादशाह बचन ।
५६ धीरपुडीर बचन ।
५७ बादशाह बचन ।
५८ धीरपुडीर बचन ।
५९ बादशाह बचन ।

ारपुडीर बचन । २०४०
दशाह बचन । ,,
ारपुडीर बचन । ,,
दशाह बचन । २०४१
ारपुडीर बचन । ,,
दशाह बचन । ,,
ीरपुडीर बचन । २०४२
दशाह बचन । ,,
ारपुंडीर बचन । ,,
दशाह बचन । ,,
ारपुंडीर बचन । २०४३
दशाह बचन । ,,
ारपुडीर बचन । ,,
दशाह बचन । २०४४
ारपुंडीर बचन । ,,
दशाह बचन । २०४५
की बातें सुनकर तातार खां का
लवार की मूठ पर हाथ रखना । ,,
त्तार खां बचन । ,,
ारपुंडीर बचन । २०४६
त्तारखां बचन । ,,
ीरपुंडीर बचन । ,,
त्तारखां का कुपित होकर धीर पर
लवार उठाना और शाह का हाथ धर
ना । ,,
ीरपुंडीर बचन । २०४७
ादशाह का धीर के बल की परीक्षा
के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का
वृक्षा उखड़ना । ,,
शाह का धीर से कहना कि मांग जो
मांगना हो । ,,
धीर का कहना कि मुझे किसी बात
की भूख नहीं केवल तुझे पकड़ना चा-
हता हू । २०४८
बादशाह बचन । ,,
धीरपुडीर बचन । ,,

८८ शाह का धीर को शिरोपाव और निज
का घोड़ा देना । २०१
८९ धीर का घोड़े पर चढ़कर कहना कि
इसी घोड़े पर से तुझे पकड़ूंगा ।
९० शाह का कहना कि तू चल मैं भी तेरे
पीछे आया । ,,
९१ धीरपुडीर बचन । ,,
९२ धीरपुंडीर को पान देकर बिदा कर
के बादशाह का देश देश को परवाने
भेजकर सहायक बुलवाना और चढ़ाई
की तैयारी करना । २०१
९३ शाह की सुसज्जित सेना की चैत्रमास
से उपमा वर्णन । ,,
९४ शाही सेना का आंतक वर्णन । २०५
९५ शाह को कूच के समय अशकुन होना
और तत्तार खां का कूच बन्द करने
को कहना । ,,
९६ शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब
जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या? २०५
९७ शाह का मीरा शाह के समय की घटना
का प्रमाण देना एवं मीराशाह का
सम्बाद वर्णन । ,,
९८ मुसल्मानी लश्कर का सौदागरों के
भेष में अजमेर आना । २०५
९९ उक्त सबाद सुनकर शाह का कहना
कि दिल को मजबूत करो और चलो । २०५
१०० तत्तार का मोरचेबन्दी से आगे कुच
करना और एक पड़ाव के फासले से
बराबर धीर के पीछे पीछे चलना । २०५
१०१ धीरपुडीर के वापिस आने की खबर
दिल्ली में होना । दर्शकों की भीड़ होना
और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न
होना । ,,
१०२ धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन
कर रानी पुडीरनी और इछनी का
उत्सव मनाना । २०५

१०३ धीर का पृथ्वीराज से मिलाप। २०५६
१०४ धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफ्तार कैसे आर क्यों हुआ। ,,
१०५ चामण्डराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना। २०५७
१०६ धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बात कहना। ,,
१०७ धीर का भरे दरबार में पुन प्रतिज्ञा करना। ,,
१०८ चामड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि नहीं कहूंगा जो कहा है। २०५८
१०९ चामडराय का वचन। ,,
११० गीरपुडीर का वचन। ,,
१११ धीर का घर जाना और सब कुटुम्बियों का उससे सहर्ष मिलना। २०५९
११२ धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रकट करना। ,,
११३ धीर का अपना वातक कहना और सबका प्रबोध करना। ,,
११४ धीर के कुटुम्बियों के वचन। २०६०
११५ धीर पुडीर का वचन। ,,
११६ धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना, खडाइयों का आना और धीर का घोडे मोल लेना। २०६१
११७ चामडराय का सौदागरों को धीर पर घात करने को उसकाना और सौदागरों को अपने में मन्त्र विचारना। ,,
११८ ईसफमिया का धीर के दरबार में जाना दरबार का वर्णन। २०६२
११९ धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना। ,,
१२० धीर का नित्य कृत्य वर्णन। ,,
१२१ धीर पुडीर के कलोल का वर्णन। २०६३
१२२ शाह का सिंधुतट पर पहुचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना। ,,
१२३ पुडीर वशी योद्धाओं का वर्णन। ,,
१२४ आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामडराय का आगे बढना। २०६४
१२५ सुलतान के आने की खबर होना और सब का सलाह करना कि अब क्या करना चाहिये। ,,
१२६ कविचन्द का चामडराय के घर जाकर उससे बेड़ी उतार कर युद्ध में चलने के लिये कहना और चामड का कविचन्द की बात मान लेना। २०६५
१२७ पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामड को पुन बेडी पहनवाना। २०६
१२८ शाही सेना की सजावट वर्णन। ,,
१२९ पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रचकर चढाई करना। २०६
१३० व्यूह वर्णन। ,,
१३१ चाहुआन सेना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का क्रम वर्णन। २०६८
१३२ मुसल्मानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विदार देना। २०६९
१३३ हाथियों का विचलाकर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना। २०७०
१३४ हाथियों के विगड जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मारकाट करना। ,,
१३५ युद्ध वर्णन। ,,
१३६ शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही। २०७१
१३७ धीर के भाई और कविचन्द के पुत्र का मारा जाना। २०७२
१३८ सन्ध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना। ,,
१३९ दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरम्भ होना। ,,

१४० युद्ध वर्णन । राजपूत सेना का जोर पकड़ना और मुसल्मान सेना का मनहार होना । २०७३
१४१ धीर पुंडीर का धावा करना । २०७५
१४२ धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना । २०७६
१४३ महादेव का पारवती को गजमुक्ता देकर कहना की वीर धीर को धन्य है । ,,
१४४ पारवती का धीर के विषय में पूछना । ,,
१४५ धीर की वीरता का वर्णन । ,,
१४६ पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते । २०७७
१४७ शिव का वचन कि क्षत्रियों का यह कुलधर्म है । ,,
१४८ जीवन मरन की व्याख्या । ,,
१४९ आत्मा की व्याख्या । ,,
१५० संसार मे कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है । २०७८
१५१ शूर वीरों की बरिता और उनका तुमल युद्ध वर्णन । ,,
१५२ धीर की विलक्षण हस्तलाघवता । ,,
१५३ शाहबुद्दीन का घोड़ा छोड़ कर हाथी पर सवार होना । २०७९
४ धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पड़ना और धीर का शाह का पकड़ लेना । ,,
५५ धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना । २०८०
१५६ शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना । ,,
१५७ मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना । ,,
१५८ पुंडीर की पैज का पूरा होना । २०८१
१५९ पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई । ,,
१६० शाही सेना का सब रखत छोड़कर भागना । २०८२
१६१ शहाबुद्दीन के खवास सेरन का घर पहुंचना और उसकी स्त्री का उसे धिक्कारना । २०८२
१६२ सेरन का उत्तर देना कि मैं तेरे मारे लौट आया हूं अच्छा अब शाह को छुडाकर तब रहुंगा । २०८३
१६३ पुनः स्त्री का कहना कि स्वामी को साकरे में छोडकर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है । ,,
१६४ सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना । ,,
१६५ सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार वैजल खवास पर है । २०८४
१६६ जैतराव और तत्तारखां का युद्ध । तत्तार खा का मारा जाना । २०८५,
१६७ विजय की सुकीर्ति के भाग । ,
१६८ वैजल का धीर से कहना कि शाह को छुडा दो और धीर का उत्तर देना कि पाच दिन ठहरो । २०८६
१६९ वैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़े जाने की बिनती करना । २०८७
१७० धीर का कुपित होकर वैजल को मारने के लिये दपटना । ,,
१७१ पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशसा करके उसे समझाना । ,,
१७२ धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा । २०८८
१७३ पृथ्वीराज का पुन धीर का समाधान करना । ,,
१७४ पृथ्वीराज का दड लेकर शाह को छोड देना । शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना । २०
१७५ शाह को छोडकर पृथ्वीराज का सयोगिता के साथ रस रंग मे प्रवृत्त होना । ,,
१७६ सामन्तों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो । २०९०
१७७ पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह

को किस तरह पकड़ा। २०९०
१७८ धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को विदा करना। २०९१
१७९ जैतराव और चामंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से बड़ा गर्व हो गया है। २०९२
१८० पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाल की आज्ञा देना। ,,
१८१ देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना। २०९३
१८२ यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना। २०९४
१८३ शाह का धीर को दिल्ली की बैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट देना। ,
१८४ सब पुंडीरों का दिल्ली को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना। २०९५
१८५ पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना। ,,
१८६ धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना। ,,
१८७ धीर का सौदागरों के घोड़े खरीदना। २०९६
१८८ घोड़ों की उत्तमता का वर्णन। ,,
१८९ उन्हीं सौदागरों का गजनी घोड़े लेकर जाना और उक्त समाचार सुनकर शाह का कुपित होना। ,,
१९० शाह का सौदागरों के घोड़े छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना। २०९७
१९१ धीर का शाह को पत्र लिखना। ,
१९२ शाह का मीरा खोखर के हाथ घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना। २०९८
१९३ गजनी के राज्य मंत्रियों का धीर पर क्रूर चक्र रचना। २०९९
१९४ सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा। ,,
१९५ सौदागरों का चकित हो कर परस्पर सलाह करना। ,,
१९६ सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय। ,,
१९७ सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना। २०९९
१९८ शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरों के काफले में आ मिलना। ,
१९९ सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना। २१
२०० सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।
२०१ धीर के वध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना पुंडीरों का जयी होना। २१
२०२ धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना। ,
२०३ धीर की मृत्यु का तिथि वार। २००
२०४ तदनंतर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना।

(६५) विवाह सम्यो।

(पृष्ठ २१०३ से २१०४ तक)
१ पृथ्वीराज की रानियों के नाम। २१०
२ भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष

(६६) बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव

(पृष्ठ २१०५ से २३८५ तक)
१ रावल समरसिंहजी का स्वप्न में एक सुंदरी को देखकर उससे पूछना कि त

कौन है और उसका उत्तर देना कि मै दिल्ली राज्य की राजश्री हू। २१०५
२ रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकडा जायगा और दिल्ली पर मुसल्मानों का राज्य स्थापित होगा। ,,
३ रावलजी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तैयार होना। २१०६
४ रावलजी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना। ,,
५ रावलजी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोडों की सजावट का वर्णन। २१०७
६ रावलजी का ऑवेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ़ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना। २१०९
७ उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना। २११०
८ रनधीर का अपनी सेना का चक्रव्यूह रचकर रावलजी की सेना को घेर लेना। ,,
९ रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना। ,,
१० सयोगिता के प्रधान का रावलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लाना और निगम बोध पर डेरा देना। २१११
११ रावलजी का सब आदर सत्कार होना परन्तु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना। २११२
१२ सयोगिता के यहा से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना। ,,
१३ दासियों का रावलजी से सयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना। २११३
१४ रावलजी का सखियो का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना। २११
१५ सखियो का रावलजी को मितीवार सब बीतक सुनाना। ,,
१६ उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना। २११
१७ पृथा का रानी इंछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना। ,,
१८ कुमार रेणमीजी का सब सामतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना। ,,
१९ गुरुराम का रावलजी को आशीर्वाद देना और कविचन्द का विरदावली पढ़ना। २११६
२० रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कन्हा की भी बधाई देना। २११७
२१ रावलजी का कविचन्द से चन्द्रवंश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और बुध का इतिहास कहना। ,,
२२ राजपूत शब्द की उत्पति। २११८
२३ रावलजी का कविचन्द को दान देना। ,,
२४ बनवीर का कवि को एक हथनी और दो सुन्दरी देना। २११९
२५ रावलजी का शक्राति एर गुरूराम को एक गाव देना। ,,
२६ रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर वास करना। ,,
२७ पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना ,,
२८ पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना। ,,
२९ राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "बीर पुरुष"। २१२०
३० उसी समय पृथ्वीराज की नीद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है। ,,
३१ पृथ्वीराज का सयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना। ,,
३२ सयोगिता का उत्तर देना कि यह सब

हुआ ही करता है। २१२१
३३ पुन दपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना। ,,
३४ रसकेलि वर्णन। ,,
३५ पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना। २१२२
३६ यह सलाह पक्की होना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय। तब चढ़ाई की तैयारी की जाय। ,,
३७ शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना ,,
३८ दूत की व्याख्या। २१२३
३९ दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना। ,,
४० बहुत दिनों तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना। ,,
४१ तत्वारथा का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होनी ही शुभसूचक है। ,,
४२ नीति राव कुटवार का सब समाचार शाह को लिख भेजना। २१२४
४३ प्रथम दूत का दिल्ली का समाचार कहना ,,
४४ दूसरे दूत का समाचार। २१२५
४५ तीसरे दूत का समाचार। ,,
४६ चौथे दूत का समाचार। २१२६
४७ शाह का पीर को चादर चढ़ाकर दुआ मांगना। ,,
४८ शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को परवाने या पत्र भेजना। २१२७
४९ शहाबुद्दीन के चढ़ाई करने का समाचार दिल्ली में पहुँचना और प्रजा वर्ग का अत्यन्त व्याकुल होना। ,,
५० प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना। २१२८
५१ नगरसेठ श्रीमन्त के यहां जुड़नेवाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धनपात्रता का वर्णन। ,,
५२ श्रीमन्त साह का सब सेठ महाजनों का आदर सत्कार करना और सब महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना। २१३०
५३ श्रीपति साह का सब साहूकारों को लिवाकर गुरराम के घर जाना। २१३१
५४ गुरराम का सब सेठ साहूकारों से सादर मिलना। २१३२
५५ श्रीमन्त सेठ का गुरराम से शाह की चढ़ाई का समाचार कहकर सारा दुःख रोना। ,,
५६ गुरराम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथा पाठ जानता हूं राजकाज की बातें क्या जानूं। २१३३
५७ शाह का कहना कि राजगुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें। २१३४
५८ गुरराम का श्रीपत साह और सब महाजनों सहित कविचन्द के घर जाना। ,,
५९ कवि का स्त्री बालकों सहित गुरराम की पूजा करना और गुरराम का कवि से अपने आने का कारण कहना। २१३५
६० कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है। २१३६
६१ गुरराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उद्दंड पुरुष क्योंकर स्त्री के वश में है। ,,
६२ कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते। ,,
६३ गुरराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है। ,,
६४ कविचन्द का संयोगिता के रूप राशि का वर्णन करना। ,,
६५ संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन। २१३८
६६ कविचन्द और गुरराम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना। २१३९
६७ संयोगिता की ओर से नर भेष धारण ,,

किए हुए पहरेदार स्त्रियों का सब लोगों का मार कर भगा देना। २१४०
६८ कविचन्द का डयोढ़ीवाली दासियों से बातें करना और कचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना। ,,
६९ अन्दर से इस दासियों का आकर कविचन्द से कहना कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें। २१४१
७० कविचन्द का राजा को एक पत्र और सन्देसा देना। २१४२
७१ दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर सँदेसा कहना। ,,
७२ कविचन्द का पत्र। ,,
७३ पृथ्वीराज का पत्र फाड़कर फेंक देना और शृंगार से वीररस में परिवर्तित हो जाना। २१४३
७४ राजा का कुछ विमन होकर संयोगिता की ओर देखना और संयोगिता का पूछना कि यह क्यों। ,,
७५ राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आ गया है। ,,
७६ सयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है। २१४४
७७ राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट सूचक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है। ,,
७८ सयोगिता का हठकर कहना कि अच्छा तो बतलाइए। ,,
७९ राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना। ,,
८० राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना। २१४५
८१ राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का बलिदान और दान पुण्य करवाना। ,,
८२ पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुन कर पश्चाताप करना और मंत्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा जाने का उपाय करो। २१४५
८३ संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना। २१४७
८४ राजा का सयोगिता से पूछना कि तुम खिन्न मन क्यों हो। ,,
८५ सयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसी के लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है। ,,
८६ सयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया। २१४८
८७ पातिवृत वर्णन। ,,
८८ पृथ्वीराज का सयोगिता को आलिंगन करना। ,,
८९ आलिंगन समय की शोभा वर्णन। २१४९
९० पृथ्वीराज का इछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना। ,,
९१ पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगमबोध को जाना। २१५०
९२ पृथ्वीराज का सब सामंत मडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुचना। २१५१
९३ एक दूसरे का कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावलजी से सब हाल कहना। २१५२
९४ रावलजी का कहना कि स्त्री सभोग से भला कोई भी सतुष्ट हुआ है। ,,
९५ कविचन्द का नवीन सामंतों के नाम कहना और रावलजी का प्रत्येक से सादर मिलना। ,,
९६ नवीन सामन्तों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय। २१५३
९७ रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय विचारो। २१५५
९८ रावलजी का राजमहलो को आना। ,,

९९ पृथ्वीराज और रावल जी का संयोगिता के महलों में बैठना, रावल जी का सरदारों सहित भोजन करना। २१५६
१०० भोजन के समय किन किन पशु पक्षियों को रखना उचित है। २१५७
१०१ षटरस व्यंजनों का न्योरा। „
१०२ भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कविचंद और गुरुराम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें। २१५८
१०३ दूसरे दिन प्रात काल से दरबार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की विदाई की तैयारी करना। २१५९
१०४ रावल जी का चित्रकोट जाने से नाहीं करना। २१६०
१०५ पृथ्वीराज का पुन विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए पर तु रावलजी का क्रुद्ध होकर उत्तर देना। „
१०६ पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारे पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य का रक्षा कीजिए। २१६२
१०७ रावल जी का उत्तर देना कि मैं सुरतान में मिलूंगा। „
१०८ रावल जी को कुपित देखकर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड कर कहना कि जो आप कहें सो करूं। २१६३
१०९ रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तो किये सो किये पर तु चामड राय को बेडी क्यों भरी। २१६४
११० पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरे सर्व श्रेष्ठ हाथी को मार डाला। „
१११ रावल जी का कहना कि चामडराय को छोड दो। „
११२ पृथ्वीराज का चामड को छोड देने पर राजी होना। २१६५
११३ चामड की बेडी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वय चामडराय के घर जाना। २१६६
११४ चामड राय की माता की प्रशसा। २१६६
११५ राजा का कविचंद और गुरुराम को चामड के पास भेजना। „
११६ चामड राय का कहना कि इस समय मेरी बेडी उतारने का क्या प्रयोजन। „
११७ कविचंद का चामडराय को समझाना। २१६७
११८ चामडराय का कहना कि राजा की पहिनाई हुई बेडी मै कैसे उतारू। २१६८
११९ पुन कविचंद का चामड की वीरता का बखान करके समझाना। २१६९
१२० पृथ्वीराज का चामड को अपनी तलवार देना। २१७०
१२१ चामडराय का प्रणाम करके तलवार बाधना और बेडी उतारना। „
१२२ पृथ्वीराज का चामड राय को सिरोपाव और इनाम देना। „
१२३ चामडराय के छूटने से सर्वत्र मगल बधाई होना। „
१२४ कवि का कहना कि लोहे की बेडी के छूटने से क्या होता है नमक की बेडी तो पैरों में और राजा के आन की ताप गले में आजन्म के लिये पडी है। २१७१
१२५ पृथ्वीराज का चामड को घोड़े देना। उन घोडों का वर्णन। २१७२
१२६ सूर्य के रथ के घोडों की चाल का वेग। „
१२७ सूर्य के रथ की सम्पूर्ण दिन की चाल। २१७३
१२८ सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगमबोध स्थान पर जाना। „
१२९ एक शिला का डोलना और सब का विस्मित होना। „
१३० शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का

निकलना। कविचन्द का पूछना कि तुम कौन हो। २१७४
१३१ वीर का कहना कि मै शिवजी की जटाओं से उत्पन्न वीरभद्र हू। वीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है। २१७५
१३२ कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामण्डराय की बेडी खोली गई उसी के आनन्द बाधवे का शोर है। ,,
१३३ वीरभद्र का कहना कि मैने बड़े बडे युद्ध देखे है यह क्या युद्ध होगा। २१७६
१३४ कवि का कहना कि आपकी देव संज्ञा है, आपने देवताओं के युद्ध देखे है यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे। ,,
१३५ वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है। २१७७
१३६ दुर्योधन की वीरता और हठ रचा की प्रशसा। ,
१३७ महाभारत के युद्ध की सक्षेप भूमिका। २१७८
१३८ भीष्मजी के विषम युद्ध का सक्षेप वर्णन। ,,
१३९ वीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देखकर तब से मै सोया हुआ हू। २१८०
१४० वीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष। २१८१
१४१ कवि का वीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा में चलकर सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते है। ,,
१४२ वीर का जभाइ लेकर उठना और पृथ्वी राज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना। २१८२
१४३ कविचन्द का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यदुवंश का कहना कि कैमास के मरने से मुसल्मानी दल सहजोर हो गया है। ,,
१४४ चामण्डराय का कहना कि गत पर सोच क्या जो आगे आई है उस विचार करो।
१४५ जामराय का कहना कि तुम्हारी अकल मारी गई है उधर देखो सौ में सात बाकी है।
१४६ चामण्डराय का बचन।
१४७ बलभद्रराय का बचन।
१४८ रघुवस राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना।
१४९ बलभद्रराय के बचन।
१५० रामराय बडगुज्जर के बचन।
१५१ चामण्डराय का रामराय को व्यग बचन कहकर हँसी उडाना।
१५२ सब लोगों का हँसना और बलिभद्र का सबको धिक्कारना।
१५३ रामराय यादव का चामण्ड का चित्त उड़ाना।
१५४ चामण्डराय का गुस्से होकर जैतराय तरफ देखना।
१५५ जैतराव का दोनों को शान्त करके से कहना कि लोहाना से पूछिए?
१५६ लोहाना का कहना कि जहा राव उपस्थित है वहा और कोई क्या सकता है।
१५७ पुनः लोहाना बचन।
१५८ चामण्डराय बचन।
१५९ पृथ्वीराज का बचन।
१६० लोहान आजानबाह बचन।
१६१ प्रसगराय खीची बचन।
१६२ चामड राय का बचन।
१६३ जैत प्रमार बचन।
१६४ गुरुराम प्रोहित का बचन।
१६५ देवराज बग्गरी बचन।
१६६ गुरुराम बचन।
१६७ पृथ्वीराज बचन।
१६८ बीर माहन बचन।

१६९ गुरराम वचन। २१९२
१७० रामराय रघुवंसी वचन। ,,
१७१ माल्हन परिहार वचन। ,,
१७२ प्रसगरायखीची वचन। ,,
१७३ देवराय वग्गरी वचन। २१९३
१७४ सामंतों की बात सुनकर रावलजी का किंचित् रुष्ट सा होना। २१९४
१७५ सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावलजी कहें सो हम सब को स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय। ,,
१७६ पृथ्वीराज का रावलजी का वचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना। २१९५
१७७ जैतराव का राजा के प्रस्ताव की अस्वीकार करना। २१९६
१७८ प्रसगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे वीरसिंह को राज्य का भार देना और सामन्त कुमारों को साथ में छोड़ना। ,,
१७९ यह समाचार सुनकर कुमार रेनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना। २१९८
१८० पृथ्वीराज का कहना कि पिता का वचन मानना ही पुत्र का धर्म है। ,,
१८१ कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरुराम और कविचन्द के समझाने से चुप रहजाना। ,,
१८२ उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना। २१९९
१८३ ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रह चाल का फल बतलाना। २२००
१८४ ज्योतिषी की वाणी सुनकर राजा का कुपित और कलान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना कि गोविंद का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए। २२०१
१८५ क्रोध और क्लांत अवस्था में पृथ्वीराज की मुखप्रभा वर्णन। २२०२
१८६ कालचक्र की प्रभूति और राजा का रेनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना। २२०३
१८७ रेनसीजी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा। २२०५
१८८ कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना ,,
१८९ पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्य अभिषेक करना। २२०६
१९० दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना। ,,
१९१ उधर से शहाबुद्दीन का सिन्धु नदी पार करना। ,,
१९२ अर्द्धरात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरंग त्याग कर जंग के लिये जाना। २२७७
१९३ कविचन्द का वीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और वीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकड़ा जायगा। २२०६
१९४ पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पड़ाव डालना। ,,
१९५ पृथ्वीराज के कूच करते समय संयोगिता की विरह विथा का वर्णन। ,,
१९६ पृथ्वीराज की चढ़ाई का तैयारी का वर्णन। २२१२
१९७ चहुआन को चलते समय अशकुन होना। ,,
१९८ राजनी के गुप्तचरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना। २२१३
१९९ राजपूत सेना का पहिला पड़ाव पानीपत

में होना। २२१३
२०० शाही सेना का चिनाब नदी पार करना। ,,
२०१ पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मागना। २२१४
१०२ पृथ्वीराज का पुडीर वंश का अपराध क्षमा करना। ,,
२०३ शाही फौज की चाल और नाके बन्दी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये भेजना। २२१५
२०४ कविचन्द का जालन्धर गढ़ जाना और हम्मीर को समझाना। २२१६
२०५ कविचन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो। २२१७
२०६ हम्मीर बचन। २२१८
२०७ कविचन्द बचन। ,,
२०८ हम्मीर बचन। ,,
२०९ कविचन्द बचन। २२१९
२१० हम्मीर बचन। ,,
२११ कविचन्द बचन। ,,
२१२ हम्मीर बचन। २२२०
२१३ कविचन्द बचन। ,,
२१४ हम्मीर बचन। २२२१
२१५ कविचन्द बचन। ,,
२१६ हम्मीर बचन। ,,
२१७ कविचन्द बचन। ,,
२१८ हम्मीर बचन। २२२२
२१९ कविचन्द बचन। ,,
२२० हम्मीर बचन। ,,
२२१ कविचन्द बचन। २२२३
२२२ हम्मीर बचन। ,,
२२३ कविचन्द बचन। २२२४
२२४ हम्मीर बचन। ,,
२२५ कविचन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण देकर हम्मीर को समझाना
२२६ हम्मीर बचन।
२२७ कविचन्द बचन।
२२८ हम्मीर बचन।
२२९ कविचन्द बचन।
२३० कविचन्द और हम्मीर का जालपा देवी के स्थान पर जाना।
२३१ जालपा के स्थान का वर्णन।
२३२ कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना।
२३३ देवी (जालपा) जालन्धरी की स्तुति हम्मीर का देवी से निवेदन करना
२३५ कविचन्द का देवी के मंदिर में बन्द जाना और हम्मीर का शाह की सहायता के लिये जाना।
२३६ उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज क्रोधित होना।
२३७ चामडराय का कहना कि सब लोग चार तलवारें बाँधे जो जिसमे जा सो जाने दो।
२३८ पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावस पु को हम्मीर को रोकने के लिये बीडा
२३९ पावस पुडीर का बीडा लेकर तै होना।
२४० जामराय यादव का मुसल्मानी सेना निकास का रास्ता बाँधना और पा का सीधी पसर करना।
२४१ पावस पुडीर की पसर का रोस कागुरे को तिरछा देकर सीधी जाना।
२४२ हम्मीर की और पावस पुडीर की पीछे छुआ छाई होते जाना।
२४३ पावस पुडीर का नदी का घाट बाँधना।
२४४ हम्मीर की सेना के नदी पार क समय पुडीर सेना का हमला करन

दोनों की लड़ाई । २२३३
२४५ इस लड़ाई में पांच पुंडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना हम्मीर का भाग जाना । २२३५
२४६ पावस पुंडीर के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडीर योद्धाओं को चातेगी होने का हुक्म देना । २२३६
२४७ पुंडीर वंश की सजनई का प्रोज और शाह का समाचार पाना । ,
२४८ हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुंचकर नजर देना । २२३७
२४९ शाह का कहना कि पक्की पकड़ा हुई एक तलवार चार को मात करेगी । ,,
२५० शाह का काजी से भविष्य पूछना । २२३८
२५१ पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था । ,,
२५२ पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना । २२३९
२५३ उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना । ,
२५४ सरदारों के शाह प्रति वचन । २२४०
२५५ शाह का पुनः पक्का करना और सरदारों का कसमें खाना । ,,
२५६ शहबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना । ,,
२५७ महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना । २२४१
२५८ शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना । ,,
२५९ शहबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना । २२४२
२६० शहबुद्दीन के पत्र का आशय । ,,
२६१ शाही दूत के प्रति चामंडराय के वचन । २२४३
२६२ जल्ल जुवान और बलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजो । २२४४
२६३ शाह के यहाँ से आने वाले सरदारों के नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना । २२४५
२६४ सतलज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना । २२४६
२६५ चाहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना । ,,
२६६ अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है । ,,
२६७ शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना । २२४७
२६८ शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना । २२४८
२६९ सरदारों का उत्तर देना कि अब की बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे । ,,
२७० काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकड़ा जायगा । २२४९
२७१ सब मुसल्मान सरदारों का बचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना । ,,
२७२ शाही सेना की तैयारी वर्णन । २२५०
२७३ सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन । २२५१
२७४ राजपूत सेना की तैयारी वर्णन । २५५२
२७५ जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं । २२५३
२७६ पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए । ,,
२७७ रावल जी का कहना कि समर से विमुख होना धर्म नहीं है । २२५४
२७८ रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना । ,,
२७९ रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से ,

कुछ कहना और राजा का उसे समझ जाना। २२५४
२८० रावल जी के इशारे पर सेना का व्यूह बद्ध किया जाना। २२५५
२८१ राजपूत सेना का सुसज्जित होकर शाही सेना के साम्हने होना। २२५६
२८२ पृथ्वीराज की तैयारी के समय के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन। २२५७
२८३ राजपूत सेना की चढाई का ओज और व्यूह वर्णन। ,,
२८४ राजपूत सेना की कुल सख्या और सरदारो की स्फुट अनीकनी सेना की संख्या वर्णन। २२५८
२८५ शाही सेना का सतूलपुर के पास आना २२६०
२८६ शाहाबुद्दीन के आज्ञानुसार तत्तारखा का अपनी सेना को व्यूह बद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम। ,,
२८७ श्रावण बदी अमावस्या शनिवार को दोनों सेनाओ का मुकाबला होना। २२६३
२८८ बडी लड़ाई का सक्षेप (खुलासा) वर्णन। २२६४
२८९ देवी जालपा, वीरभद्र, सुबेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना। २२६५
२९० महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो। ,,
२९१ सुबेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पहिले राव बलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना। २२६६
२९२ बलिभद्र और जामराय का रावलजी के प्रति प्रश्न। ,,
२९३ रावल जी का उत्तर देना। २२६७
२९४ प्रश्न "क्षत्रियो का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते है"। ,,
२९५ रावल जी का वचन कि धर्म रहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते है। ,,
२९६ प्रश्न—क्षत्री भव पार कैसे होसकते हैं। २२६८
२९७ रावलजी का वचन—क्षत्री धर्म और सालोक मुक्ति कथन। ,,
२९८ प्रश्न—राज नीति का क्या लक्षण है। २२६९
२९९ रावल जी का वचन—राजनीति वर्णन। ,,
३०० रावल जी का सब राजपूत योद्धाओं को समझाना और सबका रणोन्मत होकर युद्ध के लिये उद्यत होना। २२७०
३०१ शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का सम्पूर्ण वर्णन करो। २२७२
३०२ यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना। ,,
३०३ प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलाजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना। ,,
३०४ रावलजी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेना की सम्हाल पर रहो। २२७३
३०५ कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहिले जूझेंगे। ,,
३०६ रावलजी का पुनः समझाना परन्तु बीर कन्हा का हठ करके युद्ध मे प्राण देने को उद्यत होना। २२७४
३०७ रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना २२७५
३०८ रावल जी के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुड व्यूहाकार रचा जाना। ,,
३०९ उधर हम्मीर को बीच में देकर यवन सेना का चन्द्रव्यूहाकार होना। २२७६
३१० पुडीर सेना का धावा करना। ,,
३११ पृथ्वीराज का पावस पुंडीर से कहना कि नमकहराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय। ,,
३१२ पुंडीर योद्धाओ का युद्ध। २२७७
३१३ हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गष्परो सहित कई यवन सरदारों का घेरा रखना। ,,
३१४ पुंडीर सेना का हम्मीर पर धावा करना। २२७८

३१६ हम्मीर के एक भाई, पुडीरों में से बारह योद्धा और वैजल खवास का काम आना। २२७९
३१९ पुडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख जवानों का हम्मीर को घेर लेना। ,,
३१७ पावस की पावस से उपमा। ,,
३१८ पावस पुडीर का हम्मीर का सर काट लेना। २२८०
३१९ पावस पुडीर का हम्मीर का सर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे धन्य कहना। ,,
३२० पावस पुडीर के भाई का मारा जाना और पुडीरों का पराक्रम वर्णन। २२८१
३२१ शहाबुद्दीन के हाथी का वर्णन। २२८२
३२२ दोपहर को रावल समर सिंह जी और तत्तार खा का मुकाबला होना। २२८३
३२३ युद्ध वर्णन। २२८४
३२४ तत्तार खा के मारे जाने पर निसुरत्त खा का समर करना। २२८५
३२५ निसुरत्त के एक हजार योद्धा मारे जाने पर शाह का उस का मदत करना। २८९
३२६ क हराव और निसुरत्त खा का द्वद युद्ध और दोनों का मारा जाना। ,,
३२७ मिया मुस्तफा का धावा करना। २२८८
३२८ रावल जी के सरदारों का अतुल पराक्रम और दोनों भाई मुस्तफा मीरों का मारा जाना। २२८९
३२९ मीर मुस्तफा के मारे जाने पर शाही सेना में से ग्यारह मीरों का धावा करना। २२९१
३३० हिंदू मुसलमान दोनों सेनाओं में घोर युद्ध। ,,
३३१ ग्यारहों मीरों और सरदारों सहित रावल जी का खेत रहना। २२९२
३३२ जामराय जद्दव का हरावल में होना। २२९३
३३३ शाही फौज में से सुभान खा का धावा करना। २२९३
३३४ जामराय जद्दव और सुभान खा का युद्ध। २२९४
३३५ जामराय जद्दव का खेत पडना। २२९५
३३६ पज्जूनराय के पुत्र बलिभद्रराय का धावा करना। ,
३३७ नौ सरदारों का बलिभद्र राय की सहायता पर उतरना। ,,
३३८ बलिभद्र के मुकाबले में जलाल जलूस का आना और दोनों का खेत में पडना। २२९९
३३९ गिद्धिनी का सयोगिता प्रति सवाद वर्णन। २२९७
३४० गाजी खा और पावस पुडीर का द्वद युद्ध, पावस का मारा जाना। २२९८
३४१ रविवार परिघा का युद्ध समाप्त। २२९९
३४२ दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन। २३०१
३४३ दोनों सेनाओं का दुतिया के प्रात काल का मेल। २३०२
३४४ शाही व्यूह का बल वर्णन। ,,
३४५ राजपत सेना का व्यूह बल वर्णन। ,,
३४६ चामडराय के मुकाबले पर गाजी खा का उतरना। २३०३
३४७ चामण्डराय का विषम युद्ध। ,
३४८ जैतराव का घोडे पर सवार होना। ३२०५
३४९ चामडराय की वीरता का बखान। ,,
३५० दोपहर होजाने पर जैतराव का हरावल सम्हालना। २३०६
३५१ मिया मनसूर रुहेल्ला और चामडराय का द्वद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना।,,
३५२ जैतराव का वीरता के साथ काम आना। २३०८
३५३ जैत के मुकाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भुजे का आना। २३०९
३५४ जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुख करना। २३१०

३५५ खीची प्रसगराय का युद्ध के लिये अग्रसर होना। २३११
३५६ शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसग राय का युद्ध करना और मारा जाना। ,,
३५७ बग्गरीराय की वीरता और उसका पांच मुसल्मान सरदारों को मारकर मरना। २३१३
३५८ शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना। सिंह प्रमार का आडे आकर १५ मुड सरदारो को मारकर आप मरना। २३१४
३५९ शाही सेना का और जोर पकडना और लोहाना का अग्रसर होकर लोहा लेना २३१७
३६० लोहाना का खड खड होते हुए भी अतुल पराक्रम करके अपने मारनेवाले को मारकर मरना। ,,
३६१ लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना। २३१९
३६२ आरज्जसिंह का पराक्रम और एक मुसल्मान सरदार का उसे पीछे से आकर मारना। ,,
३६३ सोमवार के युद्ध का विश्राम २३२१
३६४ योगनी और बेतालो का शिव के सम्मुख युद्ध की प्रशसा करना। ,,
३६५ यक्ष का वीरो के शीस लेजाकर शिवजी को देना और मृतवीरों का पराक्रम कहना ,,
३६६ चामंडराय की तारीफ। २३२२
४६७ मारू महनगराय की तारीफ। ,,
३६८ नाहरराय परिहार की तारीफ। २३२३
३६९ यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना। ,,
३७० अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम। २३२५
३७१ सारगराय के मारे जाने पर परिहार वीरों का पराक्रम करना। २३२६
३७२ सब हिन्दू या मुसल्मान वीरों की बहादुरी। २३२७
३७३ दुतिया सोमवार का युद्ध समाप्त। २३२८
३७४ रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना। ,,
३७५ पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पडना। २३२९
३७६ शाही सेना में से शाह के भाँजे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन। २३३१
३७७ खानखाना के सिवाय अन्य १७ वीरों को मारकर समरसिंहजी का स्वर्गवासी होना। २३३२
३७८ बाई अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए। २३३५
३७९ म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेरे जाने का वर्णन। २३३६
३८० पृथ्वीराज का अपने को घिरा हुआ जानकर गुरुराम को कुण्डलदान करना २३३७
३८१ गुरुराम का कुण्डल लेकर चलना और मुसल्मान सेना का उसे घेर लेना। ,,
३८२ बहवल खा का गुरुराम का सिर उडा देना, गुरुराम का पडते पडते शाह के भाँजे को मार गिराना। २३३८
३८३ गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना। ,,
३८४ पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना २३३९
३८५ गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना। २३४०
३८६ रामराय बड गुज्जर और वीर पंचाइन का पराक्रम। ,,
३८७ एक गिद्धनी का सयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना। २३४२
३८८ संयोगिता का सकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का सक्षेप में वर्णन करना। २३४३

३८९ गिद्धनी का सयोगिता के महल में राजा का चामर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा सयोगिता का गिद्धनी से हाल पूछना। २३४४
३९० गिद्धनी का आरम्भ से युद्ध का वर्णन। २३४५
३९१ अरब खा उज्जबक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। २३४७
३९२ पृथ्वीराज की बानावली स यवन सेना का छिन्न भिन्न होना। २३५८
३९३ सयोगिता का कहना कि युद्ध का अत कह। २३४९
३९४ अस्तु गिद्धनी का सारे युद्ध का वृतात कहना। ,,
३९५ वीरभद्र का शिव से कहना कि सब सेना के मर जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया। २३५०
३९६ बुद्ध की रात्रि को सयोगिता का एक डकनी को स्वप्न में देखना। २३५१
३९७ डकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना। ,,
३९८ पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन। २३५२
३९९ महमूद खा का राजा के साम्हने आना और राजा का उसे मार गिराना। २३५३
४०० महमूद के मरने पर ३१ मीर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना। २३५४
४०१ मीर सरदारों का कहना कि कमान रख दो, राजा का न मान कर बाण चलाना पर चूक जाना। २३५५
४०२ राजा का कटार निकालना और पकडा जाना। २३५६
४०३ होत पता की प्रभूति वर्णन। ,,
४०४ भूत होतपता का सकीर्तन। २३५७
४०५ पृथ्वीराज को पकडने वाले मीर योद्धाओं के नाम। २३५८
४०६ डकनी का मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना। २३५९
४०७ सयोगिता का डकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह। २३६२
४०८ पृथ्वीराज की वीरता पराक्रम और हस्त लाघवता का वर्णन। ,,
४०९ पृथ्वीराज को पकड कर हाथी पर बैठा गजनी लेजाना। २३६४
४१० पृथ्वीराज का यवन सुनकर सयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना। २३६५
४११ पृथ्वीराज के पकड जाने पर शाह का पडाव साफ करना। २३६७
४१२ पृथ्वीराज को पकड कर शाह का गजना जाना और इश्वर देवी के मन्दिर से कविचद का मुक्त होना। २३६९
४१३ दिल्ली में पृथ्वीराज के पकड जाने का समाचार पहुचना और राजपूत रमणियों का सती होना। २३७०
४१४ पृथा का राजजी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतिनियों का अपने पतियों के अस्त्रों के साथ सती होना। ,,
४१५ शाह का गजना पहुच कर पृथ्वीराज को हुजाब खा के सुपुर्द करना। २३७२
४१६ हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है। ,,
४१७ शाह का पृथ्वीराज की आखें निकलवाने की आज्ञा देना। २३७३
४१८ नेत्रहीन होजाने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मागना। ,,
४१९ पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना। २३७६
४२० शाह का वेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज का भोजन कराने की आज्ञा देना। २३७७
४२१ वेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना। २३७८
४२२ वीरभद्र का कविचद के पास जाना

सूचीपत्र ।

(१७) वान वेध प्रस्ताव ।

[पृष्ठ २३८७ से २४६८ तक]

१ देवी जालपा के मन्दिर के कपाट खुलने पर कविचन्द का दिल्ली को जाना । २३८७

२ श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक विचार वर्णन । २३८८

३ कवि की स्त्री का सब हाल कहना और राजा का वचन सुनकर कवि का दुखित होना । २३८९

४ कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके योग धारण करना । ,,

५ कवि का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये विनय करना । २३९०

६ कविचन्द का कोरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का ध्यान करना । २३९२

७ रासो की छन्द संख्या वर्णन । ,,

८ देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का वर मागना । ,,

९ रासो के रचना समय की सीमा । २३९३

१० कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदा मागना । ,,

११ कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एक मात्र कीर्ति ही सार है २३९४

१२ कवि का योगी भेष धारन करना और स्त्री का पूछना कि योग की पराकाष्ठा क्या है । ,,

१३ कवि का स्त्री को योग साधना की विधि और उसकी सिद्धि संक्षेप में बतलाना । २३९५

१४ कवि की स्त्री का शंका करना कि एक पथ दो काज कैसे सध सकते हैं । २३९७

१५ कविचन्द का उत्तर । ,,

१६ कविचन्द के पुत्रों के नाम और सर्व श्रेष्ठ जल्ह को कवि का रासो पढ़ा कर रखाना होना । २३९८

१७ कविचन्द का अपनी धुन में मस्त हो कर गजनी की राह लेना । ,,

१८ दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना । २३९९

१९ कविचन्द का भगवती का स्मरण और स्तुति करना । २४००

२० देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सब विपत्ति निवेदन करके सहायता के लिये वर मागना २४०१

२१ भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अचल का चीर देना । २४०३

२२ देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्वक गजनी पहुचना । २४०४

२३ गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन । २४०५

२४ कवि का शाही दरबार को जाना । २४०६

२५ दरबारियों का वर्णन । २४०७

२६ कवि के विषय में लोगों की कल्पना । ,,

२७ कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना परिचय देना । ,,

२८ द्वारपाल का कवि को सादर आसन देना। २४०८
२९ कवि का अपनी विद्याओं का बखान करना। ,,
३० द्वारपाल का कहना कि कविचन्द मै तुझे पहचानता हू जरा ठहर इत्तला होती है। २४०९
३१ कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहा से चल देना। ,,
३२ शाही पासवान सरदारों का और शाही ड्योढी का औसाफ वर्णन। २४१०
३३ दिन के तीसेर पहर शाह का हदफ खेलने की इच्छा करना। २४११
३४ शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह को हाथ उठाकर आशीर्वाद देना। ,,
३५ कवि का शाह की बिरद पढना। २४१४
३६ शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना। ,,
३७ शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना। कवि का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे ठहरने के लिये कहना। २४१५
३८ शाह का पीरोज खा हबसी को कवि की खातिर करने की आज्ञा देना। २४१६
३९ कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना। २४१७
४० कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान मागना और कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना २४१८
४१ पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना। ,,
४२ कवि का बीज मन्त्र का जप करना २४१९
४३ बीज मत्र के जाप की विधि और ध्यान ,,
४४ देवी का प्रगट होकर वर देना कि शाह पृथ्वीराज और तू तीनों एकही घडी अन्त को प्राप्त होगे। २४२०
४५ कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप अपनी इच्छा को क्यों कर पूर्ण कर सकते है, तब कवि का उसको देवी के दर्शन कराना। २४२१
४६ देवी की स्तुति। ,,
४७ उस रात्रि को मुसलमानी जंत्र मत्र का न चलना और मुल्लाओं के मन में विस्मय होना। २४२२
४८ प्रातःकाल होतेही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना। २४२३
४९ शाह का हुज्जाब को कवि के लाने की आज्ञा देना और तत्तार का उसे मना करना। २४२४
५० शाह का कहना कि देखे तो उसमें क्या रहस्य है बातों बातों मे बडे रहस्य प्रगट होते है। ,,
५१ तत्तार खा का कहना कि शत्रु और सर्प का विश्वास करना उचित नहीं २४२५
५२ तत्तार का कहना कि खाडा खुदाकर तब कवि को बुलाओ। २५२६
५३ शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य मिलूंगा तू मूर्ख क्या जाने,,
५४ तत्तार खा का पुन मना करना परन्तु शाह का न मानन। २४२७
५५ कवि का दरवाजे पर आना परन्तु तत्तार खा के इशारे के अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना। ,,
५६ कविचन्द का रोके जाने पर देवी का स्मरण करना। २४२८
५७ शाह के आज्ञानुसार हुज्जाब का कवि को शाह के समुख लिवा जाना। २४२९
५८ उस स्थान का वर्णन जहा पर कवि शाह के समुख गया। ,,
५९ शाह का कवि से योग के विषय में

प्रश्न करना। २४३१
६० कविचंद का पृथ्वीराज के पास जाना। २४३
६१ दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना। ,
६२ कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देख कर आशीर्वाद देना परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना। २४३७
६३ कवि का विरुदावली पढ़ना और राजा का कवि की वाणी पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना। ,,
६४ कवि का कहना कि मैं होनहार को क्या जानूं। २४३८
६५ कवि का गला भर कर राजा को समझाना परंतु राजा का फिर भी सिर न नवाना। २४३९
६६ कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो तने देने को कहा था ,,
६७ राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे निशाना वेध सकता हूं। ,,
६८ कवि का कहना कि मैं शाह को बुला ऊंगा आप वचन दीजिये। २४४०
६९ राजा का कवि का अभिप्राय समझकर शोकित होना। ,,
७० कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन करना ,,
७१ राजा का कहना कि कवि सो सब सम्भव है वा असम्भव है। २४४१
७२ कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है। ,
७३ राजा वाक्य। ,
७४ कविचंद वाक्य ,, ,,
७५ राजा वाक्य। २४४२
७६ कविचंद वाक्य। ,
७७ पृथ्वीराज वाक्य। ,,
७८ हुजाब का कवि को लिवाकर शाह के पास आना। २४४४
७९ कविचंद का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना स्वीकार करें तो राजा दान देना स्वीकार करता है। २४४५
८० तत्तार खां का खिझ कर कविचंद को डपटना। ,,
८१ कवि का पुन कहना कि यदि शाह वचन दे तो प्रत्यक्ष तमाशा देख लो। ,,
८२ शाह का शब्द देने पर सहमत होना और घरियार मंगाकर सजाया जाना २४४६
८३ कौतुक दखने के लिये दर्शकों की भीड़ होना। ,,
८४ तत्तार खां का कहना कि आज जुमा रात है आज रहने दीजिये। २४४७
८५ तत्तार खां का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना और समझाना। ,
८६ शाह का कहना कि मैं तो अब कहा हुआ वचन नहीं पलट सकता। २४४८
८७ तत्तार खां का क्रोध कर दरबार से उठ जाना। २४४९
८८ शाह का कवि को पान देना कि हमने दिया तुम राजा से मांगो। ,,
८९ कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि में आना। ,,
९० हुजाब का राजा के हाथ में कमान देना और राजा का कई कमान तोड देना। २४५०
९१ राजा को मीरा की कमान दी जाना और राजा का उसे चढाना। २४५१
९२ पृथ्वीराज का कमान को तानना और उसे देखकर मीरा का कहना कि यदि घरियार फोड दिए तो शाह राजा को छोड देगा और कुछ और भी देगा। ,,
९३ कवि का कहना कि राजा का निज का कमान दिया जाय वही बहुत है। २४५२
९४ राजा को हुजाब की वही कमान देना

और तत्तार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इसमें मारे पड़ोगे। ,,
९५ कवि की उक्ति। २४५३
९६ राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न होना और निसुरत खा का राजा के हाथ में तरकस भी देना। ,,
९७ राजा का कमान लेकर उसे संधानना कविचन्द का राजा को ज्ञान समझा कर दृढ़ता देना। २४५४
९८ राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं क्या करूं। २४५६
९९ कवि का कहना कि तुम बाण संधानों मै तुम्हे वैसाही न करदूं तो कवि नहीं। २४५७
१०० कवि का राजा को पुनः समझाना और उत्कर्ष दना। ,,
१०१ पृथ्वीराज का उत्तेजित हो कर कहना कि मै शत्रु को अवश्य मार गिराऊंगा २४५८
१०२ कवि का पुन' राजा को उत्तेजित करना ,,
१०३ पृथ्वीराज वचन। २४५९
१०४ कविचन्द वचन। ,,
१०५ पृथ्वीराज वचन। ,,
१०६ कविचन्द वचन। ,,
१०७ कविचन्द का राजा को समझाना कि सात नहीं एक को वेध। २४६०
१०८ कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ मुख करना। २३६१
१०९ पृथ्वीराज का कमान ले सन्नद्ध होकर शाह के हुक्म की प्रतीक्षा करना। २४६३
११० कवि का डमरू बजाकर शाह से हुक्म देने के लिये प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना। ,,
१११ बादशाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर सधानना और कवि का विरदावली पढना। ,,
११२ शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके तालू पर निशाना लक्ष करना। २४६३
११३ पहिले हुक्क पर राजा का सर संधानना दूसरे पर चढ़ाना और तीसरे पर शाह का तालू वेध देना। २४६४
११४ शाह के प्राण हीन होकार गिर पड़ने पर कवि का राजा को हठयोग द्वारा प्राण त्याग करने को कहना। २४६५
११५ राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे हो सकता है। ,,
११६ शाह के मरने पर महा हाहाकार होना ,,
११७ कविचन्द का छूरे से अपना सिर काट कर राजा को भी छुरी सौंप देना। २४६६
११८ राजा पृथ्वीराज का प्राणान्त और रासो का इति। २४६८
११९ पृथ्वीराज की पूर्व कथा और उनका गुण एव सुयश गान। ,,

(६८) राजा रयनसी नाम प्रस्ताव।

[पृष्ठ २४६९ से २५०६ तक]

१ पृथ्वीराज के पकड़े जाने पर और कवि के कागेड से छूट आने पर राजा रयनसी का पाट बैठना। २४६९
२ कविचद के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण सुनकर रयनसीजी का सब सामंत मडली से सलाह करना। २४७०
३ उत्तराधिकारी सामंत मडली का वर्णन। ,,
४ युवक सामंत मडली का मत होना कि शाही सेना से छेड़ छाड़ की जावे। २४७१
५ उधर गजनी में शहाबुद्दीन के उत्तराधिकारी का तख्तनसीन् होना। २४७२
६ सलाह पक्की हो जाने पर राजा रयनसी का शाही सेना पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना। २४७३
७ राजा रयनसीजी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सरहद पर स्थित शाही

सेना पर आक्रमण करने के लिये कूच करना। २४७५
८ राजा रयनसी का शाही सेना को मार भगाकर लाहौर पर अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में समाचार पहुचना। २४७७
९ उक्त समाचार पाकर शाह का कुटवारखा को अपना प्रतिनिधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना। २४७८
१० शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढाई करना। शाही सेना के कुच का आतंक वर्णन। २४७९
११ शाही सेना के चढ़ आने का समाचार पाकर रयनसीजी का राजपूत सरदारों से सलाह करना। २४८०
१२ रयनसीजी का कहना कि ऐसा मत्र करना चाहिये जिसमें बात रहे और हँसाई न हो। ,,
१३ सब सामतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना। २४८१
१४ शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार करना। २४८३
१५ शाही सेना का किले को घेर लेना। २४८३
१६ सात महीने दो दिन पर्यंत किला न टूटने पर तचारखा का सुरग लगा कर किले की दीवार उडा देना। २४८४
१७ सुरगें से किले की पश्चिम दीवार का टूटना। ,,
१८ किले की दीवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार का युद्ध होना। २४८५
१९ युद्ध वर्णन। २४८६
२० वीर रणधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई सरदारों को मारकर आप मरना। २४८७
२१ प्रथम दिन के रणधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम। २४८८
२२ शाही सेना का किले में पैठने के लिये अग्रसर होना और वीरचद का मोरचा रोकना। २४८९
२३ दूसरे दिन वीरचन्द के साथ कई राजपूत सरदारों का काम आना और यवन सेना का बल बढ़ना। ,,
२४ किला टूटा हुआ जानकर राजा रयनसी जी का रामगुरु को बुलाकर मत्र पूछना। २४९९
२५ प्रोहित का मत्र देना कि कट मरना सलाह है। ,,
२६ राजा रयनसिंह का जौहर करना। ,,
२७ दोपहर डरते रयनसी का किले से निकलना और मुसल्मानों का उसे पकडने के लिये धावा करना। २४९३
२८ हिन्दू मुसल्मान दोनों का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन। ,,
२९ कान्ह के पुत्र ईसरदास एव अन्य वीरों का पराक्रम से काम आना। २४९५
३० शाह के आज्ञानुसार पीरोज खा का रयनसी के सामहने आकर प्रचारना और रयनसी का उसे मार गिराना। २४९६
३१ यवन सेना का रयनसी को घेरना और बडे पराक्रम से हथियार करते हुए रयनसी जी का मारा जाना। २४९७
३२ रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसल्मानी कब्जा होना। २५००
३३ दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसल्मानी सेना का आक्रमण करना। २५०१
३४ इस मुसल्मानी आक्रमण में जयचद का लडकर मारा जाना। २५०२
३५ ग्रथ समाप्ति उपसहार। २५०३

महोबा समय।

(पृष्ठ २५०७ से २६१५ तक)

१ चौहान और चँदेल कुल मे कैसे झगडा पडा इसकी सूचना। २५०७

२ विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोबा में पहुचना। ,,

३ समुद्र सिपरगढ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना। ,,

४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूलकर महोबे मे आ पहुचना, वहा भारी वर्षा होनी सरदारों का विकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालिया का रोकना, बातों बात बात बढ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारो का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृतात कहना. रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को उन सभों के पकड़ लाने की आज्ञा देना। २५०८

५ परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकडने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों का मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोधकर अपने प्रसिद्ध वीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना कि यह घायलोंको मारना वीरधर्म के विरुद्ध है, राजा का कुछ न सुनना। २५०९

६ ऊदल का फिर कहना कि एक तो घायल को मारना पाप है दूसरे ये पृथ्वीराज के दल है उनमें विरोध न कीजिये और इन लोगों को जाने दान दीजिये २५१२

७ ऊदल के शत्रु महला और गोपाल ने राजा के कान भरे कि ऊदल जी चुगला है और कुछ बात नहीं है। ,,

८ राजा का महला और गोपाल की बात मान कर ऊदल को आज्ञा देना कि तुम तुरत जाकर घायलों को मारो। ,,

९ आज्ञा मानकर ऊदल का बाग को जा घेरना और राजपूतों को ललकारना फिर घोर युद्ध होना और कनक चौहान की चोट से ऊदल का मूर्छित होना। ,,

१० चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना। २५१४

११ यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ। २५१५

१२ पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों को इकट्ठा करके यह समाचार कहकर परामर्श करना। ,,

१३ सामंतों का महोबे पर चढाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखला कर कूच करना और पहिले दिन बाग में डेरा देना। ,,

१४ रात को वहा रहकर घडी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर सब सरदारो को पृथ्वीराज ने बुलाया। २५१७

१५ सब सरदारों को इकट्ठा करके सभों को सवारी के लिये घोडे बाटना और कूच की तयारी करना। ,,

१६ धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना। २५१९

१७ ग्रास हजार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना, सेना का वर्णन। २५१९
१८ पृथ्वीराज की सेना की चढाई का समाचार परिमाल देव को मिलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके सलाह करना। महला भोपति की चुगली से आल्हा और ऊदल का अलग होना। २५२१
१९ परिमाल देव की सेना का तैयारी करना, पृथ्वीराज और परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सरदारों को मार गिराना। २५२२
२० सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का भाग कर महोबे जाना। २५२४
२१ अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखान वीर सिंह नरसिंह जैसाह आदि वीरों के मारे जाने और पृथ्वीराज की विजय का समाचार कहना। ,,
२२ परिमाल देव का यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि भाई क्या करना चाहिये। २२२५
२३ रानी मल्हन देवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइये और पृथ्वीराज के पास जल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को कहलाइये। रानी का मत सबके मन में भाया। ,,
२४ पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बर्छे और कच्छी घोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के पास जाना और पत्र देना। २५२६
२५ जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनाकर (आल्हा ऊदल) रूठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने जगनक को भेजा है सो आप क्षत्रिय धर्म के अनुसार उनके आने तक युद्ध बन्द रखिये। २५२६
२६ पृथ्वीराज ने नजर रखली और आल्हा के आने तक युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया। ,,
२७ जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा डाल कर रहना। २५२८
२८ पृथ्वीराज का चन्दबरदाई से पूछना कि आल्हा ऊदल चन्देल से क्या रूठ गये हैं। ,,
२९ चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहां दसराज सेनापति था उसने गोंड लोगों की लड़ाई में बड़ी वीरता की। सिर कट जाने पर धड़ही से उसने सहस्रों वीर शत्रुओं को मार कर चन्देल राजा की विजय कराई। ,,
३० राजा विजय करके महोबे आया और आतेही ऊदल को बुलाकर बड़ा आदर किया और सेनापति बनाया। २५२९
३१ रानी मल्हन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे महानन्द की तरह मानती थी। ,,
३२ महला और भोपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बड़े उत्तम हैं। ,,
३३ राजा कालिंजर देखने को गया और वहां आल्हा को बुलाकर उन पांचों बछेड़ों को मांगा और बदले में बहुत घोड़े देने को कहा। ,,
३४ आल्हा की मा का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो वरन देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो। ,,
३५ परिमाल देव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो या हमारा देश छोड़ दो। २५३२
३६ आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने घोड़े आदि सब साज बाज लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा। ,,

३७ मोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया। २५२९

३८ आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुँचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हें अपने पास रखना। ,,

३९ चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा। २५३०

४० जगनक ने कन्नौज पहुच कर चिठी आल्हा को दी और सब समाचार कह कर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई। ,,

४१ जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है की महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश छोड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी चुगलों को दूर करे सूर सामतों को आगे करके बेखटके चौहान से लड़े। २५३१

४२ जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल की बहुत कुछ सहायता की और चदेल ने तुम्हारा भी आदर किया। तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों का धर्म नहीं है। २५३२

४३ जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है, तुम्हें आना चाहिये। २५३४

४४ देवल दे ने यह सुन अपने बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ। ,,

४५ ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोबे से परिमाल देव ने निकाला था वह भूल गई, जगनक तुम महोबे लौट जाव। २५३४

४६ देवल दे ने यह कह कर कि मैं बाझ क्यों न हुई मेरे बेटे क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते है और संकट में स्वामी को छोड़ते हैं, रो दिया। २५३५

४७ मा की बात सुनकर दोनों भाई सूख गये और महोबे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गये। ,,

४८ जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आये है। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढ़ाई की है सो परिमाल देव ने हम लोगों को बुलाया है। ,,

४९ जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे। २५३६

५० यह सुन आल्हा की आखें लाल हो गई और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे। ,,

५१ इतने मे जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमाल देव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मागी थी। ,,

५२ पत्र पढकर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लडने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूगा और दीवान को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी। २५३७

५३ बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि दे कर और जगनक को सिरोपाव आदि दे कर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया। ,,

५४ आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गये वैसेही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगलखोरों के मारे घायलों को न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ

से सब बात बिगाड़ी। २५३६

५५ जगनक ने कहा कि होनहार प्रबल है। अस्तु सबका गङ्गातट पर डेरा डालना और वहां लाखन सी और तालन सी से मिलना होना। ,,

५६ नदी उतर कर जयचन्द की कुमक साथ लिये महोबा की ओर सब चले। २५४०

५७ आल्हा ऊदल का सेना सहित पहुँचना, परिमाल देव को दूत का आल्हा ऊदल और कनौज की सेना के आने का समाचार देना। ,,

५८ दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न होना। २५४१

५९ अगवानी के लिये नकीब आदि को तैयार करना। ,,

६० आल्हा की मा देवल दे का आने का समाचार पा मल्हन दे का आगे से मिलने को चलना। २५४२

६१ देवल दे का पुत्र से कहकर जगनक के साथ पालकी में बैठ कर बाग में आकर राजा से मिलना। ,,

६२ जगनक का राजा से कहना कि चल कर लाखनसी से मिलिये। ,,

६३ राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार हो कर आल्हा का लेने और लाखनसी तालनसी से भेंट करने को चलना। ,,

६४ आल्हा का लाखनसी तालनसी को साथ लेकर आगे बढ़ना और बीच में राजा परमाल से मिलना। ,,

६५ परिमाल देव का जगनक को बहुत कुछ गौ हाथी आदि देना। २५४४

६६ आल्हा के आने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का कन्ह कैमास आदि को बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये कहना। ,,

६७ चंद का पृथ्वीराज से कहना कि अब युद्ध में देर न कीजिये आल्हा कनौज से पचास हजार सेना लेकर सात दिन हुए आ गया है। २५४५

६८ पृथ्वीराज का परिमाल देव को पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म विचार कर हमने दो महीना युद्ध बंद कर प्रतीक्षा की अब या तो लड़ो या महोबा छोड़ दो। ,,

६९ पत्र पढ़कर परिमाल देव का आल्हा आदि अपने सब सरदारों को बुलाकर परामर्श और लड़ाई आरम्भ करने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना। २५४६

७० पत्र पढ़कर पृथ्वीराज को आवेश आना और शुक्रवार को नगरी पर चोट दे चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होना। २५४८

७१ सेना का तैयारी, वीरों के हृदय में युद्ध उत्साह तथा अप्सराओं के उल्लास का वर्णन ,,

७२ उधर परिमाल देव का सेना सजना और नामी शुक्रवार को आगे बढ़कर दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना। २५४९

७३ परिमाल देव का आल्हा आदि सब अपने सरदारों को इकट्ठा करके परामर्श करना कि अब क्या कर्तव्य है। २५५०

७४ राजा का आल्हा को साथ ले महल में रानी के पास जाना और परामर्श करना ,,

७५ आल्हा का कहना कि जो स्वामी को विपति में छोड़ता है वह अनन्त काल तक नर्क भोगता है और जो प्राण का मोह छोड़ लड़ाई में मरता है वह सूर्यमंडल को भेदता है। २५५१

७६ मा का कहना कि मुझे बेटों का मोह नहीं है। ,,

७७ आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज की फौज को मार गिराऊंगा, सब साथियों को जीतूंगा, माता तुम्हारी लज्जा निबाहूंगा।

७८ राना मल्हन दे का कहना कि दंड

देकर देश की रक्षा करो उनके सामतो की वीरता की बडाई बहुत सुनी जाती है। २५५२

७९ ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात घायलों के मारने के समय मैने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लडो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मर लेंगे तब राजा का कुछ होगा। ,,

८० देवल दे को कहना कि होनहार टल नहीं सकती है, बेटा! तुम लोग चंदेल का नमक अदा करो। ,,

८१ राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गांव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िये देर न कीजिये। २५५३

८२ आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लडाई करना।

८३ आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय धर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कह कर सब वीरों को उत्तेजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा। ,,

८४ सबको विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिये सवेरे शत्रुओं का नाश कीजिये। २५५४

८५ आल्हा ऊदल अपने महल में गये और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास में उन्होने आनन्द से रात बिताई। २५५५

८६ पहर रात रहे स्नान कर गोरखनाथ का ध्यान होम नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का सामना करने को घोडे पर सवार हो दोनों भाई का चलना। ,,

८७ ऊदल का मां को आकर प्रणाम करना, मां का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बजाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो। ,,

८८ ऊदल का कहना कि मै सब सामतों से खड्ग के साथ खेलूंगा और पृथ्वीराज को भगाऊंगा। २५५६

८९ देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के कार्य में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो। ,,

९० ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुनकर सती नहीं होती वह नर्क में पडती है। ,,

९१ राजा का सवेरे उठ कर नगारे पर चोट दिलाना और आल्हा को बुलाना। २५५७

९२ आल्हा ऊदल को बुलाकर नागार की और बढने की तैयारी करना। तैयारी का वर्णन। ,,

९३ परिमाल देव का डर से कांपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीत कर मुझ कालिञ्जर पहुचाओगे तो मै आधा राज्य पाच लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हे दूंगा।

९४ चंदेल की सेना का आगे बढना। २५५८

९५ चंदेल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना। उधर आल्हा और ब्रह्मानन्द का अपनी सेना को सजना। ,,

९९ परिमाल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डर कर दश हजार सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना। २५६१
९७ कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना। ,,
९८ युद्ध आरम्भ होना। कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना। ,,
९९ कन्ह का अपनी वीरता से सेना में हलचल मचा देना। युद्ध का वर्णन। २५६२
१०० अपनी सेना का कटना देखकर आल्हा को अपना ओर के सरदारों को इकट्ठा करके ललकारना। २५६४
१०१ जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना। लाखनसी की वीरता का वर्णन। २५६५
१०२ जयचन्द की सेना का भागना। २५७०
१०३ अपनी सेना को भागते देख लाखनसी का ललकारना। सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डँट जाना। ,,
१०४ युद्ध का वर्णन। लाखनसी का मारा जाना। जयचन्द की सेना का भागना। २५७१
१०५ जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना। युद्ध का वर्णन। मकरन्द का मारा जाना। २५७३
१०६ मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना। २५७४
१०७ निहूदुरराय का घायल होना। कन्नौज की सेना का काम आना। पृथ्वीराज की विजय का वर्णन। ,,
१०८ आल्हा का कहना कि लाखनसी तो काम आये पर कुछ चिन्ता नहीं मैं तो अभी तैयार हूँ। २५७५
१०९ आल्हा का सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजित करना। ,,
११० आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट जाइए मैं लड़ाई देखने लगा। ,,
१११ ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को काट गिराता हूँ। मैं पीठ नहीं देने का। ,,
११२ ब्रह्मादित्य की वीर रस सनी बातें सुनकर आल्हा का सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना। २५७६
११३ आल्हा का उत्तेजन सुनकर सबका मरने कटने के लिये प्रस्तुत होजाना। २५७७
११४ आल्हा का शास्त्रों की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लड़ाई से हटता है वह नर्क में पड़ता है और जो वीरता से मारा जाता है वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय। ,,
११५ ब्रह्मादित्य का सब सरदारों और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहें वही करना चाहिये। सब सरदारों का इकट्ठे होना और लड़ाई की तयारी करना। २५७९
११६ सब साठ हजार सेना का सजना। २५८०
११७ आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात् तुलसी सालिगराम सिला आदि सिर पर बाँध करके लड़ाई के लिये आगे बढ़ना। ऊदल का लड़ने के लिये आगे होना। ,,
११८ ऊदल की लड़ाई आरम्भ होना। ऊदल की वीरता का वर्णन। २५८१
११९ चक्रपानि का मारा जाना। ब्रह्मादित्य का क्रोध करके अपनी सेना को ललकारना। २५८३
१२० कुँवर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबन्ध करना। आल्हा को सेनापति बनाना। ऊदल आदि सरदारों के साथ सेना

बाँट कर देना। २५८४
१२१ इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लड़ाई के लिये तैयार होना। २५८५
१२२ दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ। ,
१२३ कन्ह और ऊदल का युद्ध। चंदेल की सेना का उखड़ना। ऊदल का आगे बढ़कर लड़ना। २५८६
१२४ कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन। २५८७
१२५ कई सामंतों और चंदेल सेना के सरदारों का बरनी बरनी से युद्ध करना। २५८९
१२६ देवकर्ण की तलवार से संजम राय का सिर फट जाना और सत्रसाल के तीर से सिर जुड़ जाने पर उसका दोनों को मार गिराना। २५९१
१२७ कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन (सेना का युद्ध) २५९२
१२८ कन्ह के साथ के निड्दुर आदि सामंतों से फिर ऊदल के साथ के कई सरदारों का परस्पर युद्ध वर्णन। २५९३
१२९ जल्हन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल का पुकारना। २५९६
१३० ऊदल और कन्ह का बरनी से युद्ध और ऊदल का मारा जाना। २५९८
१३१ ऊदल का कंबध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक हजार सिपाहियों को मारना। २६००
१३२ ऊदल का मरना जान कर कुँवर ब्रह्माजीत का मोरचे पर आना। ,,
१३३ ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन। ,,
१३४ भाई का मरण जान कर आल्हा का पसर करना २६०१
१३५ आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष वचन कहना। २६०३
१३६ आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब चहुआन सेना को मूर्छित कर देना। ,,
१३७ कविचन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना। उसका कहना कि आल्हा सन्ह का अवतार है। वह गोरख से मिला था और उनकी सेवा करके इसने उनसे वरदान पाया था। २६०५
१३८ गोरख का आला प्रति वरदान। ,,
१३९ चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चामंडराय को परमाल को पकड़ने के लिये कालिंजर भेजिये और अत्ताताई की आल्ह की बरनी कीजिये २६०६
१४० राजा का चंद को कही करना।
१४१ अत्ताताई और आल्हा का युद्ध वर्णन।
१४२ कैमास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना। २६०७
१४३ जगनक का पराक्रम वर्णन ,,
१४४ अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन। २६०८
१४५ आल्हा का मूर्छित हो जाना। २६०९
१४६ कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा छूटने के पहले ब्रह्माजीत को मार लो। ,,
१४७ पृथ्वीराज का हाथी बढ़ा कर कुँवर ब्रह्माजीत पर बाण चलाना। ,,
१४८ तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर साग चलाना। २६१०
१४९ पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्ध। ब्रह्माजीत का मारा जाना। ,,
१५० आल्हा का अत्यंत कुपित हो कर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कविचंद का उन्हें काट देना। २६११
१५१ गोरखनाथ का समुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा ले जाना। २६१२

१५२ पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी का उसकी आँख निकालने लगना और सजमराय का उसे अपना मांस देकर राजा का बचाना। २६१३
१५३ सजम राय का प्राणान्त। ,
१५४ चामंडराय का परिमाल को कालिंजर से पकड़ कर ले आना। ,,
१५५ चामंड का कालिंजर के किले को लूट कर वहा चौहान के नाम का निशान रोप देना। ,,
१५६ पृथ्वीराज का खेत झरवा कर घायल सामंतों को उठवाना। २६१४
१५७ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को महोबे का थानापति नियत कर के दिल्ली को आना। ,
१५८ पृथ्वीराज का सजम राय के पुत्र को आधी गद्दी का आसन और आधे राज का पट्टा देना। २६१५

रासो सार का सूचीपत्र।

		पृष्ठ
१	आदिपर्व	१
२	दशम समय	१८
३	दिल्ली किल्ली कथा	२५
	लोहाना आजानबाहु समय	२७
५	कन्हपट्टी समय	२८
६	आखेटक वीर वरदान	३०
७	नाहरराय कथा	३४
८	मेवाती मुगल कथा	३७
९	हुसेन कथा	३९
१०	आखेटक चूक वर्णन	४४
११	चित्ररेखा समय	४५
१२	भोलाराय समय	४६
१३	सलष युद्ध समय	५२
१४	इच्छनी व्याह कथा	५४
१५	मुगल युद्ध कथा	५७
१६	पुंडीर दाहिमी विवाह कथा	५९
१७	भूमिस्वप्न प्रस्ताव	६०
१८	दिल्ली दान प्रस्ताव	६२
१९	माधो भाट कथा	६४
२०	पद्मावती विवाह कथा	६८
२१	पृथा विवाह कथा	७०
२२	होली कथा	७२
२३	दीपमालिका कथा	७३
२४	धन कथा	७४
२५	शशिव्रता वर्णन	८२
२६	देवगिरि समय	९५
२७	रेवातट समय	९९
२८	अनंगपाल समय	१०४
२९	घघ्घर नदी का युद्ध	११०
३०	कर्नाटी पात्र समय	११२
३१	पीपा युद्ध	११३
३२	करहरा युद्ध	११६
३३	इन्द्रावती व्याह	११९
३४	जैतराय युद्ध	१२१
३५	कागुरा युद्ध प्रस्ताव	१२३
३६	हंसावती नाम प्रस्ताव	१२५
३७	पहाड़राय समय	१३२
३८	वरुणा कथा	१३६
३९	सोम वध	१३८
४०	पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव	१४२
४१	पज्जून चालुक प्रस्ताव	१४३
४२	चन्द द्वारिका गमन	१४५
४३	कैमास युद्ध	१४९
४४	भीम वध	१५४
४५	विनय मगल नाम प्रस्ताव	१६०
४६	विनय मगल	१६७
४७	सुक वर्णन	१७१
४८	वालुकाराय प्रस्ताव	१ ५
४९	पगयज्ञ विध्वस समय	१८३
५०	सयोगिता नाम प्रस्ताव	१८५
५१	हाँसीपुर प्रथम युद्ध	१८९
५२	द्वितीय हाँसी युद्ध	१९३
५३	पज्जून महुवा प्रस्ताव	१९९
५४	पज्जून पातिसाह युद्ध प्रस्ताव	२१०
५५	सामन्त पंग युद्ध प्रस्ताव	२०३
५६	समर पंग युद्ध प्रस्ताव	२१०
५७	कैमास वध समय	२११
५८	दुर्गा केदार समय	२१९
५९	दिल्ली वर्णन	२३७
६०	जंगम कथा	२४१
६१	कनवज्ज कथा	२४५
६२	शुक चरित्र	३४९
६३	आखेट श्राप प्रस्ताव	३५६
६४	धीर पुंडीर प्रस्ताव	३६४
६५	विवाह समय	३८२
६६	बड़ी लड़ाई	३८३
६७	बान वेध समय	४३५
६८	राजा रैनसी नाम प्रस्ताव	४४९
६९	महोबा युद्ध प्रस्ताव	४५७

शुक चरित्र प्रस्ताव

[वासठवां समय]

सुख विलास वर्णन ।

अरिल्ल ॥ उत्तर पष्ष अषाढ पवित्र । आर्द्रा मंडल मंडि नषित्र ॥
दान भोग फल इह लछि गत्तिय । विलसन राज करै नव नित्तिय॥
छ०॥ १ ॥

पृथ्वीराज की मदान्धता ।

कवित्त ॥ इक जोवन धन मद । मद राजन मद वारुनि ॥
अरु मद देह अरोज । सग नव वनिता तारुनि ॥
अरु बधन पति साह । पैज कनवज्ज सँपूरिय ॥
एते मद राजन । दुप दद्दह करि दूरिय ॥
आनंद कंद उमगे तनह । सजोगी सर हस सरि ॥
जानै न राज अत्तम उदय । महि जोवन मानै सु परि ॥छ०॥ २

पृथ्वीराज का अतर महल में सभा करना और संयोगिता को अर्द्ध आसन देना ॥

आर्या ॥ आषाढे [1]मासे दुतियान । राज सभा मंडिय महिलान ॥
सा इछिनि दच्छिन पामारी । सील सुच पति व्रत सँचारी ॥
छ० ॥ ३ ॥
मुक्की सा जदि पुत्ति पँगानी । न्याय वट्ट प्राया प्रीयानी ॥
सिंघासन राजन सनमानी । कैलासी लच्छिय इह [2]दानी ॥
छ० ॥ ४ ॥

(१) एक को दिवस । (२) मो दामी ।

इक प्रौढह इक्कह मुगधानं। दुहु लच्छन बंधे बंधानं ॥
इंछिनि प्रौढ पविच्च पुंआरी। मुगध संजोगिय पंग कुमारी ॥
छं० ॥ ५ ॥

दुविधि प्रीति राजन प्रति पारी। चतुरत्तन चिंत्यौ बर नारी ॥
रहै बरनी [1]बरुनि बर संच्यौ। बिनयं बल पंगज [2]पति अंच्यौ ॥
॥छं० ॥ ६॥

मुख्य पटरानी इंछनी के हृदय में ईर्षा उत्पन्न हुई ॥

लिषि नेनं सु चिन्ह विनानं। बसि करि मोहि [5]सु मुष्य मयानं ॥
तिय परिमान तिया परि जानं। इहां अ[3]देस जु है कछु आनं ॥
छं० ॥ ७ ॥

मैं बिनया बिनया बर संच्यौ। कनवज्जनि बसि करि कर पंच्यौ।
बान पंच धरि काम विनानं। धर धर धुक्कि परी सहि आनं ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ सूरत [4]खन्नी धव धवनि। रमनि रमे रति रंग ॥
सम संजोगि आलिंगनह। भ्रमन चित्त अति भंग ॥ छं० ॥ ९ ॥

रानी इंछनी का अपने पालतू सुग्गे से दुःख कहना।

मुरिल्ल ॥ छिन छिन छिन किसलय तन तुट्टी। मन लोइन लोइन पर [7]सट्टं
अब्बु अ गढ़पति सुअ अति [6]संदुल। भोजन ताहि करावति तंदुल
छं० ॥ १० ॥

चोटक ॥ भषि तंदुल अंजुलयं भुषयं। क्रमयं क्रम कीर कहै सुषयं ॥
तबं इंछिनि इंछिनियं [7]मिलयं। बसयं बस बासनयं अलियं॥
छं० ॥ ११ ॥

(१) ए. कृ. को.-बरुनी। (२) ए. कृ. को प्रभु। (३) मो.-सम्मुख।
(४) ए. कृ. को.-बरन्नी। (५) ए कृ. को. मही। (६) मो -सुंदल।
(७) मो.-मिलनं-अलिनं।

अगया अग मदन पान नय । घन सार निहारन आननय ॥
रसना रस रचित दूअ चिय । रदन छदनं पिन पौन पिय ॥
छ० ॥ १२ ॥

कवरी कुसुम विसरत नय । श्रुति कुडल लाल दुसाजनय ॥
दुति मुत्तिय नासिकय सुहयं । सुनि स्वामिनि स्वामि सुह दुहय
छ० ॥ १३ ॥

सुग्गे का इछनी की बातों पर रुष्ट हो जाना ।

दूहा ॥ सुष दुष इछिनि सु दुज । मन मडिय सुनि कान ॥
मोसे बातैं बहुत किय । करौं पवरि चहुआन ॥ छ० ॥ १४ ॥

पुन. सुग्गे का कहना कि तू मुझे एक रात्रि के लिये सयोगिता के शयनागार में पहुचा दे ।

कवित्त ॥ सुक उचरत सु कीय । इछि पम्मारि पवित्तिय ॥
जैत अनुजि अजुलिय । सलप नदनि अनुरत्तिय ॥
समय अमय मरतार । हार हरनी उर जपिय ॥
अमय उमय दुरजनिय । वास विस्तरि [1]कर कपिय ॥
विलसैन विसरि रस प्रिय प्रियनि । बिरह विसरजन अमन करि॥
हारम्य सजोगिय निसि निगम । महल मोह मडिपहि धरि ॥
छ० ॥ १५ ॥

सौत वैर से सतप्त इछनी का सयोगिता से सबध बढाना ।

दूहा ॥ धर चिय कर चिय निसि निगम । जाम दुनिसि गई वित्ति ॥
सुक सुदरि मदिरनि मिल । [2]पजुलि प्रसन प्रतीति ॥ छ० ॥१६॥
पित्र धात सो मन मिलै । और वैर मिट जाइ ॥
सौति वैर अतर जलनि । दिन प्रति ग्रीषम लाइ ॥ छ० ॥ १७ ॥
मुष मिठ्ठी वित्ता करै । मन मे देत सराप ॥

(१) ए कृ को करु । (२) ए कृ को पगुलि ।

बंटै प्रेम सु प्रीय कौ। अंतर दग्गहै आप ॥ छं० ॥ १८ ॥

एक दिन संयोगिता का सब रानियों का न्योता करना।

एक दिवस संजोगि ग्रह। महमानिय सब सौति ॥
आनि सुष्प प्रगटन मछर। अधिक [1]सपतनी होति ॥ छं०॥१९॥
सौति सुहागिनि सुष्प दिषि। लग्गैं नैन अँगार ॥
ज्यों ज्यों वह छंदा करै। त्यौं त्यौं करवत धार ॥ छं० ॥ २० ॥
* धन ग्रह बंढन मुत्ति नग। हेम पटंबर सार ॥
पुनि चिय प्रिय बंढन सुरति। लगै अधिक पग धार ॥छं० ॥ २१ ॥

सुग्गे की चातुरी का वर्णन।

लघुनराज ॥ अयं महे मयं जुरी। प्रसाद प्रेम मंजुरी ॥
उछंभ पाठ पानयं। सगुन्न कीर जानयं ॥ छं० ॥ २२ ॥
सनूर निज्ज वासयं। प्रतीति रीति दासयं ॥
करं जु बंद सुंदरी। नरग्ग द्रष्टि मंजुरी ॥ छं० ॥ २३ ॥
निगम्म वेद बादयं। बरन्न आदि सादयं ॥
सु चातुरी चितं चढं। पुछंति कीरयं पढं ॥ छं० ॥ २४ ॥
निरम्म रूप निज्जयौ। तिलक्क सोर सज्जयौ ॥
जुवत्ति रीति जानयं। हरम्य तुष्ट सानयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

रानी इंछनी का पिंजरे को हाथ में लेकर संयोगिता के महल को जाना।

दूहा ॥ कर धर इंछनि कीर लिय। हीर मुत्ति जुत कंठ ॥
मन मंजुल तंडुल दधहि। प्रेम पुच्छ भ्रम नट्ठ ॥ ॥ छं० ॥ २६ ॥
दुज पंजर बहु भांति रचि। अरु [2]जरीय जर फूल ॥
आडंबर जग रच्चई। भट वेस्या भ्रत भूल ॥ छं० ॥ २७ ॥
मुरिल्ल ॥ सषि संकुल सावक्कित सज्जिय। [3]ग्रिह ग्रिहस राज सद्रिग बद्दिय ॥
दाहिम्मिय समदं महिलानिय। संजोइय भुवनह संपानिय ॥
छं० ॥ २८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सपत्ती।
(२) ए. कृ. को. नरीन।
* छन्द २१ मो. प्रति में नहीं है।
(३) ए. कृ. को -"ग्रह ग्रह राज सभा द्रग बद्दिय।

सयोगिता के महल का वर्णन।

वचनिका ॥ क्वचित् शृंगाराय। मुक्ति बधन विहाराय ॥
नवन दृष्टि निहाराय। रजन धनसाराय ॥
मृगमदगंध उछाराय। अलि निवास उमाराय ॥
मृदु मजरी रस सुराराय। एव काम विहाराय ॥ छ० ॥ २९ ॥

सयोगिता का सब रानियों को उचित आदर देना।

सुरिस ॥ द्रिग द्रिग सों रजिय पगानिय। आसन समरकंद दिय दानिय॥
जर जरीन चवरिय तिर चानिय। काजल कुंकुमय क्रत पानिय॥
छ० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की दसो रानियों के नाम।

वचनिका ॥ प्रथम पुडीर जादी। इंद्रावती राज सादी ॥
सुंदरी हमीर जानी। जबू गिर इछिनी मानी ॥
कूरम्भी पज्जून जाता। बलिभद्र नाम भ्राता ॥
कंजानी बड जन गज्जरी ज्ञाता। सदलासामि राता ॥
हस गमनी हसावती सुजानी। दिवासी सरूपा सुमानी ॥
दाहिमी रूप रवनी। मत्त मातग गमनी ॥
आदर आदि राजा। बीनान कठ बाजा ॥ छ० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज और सयोगिता के प्रेम का प्रभुत्व।

दूहा ॥ न्रप बर चामर सपि सरहि। वपु गुजहि हर नच्छ ॥
कला केलि दिन दिन चढिय। सुभग सँजोई सिच्छ ॥ छ०॥३२ ॥
सुभ आदर रानिय सुपट। चरित चित्त चहुआन ॥
दुर दिन दाहिम्मिय महिल। किम किन्नौ पायान ॥ छ०॥ ३३ ॥
श्लोक ॥ सगुनं ज्येष्ठ जेष्ठाना। ज्येष्ठ रूप सरूपिना ॥
ज्येष्ट पितु मान राजाना। ज्येष्ठा[1] मान विलोकनी ॥ छ०॥३४॥

(१) का ए जेष्ट।

पृथ्वीराज का रनिवास में जाकर सब रानियों को देने के लिये वस्त्र आभूषण देना।

दूहा ॥ राजन उठि मन्त्रिय महल। गहिलै गुरजन सथ्थ ॥
जु कछु चरित तिहि महिल किय। सुनहु सु बूझन कथ्थ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

नग मुत्तिय बंटन बसन। तात संजोइय दत्त ॥
सहस असंषिन लष्षियौ। गनि को कहै निरत्त ॥ छं० ॥ ३६ ॥

रसावला ॥ छबी छब्बि पट्टं, अनेकं [1]निघट्टं।
मनी मुत्ति बट्टं, नगं नेम तट्टं ॥ छं० ३७ ॥
सु गंधं सु घट्टं .... संजोगि सु ग्रेहीं[2]।
उछंगं सु देहीं ॥ छं० ॥ ३८ ॥
अलष्षंग नानं, सु कोरी प्रमानं, सची सोभ रागं। द्रुतं देव वागं
छं० ॥ ३९ ॥
अनंदं सु लागं, निसा कित्ति जागं। भुअं भान भागं, धुअं मत्त मागं
॥छं०॥४०॥
दिपंतौ सुहागं, [3]अवूरत्त रागं। * * * * ॥ छं० ॥४१ ॥

सब रानियों का परस्पर मिल कर अपनी अपनी विरह वेदना कहना।

दूहा ॥ अनु दिन सषि संकुल विकल। अकल केलि सुनि चंद ॥
बरष एक सषि सुष समझि। परषि प्रीति फुनि मंद ॥ छं०॥४२ ॥
परसप्पर मिलि बत्ति कहि। हम नहिं दिट्ठौ कंत ॥
बरष इक्क हम षम कगी। नह लद्धी गति अंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
क्रम क्रम तट छंडै सरहि। बर छंडै रति जोर ॥
मति छंडै बिरह तनहा। गति पावस मति मोर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) ए. कृ. को.-निहद। (२) ए. कृ. को.-सुग्रहे। (३) ए. कृ. को.-अनुरत्त।

अरिल्ल ॥ पमइ न सब किसु लच्छिन पिम्महि । दहियन रोस सुधारति [1]नेमहि
रमिय न निज निज पति क्रीलान । बिन इछिनि सब येह सुगान
छ० ॥ ४५ ॥

रानी इछनी का पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम की परीक्षा करने के लिये संयोगिता को अपना सुआ देना और संयोगिता का उसे प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार करना।

इछिनि इछिय अच्छनि रष्यन । राज सजोइय प्रेम परष्यन ॥
दुज दिय हथ्थ प्रजक सजोइय । निसि गति मोहि कथा सुनि तोइय
छ० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ दिय पामारि पविच सुक । लिय सजोइय वदि ॥
पन प्रजक टट्टन टरति । गति न कहै सुर सद्दि ॥ छ० ॥ ४७ ॥

संयोगिता का सुग्गे को अपने महल में ले जाना। उसकी शोभा वर्णन।

वद्रायन ॥ लीय सु दुज्ज सजोइय पत्तिय साल वर ।
जहा आभास सुभासहि मनि मानिक्क जर ॥
चित्र विचित्र विचित्र सु चित्तह रजि रस ।
थभ सुरग अनूप अलक्कत अग तस ॥ छ० ॥ ४८ ॥
विधि विधि वास तरग अनग उछाह अति ।
मधु माधव किय वास सुभासित रग रति ॥
जर पजर कल धौतन उत्त विराजि मनि ॥
सुप आये पित ताम विरामित सोल बनि ॥ छ० ॥ ४९ ॥
आर्या ॥ मिलि सा सुष्य सयान । मानि गानि अन्न उत्तिम विधान ॥
सत्त विहग विहगर बान । मज्जन सजोगि रचि रहि ठान ॥
छ० ॥ ५० ॥

(१) ए कृ को मेनह ।

संयोगिता का स्नान करके नवीन वस्त्र आभूषण पहिनना। संयोगिता के अंगों का सौन्दर्य्य वर्णन।

मोतीदाम ॥ रचे सब मज्जन रज्जन ठान। निरंतर अंतर ग्रेह गुरान ॥
सजे सब भूषन पंगज अंग। कलेवर सानि सनेह सु ठंग ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लहरिय कज्जल लोइन लोइ। अनंग उभार चढ्यौ तन तोई ॥
धरे बर पट्ट कनक्कस रूअ। करे बर पट्ट सु घट्टित दूअ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरोहिग पट्ट संजोगिय ताम। मनों सजि पट्टर तिज्जय काम ॥
अनेक सुगंध सुबासित बार। सवी सब आनि सु बंधिय धार ॥
छं० ॥ ५३ ॥

सने हरि आनि सुधा रस बास। बहू बिध उरवत अप्प सु राज ॥
जलप्पय वासन तज्जिय तिन्न। अरोहित पट्ट जिके चित चिन्न ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सुगंध सु धूप अनोपम वास। अनेक सु भांति बिबिद्ध बिलास ॥
कनप्पय बुंद चुवै चर केस। तही भय तग्ग सु रप्पहि रेस ॥
छं० ॥ ५५ ॥

उभै कुल उप्पर कच्च चुअंत। मनों मुति नागिनि संभु [1]युअंत ॥
कुचग्गलि केस सुभै सित लग्ग। सुधा सचि कुंभ सरप्प उरग्ग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

विराजित भंति अलक्क सु मुप्प। मनों हरि बीहरि सग्गिय रुप्प ॥
तिलक्क सभाल रची रचि रेष। मनों मय ग्रेह दुआरनि देष ॥
छं० ॥ ५७ ॥

धनं भुअ दूअ तिलक्कस रानि। जिते धर अद्धर सग्ग [2]सुतानि ॥
रचे जल कज्जल रेष सु भेष। मुषी भय काम जरे जनु एष ॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए. को.-पुअंत। (२) मो.-सुजानि।

चलचल नेन सु नासिक रूअ। कुसुमह मधि कलरै [1]अलि दूअ॥
कटाच्छह सेत चलै सति वक। नयै जनु वीर कचोल कनक॥
छ० ॥ ५९ ॥

तिलक जरावध वद्दन विंदु। सज्यौ रथ सारहि काम सु इंदु॥
जुआ भ्रुअ कंध धरे कच एन। तटकह चक्र जिते तिअ तेन॥
छ० ॥ ६० ॥

चिबुकह बिंद असेत सु वानि। प्रसारित कंज अली सिसु ठानि॥
सुनै जुरि आनि सु नग्ग सु घट्ट। जनों सजि काम जिते दुअ पट्ट॥
छ० ॥ ६१ ॥

रोमावलि वान मनमथ तान। करै कुच ओट द्रिग म्रिग [2]ठान॥
रची वर मानिक [3]पुद्रनि रुच्च। मनोहरि रास सबै ग्रह सुच्च॥
छ० ॥ ६२ ॥

बने सब भूषन धारिय अत्ति। झनक्किय नूपुर घूघर गत्ति॥
मनों बजि वाजिन काम स भूप। विजै कंज वाज सबै पुर नूप [4]॥
छ० ॥ ६३ ॥

[5]तमो रसमो रस पूरिय मुष्प। बनै सब रास तजै भव दुष्प॥
अनोपम रूप सिंगार वितूल। धरै कवि मत्त रहे गति भूल॥
छ० ॥ ६४ ॥

सयोगिता का सेज पर जाना और सुग्गे को भी चित्रसारी मे ले जाना।

चौपाई ॥ रचि शृंगार अनोपम रूप। चातुरता गति मति आनूप॥
मगहि इष्ट सुक मति गत्ती। विधि परजंक [6]सजोगि सपत्ती॥
छ० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ गय गति इछनि दीय दुज। लिय मन हरष सु जानि॥
इह चातुरता दूत है। कहन सुनन परिमान॥ छ० ॥ ६६ ॥

(१) एकृ का अति। (२) एकृ को थानि।
(३) एकृ को पुद्रनि, पुद्रनि। (४) मो नर।
(५) मो -"तमोर सपूरिय मोरि समुष्प" (६) एकृ को सजोइय।

शैय्या सुखगा।

विराज ॥ प्रजंकं सु जोई, तलप्पं सु सोई। प्रसूनं समोही, कुंज सुप्प सो
छं० ॥ ६७ ॥

धुअ धूप रुद्दं, उअं मुक्कि गंधं। प्रसंसं प्रसूनं, फलं वासि पूनं॥
छं० ॥ ६८ ॥

त्रिषा तुष्ट कामं, रति देव धामं। दुअं स्वस्तिमंचं, निरप्पै सुगं
छं० ॥ ६९ ॥

निसा दीप दानं। रतिं को प्रमानं। * * * ॥छं० ॥ ७

रतिवर्णन।

वित्त ॥ रस क्रीडत बिपरीत। चिंति दंपति दंपति रिति ॥
पंच पंच सुट्ठए। पंच लग्गेति पंच पति ॥
उठिय बाल सज्जिय दुकूल। सुक पंजर सु धाम चित ॥
हर हराट उप्पज्यौ। तजिय अकौट कानि छत ॥
धरि थान कथ्थ सुक सौं कहिय। रहि न लज्ज लज्जी विलग ॥
जग पुब्ब भाव भांवरि सु बत। सुवर बाल उट्ठी सु द्रिग ॥
छं० ॥ ७१ ॥

[1]ससि रुन्नौ [2]मग [2]बह्यौ। कह्यौ सुक सप्त दीप तन ॥
तम सु देव पुलि पंग। जोति संदीप छिनहि छिन ॥
हुई लज्ज अचलीय। कलिय मुद्दं गति जानं ॥
छिम छिम तमह रंतिपति। परसि पहु पंजलि थानं ॥
त्रिप तुष्टि काम कमलारमन। भवन द्रष्टि रुचि रमन मन ॥
जिम जिम सु बिनय बिलसिय प्रबल। तिम तिम सुकबुद्धिय प्रम
छं० ॥ ७२ ॥

दूसरी रात्रि का रति विलास वर्णन।

तारक ॥ * दुतिया दिन संझ बिजै कुल कम्म। सहचरि प्रौढ़ रमै रति रम
दुप्पम सुष पिम्म मनोहर रीति। बिलसिय आस भयं भव जीति
छं० ॥ ७३ ॥

(१) को.-समि। (२) को.-हहयौ। * मो -प्रति में नहीं है।

युत्त ॥ आसीनी सज्जानी विग्यानी उज्जानी निरधानी ध्यानी उरथानी॥
वय न्यानी सम्मानी अलसजु तानी उद्दित न्यानी सपि आनी॥
पारस सजोइय मुप मुप मोहिय सतोहिय * *
* * * * * * छ० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ सकल अकुलय विपय्य। चप कंकन उन पान ॥
प्रथम रवन रवनिय मिलिय। रति गति राजन थान ॥
छ० ॥ ७५ ॥

सुख सहवास का क्रमशः चाव और आनद वर्णन।

चोटक ॥ तन कंपन कु पुनय पुनय। सनय सनय सिरय धुनय ॥
बलय चलय नकय चकय। अलि भारन मजरिय भगय ॥
छ० ॥ ७६ ॥

प्रियन प्रियनेति पियूप पिय। धकय धक छडिन तोहि अय ॥
लजन रजन भजन भवन। चतुरष्ट न तुष्ट रचै रवन ॥छ०॥७७ ॥
कलिन अलिन ललिन वयन। सयन [1]चलिन चलिन रचन ॥
* * * । * * ॥ छ० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ सुनि संचल अचिल रवनि। तन धर हरि दिढ कम्म ॥
सपि पारस [2]सारस व्रतन। नव कर बंधिलि अरम्म ॥छ०॥७९॥

पारस ॥ नै व्रत सज्ज्या, जोवन पुज्ज्यौ।
छ० ॥ ८० ॥

सैसव सातो, रम्मन कौंता ॥
विलसिन तांता, सुर [3]तित आता ॥ छ० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ अग्गिराज सजोगि सों। मानि चतुरभय चित्त ॥
एकादस पूरे अपंग। पचम परसु सहित्त ॥ छ० ॥ ८२ ॥

एकम से लगा कर पूर्णिमा पर्य्यंत का रति वर्णन।

चोटक ॥ हक्रित हक्रित क्रितय क्रितय। दह अगुलि समुपय मितय ॥
अमिय अपि वासन त हितय। मनु आप निपज्ज पत चितय ॥
छ० ॥ ८३ ॥

[१) ए कु को सलिन। (२) मा पारस। (३) ए क को सुरतिन।

सुक द्रष्टिहि द्रष्टिनि छोह लजं। दिव दीपक अंचलयं जु भजं॥
दुतियं दिन केलि कला बरयं। चितयं चिष मंगिह सभावरयं॥
छं० ॥ ८४ ॥

उभयं दुति दीहनि चामरनं। दुति[1]तीय दिनं सम तुष्ट रनं॥
षट षष्टिय लज्जि सु नीर दियं। सत सत्तय पौमिनि प्रेम प्रियं॥
छं० ॥ ८५ ॥

चवदून दिनं दिनयं दिनयं। निज नोमिय नौरसयं भनयं॥
दसमी दिसि वृद्धिय प्रीति घनं। दस एकह एक सु एक मनं॥
छं० ॥ ८६ ॥

रति द्वादस द्वादस देवतियं। दस तीनि सिआर षिलो कलियं॥
दस चारि चयं सुकयं सुकयं। सुभ पूनिम इंछिनि सो भषयं॥
छं० ॥ ८७ ॥

रति के अंत में दंपति की प्रफुल्लता और शोभा वर्णन।

कवित्त॥ देषि बदन रति रहस। बुंद कन [2]स्वेद सुभ्भ बर॥
चंद किरन मन मथ्थ। हथ्थ कुट्ठे जडु डुक्कर॥
सु कविचंद बरदाय। कहिय उप्पम श्रुति चालह॥
मनो मयंक मनमथ्थ। चंद पूज्यौ मुत्ताहय॥
कर किरनि रहसि रति रंग दुति। प्रफुलि कली कलि सुंदरिय॥
सुक कहै सु किय इंछिनि [3]सुनवि। पै पंगानिय सुंदरिय॥
छं० ॥ ८८ ॥

दूहा॥ अप्रापत प्रापति सु पति। कर संजोइय काम॥
उर आनंदिय अप्प वर। ते चिय पुज्जिय वाम॥ छं० ॥ ८९ ॥
सुष मुष मंडिग रति रवन। सुभ इंछिनि प्रति प्रात॥
गुरजन गुर लज्या दवन। विपथ विकंपन गात छं० ॥ ९० ॥

इंच्छनी का सुग्गे से संयोगिता का रतिसार पूछना।

लज्जन लप्पन जन सजन। कहुं सुक संकुल पंष॥
अनि रतु तु तन जंपनह। तं षिन षिन तं अष्षि॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-दीय। (२) मो.-श्रेद। (३) ए. क. को.-सुनहि।

सुग्गे का कहना कि यद्यपि ऐसा करना पाप है परतु कहता हू सुने ।

हसन गुरज्जन सवकि मुष । दूषन सुगध वधूनि ॥
फिरि फिरि फिरि पजर परनि । मंजरि कीलि हरि धनि॥छ०॥९२॥

संयोगिता के मुख की शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ सुनि इछिनि [1]पगी जु रवन्नी । धपत राज सुभ लाज मवन्नी ॥
आननय काननय कन्नी । पूनिम पूरनय सुक वन्नी ॥ छ०॥९३॥

सुग्गे का पृथ्वीराज और संयोगिता का अतरग रास वर्णन करना और सखियों सहित इच्छनी का चित्त दे सुनना ।

वाधा ॥ छदम छदयल सुक छद । मो मजीरनय सुर मद ॥
वर किंकिन पकित पुकार । हकित कित्त सुर मुर उचार ॥
छ० ॥ ९४ ॥
विपन पनोकनु मधरि धीर । पडन कल पल करि अति भीर ॥
कच ग्रहि रति रिझन रग रोर । पपुलित ललित गति मोर ॥
छ० ॥ ९५ ॥
काकज पाल नय सव दधी । भाष छ उचरिय [2]मन सुधी ॥
अम्बतय स्रतय अभ राज । तंदुल मदुलय करि साज॥ छ०॥९६॥
भूषन दूषनय करि दूर । उम्मन चुम्मनय करि पूर ॥
ज ज लोचनय छिन जूर । तत उचरिय सुष मूर ॥ छ०॥९७॥
ह ह ह कुलय काल लज्जी । चरचर चच पुटी सुर सज्जी ॥
छ० ॥ ९८ ॥
[3]धर धर छत्तिय नच्छित लोल । हर हर सावकिय हसि वोल ॥
दुदुन मदुनय दुरि दुरिय । परिजय पक पज कनि सुरय ॥
छ० ॥ ९९ ॥

(१) ए कु को पगिनि । (२) मो परि ।
(३) मो धर धर धर छतियन छिन लोल ।

सरनं मारयनं प्रिय सरयं। तिथि विधि पंच दसी दिन भरयं॥
इहि विधि केलिनि पाइ जियन्नं। इति एकंत पुकारि पियन्नं॥
छं०॥१००॥

कवित्त॥ सुक्किय वक्र कटाछय। श्रवन लग्गत श्रोपम थपि॥
शिव कंद्रप द्रग कूप। श्रवन कन्या लेयन धुपि॥
दुति तरंग उल्हसहि। फेरि ता कूपन माही॥
तात रंग सागरह। पर्यौ मनु बुंद अथाही॥
सुक कहै सुकिय इंछनि सुनहि। अग्ग अमेकन छंडि तत॥
तारंग तंत तरुनी सु वर। सुवर बाल गहुट्टिय सुमति॥छं०॥१०१

दूहा॥ श्रुति राजन हुंकित हँसन। कुंचित हँसन नयन्न॥
चुटि चाटंकन भगन किय। नग बिनु रहन भवन्न॥छं०॥१०२

सुग्गे के दूतत्व की धृष्टता का कथन।

कुंडलिया॥ जो रस रसनन अनुदिनह। अधर दुराइ दुराइ॥
सो रस दुज कन कन कह्यौ। सषिन सुनाय सुनाइ॥
सषिन सुनाइ सुनाइ। हियै सुचि सुचि लज मन्नह॥
सुथल विथल थल कंपि। नेन नटकीय नहन्नह॥
जियन मरन मिलि मेंन। कह्यौ अद्भुत प्रिय रस॥
ए रस अंतर भेद। प्रीय जानै चिय जो रस॥छं०॥१०३॥

इंच्छनी का संयोगिता के गूढ अंगों के विषय में पूछना।

दूहा॥ फुनि पुच्छति इंछिनि सु कहि। सौति रूप मनि साल॥
तौ पुच्छौं कैसी कहै। अंतरंग सु विसाल॥छं०॥१०४॥

सुग्गे का संयोगिता के प्रच्छन्न अंगों का वर्णन करना।

कवित्त॥ क्रिसल थूल सित असित। थान चव एक एक प्रति॥
पानि पाइ कटि कमल। सथल रंजे सुच्छम अति॥
कुच मंडल भुज मूल। नितंब जंघा गुरुअत्तं॥
करज हास गोक्रन्न। मांग उज्जल सा उत्तं॥

कुच अग्र कच द्रिग मद्धि तिल। स्यामा अंग सब्ब गवन ॥
षोडस सिंगार सारूव सजि। साइ गंजै सजोगि तन ॥छ०॥१०५॥

सुग्गे का सम्पूर्ण शृंगार सहित संयोगिता के नख शिख का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सजोग जोग जय संत तठ। आनंद गान जिन करिय कठ ॥
बर रचिय केस विचि सुमन पति। विच धरे जमन जल गग कति॥
छ० ॥ १०६ ॥

सिर मद्धि सीस फूलह सुभास। किय जमन अद्ध सुर गिरि प्रकास॥
कुंडली मंडि वदन सु चंद। कसतूर ढिगह घनसार विंद ॥
छ० ॥ १०७ ॥

बर किरन भोम परसत प्रकार। मनों ग्रसित राहु ससि सहित तार॥
ओपमा भूअ वेनी विसाल। नागिनी असित ससि सहत बाल ॥
छ० ॥ १०८ ॥

ओपमा भाव उच्चरि विदूप। मनु ससी राहु सित पय मजूप ॥
सैसव्व मद्धि जोवन प्रवेस। देषियै नैन मग अति सुदेस ॥
छ० ॥ १०९ ॥

ओपम सु कव्वि बरदाय कीय। ज्यों ग्रेह उच दिसि जल निदीय॥
सित असित सोभ द्रिग वर विसाल। कैं ससिज प्रगटि तम मद्धि वाल॥
छ० ॥ ११० ॥

ओपम्म चंद नासिक विसाल। मनों अरै लग्न रवि राहु वाल ॥
ओपम्म अधर कवि कहि विदुप्प। उग्गरे अद्ध ससि चषि मजूप ॥
छ० ॥ १११ ॥

सोभै सुरंग दंतनि सु पंति। कंदलीन केत कै मुत्ति कंति ॥
कै तरु सु बिंब लुबी सुरंग। ससि भूम गंग जल सिंचि अनंग ॥
छ० ॥ ११२ ॥

मधु मधुर बानि कलकंठ रहु। आनंग अनेव केवल सु सद्द ॥
तारक तेज नग जटि सुरंग। ओपम्म चंद तिन कहि सु अंग ॥
छ० ॥ ११३ ॥

[1]वित्ततह सत्त सब चित्त हूर। सेवहित सत ग्रह तप करूर॥
नन धरै अरनि धारे सु तल्ल। तिन भमिग्ग रहिग ससि कला सल्ल॥
छं० ॥ ११४ ॥

कप्पोल कला कल नगज मीप। दुहुं परी होड़ मयुषं समीप॥
चिवली सुरंग बिच पीति जोति। ओपम्म सुवर तित भमिग्ग होति॥
छं० ॥ ११५ ॥

उछराह रेह गुरु जोज गम्म। परदध्यि देत ससि देषि हम्म॥
मुतियन माल कुच विच सुरंग। प्रतिब्यंब फलकि मुष उदिम अंग॥
छं० ॥ ११६ ॥

ससि भ्रंग मीन विद्रुमनि चाहि। ससि सहत कढत अहि गंग मांहि॥
[2]जगमगत कंठ सिर कंठ केस। मनु अट्ठ ग्रह चंपि ससि सीस वैसि॥
छं० ॥ ११७ ॥

नग माल लाल कुच पर विसाल। ओपम्म चंद चिंती सु साल॥
चिंतिय सु बैर बर सिंभ पुल्ल। मनमथ्थ जक्क मुष फुंकि उच्च॥
छं० ॥ ११८ ॥

निक्करि सु माल उर बली भासि। ओपम्म चंद वरदाय तास॥
बिय पंति सोम रचि अति सुलाह। ससि गहन चढत जनु न्नपति रा
छं ॥ ११९ ॥

सोभै चिमाल कुच तट तरंग। जनु तिथ्थराज मंडलौ अनंग॥
सोभै सुरंग कुंचकी वाम। जनु संबरेह पटकुटी काम॥छं०॥१२०।
राजीव रोम राजै सु कांति। उत्तरन चढ़त पप्पोल पंति॥
चित लोभ भरिग ग्रहराज जंति। दिठि राह मेर परसरि सुपंति॥
छं० ॥ १२१ ॥

कटि तट्ट छुद्र घंटिय रुरंत। जगमग सु नग्ग ओपम्म कांति॥
कविचंद देषि ओपम्म भासि। ग्रह लगे चंपि जनु सिंघ रासि॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटि घाट्ट निट्ठ सुट्ठहि समाय। मनु ग्रहन धनुष मनमथ्थ राय॥

१) मो -विनतह। (२) मो -जगमत्त।

नितंब गरुअ द्रुप्पन कि काम। उदै अस्त मानु जनु पति वाम॥
छं० ॥ १२३ ॥

वर जंघ रंभ विपरीत तंभ। कै पिंडि दिष्ट मनमथ्थ सभ्भ॥
ओपम्म वीय कविचंद सांदि। मनमथ्थ हथ्थ उत्तरि परांदि॥
छं० ॥ १२४॥

पिंडीय पग्ग ओपम्म थट्ट। कुंकुम कनक्क सम तेज घट्टि॥
नप न्नमल तेज तारक्क मुत्ति। कंद्रप्प द्रप्प दिपि कार धुत्ति॥
छं०॥१२५॥

षोडस सु सज्जि सजि मुत्ति बाल। घुंघरन नग्ग जटि अति सुसाल॥
ग्रह अट्ठ होड तजि होड हंस। सजि तेज भूलि गति भूलि तंस॥
छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के परस्पर प्रेम नेम और चाह का वर्णन ।

दूहा ॥ अह निसि सुधि जानै नहीं। अति गति प्रौढ़ सु रथ्थ ॥
गुरु बंधव स्त्रित लोक सब। मन विपरीत सु गति ॥छं० ॥ १२७ ॥
विजुरन मन चित्तै नहीं। मनो वसंत रिति अंग ॥
रस लोभी भ्रम भ्रम भ्रमे। विसरांए सब अंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चोटक ॥ सगना जिहि चारि परंत गुर। सोइ चोटक छंद प्रमान घर॥
पय मत्त बन बरन बरन। निय नाग कहै चय जा अवन॥
छं० ॥ १२९ ॥

पवन गति सीत सुगंध सु मंद। लगै भ्रम रीतन मन्न अनंद॥
जगी जगि अंग निअंग निवार। सुनिअनि कंठिय कंठ सहार॥
छं० ॥ १३० ॥

कुहुकंहु काम सु धाँम धमारि। उडै पिय पंथ पराग सवार॥
सुकलित मलित हलित पौंन। नन कविचंद रसमि सु मौन॥
छं० ॥ १३१ ॥

प्रथम्मह प्रेम दुवं सुष [1]लष्षि। उदै रवि रथ्थ मनों रथ मष्षि॥
मुदै न लिन अलिन रहि मंझि। मधु ब्रत मत्त बसो जिन संझ॥
छं० ॥ १३२ ॥

रहै गहि संपुट लंपट नारि। सु पंष पराग हरै उन हारि॥
रसं घन धुंटि गुलाल सु थाल। धटी धटि लग्गि फु,निप्फ,नि लाल॥
छं० ॥ १३३ ॥

बरब्बर बौर सिरी बर बौर। गिरै जिनि लग्गि पिया अलि और॥
मधू रस मिश्रित पाडर डार। बजे रव रंग उपंग सु मार॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु वेत सेवंति कुमक्क,म काज। षिजै जिन [2]षीन अहो षगराज॥
सु चंपक चारु वितामन कंध। दरषान देवि कियौ दस गंध॥
छं० ॥ १३५ ॥

लगै अँग केतु कि पंग पराग। तुटै लगि कंठक कोइय भाग॥
बन ब्रत्त बेलि बिलंबहु बेलि। करों दिन केक करन्निय केलि॥
छं० ॥ १३६ ॥

लबक्किय लग्ग लवंग निहार। मनों न सु गंध कुसग्ग अपार॥
सहै न बियोग बुरै सिर [3]गात। तजै तिन कंत बसंत प्रमात॥
छं० ॥ १३७ ॥

अबस्सर प्रीति न मुक्कहि प्रान। [4]हँसै तिन नेह न बैन सुजानि।
इसी विधि कंत मधू मधु नारि। कहै मिसि धार बसंत बिचारि।
छं० ॥ १३८ ॥

अली लगि कंत किमंध सु गंध। लगे नप काम पगानिय बंध।
रते रति राग पराग बचन्न। रहै टग लग्गिय काइक मन्न॥
छं० ॥ १३९ ॥

सबै षट रित्तुनि राज बसंत। भमे भमरावलि नाम सु कंत॥
* * * ॥ * * * छं० ॥ १४० ॥

(१) ए- कृ, को.-लग्गि अग्गि। (२) मो -हीन। (३) मो -मात।
(४) मो.-हसै तिन नैनह बैन सजान।

दपति के रतिरस की रात्रि के युद्ध से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ लाज गढ्ढलोपत। वहिय रद सन ढक रज्ज ॥
अधर मधुर दपतिय। लूटि अव ईव परज्ज ॥
अरस परस भर अक। पेत परज क पटक्किय ॥
भूपन टूटि कवच। रहै अध बीच लटक्किय ॥
नीसान थान नूपुर वजिय। हाक हास करपत चिहुर ॥
रति वाह समर सुनि इ छिनिय। कीर कहत वत्तिय गहर ॥छ०॥१४१॥ *
कर कंकन मुद्रिका। छुद्र घटिका कटि तट ॥
वसन जघन पहिराइ। भार वित्तयौ सघन थट ॥
कुच निहार कचुकिय। भुजनि वधे वाजू वंध ॥
पग तोडर नूपुरिय। हरे रुपि अडिग पेत मधि ॥
सधाम काम जीतें भरनि। करिय रौझ कनवज्जनिय ॥
तवोल पान दीनो अधर। कीर कहत सुनि इ छिनिय॥छ०॥१४२॥ *
तम रस तौय सँजोगि। सुमन सहत्तौय विसराइय ॥
पति कौं नव रस भँवर। प्रीति पोमिनि सिरछाइय ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ। हस सरह पग रज्ज ॥
नेह वीर वचननि पराग। लाज कोदिव सुप पज्ज ॥
जन जत रुप लहरीति गुन। दुत्तिय यह थाह मयन ॥
सकत प्रेम उद्दित उदित। वर फुल्लित वर सुनि वयन ॥छ०॥१४३॥
मदन वयट्टौ राज। काज मचौ तिहि अग्गै ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ। भेद सचारि विलग्गै ॥
काम कमलनी वनिय। चक्कनिय निय नित्य भर ॥
मोह विहि पिक्कभति। प्रज्ज मो मनिय पिड वर ॥
वीनीति मधुर तिहि लोभ वसि। वसि सजोग माया उरह ॥
जथपन मग्गगहि अँगम गति। न्यप क्रम सह छुट्टिय वरह॥छ०॥१४४॥

* छन्द १४१ और १४२ मो प्रति में नहीं है।

ांयोगिता की रामुद्र और पृथ्वीराज की हंस से उपमा वर्णन।

हा ॥ दुहु दिसि बढिय सनेह सब। संजोगिय वर कंति ॥
जियन बार बिछुरत तरुनि। हंस जुगल बिछुरंत ॥ छं० ॥ १४५ ॥
रूप समुंद तरंग दुति। नदि सब की मलि मानि ॥
गुन मुत्ताहल अषि कै। वस किन्नौ चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
गुर भ्रित त्रिय देषंन प्रिय। दुज मिटि दीन न वार ॥
निमुष रूप संजोग की। टरै न वार अतार ॥ छं० ॥ १४७ ॥

ंडलिया ॥ उज्जल कहु संजोगि में। नेह स पुत्ती रूप ॥
कला सहित पूरन्न ससि। अहि अजीज मिलि भूप ॥
अहि [1]अजीज मिलि भूप। तिमर तोरेज पंग दल ॥
राह रूप सुरतान। लग्गि सु कीनी कीव बल ॥
* * * । तप विडंभूत न सुज्जल ॥
चकवा कहु जनंन। सुष अरपति अति उज्जल ॥ छं० ॥ १४८ ॥

दूहा ॥ दो इंछनि पुच्छै सषी। किहि वय किहि मति रूप ॥
किहि लच्छन उनिहार किहि। किम दच्छिन रचि रूप ॥
छं० ॥ १४९ ॥

रांयोगिता के अंग प्रत्यंगों पर प्रतीयालंकार कथन।

कवित्त ॥ ससि रुन्नौ मग वच्यौ। काम हीनौति भौन रति ॥
पंकज अलि दुभनौ। सुमन सुगानौ पयन पति ॥
पतंग दीप लग्गिय न। मीन दुगानो जीय नम ॥
सुकिय सषिय सुष दिष्ट। चितचिंतति नेह भ्रम ॥
सुष संति हीन सो दान नृप। हाव भाव विभ्रम अवन ॥
यों रति चरित्त मंगल गवन। सुनि इंछनि इंछनि रमन ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥

ऐरापति भय मानि। इंद गज वाग प्रहारं ॥
उर सुंजोगि रस मंहि। रह्यौ दबि करत विहारं ॥

(१) मो.-अजीत।

कुंच उच्च जनु प्रगट्टि । उकसि कुमस्थल आइय ॥
तिहि ऊपर स्यामता । दीन सोभा दरसाइय ॥
विधिना निमत मिट्टत कवन । कौर कहत सुनि इछनिय ॥
मन मथ्थ समय प्रथिराज कर । करज कोस अकुस वनिय ॥छ०॥१५१॥

दूहा ॥ वै दुप चिय इछिनि सुनिय । रूप प्रभूतन माहि ॥
जिसल तेज लग्गिय चिभू । सजोगी सुनि ताहि ॥ छ०॥ १५२॥

सयोगिता की स्वाभाविक एव सहज लुनाई का वर्णन ।

इनुफाल ॥ सनि इछिनीय सु जानि । रस करनि धरि सुनि कान ॥
लज देहु विटप सकाम । वर व्रन 'दिप्पय वाम ॥छ०॥१५३ ॥
सुप कहन कत सु वत्त । तिय वदन धूम सरत्त ॥
सुनि कहत ओपम ताइ । सुप सम द्रप्पन झाइ ॥ छ० ॥ १५४ ॥
अति छीन वहल जेम । ससि तेज तरुनि कितेम ॥
सुनि इछिनि वर जोइ । कर छुट्टि मैला होइ ॥ छ० ॥ १५५ ॥
वर रूप सागर वट्टि । मनमथ्थ मथि करि कट्टि ॥
भरि एक सकन निस्सक । पुन लम्भ लोइन रक ॥ छ०॥१५६ ॥
द्रिग सहित देषिय जोइ । तन चिविध ताप न होइ ॥
सुप वढै दिपि तजि दद । ज्यों जाय सो नँद कद ॥छ०॥ १५७ ॥
चतुरान देषिय रिध्य । सातुक भाव विसिध्य ॥
न्रिप देषि चल्लिय सथ्य । वर वेन सम लै हथ्य ॥ छ० ॥ १५८ ॥
गुन चवन सुनन न कोइ । कवि थके ओपम जोइ ॥
ससि सरद कहि हँस लोइ । शिवग ग वहरी होइ ॥छ० ॥ १५९ ॥
चामीय करतिय जोग । सँजोगितासी जोग ॥
सुनि इछिनी तजि रीस । लछिने वास वतीस ॥ छ० ॥ १६० ॥
भय रूप प्रकार पीय । होवै न चीय न चीय ॥
ससि य चमिय घटि वट्टि । चिय देषि पह सुप चट्टि ॥छ०॥१६१ ॥
सम नही इसिमती जोइ । छिन गरुअ छिन लघु होइ ॥
देषत चीय सुर ग । तब भयौ काम अनग ॥ छ० ॥ १६२ ॥

(१) मो दिप्पय ।

उप्पनौ देषि सु हंस । जौ लियौ वन कौ अंस ॥
सुनि कोकिला कलि राव । भयौ वरन स्याम सुभाव ॥छं०॥१६३॥
ओपम्म दीजै आहि । सो नहीं ओपम चाहि ॥
बस चीय अह निसि प्रीय । जुमि जम्म सम्हो जीय ॥छं०॥१६४॥
सैसव वासी नारि । जो भइ पुन्न संसार ॥
मति मान गरुअ समद्द । रति करी छवि वर रद्द ॥ छं० ॥ १६५॥
वह नहरि नारि न बीय । किहु नाइ रचि बुधि कीव ॥
सँजोगि मन कढ़ि ओइ । छिन बीय द्रुप्पन होइ ॥ छं० ॥ १६६॥
सम्मान प्रीति विपंग । सो पुच्च चिय मन अंग ॥
* * * * ॥ * छं० ॥ १६७ ॥

संयोगिता के नेत्रों का वर्णन

दूहा ॥ बाला संभरि बाल बयन । सीत सीत रति रंग ॥
राह केत मंगल बिचें । जमुन सरसती गंग ॥ छं० ॥ १६८॥
मर बल अंबर बदन सौ । लोयन सो करपाइ ॥
ईह अपूरब चरि अरक । पंती अट्ठ कलाइ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

सुग्गे की उक्त बातें सुन कर इंछिनी रानी का अत्यंत दुखित होना।

मुरिल्ल ॥ कल कल बानी सुक्क प्रगासै । दृढ़ बाल वे कौतिक भासै ॥
जो को दीष दीह तो बालं । जंषी जेम तोहि तो कालं ॥
छं० ॥ १७० ॥

दूहा ॥ जं देही तौ दुष्षई । दुष्षह सुष्ष सरीर ॥
दुष्ष न अन्नं सुष्षतं । किय सो कंनि धरीर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
सतम बरस सज्जिय अरय । दीन छीन सैसव्व ॥
दृढ़ चीय अरु थिर अरथ । देह विधिनि लिषि देव ॥छं०॥१७२॥
राजन सुक्क पुच्छन विगति । भयो इंछिनि दुष राज ॥
हूं माया रस भुल्लयौ । नहु पायौ गुन काज ॥ छं० ॥ १७३ ॥

सुग्गे का इछिनी को समझाना कि वृथा दुःख करने से क्या लाभ है ।

गाथा ॥ जीव वारित रग । आयास नथ्थिवै दुष्प देह ॥
भाविय भाविय गतन । कि कारन दुष्प वालाय ॥ छ० ॥१७४ ॥

रानी इछिनी का कहना कि सौत भाव का दुःख मैं भुला नहीं सकती ।

दूहा ॥ सौत सोत चचल भय । भिरिग दोष अनुराग ॥
मनु चित नेन व्याहन चढे । दुज कानन पुछि भाग ॥छ०॥१७५॥
जौ पुच्छै सुप दुष्प मौ । तौ मौ एह अदेस ॥
देषि कहै बर वत्त मैं । किहि गुन रचिय नरेस ॥ छ० ॥ १७६ ॥

सुग्गे का सलाह देना कि यदि तू यह महल छोड़ दे तो तेरा दुःख आप घट जावे ।

सुनि वाला वर वेन मुहि । मच भेद बहु भेस ॥
जौ बछै इछिनि महल । तौ मेटै अदेस ॥ छ० ॥ १७७ ॥

इछिनी का महलों से निकल कर चलने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ सुक पजर करि हेम । माल मोतीन मच जरि ॥
धन सुगध निकुरास । देस सप गुरिग हथ धरि ॥
दस हथ्थी इछनि रसाल । माल विय साल [1] उनगी ॥
सेत रत्न वर सुमन । मुक्कि करि गध सुरगी ॥
नर भेष नारि कचुकि सरस । दुइ दासी वर मज्जि मन ॥
क्रम चुकति दुक्कति विकम । वयन दरसि सज्जल नयन॥छ०॥१७८॥

राजा का इछिनी को रोकना और मान का कारण पूछना ।

अरिल्ल ॥ दस हथ्थी पजर धर मुक्किय । दिसि सजोगि राज दिठि रुक्किय ॥
नन तुच्छो न्रप पच्छिल रत्ती । ज्यों सर फुट्टै हस प्रपत्ती ॥छ०॥१७९॥

(१) एक को उतगी ।

सुग्गे का कहना कि इस सब का कारण संयोगिता है।

दूहा ॥ वक्र दिष्ट संजोग की। सुक कहि न्रपहि सुनाय ॥
एक अचिज्ज इंछिनिय। में ग्रह दिट्ठी राइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

सुरिल्ल ॥ गरजी तब छोलक मघनं। वट्टि न धन नेह सयन्नं ॥
दोष आकोचन भोज पलायौ। सगि अंकुरिय विरह पनायौ ॥
छं० ॥ १८१ ॥

राजा का कहना कि रे पक्षी तु ही ने भेद किया फिर ऊपर से बातें बनाता है।

दूहा ॥ कहै सुक्क फुनि फुनि न लग। न्रिप सुनि कही न बत्त ॥
मंच भेद उप्पर करी। करत चित्त अनुरत्त ॥ छं० ॥ १८२ ॥

सुग्गे का इंछिनी से कहना अच्छा तुम दोनों निपट लो।

जब सुक न्रप कानंन लौ। तब पुच्छयौ वर जोइ ॥
जो कछु कह्यौ सु कंत सौं। ज्यौं कह्यौ कंत जो होय॥छं०॥१८३।

राजा के मनाने पर इंछिनी का मान जाना।

ड्डरी ॥ मति मान रूप लच्छीय मान। जीवन सु पीव आनंद थान ॥
करवत्त दोष कप्पन कुँवारि। वर कंक दिन्न वर सब्ब गारि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

धुम्मर बदन दुष दमित पाइ। ज्यौं आनंद जाइ कुमलाइ पाइ।
मंडित्त मत्त तिहि चाहु आन। मुष रुट्ठि चीय नन रुट्ठि प्रान ॥
छं० ॥ १८५ ॥

राजा पृथ्वीराज को रानी के मान करने का दुःख होना।

चौपाई ॥ न्रप पर दुष्ष अलष्ष जु किन्नौ। ज्यौं बारि गयौ तरफै रहि मीनौ
दुष निद्रा निसि घट्टिय आई। तिहि न्रप सज्ज सपन्नौ पाई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रात्रि के राजा पृथ्वीराज का स्वप्न देखना । स्वप्न वर्णन ।

भावी गति आगम विगति । को मेटन समरथ्थ ॥
राम युधिष्ठिर और नल । तिन मैं परी अवथ्थ ॥ छ० ॥ १८७ ॥
मान करै मति हीन नर । जीवन धन तन रूप ॥
कौन न छिन द्वै है गये । विना ज्ञान रस कूप ॥ छ० ॥ १८८ ॥

इति श्रीकविचद विरचिते प्रथिराज रासके शुक विलास वर्णनो नाम बासठवो प्रस्ताव सपूर्णम् ॥ ६२ ॥

आखेट चष श्राप नाम प्रस्ताव ।

[तिरसठवां समय]

कन्नौज में समस्त सगे सबंधियों के मारे जाने से पृथ्वीराज का खिन्न मन होकर उद्विग्न होना ।

दूहा ॥ जिन बिन नृप रहते न छिन । ते भट कटि कनवज्ज ॥
उर उप्पर रुप्पत रहै । चढै न चित हित रज्ज ॥ छ० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ कटे कुटुंब मन मित्त । हितकारी का का भट ॥
कटे सूर सामंत । सजन दुज्जन दहन ठट ॥
कटे सुसर सारे सहेत । मातुलह पछ्य फुनि ॥
कटे राज रजपूत । परम रंजन अवनी जन ॥
निसि दिन सुहाइ नह नृपति कौ । उच्च सास छडै गहै ॥
अतरति अग्नि उद्वेग अति । सगति सूल सोलै सहै ॥
छ० ॥ २ ॥

राजा के मन बहलावे के लिये रानी इंछिनी का कहना कि हम लोगों को अहेर का रहस दिखाइए ।

दूहा ॥ तब सारे अंते उरह । कीनौ मनौ विचारि ॥
नृप अग्गै उच्चार किय । धरि मुष अग्ग पंवारि ॥ छ० ॥ ३ ॥
चरन लग्गि युग जोरि करि । कह्यौ सुनहु महि इंद ॥
हमहि सिकार दिषाइये । मत्त मृगादि मयंद ॥ छ० ॥ ४ ॥
क्यौ बराह वागुर रुकै । क्यौ वधहि बर वानि ॥
क्यौ छुट्टै छर डोरि कै । क्यों जुट्टहि सक स्वान ॥ छ० ॥ ५ ॥

राजा का कहना कि तुम लोग अपनी तय्यारी करो ।

विहसि बयन अलसित नयन । दिय इंद्र उत्तर राय
गोठि करो गोरी सकल । तो आखेट षिलाइ ॥ छ० ॥ ६ ॥

रानियों का राजा की आज्ञा मानना।

कहि परमान प्रनाम करि। रानिय मानिय बात॥
सकल षरच संजोगिता। साज सु जोवत प्रात॥ छं० ॥ ७ ॥

राज महल के प्रभात की आभा वर्णन।

पद्धरी॥ हुअ प्रात रात पति अस्त हुअ। उड़गन सु गए तजि बिना धूअ॥
पसरे पवंन तर वरन पान। जोगिंद जग्य पूरे विपान॥छं०॥८॥
झल्लरि झनंक भई देव द्वार। पुल्ले किनंकि ग्रह ग्रह किंवार॥
नर नारि वारि फिरि लाज कीन। झट झट झटकि पट कूल लीन।
छं० ॥ ९ ॥
उठि प्रात गात दुजराज मंजि। पढि वेद मंत्र हरि देव रंजि॥
गर बंध धंध छुट्टिय सुधेन। लीनौ अछादि गौरै न गेन॥
छं० ॥ १० ॥
नौबति निसान दरबार बज्जि। रिफ रोर चोर गय कुहर भज्जि॥
सहनाइ सुरति कीनौ सँचार। गायन ललित गरवर उचार॥
छं० ॥ ११ ॥
पावन प्रसाद पुल्लै पुरान। अविछन्न धार हर होत स्नान॥
सत सती पाठ पाठी करंत। जप ध्यान इक्क नव ग्रह धरंत॥
छं० ॥ १२ ॥

रानी संयोगी का शैय्या से उठ कर गोठ की तैयारी के लिये आज्ञा देना।

तिहि बार जागि रानी सँजोइ। दिय हुक्क बोलि बड़वार दोय॥
झट लेहु साह झगरू बुलाइ। मागै सु द्रव्य दीजौ गिनाइ॥
छं० ॥ १३ ॥
करियो अनेक पक्कवान बानि। मक्कै न कोइ जिन जाति जानि॥
सौरँभ सँवारि मिलहु अनेक। घन सार सार मृग मद विवेक॥
छं० ॥ १४ ॥
एलचि लवंग संगति सँवारि। स्यामा समेत सद सुट्ठि डारि॥

रा मटी रग रचि मिरचि देहु । पुनि सकल भाति गोरसहु लेहु ॥
छ० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ लेहु सरस सक्कर पहिल । पाडी पड अनत ॥
विजन बहु बनवाइयौ । लागे गहर गनत ॥ छ० ॥ १६ ॥
पानि पथ पहु चाइयौ । सकल वाटिका बीच ॥
कीजहु बहु आचार सौं । दरसन लहै न नीच ॥ छ० ॥ १७ ॥

रनिवास की कतिपय दासियो के नाम ।

चोटक ॥ सुनि सद्द इतै श्रुति स्वामिन के । नमि तुग चले गज गामिन के ॥
गुनवेलि सहेलनि बीच बडी । नृप कै चित जाचप कोर गडी ॥
छ० ॥ १८ ॥

मदनावति मालति मोहनिय । कमला विमला सग सोहनिय ॥
बुधिलाल लिलावति लाजमती । क्रम माल मराल गवन्न गती ॥
छ० ॥ १९ ॥

पठ मजरि पजरि नेन नगी । सुर हसिय वसिय पेम पगी ॥
ललिता कलिता चलिता सु सयी । रतनावलि रामगिरी निरयी ॥
छ० ॥ २० ॥

जमनी जिय वल्लभ जोति जगी । कुंज वेला जुही सु हिया अदगी ॥
गुनकेलि गुलाल अनाल भुजा । कच लविन कोमल देह सुजा ॥
छ० ॥ २१ ॥

मधु माल तिमार सुमार सुयौ । सुगधा मधु वेनि मयक मुयौ ॥
चित चोप चवेलिय चप कली । सब सेवति स्वामिनि भाति भली ॥
छ० ॥ २२ ॥

धर माकर मानव नार गिया । बलभा कलभा सुर सार गिया ॥
हरदासिय रासिय रूप जितौ । निकसी करि वेन प्रमान तितौ ॥
छ० ॥ २३ ॥

जितनी सिय स्वामिनि पास लही । तितनी भगरू सहु जाय कही ॥
छ० ॥ २४ ॥

झगरू के चुकी का सब सामान ले जाकर पानीपत में गोठ का सामान रचना।

चौपाई ॥ झगरू साह साज सब लई। सो पहुंचाय नीरपथ दई ॥
बारी सधन वारि बहु जहां। बैठि गोठ विस्तारी तहां॥छं०॥२५॥

अग्नि कोण में रनिवास के डेरे लगना।

सीत भीत आदीत। बास अगनेव कोन किय ॥
गरि बारि बारिज्ज। जमि रहहि निसानिय ॥
ष लुट्टहि संजोग। जुवति जे भोन भोन सुष ॥
वरह वियोगिनि अंग। अग्गि ज्वाला असंषि दुष ॥
क्कीय चक्क चिंता विषम। दिघ्घ रैन दारुन दहै ॥
ानै कि प्रान कै प्रान पति। आनि कानि कासों कहै॥छं०॥२६॥

र तैयारी हो चुकने पर पृथ्वीराज का रानियों सहित पानीपत की यात्रा करना।

तन रिति मन मृगया करिय। चढ़न कहत चहुआन ॥
आगैं आगैं अंगनां। पानीपंथ मिलान ॥ छं० ॥ २७ ॥
एक मास क्रीड़ा अवधि। करिय संभरी नाथ ॥
गोटि साज पहिलें पठय। चल्यौ रागिनी साथ ॥ छं० ॥ २८ ॥
सलष सुतादिक आदि दै। राज लोक लै सथ्थ ॥
पूजि प्रिथा सगपन मिलै। चली सु पानीपथ्थ ॥ छं०॥ २९ ॥
लाल ढाल सुषपाल महि। डोला रथ्थ रसाल ॥
सावन सरित उमंडि ज्यौं। चलै चली त्यौं बाल ॥ छं० ॥ ३० ॥

संपूर्ण सामारोह के साथ रनिवास की यात्रा।

ाम॥ किती गज ढालन[1] बाल चढाइ। किती चक डोल अमोल बैठाइ॥
किती सुषपाल विसाल अरोहि। सुषासन आसन पासन सोहि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

(१) ए. कृ. को.-बाज।

कितो रलकी पलकि महि बैठि । कितो मकना ढकना तन पैठि ॥
कितो रथ पथ्थ चढी चलि मान । मनों विबुधी अव रोहि विमान ॥
छ० ॥ ३२ ॥

चिहू दिसि भासिय दासिय सथ्थ । गहे सब साज सिँगारन वथ्थ ॥
कितो डिढडा विड वाडिढ पाथ । कुँपी इक कंध सुगधनि ढाथ ॥
छ० ॥ ३३ ॥

डरै उर स्वामिनि ते चल चूक । चलै लहु आतुर सीस सिँदूक ॥
कितो छर छग्गर कध न लीन । चली हय हकि लचै कटि छीन ॥
छ० ॥ ३४ ॥

झनझन [1]झझ नसह सुनत । घन घन धुध्धर घोर गुनत ॥
घन घन कंकन वज्जि सुढार । गन गन धावत जात न पार ॥
छ० ॥ ३५ ॥

जगम जगेव जराव वसन । डग मन जानि अरुन्न किरन ॥
सज्यौ मनु जच्छि प्रजापति जाग । चल्यौ सुर नारिन कौ जनु माग ॥
छ० ॥ ३६ ॥

मनों मप मडिय पडव भूप । जुरे नर नारिन वृद अनूप ॥
चल्यौ जलि योजन कौ सथ सग । नही जिन कै सब अग अनग ॥
छ० ॥ ३७ ॥

लग्गै कर कचन लट्ठिय कट्ठ । उठै झुकि क बहु बोलत तथ्थ ॥
चले तिन सग चढे गुर राम । वडे वपु वेस वडे गुनधाम ॥
छ० ॥ ३८ ॥

चले दिन दिध्धन जे रजपूत । चले चढि साहि सिरोमनि सूत ॥
चले कुल कायथ चौदह जान । भयौ इतमाम[2]करे जग कान ॥
छ० ॥ ३९ ॥

सबै सित उज्जल अवर साजि । मनो निकले कल हस विराज ॥
* * * * * छ० ॥ ४० ॥

(१) मो झरझर । (२) ए छ को मरे ।

रानियों का शिविर स्थान पर स्थानापन्न होना।

दूहा॥ जथ्थ मंडि रागरू करिय। तथ्थ गयौ रनवास॥
बाग बावरी बहु जहां। कूप ताल [1]पनिवास॥ छं० ॥ ४१ ॥
बारी में भारी बनिक। रच महल सुधराय॥
मनों सोभ कैलास की। लीनी लोभ [2]छिंडाय॥ छं० ॥ ४२ ॥
कहै रवनि प्रथिराज कौ। उर पुर धरि अनुराग॥
चलौ बिलोकैं चिहुं दिसा। पानि पंथ कौ बाग॥ छं० ॥ ४३ ॥

शिविरस्थान के उपवन की शोभा वर्णना।

भुजंगी॥ बनी सुभ्भ बारे फले [3]वृष्ष नेकं। रटै बैठि पंषी सु भाषा अनेक
ठटे अंब नीबू सु जंबूव रोसं। लुटै भूमि [4]जूमी हरे हेरि होर
छं० ॥ ४४ ॥
कबूं चंपकं चारु चेची चिनीयं। मनों दीपकं माल मनमथ्थ दीय
कहूं नालि केलं रुवेलं बिदामं। सुकं सारिका टोल बोलंत ताम
छं० ॥ ४५ ॥
कहूं [5]पक्क डारं अनारं दरक्की। कहूं सोभ सारं सु तारं तरक्की
कहूं कंछुहारी सुपारी निवारी। कहूं केवरा केतकी भीर भारी
छं० ॥ ४६ ॥
कहूं लाल जालं गुलालं सु पुंजं। कहूं जाति पंती भरं भोर गुं
करै केलि में केलि मोरं चकोरं। कहूं कंकरन्नी करन्नान ओर
छं० ॥ ४७ ॥
फलै फाल से फैलियं लोंग बल्ली। दलै दुष्ष साषं सु दाषं प्रचल्ल
कहुं चंदनं कंदनं ताप तापं। जहां काम क्रीड़ा गहै बान चा
छं० ॥ ४८ ॥
कहुं पंडुरं डार बैठे परेवा। कहूं बीज पूरी सिंदूरी करेवा॥
कहुं सारनी फेरिकै बारि स्यावै। कहूं नाग वल्लीन[6]कूं नीर प्या
छं० ॥ ४९ ॥

(१) को कृ.-पतिवास। (२) ए. कृ. को.-छिनाय। (३) ए. कृ. को.-वृछ।
(४) मो झूमी। (५) मो.-कप्प। (६) मो.-कों।

कहू घट्ट थट्ट रहट्ट चलावै। कहू मालनी वाल माला बनावै ॥
कहू ढेंकुरी ढारि कै बारि काढै। कहू थान उचो सँचै नीर चाढ़ै
छ० ॥ ५० ॥

दूहा ॥ चरस सरस ढरि ढेकुरी। रहट बहत बसु जाम ॥
वापी कूप तडाग तें। भरत चहवचा ताम ॥ छ० ॥ ५१ ॥
इहि विधि सब रनिवास ने। सुष पायौ लषि बागु ॥
जिन निरषिय तिन कहिय यौं। आज हमारी भागु ॥ छ० ॥ ५२ ॥
बाग लषौ रनिवास नै। रानी आयौ लेय ॥
पान पान अरु सेज सुष। सुष मनुहारि करेय ॥ छ० ॥ ५३ ॥

रानियों के पानीपत पहुँच जाने पर पृथ्वीराज का कूच करना।

रानी पहुंची जानि कै। राजा चढ्यौ तुरग ॥
पायन पेलै वाइज्यों। धाय न जाय कुरग ॥ छ० ॥ ५४ ॥
नृपति चढे सब चढि चले। जे भरवक बिरद ॥
घर ढट्टे अरि दल दलन। जे कट्टै गजरद ॥ छ० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामंतों का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चले अश्व अरि राव। सिर सेत छत्र सुभाव ॥
कूरभ पभ चमून। जम रूप जानि जमून ॥ छ० ॥ ५६ ॥
मुह अग्र मोरिय वीर। निव्वान आनन नीर ॥
चढि चले चपि चंदेल। हय मुक्कि मंडित षेल ॥ छ० ॥ ५७ ॥
तिन सिद्धि सभरि वार। जग मम्भ एक जुझार ॥
उर साल साहि सहाव। सुष चंड मंडित कोव ॥ छ० ॥ ५८ ॥
लिय सग रगह स्वान। इक इक्क सग द्वै ज्वानि ॥
अनरोम के वह रोम। इक मात तात न षोम ॥ छ० ॥ ५९ ॥
सुय रत्त कोमल कान। द्रिग रत्त गति गुर रान ॥
जोगिंद निंद सु भाय। सग धाय जाइ न पाय ॥ छ० ॥ ६० ॥
पटकात वाध वराह। झटकात रोझ अग्गाह ॥
पट जरै जेब जराय। रज सकरन डुरवाय ॥ छ० ॥ ६१ ॥
इक सकही आरोह। इक पालिकी प्रति सोह ॥

रथ सथ्थ चीती वान। चप ढंकि पथ्थ पयान ॥ छं० ॥ ६२ ॥
झुर रारु बाज सिचान। तुरमती तेज उड़ान ॥
पिठका कुही चप ढंकि। पुट चंच पदनप बंक ॥ छं० ॥ ६३ ॥
फुनि लै फँदैत कुरंग। जिन अंग सोभ सुरंग ॥
हुम संत हुंकत हेरि। दस कोस आवत फेरि ॥ छं० ॥ ६४ ॥
कवित्त ॥ पानी पंथह राय। आय षेलत आषेटक ॥
फिरि पहार उज्जार। देषि बंधा आगेटक ॥
नै विहंड बन हंषि। संकि नव षंड मंड वर ॥
मूर सूर बाधंत। बाज छांडत छंडि वर ॥
बेधहि बराह उच्छाह मन। तानि इक्क सर इक्क लहै ॥
पावै न जान सावज अवर। ऐन सैन मेलै गहै ॥ छं० ॥ ६५ ॥
एक सत्त बाराह। बान बेंधे कि स्वान गहि ॥
सावज अवरन हंसि। नंस कीनौ मृगादि महि ॥
पंछि पंछ पंछीन। मारि संघारि बहुत किय ॥
सु से शृगाल को गिनै। छेद छिक्कार भार जिय ॥
बीभच्छ बीर रस रुद्र मचि। करुन कोसु पिष्यौ न मन ॥
पच्छलै जाम विश्राम कहु। फिर्यौ संग सामंत गन ॥ ६६ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का गर्दन करवा कर यमुनाजी का स्नान करने जाना।

डेरा नप आवंत। सुनत रानीन सुष्ष हुअ ॥
सपजि रहे सब अन्न। धाय प्रथिराज सुद्धि दिय ॥
सुनि मरदन कौ हुकम। होत मरदनी बोलि लिय ॥
बय किसोर बन थोर। कच्छि अच्छरि समान चिय ॥
तिन नेह देह मलि देहु सुष। बरषि मेह शंगार रस ॥
जल जमुन उष्ण अस्नान करि। चल्यौ भूप सँग विप्र दस ॥
छं० ॥ ६७ ॥

राजा का स्नान कर के गोदान करना।

कासमीर करि तिलक। आइ तर्पन अंजुलि दिय ॥

देव सेव किय विप्र। अप्प दडोत पच किय॥
तुलसीदल हर अरपि। मृत्य असिवर कौ मगिय॥
चरनोदक मुप धार। राज वैठौ वजर गिय॥
सत धेन शृग सोवन्न मढि। पुर रज्जत राजत अति॥
शृगारि दत्त दिय दुजुन कह। पठहि पाठ जे वेद प्रति॥छ०॥६८॥

कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवा कर राजा का सब सामतों सहित भोजन करने बैठना।

नव कन्या पहिराय। दान नवग्रह कौ कीनौ॥
इच्छा भोजन पूछि। सहस विप्रन कौ दीनौ॥
भोजन किय जिहि ठौर। सब्ब भर तह पधराए॥
नित्य करम करि इतौ। तहौ अप्पन प्रभु आए॥
पावरी पाय जूरो सिरह। पौरोदक अरु पीतपट॥
कर माल जपत नँद लाल मुप। गुण विसाल सँग विप्र यट॥
छ०॥ ६९॥

गो गोमय चोको। विचित्र चित्रे अति चावक॥
लीक धवल धर हरित। धरी सिगरी भरि पावक॥
कोमल आसन मडि। मडि वाजोठ अग्र मुप॥
तहा वैठौ चहुआन। गग सम्हौ उतर रुप॥
सामत सूर दच्छिन दिसा। पति मडे सोभत अति॥
समुहो चद वरदाय वर। सबै दिप्पि यहि दैव भति॥छ०॥७०॥

राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन।

ऊकार पूरान। कियौ पडित प्रवीन दुज॥
श्रीरघुनाथ चरित्र। गाय भजनह वीस भुज॥
नूत नूत पल्लव पधारि। पत्रावलि मडिय॥
धोय तोय विन छिद्र। धरे दोना ढिग ठडिय॥
कोविद उदार उज्जल दुजन। परुसन कौ आरभ किय॥

(१) ए कृ को मुख। (२) ए कृ को गठिय।

भरि छाव काव को कवि कहै। प्रथम अनूपम पूप लिय ॥
छं० ॥ ७१ ॥

परा की विधि और जिनसों का वर्णन ।

दूहा ॥ पूप अनूप परूसि पुनि। पुरी सुष्ष पुरि मेलि ॥
ललित लूचई लै चलै। [1]ऊँच रती विधि वेलि ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पकवान और मिठाई।

मोतीदाम ॥ भरि [2]पीठि भीतर लोन सिलाय। कचौरिय मेलि चले दुजराय
धरे निसराज सिषा जनु फेरि। धरे ढिग वातर भाँवर हेरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुते बर घेवर पैसल पागि। लषै चष [3]फेरि गई उर आगि ॥
जलेबनि जेब कहै कवि कौन। महा मधु माठ मिटावन मौन ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सुधारस फेन कि फेनिय आय। तिनं पर बूर गरूर मिलाय ॥
करे कर सक्करपारे सुधार। महा दुति मुत्तिय सेव सिधारि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

बनी तिय नारि कसार भरित्त। कलपानिय बानिय पागि घिरत्त॥
करी सबनी सब ही महि सार। गिंदोरन और करै सब आर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

धरे पुरमा अरु पिंडषजूर। बिही अषरोट निही सुष पूर ॥
नय नसपातिय पैठै पकाय। दह्यौ रिय दीनिय भूषन गाय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पगे मधु पान पनंगह वेलि। दए गुर सक्कर अम्रत ठेलि ॥
बिए पकवान धरे बहुभांति। धरे तिन ऊपर पापर आनि ॥
छं० ॥ ७८ ॥

हा ॥ आनि सँधाने सब धरे। मूल फूल फल कंद ॥
मैदा के पैदा करै। सुमन मेलि मकरंद ॥ छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए.कृ.को.-ऊंचरची। (२) ए.कृ.को.-परि पिछिय। (३) ए.कृ.को.-परि।

अचार वर्णन ।

वचनिका ॥ करि कज पुज धारे। रचि चपक सु धारे ॥
बहु वेलि है चँवेली। करनी कनैर केली ॥
वकल वधूक आने। घनसार डार साने ॥
मचकुंद कुंद कीने। करि केवरे नवीने ॥
कल केतकी किति कौ। पुनि पाडर जिति कौ ॥
जुहिय जगत जैनी। भ्रम भूलि भौंर सेनी ॥ छ० ॥ ८० ॥

चरवन वर्णन ।

दूहा ॥ माति भाति चरवन रचै। चना चिरुजी चारु ॥
चौंरा चाहत चैन [1]चष। मिलि मृग मद्दु धन सार ॥छ० ॥ ८१ ॥
करे कसेरू करहरी। गोंद गटा ठट ठानि ॥
पय के बहु धटि कर करे। कर कपूर [2]पुट वानि ॥

तरकारियां और गोरस का वर्णन ।

भुजगी ॥ परी पौर औटली करी पौर ताकी। वियौ जपियै कि सुधा दासि जाकी॥
महा सहि घृत धालि बूरा [3]मिनाई। सबै सूर सामंत जीमैं सराई॥
छ० ॥ ८२ ॥
परे पट्ट पेरे रु पाटे जुडाने। बरा बिद्ध राका सम सोधि आने ॥
किते विजन वेसन के बनाये। करन्ना करोंदी कि [4]कि दुरे गनाये॥
छ० ॥ ८३ ॥
नए नूत नीबू नए नालिकेर। रची नारिंगी नासपाती सु मेल॥
करे अम्बता कैथ सथ्थ विजोरे। मनों डार तें पारिके आनि मोरे॥
छ० ॥ ८४ ॥
करार कढी मद्दि भीजी पकौरी। वरी मूंगरी [5]पाखरा पट्ट मोरी ॥
महा मद्दु मैदान की मेलि रोटी। कछू जामिनी नाथ ते जोति मोटी ॥
छ० ॥ ८५ ॥

(१) ए कु को सुख। (२) ए कु को पुर। (३) ए कु को बनाई।
(४) ए कु को किंदूरी। (५) ए कु को-मापकी।

धरे भोजनं मंडनं आनि मांडै। भिगे सक्करा पीर मों सेन छांडै
रवा केरु आमोदनं देव नाए। घने घृत्त अंगा करी पोभि लाए
छं० ॥ ८६ ॥

कढी कट्टु मैदा पिठी मेलि पाटी। बनी बेटई अंगुली पात चाटी
रची रोटियं मिस्रियं चैन पायौ। तहां सालनं आन रानी पठायौ
छं० ॥ ८७ ॥

लै लै विप्र दौरे सुरंधेर तारू। बने सूरनं बेगनं मेलि मारू।
करी बानि बिंबा गथौरा परोसे। बरं लै धरे बीरजे बेस रोसे
छं० ॥ ८८ ॥

सदन सेमि सं मांच चंडा चलाए। ढका देत से टेढ साढं किधाए
कंकोरा करेला सुरेला सराहे। भली भांति भाड़ानि के ढंड चाहे
छं० ॥ ८९ ॥

रवा संफरी छोंकरी लैधरी ते। कली कचनारं भलीजे करीते।
धिरत्तं भरत्तंभ टाकौ सुधारयौ। नहीं बाकलं बिजूरा मं पधारयौ
छं० ॥ ९० ॥

रच्यौ राइ तौनाय तौ लोंग मिरचें। धना सुंठि लै राइ मिल्लाय सिरचें
परोसे नवीनं चनाके निमोना। मिरी मेलि नींबू धरे केलि दोना
छं० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ अर उर कर परिकर लए। संभरिवै मुष मॉगि ॥
जनु [1]पटुता करि पांनिसों। षटरस राषे षॉगि ॥ छं० ॥ ९२ ॥
सुर संधानौ सुर जनौ। धर्यौ दही सों सांधि ॥
फूल फूल फल के जिते। तिते करे कर रांधि ॥ छं० ॥ ९३ ॥

दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन।

बोढक ॥ सरसों सूआ के साक जिते। गिरिराज सुरायिय रांधि तिते ॥
बथुआ बड़ साग बबोत बने। बरबाय बिरंग सवाद सने ॥
छं० ॥ ९४ ॥

(१) ए. कृ. को.—बहुता।

चनक अरु पोचिय चूक बन्यौ। तहा [1]सौंरिय त्योरन जाय गन्यौ
लगि डाड पयाल पयाल कसौ। मधवा उतकै होय बालक सौ॥
छ० ॥ ९५ ॥

दिव दारू सुदारु है साकन मे। सुर बातिय मे थिय पाकन मे॥
नव पल्लव नीव रु नाथ धरी। करई गति काढि सु दूरि करी॥
छ ॥ ९६ ॥

भरि भाजन भात उलेंड इतौ। भर भीमन जेइ सकत जितौ॥
तबही [2]पसवायत भत्त लिय। सुकमार सपेद सुगध किय॥
छं० ॥ ९७ ॥

अरुन वरुन पुनि पीत रच्यौ। इक इक्क सन मुष कोच सच्यौ॥
मसुरी मुंग माष चना विधि चौ। दधि धोय [3]सुधारियदारि सुचौ॥
छ० ॥ ९८ ॥

रसरा मठदै पुट केसर कौ। कछु आननही सनमे सरकौ॥
वरु वारि वरावर धृत्त लयौ। [4]सदसुम्मित सोसुर भीन अयौ॥
छ० ॥ ९९ ॥

कुसल सुसल समधार परै। अनपंडित मानहु गग झरै॥
अपनी वटि वास तिमास परै। हठिवास सुवासनि आभ भरै॥
छ० ॥ १०० ॥

चकतार अपार सवा दल सै। वनि भूति अभूतिनि वद गसे॥
सुहित उर हूल कय परस। द्रिगदेषि सरवक सेत रस॥
छ० ॥ १०१ ॥

मधु भीन रचे पचि भति इति। कनवज्जनिय कनवज्ज जिती॥
पन पड मरग्गल सो सपजे। जिन बासन बानिक धम्म तजे॥
छ० ॥ १०२ ॥

पछावर की परस का वर्णन।

दूहा॥ जेइ अधाने जठर पर। जलपिय फेरति पानि॥
तुच्छ षुधा पाछें रही। तब लई पछावरि बानि॥ छ० ॥ १०३ ॥

(१)नो० त्योंरिय। (२)ए कृ को —पसकायत। (३)ए कृ का —सुधारसदारि। (४)ए कृ को —दस।

मोतीदाम ॥ बढ़ी रुचि देषि कढी कर लेत। विचैं मिरचैं मिलि लोंग समेत
बिकत्त तिकत्त सुषट्टिय षार। लई सुप मंगि हूई मनुहार ॥ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

करिवां कठ पत्तनि कौ सब सानि। बंध्यौ दधि आनि धस्यौ ढिग छानि
मट्ठा दधि छानि रुबानि बधारि। जहां मिलि जीर धनं धनसार
छं० ॥ १०५ ॥

पनं बहु जंबुअ अंबुल मेलि। निचोरिय दारिम दाष सुठेलि ॥
गज पय औटिय धार उगांटि। धरे भरि भाजन मिश्रिय बांटि
छं० ॥ १०६ ॥

मिली मधि जारक षारिक चूक। सवारिय झारि भए भष भूक ॥
भए चिपतें सब सामँत साथ। कहैं सुप कित्ति रहे षचि हाथ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सँजोगिय स्वामिनि कौ परधान। पंषा गहि प्रीति करै सनमान
कहै सब सथ्थ भई श्रम भीर। क्षमा करियौ चित चूक सधीर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कहै सुष सामँत श्रीसुष राज। भए हम पूरन पावन आज ॥
तहां तप तो इक हथ्थ धुवाय। अरचिय दच्छि करंदम काय ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दए सुषवास कपूर सुआइ। मँडे अप अप्प मिलावन जाइ ॥
जिमावत ओसर यों रनिवास। इसी भँति राज रह्यौ इक मास
छं० ॥ ११० ॥

भई चढती चढती मनुहारि। दिन प्रति हास बिनोद [1]उचारि।
छं० ॥ १११ ॥

आखरी दिन वलते समय राजा का शिकार करने की तैयारी करना और प्रोहित गुरुराम का मना करना।

हा ॥ चढ्यौ अंत कै द्योस निप। बरज्यौ प्रोहित राम ॥
कुसल भई अरु रस रह्यौ। क्यों न पधारहु धाम ॥ छं० ॥ ११२ ॥

(१ ए. कृ. को.-उधारि।

मृगया सदा विगार हुअ। सुनौ कहूं समुझाय ॥
आप लह्यौ रवि राज पै। दसरथ पंडव राय ॥ छं० ॥ ११३ ॥

राजा का शिकार के लिये तैयारी का वर्णन।

हँसि नरिंद हय पर चढ्यौ। भई निसान धमक ॥
सत्त समंद कलँमलै। सकर चित्त चमक ॥ छं० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ चमकि रुद्र चग पुल्ले। चमकि सिर दुल्ले सेस महि ॥
भरकि उठे दिगपाल। उरकि दिगपाल सोच रहि ॥
हलकि हले गिरि मेर। हलकि कुब्बेर संक हिय ॥
धरकि धरा धहराय। धरकि दिग्गजनि [1]कंप किय ॥
आषेट हेट प्रथिराज कौ। एक मुष्य कवि कौ कहै ॥
उडि धूरि पूरि [2]अमर भर्यौ। रविन व्योम मंडल वहै ॥
छं० ॥ ११५ ॥

कंप गगन चिन्ह। चिन्ह नन घन सुझ्झै ॥
नह वह भरि कान। आननन तान सु बुझ्झै ॥
सहस सीरषा पुरुष। सहस द्रिग सहस हथ्थ कौ ॥
दलि तरु चक्रित छिन्न। भिन्न भइ अन्न अथ्थ कौ ॥
हय गय पयाद पायान मय। अकथ कथ्थ कविचंद कहि ॥
डगमगहि पिंड ब्रह्मंड कौ। आज राज प्रथिराज रहि ॥
छं० ॥ ११६ ॥

दुहा ॥ रह्यौ नहीं सभरि धनी। चढ्यौ चित्त अति चाव ॥
उगमगि पहुमि पयान भर। ज्यों जल रीती नाव ॥
छं० ॥ ११७ ॥

शिकारी सामान, वन की शोभा और बनैले जीव जन्तुओं का वर्णन।

गंगरी ॥ चढि चल्यौ चाइ चहुआन भान। सुर नाग नरनि भूल्यौ वसान ॥
धमकी धरनि पुरतार भार। बढि सक लक ससार सार॥छं०॥११८॥

(१) मो चँपि (२) ए कृ को अंतर।

लिय डोरि डोरि संकरन खान। चढ़ि चले रथ्थ पथ चीतिवान॥
भ्रमयस्त हस्त हुंकरत मुष्ष। फँद बंध भृँग संग्राम रुष्ष॥
छं० ॥ छं० ॥ ११९ ॥

जुर बाज कुही तुरमती धूत। को अन्थ गनै पंबी अभूत॥
चहुआन गयौ उद्यान दूरि। गिरवर उतंग बन सघन पूरि॥
छं० ॥ १२० ॥

उज्जार जार सुभगहै न मग्ग। भरि सकै कौन भर डक्कि डग्ग॥
सीस [1]पसि रस्स सामर सिंहारि। कहुं साल ताल सागोन सार।
छं० ॥ १२१ ॥

कहुं गहीक गहुंड गिरि हानि गार। कहुं बेलि बेर बेकल अपार।
कचनारि कोह गिरि नारि आरि। गुरजैन गैन परसंत चारि॥
छं० ॥ १२२ ॥

अनछिद्र छांह सौं करिय छोर। कपि कच्छ बेलि कपि त्याग ठौर
कूं परित रत्त करलै सरस्स। षट तीन भार तरु तें तरस्स॥
छं० ॥ १२३ ॥

फुल्लित फल्लित कवि चारु फेर। वसु जाम गाम पसु पंछि घेरि॥
कहुं मृगमयंद मातंग मत्त। सु सल्ल सियाल सूकर भिरत्त॥
छं० ॥ १२४ ॥

कहुं रीछ इच्छ सोवंत छांह। बंदर लंगूर कंगुरन मांहि॥
फूंकार फनिंद तर को तरन्नि। सब सकै कौन कोविद बरन्न॥
छं० ॥ १२५ ॥

हा॥ हरि हरि हरि बन हरित महि। हरन पिष्षयै अंषि॥
सारँग रुकि सारँग हने। सारँग करनि करष्षि॥ छं० ॥ १२६ ॥

शिकारी पशुओं जानवरों का कौतुक।

कवित्त॥ आषेटक रमि राज। बाज जुर कुही छंडि कर॥
श्येन सेन वाराह। हनहि बरहंकि तकि उर॥

(१) ए. कृ. को परि।

बागुरी परि उरझत। रोझ सांभर असप सुस॥
और जीव को कहै। उहै भेडलह घाल कस॥
वन बीच कीच मचि श्रोन वहि। मनिन चद परिमित लहै॥
सोमेस नंद आनद सर। क्रौड कोप[1]जतुन सहे॥ छ० ॥ १२७॥

जंगली जानवरों की स्वच्छन्दता और उनके शिकार होने का वर्णन।

लघुनराज॥ वाराह राह रोकय। वधिक्कय विलोकय॥
हस्ति दूव अकुर पनत दट्ठ वकुर॥ छ० ॥ १२८॥
पुर अवन्नि[2] उप्पर। ललित्त वेलि विप्पर॥
कलीं कुसुम मगर। अरुन्न नील पिजर॥ छ० ॥ १२९॥
तजत ते मधुकर। करत मुप्प हुकर।
रोमच अग्ग उभ्भर। डरत देषि सुभ्भर॥ छ० ॥ १३०॥
लचत भूमि उद्दर। वरन्न स्याम वद्दर।
सपेद दत कतय। सुजानि वग्ग पतय॥ छ० ॥ १३१॥
टगट्टगत नेनय। तारक्कजेम रेनय।
अहार कद मूलय। मयौ सुकध थूलय॥ छ० ॥ १३२॥
डढाल चीय भूलिय। फिरत नद्द कूलय।
न्निमल्ल नंद चौचय। करत लोटि कौचय॥ छ० ॥ १३३॥
सुनत कूह सेनय। लग्यो सुकान दैनय।
चमक्कि चप्प पुल्लय। द्रवल्ल उट्ठि चल्लिय॥ छ० ॥ १३४॥
भिरत छडि भज्जय। निरत्ति दैन रज्जय।
प्रपत्तयौ धनुद्धरी। सिकार भाल गुद्धरी॥ छ० ॥ १३५॥
हरष्पि नाथ सभरी। ज्यो भोर मेघ डबरी।
हलक्कि फौज उप्परी। दिसा दिसान विप्पुरी॥छ०॥१३६॥
पँवार जैत वग्गरी। हते न्नपत्ति अग्गरी।
विकट्ट भाल जग्गरी। अठार भार पग्गरी॥ छं॥ १३७॥

(१) मो -जत्रन। (२) मो उप्परं। (३) मो पैतय।

गये सुचूकि ढाहरं। बबक्कि उठि नाहरं॥
* * * * * * ॥छं०॥ १३८ ॥

जैतराव का सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सोर घोर सुनि श्रवन। रवनि रवनीय मंद जगि॥
निडर अंग ऐडाय। बाघमुख पग्गि क्रोध अगि॥
अधर दंत चाटंत। चाटि हथ्थल हुस्यार हुअ॥
पटकि पुंछ मच्छर दहारि। उच्छारि उछंग भुअ॥
पर्‍यौ सुजैत धारांधिपति। अति सरीस पटक्यौ सुधर॥
उठि हक्कि हाक ओगार हन्यौ। गयौ तुट्टि करिवार कर॥छं०॥१३९

बलिभद्र का सिंहनी को मारना।

सिंघ सँधार्‍यौ पिष्षि। षिग्गि सिंघन बबकारिय॥
समुष राज प्रथिराज। निरखि आवत ललकारिय॥
मनहु माघ केमास। मेघ काल बायनि बिस्तारि॥
यों कँपै सह काय। हाय मुष उटहि न सस्तार॥
बलिभद्र राय बलिवंड धपि। कर कृपान बाही सु बर॥
उछरंत लंक कटि अङ्ग परि। अङ्ग आय लग्यौ सु कर॥छं०॥१४०

अध लग्यौ कर आय। ताहि जम दट्ठ घाय किय॥
भाल जाल महि हन्यौ। छेदि बेहाल ठेलि दिय॥
घरौ चार सब सथ्थ। रह्यौ थहराइ लग्गि टग॥
ग्रेह देह अरु नेह। गए भय भूलि मग्ग जग॥
हँसि कहै राज कविचंद सों। ए भर अरि असुपत्ति सिर॥
करतार लज्ज रष्षै कलह। कटे कन्ह से जंग थिर॥छं०॥ १४१

राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना।

कहै चंद कवि तथ्थ। राज गत बत्तन सूचहु॥
जुद्धै सु मानुहु दिघ्घ।। सोग संतापन षूचहु॥

धरहु मन्न अग चलहु । पग्ग पब्बय उप्पारहि ॥
बहु वराह रुकि राह । दाह वाह बर मारहि ॥
भुलाय वत्त चहुआन कौ । चल्यौ भट्ट सुष अग्र धरि ॥
न्नम्यौ न मिटै निम्मान कछु । तहा इक्क आइय पवरि ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कुछ सामतों का राजा को एक सिह की सूचना देना ।

सोलयौ सतोष दास । नद्दन नारायन ॥
तुच्छ पटे पग दौरि । पवन विन न्निपति परायन ॥
आसा लगि धावत । रहै दासा तन लीयै ॥
रेन दीह जानेन । रहै हिय हुकुम जु कियै ॥
तिन कह्यौ आय प्रथिराज सहु । सिध एक भाल्यौ निकट ॥
निठुर निसक कदर मंड्यौ । बीज तेज लोचन विकट ॥ छं० ॥ १४३ ॥

राजा का सूचना पाकर सिह की खोज में चल पड़ना ।

गाथा ॥ यों सु न्नपति श्रवन्न । गवन कीन लीन कोवड ॥
कोमल पद सचार । उचार कोमल भास ॥ छं० ॥ १४४ ॥
केभर अग्ग पच्छ । केभर वास दच्छिन अग ॥
दारा ग्र दुज राज । ढारं तेन पारिय छेर ॥ छ० ॥ १४५ ॥

होनहार की प्रभूति वर्णन ।

कवित्त ॥ जलधि जनक ससि तनौ । और अम्रत्त तन 'तातन ॥
बधु धनतर वैद । पोषि रष्यन वपु पातन ॥
लच्छि बहनि बुध बदै । विपागु वसम वहिनेज ॥
भव भूपन कित्य भाल । कुटम उडगन गन केज ॥
लग्यौ कलंक घटु जाइ घटि । इक्क निसा पूरन्न रहि ॥
प्राचीन कीन लग्यौ कठिन । सु क्यौ मिटै सिरजत महि ॥
छ० ॥ १४६ ॥

हरि कर धरै पयान । देव निरवसी रष्यै ॥
बलि दब्बे पाताल । अभय भय पावक भष्यै ॥

(१) ए कृ को नायन ।

ब्रह्मपूज पर हरी। रुद्र कापाल लगायौ ॥
इंद्र अंग भग भई। सुक्र रषि नेन भगायौ ॥
सतवती सीय दुष पाइ जिय। रसातल गइ फट्टि भुअ ॥
नृप नघुष नागपन भुग्गयौ। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० १४७ ॥

बिछुरै नल दमयंति। रहे हरचंद नीच घर ॥
नारद नारी भए। श्राप पायौ दसरथ्थ भर ॥
राम बसे बनबास। पंडव अनषंड विपति सहि ॥
राहु लगे विन राहु। भयौ बिय टूक चंद कहि ॥
बपु जरि अनंग हुअ अंग बिन। नरग राज क्रकिला सु हुअ ॥
गजमुष गनेस अजमुष दछिन। नमो नमो सिरजंत तुअ ॥
छं० ॥ १४८ ॥

सायर षारत सह्यौ। श्रृंग रिषि सह्यौ श्रृंग सिर ॥
पग पंगुर सनि देव। पंग [1]हनमंत संत चिर ॥
जच्छि राज की अच्छि। पिंग इक भई सर्प षत।
षरमुष रावन राव। अंध कुर रावन दिषत।
भगवंत भिल्ल कर तन तज्यौ। पारथ पुरषारथ गरयौ ॥
विक्रम नरिंद वायस भयौ। कासिर वारौ निब्बयौ ॥ छं० ॥ १४९ ॥

सिंह के धोखे से कंदरा में धुआं करवाया जाना।

हा ॥ कंदर अंदर धूम किय। सिंघ भरम प्रथिराज ॥
पुब्ब पुरान नहीं सुन्यौ। अति गति होत अकाज ॥ छं० ॥ १५० ॥

धुआं होने पर कंदरा के अंदर स्थित मुनि को कष्ट होना और उसका घबड़ा कर बाहर आना।

घरी ॥ चिन पच कट्ट लगि उठी गार। गइ गुहा मंझ धसि धूम धार ॥
चट पट्ट सद्द सुनियै न कान। फट्टिय सु गाल छुट्टै औसान ॥
छं० ॥ १५१ ॥

(१) मो. हवंत।

सब जीय जत भजि सैल तज्जि । धररायं मार पावक गरज्जि ॥
चप श्रवा सकि पारत चीस । कलमलि मुनिंद मन भई रीस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कोमल सु कमल द्रग श्रवै नीर । रद चपि अधर कंपत सरीर ॥
जट जूट छूटि उरझत पाय । अग चरम परम नथ्यौ रिसाय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तमि तोरि डारि दिय अच्छ माल । निकस्यौ रिषीस वेहाल हाल ॥
गहि दर्भ हस्त वर नीर लीन । प्रथिराज राज कहु श्राप दीन ॥
छं० ॥ १५४ ॥

हम तप्प वप्पु साधत साध । नर सू विरुद्ध नाहिन अराध ॥
फल पच नासि पालत प्रान । सब सग त्यागि सेवत उद्यान ॥
छं० ॥ १५५ ॥

कहु रंक राइ जाचहि न जाचि । नन जीव जत श्रावै सँताय ॥
निर वैर काल काटत कठिन्न । भव सिंधु मध्य तें भए भिन्न ॥
छं० ॥ १५६ ॥

नन इच्छ भछ्य वर भोग जोग । कहि चूक हमहि सँतवत लोग ॥
करू भस्म भूम पब्बय समेत । सुपि सरित सिंधु रध्यौ वरेत ॥
छं० ॥ १५७ ॥

ना रपौं चिन्ह पठ तीन भार । तब होय चेत ससार सार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना ।

कुडलियो । तब अचेत चेतै सुचित । जब लग्गै सिर माहि ॥
इह कहि श्रापन को भयौ । गही पुरष इक बाह ॥
गही पुरष इक बांह । गेंन ते उतरत तच्छिन ॥
कहै निरा अपराध । साध पीरेन तमि चिन ॥
तमि चिन पचन तोरियै । बिना सँतापै सब्ब ॥
ताहि दड किन देहु झुकि । जिहि दुष दीनौ तब्ब ॥
छं० ॥ १५९ ॥

कवित्त ॥ सुरहि बच्छ मृगराज । छेवा गजराज अथ्थ थेल ॥
चित्रक हरिन बराह । राह पीवंत इक्क जल ॥
आष इष्षि चष अग्ग । घात मंजार न मंडै ॥
फन करि पवन भषंत । मोर पंनग नह षंडै ॥
परताप मथ्थ गुरु हथ्थ कौ । नको जीव जीवह भषै ॥
तिहि जियत आज रिषिराज कहि । कंदर बैसंनर धषै ॥
छं० ॥ १६० ॥

ऋषि का पुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।

गाथा ॥ इहि रिषि कहि बरबैनं । तजि संसार आपियं रायं ॥
मोद्रिग जिहि दुख दीनं । तास तुम चच्छ कढ्ढाइं ॥छं०॥१६१॥

कवित्त ॥ कं अंजुलि कुस पकरि । कहै रिषराज सुनहु सब ॥
जिहि मो द्रिग्ग दुष्षए । निरा अपराध आय अब ॥
ता जुग लोचन जोनु । अथनजुग बीतत कढ्ढय ॥
मन बयन्न नहि टरै । विप्र षिग्गि षिग्गियों रढ्ढय ॥
जितिक पीर हम भोगवैं । भूमि लोक अवलोक इहि ॥
सत गुनी विरधता होइ चष । चल्यो चाइ मुनि ईस कहि ॥
छं० ॥ १६२ ॥

ऋषि का शाप सुन कर पृथ्वीराज का भयभीत होना।

सुनिय बयन्न अवन्न । कंपि प्रथिराज थरथ्थर ॥
जिते सथ्थ सामंत । सूर उर चास धरध्धर ॥
गये बदन कुमिलाय । सक्कि अति अधर अड्ढ उध ॥
बोलत बोल न बनै । [1]सने संताप साप दध ॥
रिषि आप दाप कौ अंग में । को ठिल्लै पल एक लगि ॥
जंगलन जाइ नन जाइ घर । भरि न सरक्कै भूप डग ॥
छं० ॥ १६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मनें।

कविचंद का ऋषि के पैरो पर गिर कर क्षमा मागना ।

तबहि चंद कवि दौरि। [1]विप्र पद रह्यौ विप्र गहि ॥
छमि स्वामी अपराध। साध सुनि फुनि उद्धार कहि ॥
तुम सु षंड ब्रह्मंड। षंड नव तुम तप चल्लहि ॥
तुम अमन जीमूत। वरषि जीवन प्रति पल्लहि ॥
केहरि भरम हम धूम किय। पोयक वसिइय देव हुअ ॥
सँकुचि नरिंद कर्ण डरपि। थरपि हथ्थ सिर सोम सुअ ॥
छं० ॥ १६४ ॥

कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल मे अपराध हो जाय तो माहात्मा लोग सहसा शाप नही देते ।

पिय व्रत ध्रुव के वस। भूप जयवंत सिकार ॥
मूल मंडि प्रथि रोकि। बैठि दुरि जाल कठार ॥
मुह अग्गै इक रिष्य। निकसि प्रावरि मृग छाल ॥
भ्रम कुरंग हनि तक्कि। बान लगि उच्चर दुसाल ॥
क्रामति जोग बल्ल रष्षि तन। यप्पन मन तिन षिमा किय ॥
कविचंद कहत रिषि राज सुनि। पुनि कुपि आपन नृपति दिय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

कुंडलिया ॥ करि सनमान न सकिय दुज। सिव षिक्षि चक्र चलाय ॥
सिर लग्ग पुष्षरि उछटि। जानु चिहुटिय जाय ॥
जानु चिहुटिय जाय। हाथ आकर्षत छुट्टिन ॥
तीन कोडि हज्जार सठि। तीरथ करि अट्टन ॥
न्हावत सरोवर दछिन महि। पातक पुट्टि विछुट्टि गय ॥
तीरथ कपाल मोचन तहा। नाम परठि परसन्न हुअ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

---

(१) ए कृ को विप्र प्रदच्छि प्रस्यौ गहि "

कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए।

कवित्त ॥ तुम जप तप पर हेत। देत वपु रिषि दधीच परि ॥
तुम थुति श्रुति कहि सकै। तुम्ह पद चिन्ह धरै हरि ॥
हम स्वारथ लगि फिरहिं। इष्ट स्वारथ [1]आराधन ॥
हम संसारी जीव। हम सु अपराधह साधन ॥
नन सरन आन तुम सरन तजि। रषि सरन प्रथुराज हथु ॥
कट्टै सराप जा पुन्य करि। सो बताउ बरदान तिथु ॥ छं० ॥१६७॥

ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।

[2]चंद बदन्न मुनिंद। कहै तुम नाम ठाम कहु ॥
तो मुष सबद रसाल। सुनत सुष होय हियै बहु ॥
तबहि भट्ट भाषंत। स्वामि मो नाम चंद कवि ॥
वह नरिंद प्रथिराज। लज्ज भरि रह्यौ देव दवि ॥
अब ह्वै क्रपाल प्रभु उच्चरहु। कछुक देज बरदान फिरि ॥
अप्पौ नरिंद फिरि उद्धरहु। जिहि पारंगत[3]होहि तिरि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रबोध करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा।

चौपाई ॥ हौं बालक दुरवासा तनौ। सत्ति बात सब तोसौं भनौं ॥
इह न्रप तोहि दियौ बरदान। तेरे कर मरिहैं सुलतान ॥
छं० ॥ १६९ ॥
यों कहि रिषि अंतर सकुचान। मुह अग्गै न्रप मुष कुम्हिलान

(१) ए. कृ. को.-आधारन। (२) को.-चंद वदन्न सुन्निदं। मो.-चद वचन्न मुनिद
(३) ए कृ. को.-होत।

देषि दया उर भई मुनिंद। बोल्यौ रिजु दुज आउ नरिंद॥
छ० ॥ १७० ॥

पुन ऋषि बचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे।

दूहा ॥ न्रप चहुआन रु चंद कवि। अरु गोरी सुलतान॥
इक्क मुहूरत में मरै। इह हम दिय वरदान॥ छ० ॥ १७१ ॥

ऋषि के बचन सुन कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना।

आनद्यौ प्रथिराज सुनि। निश मन करै विचार॥
देहन दनु देवन रहै। साह सहित म्रत सार॥ छ० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज का अतरप्रबोध ज्ञान।

कवित्त ॥ देह न देवनि रहै। रहै नह देव दान वनि॥
देह न मुनि पै रहै। देह नह रहै मान वनि॥
देह न नागन रहै। देह नह रहै नगन गन॥
देह न जच्छन रहै। देह नह रहै पुन्य जन॥
रहि है न देह गंधव्व वर। गुझिझक सिद्ध अवद्धि वस॥
मन मझझ कहै चहुआन चिर। रहै लैन हारे सु जस॥
छ० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का ऋषि के पैरों पडना और ऋषि का राजा का सिर स्पर्श करना।

दूहा ॥ यों विचारि प्रथिराज उर। लग्यौ रिष्षि कै पाय॥
मन में सकुचि (१)मुनिंद कर। न्रप शिर लयौ उचाय॥छ०॥१७४॥

कविचन्द और मुनि का प्रश्नोत्तर।

(कवि वचन)

तब मुनिंद हौ चंद कवि। पूछत इह अदेह॥
सकल कुटंबी लोक मे। कोनसु साचो नेह॥ १७५॥

(१) मो नरिंद।

मुनि वचन।

पूरन सकल विलास रस। सरस पुत्र फल दान॥
अंत होइ [1]सहगामिनी। नेह नारि को मानि॥ १७६॥

कवि वचन।

गाथा॥ किं तन त्रिभुवन सारं। किं तन मध्य सार रिष ईसं॥
किं पुनर पिता भग्गहं। [2]सारं तत्त उत्तरं [3]देहुं॥ छं०॥ १७७

मुनि वचन।

नर तन नर पुरसारं। नर तन मद्धि सार तप सीयं॥
सहि देही मद्धि सारं। बाचं इक बुध [4]बद्धाई॥ छं०॥ १७८॥

कवि वचन।

को दुज धरम कथेयं। को नृप धरम परम संसारं॥
किं बनिकं धन धरमं। किं धरमं सूद्र सद्दायं॥छं०॥१७९॥

मुनि वचन।

श्रुति पठनं दुज धरमं। भू भुज धर्मा नित्त नित्तेयं॥
दया सुधर्म्म बनिकं। सेवा धर्म सुद्र सद्दाइ॥ छं०॥ १८०॥

कवि वचन।

दूहा॥ कौन नगन अंबर छतें। को ढंको बिन चीर॥
को हारै अंधौ फिरै। को जीते तजि तीर॥ छं०॥ १८१॥

मुनि वचन।

जस हीनौ नागौ गिनहु। ढंक्यौ जग जसवान॥
लंपट हारै लोह छन। त्रिय जीतै बिन बान॥ छं०॥ १८२॥

कवि वचन।

राजरिद्धि [5]वाधंत क्यों। किहि मग राज बिलाय॥
[6]भूषेउ नृप छंडै कहा। कहा भूष मं पाय॥ छं०॥ १८३॥

(१) मो.-सहचारिनी। (२) मो.-नारं। (३) ए. कृ. को.-देहि।
(४) मो.-बरदाई। (५) ए. कृ. को.-मेटे कवन। (६) ए. कृ. को.-भूपौ।

मुनि वचन।

रिपि पूजा लच्छी बढै। रिपि अपमान विलाय॥
रिपि विभूति भूपै तजै। अनि वित भूपै पाइ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कवि वचन।

किहि मग कंटक विकट है। को मग सरल सुभाइ॥
किन मग चलियै रन दिन। किहि मग परै न पाई॥
छ० ॥ १८५ ॥

मुनि वचन।

हरि विमुषें मग कटकी। हरि मग सरल सुभाइ॥
हरि मारग निरमै सदा। अनि मग पोचौ पाइ॥ छ० ॥ १८६ ॥

कवि वचन।

को मैलौ पट उजलौ। को उज्जल पट मैल॥
कौ भूल्यौ मारग लगै। को भूल्यौ ही गैल॥ छ० ॥ १८७ ॥

मुनि वचन।

मन मैलौ मैलो वहै। मन उज्जल सु पवित्त॥
हरि विमुषे भूले फिरै। भूलि न हरि जिन चित्त॥ छ० ॥ १८८ ।

कवि वचन।

भुगति मुगति किन निकट है। काते दूरि दिपाइ॥
किन आवध जग जिति यहि। किन हारत जगजाइ॥छ०॥१८९॥

मुनि वचन।

समदरसी ते निकट है। भुगति मुगति भरपूर।
विषम दरस वा रैन तें। सदा सरवदा दूरि॥ छ० ॥ १९० ॥
पर योमिनि परसै नही। ते जीते जग बीच॥
परतिय तकत रैन दिन। ते हारे जग नीच॥ छ० ॥ १९१ ॥

सुजस बान जग में जिये। कुजसी मृतक समान ॥
दाता जागे रैन दिन। सोवै भूम अजान ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवि बचन।

को बैरागी ग्रेहही। को रागी बनवास ॥
को लूटै परलच्छि कों। कांते लच्छि उदास ॥ छं० ॥ १९३ ॥

मुनि बचन।

निरलोभी वैराग ग्रह। लोभी बनहूं राग।
पटुभाषी परबत भषै। कटुभाषी तिय भाग ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कवि बचन।

किहि मुनि कोन अराधि है। बिनही ओसर देषि ॥
तुम बचननि सुष पाइयै। तुम दरसन सु विसेष ॥ छं० ॥ १९५ ॥

मुनि वचन।

रूप कार कवि बैद बरु। मरमी असिधर होइ ॥
बंदी जन धनवंत जड़। ए आराधी लोइ ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि चंद और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना।

इतनी सीष रिषीस की। सुनि पग बंदे चंद ॥
सम नरिंद असवार ह्वै। चलै दलै आनंद ॥ छं० ॥ १९७ ॥

सेन सुरन सहनाइ के। नहि निसान धुंकार ॥
चोधिन चमक चिराक की। नह बंदी हुंकार ॥ छं० ॥ १९८ ॥

बिन बेरां डेरां गयौ। भूपति भयौ उदास ॥
मरन हान सें मग्गई। सुनिय सकल रनिवास ॥ छं० ॥ १९९ ॥

डेरां लगै डरावना। रह्यौ कटक सब मौन ॥
नर नारी नारी छतें। मनो प्रान किय गोन ॥ छं० ॥ २०० ॥

उक्त शाप का सवाद पाकर रानी सयोगिता का दु ख करना।

चित्त चिंति सयोगिता । कोन कियौ मैं पाप ॥
भोग समे सयोग में । कतह भयौ सराप ॥ छ० ॥ २०१ ॥

कवित्त ॥ कै मै कट्टी [1]जाय । गाय चरती हकारी ॥
कै कासौ पग छियौ । धूम मै नागिनि मारी ॥
कै न्योति विप्र परहयौ । कह्यौ नन वैन सासु कौ ॥
तेल लोंन वर हेम । चोर घर धर्यौ कासु को ॥
कीनी न कानि कै जेठ की । कै बोलत ज्वाव न दयौ ॥
बुल्ल्यौ सराप रिषि कत कौ । सती हारु कें हर लयौ ॥
छ० ॥ २०२ ॥

डेरो से चल कर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलो मे प्रवेश करना ।

दूहा ॥ दान दयौ रनिवास ने । अरु दिय दान नरेस ॥
अयन उभय मे नयन डर । कियनिय महल प्रवेस ॥छ०॥२०३॥
गैर महल राजन भयौ । सहित सजोइय वाम ॥
पोरि न रप्यो पोरिया । जे इतवारी धाम ॥छ०॥ २०४ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेट चष श्राप नाम त्रिसठवों प्रस्ताव सपूर्णम् ॥६३॥

[1] मो नाय या माय ।

धीरपुंडीरनाम प्रस्ताव ॥

[चौसठवां समय ।]

संयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामंत मंडली के बल की परीक्षा करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सुष विलास संजोगि सम । विलसत नव नव नित्त ॥
इक दिन मन में उपनी । ऐ ऐ वित्त कवित्त ॥ छ० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास तीस दिन पच । महिल मद्दीज राजवर ॥
जुद्ध घटै सामंत । वैर सु विहीन सँवर पति ॥
सुभर हूर सामंत । उरह भुज पनवर जान्यो ॥
तीन मास तिय दिननि । तिनहि ससार सु मानौ ॥
तन तुग तेझ वावन्न मन । तन तिहित्त उचौ न गिन ॥
कैमासे विनो आमंत घटि । हु जानत आमग इन ॥ छ० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज से भागकर आने पर पछतावा करना ।

दूहा ॥ जुध अनेक सामंत करि । नहुं भाग्गौ कहु ठौर ॥
हम भज्जन कनवज्ज मति । अब दिष्यौ भर और ॥ छ० ॥ ३ ॥
कबही पिट्ठि न मे दई । अब लग्गी इह पौरि ॥
करौं परीछा हूर भर । जित्तौ असुर बहोरि ॥ छ० ॥ ४ ॥

बलिभद्रराय का राजा से कहना कि सामंतों की परीक्षा के लिये जैतखंभ बनवाया जाये ।

कवित्त ॥ तब कहै राव बलिभद्र । सत्त सामंत अभंगम ॥
इन बल घटै न राज । मंत घट्टै वर आगम ॥

एक सुबर सुर अंत। तीर बाहैं बल मुक्कै।
पंच सबद संभरै। मद्द गजराजह चुक्कै॥
सामंत संगि प्रथिराज सुनि। जैत षंभ बर फोरियै॥
षारष्षि देषि चल वीर नृप। जीय संदेह न जोरियै॥छं०॥५॥

निगमबोध (तीर्थ) स्थान पर जैतखंभ का बनवाया जाना निश्चय होना।

दूहा॥ सुनिय मंत्र प्रथिराज बर। मनि परधान सुमान॥
जैत षंभ मंडन सु मति। निगम बोध बर थान॥छं०॥६॥
मुरिल्ल॥ जिन दिन बल सामंत सु धट्टै। जानि मन्नि प्रथिराज सु थट्टै॥
बल बृद्ध जोबन बलकाजं। जैत षंभ चिंत्यौ प्रथिराजं॥छं०॥७॥

श्रावण मास वर्णन।

कवित्त॥ श्रावन भावन भवन। रवन रवनी मिलि राजहि॥
सविता जेम समुद्द। धरनि धारा हर साजहि॥
पच्छिम पवन प्रसारि। धार जल हर धर हरयौ॥
षाल नाल भरि ताल। भरत जलनिधि जल भरयौ॥
परि मोर सोर उठि चोर जिय। जीवन जाचक औल गन॥
नर नारि चतुर वर चित्त कौं। हरियालो सावन हरन॥छं०॥८॥

नवदुर्गा में सामंतों के पूजा पाठ और उनके उत्साह का वर्णन।

ग्यारह सै बावना। मास आसोज विपष्षिय॥
नव दुग्गौ नव दीय। नवल सामंत न रष्षिय॥
नव सत्ते नव दीह। महिष जोगिनि गिल्लारहि॥
हवन मंत्र दुज पढहि। पूजि दुग्गा जग्गारहि॥
उच्छह उतंग तिहि राइ पर। जुरन तेग बंधहि नृपति॥
संपदा चिति चहुआन की। प्रथीराज तेजह तपति॥छं०॥९॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को जैत खंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना।

तट्टह अट्टह अट्ट। अठै अगदीह सु मंडिय॥
अट्ठ अट्ट प्रमान। सहर सिंगारि सिकंडिय॥
आहुट्ठ सै दून। राज अग्या भर मंडिय॥
जैत पंभ जैतान। जोर जुद्धा जो पंडिय॥
आनंद तेज अग्या सु भर। भूपर भूप भुअप्पतिय॥
मानिक राइ कुल उद्धरन। प्रथीराज छत्तहपतिय॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज का जैत खंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना।

एक समै प्रथिराज। वत्त जंपिय भर सारनि॥
अष्ट धात करि पंम। सिंगि कट्टै वल पारन॥
तिहि समान नहि वीर। विजय दसमी इह किज्जै॥
अप्प अप्प वल तोकि। इष्टनिय जाप जपिज्जै॥
सुनि सूर सजल आनंद मन। पुनित महल राजन उथ्यौ॥
सुनि धरि जाइ जालंध दर। प्रसन करन कारन हथ्यौ॥
छं० ॥ ११ ॥

चंद पुंडीर के पुत्र धीर पुंडीर का जालंधरी देवी की उपासना करना।

सगति भोग संसार। सगति कर जोग जुगति जग॥
सगति सुगति वर दैन। सगति आधार नाग नग॥
सगति महा सुख करन। सगति विन सुप्प न पावै॥
सगति राज निज काज। सगति नर सुर जय लावै॥
इह जानि धीर मन ध्यान धरि। सगति उपास विचार वर॥
आनंद कंद नृप चंद सुअ। धीर जाप लीनौ सुधर॥ छं०॥१२॥
सुभ असोज रवि मूल। सिद्धि जोगह सुप कारिय॥
दुर्ग साहि थापनो। धीर आराधि विचारिय॥

धन सुलगन सुष गरुअ। धीर जालपा उपासै ॥
ग्रह सुथान मति मान। कनक दुति षोड़स मासै ॥
एकंग मंत सद्ध सुमन। झूमि सयन सुद्धह [1]वसन ॥
गो दुद्ध हार बर इक्कलै। व्रत उचार बोलन रसन ॥छं०॥१३॥

पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीर पुंडीर का वर मांगना।

पद्धरी ॥ सहि षाम छाय वासं सुसुभ्र। बासना उग्र कर पूर उभ्र ॥
अन्यन प्रवेस तिन ग्रह पवित्त। कारज्ज कज्ज द्वैं आइ मित्त ॥
॥ छं० ॥ १४ ॥

आसनह हेम चयकोन कुंड। कर सेत माल जपि उंच तुंड ॥
परिधान वस्त्र सारत्त रज्जि। अंबरह सेत उप्पर सु सज्जि ॥
छं० ॥ १५ ॥

आसन्न एज अग्गैं अनूप। स रजित तथ्थ जालंध रूप ॥
तस अग्ग संग सेरह बतीस। धज धोम षग्ग अग्गै सु कीस ॥
छं० ॥ १६ ॥

सुध्यान जाप दस सहस होम। धरि ध्यान होम जज्जिय सु कोम ॥
धरि हीय ध्यान जालंध देवि। मन वचं क्रम्म चिंतिय सु तेव ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय पष्ष वीच भय निसा जाम। आदिष्ट देवि बुल्लिय सु ताम ॥
मँगि मंगि मंगि नर बीर सत्ति। इछंत काज जो सुभग्ग मत्ति ॥
छं० ॥ १८ ॥

बुल्ल्यौ सु बीर जालंध माइ। सु प्रसन्न देवि जो सुभग्ग भाइ ॥
बर एक सुद्ध अप्पहु सु अम्ह। फुट्टैव संग मो जैत षंभ ॥
छं० ॥ १९ ॥

जंपै सु देवि रे धीर धीर। फुट्टैव जु षंभ मो सत्ति वीर ॥
राजन्न सु तोहि अप्पै पसाव। ग्रामह सु थान आदर सु भाव ॥
छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ.-सरन।

आये सु जात मुझझह सु रभ । फुट्टै सु सग तो जैत पभ ॥
चितै सु चित मुझ जहा चित्त । जह जहा सकट तो पास सत्त ।
छ० ॥ २१ ॥

जपै सु धीर जालध मात । फुट्टै सु पभ आउ सु जात ॥
फुट्टै जु सग मो सकति तिष्य । भुजो सु अन्न तो दरस दिष्यि॥
छ० ॥ २२ ॥

वरदान दियौ देवी सु धीर । नीसान प्रान वज्जै सु भीर ॥
समरैं धीर देवी सवद्द । छुट्टै सु दुष्य नर वै भरद्द ॥ छ०॥ २३ ॥

देवी का वरदान ।

कवित्त ॥ हेम दडि सिर मडि । मच द्रिग आन मिलाइय ॥
धूप दीप साया सु गध । जच अरु ध्यान जु पाइय ॥
नारिकेल फल सुफल । महिय पारभ पच विय ॥
विनै विद्धि सारत । करिय पूजा अनद जिय ॥
वर धीर मिली मग्गी सुवर । प्रसन उमा परतप्प हुअ ॥
चर चित्त बीच करहि न कछू । पभ फोरि जैपत्त तु अ॥छ०॥२४॥

धीर पुंडीर का कुमारी कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना ।

दूहा ॥ कुम्मारी कुम्मार सहु । बोलि सु भोजन दीन ॥
अनंत विप्र भोजन विविध । धीर सु पारन कौन ॥ छ० ॥ २५ ॥
अति आनद सु धीर किय । भयौ सूर रस भास ॥
अनत विप्र भुजे भगति । दिय सवद्द पिन तास ॥ छ० ॥ २६ ॥

जैतखभ का वर्णन और सामतों का नित्य प्रति अभ्यास करना ।

कवित्त ॥ जैत पभ मडयौ । स्वामि सामत परब्बन ॥
अष्ट धात कर अष्ट । रेप गज अष्ट सु रब्बन ॥

अष्ट मुष्टि चा रूष्टि। वाहि कंठ्ठै जु संगि वर॥
इष्ट देव सत सील। संच आभंग रंग भर॥
तारून्न तुंग सह सत्त भर। इस अभ्यास दिन प्रति करहि॥
इक मुट्ठि दु मुट्ठि ति मुट्ठि लगि। किहुन सार दुअ अंग सरहि॥
छं० ॥ २७ ॥

धीर का जैतखंभ भेदने के लिये जाना।

चकित चित्त चहुआन। सूर सामंत न सुग्गहि॥
नर पष्षर भर भिरन। षंभ सों षिग्गि षिग्गि ग्गुग्गझहि॥
तीन पष्ष दिन पंच। बीर नीसानन बज्जिय॥
सबर बैर सुरतान। जाहि संमुह करि सज्जिय॥
पुंडीरराय चंदह तनौ। धीर नांउ बै अंकुरिय॥
रन सिंह कंध थप्परि तरकि। हेम तुथ्थ लिन्नौ तुरिय॥छं०॥२८॥

धीर पुंडीर की अवस्था और बल का वर्णन।

नव बिय बरष प्रधान। तुंग लच्छिन उतंग तन॥
चढ्यौ सिंह सामंत। बीर पुंडीर धीर घन॥
ताजी तुंग उतंग। बैस बीय पष अढारै॥
मीरन रत्त सु गत्त। पियै जल अम्भ क चारै॥
बर चंद जंपि चंदह तनौ। विभर मेछ बअ अंकुरिय॥
तन पष्षि परष्षन निपति बल। चढि तुरंग धंधरि परिय॥
छं० ॥ २९ ॥

अश्व वर्णन।

राज॥ लियौ सेत ताजी, सुधा जीति साजी। तुला हेम तोलं, महालीन मोलं॥
छं० ॥ ३० ॥

अनूपं ऐराकी, सहै ना सुधाकी। दुअं गात उच्चं, सरूपं सकुच्चं॥
छं० ॥ ३१ ॥

षड़ै षाल नालं, तगे लंघि तालं। भरै दान भारी, कहां पंषि कारी॥
छं० ॥ ३२ ॥

धीर का खंभ के पास पहुचना ।

दूहा ॥ ध्यान उमा करि सुमन धरि । धीर वीर मन लाइ ॥
जैत पभ फोरन सु बर । भौ जालधर आइ ॥ छ० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य जैतखभ पर जाना और धीर का आना ।

कवित ॥ विहँसि चढ्यौ चहुआन । सूर सह सेन बुलायौ ॥
जैत पभ रोपयौ । लोह मन तीस मिलायौ ॥
भयौ राइ आयेस । कुअर सब विझौ षेलहु ॥
सेथि तीर तरवार । सग सरवर कर मेलहु ॥
चिहुटै न चोट दुअ अगुरिय । उहित सग मथ्थै धरिय ॥
अप्पौ सुराइ तिहि अप्प करि । मनहु सूर सह अहि उहिय ॥
छ० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ दिवस अट्ठ पुज्जिय सकति । नवल नवम्मिय दीह ॥
सिलह सुरग सु मडि किय । चढ्यौ तुरगम सीह ॥ छ० ॥ ३५ ॥

भुजगी ॥ चढ्यौ सिह सोमत पुडीर भारी । धरै कंध सोहै सकत्ती करा
जुरै जूह कालग्रसै सार सारै । पिझै पभ तेजी दुहू अग डार
छ० ॥ ३६ ॥

रुरी भेरि भकार नीसान धाई । उठी वेद विप्रान विप्रान झाई
तपै तेज वाही चिभागी ततारी । उनं धात मे धात कट्टी निनारं
छ० ॥ ३७ ॥

मिटै रेन रायां दियो अग चडी । तुला सीर दडी मनो धर्म मः
छ० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का आज्ञा देना और धीर का जैत खभ भेदना ।

कवित्त ॥ हो रावत मडली । कोरि मच्छर मनामडहु ॥
सो तुरग तन पिस्यौ । सग वाहिर गहि कड्ढहु ॥

बंस कुली छत्तीस। करहु बल जो बल भावै॥
संगि न टारी टरै। जंतु षिन अद्ध डुलावै॥
अष्यौ तुरंग चहुआन तब। बिहसि धीर पुंडीर लिय॥
उष्परिय जैत षंभह सहित। तब पसाव प्रथिराज किय॥
छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना।

भुजंगी॥ कियौ राय परसाद पुंडीर जोटं। मही मंसु कामं जुहिं सारकोटं॥
दिये पंच हज्जार ग्रामं सु थानं। गढ़ डा माहि वैरष्ष पीलं निसानं॥
छं० ॥ ४० ॥

रष्षतं बष्षतं तुरंतं उचायौ। थप्यौ सब्ब सामंत पुंडीर जायौ॥
तबै बोल बोले सु उच्चै अचाए। कहैं चाय चहुआन सों बोल चाए॥
छं० ॥ ४१ ॥

अबै मरन के करन के करहिं साई। बाधन के गहन के सुरतान घाई॥
छं० ॥ ४२ ॥

राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना।

वित्त॥ चारि वचन चहुआन। दिए बर धीए अचाये॥
मरन काम चहुआन। करन अरि हरन बताये॥
गहे धीर सुरतान। हथ्थ अप्पन चहुआनं॥
जोध कीस धोषंत। करै सु बिहान प्रमानं॥
जो धीर राइ इम उच्चरै। काम साम साक्रत करै॥
प्रथिराज काय भंजन भिरन। धर भज्जत सग्गौ मरै॥ छं०॥४३॥

धीर का मस्तक नवा कर राजाज्ञा को स्वीकार करना।

आगें धीर सधीर। हथ्थ चहुआन मथ्थ दिय॥
आगें सूर ससूर। ताप उतराध तेज लिय॥
आगें बर कैलास। ग्रहे पीनाक सु साजे॥
आगें कंचन तेज। धरे नग तेज विराजे॥

आगें सु धीर पुडीर बर। अरु स्वामि इथ्थ वर मथ्थ दिय ॥
सामंत जैत चामंड बर। मिन्न इथ्थ दिस सयन किय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

चामंडराय का कहना कि धीर क्यों लड़कपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो, दोनों पक्ष का बल तो तौलो।

हँसि बोले चामंड। धीर सुनि बात हमारी ॥
पातिसाह दल बियम। तुरी अगनित है भारी ॥
घर बैठे अप्पनै। बोल तुम बड्ड बोलहु ॥
मेर भरन कहौ बथ्थ। सिंघ सम कुंजर तोलहु ॥
रे सुनहि सूर पुंडीर कुल। एतो झुट्ठ न तुम कहहु ॥
जिहि सात फेर हस्ती फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहु ॥
छं० ॥ ४५ ॥

हा ॥ घर सूरा मठ पडिया। गाम गमारा गोठि ॥
पंच मझ्झ बोलत वयन। धूज विछुट्टिय होठ ॥ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
।था ॥ अप्पसाय जे न सा पुरिषेण। जे अप्परास मुचरिया ॥
ते पथ्थर टंकि उकीरी अब्ब। कवही नह अनहा हुती ॥
छं० ॥ ४७ ॥

रास हरडिय कु नरिंद भासिय। इयर लोय पडि वन्न ॥
पुव्व उठानय गुरुअ। पछालहु अचलहु अच ॥ छं० ॥ ४८ ॥
सुर सिरि मूल बड बीज पल्लव। सुअन लोइ पडि वन्न ॥
पुव्व ठानय लहुअ। पछा गरुअ च गरुअ च ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धीर का कहना कि मैंने जो कहा है वही करूंगा।

।वित्त ॥ हों पुंडीर नरेस। हों सु झुझार सबर बर ॥
हों सुत चंदह तनौ। ठिल्लि दल देहु चिविध घर ॥
मोहि इष्ट बल सकति। मोहि बानै बर सज्जित ॥
मो सम अवर न वीर। साहि उप्पर दल गज्जित ॥

हों सुनौ सच, दाहन दहन। हों सुति नहिं तिन बर गनौ॥
बर बीर धीर इम उच्चरै। गहुं साहिब हसती हनौ॥छं०॥५०॥

धीर की बीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना।

दूहा॥ बढि अवाज ढिल्लिय नगर। धीर ग्रहन कच्चौ साहि॥
हँसिहि सूर सामंत ए। कुटिल दिष्ट मुष चाहि॥ छं०॥५१॥

एक महीने पांच दिन में यह समाचार उड़ता हुआ शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा।

छित्त॥ मास एक दिन पंच। बत्त दिसि विदिसि न हूअं॥
चंद पुत्त कौ चाव। पेषि प्रगट्यौ जस धूअं॥
दिसि दष्षन पुब्बाह। रहस उत्तर पच्छाहं॥
गज्ज वान गज्जा करंत। चिहु चक्क सवाहं॥
अद्भुत्त बत्त संसार सुनि। पुंडीर राइ हरट्टिया॥
गज्जनै साहि साहाब दर। मुष मुष कित्ति प्रगट्टिया॥ छं०॥५२॥

मंगि दोय बर मात। राज प्रथिराज महाभर॥
जैत षंभ जित्तनह। साहि बंधन आनन धर॥
तब तुट्टिय चवसट्ठि। दियौ बल षंभह फोड़न॥
अरु जु साहि बंधनह। ताहि बर बंक पधीरन॥
इह कहत मात दिन्नौ सु बच। सुनत साह अचरिज्ज हुअ॥
पिब्बह सु बीर बल कारनै। जैत षंभ आरंभ किय॥छं०॥५३॥

दूहा॥ बज्ज्या नाम पुंडीर तुअ। लज्जा दान सु षग्ग॥
नित्त निहाई बत्तरी। कित्ति दुहाई मग्ग॥ छं४॥५४॥

जैत प्रमार और चामंडराय के मन में धीर की ओर से डर पैदा होना।

पद्धरी॥ दुहुं मग्ग नाम पुंडीर धीर। नीसान प्रात बज्जंत धीर॥
पामार जैत चावंड राय। तिष्टान राग लग्गंति धाय॥छं०॥५५॥

कल मली चित्त बहु भति आइ।* * *
दीवान मान आदर अदब। पिन पिन सुताय लग्गै सु गब्ब॥
छ० ॥ ५६ ॥

बलिभद्र वीर जामानि जद्द। पौचीय राव पिम्मि कहिय सद्द॥
बग्गरिय राव देवाधि देव। आजानवाह बोलत मेव॥
छ० ॥ ५७ ॥

रावन्न राम गुज्जरी तेह। लौहोन बत्त पुडीर छेह॥
उपगार चद चित्यौ सु तम्भ। रप्पयौ पूर चालुक्क मम्भ॥
छ० ॥ ५८ ॥

तापंत राज सज्जी न बज्जि। फट्टेत तोन तम कवन कज्ज॥
घटि वटित और गावार रग। हर गाम धाम देसा दुरग॥
छ० ॥ ५९ ॥

ता सुनिय सत्त उद्धत त्रित्त। जगि जलनि जानि सिच्यौ सु अंत
गामी गमार पुडीर सूर। तिहि जाइ तुट्टि सुरतान पूर॥
छ० ॥ ६० ॥

दादुरति कोट जिहि भार सद्द। पुज्जै न कोइ कोकिलति बद्द॥
आचरन सिध जवुक कुलाइ। भज्जैत प्रात मिलि सुगह ताय॥
छ० ॥ ६१ ॥

बबर विरद्द बामा सु पानि। बधे सु कोन बर सूर तान॥
उचरे वीर चामड राय। जिन वीय बस सामत पाइ॥
छ० ॥ ६२ ॥

हम लज्ज सूर सामत भार। प्रथिराज राज बल उद्ध सार॥
अपराध बध धरि धात पभ। जानै न जुद्ध सुरतान गिभ॥
छ० ॥ ६३ ॥

प्रथिराज ताहि अप्पै सुलक्क। हिसार कोट पट्टन पलक्कि॥
गज बाज वीर वैरप्प सेत। नीसान मेघ रन पील नेत॥
छ० ॥ ६४ ॥

बरजै न कोन सामत राइ। इहि मुष्य अप्प रहनो न जाइ॥

सुगहँ न काम कोई प्रमान। चहुआन पचाऱ्यौ सर्कट खान॥
छं० ॥ ६५ ॥

अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिखकर सूचना देना कि धीर सपरिवार जालंधरी देवी की पूजा करने जायगा।

कवित्त ॥ लिखि अरदास जुगत्ति। जैत सुरतान सुपट्टिय॥
कोतूहल गूजर गमार। मुखही मुख ठट्टिय॥
नाना ही गीचर गियान। पांवार पुंडीरां॥
राज छज्जि रवि देउ। मूह सज्जल सग्गीरां॥
भग्गहांह गुज्ज अंतर कियौ। बोलां हीरा बत्तियां॥
सांइनौ संग बंछै मरन। सोहै साहस छत्तियां॥ छं० ॥ ६६ ॥

वचनिका ॥ बज भांम हमंद ईन। सुलतान साहाब दीन॥
तुरकमां ताज। गज्जने बीर बाज॥
अरदास जैत काज। लिखी बंदगी साज॥
तिन उनह कौ गुनाह। डिमूरू विरद बाह॥
बहुत कुल षंचना। देवी दिवाना॥
दरबार हिंदवाना। गज्जने साहिपति साहिपनाह॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ इति अरदास लष दई। जैत गौरी सुबिहानं॥
अब्ब गमार पुंडीरी। सीस लग्गी असमानं॥
अवसि मास आसोज। दैव अष्टमि गुरवारं।
पूजि मिसह जालंधि। संग सब्बै परिवारं॥
इह बात साहि सुबिहान कों। नन्है मुष बड्डिय कही॥
बरजंक अचानक रचि बल। तबहि साह से मुष गही॥छं०॥६८॥

आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना।

गरजि मेघ निंबरिय। सरद सरवरिय अहन्निय॥
जल थल निग्गल निज। अकास बह वास अवन्निय॥

इस बस सारस सवद । कवोलि कु कदे ॥
सलित सरोवर मन । अजाद अम्रत कर चदे ॥
रति नइय नौमि जइह सुदिय । जल जलद पूजन विहंसि ॥
सिद्धा न सिद्ध करि चद सुअ । अवह रिपु पारस परसि ॥
छ० ॥ ६९ ॥

धीर का व्रत से पैदल चलना।

दूहा ॥ सूर तेज अति सरद कौ । आगम चढे विराज ॥
जालधर वर परसने । बोल पुवतर काज ॥ छ० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ चल्यौ लै निज व्रत्त । जात जालप्प जलप्पिय ॥
पाय चलत उविहीन । पान भोनह तजि तप्पिय ॥
धीर हार इक वार । भूमि सथाह सधारिय ॥
मौन धारि जप सार । धूप दीपह पुज्जारिय ॥
सामत अमतन जानि कै । सकै न दुष टारन दइय ॥
इह दुष्ट कष्ट निज सेव कहु । जानि जननि प्रग्गट भइय ॥छ०॥७१॥

जालधरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकड़ने आरहे है।

निसा मद्धि मातग । बोल समधीर सु बत्तिय ॥
चौंडराय पामार । सोहि समुह लिपि पत्तिय ॥
अट्ठ सहस गब्बरी । धीर पकरन तो पठ्ठिय ॥
गुपत तेग गहि गोप । भेष कब्बर करि लठ्ठिय ॥
पय पय सु तुम्हझ संकट हरौं । बोल बोल सानिध करौं ॥
इम कहत देवि अप्रछन्न हो । तो प्रयज प्रा सम धरौं ॥छ०॥७२॥

सप्तमी शुक्रवार को धीर का जलंधरी देवी के स्थान पर पहुच कर पूजन और दान करना।

दिन सुक्रह सत्तमिय । जाय जालधर पत्तिय ॥
दान न्हान परमान । थान थोनह करि अत्तिय ॥

तहं हिंदू बर मुसलमान । लष्ष विप्र सुआवहि ॥
जवनिक कुल छत्री । कुलाल षोड़स मिलि धावहि ॥
जानै न कोइ नर भर चपति । प्रवत लग्गि पारस पर्‌यौ ॥
कोटन सु कोट भंडार भरि । घन सु द्रव्य हाहुलि भर्‌यौ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जैत प्रमार और हाडा हम्मीर की शाह प्रति सूचना ।

दूहा ॥ तब लिष्यौ कपट कग्गर करह । जैत पमार हमीर ॥
बोल्यौ बोल अचग्गरौ । तिन पकरायौ धीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥
गहिय पानि कहि साहि इम । कोइ भर मीर मलिक ॥
धीरहि गहि आनै निजरि । साहब लह सो सक ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह के धीर के पकड़ लाने का बीड़ा रखना और गष्षर लोगों का बीड़ा उठाना ।

कवित्त ॥ दिए पान सुरतान । लिए आरिष्ष हथ्थ धरि ॥
कहै साहि साहाब । जियत ल्यावहु सु बंधि कर ॥
अट्ठ सहस गष्षरी । नेग गहि चढ़े तुरत्तह ॥
संक न मानौ जाइ । धीर बैठौ बिन मत्तह ॥
संदेस कहौ पुडीर सों । चलि रावत नहिं संक जरि ॥
तब बेढलेउ चिहु पासु तें । लै आवहु बेसास करि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उक्त गष्षरों का योगी के भेष में जालंधरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना ।

तक्यौ साहि गज्जनै । धीर जालंधर जत्तह ॥
सहस अट्ठ गष्षरिय । भेष करि कप्पर रत्तह ॥
गहि आनौ छल बल । पुंडीर राइ चंद कुमारह ॥
कर कग्गार लिखदिये । भेद राजैत पमारह ॥

तारन्न तुग साधक सकल। मनो मोन मूरत रचिय॥
गुन गुपत हथ्थ गुपती धरिय। भुगति मगि जोगिय हँसिय॥
छ० ॥ ७७ ॥

छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मांगना।

दूहा॥ धीर निकट ठाढे भये। कपट हेत सहरूप॥
जोरि हथ्थ तिन विन्नयो। भुगति देहि हम भूप॥ छ० ७८॥

गष्षर लोगो का धीर को घेर का गजनी लेचलना।

कवित्त॥ सिंध विहथ्थें आव। नाव नगलि उत्तरिय॥
आनि तथ्थ गजराज। ढाल मझ्झें वैसारिय॥
अट्ठ सहस गष्षरी। अट्ठ दिसि सेवा सारते॥
इम आवै भर धीर। रथ्थ बैठी जनु पारथ॥
प्रजलोक देह देहह दुनी। दिप्पन भर धर उमही॥
जानै कि इन्द्र मुख विप्पनह। उलटि मोर नग उमही॥
छ० ॥ ७९ ॥

धीर का गजनी पहुचना और नगर निवासियो का कौतुक से उसे देखना।

गष्षरी॥ आरोहि गज्ज पुडीर धीर। लै चलै घेरि गष्षर गहीर॥
गष्षरी सहस अट्टह प्रमान। नाचिय विटि सविता समान॥
छ० ॥ ८० ॥

सुक्के विवाह चिन्हाव धाय। उत्तर्यो सिंध जोजन सवाय॥
सब लोक सिंध मडल जु रेस। दिप्पनह धीर वीरत वरेस॥
छ० ॥ ८१ ॥

द्वादसह मान सुष प्रगटि जोति। नित्य उच्च थान बहु प्रात होत॥
कै कहै साहि हनि है कधानि। दै है सु प्रगट कै कहै दान॥
छ० ॥ ८२ ॥

इन भंति सहर गज्जन सपत्त। बंदियन विरद आसिष्य दत्त ॥
संकरह हेम तोलह त्रिसत्त। निय पाय कढ्ढि किय धीर दत्त ॥
छं० ॥ ८३ ॥

जसु दान डक्कि गज्जन सु देस। इम पत्त द्वार असुरह नरेस ॥
उमारा मीर सब मिले आय। दिष्यनह धीर पैजह पराइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जालीन मध्य देषै हुरगा। दिषि रूप धीर सुक्कै सरगा ॥
पुंडीर आइ दरबार चाहि। गज्जनी लोक कौतिग नमाइ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

राजद्वार पर दर्शकों की भारी भीड़ होना और गष्षर सरद का शाह से धीर की गिरफ्तारी का हाल वर्णन करना।

कवित्त ॥ गज्जन वासी लोक। केक पर दिष्यन आइय ॥
चंद पुत्त मुष चंद। कुंद सष जानि सधाइय ॥
मीर मलिक उंमरा। मीर मत्ती दरबारह ॥
ठाम न लग्गै कोइ। ताहि पिष्षन भर भारह ॥
अचरिज भयौ सब सहर भें। जब आयौ दरबार क्रम ॥
पुच्छै जु साहि जब धीर सो। बै विरह लिन्ना विषम ॥छं०॥८६॥

भुगति देन कहि भूप। इच्छ कप्परी जु तुम कहु ॥
निसा आदि एक लौ। पूजि मूरति सब तुम कहु ॥
बोलि मंगि सहु सिद्ध। फेरि दीनौ हुंकारौ ॥
ठाम ठाम संग्रहिय। फेरि धरियौ धुत्तारौ ॥
जो जनवि पंच उग्यौ अरक। तपत सिंधु सिंधि उत्तरिय ॥
द्वादसी दिवस द्वादस सकल। साहि धीर इकत करिय॥छं०॥८७॥

धीर के पकड़े जाने का रामा चार चारों ओर फैलना। धीर के षवारा "वैजल" का अधीर होकर अन्न जल छोड़ देना॥

कुंडलिया ॥ दह दह कोह दहत्त बिन। फिरि फट्टी पुक्कार ॥
बर षवास लंघन करिय। पानी पन्न अहार ॥

पानी पन्न अहार। धीर सुरतान थान गय ॥
जाम देव गप्परह। मइय आवाज साद भय ॥
मिलिय पलक दरवार। दुनिम लग्गी दर सोह ॥
गो सु पुरह गज्जनै। किरिति फट्टी दह कोह ॥ ८८ ॥

वैजल पवास का स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ धालि रप्पौ पुडीर। धीर धीरत्ति न रुप्प ॥
पग पोलंत विहथ्थ। सिंह चोवहिसि दिप्प ॥
जाम देव गप्पह नरिंद। मच छल सिर पटि नप्प ॥
तत्तारह पुडीर। मेछ सिरदार न भप्प ॥
उप्पारि लियौ सुरतान पै। धीर न धीरत्तव हुल ॥
मनि हाम चद चदह तनौ। छल विचारि पग्गान पुल ॥
छ० ॥ ८९ ॥

गहत धीर पावास। मत चरनंनि अरि रुद्धौ ॥
तीन सहस विच एक। सीस गुपती आलुद्धौ ॥
निसा मद्धि चमचमी। रीस मारी तन भग्गौ ॥
कूट वज्ज भय लुटि। धाय सह परवत लग्गौ ॥
सत अद्ध कोस वाहत सुवर। फिरि पच्छी आइय उकति ॥
पावास चद पुडीर रपि। प्रात उडग्गन तजहि भति ॥ छ० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ विषय वास वेजल सुवर। तन सोइ दिपि भय भार ॥
दिवि नरिंद लधन करै। पानी पान अधार ॥
छ० ॥ ९१ ॥

हम सहम्म दिखिय सहर। गहन धीर सुरतान ॥
जट्ट सुपन विपरीत तय। वडव वछ कधान ॥ छ० ॥ ९२ ॥

तत्तारखा का धीर से कहना कि तूने यह क्या प्रतिज्ञा की।

कवित्त ॥ मिलि पलक पान पट्टान। सोह सभा भरि मडे ॥
तह सुधीर पुडीर। आय उत्तर कर छडे ॥
वे अदान नादान। धात भजै धय लग्गौ ॥
जग रग चह आन। देस देस घन लग्गौ ॥

गामी गमार पुंडीर कुल। वाप भलेरा पुत्र बट॥
सुरतान षान दिट्ठान दिट्ठ। कित कुरान चिंतै [1]सुचट॥छं०॥९३॥

शाह का सुपना।

सुनौ षान तत्तार। साह लद्धौ सुपनौ निसि॥
है गै निधि चतुरंग। चिंति राजस तामस विधि॥
बर बंधे गजपति नरिंद। बोल बहु उच्चारे॥
वह वह करि उच्चरिय। षग्ग अरियन सिर मारे॥
बिपरीत सुपन बानिक्क हुअ। कर बंधे नृप बत्त बर॥
सोचयौ सुपन अहि डिंभरू। बर बंधत छुट्टे बि भर॥
छं०॥९४॥

दर्शकों का बिचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है।

हरमहार सिंगार। गोष जाली दिसि जट्टै॥
षलक षान उमाहिय। साहि हिंदू दुअ बट्टे॥
कोतूहल आलम उदार। दल बहल उन्ने॥
हनै कि छंडै साहि। चढी चिंता चित दूने॥
करतार जाहि रष्षे करां। ताहि रोम बट्टै कवन॥
रहिमान राम बट्टै कछू। ताहि निमष रष्षै कवन॥छं०॥९५॥

कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखनेवाला बड़ा है।

हा॥ मारै जाहि रमा सु बर। तिनह न रष्षै कोइ॥
रष्षनहारो राम जिन। मारि न सक्कै कोइ॥छं०॥९६॥

एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा।

वित्त॥ एन एक आरन्य। चरन पारद्धिय दिष्षिय॥
ता पछ. औसर पाई। फंद पारद्धिय षंचिय॥

(१) ए. को. सुचंड।

दिस दच्छिन कूकारन। करत घुर धुरा सिंह सम॥
उत्तर दिसा असाध। दग लग्गौ करार दम॥
चिहु दिसा रुक्कि आरिष्ट चव। कहा जान पावै हिरन॥
तिहि वार एण इम उच्चर्यौ। मो गुपाल रष्यहु सरन॥छ०॥९७॥

अनल उट्ठि आघात। अनल उडि फद दहे तिन॥
तब वलाह बरसत। बुझ्यौ दावानल सो वन॥
स्वान होत सनमुष्य। धर्यो ज बुक लगि पुट्ठै॥
जात देषि मृगराज। रीस करि पारधि रुट्ठै॥
तानत धनुष गुन तुट्टयौ। चल्यौ एन बिन सक मन॥
करुना निधान रष्यन करहि। ताहि मारि सक्कै कवन॥छ०॥९८॥

दूहा॥ रष्यन हारो राम जिन करि राषै इहि भाति॥
वधिक सिचाना बधि रषै। पारापति दपत्ति॥
छ०॥९९॥

कबि का कहना कि मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और इस विषय पर जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण।

भुजंगी॥ नव दून रष्य जय जैतरथ्थ। तहा अष्य अग्गया धर तत रथ्थ।
नव दून योह निपडी अचीनी। मिले पंड कुरपेत जैजरथ रनी॥
छ॥१००॥

करी पैज पारथ्थ जैजरथ बध। तिन रष्यन जाय जैजरथ सिंध॥
किय अग्गिहारी दछिनी छितान। तिय पुट्ठि चोन दिसा पूरि बान॥
छ०॥१०१॥

भर भूरि सरना रथ रथ्थ थान। दर दूस दुरसासन सुष्षि बान॥
गज गाज जल सि धुता पुट्ठि ओपै। क्रत जास जुद्ध स्रत लोक लोपै॥
छ०॥१०२॥

दिसी दिस्सि बान समान सुदेह। मानो बाल प्रोढा सुनारी सुनेह॥
अय तथ्थ सारथ्थ देवक्कि पूत। हनै जुद्ध जैजरथ उडि सीस वित्त॥
छ०॥१०३॥

इते पंपनी साजि जैजरथ भष्षै। बधै देव क्यौ ताहि हरि देव रष्षै॥
इते वीर विश्वास करि धीर बोल्यौ। पछै पंपनी साथ जैजरथ तोल्यौ॥
छं० ॥ १०४ ॥

शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करने वाला क्षत्री सच्चा नहीं है।

दूहा ॥ मिले धीर पुंडीर वर। वर गोरी सुरतान।
बोलि बीरवर धीर कों। चित साले चहुआन ॥छं०॥१०५॥

कवित्त ॥ सें पुच्छै सुरतान। अवे तूं चंदह नंदन ॥
तोहि विरद इम कहै। अप्प बर बैर निकंदन ॥
अवसानह संकरै। जीव रावत जो बंचइ ॥
ता जननिय को दोस। मरत षत्री जो संचइय ॥
इह जीभ हाड बाहिर पिसुन। एतौ झूठ न झंषियै ॥
कहुं धीर लाज कारन कवन। प्रान राषि पति मुक्कियै ॥
छं० ॥ १०६ ॥

धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है।

न मैं षग्ग संग्रहयौ। न मैं सिगिंनि कर मंचिय ॥
नहुं टाच्यौ टंकुच्यौ। पति लग्गत तन संचिय ॥
टल्यौ सुहूं जोगिंद्र जानि। धीर धीरं तन गहयौ ॥
चाव हिसि बिंटयौ। षुंदि षुंदहि मन रहयौ ॥
बुल्ल्यौ जु बोल चहुआन सौं। सो न बोल छंडै हियौ ॥
गहि साहि हाथ अष्षन कह्यौ। ताहि पैज कारन जियौ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बादशाह वचन।

पत्ति पैज संसही। पैज पति ही सौं बंधी ॥
पत्ति सरन पति मरन। सूर पति पति सौं संधी ॥

पति रतन ससार । गयौ पति हथ्थ न आवै ॥
कोटि वत्त जो करै । पत्ति रच्छौ बल गावै ॥
पति गये मरन दीनै नही । सो पति तन किम संग्रहै ॥
आदर सु पत्ति दीजै जगत । ते पति रन सग्रहि रहै ॥छ०॥१०८॥

धीर पुंडीर वचन ।

है पत्ति पत्ति कुपत्ति । सही पति मो धीरह धरि ॥
धरी जु अधरी होंहि । सही पति तेह होइ नरि ॥
इही काज है पत्ति । धीर बोल्यौ परमान ॥
कक बक करि साहि । कह्यौ बधन चहुआन ॥
रीस सम सम अच्छिर लिपी । में अरि बधन साम उर ॥
करतार हथ्थ केती कला । तौ करौ पत्ति सची सु धर ॥छ०॥१०९॥

बादशाह वचन ।

सुनत आप सुरतान । धीर चढो नहि चुक्कै ॥
जो दरोग पुंडीर । धाहि गोरी गहि मुक्कै ॥
सुद्ध जुद्ध सग्राम । षेत पुरसान पिसावहि ॥
ता दिन धार हिससार । कोट चढह तन पावहि ॥
धीर नाम ता दिन लहौ । कहहि काम आपर कहहि ॥
राजान काज पुंडीर नप । च्यार दिसा बध्यौ रहहि ॥छ०॥११०॥

धीर पुंडीर वचन ।

पैज काज पारथ्थ । नाथ दुरजोधन भज्यौ ॥
पैज काज श्री राम । लक दसकधर गज्यौ ॥
पैज काज श्री कृष्ण । कस मथुरा महि मार्यौ ॥
पैज काज बलिराय । रूप बामन करि गाह्यौ ॥
हु पैज काज बधन सहिस । तुम बधन चढ्यौ नही ॥
ज्यों तेल नीव वपु तिलछही । ते साहि इसी वत्ती कही ॥छ०॥१११॥

बादशाह बचन ।

धीर नाम तुहि धरिग । धीर रन होय तो जानौ ॥
भरनि चंड धर संड । नयन दिट्ठ सुलतानौ ॥
नेज अग्र धज अग्र । अग्र बंबरि ढाहानी ॥
अग्र बान कम्मान । पंष बिद्धहि दीवानी ॥
जंबूर नारि हथ नारि घन । घन अग्राज फुट्टै अगा ॥
हक्का हहक्क फुट्टै हिया । तब न कोय लग्गै मगा ॥छं०॥११२॥

धीर पुंडीर बचन ।

तं दीठी तिहि बेर । साहि तत्तार न सग्गा ॥
बजि अग्राज जंबूर । छोरि षुरसानी भग्गा ॥
अप्पानी धर बत्त । मत्त ओही तूं जानै ॥
जे दड्ढो होंहि दूध । फूंकि सों मही असानै ॥
हौं धीर धीर पग मंडिहौं । जो तुम परषन पग मंडिहौं ॥
मृगराज हाक ज्यौं मृग्गनिय । यों देषत सत छंडिहौं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

सोई सेर जिहि सेर । भरकि कुंभी कुँभ भंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । गाज अप्पन बल गंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । पुंछ पटकत धर कंपै ॥
सोई सेर जिहि सेर । देव दानव जिय चंपै ॥
सोइ सेर साहि गहिकर करन । अजापुत्त जिम आनिहौं ॥
मुष बोल सास जो धीर हिय । तो पकरि लेउं सुरतान हौं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बादशाह बचन ।

फुनि जंपै सुलतान । धीर तैं झूठो बोल्यौ ॥
किन सायर थाह्यौ । मेर किन हथ्थह ठेल्यौ ॥
किने सूर संग्रह्यौ । किने सपन धन पायौ ॥
कौन सिंघ सो छुच्छि । षेलि जीवत घर आयौ ॥

सुलतान दीन साहाब सों। एतो झूठत तू कहहि ॥
जिहि सात फेर हथ्थी फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहि ॥
छ० ॥ ११५ ॥

धीर पुडीर बचन।

जो विषधर विष अधिक। तौ गरूड सौ ग्रव्वस मडय ॥
जो गल ग्रस्सै सिंघ। तौ कोरि कुंजर बन छडय ॥
जो घन सघन मिलत। तौ पवने परचड निकंदय ॥
जो पसरहि रवि किरन। तौ कुह फट्टय धग वद्दय ॥
जो रोह चपि चढ्ढ गहहि। तो का तारागन रष्पनौ ॥
जहिनह साहि चहुआन रन। तहिन धीर परष्पनौ ॥
छ० ॥ ११६ ॥

बादशाह बचन।

वे हिंदू के कुफर। बोल भी कुफरे कहै ॥
गामी गल्ह गमार। रोस अपनौ ना छडै ॥
बधि लिया बलहीन। मरन को काहे चाहै।
जब उदर जम ग्रहै। गुरब सो लत्ता वाहै ॥
पैज पटतर सब सही। जब कछु देषि दिपाइयै ॥
हु हु करत अप्पन मुयै। रासभ ओपम पाइयै ॥
छ० ॥ ११७ ॥

धीर पुडीर बचन।

रवि न उगै अथ्थवै। चद चदनो ना छडै ॥
क्रोड करकै उढ। बसुह बासग भरु छडै ॥
पवन थक्कि थिर रहै। अरु जलधिहि जल षुट्टै ॥
मेर डरै डग मगै। धूअ तुट्टै रवि छुट्टै ॥
जौ ना जियत साहहि गहौ। जौ न पग्ग पारौ रवरि ॥
तौ बोल धीर धरनी पिसै। बसै न हर अगह गवरि ॥
छ० ॥ ११८ ॥

बादशाह बचन।

बे हिंदू नादान। साहि पावस पल्लान्यो॥
है गै घंट निसान। नाग मुतिन धर जान्यौ॥
हम हमीर हलबलै। करे द्रिगपाल दसों दिसि॥
कमट विमट होय पिट्ट। डिट्ट ठढ कोल इला धसि॥
हाकंत हक कंपै भवन। तहां तूं मो सग्हौ भिरै॥
आदान बंध हिंदू सहर। गसहां करि मिट्टे चरै॥ छं०॥ ११९॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। बात संभरि इक मेरी॥
तो अग्गें में बहुत। गल्ह अष्षी बहुतेरी॥
बयना बल बंधिया। बयन रहसी संसारा॥
तबहि हक बज्जसी। सब जानसी जहारा॥
आवइ साहि सन्नाह कसि। षग्ग मार मचायहों॥
गहि साहि आन चहुआन पै। बंदर जेम नचायहों॥छं०॥१२०॥

बादशाह बचन।

तब गोरी सु बिहान। धीर पुच्छै सुमत्ति कल॥
देव द्रष्ट बंधिहै। मंच बंधिहै कि संसल॥
छलकि प्राण बंधिहै। सपन बंधै सुबिहानं॥
देव केव अवतार। हाम बंधन परमानं॥
बंधिहै बंधि रसनह सुबल। सच बंधन जो छुट्टि है॥
को मंच बीर आरिष्ट बल। कै भूत फिरता। धुट्टिहै॥छं०॥१२१॥

धरी पुंडीर बचन।

उदर ताम उच्छरय। जाम वसि परि न बिलारह॥
मच्छताम तरफरय। जा मनह रुम्य उजारह॥
गंवर ताम गहुवय। जा मनह केहरि गज्जाय॥
हिरन फालतां करय। जा मनहि चीतौ सज्जाय॥

सुमेर ताम गरु अत्तनह। जब न हनू गह्ह करि कटय ॥
अस मस समूह दल तब्ब बल। जब न धीर पय्यर चढय ॥
छ० ॥ १२२ ॥

बादशाह बचन।

रे धीर झुंठ चितवत। सेस लभ्भै न अनि पर ॥
दस सत फौज समूह। जीह विय विंब बीय चर ॥
मरद जु मुष्य उचरै। जु कछु मग्गै भर भीर ॥
तिन साह को थाप। डरै अब बधन धीर ॥
हम कहु अधर बहु बढग। बढिग भीर भीरा करसि ॥
जम हथ्थ परै जो छुट्टिहो। तौ सामि बचन करिहो परसि ॥
छ० ॥ १२३ ॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। आन जल्लोल साहितौ ॥
जब ढाला ढीचाल। माल उथ्थाल देषिमौ ॥
आषाढा डंडूर। तुट्टि तरवर तन पत्तिय ॥
उड्डि सेन जल जेम। रेनि घल्लो गल बध्थिय ॥
जिहि तेज तुग लोगहि तरनि। जनु अथास फट्टै किरनि ॥
दैवाह द्रुग्ग मत्तह मिरन। जन बिसासि हिदू नरन ॥
छ० ॥ १२४ ॥

बादशाह बचन।

ढिल्लिय ढाहि अवास। पकरि चहुआनह दडो ॥
मोरों मत्त गयद। सज्जि सब सेन बिहडौं ॥
चौरासी मडली बंधि। अप्पन घर आनौ ॥
बैरावत सुनि बात। पैज अप्पन परवानौ ॥
सुरतान कहै साहाव दी। षिनक गुसामन महि धरौ ॥
गढ़ भूमि बक्क तौ ढाहि करि। रनवासौ घर घर करौ ॥
छ० ॥ १२५ ॥

धीर पुंडीर वचन।

गज्जि खेउं गज्जनौ। सार सुरतान विहंडौं ॥
भारौं मेछ मसद। टेक मनमहि नहिं छंडौं ॥
करौं जंग जल्लाल। हाल देपै तुहि अध्पिनि ॥
नचहि वीर वेताल। छुद्ध पूरौं पसु पंपिनि ॥
बढ्ढौं जु पहुमि पंजर पलन। बलह अप्प कह सुप कहौं ॥
इह सच्च रंच गहुट्ठिय नहीं। तौ पति सुपंच मझ्झह लहौं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

बादशाह वचन।

गर जंजीर संकरिय। पाय बेरी को कट्टइ ॥
धनि न गड्डि गड्डियहि। तेज बल सबें निघट्टइ ॥
तुहि धीरंतन नाम। पान पीपर लो डुल्लहि ॥
लज्जहीन हिन लज्ज। बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि ॥
जितोंब कालिह ढिल्लिय नयर। समर न को संमुह रहय ॥
सुरतान कहै साहाब दी। तब पयज्ज किम निब्बहय ॥छं०॥१२७॥

धीर पुंडीर वचन।

तोरौं तरपि जंजीर। थाट मोरौं साहन तुअ ॥
मोहि वचन नहिं टरहि। गंग नहिं बहै अटल धुअ ॥
कीर भार उचरहि। सात सायरनि दिगंतर ॥
बरुन बयन पिट्टियहि। काल पिष्पियहि निरंतर ॥
पुंडीर धीर इम उचरय। कौंन गहूठ गहंपै वयन ॥
गहि पातिसाहि राजन अपौं। इह चरिच पिष्पौं नयन ॥
छं० ॥ १२८ ॥

बादशाह वचन।

वे हिंदू नादान। बोल बौलै सिर पष्पै ॥
कौं ढंकै असमान। कौंन सायर भुष भष्पै ॥
किनें पवन गिल्लिय। किनें गहि बासग नथ्था ॥

किन जमरा जित्तिया। किने कद्रप्प सुमथ्था॥
वडा जु वोल मुपन्ह निया। इता वोल सिर पर धरै॥
सुलतान कहै पुडीर सुनि। इह कौ ही पूरी परै॥
छ० ॥ १२९ ॥

धीर पुडीर वचन।

घन अंवर ढकिया। अस्ति सायर मुप पिन्ना॥
योग पवन झुल्लिया। किसन गहि वासग लिन्ना॥
गोरप जम जित्तिया। हनू कद्रप्प न लग्गा॥
हुवि अग्गै सुलितान। भिडे कोई दिन भग्गा॥
चहुआन साहि दिनई समर। सजि चतुरंगम चढ्यौ॥
अथ्थाह नीर ढीमर जिमे। सुमीन तनी परि कढ्यौ॥
छ० ॥ १३० ॥

वादशाह वचन।

हालै हसम हमीर। कीट हिंदू दल पुंदो॥
आन साहि जल्लाल। जोर जोगिनिपुर रुंदो॥
वेकुसाव आसा गमार। गरुअत्तन गामिय॥
वोलाही रावत्त। थभ फुट्टै वहु नामिय॥
आइत्त धात आमिय्य जिम। आमी थव कढ्ढो रसे॥
मति नसै प्रान रथ्थै पुरिस। छत्री छल छंडै हसै॥
छ० ॥ १३१ ॥

धीर पुंडीर वचन।

छल छंडै सुरतान। वलनु छड्यौ जि हि वधौ॥
जीय रथ्थौ पतिसाह। जियत पति साहह सधौ॥
तन रथ्थो तजि टेक। तेग रथ्थो पुदि आलम॥
जव ढको करिवार। ढोल लग्गौ मुप लालन।
जल जात धात रथ्थै जलै। दूध विनट्टौ दूध हिय॥
लजनीय साहि गज्जन मनह। धीर पयपै अरथ विय॥छ०॥१३२॥

बादशाह वचन।

जे दरिया उत्तरिग। पलह पडुरे न कल्लय॥
जोगिनि बर गंजरिग। पवन पन्नरे न हल्लय॥
जिन भैरूं भरमंत। ते डरें डंकनी न डक्कं॥
जिन पंचाइन धक्क। ते जाहिं जंबुक न हक्कं॥
हों गोरी नरिंद दैवान गति। नंद पुंडीर न चंद सुअ॥
सामंत लाष सथ्थं मिल्लय। सहै न साहस अम्म सुअ॥छं०॥१३३

धीर पुंडीर वचन।

सोई पारथ भारथी। नमेँ निकस्यौ मुष को वनि॥
सोइ किस्न करतार। दुक्यौ स निडर गल्हावनि॥
सोई सूर बलसूर। राह गलि जाय गहंतह॥
सोई श्राह गजराज। चक्र करि हन्यौ श्रिकंतह॥
मति करै साहि मन गर्व तुअ। छिति नाम जोहै छत्रिय॥
निर बीर पहुमि कबहूं नहीं। बडां बडेरी बसु मतिय॥
छं० ॥ १३४ ॥

बोल बोलि चहुआन। बचन सो वचन पल्लट्टों॥
फुनि हस चढ्ढि पुंडीर। तोरि तासह नहि मिट्टों॥
तीन लाष उमराव। सहस संभरि सत्तरि वै॥
इह जानि जोनि थान। करै सरहन सब नर वै॥
गज अगंज भूपति सरन। गोरी सयन निधट्टिहों॥
इम कहै धीर सुरतान सौं। बाउ बहंतो कट्टिहों॥छं०॥१३५॥

हों दरोग जो कहौं। सूर उग्गै पच्छिम दिसि॥
हों दरोग जो कहौं। ईद उग्गमे कुहुं निसि॥
हों दरोग जो कहौं। बयन चुक्कै दुरवासा॥
हों दरोग जो कहौं। बोल बोलै बिन सासा॥
बोले सुधीर जो बोल मुष। तो पाहन रेषा सरिस॥
पतिसाह हथ्थ साहों नहीं। तौ चंद पुत्त जायौ न जस॥
छं० ॥ १३६ ॥

बादशाह बचन ।

इह दरोग बोलत। परै दो जिग चढानी ॥
इह दरोग बोलत। सेन हसिहै सुलतानी ॥
इह दरोग बोलत। लाज छुट्टै पति घट्टै ॥
इह दरोग वसि जीह। लीह पचै सब सट्टै ॥
वहु। न बोल बहु। कहै। चाड परतह जानियै ॥
धावत धीर से धावनो। ते रावत बष्यानियै ॥ छ० ॥ १३७ ॥

धीर की बाते सुनकर तत्तार खां का तलवार की मूठ पर हाथ रखना ।

सुनै बोल सुलतान। धीर समु जे मद्दिय ॥
वे काजे हाजुर। गमार नोजुर द्वै वद्दिय ॥
तपित पान तत्तार। मुट्ठि तत्तार सु सगिय ॥
पचि क्रन्न आवरन। दिट्ठ सुरतान जु ढिग्गिय ॥
विय करै दरस आलम चरित। सुहि सु[1]चच्च बचा बगसि ॥
आनद चद बचा इहा। सुनि सु गल्ह लग्गै रहसि ॥
छ० ॥ १३८ ॥

तत्तार खां बचन ।

एही गल्ह सुनत। गाल फारो लगि क्रन्नो ॥
एही गल्ह सुनत। पाल कट्टी दुहु दन्नो ॥
एही गल्ह सुनत। प्रान कट्टी अप्पानिय ॥
एह रम्य आरम्य। द्रोह लग्गै सु विहानिय ॥
आदिट्ठ पिट्ठ हिट्ठ अह। कै छुरान गट्टी गला ॥
चढि तुरकवान हि दुवान दिसि। हल सहाय कीजै हला ॥
छ० ॥ १३९ ॥

(१) ए सच्च।

धीर पुंडीर बचन ।

वे कायर बल हीन । पकरि सिंगिनि क्या तोलै ॥
वे ततार गामी गमार । साहि अग्गैं क्यौं बोलै ॥
अग्गैं आउ मेदान । ज्वान मरदुन मुष जोरहि ॥
जानि अजा गहि सिंघ । हाड़ पवनं तन तोरहि ॥
कोतिग्ग साहि आलम निजर । षेत भंजि भूकौ करौं ॥
दस षान और तुम दब्बिलै । मैं चंद बचा तुमतें डरौं ॥छं०॥१४

तातारखां बचन ।

अरे धीर नादान । बोल बोले बरबंके ॥
चढ़त साहि साहाब । दीन तीनो पुर मंके ॥
तुम पतंग जड़ जीव । क्यों सुदिग पालन मोरे ॥
अति सूरौ जो चना । होइ पब्बय फुनि फोरे ॥
बोलियहि बोल अप्पां सरिस । वे अजाद बचनह न कहि ॥
करि रहम साहि रष्यै तुम्है । नतरु षबरि अबही लहहि ॥छं०॥१४

धीर पुंडीर बचन ।

कहै धीर तत्तार । षान सुनि बत्त हमारी ॥
चढत साहि साहाब । दीन को सहै सहारी ॥
हों सुधीर पुंडीर । एक लष्षा दह जानों ॥
तुम देखत हरि साहि । सेन समुह सु भानौ ॥
तुम तुरक मान हिन्दुअ सु हम । हम तुम पटंतर कहौं ॥
हम परत स्वामि परहथ परें । तुम परहथ जीवत रहौं ॥छं०॥१६

तातार खां का कुपित होकर धीर पर तलवार उठाना और शाह का हाथ धर लेना ।

हाला हूल किय नैंन । हथ्थ तत्तार पथारह ॥
छीन लिये सुरतान । रोस देषंत अपारह ॥

या बुद्धें या बुद्ध। याहि छंडै जु वडाइय ॥
पुछै पा पुरसान। अग औसाफ चढाइय ॥
आदान वध हिंदू इहा। झुट्टाई सच्चा करहु ॥
पट्टाय चंद बच्चा घरो। पच्छैहौ चपौ धरहु ॥
छ० ॥ १४३ ॥

धीर पुंडीर वचन।

जे जीवहि अग मैं। सही ते जमहि न भग्गै ॥
जे कामहि मह महे। लहकि ते कुलहि न लग्गै ॥
जे स्वारथ सदेस। देह दप्पै न परप्पै ॥
जे जोगह जगमै। नेह नारी न निरप्पै ॥
डग्यौ न साहि डर डरनि अमर लगि हक्को सयन ॥
सो धीर नाम ब्रह्मर धरिग। चंद पुत्त जम्महु भय न ॥
छ० ॥ १४४ ॥

बादशाह का धीर के बल की परीक्षा के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का वृक्ष उखाडना।

साहिबदी सुरतान। कहत पुंडीर धीर सुनि ॥
धात पभ मे सग। फोरि तैसो बल्ल करि फुनि ॥
सुह अग्गै दरखत। पान इहि बधत हथ्थिय ॥
सो नयो जपारि। जोर दिप्पै सब सथ्थिय ॥
हनुमान लक जिम चंदसुत। वढि गुमान हिमगिरि सिखर ॥
धक धूनि बब्ब भरि हथ्थ गहि। जर समेत बेजर उपरि ॥
छ० ॥ १४५ ॥

शाह का धीर से कहना कि मांग जो मागना हो।

दूहा ॥ पूव पूव सुरतान कहि। पूव धीर बल्ल तुझ्झ ॥
मगि मगि जो मगना। सोव समप्पौ तुझ्झ ॥
छ० ॥ १४६ ॥

श्लोक ॥ यावत् दरिद्री सोपि। यावत् साहि न द्रष्टया ॥
लिलाट लिखितं धाता। दारिद्रनो पलायते ॥ छं० ॥ १४७ ॥

धीर का कहना कि मुझे किसी बात की भूख नहीं केवल तुझे पकड़ना चाहता हूं।

कवित्त ॥ ज दिन जननि हौं जनिग। त दिन बाजे बहु बज्जिग ॥
तद्दिन बंस पुंडीर। विरद बानै मुहि सज्जिग ॥
तद्दिन मान महंत। तद्दिन पट्टो लिषि हथ्थह ॥
तद्दिन गाम कुठार। राव रावत मुहि सथ्थह ॥
असपत्ति सेन दल गंजि हौं। धीर नाम तादिन लहौं ॥
बासन पसाव तादिन लहौं। जबहि साहि जीवत गहौं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

बादशाहि बचन।

चंद नंद मति मंद। तोहि परतीत हियै यह ॥
आसानी असपत्ति। जुद्ध करि कै लैहुं गहि ॥
जुद्ध करत जौ मुओ। मौज इह किन कों दिज्जै ॥
इह संसार निरास। आस छिनहू नह किज्जै ॥
अपनंद निद्धि न विगड जड। सो जल की जल मे रहिय ॥
करतार मौज रोजी करत। इह मनुष्ष हथ्थह नहिय ॥
छं० ॥ १४९ ॥

धीर पुंडीर बचन।

जब लगि पंजर सास। आस तब लगि ना छंडौं ॥
जब लगि हियै हुंकार। साहि दल बल करि षंडौं ॥
जब लगि कर पग जोर। मानि मच्छर नह मेलौं ॥
जो काया कायंम। ठाट साहिब क्रम टेलौं ॥
सुलतान षान उमराव सह। गह गहिये गुर गाहिहौं ॥
इहि हस्त हथ्थि भंजे हलक। सही साहि तो साहिहौं ॥
छं० ॥ १५० ॥

शाह का धीर को सिरोपाव और निज का घोडा देना।

तब हँसिय साहि सुरतान। उच सिरपाव मँगायौ॥
जो सुरतानह पाट। तुरिय सोई पल नायौ॥
राग वाग पष्पर समेत। तही तुरत निवाज्यौ॥
पर्‍यौ निसानन घाव। जानि विय भद्रव गाज्यौ॥
चौदह सै गैवर गुरहि। सहजहि सेन समूह दल॥
सुरतान कहै साहाबदी। अब किन सज्जसि आव वल॥
छ० ॥ १५१ ॥

धीर का घोडे पर चढ कर कहना कि इसी घोड़े पर से तुझे पकडूगा।

जयौ तुरी चढि मन। वीर चवदह सें सथ्थह॥
मन ग्रब्ब पुडीर। साहि ग्रहिहो से हथ्थह॥
विहारी गज जूह। सुड मुडन महि पिट्टौं॥
तीन लष्ष सत्तारि। सहस करिवर वर कट्टौं॥
जित्तेव अब्ब हिंदू तुरक। भिरौं वहक्कि पचारि रन॥
पुडीर धीर इम उच्चरै। मम सकहि सुरतान मन॥ छ०॥१५२॥

शाह का कहना कि तू चल मैं भी तेरे पीछे आया।

तेक दीन कथ्थाय। तुग तेजी दह वाहिय॥
जर जीना सजोइ। रेसरथ सनमुष छाइय॥
लै हिंदू आदान। जाय चगा पछाइय॥
हो आयो तो पच्छ। लष्ष लोहा सम्हाइय॥
सलाम आलि आलंम करि। सामता सब्बां कहौ॥
जगाह राज वेज्जै भरा। तुम राकौ कानौ रहौ॥ छ० ॥ १५३ ॥

धीर पुडीर वचन।

जेते जिते कथाइ। साहि मोदी में हथ्थहि॥
वे हिंदुअ वे मुसलमान। कथ्था वे कथ्थहि॥

मे झूठा सच्चाव। साहि जो जंग न नंचा॥
जो जंग न नंचिया। तो साहि झूठा मैं सच्चा॥
अप्पाह बोल बप्पां हलै। अप्पां बोल सु हथ्थिया॥
चंगोह चंद बच्चा बचन। इह सलाम करि कथ्थिया॥छं०॥१५४

धीर पुंडीर को पान देकर विदा करने के बाद शाह का देश देश को परवाने भेज कर सहायक बुलाना और चढ़ाई की तैयारी करना।

धीर हथ्थ दिय पान। पान पुरसान निसानह॥
कदलि वास कैलास। रोह ठट्ठै फरमानह॥
हबस रूम गप्परिय। भोज भप्पर भर भारिय॥
अंग कुलंग तिलंग। देस नंदन निरवारिय॥
जल्लाल दीन नंदन नवल। सुनि अवाज इहि निज रुकिय॥
पुंडीर धीर पच्छै पहर। मिलि मिलान जोजंन दिय॥छं०॥१५५

धीर हथ्थ दिय पान। पच्छ निसान जु सद्दे॥
पान तेग तत्तार। तरपि कस उप्पर बद्दे॥
दह दीहा आलंम। गंभ गंभीर उपट्ठे॥
जाने बद्दल उत्तरा। देस दच्छिन पुर छुट्टे॥
आडंड षंड जोगिन पुरां। धरि लग्गी संभरि धरा॥
प्रथिराज देव उप्परि दपत। इह हल्ली यह बेघरा॥छं०॥ १५६।

शाह की सुराज्जित सेना की चैत्रमास से उपमा वर्णन।

सज्जि फौज सुरतान। अग्ग माधब रिति जानिय॥
पच लता वैरप्प। पहुप जंडा सनमानिय॥
छच नूत मंजरि समान। ढाल नव ब्रप्प पवन हलि॥
गज्जि गहर नीसान। जोर जल्लाल उमड़ि चलि॥
सजि फौज मंत गरजंत अग। मनहु पवन बद्दल हलिय॥
कहि चंद बंद बरदाइ बर। देषि धीर मन भइ रलिय॥छं०॥१५

घरीय तीन रवि चढिय। चढ्यौ गोरी नरिंद बल॥
रत्त डड सदूक। रत्त धज चोर साहि पर॥
रत्त गजनि गज झप। रत्त बैरप बर टोप॥
अग्गै पान रती सनाह। रग रनबी बर ओप॥
ओपम एह कविचंद कहि। देपि सुवर सुलितान बर॥
पह जीत राह रवि सरस हुअ। मनो जत्त किय भोम बर॥
छं० ॥ १५८ ॥

शाही सेना का आतंक वर्णन।

चलत रेन रवि लुक्कि। चक्क चक्की चप ढरयौ॥
सेस भार कलमल्यौ। कुंभ आरभरि डरयौ॥
सरिता जल मुक्कयौ। नीर साहन नहि पुरयौ॥
हय हय हय उचरंत। चक्क चक्की बिसु चरयौ॥
अंधियार भयौ वासुर असत। दिसा विदिसि सुझै न तह॥
साहाबदीन चालत दल। डरहि राय अंत मंडलह॥छं०॥१५९॥

शाह के कूच के समय अशकुन होना और तत्तार खां का कूच बंद करने को कहना।

भुजंगी॥ चढ्यौ साहि आलम तें चित्त दूनी। मिली बाट बाराह नौडार सूनी।
रथ मिन्न नीच फिकारंत फेकी। उडी ग्रद्ध पच्छ मनो मोन केकी।
छं० ॥ १६० ॥
खरी मग्ग मंजार द्वै सहस जूनी। परी बूंद आकास ते ओन दूनी॥
चढ्यौ उट फेकौ फिकारंत केस। सित चीर नारी सु मुख्य उदेस॥
छं० ॥ १६१ ॥
पस्यौ पंजरी कोक पूके पुरान। जरी लोह भट्ठी सुदेखी सुरान॥
गही बग्ग फेरी ततार सुभाई। रहौ आज दीह जमाराति साई॥
छं० ॥ १६२ ॥
पठ पै जपै गंवरा निवारी। कहै देव देव गरब्ब पहारी॥
मन मति छडी विमास अधारी। रच्यौ पेल मंडी सुकीला विहारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

दहं रोज रोजं करौ बंध बंधी। लरैं ऐन चहुआन सो स्वामि मद्दी।
इला एक अल्ला तनी आलि छंडौ। दई एक देहं तनौ तौन पंडौ॥
छं० ॥ १६४ ॥

शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या?

कवित्त ॥ सुनौ षान तत्तार। तेग सहै सुष सद्दा ॥
जो कर इक्क तनीय। रोजगारो नफजंदा ॥
वली अली आदंम। पैन पैगंबर कीनो ॥
वे भूले तुम जान। किसव जिन तेग न लीनो ॥
पल्लटे भेष छंडौ दुनी। षरस पीर हाजुर निजर ॥
गज नेज साह गोरी घरां। करि निवाज वंदहु सफर ॥छं०॥१६५

जहां पीर पर सिद्ध। बंग जिहि ठाम न दिज्जिय ॥
जहां मुसाफ नह पठय। कतेब कुतवा नव चिज्जय ॥
जहां सुनाहि कुरान। नही महजिद घर पर किन ॥
परै न गाय लिज्जै। षुदाय रेजा करि वारन ॥
जहां हुकम नाहिं काजी करत। तुरकनि षनि गड्डिय जहां ॥
सुरतान कहै साहाबदी। सो जिहान हमकों कहां ॥छं०१६६॥

शाह का मीरा शाह के समय की घटना का प्रमाण देना एवं मीरा शाह का संवाद वर्णन।

रोसन अली फकीर। गसा रमता अजमेर ॥
दही मोल ले चषत। हुआ षट्टा दिय फेरं ॥
गुजरियां पुक्कार। जाय दरबार सिताबं ॥
हडी भिंटी गुनहि। काटि अंगुरि बिन जबाबं ॥
मक्कां सु जाइ फिरियाद करि। मीरां सैद हुसेन अग ॥
नीयति षुदाय मद्धत करन। इह अष्षिय मन धरि उमग ॥
॥ छं० ॥ १६७ ॥

दूहा ॥ मरना जाना इक है । जुग रहैगी गल्ह ॥
सा पुरसों का जीवना । थोडाई है भल्ला ॥ छ० ॥ १६८ ॥

मुसल्मानी लश्कर का सौदागरों के भेष मे अजमेर आना ।

भुजंगी ॥ कहै दीन कज्ज परस्सै कुरान । करों रद्द मद्द सबै हिंदवान
नमै पीर पैगंबरें थान मक्का । रहा बन्न नाम जुग चार चक्का ॥
॥ छ० ॥ १६९ ॥

दिन सत्त हूते सु वीवाह अद्दे । कर कंकन सेहरा बंधि चद्दै ॥
तन मन एक चौआलीस त्यार । चले सग सौदागिर रूप धार ॥
॥ छ० ॥ १७० ॥

जल पथ के अछ अच्छे उतंगा । पुलै नाव ज्यों तीर वेग विहंगा ॥
दरब्बाफ जरदोज जरकस्स झूल । रहै नेक चप्प ढकै मप्प तूल ॥
॥ छ० ॥ १७१ ॥

इसे अश्व लीयें धरा हिंदवान । दियौ आय डेरा अजम्मेर थान
दरब्बार जाए कह्यौ मीर पीर । सन सुप्प उम्मै रहे हथ्थ जोर ॥
॥ छ० ॥ १७२ ॥

हय हेरि ल्यायौ पधाई सुगट्ट । रवी अर्थ कै कन्ह दधि मध्यि कट्ट
सुनै कान आनां महीपत्ति आय । सबे छोरि फेरें तुरंगा दिपाय
॥ छ० ॥ १७३ ॥

पुरी ए वियाचा वकी राह गौर । रहव्वाल चलै न हलै सरीर ॥
दमान क कूदत नाचत थाल । निरप्पे परप्पे हरप्पे भुआल ॥
॥ छ० ॥ १७४ ॥

मुह मगि दाम करे कौल बोल । लिहे पत्र सें हैवर हेरि मोल ।
जमा जोरि मंडै सवा लप्प दाम । लिये कागदे कायथ अक ताम ॥
॥ छ० ॥ १७५ ॥

करे छाप आप बुलाए हजूर । सनमान बहुआन रप्पै गरूर ॥
गयो समरीनाथ दै हथ्थ बीरा । करे चूक सक्यौ नही तथ्थ मीरा
॥ छ० ॥ १७६ ॥

अजैपाल जोगी करामात अग्गं । उठे हथ्थ नाहीं मनोंकीनि नग्ग
निवाजं गुदारे दियं बंग जब्बं । गये देव हिंदून के भज्जि तब्बं ॥
॥ छं० ॥ १७७ ॥

करं काफरं जो इहां मौत दीजै । मसूरत्ति कीनी दही पीर हौजै ॥
तिन कारनं अप्पने हथ्थ अप्पं । कटे सीस बेगं चलो पुट्टि धप्पं ॥
॥ छं० ॥ १७८ ॥

इल्लाह महमंद रस्सूल इल्ला । कलम्मा पढ़ै जोर किन्नो सुकील्ला ॥
मिले आप मेंसं मुषं दस्त चूमें । इसे सेर ज्वानं भषै दोइ पुग्गै ॥
॥ छं० ॥ १७९ ॥

तिनं षिज्जि बिज्जू जिसी तेग कट्टीं । चमक्के घरंको चरं सहस अट्ठी
॥ छं० ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ चौआलीसोँ यार । कट्टि नंगी समसेरं ॥
कर कट्टे सिर अप्प । चढें बिंटली सुरमेरं ॥
हिंदू मूसलमान । जुरत हय गय घन पायल ॥
चहुआन आन। नरिंद । जीति उग्गौ अजरायल ॥
कटि लीन भिन्न होइ मीर परि । अमर रषिओ साफ धर ॥
तहि थान आय दरबेस इक । ढवाज मोंनदी बंधि धर ॥
॥ छं० ॥ १८१ ॥

सवासेर दिन मान । आनि तहं पुहप उछारत ॥
रज कंकर करि दूर । धूर हड्डियां बुहारत ॥
जमाराति दै सुपन । मीर इह कीन हुकंमं ॥
तुम ऊपर चढ्ढि है । सवामन सदा कुसंमं ॥
अजमेर पीर तुम प्रगट हो । कितक दिबस के अंतरै ॥
हिँदवान पान घटिहै अबनि । इहन कोल हम परत रै ॥छं०॥१८

उक्त संवाद सुनाकर शाह का कहना कि दिल को मजबूत करो और चलो ।

दूहा ॥ इहसुं कथा कहि साहि सोँ । फुनि अष्षिय तत्तार ॥
कायर पन मन छंडि दै । धीर पकरि गहि सार ॥ छं० ॥ १८२

तत्तार का मोरचे बदी से आगे कूच करना और एक पडाव के फासले से बराबर धीर के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ तू आतुर पतसाहि । हाम हिंदू सामता ॥
जोरा सों ज्यौ जक्क । बघघ छड धावता ॥
मैं मता सुलतान । सुभभ्भ सुलताना मेला ॥
करि मेला भडार । जग होइहै सुष वेला ।
टिला पहार ठट्ठा टिला । वट्ट निहट्ठा बद्धियै ॥
कोटाह कोट सा सिधु तिय । इम हिन्दू दल सिद्धियै ॥
॥ छ० ॥ १८४ ॥

जल जोवन साहीव । दीन सुलतान दुरंगे ॥
किए कूच पर कूच । कुरँग तारीय कुरंगे ॥
जथ्थ रेनि रहै धीर । दीह तहा सोहसु अच्छै ॥
बर बेली पुडीर । साहि फल पच्छै पच्छै ॥
आवाज वज्जि दिल्ली सहर । यह पुकार पहक्किया ॥
राजोह साम पचो दिहा । ग्रहा धीर गहक्किया ॥ छ० ॥ १८५ ॥

धीर पुडीर के वापिस आने की खबर दिल्ली में होना दर्शकों की भीड होना और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न होना।

ग्रह आप्पना छडि । राजग्रह धीर धवदा ॥
ढा ढिली रालोय । ताहि देखन आवदा ॥
निय नीचानी नेन । वमन उच्चा उचारा ॥
जा लग्गानी अग्गि । जीह जपी पुकारा ॥
दरबार राज भर भीर घन । मन उलास मेथ्यो धनी ॥
भुअ भग दुप दुपाह गत । जनो कि नाग लड्डी मनी ॥
छ० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ सासता मता अमत । का चिता इत वारि ॥
उट्ठि न सिर समुह सहय । लग्गा विरहा भार ॥ छ० ॥ १८७ ॥

भुजंगी ॥ पाधरे दीह सा चाहुआनं । सिरं उच्च बज्जे सु भेरी निसानं ॥
सितं छत्र रत्तं रषत्तं निसुगां । इला एक राजंग ते सुम्भ उग्गं
छं० ॥ १८८ ॥

धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन कर रानी पुंडीरनी और इंछनी का उत्सव मनाना।

कवित्त ॥ सा इंछिनि पामारि । राज बज्जे बज्जायौ ॥
धा धंधानी छंडि । प्रौढ जोवन लज्जायौ ॥
अरि अनंद चंदाह । चंद जाया जनु अज्जा ॥
हेम चीर हथ्थेल । मेल नग आरति कज्जा ॥
उछंग अंग राजन दरां । राज काज सब सुद्धरै ॥
सा धान साहि देषंतही । आज हिन्दू, दिन पद्धरै ॥ छं०॥१८

प्रथीराज चहुआन । विलसि वसुधा सह उप्पर ॥
डंड भरइ चक्कवै । पिसुन पौलै कोलू धर ॥
सहहि न कोइ संग्राम । पुब्ब पच्छिम रद छिंन ॥
इह अपुब्ब पिष्पयौ । गौर गाजनै ततच्छिंन ॥
रहि न कोइ सुनतै श्रवन । जहं जहं सिंघ पुकारयौ ॥
आकंप भयौ सब सतुर मैं ॥ जब सुरतांन हुंकारयौ ॥छं०॥१९०

धीर का पृथ्वीराज से मिलाप।

दूहा ॥ भुज भिंटलौ संभरि धनी । नयन बयन मिटि चाहि ॥
जचै न सीस समुत सुहर । लज्ज विरद भइ ताहि ॥ छं॥ १९१

धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफतार कैसे और क्यों हुआ।

कवित्त ॥ हेट हेट गजंन गयंद । वरनि यहि सूर सुअ ॥
अग्ग मग्ग पुंडीर । मीर रावत्त न लीह तुअ ॥
तू अलंग जुरि जंग । षग्ग षचिनि बहु अड्डो ॥
सु क्यौ गयौ गज्जन । गयंद मोहि अचरज बड्डो ॥

सभरि वै इम उच्चरइ । रिपु गरिष्ट कुंजर जवह ॥
कहि भीर धीर पूरस वदन । जीवत्त गह्यौ कारन कवन ॥
छ० ॥ १९२ ॥

चामडराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना।

हँसिय चोड राजैत । सामंत अभगे ॥
यभ फोरि गारवयौ । चद गभरू सूचगे ॥
मुष नन्ह आदान । बोल बहु। वहि लग्गा ॥
यव गमार पुडीर । साहि वधै बल भग्गा ॥
सुलतान दीन सिल स्वामि सिर । भरिन जियन आसुर कय्यौ ॥
वर वरन सूर इम उच्चरहि । धीर जननि यभ न गय्यौ ॥ छ०॥१९३

दूहा ॥ गय्यौ न यव पुडीर तुअ । जिन लज्जाई माय ॥
वचि प्रथ्वि राजन तनी । कही सुनाय सुनाय ॥ छ० ॥ १९४ ॥

धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बीतक कहना।

कवित्त ॥ समौ जानि सहि रह्यौ । धीर समुह बोलाही ॥
अधसि होय सग्राम । दिट्ठ चावड जिताही ॥
राज मज्झि मरजाद । समुद हद लीप नग्गौ ॥
पहुप वार पुडीर । दाहि दाहिम भर भग्गौ ॥
पिज सार धार पुडीर पर । सिलह बधि समुष तही ॥
एकथ्थ जथ्थ प्रथिराज नृप । तहा विवरि बत्त चदह कही ॥
छ० ॥ १९५ ॥

धीर का भरे दरबार में पुन प्रतिज्ञा करना।

आज लियौ गज्जनौ । आज तुरकाइन डडो ॥
मोरो आज गयद । आज सब सेन विहडो ॥
आज जीति गोरी । समूह पर दल वित्तारौं ॥
आज चद कौ आन । आज जन स्वामि उवारो ॥
सोइ आज पैज वरदाय भनि । सभरि धनी सुधारिहौ ॥
पुडीर धीर इम उच्चरै । आज मेछ दल मारिहौ ॥छ०॥१९६॥

चामंड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि वही करूंगा जो कहा है।

कहै राव चामंड। धीर बत्तां अविचारी॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है भारी॥
तीन लष्ष तोषार। घालि पष्षर धूंमावै॥
मीर मलिक उमराव। काहु सावंग न आवै॥
अति जुरत नयन पंडै षलन। फिरि पच्छौ संका करै॥
ता जननि दोस दुरजन हँसै। जो बोल बोलि पच्छै टरै॥छं०॥१९

धूर गाज विज्जल षिसय। बोल सा पुरिस न षुट्टौ॥
वह निज्जहै नियान। सो न हो अंत अहुट्टौ॥
करै पैज पुंडीर। षग्ग षिचिन षिसि भज्जइ॥
सिरन तुट्टि धर परय। जननि जामंत न लज्जय॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। हो न बयन बोलों घनौ॥
हैवर मलिक हथ्थह हनौ। तब सुधीर चंदह तनौ॥ छं०॥१९८

चामंडराय का बचन।

चंदा बसै अकास। करह कितनौ रन पाइय॥
कनै लंक दधि मंझ। कोइ कंचन लै आइय॥
को केहरि कच ग्रहै। पाय को प्रब्बत ठेलै॥
को दरिया दुस्तरै। अनिल को अंकम झेलै॥
रावत्त राव सब संभरइ। चामंडराइ इम उच्चरै॥
साजै विसेन [1]आसम असम। अब सुधीर तुअ किम लरै॥
छं०॥१९९॥

धीर पुंडीर का बचन।

जब लगि सिर अरु मास। जीभ मुष थक्कय[2]॥

(१) ए.-आलम। (२) को-चक्कय।

जब लगि हियै हुकार। सुच्छ सुप मच्छर फरकय॥
जब लगि कर करिवार। गहिव गज्जनवै गजौ॥
ढाल ढोल नेजा परोइ। सभरि वै रजौ॥
जब लग्गि सीस इहि कंध पर। पवन मेघ बरसंत घन॥
इम कहत धीर चावंड सों। पैज पनट्टय प्रान विन॥छ०॥२००॥

धीर का घर जाना और सब कुटुम्बियों का उससे सहर्ष मिलना।

निज ग्रह पत्तौ धीर। राज दरवारह सत्तौ॥
अति उछाह आनंद। विरद भर भारव हत्तौ॥
मिले अग्ग पुंडीर। आय चय राय ब्रग्ग बर॥
अति सुमान दिय दान। ब्रन्न जिहि आनि मंडि कर॥
जै जया सबद जपै जगत। बाल ब्रह्म उच्छव तरन॥
अति प्रेम सहित अंतर मिले। रस सुमाह रज्जे करन॥छ०॥२०१॥

धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रगट करना।

एक मुहूरत मिलिय। सब्ब सबोध सत्त किय॥
ता पच्छै एकंत। बोलि भर वथ्थ अप्पजिय॥
रंधर राव विरम। सिंघ सागर पुंडीरह॥
साहि पान सुम्मान। रामहरि राव हमीरह॥
माल्हन सु महर पति मत्त मन। कमधज केल्हन जाम पति॥
बैठे सु चित्त चिंता सु चित। विरद लाज लग्गी सु अति॥
छ० ॥ २०२॥

धीर का अपना बीतक कहना और सबका प्रबोध करना।

पद्धरी॥ जपै सु धीर पुंडीर ताम। निज ब्रग्ग चित्त चिंता विराम॥
मौ बोलि बचन न्रप अग्ग उच्च। कथ्थैव तुम सोमान सुच्च॥
छ० ॥ २०३॥

नाष मै जैत चामंड राय। सुरतान सरिस किय बंध दाइ ॥
बंधयो कपट करिहों जु बंधि। बुझ्यौ न कोय कित दुष्ट संधि ॥
छं० ॥ २०४ ॥

लै गये साहि संमीप मोहि। संमिलिय सु दल दरवार वोहि॥
हन हनौ सद्द जंपै सु सब्ब। सबदो हमीर गंभीर ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २०५ ॥

परब्रह्म कर्म चिंते विचित्त। आवरे ग्यान आहित्त हित्त ॥
तत्तार तन्न अष्पै विअष्षि। पंपिनिय सुफल जैद्रथ्थ सष्षि ॥
छं० ॥ २०६ ॥

छंड्यौ जु साहि गुरु गल्ह काज। चिंते सु चिंति अति आजि साज॥
चढ्यौ जु साहि दल बल असंषि। लग्गी जु काम कारज्ज धंषि॥
छं० ॥ २०७ ॥

चामंडराय पामार जैत। आहित्त चित्त जंपै उहैत ॥
सो चिंति चिंति चिंतौ सु काज। नृप होइ जैत बढ्ढै सु लाज ॥
छं० ॥ २०८ ॥

धीर के कुटुंबियों के बचन।

कपित्त ॥ तब जंपै हरिराव। सरिस सारंग पुंडीरह ॥
कहिय धीर सा सुनिय। बात आम्रत्त सुहीरह ॥
जंपै रंधर राव हित्त। कह मत्त बिचारह ॥
सीस काज सम धरौ। सूर सम गल्ह गुंजारह ॥
सजि चढौ अप्प सेना सकल। करो बंध अप्पान भर ॥
पढ्ढरे षेत पतिसाह सोँ। करहु रार उग्गार गर ॥
छं० ॥ २०९ ॥

धीर पुंडीर का बचन।

तब तमि जंपै धीर। जुद्ध सामंत कंध तुम ॥
सजे सुभर अप्पान। प्रान अष्पौ सुगह्ग दम ॥
राज काज राजंग। अंग बड्ढहि सु अप्प जस ॥
कै जीतै उध लोक। सुजस आवरहि छोभि तस ॥

इम कहै सच्च सज्जै सुनिज। एक चित्त आभित्त सब॥
तजि मोह सोह ससार सुप। जग्यौ भोर अभ्भीर तब॥
छ०॥ २१०॥

धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना खदाइयों का आना और धीर का घोडे मोल लेना।

उभै पच्छ सुर मास। रोज तीसह रमि[1] मडल॥
अगया करत अभ्यास। राग रँग रास सुपढल॥
सत्त सहस सथ सुभट। साठि दस सिधुर सज्जिय॥
बदुक बानह जोर। बेद दल नौवसि बज्जिय॥
पुडीर धीर चदह तनौ। अति गुमान विरदा बहै॥
ऐराक तुरिय से पच लै। सोदागर ईसप कहै॥ छ०॥ २११॥
किय हुकम बज्जीर। मोलि लियै ऐराकिय॥
दिये दाम दस लष्य। पच लष्यह रहि बाकिय॥
सझ समै करि महल। सबै बगसे रावत्ता॥
प्रात समै चढि धीर। भये सुभ सगुन अवत्ता॥
तब जैतराव चावड मिलि। सोदागर ईसप कहिय॥
घर जाह जिद लै जीवतौ। तुम धीर धत्त धल्लै सहिय॥छ०॥२१

चामडराय का सौदागरो का धीर पर घात करने को उसकाना और सोदागरों को अपने मे मत्र विचारना।

मिलि विचित्र इक ठौर। बुद्धि आलोच विचारिय॥
दाम जिद अरु लाज। वडे विय थोह सुहारिय॥
तब चौमन उच्चरिय। धीर महिमान सु सडह॥
पान पान विधि विवह। एक चित ह्वै पग पडह॥
मानौ सु मत्त सब मत मिलि। धीर प्रान इन विधि हरौ॥
प्रगटै सु वात सामत सुनि। हुये गहर सब्बै भरौ॥ छ०॥२१३॥

(१) ए रवि।

ईसफ मियां का धीर के दरबार में जाना, दरबार का वर्णन।

दूहा॥ करि निवाज ईसफ मियां। गयौ तहां दरबार॥
महमानी ईसफ करै। धीर होइ असवार॥ छं०॥ २१४॥

कवित्त॥ चित्रसारि कच ढारि। पान सोवन जिरि रचिय॥
लाल पंच पीरोज। घने सघनं करि पचिय॥
दिवस तेज परि मंद। अरक द्वादस करि जग्गिय॥
तारक तेज फटिक्क। सघन चुनि तारन लग्गिय॥
सामंत विलास सुष रहसि तहं। हिंदु लाट हीरां जरै॥
संगीत राग सरसै रबन। पाच नित्य अग्गै परै॥
छं०॥ २१५॥

धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना।

दूहा॥ इह ईसफ अरदास करि। मिलिक देस को जोय॥
महमानी मीयां करै। धीर पधारौ पाय॥ छं०॥ २१६॥

धीर का नित्य कृत्य वर्णन।

कवित्त॥ पंच सेर फुल्लैल। षट्ट जन मरदत तासह॥
बाहु दंड परचंड। भीम आकार सु रंगह॥
सहस कलस भरि नीर। इक्क विच कलस गंगाजल॥
करि सनान पवित्त। कीय पंच गौ महाबल॥
आमान साठि सजता वहै। पंच मुहुर सोवन्न मय॥
इम नित्य धीर चंदह तनौ। षलक षग्ग वंदै सुजय॥छं०॥२१७॥

दूहा॥ सुचि रुचि सेवा सगति रुचि। सरचि चरचि तरवारि॥
फुनि आसन कीनौ असन। भोजन साल पधारि॥छं०॥२१८॥
तहां सुभर लीने सवनि। सचि सुआर करि साद॥
षटरस भोजन भांति ब। तिन महि चित्त सवाद॥ छं०॥२१९॥

धीर पुडीर के कलेऊ का वर्णन ।

कवित्त ॥ पै अग्ग दग्ग मन तीन । सत्त सेरह विच सक्कर ॥
पद्र सेर रइ भोग । एक सीरावन वक्कर ॥
सत्त सेर रोगान । सेर पचह कढि लुच्चिय ॥
घ्रित पावक वहु अवर । करत उभै दुज सुच्चिय ॥
पहति ओर पच स्वादु । जोग राज मढकौ सुभरि ॥
च्यार घटिय दिन बाजते । सीरामन सामत करि ॥छ०॥२२०॥

शाह का सिंधु तट पर पहुचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना ।

अरिल्ल ॥ साजत सयन सह पुडीरह । तब आये तट सिंध हमीरह ॥
साजि निकट आयौ सुरतानह । है गै भार साज सब बानह ॥
छ० ॥ २२१ ॥

सुनिय वत्त सा दिल्लि नरेसं । गाजे गेन वेन असहेस ॥
चढ्यौ धीर साजै निज सथ्थह । सूर धीर सग्राम समथ्थह ॥
छ० ॥ २२२ ॥

पुंडीर वशी योद्धाओं का वर्णन ।

कवित्त ॥ सहस तीन पुडीर । धीर वर वचन अचाए ॥
च्चियन वसिन वसि द्रव्य । वसु अवहु मोह गमाए ॥
मझ मेलि सामत । रयन अद्धी ते जग्गा ॥
सुनि अवाज सुरतान । रक धन जानि विलग्गा ॥
दुअ घटिय सोम दिन पानि पथ । सहस सट्ट सेना चली ॥
अनभग जैत अग्या अगर । विच चमड वज्जह वली ॥
छ० ॥ २२३ ॥

अयुत एक पुडीर । धीर सम लोह लरन कहि ॥
वरकि वीर तम सत । सिंघ भष पान लहि ॥
दुअन पथ्थ वीरग । जुरे जिन जग वहुत किय ॥
झूझि जम्म वहु सस्त्र । इष्ट वल सकति वहुनि जिय ॥

तन तुरंग तिन नेह तजि। अजिय मरन चित एक करि ॥
बढ़ि लोह छोह छुट्टै जुरन। अरन बत्त कविचंद धरि ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामंडराय का आगे बढ़ना।

सहस एक देवंग। भेरि नफ्फेरि पंच सैं ॥
सहस तीन अंबकीम। ढोल बंदिन सु अट्ठ सैं ॥
सौ सुगंध जोति किय। अट्ठ ग्रेहं सुभ छंदं ॥
दिसा सूर मुष मिच्छ। बोलि बरदाइय चंदं ॥
घट घटिय लगन जुद्धह तनी। पहर तीन विच्छिग विषम ॥
उपरंत सेन साजै जुरहि। तब सु साहि सौजी सुषम ॥
छं० ॥ २२५ ॥

सुलतान के आने की खबर होना और सबका सलाह करना कि अब क्या करना चाहिए।

जब ग्रह आयौ धीर। पुट्टि सुरतान संपत्तौ ॥
सुनिय राय चामंड। जैत सम मन्न मिलंतौ ॥
सज्जिग हय गय साहि। सिंधु आयौ यह उप्पर ॥
धीर तेन छंडयौ। पच्छ चंपौ दल दुप्पर ॥
कत्थांह एह अप्पन करिय। अब्ब कहौ कहा किज्जियै ॥
भज्जै जराज सुलतान रन। तौ इन मति अप्पन छिज्जियै ॥
छं० ॥ २२६ ॥

जेन बल न जै होइ। तेह झुझझे कनवज्जां ॥
सोइ मंत सुद्धरै। जैन जित्ते रन रज्जां ॥
सत्त मंत सुभ चरिय। जैत चामंड सु उट्ठिय ॥
गये सजन निज ग्रेह। आय सब सथ्थ स पुट्ठिय ॥
चामंड गज्ज मंग्यौ चढन। सम बेरी दाहिम्म बर ॥
आयौ सु चंद बरदाय तिहि। खेत सु बुल्ल्यौ गुझझ गुर ॥
छं० ॥ २२७ ॥

कविचन्द का चामंडराय के घर जाकर उससे बेडी उतार कर युद्ध मे चलने के लिये कहना और चामंड का कविचद की बात मान लेना ।

पद्धरी ॥ जं पहि सु तथ्थ भट चद कथ्थ । तुम रचौ बुद्धि सुग्रह समथ्थ ॥
स्वामित्त ध्रंम तुम रत्त राइ । बेरी सु धरौ अग्याइ, राइ ॥
ज० ॥ २२८ ॥

दल मेलि साहि आयौ असपि । देपहु सु जुद्ध तुम उभय अपि ॥
बेरी सु काढि तुम जुरो जुद्ध । जानौ सु सुद्ध गुर घात ब्रद्ध ॥
छ० ॥ २२९ ॥

कढ्यौ सुमत बेरी सुपाय । जै होइ जेम चहुआन राय ॥
चहुआन कन्ह गोयद राज । कामधज्ज राइ निहुरह लाज ॥
छ० ॥ २३० ॥

पज्जून राय बधव बरन्न । कानवज्ज अग्र सुभ्भ्रे सुरन्न ॥
ढिल्लीय अवर दिय्यो न राज । जिहिं होइ आज चहुआन लाज ॥
छ० ॥ २३१ ॥

जिम जरौ घेत पल्ल विषम घाइ । तुम तजौ बीर बेरी सु पाइ ।
मन्यौ सुमत चामंड चद । मन भए सुभ्र उभ्रह अनद ॥
छ० ॥ २३२ ॥

पय तरह लोह कढ्यौ सु ताम । लगरह जानि इम्भह विराम ॥
मगयौ कनक वाजी सु एह । जातिहि जुगम अति सुभ्र देह ॥
छ० ॥ २३३ ॥

पय्यरह चमर गज गाह रज्जि । सोवन सुद्र सुभ तेज सज्जि ॥
आवद्ध बधि सब सक्क भाजि । सोभत जानि भीषम समाजि ॥
छ० ॥ २३४ ॥

चावड रोहि वाजी सु अप्प । जप्यौ सुमच निज इष्ट जप्प ॥
सजि चल्यौ सुद्ध दाहिम्म सथ्थ । द्वै सहस सूर गनअत्त हथ्थ ॥
छ० ॥ २३५ ॥

सम चढ्यौ जैत निज सेन साजि । सारद्द सहस सेना सुगाजि ॥
चढ़ि चलिय उभय घन बज्ज बाज । तब चढ्यौ अप्प प्रथिराज राज॥
छं० ॥ २३६ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुन कर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामंड को पुनः बेड़ी पहनवाना ।

कवित्त ॥ गाजि गरुअ चहुआन । सुनत अप ग्रेह सपत्तौ ॥
दीन उतर ता पछै । बोलि लोहान सु तत्तौ ॥
तुम बेरी ले जाहु । पाय चावंड सु धत्तौ ॥
इन हम अग्या तजी । अप्प बल राह उमत्तौ ॥
हम करत लाज कैमास की । अरु सगपन सन मंध घन ॥
आक्रस्सि मन्न हम क्रोध घन । मरुग्गं गहि रथ्यौ सुमन ॥
छं० ॥ २३७ ॥

ले बेरी लोहान । ग्रेह चावंड सपत्तौ ॥
धरि अग्गैं चावंड । देषि प्रज्जरि चित चिंत्यौ ॥
कहै राय चावंड । सुनौ लोहाना तुम बर ॥
न्निप अग्या सिर सजौं । नतरु जानहु तुम हित हर ॥
निज स्वामि ध्रंम षंडो नहीं । हिय अरोहिय सहि हर ॥
बेरी सुलीन चावंड विहँसि । पय आरोहिय अप्प कर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

शाही सेना की राजावट वर्णन ।

मोतीदान॥ षट दूनति साह सजे सुरतान। जहं छच मुजी कनजीक निसान।
गज ढालनि मालि चिहूं दिसि फेरि। तहां रन सद्द महग्गज भेरि
छं० ॥ २३९ ॥

जर कुंमर तोजह मेलति कंठ। तहां लष्ष फरी धर पाइक गंठ॥
तहां छच मौज अदब्ब सुभार। तहां बिग्गल नाय भ्रमै असवार
छं० ॥ २४० ॥

तहा धन डवर अवर रेन। तहा अन जेवन कीवन एन॥
तहा पार सिपै रसना। रस बोल। तहा आरस के जम जेजम तोल
छ० ॥ २४१ ॥

तहाँ ढल्लनि मल्लनि कीज प्रवेस। तहा द्वादस फौज नई भर सेस।
तहाँ तज्जिय अज्जिय गज्जन राव। तह वज्जय सिंग महिब्बन चाव॥
छ० ॥ २४२ ॥

डव ढड्डिय उड्डिय मुझ्झन केस। रही चक चोरनि मौर सुदेस॥
तहा दिब्बिहि फौज सु धीरन कोज। मनो चव चम्म कुलगनि बाज॥
छ० ॥ २४३ ॥

रवि आनि डपौ दुअ बद्दल मज्झ। कलकूह कुलाहल वीरति सज्झ॥
उडि रेन रही दल दुदभि पग। फिरि फौज पुडीर कुलगनि वग
छ० ॥ २४४ ॥

वजी सहनाइ निसान गुँडीर। सुलतान धरा मिलि मझ्झ पुँडीर
छ० ॥ २४५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रच कर चढाई करना।

दूहा॥ देषि फौज सुरतान दल। मति मडै रन साज॥
मोर व्यूह मति मडि कै। तव सज्ज्यौ प्रथिराज॥
छ० ॥ २४६ ॥

व्यूह वर्णन।

कवित्त॥ आरध वेस नरिंद। छत्र वर मुझ कहि गहै॥
सवै सेन प्रथिराज। मोर व्यूह रचि ढहै॥
चौंच राव चामंड। जैत द्रिग वधि प्रमान॥
नष पिंडी पुडीर। सेन उभ्भौ सुरतान॥
वर कंध वध वधी न्रिपति। पुछ वीर कूरंभ रचि॥
अरुनेव उदै उदित सुभर। महन रंभ दोउ दीन मचि॥
छ० ॥ २४७ ॥

(१) ए-पुडीर।

पच्छराज प्रथिराज। जाम जद्दो घट भद्दों॥
रीछ मोर पष्षरी। स्यांम चमरनि गज मद्दों॥
स्याम ढाल ढलकंत। स्याम गजपंति विराजै॥
स्याम धजा झलकंत। मेघ पंतिय दुति लाजै॥
बर नेज च्यार तहँ उज्जले। दुति सु वग्ग पंकनि वष्यो॥
मोर सह बीर सुरतान मुष। जिम कुरंग सग्गौ चष्यो॥
छं०॥ २४८॥

दूहा॥ चले दिष्ट संभौ मरद। पीन नीर रस पान॥
उंच दिष्ट के असुर वर। चढ़ि तक्कत चहुआन॥ छं०॥ २४९॥

कवित्त॥ मद गयंद झरि कीच। बीच मुत्तिय झलकंतिय॥
मनों मेघ विज्जुलिय। बनें सा नैननिर्दतिय॥
सुभर सूर बर साजि। अप्प अप्पन घर चल्लिय॥
एक एक अग्गरे। जानि भद्रव घट हल्लिय॥
आभरन दान बुंदनि बरषि। सक सहाव उप्पर ढलकि॥
जद्दव सुजाम देषिय नृपति। समनजैत वढ्ढिय किलकि॥
छं०॥ २५०॥

चाहुआन रोना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का क्रम वर्णन।

तुजंगी॥ किलकंत फौजं सु मौजं दिठंनी। बने हेम जेजंम रंजं मथंनी॥
अगै तिष्ष पाइक्क घाइक्क कूदै। करं कंनरं भाल ग्रीवं स जद्दै॥
छं०॥ २५१॥

उड़े डंबरं अंमरं रेन पूरी। कियं कूक पुत्तारिका हक्क मूरी॥
परै भीर कंबी रनं जैत छट्टी। परें बंध कंधं हथं नार छुट्टी॥
छं०॥ २५२॥

धरै आवधं उग्गि सज्जै विमानं। तिनं नाम लीजै बरद्दाय जानं
सुभे सुम्भ बाने समाने दिठाने। तहां कब्बिचंदं उपंम बषाने॥
छं०॥ २५३॥

हिमाम हिमारी हलै हेम चारी। तिय तीस जना सपरि जुद्ध भारी
गजगाह उग्गाह दुग्गाह कच्छै। मुसल्ली मुरल्ली अरब्बी उलच्छै॥
छ० ॥ २५४॥

सनेत सकेत समेत पर्तापी। पप मोर सिधोर दाम उचापी॥
निल नील सम्मील उम्मील पील। रनकी धनकी[1]सचौर ति नील।
छ० ॥ २५५ ॥

महा मीर माही उमाह उचनी। परी पाट डोरी सकोरी दिठनी॥
तरतार झडे सप सब्ब अस। उडै देपि धीरज्ज मीरज्ज हस॥
छ० ॥ २५६ ॥

नयौ ताप आदब्ब सो जुद्धि कीजै। इसी बुद्धि भग्गै नतौ लोह लीजै॥
इसी फौज जादब्ब कूरम सज्जी। नयौ अब्ब गौरी सु अब्बानि लज्जी॥
छ० ॥ २५७ ॥

दिषे पान पुरसान तत्तार दिट्ठी। छुट्यौ अम्म धीरज्ज रहि निट्ठ निट्ठी॥
मुरे पान पान स लोजी अहारै। भये अट्ठ हज्जार हय तजि तारै॥
छ० ॥ २५८ ॥

पहर तीन तिन सों तिन लोह तुट्यौ। मनों सझरी जानि धरियार कुट्यौ
छ० ॥ २५९ ॥

दूहा ॥ बजी कूह सम्मोह वर। फिरि गजराज प्रमान ॥
चाहुआन वर भग्गते। चपि सेन सुलतान ॥ छ० ॥ २६० ॥

मुसलमानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विडार देना।

कवित्त ॥ रन तत्तार टट्टरै। सेंन चपी चतुरंगिय ॥
हस्तकाल बल राज। उठे गज झपि सुधगिय ॥
पीलवान रा रन। हस्त अंकुस गजमध्य ॥
सबर सगि उम्भरी। झरी झारिय झरि हथ्थ ॥

(१) ए सतौर।

उग्गाडे भीर अग्गा अगर । कूह कहर पच्छे फिरिग ॥
सामंत कोइ अप्पै अपन । अप्प सेन ऊपर परिग ॥
छं० ॥ २६१ ॥

हाथियों का विचला कर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना ।

अप्प सेन उप्परै । परे गजराज काज अरि ॥
अस्स सहित असवार । भेर उच्छारि डारि धर ॥
सर संमुह परि पीलवान । मिट्टी मामं धन ॥
तहां चंपि हाजी । हुजाब देपंत तस्स धन ॥
सब सेन बीर भर हरि गई । गज ऊपर गज वर परै ॥
बिय बंटि रिद्धि बंछौ विषम । धाइ बीर सग्गौ लरै ॥
छं० ॥ २६२ ॥

हाथियों के विड़र जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मार काट करना ।

दूहा ॥ छंड़ि बीर गजराज मुष । तिरछौ परि सुरतान ॥
भौ टमंक दिसि विदिसि डुलि । रन रुंध्यौ चहुआन ॥
छं० ॥ २६३ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ करं काल डोरू कियं सिंघ नद्दं । सयं सकति वादी वरद्दाय चंद
सिर स्याम सन्नाह वाहंमि चक्कं । धरे अग्र बानं सुदुर्गामि बक्कं ॥
छं० ॥ २६४ ॥
गलै राग गावंत सिंधू सगंधू । गलै माल जा सूल कन्नैर बंधू ॥
अगे षेचरं षेतपालं बेतालं । तहां भैरवं नद्द जोगीह कालं ॥
छं० ॥ २६५ ॥
दोउ कन्न जोग्यंन कर पच मंडै । तिनं दर्सनं देषि साहस षंडै ।
फिरै तिष्षि निष्षी पताका तिरत्ती । लुवं जानी लागी सुग्रीवग्ग तत्ती ॥
छं० ॥ २६६ ॥

टग टग्ग लग्गी मुष मुच्छ मोहै। वजी तीन तारी सिरे स्याम सोहै ॥
लई कट्टि बूकी विभूती उडाई। भए दीह चहुआन साजे सपाई॥
छ० ॥ २६७ ॥

दिस अग्ग वट्टी सु चट्टी पुकारै। लिये लक्करी सेन गोरी निकारै ॥
लिय लष्य सेना सुरत्तान सद्धी। रन राह वाराह वरदाइ बद्धी ॥
छ० ॥ २६८ ॥

हँसै सब्ब सामत सम राज भट्ट। भइ वारही फौज एक सुवट्ट ॥
वडे षड पुडीर सै तीन अष्य। तिन मडलाजी तुरंगी जनष्य ॥
छ० ॥ २६९ ॥

उडी लोह अग्गी जर गिद्ध पषी। भरी देषि करदाय वरदाय सष्षी ॥
परे रुड मुड भर भूमि सोहै। पियै श्रोन पचारि बारिक्क डोहै ॥
छ० ॥ २७० ॥

चलै राह वै राह वैकुठ भारी। घरी सत्त रवि मडलं छिद्र कारी ॥
चयजाम रन धाम भिरि भूप वित्ते। वछै धीर सो भीर सुरतान कित्ते॥
छ० ॥ २७१ ॥

कवित्त ॥ तीरब्रह्म चामड। झड हेमानि दड करि ॥
रजक पत्त सिर मडि। फौज आषड मडि सिर ॥
उच्च अवाज नीसान। कान वीय सेन निसाननि ॥
पर पहार उत्तग। थभ थथरि परि थनानि ॥
नक्कैरि भेरि सहनाइ सुर। सुर कपाट वघिजय रवरि ॥
अग्ग्राम जैत चामड दल। सिध सहाव सुप्परि दवरि ॥
छं० ॥ २७२ ॥

शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही।

भुजगी ॥ धमी सेन आलम्म की कूक फुट्टी। जर जच गोरा वर मट्ठि छुट्टी ॥
कर कुट्टि कम्मान बान सनक्की। मनो लोर वासन्न आसन्न नक्की ॥
छ० ॥ २७३ ॥

धरं अद्ध अद्ध रनं धार धारं। करं धाम धामं भुपं मार मारं
गलं बथ्थ भिट्टैं सनेही सनेहं। उभै सूर जुट्टैं मनों एक देहं
छं० ॥ २७४ ॥

उने ओन धुंध्यौ सु जने उनाही। भए दीन दूनं सु मज्जे सपाही॥
घटं एक को एक घुट्टै सु पुट्टै। नई गंठि मुंडा वली जोग छुट्टै॥
छं० ॥ २७५ ॥

इसो जुद्ध दीठौ न सुन्यौ कहांई। मिलै जैत षामंड सुरतान धाई।
परै सहस द्वै षान भिरि चाहुआनं। बढी जेत पिथ्थी सु वज्जै निसान
छं० ॥ २७६ ॥

धीर के भाई और कविचन्द के पुत्र का मारा जाना।

दूहा ॥ षेत परिग कविचंद सुत। परिग बंध धर धीर॥
गहिय मद्द षिलची षरे। पसरत अट्ठ अमीर॥ छं० ॥ २७७ ॥

श्लोक ॥ मानवानां च नागं च, कौरवानां न पांडवं।
गोरीयं जुद्ध हिंदूनां, न भूतो न भविष्यति॥
छं० ॥ २७८ ॥

संध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना।

कबित्त ॥ भइय संझ दुहु बेर। षेत दुहु दीन न ढुंढिय॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। हथ्थ चव पंचय चढ्ढिय॥
बरन मेछ बर हिंदु। ओन सुभयंन सुभ्भरन॥
इन अभंग घट भंग। चित्त भग्गौ जु जुद्ध रन॥
पुंडीर सत्त रन रुत्त किय। बरन बीर रंभा बरी॥
अष्टमी जुद्ध मंगलन कौ। घरी अद्ध बिय सब टरिय॥
छं० ॥ २७९ ॥

दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ कायर चोर चकोर बर। निसि धट तें ललचात॥
सूर चकुर अरु बाल बधु। ए वछे वर प्रात॥ छं० ॥ २८० ॥

कवित्त ॥ सूर श्रीव वर सूर । चढ़िग सोमत तुल्य धन ॥
ससिय तार उडगन सु। द्रग्ग वीर नचत फिरइ गन ॥
हो हो हुहु गध्रव्व । रभ श्रीरभ अरुन अप ॥
अति आतुर रन चित्त । जम जम्मन कंग्गह नप ॥
बर जोग लग्ग जोती तन । सस्त्र वोय बर डोलई ॥
वर पच पच लड्ढै सुवर । मुगति वध वर पोलई ॥
छ०॥ २८१ ॥

अरुन तरुन उद्दयन । फौज पच्छै सुलतानी ॥
मिलन सूर सोमत । रेन अद्धी सम्मानी ॥
तास तुग ववरि हि । साम नेजे उडि मडिय ॥
रवि झिगुर झुमुथिय । हीस हीसा रव छडिय ॥
मडिय प्रभात नारद सवद । दोज सेन सज्जत रहिय ॥
इक वार वीर वीरह तनौ । किल किलकि जोगिनि कहिय ॥
छ० ॥ २८२ ॥

युद्धवर्णन । राजपूत सेना का जोर पकडना और मुसल्मान सेना का मनहार होना ।

भुजगी ॥ बजे लोह कोह सुकोह दुदीन । लई नाग वीर गते श्रीन भीन ॥
झनक्कत सार किनक्कत ताजी । मनों नट्टिवी नट्टि नागिन्न वाजी ॥
छ० ॥ २८३ ॥

वुलै धोय अध्धाय सा श्रोत वुद । उठै तार झकार ज्यो तार दुद ॥
उठै धीग धक्कै गज ढाल साल । मनो पत्र डडूर आषाढ काल ॥
छ० ॥ २८४ ॥

चॅपी सेन आलम जुरि तीन जाम । भए फौज अट्ठ चव एक ठाम ॥
परे सहस सोरह उभै हिंदु पान । गज बाज हज्जार तीन सुजान ॥
छ० ॥ २८५ ॥

सम सोमवार सु कोरति थान । चले लष्ष दोपाल हथ्थे हथान ॥
फिरैं एकठे लष्ष फिरि चद नद । परे बाल लाजी तिनें नोसकद ॥
छ० ॥ २८६ ॥

मथी सेन आलग्ग की है हिलोरं। पँगी आनि पारिथ्य दरिया हिलोरं
अमी अब्ब सेना थकी हथ्थ बथ्थं। रहे षेत सूरं भुरे कूर तथ्थं।
छं० ॥ २८७ ॥

मिले मक्कम पुंडीर हिंदू तुरक्की। मुरै मुथ्थ नाही सुधारै मुरक्की
सजे सूर सन्नाह ले हिंदु मेछं। तिके जानियै वीर जोगिंद केछं
छं० ॥ २८८ ॥

कढे लोह हक्की सु बक्कीं हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई
लिए हथ्थ नेजा उनंके उनाही। रहे हस्सि नेजा न हस्सै हलाही
छं० ॥ २८९ ॥

सतं अद्ध अद्धं कमद्धं स उद्धै। जिनें मोह माया रसं बंधि छुद्धै
भषै जंबुकं गिद्धि सीवंत हस्सै। फुटी सांग हथ्थं तिरच्छं सु लस्सै
छं० ॥ २९० ॥

कहै हक्क बाजी विराजी सु गाजी। घटं कंध तुट्टै किनं कैसु ताजी
उड़ी आंन छिंछी छबी लग्गि बिंदू। दहै दाह अग्गी मनो दारनिंदू
छं० ॥ २९१ ॥

कढी तेग तेगं जु तेगं चमंकी। तहां तब्बरं तुंद मीरं दमंकी।
तजे दीन दीनं दुहुं अंस भारी। मिले बंध बधं सु जोधं करारी
छं० ॥ २९२ ॥

ततथ्थे ततथ्थी करै थंग थंगं। नरै रंग भैरो वितालं उतंगं॥
कढे रुद्ध रद्धी विरुद्धं विचारी। ररै दंत दंती विकरालंत सारी॥
छं० ॥ २९३ ॥

बजे घाय आवरत सावरत रुक्कै। मनों चच्चरी डिंभरू तार चुक्कै।
नचे बंधं कंधं कबंधं सवानं। मनों सरिस भेषं पछी चौज कानं
छं० ॥ २९४ ॥

खरं तंज दीसें परंतं न दीसं। मनों भूतमाया कुरी जोग ईसं॥
इकै सांग बाही इकै तेग साजी। मनों नग्गनी जीह गहु किरत्तकाजं
छं० ॥ २९५ ॥

कढी एक सथ्थं उचं हथ्थ उंचं। झलक्कै सु षग्गं महातेज संचं।
तिनक्की उपम्मा कही चंद वक्कं। दिसी पच्छमी जानि उग्गयौ अरक्कं।
छं० ॥ २९६ ॥

लई पौक्कि कम्मान सुरतान गोरी। फटै पय्यरा अस्स भै विब्भ जोरी
परे सब्ब पान महामीरवान। मनों प्रात तारै दिपै थान थान।
छ० ॥ २९७ ॥

महारुद्र वीर भयानक दीसं। लगे जोगिनी रीस तादत पीस ॥
[1]रस साहि गोरी अद्द बुद्ध कद्द। भयौ सूर प्रथिराज परभात चद्द।
छ० ॥ २९८ ॥

धीर पुंडीर का धावा करना।

षुलेँ टोप लोलत बोलत सूरं। लिये चोर तोर भरोरं त-मूरं ॥
प-थौ धाइ पुंडीर तेजी पटाढ़ी। जिने बोल पुच्छै मुष मुच्छ डाढ़ी।
छ ॥ २९९ ॥

इसौ चद्द बच्चा विरच्यौ सु ताम। करी अट्ठ चव फौज एक सुठामं।
चढ्यौ जानि कैँ जम्म सुरतान साद्दे। कढ्यौ पान जादे कुसादे कुसादे।
छ० ॥ ३०० ॥

कढ्यौ छडि ताजी सु कीवोल पीलं। बढ्यौ वाय वेग मनो धूम झोलं।
मिली चारि अप्पी अनी दिट्ठ दीनौ। उनैं हथ्थ ठिल्ल्यौ इनैं सि हलीनं
छ० ॥ ३०१ ॥

दुहू हथ्थ पुल्लै हलकैं सु बथ्थं। कहै देव देवन्न जोगिन्न सथ्थं ॥
महाचद्द पुत्त सवीरं लुहान। कहै तेन बोलत आव सुहान ॥
छ० ॥ ३०२ ॥

झुँडा माह वैरक्क दिट्ठी सुरान। हँसै सब्ब सामत्त पुंडीर मान।
उनैं उग्ग मज्झौजु पभ प्रमान। लियौ सि हताजी सु हेम समान।
छ० ३०३ ॥

उतैं मडली मेछ जोरी सु साजं। इतैं हिंदू साजे प्राथीराज काजं।
कहै सिंघ सामत सूर लुहान। परै अप्पनै काम कनवज्ज थान।
छ० ॥ ३०४ ॥

दिय चार देस सु पुंडीरराय। कढ्यौ अप्प पतिसाह धीर सुनाय ॥
छ० ॥ ३०५ ॥

(१) ९ सुस।

धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना।

॥वित्त॥ चवदह सें बर बीर। भए भर धीर सहाई॥
जालंधर जगमात। जैत करिवें को आई॥
भैरव भूत भयंक। भए तहां आनि सषाई॥
ईस सीस कारनै। दई तहां आनि दिषाई॥
सुचि चंद जेम नप चंद सुअ। घट घट प्रति प्रति व्यंब हुअ॥
सामंत सूर इम उचरै। बलि बलि बीर भुअंग भुअ॥
छं० ॥ ३०६॥

महादेव का पारबती को गजमुक्ता देकर कहना कि वीर धीर को धन्य है।

दूहा॥ ईस सीस लिय माल कजि। गौरा कजि गज मुत्ति॥
पिया समंपति मुत्ति पिय। चिय प्रिय पुच्छत वत्त॥ छं०॥३०७॥
सीस सदा सिवल्यावतें। मुत्ति लहै कहौं आदि॥
कोन धीर पहिरौ असन। धीर वीर सु प्रसाद॥ छं० ॥ ३०८॥

पारबती का धीर के विषय में पूछना।

पारवती कह्यौ कोन सुत। कहा पराक्रम कौन॥
पाट पुंडीर सुचंद सुअ। ब्रह्म रूप परवीन॥ छं० ॥ ३०९॥

धीर की बीरता का वर्णन।

कवित्त॥ इसौ धीर बर वीर। जिसौ पारथ भारथ्थह॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ पारथ सारथ्थह॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ जोधा दुरजोधन॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ हनमंत बलिय मन॥
सुतचंद दंद दारुन दुअन। अग्निरूप चिन सत्रु जन॥
मन मोह रोह माया रहित। अंगद जिम अंग धीर तन॥
छं० ॥ ३१०॥

पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते ।

दूहा ॥ जिहि जीवन कारन जगत । वछै लोक विचार ॥
करै सुभ्रम्म सुकम्म अति । किम तजि छत्रिय सार ॥
छं० ॥ ३११ ॥

शिव का वचन कि क्षत्रियों का यह कुल धर्म है।

गाथा ॥ तापस नष्ट अतोषौ । सतोषो नष्ट नरपति ।
लज्जा नष्टति गनिका । अनलज्जा नष्ट कुल जाया ॥
छ० ॥ ३१२ ॥

दूहा ॥ धरा सहित नपै सु धर । सीस जाय धर जीय ॥
मरन सीस लीनै वहै । कुला क्रम पचीय ॥ छ० ॥ ३१३ ॥

जीवन मरन की व्याख्या ।

कोन मरै जीयै कवन । कोन कहा विरमाय ॥
प्रानी वपु तरु पपिया । तरु तजि अन तरु जाय ॥ छ० ॥ ३१४ ॥
ज्यों जीरन परधान तजि । नर जन धरत नवीन ॥
यो प्रानी तजि कायपुर । और धरे वपु भीन ॥ छ० ॥ ३१५ ॥
कबहू जीव मरै नही । पचतत्व मिलि भेद ॥
पचौ पंचन में समें । जीव अछेद अभेद ॥ छ० ॥ ३१६ ॥

आत्मा की व्याख्या ।

मोतीदाम ॥ अछेद अभेद अषेद अपार । अजीत अभीत अप्रीत अमार ।
अमोल अभोल अतोल अमग । अकज अगज अलुज अभग ॥
छ० ॥ ३१७ ॥
असेष अभेष अलेष अबीह । अरेष अभेष अदेष कबीह ॥
अमान अभान अजान अलिप्त । अचान असान अवान असिप्त
छ० ॥ ३१८ ॥

संसार में कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है।

गाथा ॥ कर्म वस्य नरं जीवं जं कर्म क्रियतं सो प्राप्ति ॥
कर्म सुभं च असुभं। कर्म जीव प्रेरकं प्रानी ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

श्लोक ॥ नमे न बध्यते कर्म। कर्मेन बंध प्राप्तिकः ॥
यं कर्म क्रियते प्रानी। सो प्रानी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ ३२० ॥

दूहा ॥ औसरि दुअ जुट्टे सुरन। अत सोभत इन भंति ॥
अगर भंज जनु द्वै भिरै। मय मत्तें मय मंत ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

शूर वीरों की वीरता और उनका तुमल युद्ध वर्णन।

विराज ॥ मयमत्त भिरे, फिरि जुद्ध घिरे। तरवारि तरै, तकि घाव करै ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

जमदट्ठ जुरै, तिय नीति सुरै। पन सूर मुषं, न सुरंत नषं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

इस अत्थ इसें, जमरूप जिसें। नर मथ्थ नचै, हरहार रचें ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

धर उट्टि धरं, सजतें समरं। भभकै भभकं, रुधिकै लभकं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

जुगिनी जितनी, किलकें तितनी। ततथे ततथे, नचि बीर नथे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

गुरगात भरं, कच उंच करं। तिन कट्टि तनं, बढि रंभ बनं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दंत ऐंच दँती, कटि सूर कँत्ती। भिरि एम भरं, जनु सिंघ जुरं
छं० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ जुद्ध करंते जोधं। जै जै जंपि असुर ससुरानं ॥
कुट्टै इम किरवानं। लोहं लोहार कुट्टै धन एनं ॥छं०॥३२९ ॥

धीर की विलक्षण हस्तलाघवता।

दंडक ॥ धीरक्कर धरिकै किरवानह। धाप धपै धपतौ वर वानह ॥
थाट विथाट करं दल ठेलत। घाट कुघाट किए थट षेलत ॥
छं० ॥ ३३० ॥

वाटनि बाट करी अति भीतर। लोटत लोटत ज्यो वन बितर॥
वाढनि वोढ दिए तरवारनि। वालर वाढत भील पहारनि॥
छ० ॥ ३३१ ॥

सीसन पीस किये सिरदारन। पी भज भाजन चीलपि जारन॥
सेलन मेल सनमुष मडहि। झेल विझेल करा झर झंडहि॥
छं० ॥ ३३२ ॥

ढेरत हथ्थ उधेरत पजर। पडत पग्ग पसे रत पजर॥
छ० ॥ ३३३ ॥

शहाबुद्दीन का घोडा छोड कर हाथी पर सवार होना।

कवित्त ॥ रे सहाव सुलतान तुरिय छडवि गज चढ्यौ॥
धीर वीर सम्मूह। रोस समुह वर वढ्यौ॥
है समेत असवार। हक्कि पुडीर सु चपै॥
जिमि मुष्पह जमरोज। चद नदन नह कपै॥
कढि कटार गज तोलि हित। राह अभ्रम रवि जुद्ध लरि॥
कट्टार नपि पग्गह कढ्यौ। करिय सीस सिर लोह झरि॥
छ० ॥ ३३४ ॥

धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पडना और धीर का शाह को पकड लेना।

उडिग रेन गय नग। साहि समुह गजि पिल्ल्यौ॥
धनिव धीर पुडीर। साहि सनमुष असि मिल्ल्यौ॥
दसन तुड किय दोन। मुड छंडिय सुडाहल॥
गिरत भूमि सुरतान। पान कीनो कोलाहल॥
झक झोरि तोरि अवझरि उजरि। गहि हमेल हम्मीर लिय॥
हय कध डारि अड्डौ असुर। पैज पुडीर प्रमान किय॥
छ० ॥ ३३५ ॥

धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना।

षग कढ्ढत सुरतान। अप्प मनि भय हय चढ्ढिय॥
धर ततार इक पंचि। सिंगि रंगिय रुधि मंडिय॥
हनिव हथ्थ पुंडीर। धीर धर फट्टि सनाहिय॥
जनु कि प्रात आदित्त। ब्रह्मपुर पंच समाहिय॥
उर फुट्टि पंच टट्टर करह। बर विडुरि पग्गह डरिय॥
गहि दंत मंत सुनि सुनि सुनिय। झमकि झमकि विझुरिय झरिय॥
छं० ॥ ३३६ ॥

शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना।

साहि पास सौ मीर। दुहूं उभ्भै दुहुं पासं॥
उभ्भै अग्ग सु विहान। बान अरजुन प्रति भासं॥
कंजानी कम्मान। बान सु विहान तोन तिय॥
तेही वेर हुसेन। दिष्ट देषी धुरि अत्तिय॥
तब साहि हथ्थ कम्मान लै। षिप्पि करि कुंडलि क्रन्न बर॥
तन फुट्टि लुट्टि हुस्सेन पर। रोस परिग परि मीर धर॥
छं० ॥ ३३७ ॥

मुसलमान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना।

एक बान सुविहान। बान हूसेन चढ़ाइय॥
दूजै बान तकंत। बंध धीरह टारिहिय॥
तक्कि बान तिय साहि। भरकि भग्गौ हिंदवानं॥
सकल सूर सामंत। करै अस्तुति सु विहानं॥
पट बान कमान जु नंषि करि। अरि दिसि हरि चक्रह चलिय॥
कढि तेग मुट्ठि छुट्टै नहीं। दिन पलथ्यौ सु विहान जिय॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ढारि जंग जुरि जूह। जूह गजराज ढंढोरिय॥
ढाल मद्धि ढंढोरि। बीर अविहरि दल मोरिय॥

दल मोरे पुरसान। पान पुरसोन वहोरिय॥
वहुरि धीर जजाल। कारन वाहिर वहुतेरिय॥
तेरिय सु वीर चतुरंग वर। वीर वीर वीर कहिय॥
अच्छरी वीर रस भर सुभरि। भेद भेद न छंच रहिय॥
छं० ॥ ३३९ ॥

गुन रन मूढ़े सेस। छंद सुम्मर आलिय भुअ॥
दुय सुपमथा विमोह। क्रोध रँग वीर सकल हुअ॥
अहहँ हती हत। रत दतन धरि दती॥
मनु मराल लै चित्त। दंत मुरलाल रुलती॥
धर वोल परै सुरतान नग। पूज पुट्ठि तें पुट्ठि वर॥
दल ढुंढि फिरावन एक दल। भग्यो सोहि गोरीहु झर॥
छं० ॥ ३४० ॥

पुंडीर की पैज का पूरा होना।

धीर वचन सुनि साहि। दिष्ट मरदा विप जोरन॥
धीर तक्कि सुरतान। साहि तक्के उन तोरन॥
ठेलि गज्ज हय पत्ति। अश्व ठेल्यो पुंडीर॥
कट्टि वक सो तेग। हन्यो गज सीस सु वीर॥
निह टीव वीज वद्दल विहर गज्ज परिग गजपति कहिय॥
हय कंध डारि अड्डो असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय॥
छं० ॥ ३४१ ॥

पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई।

भुजंगी ॥ गह्यो साहि हथ्थे जु पुंडीर रान। कहै सूर सामंत पैजप्रमान॥
हन्यो एक गज जूह कोटं प्रमान। कहै देव देव जु भारथ्थ जान॥
छं० ॥ ३४२ ॥

कहै चंद वत्त समंद रहान। तहा चंद सूरज्ज कित्ती भपान॥
अस्वनी कुमारान वासी कहान। जिसो पथ्थ पंडीस जोध रचान॥
छं० ॥ ३४३ ॥

कहै चंद कित्ती सु वेली भयानं। रहै गिहिलि मेलं सुरत्तान सानं॥
जिते राव चावंड सही अभानं। अहो धीर पुंडीर पैजं वखानं॥
छं० ॥ ३४४ ॥

उवं षंड हथ्थं रुधी धार पानं। हिमं जा समानं जु सीहं पलानं॥
कियौ स्वामि कै काज पैजं प्रमानं। * * छं०॥३४५॥

वित्त ॥ नव सें जहां सिलार। पास ठट्टे हंमीरह॥
एक लाष साहन समुंद। चवकोदह भीरह॥
बेद लष्ष तरवारि। सघन नेजा पसरंतह॥
अट्ठ लष्ष गुर धार। मेध जिम झरवर संतह॥
पुंडीर राय कालह सरिस। भिन्न भुअंग चित्तह भन्यौ॥
बीरंग बंस चंदह तनौ। साहि गह्यौ हथ्थी हन्यौ॥ छं०॥ ३४६॥

शाहीं सेना का सब रखत छोड़ कर भागना।

सिंधु सहाब उभ्परह। जैत संग्राम धाम रन॥
छच दंड वर चमर। दंड छंडिग सु गंध घन॥
तुरस तोरि भवरिय मरोरि। रवरिय दल बहल॥
जनु निदंत दच्छिनिय। पाइ ठिल्लिग सुभट्ट पल॥
मुनि नयन गयन लग्गिय अगनि। पल पलाय गोरिय सयन॥
सो सह वह दस दिसा हुअ। अह्यौ अह्यौ बुल्लिय वयन॥छं०॥३४७॥

शहाबुद्दीन के खवारा रोरन का घर पहुंचना और उस की स्त्री का उसे धिक्कारना।

बिय षवास सेरन सु नाम। गोरिय गयंद कुल॥
तिहि सु सत्त जोरू सु व्रत। रोचि निय भग्ग बल॥
सय सिंदू कुल परह। ताहि दिट्ठो गज कन्ना॥
पंन पानि पति साहि। हाथ असहा वह बन्ना॥
उचार भार बुल्लिय बयन। निय जुबहि पति साह तहां॥
आइमहार कुच भारवर। सुनित स्वामि संसार कहां[1]॥
छं० ॥ ३४८ ॥

(१) ए.-कज-कृ.-कथ।

सेरन का उत्तर देना कि मै तेरे मारे लौट आया हू अच्छा अब शाह को छुडा कर तब रहूंगा।

मे पावस अम्भरिय। गिरिय घेरिय जनु सुक्के ॥
स्वामि मच्च वरषंत। फेरि हिंदुअ दल लक्के ॥
तुव नेहिय देहिय निवाह। कि जाम कोह दह ॥
पुनि मुद्धौ सुलतान। हाउ जहा भाउ नाम ठह ॥
मजाह लाज मझ्झह रवनि। रवन सुप्प देषै मरद्द ॥
काम तरुनि वरुनिय करन। उज्ज उडाय सुक्किय गरद्द ॥
छ० ॥ ३४९ ॥

पुन स्त्री का कहना कि स्वामी को साकरे मे छोड कर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है।

ताइय तुह कामिय सु काम। कामनिय काम रत ॥
अप्प भ्रम तजि स्वामि। भ्रम छद्धौ सनेह हित ॥
आय देह सदेह। देव देवन सचारहि ॥
आय धार वजि मार। मार मारन मन हारहि ॥
अजिसिय हँसिय अतर गसिय। ससिय सद्द उद्दर धसिय ॥
मामुद्द दुद्द दोजिगन चलि। उर अकुस फेरिय रसिय ॥
छ० ॥ ३५० ॥

सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना।

कर कोकस कारवार। सूर वद्दल दुति छुट्टिय ॥
परत भोमि रोचनिय। सस्त्र पुट्ठी अल्ह फुट्टिय ॥
रवरि दवरि हिंदुअ। नरिंद भ्रत धरय सुरतानह ॥
परि पारस पुडीर। हथ्थ देषिय सु विहानह ॥
हहकारि हक्कि बोल्यौ सु बर। सु सब मुकि सुरदार भय ॥
उन देव धीर चदह ननौ। मनों सिंघ दथ्यौ जु चय ॥
छ० ॥ ३५१ ॥

सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार बैजल खवास पर है।

चष दिष्षिय सक सिंध। सेर अंमह सुरतानह ॥
कर कढ्ढिय जमदढ्ढ। वढ्ढ बढ्ढन तुरकानह ॥
मवन उंच तिहि नेज। सेज उच्छंग उछ्छारिय ॥
जनु कि सिंघ सावंग। उढ्ढ डंमर उप्पारिय ॥
उर करारि मुट्टि दिट्ठी दुअन। सम छुट्टत सुरतान कह ॥
विज्जल षवास छप्पर गलसु। गलग ढलगि भूमिय सु वह ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

किन्न कंक चहुआन। कंक महमंद सवन्निय ॥
ढिल्लिग ठट्ट उट्ठाय। कोट बज्जे बर बन्निय ॥
परे मत्त मैं मंत। दंत अंतिय आल,झिझय ॥
जनु कि केलि बिन पोन। बेलि बंकिय बलि बुझ्झिय ॥
संग्राम धाम धुंधर धरनि। धरनि पहर बज्जिय लहरि ॥
ता पच्छ जाम जद्दों सुरन। अवसि मेव उत्तरि विवरि ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

उत्तर वै सुरतान। बंधि धीरह धर नंधिय ॥
सुर नर गन गंधव्व। चंद बंदिय सद भष्षिय ॥
अग्गा भर सुरतान। आनि बरतिय चहुआनं ॥
कासमीर ढिल्ला पहार। ठट्टा मुलतानं ॥
जित्ता जुवान सोमेस सुअ। दुमसि बज्जि बज्जे इहां ॥
जै जया सद्द आयास भौ। सु कविचंद छंदे जिहां ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

गीसानी ॥ नेजे नंनी सेरवान धरधार उपन्ना।
तिस का हथ्थ विहथ्थ वान बघधां बर जन्ना ॥
तिस कै कुंडल चष्षवान नहि दिठ रहन्ना।
पाई पूना धंष देह दुहरी भर थन्ना ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

जानै छुट्टा इक्क माइ वीरह विरुझ्झना।
दूनै झूझ अलूझि झ्यो हिंदू तुरकन्ना॥
विरप वीस उट्ठाइआ जाने युतिकना।
हो अलिधीर दुराइया सेरन वर वन्ना॥ छ० ॥ ३५६ ॥

जैतराव और तत्तारखा का युद्ध। तत्तार खा का मारा जाना।

वित्त ॥ घरिय पच पामार। जैत जग हथ्थ उहन्ना॥
है सो है गै सो गयद। नरों नर हथ्थ निहन्ना॥
निहसि निहसि झन झनिय। पग्ग पग्गा पग भग्गा॥
कट्टारिय कट्टारि। मार छुलिका छुलि जग्गा॥
है कप हक्क जूटा सु घट। कुघट कटार कटत घट॥
तत्तार पान जुरि जैत सो। निहसि नियाहि निहद हट॥
छ० ॥ ३५७ ॥

परयौ षेत तत्तार। षेत जैतह गल लग्गिय॥
उभय सहस पट्ठान। सहस पामार स भग्गिय॥
चपि राव चामड। अगि अगिवान उचार्ये॥
जादों पान उभारि। वाय वादल उट्ठार्ये॥
पगिय सु पद्य दाहर तनौ। घर विरह छज्जै मद्दह॥
दाहत दाह दुसह मरन। जिहि सु हिंदु रष्षीह दह॥
छ० ॥ ३५८ ॥

विजय की सुकीर्ति के भाग।

पच भाग पामार। भाग चामंडराय तिय॥
उभय भाग जद्दो जुवान। जैपत्त हथ्थ लिय॥
एक भाग प्रथिराज। अद्ध भागह वरदाइय॥
पाव भाग पज्जून। राव मडी मरदाइय॥

भग्गाह अट्ठ पुंडीर भुज । जिहि सु साहि सद्ध्यौ समर ॥
धम्मो जयंत विस आध अध । लिखि कवित्त छद्ध्यौ अमर ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

दूहा ॥ राय पुंडीर सु झूझ जिति । ग्रिह आयौ प्रथिराज ॥
डोला पंच पचीस रजि बिय आदीत बिराज ॥ छं० ॥ ३६०

कवित्त ॥ गहिव साहि करि पैज । जुद्ध जित विग्रह पत्तौ ॥
षेटति पब पाषंड । भेद सामंत निघत्तौ ॥
रिन रवद्द जित्तिग । नरिंद बाजे बज्जाने ॥
नछि हिंदू कढ़ितेग । सद्द बज्जे सद्दाने ॥
दिष्षहि न राज सुरतान कहुं । सक सहाब षुरसान पति ॥
पूंछत बत्त भग्गो भिरा । रह्यौ न जुध रोह्यो [1]रुसति ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मलिक षान षुरसान । हनिग लष षग्ग धीर बर ॥
गज मै मत्त सं घारि । दबटि दल मथ्यौ सबलकर ॥
लियौ साहि गहि हथ्थ । सथ्थ देषत सुरतानो ॥
षां ततार रुस्तमां । सीस धूनहि विलषानो ॥
पुंडीर सहस तिय षेत रहि । गह्यौ साहि गयौ धीर घर ॥
पुंडीर चंद नंदन रनह । मेछ गह्यौ चालेत धर ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

दूहा ॥ सहिय संगि सनमुष्ष सर । पानि ढरि मुलतान ॥
जैत पत्त रावत्त हुअ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

वैजल का धीर से कहना कि शाह को छुडा दो और धीर का उत्तर देना कि पांच दिन ठहरो ।

चामर छत्र रषत्त रन । ए लुट्टे सब कोय ॥

(१) क्रो. हसति ।

वर पवास वैजल कह्यौ। धीर निहोरै तोहि ॥ छ० ॥ ३६४ ॥

कहै धीर वैजल सुनि। पच दिवस नन कथ्थ ॥
गुद्दरो मति राजान सो। साहि ग्रहन से हथ्थ ॥ छ० ॥ ३६५ ॥

गुरि न गयौ गोरी धरह। पल्यौ न पेत प्रमान ॥
उकति वधि प्रथिराज चित। धीर नह्यौ सुरतान ॥
॥ छ० ॥ ३६६ ॥

वैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़ जाने की विनती करना।

करि मालम वैजलि सु तव। समह राज चहुआन ॥
पुरिन गयौ गोरी धरह। धीर पकरि सुरतान ॥ छ० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ इह सुनि राज अप्प ग्रह आइय। कहिय धीर सों वेजल धाइय ॥
पडौ काटि आय पावासह। तवे वेजला बोल्यौ तासह ॥
॥ छ० ॥ ३६८ ॥

धीर का कुपित होकर वैजल का मारने के लिये दपटना।

इह सुनि क्रोध धर्यौ मन धीरह। वरजी वत्त कही क्यो हीरह ॥
मारन असि कट्टी पावास। प्रथीराज वरज्यौ तव तास ॥
॥ छ० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशंसा करके उसे समझाना।

कवित्त ॥ गरजे वे सभरि नरेस। अरि विग्रह मद्यौ ॥
पुरनि वेह ल,कयौ। ग्रभ्भ ग्रभनी जु छंद्यौ ॥
चद तनौ पूरन सु चद। तिहि ठा स चरयौ ॥
मारे मत्त मयद। धनि सु धनि धनि तहा कर्यौ ॥
दुहु दलन बीच मच्छर कह्यौ। हाक्यौ हन्यौ पचारयौ ॥
सुरतान साहि साहाव दी। गहिव धीर रन पारयौ ॥छ०॥३७०॥

सुंडा डंड प्रचंड। मुंड पंडनौ परक्यौ ॥
सिल्लारां असि तेज। वीज उज्जलौ झलक्यौ ॥
गहि गोरी गंजयौ। गहिव भुअ वल उप्पास्यौ ॥
राय सरिस सामंत। पूरि धर रुहिर पपास्यौ ॥
झगरौ जु प्रभन्यौ जेत करि। तातन टट्टर अभय हुअ ॥
सौ असिवर सज्जत वे जलहि। धीर लज्ज लग्गै न तुअ ॥छं०॥३७१॥

धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा।

स्वामि बचन बिन सुनै। कान लगि कहि इह वत्तिय ॥
तूं पामर बरजयौ। पंच दिन कथ्थ न कथ्थिय ॥
जैतरावं चामंड। राव जद्दव जामानिय ॥
कूरंभा पज्जून। गरुअ गुज्जर रा मानिय ॥
सनमान राज चहुआन दल। भरत विनोद मंडत रसन ॥
तिहि रीस सीस पामर पिसुन। करौं षग्ग मग्गह असन ॥
छं० ३७२ ॥

पृथ्वीराज का पुनः धीर का समाधान करना।

चिपति न किय तो षग्ग। हनत कर करिय चच्चसुअ ॥
चिपति न भय गोरिय। नरिंद सुलतान मंत धुअ ॥
चिपति न छल्ले लाल। मल्लवाहन उम्भारत ॥
चिपति न गज गुरइंद। बिंत उप्पर उप्पारत ॥
चिपतौ न तुअ पुंडीर सुअ। सुरतानह बंधत बसन ॥
बंगिय बखान वैजल विजल। न करि बग्ग मग्गा असन ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

षग्गक्कार परिया। चंद वचा हसि सद्दे ॥
मैं बरजिय दिन पंच। पीय पामर कह बद्दे ॥
पाउ लागि प्रथिराज। बाह दीनी प्रथराजं ॥
दसहजार हैं वरव। दंडि छंडिय सुलतानं ॥

दिट्ठाइ दिट्ठ ऊची करी। गय गोरी ग्रब्बह गरिय ॥
आसन सुछडि उम्मै हुऐ। करि दुवास चदह धरिय।
छ० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शाह को छोड देना और शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना।

दड सीस सुलतान। तीस गजराज मत्त मद ॥
पच सत्त ग्रराक। सुतर लप तीन उन मद ॥
वहु विभूति चतुरग। डड मान्यौ पुरसानौ ॥
वर गोरी सुलतान। बधि मुक्यौ चहुआनौ ॥
आजान वाह सगह न्रपति। दड काज सथ्थह दियौ ॥
पुरसान पान झोरी न्रपति। सुवेर साहि सथ्थह लियौ ॥
छ० ॥ ३७३ ॥

पाय घालि प्रथिराज। वाह दीनी सुलतान ॥
करि सलाम तिहु वार। धरिय अगुरिय तुरकान ॥
तुम उमाह दुग्गाह। वार वारह चढि आवहु ॥
वज्जहीन दुअदीन। किया अप्पना सु पावहु ॥
नन करहु सद्द जुग्गिनिपुरह। वाधि सामतह मुक्कियौ ॥
वारह सुवार आवत इहा। जाय सुपासन सुप्पियौ ॥
छ० ॥ ३७४ ॥

शाह को छोडकर पृथ्वीराज का सयोगिता के साथ रस रग में प्रवृत्त होना।

पकरि छडि सुलतान। दड पुडीर समप्पिय ॥
ता पच्छै प्रथिराज। केज दिन तप्पन तप्पिय ॥
आनी पग कुआर। रूप घरनी घर धारह ॥
जिन लीने सामत। नाथ वरूनि वरवारह ॥
मत्तान पत्त सूता रहे। पच लिहदे देव दिन ॥
उद्धाह वाह कविचद कहि। सत सु छुट्टै स्वामि रिन ॥
छ० ॥ ३७५ ॥

सामंतों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो।

अनुफाल ॥ प्रथिराज सामंत सब्ब। पुंडीर धीरज्ज तब्ब ॥
तू छंडि गोरी साहि। मो इहे बोल निबाहि ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

तूं सर्ब सामँत सूर। प्रथिराज थप्पिस पूर ॥
तूं करै सब दिन पान। मन धुर मिष्ट बानि ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

उअ दिष्टि मंडिय राज। कनवज्ज देषन काज ॥
उन राज काज सुभग्ग। कलहंत कास समग्ग ॥ छं ॥ ३७८ ॥

तुअ छंडि मंडि सुभेद। हिंसार कोट सुभेद ॥
पुंडीर छंड्यौ साहि। प्रथिराज सामँत मांहि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

चंद राज सुमंडि। चैवार पहुमि सुषंड ॥
उअ मंच राज विनास। कलियंग छत्र सुतास ॥
छं० ॥ ३८० ॥

इय मंडि कीरति चंद। तिहि गज्जनै सुत चंद ॥
चिहुं चक्र दे सजि धक्कि। जिहि चंद सूरज सब्ब ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

जिहि पातिसाह सुसाहि। तो धीर धन्नि सुमाय ॥
* * * * * * * ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह को किस तरह पकड़

तवित ॥ असिअ लष्ष साहन ससुह। दस्स सै गयंदह ॥
धरनि धसय उड्डसय। बोल नहि गुर सुर छंदह ॥
तहां तिभीर झंझंमि। गोल हबसिय हय हंकहि ॥
तहां धानुक्क पाइक्क। अप्प अप्पन पथ तक्किहि ॥
तहांति भेछ गज्जहि असुभ। मनो घोरि पावस रह्यौ ॥
हम कहत साह पुंडीर सों। किम सुसाहितें संग्रह्यौ ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को विदा करना।

चौपक ॥ जहा हिंदुअ साहि लरत रिन। तहा बान परै बरसा सुघन ॥
जु करै किरिवारिय हिंदु अमेछ। लह गिय बालक षेलहि एछ ॥
छ० ॥ ३८४ ॥

परे गुरजे रिन गाजरि सूर। सजे रन साहि सुहि दुअ पूर ॥
तेहँकि हमीर किए इक ठौर। गयदहि साहि गयौ गजि जोर ॥
छ० ॥ ३८५ ॥

यही परिढिल्लिय साहि करी। करिवार कुँभस्थल बीज भरी ॥
तबही धर धुक्कि गयद गय। लिय साहि गयदति पोचि लिय ॥
छ० ॥ ३८६ ॥

इय लाज प्रताप ते राज रही। गजनेस असभिय ईस गही ॥
विकसे प्रथिराज पुंडीर हिय। अद्भूत पराकम धीर किय ॥
छ ॥ ३८७ ॥

इम जग जहा रन सोर हुअ। नह आवन पास लहे सुतुअ ॥
तब जपिय धीर धरन्नि धुअ। न्निप सभरि जग प्रताप तुअ ॥
छ० ॥३८८॥

तब साहि हजूर पुंडीर किय। भरि अक प्रथीपति मेछलिय ॥
बहु पुच्छिय प्रीति समाजि तदा। तुअ दिप्पत हिन्दुअ सुप्प हद ॥
छ० ॥३८९॥

पहिरावनि साहि करी प्रथिराज। दिये तब अबक बाजन बाजि ॥
दिये सत तीन तुरग सुरग। करिवार कटार जरे हिम नग ॥
छ० ॥३९०॥

पहिराइय साहि दिवगम वस्त्र। दिए पटतीस अनूपम सस्त्र ॥
पठ भोजन भाव सुभय्य लिय। जु सुगध अनेकति पूर किय ॥
छ० ॥ ३९१ ॥

इमयं महि मानिय पुर मयं। पहचाइय कोस इकं नृपयं॥
इम जित्तिय जंग सुदिल्लि नरेस। सामंतन मंडि पुंडीर थपेस॥
छं० ॥ ३९२ ॥

करै सुष राज विलास सँजोग। हिमवंत महारिति भोगहि भोग
* * * * * * छं० ॥ ३९३ ॥

कवित्त ॥ धनि सुधीर तुअ मात। साहि गजनी गहिय कर ॥
गयपानी सुलतान। आनि संभरि ढिल्लियधर ॥
उतरि अहं चावंड। राउ जैत सीस मह मव ॥
बढे उरह बल राज। कुसुम सर चंद कित्ति तवि ॥
जंपिय सु राज प्रथिराज तब। बोल धरी जस पावयौ ॥
फिरि चलत मग्ग गज्जन पुरह। राज साहि पहरावियौ ॥
छं० ॥ ३९४ ॥

जैतराव और चामंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से बड़ा गर्व हो गया है।

साहि डंड डंडयौ। दंड पुंडीर समप्पिय ॥
साहि समंदन मंगि। सुष्ष राजनतं अप्पिय ॥
गज्जनेस गोधीर। गयौ चावंड जैत लषि ॥
हास अग्र किय राज। वक्क मुष भौंह नंचि चष ॥
असपत्ति सेन भंजिय नृपति। गहन ग्रब्ब धीरह वहै ॥
चलि सकट मग्ग नीचें भषन। वहन भार गरुअत बहै ॥
छं० ॥ ३९५ ॥

पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाले की आज्ञा देना।

करिय रीस प्रथिराज। धीर सुअ नयर निकारिय ॥
बाल हुब्ब पुंडीर। छंडि नयरह नर नारिय ॥
सहस पंच पुंडीर। जाय लाहौर सपत्ते ॥

सहनिवास तह सजिय । मंडि सबहिन वलि मत्त ॥
पट्ठइय दूत धीरह दिसो । लिपिय पत्र कागद करह ॥
सुनि वत्त चित्त धीरह धनी । गयो सिंधु साहिव दरह ॥
छ० ॥ ३९६ ॥

देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना ।

दूहा ॥ मन चिंतन धीरह करै । इह न्रप पुव्वह रीति ॥
कोटि जतन जौ जोरिय । न्रपति न होवै मीत ॥
छ० ॥ ३९७ ॥

जीव हीक बंधि रज्जनह । महि पान तत चित ॥
तिय को काम न उपसमै । न्रिपति न काहू मीत ॥ छ०॥३९८॥

अहि पय पान पिवाइये । जतन करे नित नित्त ॥
जब पग चपै तब डसै । त्यो न्रप अवगुन चित्त ॥छ०॥३९९॥

कवित्त ॥ सइसव ते न्रप मेर । करत वेलानह लग्गै ॥
जो म्रित सेवा करै । न्रपति कै पहुरै जग्गै ॥
अप्प राज न्रिप ताहि । रीझि धन धान्य समप्पै ॥
सामि अम्म धन धरै । काज पर सीसहि अप्पै ॥
यो करत वरत दुज्जन बिचे । फारि फोरि दस दिसि करै ॥
संजुत्यौ कुलफ मिलि कुचिका । त्यों न्रप मन जू जू परै ॥
छ० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ राज वेश्या अगनि जम । अतिथि मु जाचक बाल ॥
पर दुप ए पावे नही । वहुरि गाव कुठवाल ॥
छ० ॥ ४०१ ॥

सेठ सुद्रस्सन सुकमनि । ए न्रप राजन थभ ॥
जौ न्रप इनके ना भए । राप नवन के अभ ॥ छ० ॥ ४०२ ॥

अरिल्ल ॥ समौ विचारि बोलिये बानि । दिष्टी करिय अदिष्टी छान ॥
अप्प अधीर ग्रह गमनम कीजै । हीर भगें न्रप के न रहीजै ॥
छ० ॥ ४०३ ॥

दूहा ॥ साँप सिंह न्रप सुंदरी। जौ अपनै वसि होइ ॥
तौ पन इनकौं अप्प मन। करो विसास न कोइ ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
कबहूँ वक्र अवक्र कब। कब षंडौ कब अरा ॥
राजा गति दुजराज सम। प्रकृति निवाहन सरा ॥ छं० ॥४०५॥
न्रप अंदर सोचै नहीं। कह्यौ सुनै सदभाव ॥
दुरजन हित जानै नहीं। अपनै अपनै दाव ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
औगुन भ्रत अप्पै भनै। न्रप के भाषें नांहि ॥
सो न्रप भ्रम बेदन कह्यौ। न्रप परमेसर आहि ॥छं०॥४०७॥
बिष्प घुटी माता दियै। बेचि पिता लै दाम ॥
राजा जो सरवसु हरै। नहिं सरनागत ठाम ॥ छं० ॥ ४०८ ॥
माता सरन न मुक्कियै। पिता सरन मन आनि ॥
सेवक औरह चिंतइ। बिना सरन राजानि ॥ ४०९ ॥

यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना।

पत्त ॥ सुनिय बत्त सुलतान। धीर पट्टौ लिषि तथ्थह ॥
सहस अट्ठ ग्रामह सुदेस। धाम देसह दह पत्तह ॥
सहस पान सुलतान। धीर निज हथ्थ समप्पत ॥
कहौ धीर सुनि साहि। राज प्रथिराज सु तप्पत ॥
जो अबर पंच सीसह धरौं। ईस कहाँ उजो अवर।
उग्गमै दिवाइर पच्छिमह। सौ सेसह छंडे सु घर ॥
छं० ॥ ४१० ॥

शाह का धीर को ढिल्ली की बैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट लेना।

धीर निवेसन साहि। दयौ ढिल्ली पहरत्तब ॥
अरु है ठट्टा ठाम। कियौ आदर अनंत सब ॥
तब सु पच लिषि धीर। सोइ कर दूत समप्पिय ॥
तबहिं दूत लाहौर। पच पावस कर अप्पिय ॥

वचिय सु पच पुडीर तब। लूटि सहर छद्यौ सु बर ॥
पट कूर कनक केसरि अगर। हय कपूर नग मुत्तिनर ॥
छ० ॥ ४११ ॥

दूहा ॥ हीर चीर करपूर हय। मानिक मुत्ति अमोल ॥
लुटि लाहौर पुंडीरिया। उठि कचन वैमोर ॥ छ० ॥ ४१२ ॥

सब पुंडीरों का ढिल्ला को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना।

कवित्त ॥ हरिय रिद्धि वर नयर। जाय ढिल्ला सापत्त ॥
तहा निवास निज करिय। सब्ब पुडीर समथ्थ ॥
आयौ तथ्थह धीर। सुन्यौ लाहौर सु लुथ्थौ ॥
करि पावस समकोय। अप्प हथ्थह हिय कुथ्थौ ॥
उथ्थौ सु कोपि करिवार सजि। वीर भद्र पुडीर लषि ॥
रन सिंघ सूर धीरन धरहि। कोप समायौ तीयरपि ॥
छ० ॥ ४१३ ॥

दूहा ॥ तहा निवेस पुडीर किय। है गै सथ्थ समथ्थ ॥
तहा निवेसह अट्ठ दिन। मास सत्त मुग तथ्थ ॥ छ०॥४१४॥

पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना।

तब धीरह कग्गर लिथ्यौ। प्रथीराज चहुआन ॥
हस धर आगर धीर तू। आनौ तुम करि मान ॥
छ० ॥ ४१५ ॥

धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना।

वचि धीर कग्गर न्रपति। सिर धरि करि तसलीम ॥
औछव आदर बहुत किय। उपजि हरष सम सीम ॥
छ० ॥ ४१६ ॥

कवित्त ॥ करन साज मन चिति। चल्यौ हय लेन पुडीरह ॥
कछुक सोन सामानि। हुए तब चितै धीरह ॥
भावी गति होइ है। कहा बहु बुद्धि विचार ॥

हुं पहुँचो नृप पाय। तौ अप्प मनों चित सारं ॥
सेँ अट्ठ अश्व चहुआन घौ। और पुंडीर न बहिहो ॥
पै लग्गि राज अपराध पमि। पाय पराक्रम सिद्धिहो ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

चल्यौ धीर कंगुर दिसह। उर धरि जालप जत्त ॥
जैतराव चामंड मिलि। कही राज सोँ वत्त ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

धीर का सौदागरों के घोड़े खरीदना।

कवित्त ॥ सहस अट्ठ है सथ्थ। सहस पंचह सौदागर ॥
आय सपत्त तथ्थ। धीर दीनौ आदर वर ॥
मास एक है परपि। सहस दूनह हय रप्पै ॥
और देस में अश्व। लिए अपजानि परप्पै ॥
दीए सु द्रव्य सुह भंगि वर। जाति भांति लप्पन सहित ॥
रवि रथ्थ जानि उच्चिश्रवा। कै अमोल मोलनि ग्रहति ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घोड़ों की उत्तमता का वर्णन।

इसे अश्व अमोल। लिये पुंडीर चंद कहि ॥
ग्रम्भ जंच अन चढ़े। जिसे दिए बह्म जग्य महि ॥
मिच सेन गंधर्व। लिये अंतेवर प्रब्बल ॥
नदिव नास झूलंत। आय जपर पंडव चलि ॥
अनभूत जुद्ध अन चिंति परि। पथ गँध्रब कों बंधि कसि ॥
छंडाय जुधिष्ठिर पंचसय। लय पवंग ते पेस कसि ॥
छं० ॥ ४२० ॥

उन्हीं सौदागरों का गजनी घोड़े लेकर जाना और उक्त समाचार सुन कर शाह का कुपित होना।

सौदागर गज्जन सपत्त। गोरी सहोब मिलि ॥
हय निरषत पतिसाह। सोइ रप्पे जु अप्प कलि ॥

मिलि ततार पुरसान । सज्जि ममरेज सु मत्तिय ॥
सुनौ साहि साहाव । सु वर है धीर सपत्तिय ॥
कुप्पयौ साहि इह वेन सुनि । सब सौदागर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह । जाय धीर सब सरन लिय ॥
छ० ॥ ४२१ ॥

दूहा ॥ अद्ध साथ दै सथ्थ हय । बहुराए पुडीर ॥
अश्व अमोलक राज को । लेन चल्यौ अथधीर ॥ छ० ॥ ४२२ ॥

कवित्त ॥ अश्व लैन गय धीर । अटक उत्तरि जाहँ नवि ॥
अद्ध साथ पुडीर । सथ्थ लै सद्ध पान नव ॥
ढुंढि थान पुरसान । तुग ताजौ बहु लिन्नौ ॥
भैरू पान वलोच । भेद पुरसान सु दिन्नौ ॥
लग्गए दूत गोरी सुवर । वर पुडीर सु थट्टयौ ॥
वर भेष साजि सौदागिरह । गोरी सेन परट्ठयौ ॥ छ० ॥ ४२३ ॥

शाह का सौदागरों के घोडे छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना ।

लै सौदागिर द्रव्य । जाय गज्जनै सपत्ते ॥
मिले साहि साहाव । वत्त कहि कहि विव रत्ते ॥
मिले ततार पुरसान । जागि ममरेज सु मत्तिय ॥
कह्यौ साहि सौं जाय । धीर दे है सुधि पत्तिय ॥
कोपियौ साहि साहाव सुनि । सब सौदागिर गहन किय ॥
सुनि वत्त भग्गि सौदागरह । जाय धीर सब सरन लिय ॥
छ० ॥ ४२४ ॥

धीर का शाह को पत्र लिखना ।

दूहा ॥ धीर सु लिख्यौ साहि सौं । सरन मुझ्झ सब आइ ॥
देहु द्रव्य सु है सहस । न्याय रीति सब राइ ॥ छ० ॥ ४२५ ॥
तुम इन के है मोल ले । अरु ताकै यह बधि ॥
ऐसी तुम्हैं न बूझियै । वेद कुरानन सधि ॥ छ० ॥ ४२६ ॥

शाह का गौरी खोखंद के हाथे घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना।

मौरां घोद मसंद अलि। तिन हथ्थह दिय द्रव्य ॥
पठए साह सु धीर सम। कनक बज्ज है सव ॥ ४२७ ॥
अली मसंद समप्पि सह। द्रव्य धीर हथ सोइ ॥
धीर समीप बुलाइ दिय। दांम सौदागर दोय ॥ छं० ॥ ४२८ ॥
आदर धीर सु भीर किय। सव सौदागर सथ्थ।
कालन मीर सु धीर सम। कहिय साहि सब कथ्थ ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

गजनी के राज्य मंत्रियों का धीर पर कूर चक्र रचना।

राषि धीर सौदागरह। उभय मास गय जान ॥
तब षुरसान ततार मिलि। कियौ मतौ कहि सामि ॥ छं०॥४३०॥

सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा ॥

करि सुमंत कग्गर लिषिय। पठयौ कालन मीर ॥
अरे मूढ़ तुम द्रव्य कज। हनन सुन्यौ है धीर ॥ छं० ॥ ४३१ ॥
जौ हम तुस एकंत मिल। तौ मारहिं पुंडीर ॥
दीन कौल पैगंबरी। हम तुम बंधै धीर ॥ छं० ॥ ४३२ ॥

सौदागरों का शंकित हो कर परस्पर सलाह करना।

मालन मीर कमाल कर। दियौ सु कग्गर दूत ॥
बंचि सुभर भय भीत भय। मंत परट्टिय नूत ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय।

कवित्त ॥ कालन मीर कमाल। मियां मनसूर सु मन्निय ॥
सेषन खूब निजांम। फते मषत्यार सु पन्निय ॥

सबै मत्रि मिलि रचिय। धीर अप्पा सह मारै॥
ता पहिले आपन्न। सबै धीरहि सधारै॥
सुहरै काम अप्पा सुवर। साहि सुवर मिलि मारियौ॥
सघार करै सब्बै सुभर। जो जुध धीर हँकारियौ॥ छं० ॥४३४॥

सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना।

दूहा॥ मत प्रपच जु किज्जियै। लिपि भेजै करि धीर॥
अटक उतर तें सज्जियै। तो नहि विज्जै मीर॥ छ० ॥ ४३५॥

॥ तब साजिय पुरसान पाँ। मत मानि सजि भीर॥
पा गुज्जर भब्बर अली। पां वहाव चलि मीर॥ छ० ॥ ४३६॥

लै कागर पतिसाह पै। गुदराई सब बत्त॥
सौदागर बदे तुमहि। मिलि भेज्यौ कर पत्त॥ छ० ॥ ४३७॥

शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरों के काफले में आ मिलना।

कवित्त॥ बर सौदागर एक। पान पीरोज सँपत्ते॥
मिलि आये पुडीर। हय सु लै करि उनमत्ते॥
दाग भजि सुरतान। अटक उत्तरि पुडीर॥
हम वदे सविहान। साहि हम सज्जय बीर॥
सुरतान सुवर चौकौ विहर। घात बधि अप उत्तरै॥
तो सरन आय दै सथ्य हम। सुवर सुभट हम उच्चरै॥
छ० ॥ ४३८॥

दूहा॥ दियौ हुकम गुज्जर भवर। बर बधे करि तोन॥
जाय मिलै सौदागिरह। यहौ आस मिसि मोन॥ छ० ॥४३९॥

एक वृद्धि करियै जु इह। मत लै वैठहि धीर॥
चूक करहि सद्दै चलत। तेक सजे करि मीर॥ छ० ॥ ४४०॥

सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना।

कवित्त ॥ तब सज्जिय पट्टान। साहि बड़वत्त उड़ायिय ॥
कालन मीर कमाल। बोल धीरह लै आइय ॥
लै बैठे एकंत। साहि वत्तो भय बुझ्झैं ॥
हम आये तो सरन। अबैं गुह्यां कह गुह्ये ॥
उच्चर्यो धीर गरुअत्तनह। काय साहि मो सरन हय ॥
नह डरो आज रष्यों तुमहि। जो जम आवै तुम्म जय ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

अद्ध रयन पल्लानि। अटक सब सथ्थ सँपत्तौ ॥
मेछवान करि पंति। धीर रुंध्यौ बल मत्तौ ॥
चूक चूक संभरी। सथ्थ पुंडीर समाही ॥
सबैं सेन आहुट्टि। धीर हुं धीरज साही ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। घाइ पुंडीर अहुट्टि घट ॥
धनि धनि नरिंद बर सह हुअ। जिहि पति रष भंजी विघट
छं० ॥ ४४२ ॥

तब कालन करि क्रूर। कह्यौ तुम सरन वयट्टौ ॥
असि लै कालन उट्टि। आय षिन पुट्टि निहट्टौ ॥
कट्टि तेग असि मारि। सीस उथ्यौ धर तुथ्यौ ॥
उवै तेक असमाँन। सीस गय सूर न पुथ्यौ ॥
निझ्झारि तेक धर ढारि धर। हय कमाल कालन न दुर ॥
सयदून सहि पट्टान रन। इह अचिज्ज अप्पै अमर ॥छं०॥४४

सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।

पत्ति पहर पुंडीर। जीय पति कै सथ मुक्यौ ॥
धीर धारि ढंढोरि। धार धारनि तन चुक्यौ ॥
जो जानत चहुआन। सोपि कीनौ पुंडीरं ॥
तिन दंतिन बर षंडि। जुद्ध धर धर करि मीरं ॥

सग्रही लुथ्थि सुरतान पर । सब आहुट्टिय राज भर ॥
गोरी नरिंद वाजे वजग । सुवर वीर ढिल्लिय सुधर ॥
छ० ॥ ४४४ ॥

धीर के वध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना, पुंडीरों का जयी होना ।

सहस च्यारि पठ्ठान । मेलि पुंडीर धारि धर ॥
तत पावस पुंडीर । सुनी वत्तह चवि हरहर ॥
सजि पावस पुंडीर । चढ्यौ वधहं सुक रथ्थै ॥
वीर भद्र नरसिंघ । तेज पुंडीर तरथ्थै ॥
लषमसी सेन लथ्थाह भरी । रथर राध समथ्थरिन ॥
संक्रमे सेल वधे सुभर । पथ्थर सिंघ सुसाजतन ॥ छ० ४४५ ॥

दूहा ॥ अति आतुर पावस गयौ । धाय सँपत्तौ तथ्थ ॥
मनों पवन पावस धुरै । झरि लायौ पग हथ्थ ॥ छ० ४४६ ॥

कवित्त ॥ आय सँपत्ते सोय । साज ठटे पठ्ठानह ॥
हक्कि धक्कि हय नपि । असँप असिवर उट्ठानह ॥
तेग तार कक्कस करार । कहै सुप मार मार सुर ॥
भगि पठान उसमानि । विमुप जिम झारि हारि भर ॥
सें अठ्ठ पठ्ठ धर ढर धरिग । जित्ते वर पुंडीर रन ॥
जै जया सद्द आयास हुअ । धनि धीर धीरप्प तन ॥ छ० ४४७॥

दूहा ॥ आए पछ पुंडीर सब । मिले भीर लय धीर ॥
बिनै सीस सब दून वहि । वधि धर रथ्थन धीर ॥ छ० ॥ ४४८ ॥

जिहि असिवर झरगय ढरिग । जिन रन सथ्थौ साहि ॥
सो सथ्थौ सोदागिरह । करो ग्रथ्थ जिन काय ॥ छ० ॥ ४४९ ॥

धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना ।

चूक तेक तुथ्थौ सुसिर । उठि कवध वेवग ॥
मिलि चवसह से मारियौ । गय प्रथिराजह रग ॥छ०॥४५०॥

बँची पत्र प्रथिराज नृप। मन मंन्यो बहु सोक
हम घर अग्गर धीर हौ। सो पत्तौ सुरलोक ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

धीर की मृत्यु का तिथि वार।

अरिल्ल ॥ भादों सेत चतुर्दसि भारी। बर बर धीर गयौ सुषकारी ॥
मानैं महल अषा रिति राजन। करैं न महल भ्रत्त भर काजन ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

तदन्तर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना।

दूहा ॥ बरषा रिति राजन बिलसि। मिले जानि रति मैंन ॥
देस भूमि भर छंडि दिय। खबरि न है दिन रैंन ॥ छं० ॥४५३ ॥

इति श्री कविचन्दविरांचेते प्रथीराजरासके धीर-पुंडीर पातिसाहग्रहनमोषन धीर बंधनो नाम चौसठमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६४ ॥

विवाह सम्यो लिष्यते ।

[पैंसठवां समय ।]

:०

पृथ्वीराज की रानियों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम परनि परिहारि । राइ नाहर की जाइय ॥
जा पाछै इछनीय । सलप की सुता बताइय ॥
जा पाछै दाहिमी । राय डाहर की कन्या ॥
राय कुँअरि अति रीत । सुता हमीर सुमन्या ॥
राम साह की नन्दिनी । वडगुज्जरि वानी वरनि ॥
ता पाछै पद्मावती । जादवनी जोरी परनि ॥ छ० ॥ १ ॥

राय धन की कुअरि । दुति जमुगीरी सुकहियै ॥
कछवाही पज्जूनि । भ्रात बलिभद्र सुलहियै ॥
जा पाछै पुडीरि । चद नदनी सुगायव ॥
ससि वरना सुदरी । अवर हसावति पायव ॥
टेवासी सोलकनी । सारँग की पुत्री प्रगट ॥
पगानी सजोगता । इते राज महिला सुपट ॥ छ० ॥ २ ॥

भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष ।

पद्धरी ॥ ग्यारहै वरस प्रथिराज ताम । परनियै जाय परिहार ठाम ॥
पुहकर सुथान जोरी सुकिन्न । नाहर सुषेत परिसुता लिन्न ॥
छ० ॥ ३ ॥

वारमै वरस रा सलख सोय । दिन्नी सुआय इछनी लोय ॥
आबू सुतोरि चालुक्क गज्जि । किन्नौ सुब्याह परिभाव भजि ॥
छ० ॥ ४ ॥

तेरहैं बरस दाहिमी व्याहि । दिन्नी सुबहिन चामंड चाय ॥
चवदमै बरस प्रिथिराज लोय । व्याही सुसुता हमीर सोय ॥
छं० ॥ ५ ॥

हाहुलि हमीर सुतिलक्क दिन्न । कन्या सुव्याहि उद्धार किन्न ॥
पन्नमै वरस चहुआन वीर । बडगुज्जरि परने अति गहीर ॥
छं० ॥ ६ ॥

राम साहि की सुता जानि । व्याहे सुन्नपति अति हेत मानि ॥
सोलहैं बरस सूबा संपेस । व्याहे सुजाय पूरब्ब देस ॥
छं० ॥ ७ ॥

गढ़ समद सिषर जादव पजाय । लिन्नी सुतारूनि विहंसेन षा
सत्तमै वरस हुआन साजि । राय धन की सुता गिरदेव गाजि
छं० ॥ ८ ॥

अठारमैं बरस चहुआन चाहि । कछवाह वीर पज्जून व्याहि
इक मात उदर धनिगरभ सोय । बलिभद्र कुंअर जायै सदोय
छं० ॥ ९ ॥

बरसें गुनीस पुंडीरि व्याहि । चन्द्र की सुता भुष चन्द्र चाहि ॥
बीसमें बरस चहुआन धारि । ससिवरता ल्याये बल बकारि ॥
छं० ॥ १० ॥

इकइमें बरस संभरि नरेस । हंसावति ल्याये गंजि देस ॥
बाईसैं बरस प्रिथीराज पूर । सारंग सुता व्याहे सुसूर ॥
छं० ॥ ११ ॥

छत्तीस बरस पट मास लोय । पंगानि सुता ल्याये सुसोय ॥
रट्टौरि ल्याय चौसठि मराय । पंचास लाष अरिदल षपाय ॥
छं० ॥ १२ ॥

इति श्रीकविचन्दविरचिते पृथ्वीराजरासके प्रथिराज विवाह नाम पैंसाठमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६५ ॥

बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

[छछठवां समय]

रावल समर सिंह जी का स्वप्न में एक सुन्दरी को देख कर उससे पूछना कि तू कौन है और उसका उत्तर देना कि मैं दिल्लीराज्य की राजश्री हूं ।

दूहा ॥ विलसत सुष दिन प्रति नवल । चित्रकोट चतुरंग ॥
सुपनतर लषि सुन्दरी । सेत वस्त्र मन भंग ॥ छ० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ प्रथा कंत करि प्रेम । जाम इक रही रजनिय ॥
निद्रा रावर समर । पेषि चहुआन अवनिय ॥
उज्जल वस्त्र पविच । पिनक रोवै पिन गावै ॥
पिनक लियै भर भौर । पिनक अप्पह सतावै ॥
नरलोइ देव देवगना । तू रभा कहि कित रहै ॥
पहु अच्छ वधू वीरहतनी । को तन गोरी सग्रहै ॥
छ० ॥ २ ॥

रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकड़ा जायगा और दिल्ली पर मुसल्मानों का राज्य स्थापित होगा ।

तब जग्गयौ पृथनाथ । सुपन लद्धौ सु विचारिय ॥
कह्यौ प्रिया एकंत । सुपन पायौ अकारिय ॥
दिल्ली पति गजनेस । करे कदल धर सट्टै ॥
पकरै जब प्रथिराज । तबह गोरी तन तुट्टै ॥

जोगिनी ग्रहै भंजै सुधर। रेनसीह साको करै॥
म्लेछांह म्लेछ धर भोगवै। इह निहंच हम उचरै॥
छं० ॥ ३ ॥

रावल जी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तैयार होना।

दुहा ॥ सभा करी रावर समर। बैठे सूर सवान॥
निगम बोध भेटन सुतिथ। चलियै दिल्ली थान॥
छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ पट्ट कज। रावल पुत्र रतंन॥
निट्ठ सु रष्षिय हट्ठ करि। घन प्रमोधि परिजंन॥
छं० ॥ ५ ॥

वित्त ॥ समर सिंघ निज पट्ट। थप्पि रावल रतंनं॥
दोहित्तौ सोमेस। अनष भरि कुंभ करन्नं॥
दष्षिन दिसि संक्रमिय। मिलि यह वसी पति साहं॥
बिडुर नयर दिय पट्टं। रहिय अनुचरि तिहि ठाहं॥
वीराधि बीर बज्जाय षग। हनिय वन्न तन करि उतन॥
इह सुपन रयनि लहि चंद कहि। चलि पुमानगढ क॥
छं० ॥ ६ ॥

रावल जी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना।

दुहा ॥ सुरज कोट गढ पौलि सजि। नालि गोलि चिहुं दीस॥
तीरंदाज अभूल भर। रषि चोकी अहनीस॥
छं० ॥ ७ ॥

षटकोस परिमान गढ। जरध प्रयुलंबाव॥
सजल सरोवर कुंड भरि। गिरना झरन सुहाव॥
छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ तिहि वेरा तिहि काल। फटै कग्गर चावहिसि ॥
अब्बू गढ जालौर। गए आमद बूंदी दिसि ॥
पैंडर गढ गोडवारि। धरा उज्जैन धरज्जिय ॥
रिनथंभोर हराइ। साढि चढि तेरह तत्तिय ॥
पथ्थेर जीनि सिलहै पवग। साज बाज सब दिप्पियै ॥
नीसान धाव बज्जे निहसि। कोन चितोरह रप्पियै ॥
छ० ॥ ९ ॥

रप्पि थान देवराज। गढ़ चित्रकोट भलायौ ॥
सत्त सहस असवार। अट्ठ ग्रह जाप करायौ ॥
किय डेरा दश कोस। प्रिथा लीनी अप सथ्थह ॥
स्वाति सुकल पष तीज। चल्यौ रावर मनु पथ्थह ॥
हय सहस सथ्थ असवार हुअ। प्रस्थानौ अप्पन कस्यौ ॥
दस दिवस रप्पि प्रस्थान तें। करे फौज रह सच्यौ ॥
छ० ॥ १० ॥

रावल जी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोड़ों की सजावट का वर्णन।

पद्धरी। सजि चल्यो कटक रावर नरिंद। मानो कि पथ्थ दुरलोध इंद ॥
पचास हाथि सुडाल सथ्थ। मैमत्त चलै जनु इन्द्र पथ्थ ॥
छ० ॥ ११ ॥

उम्भारि सुंड क्रीडंत तेह। मानों कि नाग वन मत्त लेह ॥
गढ़ पारि झारि पाहोर गम। गुजरे भौंर पठ रत्ति झुम्म ॥
छ० ॥ १२ ॥

पगथंभ फवै तन मेर रूप। सुडाल सेस तिन चढे भूप ॥
उप्पम चंद किरनाल जोति। नव जटित नवग्रह जानि द्योति ॥
छ० ॥ १३ ॥

गिर झरन जा मद स्रवत जात। धज नेज झुम्म धुव्वर धुरात ॥
पट डोरि कसन गजवाग साहि। उपरस्स झूल झमकंत ताहि ॥
छ० ॥ १४ ॥

ढालें सिंदूर सीसह सुलाल। मनु स्याम कूट डारी गुलाल।
तिन देषि शत्रु होवत विहाल। अरिथट्ट भंजनह रूप काल॥
छं० ॥ १५ ॥

आतस चरित्र अनभंग थान। गज थट्ट बट्ट गिरि चले जानि॥
तिन पुट्टि तुरी पष्षर समेत। रथ सूर जानि आने सुहेत॥
छं० ॥ १६ ॥

उंचास भास परबत समान। ढिल्लै पहार छत्तिय प्रमान॥
षरगोस मधय पुट्ठीं सरोज। आछादि वस्त्र अनेक मौज॥
छं० ॥ १७ ॥

धरि एक पलक पल प्रान पील। नाचंत नट मानों असील॥
हाकंत सबद छुट्टंत वाय। हुंकरत तेज मुट्ठी समाय॥
छं० ॥ १८ ॥

[1]अपंम जरित नग जीन जोति। मानों कि सिद्ध उर प्रगटि द्योत॥
पष्षर समत जगमग पलान। मानों कि सघन महि डग्गि भान॥
छं० ॥ १९ ॥

तुरकी ऐराक कच्छी बँगाल। हबसीय गोल नाचंत झाल॥
ताजी संग्राम ते धुंधमार। पुज्जैन वान मानै न सार॥
छं० ॥ २० ॥

अनेक जाति अनेक रूप। तिन चढ़े दिग्गवर जाति भूप॥
मानों समंद सरिता हिलोर। मिलि आय जानि बरषा सजोर॥
छं० ॥ २१ ॥

सजि समर फौज अप्पह समान। मानह, अषाढ जलहर प्रमान
* * * * * * * * छं० ॥२२

कवित्त ॥ है षुररज उच्छलिय। तिमिर विफुरिय धुंध पर॥
तरनि रंग रस मिलिय। घोर धुघ्घरिय रुहिर सर॥
चष्ष जुअल संजरिय। कमल उल्लसिय विमल जल॥
पथिक पयंबल लटिय। मधन धस नेह तुझझ दल॥

(१) को.—उपम।

जोवति सिंघ अरिदल दमन। नह सुभ्भै करमाल कर॥
टल टलिय परिय कंपिय सघन। समर पयानो रंभ भर॥
छं० ॥ २३ ॥

रावलजी का आबेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना।

कूच कूच करि पैर। प्रथा डोला दोइ सथ्थह॥
सत्त एक वाजिंच। चले उमराव समथ्थह॥
किय डेरा आमेर। कोस दोइ उप्पर कढ्ढिय॥
सहस तीस दोइ सथ्थ। जुव्वन गढ़ राथा हट्ठिय॥
किन कही वत्त रावर समर। इह राजा चीतौर पति।
तब कही बत्त रन धीर भर। इह अलोच किय्यै सुसति॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा॥ समर सिंघ रावर न्रपति। कटक सैहु सब घेरि॥
जो सद्दी चीतोर पति। तो डेरा आँबेर॥ छं० ॥ २५ ॥
हुई[1] हूह हलहल हुई। छुटि गय द मैं मत्त॥
मानों प्रवत [2]धन सिषर। चले फौज अनुरत्त॥ छं० ॥ २६ ॥
विराज॥ चढ्यौ मंगि बाज। रिन धीर राज॥
कारी फौज अग्ग। इला मग्ग भग्ग॥ छं० ॥ २७ ॥
अनमी जुवान। पंचै तोन बान॥
हुए हीस बाज। चव दिस्सि गाज॥ छं० ॥ २८ ॥
मनों अग्ग होरी। दिसा सधि धोरी॥
चढै अप्प अप्प। मनों सिंघ दप्प॥ छं० ॥ २९ ॥
बजे पग्ग राल। उडै दब्बि नाल॥
मनों तुट्टि तार। लग्यौ सेस भार॥ छं० ॥ ३० ॥
पह लग्गि बान। दब्बौ धुरि भार॥
बजे सूर साज। गयन सु गाज॥ छं० ॥ ३१ ॥

(१) मे कूह। (२) कृ ए धन।

करे फौज तीनं । अगं चित्त दीनं ॥
घटा बंधि फौजं । धरा लेन मौजं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना ।

दूहा ॥ षबरि भई रावर समर । दोन्यौ पट्टन राय ॥
सज्जौ पहु प्रथिराज की । ल्यौं चित्रकोट सुभाइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कह्यौ आइ रावर समर । तब सिर लग्गी रार ॥
को रनधीरह बप्पुरौ । मो सों मंडै आल ॥ छं० ॥ ३४ ॥
फौज फौज सिलहों सजी ।। षह गज्जे घनघोर ॥
कुरिय अप्प रावर चढ्यौ । भयौ कुलाहल सोर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
छुट्टे षंभू थान ते । चले मत्त गजराज ॥
दधि फटक्कि फट्टकि गगन । उलटि सुभट जुध साज ॥ छं० ॥३६॥

रनधीर का अपनी सेना को चक्रव्यूह रच कर रावलजी की सेना को घेर लेना ।

कवित्त ॥ चक्रव्यूह रन धीर । सहस दस बीस दोय सजि ॥
आडंबर बहु करिय । मनों पल्लव भद्रव गजि ॥
दंति सहस बर मत्त । फिरै चावद्दिसि बिंध्यौ ॥
चित्रकोट क्रन्ह नरिंद । जानि जस सों जम जुध्यौ ॥
दंताल देत लग्गा भिरन । मानो कट्ट कबार किय ॥
बिच फौज रुक्कि रनधीर मुष । जानि बाज तीतर परिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ उठे वीर [1]बद्दे बके थान थानं । जगी जोग माया सुरं अप्प मा
जगे भूत वेताल भूसाल पद्दं । भिरे एक जामं बिहद्दं सु हद्दं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
बजे तार रनतूर षग्गं उनंगं । तिनं वेर क्रन्हं रमै रोस रंगं ॥
षलक्कंत ओनं बहै रत्त धारं । सिरं हथ्थ ईसं उड़ै तुट्टि सारं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.- वद्द ।

हहकत कूदत नचै कमधं। कडकत वज्जंत छुट्टंत सध ॥
[1]लहकत लूटत तूटत भूभ। झुकते धुकंते दोज वथ्थ झूम ॥
छं० ॥ ४० ॥

दडकत दीसत पीसत दंत। करी कन्ह केली परे सूर पत ॥
गयौ कन्ह चालुक्क अग्गें उतग। रिन धीर वाही लगे कध पग्ग॥
छं० ॥ ४१ ॥

लगी नाग मुष्यी छती पुट्टि फारे। पर्‌यौ धीर षेत सुचद उचारे॥
परे सेन चालुक्क सथ्थ समथ्थ। भरें अच्छरी आनि अनेक रथ्थ
छं० ॥ ४२ ॥

कहा आय मुर्छा लग्यौ धारभार। परे सत्त तोषार चितोर सार॥
परे चालुक सेन थट्ट सुथट्ट। परे सत्त तीन विय पानि लुट्ट ॥
छं० ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ पर्‌यौ सथ्थ रनधीर। भजि सेना चालुक्की ॥
तीन सत्त घर परे। जानि लग्गी तन भूकी ॥
सौथ्यौ रन सीसोद। कन्ह पट्टे बधाय ॥
प्रथा कत हुअ जैत। सपी सुगतान बधाय ॥
दैदास सथ्थ अप्पन सुपर। वीस रोज मुक्काम किय ॥
जिन धाव अग लग्गे भरन। तिनह सीष चित्रकोट दिय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

संयोगिता के प्रधान का रावलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लेना और निगम बोध पर डेरा देना।

कन्ह लयौ अपसथ्थ। चले दरकूच महाभर ॥
कुसल हुई सब सथ्थ। गयौ जोगिन प्रथ्थावर ॥
सजोगिता प्रधान। आय समुह दस कोसह ॥
कोस पच सामत। पुच्छि परिगह आलोचह ॥

(१) ए कु को हलक्कन।

डेरा कराय तीरथ्थ तट। निगम बोध भेंथ्यौ तवह ॥
मुत्तिय बधायौ थाल भरि। करि आनंद ईंछिनि जवह ॥
छं० ॥ ४५ ॥

रावलजी का सब आदर सत्कार होना परंतु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना।

लई प्रथा मधि राज। सुधि न पाई प्रथिराजह ॥
तीन सत्त सुभ नारि। सषी मनमुत्ति सु साजह ॥
संजोगित परधान। दियौ सीधौ उमरावह ॥
सत्त तीन भरि छाब। चली कनवज्जनि धावह ॥
चौडोल केक रथके अरुहि। बहिल केक तुरियन चढिय ॥
मानों कि देव इंद्रानि लै। रूप भाग सबगुन बढिय ॥
छं० ॥ ४६ ॥

संयोगिता के यहां से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना।

दूहा ॥ करि मंजन रंजन बहुल। सुरंग अगर घन सार ॥
नवला अंजित नयन जुग। कनक षंभ मनितार ॥ छं० ॥४७॥
बस्त्र अनेक सुरंग तन। दमनक [1]साथह लाय ॥
जरि जेहरि पाइन जरिय। सजि भूषन षोड़साय ॥ छं० ॥ ४८
लघ,नराज॥ रजंत भूषनं तनं। अलक्क छुट्टयं मनं ॥
सुचंद मुष्ष रागिनी। मनो बदन नागिनी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
उवट्टनं स उज्जलं। सुरंग रत्ति मज्जलं ॥
सुधा सुसेत दिष्षही। सु रोमराइ पिष्षही ॥ छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-साथह।

मनों कि गग भारथी। सुभान चक्र सारथी ॥
अभूषन विराजय। ग्रह त रत्ति साजय ॥ छ० ॥ ५१ ॥
पग जराइ जेहर। मनों कि भद्द मेहर ॥
गढीस लग्ग सथ्थही। सुपिंड पानि रथ्थही ॥ छ० ॥ ५२ ॥
सुमेपला सु कट्टय। अग सु राज घट्टय ॥
ग्रह नषित्र मंडय। दुकेत राह छंडय ॥ छ० ॥ ५३ ॥
जुहार कंठ सुभ्भई। सु मेर गग षुभ्भई ॥
बैरथ्थ बाहु बंधय। सु सोप सेस गंधय ॥ छ० ॥ ५४ ॥
जरित्त चूरि फुंदिनी। सुमेर ज्यौं फुन दिनी ॥
विराज कंठ दोवर। कि गग मेर ओवर ॥ छ० ॥ ५५ ॥
सुहथ्थ गुथि वेनिय। कि दीपमाल रेनिय ॥
वरथ्थ अट्ठ अट्टय। सवक्क हस तट्टय ॥ छ० ॥ ५६ ॥
चढी चौडोल अंबर। मनों कि मेघ घुम्मर ॥
चली सु अग्ग पच्छय। इंद्रानि आनि कच्छयं ॥ छ० ॥ ५७ ॥
पचीस छाव अंबर। असीस मुक्कली भर ॥
मिष्टान छाव सट्टय। अनेक रग मिट्ठय ॥ छ० ॥ ५८ ॥
बतीस भाति मसय। सु सादि सुद्ध असय ॥
सुरभ तीस कट्टय। कपूर भार पट्टय ॥ छं० ॥ ५९ ॥
जवादि केसर सुर। पल सु सत्त अतर ॥
हजार तीन हूनय। बतीस छाव दूनय ॥ छ० ॥ ६० ॥
पंचास सत्त छप्पिय। कपूर पान डब्बिय ॥
जराव जेब सट्टय। जैचंद पुत्ति पट्टय ॥ छ० ॥ ६१ ॥

दासियों का रावल जी से संयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना।

दूहा ॥ सषी सकल उत्तरि चली। पंकति करि सब सथ्थ ॥
छत्र धर्यौ चित्तोर पति। आय पडी रहि तथ्थ ॥ छ० ॥ ६२ ॥
गाथा ॥ सजौगिता असीस। मुकलिय राज चित्रकोट ॥
अति सनमान जगीस। आइय भाग अन्हाई ॥ छ० ॥ ६३ ॥

रावलजी का सखियों का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना।

दूहा ॥ आदर सखी अनंत किय। कहौ दिल्लियपति बात ॥
च्यार मास संजोगि ग्रह। [1]सुष विलसै नित प्रत्त ॥ छं०॥ ६४ ॥

सखियों का रावलजी को गीतीवार राव बीतक सुनाना।

कवित्त ॥ हाव भाव वग्गुरि विथार। विनय षुंटी अति ढुक्किय ॥
कुचंतरिया दुहु पष्ष। मूल चछ हरती छुट्टिय ॥
[2]हांकी अहर सुरत्त। लियौ संभर पति घेरिय ॥
छुट्टे सब परिवार। कहै संभरि पति चेरिय ॥
संभलै वत्त रावर समर। है हथ्थी परिगह सुभर ॥
दरबार राज भय भीति दिषि। बहु [3]लिन्ही पतिसाह घर॥छं०॥६५॥
धर लीनी भेहरा। परयौ वंधह पग्गारह ॥
लूटि सहर लाहौर। गए द्रब कोरि अपारह ॥
इह कीनी पुंडीर। हयौ सौदागिर धीरह ॥
बेरी चावंड राय। राउ भोंहा गँग तीरह ॥
माल दे मौति देवराज गय। हाहुलि फिरि बैठौ हियै॥
जादवन सेन संभी भिरै। दिल्लेसर मध्ये हुवै ॥ छं० ॥ ६६ ॥
जे विपरीतह देषि। हुए राजान समथ्थं ॥
जे गिरिवर न छिपंति। हुए धरपति सिर छत्त ॥
जे डरि देते दंड। तेन फिरि दंड नगौरह ॥
वल्लोची बल राए। ढुरै सिर उप्पर चौंरह ॥
गोरी नरिंद दस लष्ष हय। संभरि पति सल्लै हियै ॥
पंचास दून दोवीस घटि। सो कनवज्ज गहुगाइयै ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हयौ बान कै मास। सूर कनवज्ज गहुगाये ॥
चौ अग्गानिय सट्ठि। सट्ठ पंगानी ल्याये ॥
पतिकुल पिता संधारि। म्लेच्छ सुष हुओ ततच्छिन ॥
मतै गयौ कै मास। सुहौ दिल्लिय घर रष्षन ॥

(१) मो.-सुख विलसत हुअ नित्त। (२) ए. कृ. को. कहा। (३) मो. लिन्निय।

दरवान नही सिर 'लच्छिया। मरद भेप मिहरी रहै॥
सैतान भाग अवग्रह ग्रहै। धर गोरी छत्री दहै॥ छ०॥ ६८॥
चावँड वेरी घात्त। कित्ति योई रस लद्धौ॥
थट्टो पगुर देस। साहि कोरी धर पद्धौ॥
रजनी ठग दिन ठग्ग। सुचित दुचिता सँसारह॥
इह गोरी तन रत्त। यही गोरी धर नारह॥
अवधूत धूत नागिनि डस्यौ। विष लग्गौ लोरै लवन॥
रहते सु असु रथ्यौ नही। भई बत्त तीनो भुअन॥ छ०॥ ६९॥

उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना।

दूहा॥ सिर धुन्यौ रावर समर। दई सीप सब नारि॥
पानि कपूर सु हथ्थ दिय। कहि सजोग जुहार॥ छ०॥ ७०॥

पृथा का रानी इछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना।

प्रथा रेनत इछिनि महल। सुख विलास मिलि जोग॥
भ्रात चरित्तह दिष्षि सब। लग्यौ मन्न सँयोग॥ छ०॥ ७१॥
कवित्त॥ जैतराय पम्भार। करिय मनुहार चित्रपति॥
मधुर सु मेवा अनत। मस मिष्टान अजब भति॥
सीधौ मन सैं पच। साक पल्लव तैला श्रम॥
दही दूध अनपाह। घृत मन असी अनोपम॥
ऐराक बस जौनह जरे। भरी छाव विधि विधि भली॥
पहु चाय निगम रावर समर। हुई जैत अप्पन वली॥
छ०॥ ७२॥

कुमार रेणसीजी का सब सामंतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना।

दाहिम्मै चावड। करी मनुहारि सुवन भर॥
एक पुरगम अच्छ। फेरि मुह अग्गै रावर॥

(१) ए क को लंटूछया!

बलिभद्रह कूरंभ। हून ऐसो अट्टारै॥
जर उजवक हय एक। ढिल्लि अंठुनि गिरि डारै॥
रामदे राव पीची प्रसंग। जामानी जद्दव बलिय॥
पग्गार सिंघ इत्ते सुभर। इन सु गोठि छत्रपति कलिय॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा॥ [1]रेन कुंअर गोंठह रचिय। विविधि भांति सब नूप॥
सुरंभ धृत सीधो सधन। कीनौ जीमन भूप॥ छं० ॥ ७४ ॥

गुरुराग का रावलजी को आशीर्वाद देना और कवि चंद का विरदावली पढ़ना।

पद्धरी॥ सामंत सबन मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन॥
छर सिद्ध दिस बरदान भट्ट। उच्चर्यौ चंद पेषै सुथट्ट॥
छं० ॥ ७५ ॥

दुह, पब्ब चवर सिर धरिय छत्र। बरदाय देत आसीस तत्र॥
उट्ठयौ सिंघ बरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहुविधि विसेषि॥
छं० ॥ ७६ ॥

चीतौररराइ काइग्गा कीन। षुग्गान पाट पग अचल दीन॥
मेरगिरि सरि चित्तौर मानि। किरनाल तेज बढ्ढै षुमान॥
छं० ॥ ७७ ॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मांनो कि गुरग [2]तनु मोर पीन॥
कलकियां राय केदाररायं। कब देत बिरद मनु उमँग चाय॥
छं० ॥ ७८ ॥

पापियां राइ प्राग्वट समान। कप्पन दरिद्र करतार जान॥
हित्थार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुरतान मलन बंधन समोष। हिंदून राइ टालंन दोष॥
उज्जेन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ [3]जुष्टरह वथ्थ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-रेनं कुवरं गोठ सुकरिय। (२) ए. कृ. को.-जनु। (३) मो.-युजिष्टरह।

भीमग राइ भजन सुषेत। जस लयौ धवल राजिद जैत॥
रिनथभ राइ सिर दंड कीन। अद्ध आ राइ गढ लेइ दीन॥
छ० ॥ ८१ ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ। सोपन सरीर प्रथिराज सथ्थ॥
दथ्थनी साहि भजन अलग्ग। चंदेरि लिद्धि किय नाम जग्ग॥
छ० ॥ ८२ ॥
दूहा॥ जग ऊपर जगदीस गनि। मृत्तलोक दिल्लेस॥
कै तू फुनि चिंतग पति। आइ इमो नरेस॥ छ० ॥ ८३ * ॥

रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कन्हा को भी बधाई देना।

गाथा। कन्हा दिया आसीस। सथ्थौ रनधीर षेत पै रडै॥
अट्ठा अट्ठावीस। पग्ग तेजाय तेजर तुट्ठ॥ छ० ॥ ८४ ॥
असि गह महदर वार। भार सेसाइ सेस फनि इंद॥
विम्भूत अनपार। समवर करसार समर रावरथ॥ छ० ॥ ८५ ॥

रावलजी का कविचंद से चंद्रवंश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और बुध का इतिहास कहना।

कवित्त॥ रावर पुच्छिय समर। सोम रवि वंस प्रकार॥
वरनि कहिय कविचंद। कथा मंडे विसतार॥
एक समय वन पंड। सपतरिषि गये रमते॥
उमया शंकर तहा। देषि रसकेलि करते॥
लाजत उअर मुनिवर फिरिय। श्राप दियौ सिव मन कुरषि॥
झुंजियौ सहित आवत इहा। मेदी मोबिन अनि पुरष॥ छ० ॥ ८६ ॥
मारतंड सुत मंड। जग्य मंडाय पुचकजि॥
राजलोक परछन। देत आहुति सो कि दुज॥
प्रगट कुंड कन्यका। देषि वाचिष्टति वार॥
फेरि मंच तप जोर। करिय दसमन्न कुमार॥

* छ० ८३ मो प्रति में नहीं है।

षेलत सिकार इक दिवस वह। महादेव कैवन गयौ॥
कहि चन्द्र आप भेटै कवन। पुरषा तन तें त्रिय भयौ॥छं०॥८७॥
काम लुब्धि बुद्धि। देषि चषि रूप छल्लिल घर॥
संभलि रिषि वाचिष्ट। बहुत करि अस्तुति शंकर॥
प्रसंन होइ बर दियौ। पिता घर होय कुआरं॥
फिरि तिय की तिय होय। बुद्ध घर जाय जिवारं॥
इक इक मास की अवधि करि। दुअसु पतंगा रष्षि हम॥छं०॥८८
बुध अंस चद्र बंसह भयौ। दस मन सूरज वंस क्रम।

रजपूत शब्द की उत्पत्ति।

दस हजार ग्रभवंत। रिषि त्रिय ढंकि धरची॥
फरसराम कै करत। वार इक वीर न षिची॥
कासिप को ले दियौ। उदकि सारौ महि मंडल॥
तपन तात पन छंडि। गयौ मन ग्रहै कमंडल॥
वसुधा विचार तब कढ्ढि। निज रक्षा कारन थपिय॥
उतपन्न सुतन तिन के सरज। दिष्षि नाम [1]रजपूज दिय॥
छं॥ ८९॥

रावल जी का कवि चन्द को दान देना॥

मैदा मन पंचास। वीस मन वेसन दीनौ॥
मंस जाति बहु भंति। जमन तट भोजन कीनौ॥
आटा घृत्त अप्पार। षंड गुर सक्कर भंती॥
जैयोषान जिहान। दई हथ्थनी इक तत्ती॥
मनुहारि परग्गह सवन करि। भांति भांति आदर करिय॥
पहुंचाइ समर रावर सुवर। अप्प घरघर विथ्थ,रिय॥छं०॥९०॥
दो हथ्थिय तरिवार। तुरिय ऐराक अच्छ गल॥
कंचन जरित पलान। एक जोजन मभ्भग पल॥
हथ्थी संघल दीप। एक जमदट्ट अमोलं॥
जर जर कसि सिर पाव। साज साकत्ति समोलं॥

(१) ए.-को.-रजपूत।

पहुचाय चद भट्टह सुवर। कीरति कलिजुग विस्तरिय॥
चित्रकोट राव दीनौ इतौ। रही कलिज्जुग [1]वत्तरिय॥छ०॥९१॥

बनवीर का कवि को एक हथनी और दो मुदरी देना।

दूहा॥ बनबीरह परिहार दिय। हथिनी एक सुरग॥
मोती माला सघन जल। दै मुदरी सुचग॥ छ०॥ ९२॥

रावलजी का शंक्रांति पर गुरुराम को एक गांव देना।

सूरजि मई संक्रांति जब। प्रोहित दीनी राम॥
लष्यहु न किसनारपन। दिय कारडौ नाम॥ छ०॥ ९३॥
गाथा॥ दिन प्रति दीजै दान। सठह्न नाथ परचय कज्ज॥
दोय पहुर मिलि थट्ट। गह मह दरबार भट्ट चारनय॥
छ०॥ ९४॥
इह रावर उनमान। भान उग्गाइ दिज्जियै दान॥
दिन प्रति दीजै धान। इह दिट्ठ न कथय कब्बी॥ छ०॥ ९५॥
दूहा॥ [2]भुजाई रावर समर। आवै बरन अठार॥
नह को पूछै अप्प पर। दिज्जै अन्न अपार॥ छ०॥ ९६॥

रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर बास करना।

निगमबोध रिध बासकिय। रावर समर नरिंद॥
हुए घोस इकईस तहां। पच सहस भर वृद॥ छ०॥ ९७॥

पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना।

दिवस चपथ्थै राव रह। आवै प्रथा इकत॥
वासुर दोइ वासै रहै। परी भ्रान्त मन चिति॥छ०॥ ९८॥
अति सुख सकुल बरस तिय। रित रितिए आचार॥
विलसत दिन ग्रीषम अधर। सुपनौ राजम वार॥ छ०॥ ९९॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना।

कवित्त॥ निसा एक माधव सु मास। ग्रीषम रिति आगम॥
निसा जाम पच्छलौ। सुपन राजा [3]लहि जागम॥

(१) ए कृ को-विस्तरिय। (२) ए कृ को भोजाइ। (३) ए कृ को महि।

सेत चीर छौनी। पवित्र आभ्रंन अलंकिय॥
मुँकत बंध चाटंक। बंध बेनी अवलंकिय॥
निज बैरि धारि कज्जल नयन। हर हराह सद्दह करिय॥
मानिक राइ वंसह विषम। रष्षि रष्षि धरनी [1]धरिय॥छं०॥१००॥

राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "वीर पुरुष"॥

साटक॥ का तूं सुंदरि हुंधरा किमहिता इच्छा परा वांछिता॥
को वांछा बर राज कोवर रुची दातव्य रूपानिवा॥
नं नं नं नृप जान दानरुचयं रूपं न विद्धी चयं॥
षड गंधार सुमार दुत्तर अरी सो मे वरं सुंदरं॥ छं०॥१०१॥

दूहा॥ इम वसुधा सुपनंत दिय। रजगति रजन विचार॥
विलसत दिन ग्रीषम अरध। सुधपिय पंग कुआरि॥छं०॥१०२॥
रष्षि रष्षि उच्चार बर। गति सिंघल अतिरूप॥
सुपनंतर चहुआन सों। चलन कहत इल भूप॥ छं०॥ १०३

उसी समय पृथ्वीराज की नींद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है।

धरकि चित्त जोगिनि नृपति। दिषि प्रभात दुति गान॥
भान किरन दिसि दिसि फटी। तम घटि तमचर गान॥
छं०॥ १०४॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना।

कवित्त॥ जग्गि जलनि प्रथिराज। जग्गि संजोग सुपनि कहि॥
सो सपनंतर जंपि। पत्ति दिट्ठी जु रत्ति महि॥
सेत वस्त्र उत्तंग। चित्त हरनी कुटिला गति॥
बैसम गुन गुर दुत्ति। दुत्ति उजलंत कुटीरति॥
ऊंचै बचन्न बर कठिनह। घन कुलटा गति चलन कहि॥
भव भविस गत्ति निग्गान कहि। नन जानै भव गतिय बहि॥
छं०॥ १०५॥

(१) मो.-ढरिय।

सयोगिता का उत्तर देना कि यह सब हुआ ही करता है।

सुनि सुकत धरइ द। जोय दिय्यौ जुग्गिनि गति ॥
पुत्त मित्त दारा न बंध। रोकन पितुरनि पति ॥
दिष्टमान रोकै प्रमान। चच्छि अछनि लच्छि कुछी[1] ॥
भोग बिना बंधि जगत। अम्मवय जग चय तुछी ॥
मोथाति नट्ट ससारनिय। न्निप नच्चवि मुक्कै जगत ॥
जीवन्न प्रान प्रापति जबसु। तव लग इह भावी विगति ॥
छ० ॥ १०६ ॥

पुन दंपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना।

सुरिम्म ॥ हँसि आलिंगन दै चहआन। पिय मयूप दपति रसपान ॥
सुरत सुरत मन बर मत्त। करहि सार ससार सुरत्त ॥ छ० ॥ १०७ ॥

रसकेलि वर्णन।

हनुफाल ॥ बर सुरत रत्त सुचद। दुहु बढे आनँद कद ॥
इह बुल्लि रसमुप बाल। बर कहत ओपम साल ॥ छ० ॥ १०८ ॥
समिभोम कट्टी रीस। मनु उदित भय ससि सीस ॥
सुपश्चंद विद विराज। कविराज ओपम साज ॥ छ० ॥ १०९ ॥
कै किरन उल्लससि कुट्टि। कै ठौर मनमथ छुट्टि ॥
कसि कासमीर विर्वध। बर अग्र आठ सुचद ॥ छ० ॥ ११० ॥
बर चित उपम विसाल। उडि चलन मगल बाल ॥
कुच अग्र बग मद विद। रस बढे आन द कद ॥ छ० ॥ १११ ॥
[2]मुकि कमल वैससि बाल। अलि लै उडी जनु बाल ॥
कुच छुट्टि छुट्टि सुमग्ग। कुसमेप सौप बिलग्ग ॥ छ० ॥ ११२ ॥
दुति होत कबिन झकोर। बग उडै घन जनु कोर ॥
पिय मेन नेन सुरत्त। तिन मक्षिक बाल सुगत्त ॥ छ० ॥ ११३ ॥
प्रति व्यब ओपम मीय। जनु सीय से हसि दीय ॥
रति निद्र रतिवर बीर। रति रयन रयन समीर ॥ छ० ॥ ११४ ॥

(१) मो कुछ, तुछ।
(२) ए कृ० का०—मुकि कमल वैस विसाल

अरिल्ल ॥ अवसर प्रीति बढ़ी रसपानं। कहि बर दूत सुनी सुलतानं ॥
सुनि बर गोरिय साहि नरिंदं। भईय गत्ति ढिल्लिय छिन मंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना।

दूहा ॥ मति छीनी ढिल्लिय तनी। सुनिय साहि चहुआन ॥
दाव न चुक्कै अप्पनौ। दुअन सौति उरगान ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ बोलि षान षुरसान। बोलि गोरि ततार बर ॥
षां रुस्तम पीरोज। सेन ढिल्ली चरिच वर।
बार बेर गहि मुक्कि। दीन में दीन कहायौ ॥
चहुआना जुरि नीर। मन्न मंती गह छायौ ॥
जौ होइ गोर गोरी ग्रहां। तौ तोसल नन भग्गही ॥
चहुआन बंधे बंधन जुरां। सो दिन पंथ तु लग्गही ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥

सलाह पक्की होना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय तब चढ़ाई की तैयारी की जाय।

सुमति सुरत्ती साहि। धाइ बंध्यौ चहुआनं ॥
सोई मता किज्जियै। बोल पछै नत आनं ॥
सुअम निअम बीर। बोलि विअम परिवानं ॥
फोर मुकति सुलतान। जहां ढिल्ली परधानं ॥
तत मत्त बत्त बर संग्रहै। अरु हिरदै भेदै छिनह ॥
इन कहै साहि चतुरंग सजि। तब अरि ग्रहन विचार कह ॥
छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना।

तब सु साहि गज्जनै। दूत ढिल्लीय पठाए ॥

जु कछु तत को मत। [1]अत कहि कहि समुझाए ॥
लै आवहु जगल नरेस। पव्वरि सब सुद्धिय ॥
राज काज चहुआन। सकल सामंत सुबुद्धिय ॥
फुरमान साहि सिर धरि लियौ। भेप कियौ सोफी तिनह ॥
उभै पप्प क्रम पंथ चलै। कागर काइथ [2]कर दिनह ॥ छ०॥११९॥

दूत की व्याख्या।

दूहा ॥ साम दान अरु भेद दंड। ए च्यारौं विधि आइ ॥
जान पनै सोइ दुत कहि। काम करै सुपदाइ ॥ छ० ॥ १२० ॥

दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना।

गाथा ॥ चर वर विवरित सुद्ध। लिद्ध चहुआन राजधानीय ॥
सह दूत पयान। गोरीय जथ्थ जानामि ॥छ० ॥ १२१ ॥

बचनिका ॥ धम्माइन कायथ पै पवरि पाए। तबहि दुत गज्जन को आए ॥
तिहि दिन सुरतान आराम करि आनि घरे रहै। ततार या सो बातै कहै।
बहुत रोज कछु और न आई। कछु दिल्ली की पवरि न पाई ॥
तब ततार पान कहत है। पातिसाह कछु बात पूछ है ॥

बहुत दिनो तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना।

सुरिल्ल ॥ चर चर चित्त चहुआन। हाम चित्ति ढिल्लीय चहुआन ॥
बुलै साहि ततार बुलाई। अजहू दूत गज्जन न आई ॥
छ० ॥ १२२ ॥

ततार खा का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होना ही शुभसूचक है।

श्लोक ॥ चिर जोगीश सिद्ध। चिर बध प्रधानक ॥
चिर सेवक साधर्म। चिर दूतस्य लक्षण ॥ छ० ॥ १२३ ॥

(१) ए छ को—वत। (२) ए छ का दिन करह।

चिरं तपो फलं दाता। चिरं राज फलं प्रभो ॥
चिरं नाम धनी दाता। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२४ ॥
दूहा ॥ इन लच्छिन तसकर सुलभ। तम पर दूत वसीठ ॥
रति दृग इंदग कुसल भल। कर वंधेन घसीट ॥ छं० ॥१२५॥

नीति राव कुटवार का राव समाचार शाह को लिख भेजना।

नीति राव कुटवार दर। तहि निवसै उन रीति ॥
सुमिलि साहि कागद दियै। लिषि दरबारह नीति ॥छं०॥१२६॥

प्रथम दूत का दिल्ली का समाचार कहना।

ए गल्हां सुरतान सों। कहि षिन षोन ततार ॥
प्रथम पहुर संभ्रम सुचर[1]। दर बोल्यो कुटवार ॥छं०॥ १२७ ॥
बचनिका ॥ प्रथम पहर बह्या, संभ्रम दूत आप षड़ा रह्या।
सलाम लह्या, दिल्ली के चरित्र कह्या ॥
पातिसाह पहिलों सैं तान बड़ै, राजा हुंआ रति चढ़े ॥
छं० ॥ १२८ ॥
था ॥ षैरी दं सुलतानं। दुसमन दैवान महलह थानं ॥
भर सहरत्त बिरत्ता। आघातं गोरियं साहिं ॥ छं० ॥ १२९ ॥
वित्त ॥ एक समै हम्मीर राइ। दरबार सपन्नौ ॥
पिथ्थौरा चहुआन। हथ्थ संजोगि बिकन्नौ ॥
नथ्थि बाज गजराज। सुनर भेषह बर नारिय ॥
मार मार उच्चार। लहरि लक्करि सिर रारिय ॥
हाइ हाय दिसि सब्बै[2] हुअ। धुअ समान सुग्गार धुरह ॥
हरि द्रुग्ग द्रुग्ग मुष उच्चरिय। जिन दरोग गंठे डरह ॥छं०॥ ३०
हा ॥ इह चरित्र पिथ्थै सुचर[3]। लग्गे गज्जन राह ॥
नाम सुसंभ्रम सुभग ते। कही सहि सों जाह ॥ छं० ॥ १३१ ॥

(१) मो.-वर।
(२) ए. कृ. को हूअ सब्ब। (३) ए. कृ. को-देषे बिचर।

भर अवध अडिय महल । रति वढि घटि महिसार ॥
विपरीति दिल्लिय सहर । नृपति अलुझ्यौ मार[1] ॥ छ० । १३२ ॥

दूसरे दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ दूजा पहर वह्या । विभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या । दिल्ली का चरित कह्या ॥ ते कहा चरित ॥
गाथा ॥ भग्गीवा सुर सधी । बधे पेमाइ लज्जो पाना ॥
अप्पा पर न गनिज्जै । जानिज्जै राज भजाई[2] ॥
। छ० ॥ १३३ ॥
कवित्त ॥ जा निज्जै सुविहान । राज भज्जै राजानी ॥
दूर है गै भर नथ्थ । तेज भग्गी चहुआनी ॥
बासर मधि विसंधि । नीति भग्गी ढिल्ली वै ॥
जानिज्जै सु विहान । होइ हिंदवान सुहै वै ॥
लज भगी प्रेम वहु वरह । दइ दुज्जन महलैं ग्रसै ॥
चहुआन चरन सेवन सुवर । नीति राव अप्पन बसे ॥
छ० ॥ १३४ ॥

तीसर दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ तीजा पहर वह्या । निभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या ॥ दिल्ली का चरित कह्या । ते केहा चरित ॥
गाथा ॥ हिन्दू सयन सुदुष्य । सुष्य सोहाव गोरिय साहि ॥
राजन विषम चरित । सामता रोजन रोज ॥
छं० ॥ १३५ ॥
कवित्त ॥ रोज रोज सु विहान । घेर सामत ग्रेह धन ।
सामि निंद उचरै । सामि निन्दा न सुनै कन ॥
भर अरत्त साई । विरत्त गोरी सुलतान ॥
सभ रूप संजोगि । गिल्यौ चहुआन सुभान ॥
विपरीति वत्त ढिल्लिय सहर । राज नीति भग्गी रस ॥

(१) मा-उलझ्यौ नार। (२) ए कु को भजाई।

पंजाब पंच पंचै सुपथ । चिंति तथ्य गोरी बसं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

चौथे दूत का समाचार ।

बचनिका ॥ चौथा पहर बह्या । विलास दूत आइ पर। रह्या ॥
सलाम कह्या । ढिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते केहा चरित्र ॥
गाथा ॥ गाडंडूर उडंडा । जोरु गरुवार मरद हरु अंदा ॥
धुनि धुनि सह सामंता । चावंड वेरियं वधे ॥ छं० ॥१३७ ॥
दूहा ॥ त्रिया राज बसिवौ नही । बसिवौ नह बहुराज ॥
बालराज बसिवौ नही । कहै घर घघर आज ॥ छं ॥ १३८ ॥
कवित्त ॥ जिन कंधै ढिल्ली नरेस । कंध जिनके ढिल्लिय पुर ॥
जिन कंधै लगि राज । अग्ग अबनुझ बहुन घर ॥
मान तुंग वर अग्ग । मिरिग कनवज्ज जुझाए ॥
चौंसट्ठिन मुक्कि कै । भागि जोगिनि पुर आए ॥
चहुआन सुबर जानै नृपति । सो बल मंगौ साहि सुनि ॥
चादर सु अप्पि गोरी सुबर । पंच देस पंजाब धुनि ॥छं०॥ १३९ ॥

शाह का पीर को चादर चढाकर दुआ मांगना ।

बचनिका ॥ जमा सुविहानं । शाहब दी सुलतान ॥
पैगंबर परवर दिगार । इलाह करीम कवार ॥
सुलतांन जलाल सिकंदर जाया। सुलतान साहबदीन अलह उपाया ।
मुसलमान महति । दीन भीमहति ॥
इतनी कही कहन लागे । पातिसाह साहाबदीन आगे ॥
अपर पराये टरे । सैतान परवरे ॥
सानंत मन जरे । चावंड राइ भौ वेरी यौं भरै ॥
क्रूरंम कुल संकोड़ा । परिगह पास छोड़ा ॥
पांभार परि गनाई । हाहुलि परिहांम जनाई ॥
राउ जैतसी पास मेहरा छुट्टा । पुंडीरों लाहौर लुट्टा ॥
राउ भोंहा दुनिया मुक्की । राउ माल दे मौत चुक्की ॥

देव राव दीवान छड्यो। जादवों वैर मड्यो॥
पलक आलम आलोई। जीवतै चह आन वोई॥
दसोही दीसा जीती। कनवज्ज कहर वीती॥
हजरत पुदाइ पेल। असि मरदान मेल॥
बरन बरन घेरी। वहलों पति नेरी॥
पु आसाहि साहाव साहि। दिजियै चादर उचाय॥

शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को पर वाने या पत्र भेजना।

दूहा॥ चर चर वत्ति सिद्ध किय। झुकि किय घाव निसान॥
सत्त सहस कागर फटे। देस देस सुरतान॥ छ०॥ १४०॥
बचनिका॥इतने सुलकन कों फरमान फाट्ट। नौवी सदा ठौर ठौर बैठक ठट्ठे
फुरमान पेस कद्दलिवास। वैलास देस गोह पधार॥
गय्यर गिरवान पुरासान मुलतान। भटनैर भय्यरवान॥

शहाबुद्दीन के चढाई करने का समाचार दिल्ली में पहुचना और प्रजा वर्ग का अत्यंत व्याकुल होना।

दुहा॥ फुट्टिय वत्त प्रचार चर। घर घर ढिल्लिय, थान॥
चढ्यो साहि चहआन पर। चढि हय गय असमान॥छ०॥ १४१॥
वढि आवत ढिल्ली सहर। चढ्यो साहि सुरतान॥
घर अगन मगन रुरिग। सुनत सूर अकुलान। छ०॥ १४२॥
ग्रह बभन ग्रहवान नर। ग्रह छत्री छह छन्न॥
भई बाति नर नारि सुप। सब लग्गै सन सन्न॥ छ०॥ १४३॥
कवित्त॥ सुक्रम साहि बानौत। आय गज्जन सपत्ते॥
तिन कग्गर हथवार। आइ उत्ते इत तत्ते॥
सेत दुती रविवार। बार गुरु तेरह तत्ते।
चढ्यो साहि साहाव। जोध है गै सनि मत्ते॥
जिन करहु, अब्ब गोरी सुपहु। जानि पुरानौ सेन सह॥
सज्जयौ सूर साहाव पुर। आयौ आतुर उप्परह॥ छ०॥ १४४॥

सुरिल्ल ॥ सुनि कागर दुग्गर दिल्ली धर । भूमि कंप जिम कंप नर वर[1] ॥
बाल वृद्ध नर नारि समानह । लगी धक्कधक्की चिंत चिंतानह ॥
छं० ॥ १४५ ॥

प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना ।

भै लग्गौ दिल्लिय पुर जामह । नगर सेठ पहि गय प्रजतामह ॥
मिलिय सकल एकंत महाजन । किम बुझ्झै रतिवंतौ राजन ॥
॥ छं० ॥ १४६ ॥

नगरसेठ श्रीमंत के यहां जुडने वाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धन पात्रता वर्णन ।

पद्धरी ॥ प्रज मिलिय ताम विचार कीन । बुल्लाय बुद्धि जन सेठ लीन ॥
श्रीवंत साह सब नयर सेठ । मति वंत बुद्धि गुर गुन निट्ठि ॥
छं० ॥ १४७ ॥
बर सिंह साह हंकारि अप्प । भोगवै विभौ लच्छी सु तप्प ॥
श्रीधर सुनाम सुंदरह दास । श्री करन जसोधर संक तास ॥
॥ छं० ॥ १४८ ॥
सोमन्न साहि केलन्न साहि । धन सागर आगर सगर ताह ॥
सोवन्न साह सागन्न बोलि गरुअत्त गाज सुभ तेज तोलि ॥
॥ छं० ॥ १४९ ॥
अमरसी अगर ईसरह दास । करमसी उदैसिंघ राम आस ॥
केसर कपूर बेतसी नाम । गनपति गनेस गौरसी स्याम ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥
घड़सीह धनू नेतसी साह । चेतन्न चतुरभुज मिले माह ॥
छाजू अरु छीतर छविल आइ । जोधा जैसिंघ झांझन बुलाइ ॥
॥ छं० ॥ १५१ ॥
टोडर मल टी लाठ कुरसीह । चलि गए सांप डरपंत लीह ॥
डुंगर सी ढाला तुरत बेग । व्यापार धरम चालै सुनेग ॥
॥ छं० ॥ १५२ ॥

(१) मो.—जंनठ्वर ।

थानि गथ्थिरो दामा दयाल। धनराज धीग भोगी भुआल॥
परवत्त पदारथ पदमसीह। फाटूरु फलावर सिंघ ईस॥
॥ छ० ॥ १५३ ॥

भामो अरु भोजो मेघराज। मोहन मथूरो जा बड विराज॥
रनधीर लषमसी बीर दास। सेपो सिधौ हेम गहास॥
॥ छ० ॥ १५४ ॥

आये अनेक महाजन्न सब्ब। सकरहदास पची सुअब्ब॥
बहु ब्रम्म धरन अति तप्पतार। अति उच उंच कति कम्मकार॥
छ० ॥ १५५ ॥

नन लहै धाम छायो प्रचार। कोमलह गात लच्छी न पार॥
बोलत सास चालत थूल। अति बध्यौ उदर चढि ग्रीव मूल॥
छ० ॥ १५६ ॥

पहिरत वस्त्र ढीले सु उच। ग्रिह दै कपाट मुरत मुछ॥
लेपिनी कान लेपो करत। हरि ब्रह्म रूप ताहू छरत॥छ०॥१५७॥
ग्राहत कोप भीरत मुट्ठ। पीसत दसन उट्ठत निट्ठ॥
दातार दयाल ऐसो न और। बरजत पाप क्रम ठौर ठौर॥
छ० ॥ १५८ ॥

प्रब दान ग्यान तीरथ विनान। सोभत साह दै अन्न पान॥
सोभत नगर जिहि बडे साहि। लष कोट द्रव्य जिन हट्ट माह॥
छ० ॥ १५९ ॥

ए मिले साह औवत ग्रेह। आये सु चितातुर चिति तेह॥
सुत सुतिय क्रम्म परिवार मिल्ल। धरवार भरे भंडार निल्लि॥
छ० ॥ १६० ॥

कोटीस धज्ज बंदहि अनेक। बर धवल ताम मंडो विवेक॥
उच उच भोमि साजै विलास। बर गौप अनत लग भोल भास॥
छ० ॥१६१ ॥

प्रज्जा क विवध साजे अनूप। बासंसि विवह गुन गठि भूप॥
आए सुलब्ब ग्रह नयर साह। आसन्न दिव्व सम मन्नि ठाह॥
छ० ॥ १६२ ॥

श्रीवंत साह का राव रोठ महाजनों का आदर सत्कार करना और राव महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना।

दूहा ॥ मानि साह श्रीवंत घन। सब प्रति आदर दीन ॥
अप्पनाम गुन उद्धरिय। सब संबोधन कीन ॥ छं० ॥ १६३ ॥
प्रथुक संबोधित साहि सब। चंदन चरचि कुसम्म ॥
कस्तूरी करपूर युत। बीर सुगंध सुरम्म ॥ छं० ॥ १६४ ॥
आदर करि सब प्रज पसरि। दिय बैठन सुभ ठाह ॥
मति प्रमान जिहि पुच्छियै। बोलि सुगुरु गुरु ॥ छं० ॥ १६५

वेत्त ॥ मंच बयठ्ठे साहि। जिके बहु गुन आगर ॥
सुष सरूप भोग बन। सजल लज्जी बुधि सागर ॥
सुतन मंत चिंतवै। चित चिंतै न कोइ नर ॥
रतिमत्तौ राजान को। सुगुदरै दुष अन्तर ॥
सामंत सब्ब अच्छै विरत। राचा वंड बेरिय भर्यौ ॥
कैमास सग्ग[1] जातह सकल। सुवर मत्त[2] सथ्थह सथ्यौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

पामारी पर चित्त। विरत किन्नौ चहुआनह ॥
जो बुझ्झै सम विषम। ग्यान अप्पनौ परानह ॥
मधू साह परधान। सोय दरबार न दिष्षहि ॥
रयन कुमर सामंत। सौंह सोइ पित न परष्षहि ॥
अनि तरुनि नेह छंद्यौ तमकि। कोइ न सुधि नप वर कहै ॥
संजोगि नेह रत्तौ नपति। मनमत्तौ निस दिन रहै ॥
छं० ॥ १६७ ॥

पुचिय रा कमधज्ज। सोइ जुब्बन गुन मत्तौ ॥
रूप द्रव्य सिंगार। नेह उर चौजन रत्तौ ॥
नह बुझ्झै पर अप्प। तैन रस राजन बंध्यौ ॥

(१) ए. को.-सुर्ग (२) ए. कृ. को - तत्त

जिम अलियज अवुजहि। गई वासुर निसि सध्यौ ॥
चिचग राह आयौ सु घर। भये वीस वासुर सुथह ॥
नन भई वुझ्झि राजन किनो। तौ को गुदरै अप्प कह ॥
छ० ॥ १६८ ॥

श्रीपति साह का सब साहुकारों को लिवाकर गुरुराम के घर जाना।

भुजगी ॥ तवै उच्चर्यौ साह श्रीपत्ति ताम। सवै मच्च मडौ जुपडौ विराम ॥
भए सब्ब सामंत चित्त विरत्त। दर तेन तज्यौ न्रिप मन्नि मत्त[1] ॥
छ० ॥ १६९ ॥

पुरप्प[2] दरवार पावै न जान। रहैं चीय रुक्कै पुरुप्प पुरान ॥
विरान न[3] अप्प न वुग्गगै न साय। कर वेत लट्ठी तरस्सीत राय ॥
छं० ॥ १७० ॥

न्रिप रस्स वंधे सुपगानि तास। भए तीस अग्ग वर पच मास ॥
निसा वासुर सधि भूल्यौ नियान। लगे मौनकेत क्रत पच वान ॥
छ० ॥ १७१ ॥

कहै कोय राजग सुझ्झै न अप्प। ग्रिह राज चल्यौ गुर राजविप्प ॥
लहै भति एकत कुम्मार थान। विना सेव देवन्न आहार पान ॥
छ० ॥ १७२ ॥

पुछै वैरि वर वीर चामड धार। करै कानि मानेज रेन कुमार ॥
घर धालि वरदाय सूतो सुअप्प। करै कित्ति आनूप प्रागट्ट तप्प ॥
छ० ॥ १७३ ॥

कहै गुदर अन्य सूझै न राज। विना राम देव जिन दिसि लाज[4] ॥
मतौं मडि उट्ठै सवै साहि ताम। चलौ प्रज्ज सध्यै ग्रिह विप्प राम ॥
छ० ॥ १७४ ॥

(१) ए ऊ को वत्त
(२) ए गुरुप्प
(३) मो विरामन्ना
(४) ए ऊ को काज

चढै जान एकं सुएकं अनोपं। नरं जान जानं चवं डोल ओपं॥
बहिल्लं सु अस्वं सजुत्ते बनेयं। केयं अश्व रोहै सुपं राह रेयं॥
छं० ॥ १७५ ॥

बसंनं अनूपं जरावं सुधारे। मनों धूम रूपं धरन्नीव तारे॥
चली प्रज्ज सथ्थंग हंकार सद्दं। गए विप्र गेहं गहं माह नद्दं॥
छं० ॥ १७६ ॥

गुरु राम का राव रोठ साहूकारों से सादर मिलना।

दूहा॥ सुने गहंमह विप्र दर। आयौ उट्ठे ताह॥
तब दर पति सनमुष कहिय। आये श्रीपति साह॥ छं० ॥ १७७ ॥
प्रजा षलक सथ उग्गाही। जे बड़ दिल्ली साह॥
सो आये दरबार तुम। कोइ इक काज उगाह॥छं० ॥ १७८ ॥
आए आतुर राज गुर। करिय विवह महमान॥
आदर करि आसन्न दिय। संबोधे बर बानि॥ छं० ॥ १७९ ॥

श्रीमंत रोठ का गुरु राम से शाह की चढ़ाई का समाचार कह कर सारा दुःख रोना।

कवित्त। सुनि अवाज सुरतान। षलक भज्जिय नद मंडल॥
कर कुसाव भेहरा। दान अरु मान अषंडल॥
मिलि परवान पुंडीर। सहर लुथ्यौ द्रब साइय॥
हनि सोदागिरि बानि। बनिज उन्नित पट पाइय॥
अग्यान लुपै अग्या नपति। सत संपति संभर धनी॥
गुर राज काज अवसर अवसि। प्रज पुकार मंडिय घनी॥
छं० ॥ १८० ॥

दूहा॥ तुम सम राजन राज हित। बित रष्षन चित अग्ग॥
कानन मंडै करन सों। तू धर रष्षन अम्म॥ छं० ॥ १८१ ॥
कवित्त॥ मंद राज माल दे। देष चिय तन असि किन भौ॥
लौहानौ आजानबाह। अजमेर दुग्ग गौ॥
पावस रा पट्टनी। महि महि सार निरत्तौ[1]॥

(१) ए.-नारंनौ, नारतौ

जर जोवन तन मद। तुग तेजी रन असुभौ ॥
दाहिम्म दोह बछै विषम। चरन बीर बेरी वहन ॥
घर घालि भट्ट सूतौ धरह। सुवर विप्र तोही कहन ॥
छ० ॥ १८२ ॥

का कालह तरि नारि। धारि आनी घर मझ्झै ॥
रवि समान प्रथिराज। गिल्यौ गोरी जिम सझ्झै ॥
जिहि परिगह परिवार। मारि मारत उप्पारिय ॥
जिम रावन मंडलिय। वलिय वन्दर हरि वारिय ॥
इच्छहु जो विप्र पच्छहि मरन। तौ अग्गै सोइ कहौ ॥
कर दरभ कमंडल छाग मग। वादरि द्रुग मारग गहौ ॥
छ० ॥ १८३ ॥

पाहुनौ रावर नरिंद। वर प्रथा सपत्तौ ॥
सोइ अचिज्ज गरहा। सुनत मन मझ्झह सत्तौ ॥
ता सज्जन दी लज्ज। बज्ज गोरी घर चपिय ॥
नद नाहर पहन। प्रवेस अवनी आकपिय ॥
इम सुपम निद आवै नृपति। विषम अप्प डंकह डसिय ॥
गुर राज काज अवसर वसिय। किम सुनेह छडै रसिय ॥
छ० ॥ १८४ ॥

राजहौं कूरम्म। हथ्थ लड्डू विय बंधे ॥
चाहुआन सुरतान। कूर कावरि इन बंधे ॥
देव राज पौची प्रसग। गंग टट्ट पट फुट्टिय ॥
जैत राव हय गय। भंडार साहन सह लुट्टिय ॥
गुज्जर गमार सस्त्रह बली। मत दैव द्रुग्गन गनै ॥
वर विप्र राज राजग गुर। कहै आज तोही वनै ॥ छ० ॥ १८५ ॥

गुरु राम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथी पाठ जानता हूं राज काज की बातें क्या जानू।

प्रोहित वाक्य।

हम सु काज्ज प्रव पच। पढ़ै पचा प्रभु रजहि ॥

हम जु लच्छि आस रहि। चरन चंदन घसि बंदहि॥
हम सुदेव जग्योपवीत। सोहै तन मंडन॥
हम विरद्द बंदि न पढ़त। पापह पर पंडन॥
इह विकट भट्ट चंदहि चरित। कहै सुमानै नृप नवल॥
परतष्षि द्रुग्ग पुच्छन चलौ। मंच घत्त सस्त्रह सबल॥
छं० ॥ १८६ ॥

शाह का कहना कि राज गुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें।

प्रजा वाक्य।

घर बाहर पंडवन बुद्धि। बँधवन रुधि छुट्टिय॥
घर बाहर वामंन। छलित्त बल दोष सुथट्टिय॥
घर बाहर जुरि जरासिंध। गुर गजा जुद्ध किय॥
घर बाहर सुर पत्ति। अस्ति दद्धीच मंगि लिय॥
जिहि जियत धरनि धर और प्रभु। तिहि जननी जुब्बन हरिय।
बंभन सुकज्ज इह अज्ज तुम। प्रज पुक्कार मंडी करिय॥
छं० ॥ १८७ ॥

गुरु राम का श्रीपत राह और राव महाजनों सहित कवि चन्द के घर जाना।

दूहा॥ प्रज्ज सु करिवर विप्र कज। सीस तिलक तन तुंग॥
कुसुम गंध सब सथ्थ मिलि। मनहु कमल रस भ्रंग॥
छं० ॥ १८८ ॥

जब सहाब चढ़र उठी। तब गल्लहां फुटि चाय॥
प्रज पुकार गुरसों कहिय। चंद कहन गुर आय॥ छं० ॥ १८९ ॥

कवित्त। राज गुरू दरबार जाय। घर चंद सपत्तौ॥
छत्र चौडोल रु जान। दिय्य[1] आसन दीपत्तौ॥
हेमहार मुद्रित उ चंद। किरनिय जगमग्गिय॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्ष।

तिमिर पाप कट्टन। लिलाट प्राची दिसि उग्गिय॥
प्रज्ज सोर रोर पावस मनौं। सुगर भट्ट चदह मुनिय॥
भट्टनि जगाय जग्यौ पुरस। सुगुर पच्छ सद्दह दुनिय॥
॥ छ० ॥ १९० ॥

कवि का स्त्री बालकों साहेत गुरु राम की पूजा करना और गुरुराम का कवि से अपने आने का कारण कहना।

चद वदनि जगि चद। चद वदनी मुख चाह्यौ॥
हे चद्रानन चद्र। कत चदहि न सुहायौ॥
अम्रित मित्त कलमित। नित्त वदिन इह वद्दिय॥
छिन छिन घटि वढि वढै। राह भय भवन सुजद्दिय॥
दुज पुज्जि अज्ज लज्जा न करि। राज गुरू आयौ धरा॥
सापग धूप दीपह चरचि। सुवर विप्र मडल वरा॥
॥ छ० ॥ १९१ ॥

मुरिस॥ सकल लोइ पुच्छन गुरु अप्पहि। गुरु पट मास राज विन दिप्पहि॥
तव पर जानि प्रपच उपायौ। तव गुरु पुच्छन चदहि आयौ॥
॥ छ० ॥ १९२ ॥

दूहा॥ आदर चद अनत किय। ग्रह आवत गुरु राम[1]॥
सम सुत त्रिथनि सु चरन परि। सिर फेरिग सब ह्राम[2]॥
॥ छ० ॥ १९३ ॥

मुरिस॥ तव गुरराज राज कवि बुझ्झै।
तुहि वरदाइ तीन पुर सुझ्झै॥
अहि निसि देव सेव गुरु ठानिय।
सो पट मास मिले विन जानिय॥
छ० ॥ १९४ ॥

(१) ए कृ को राज। (२) ए कृ को साज।

कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है।

दूहा ॥ हस्यौ चंद बर बिप्र सों। तुम जानहु बहु भंति ॥
जिहि कामिनि कलहौ कियौ। सो जामिनि बिलसंत ॥
॥ छं० ॥ १९५ ॥

गुरुराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उद्दंड पुरुष क्योंकर स्त्री के वश में है।

मुरिल्ल ॥ कही चंद बर बिप्र न[1] मानिय।
रहि रहि कबि तैं बात न जानिय॥
जिहि धनु त्रिय रन त्रिन वर आनिय।
सुक्यौं देव त्रिय बसि करि मानिय ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते।

तुमसम दिष्टि अदिष्टि न दिष्यौ। जब असीलष्य दल्ल गहि[2] भष्यौ ॥
प्रान समान परत दप छोह्यौ। मरन छंडि महिला सुष[3] मोह्यौ ॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥
तिहि महिला महिला बिसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई ॥
बिभौ भूमि भ्रित जाहु सुजाही। सुनि सौ समौ राज गुर नाहीं ॥
॥ छं० ॥ १९८ ॥

गुरुराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है।

दूहा ॥ समौ[4] जानि गुर राज रहि। कहि कहि कबि इह बत्त ॥
किहिवै किहि रूपनि रवनि। किम राजन रस रत्त ॥ छं० ॥ १९९ ॥

कवि चन्द का संयोगिता के रूप राशि का वर्णन करना।

जुन्नान ज्यौं तन मंडनौ। सिसु मंडन तन डोल ॥

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को.-गहि गहि।
(३) ए. कृ. को.-मन। (४) ए.-मनौ।

वालप्पन सह विच्छुरन । तिहि चित च चल लोल ॥
॥ छ० ॥ २०० ॥

गाथा ॥ जजोई सजोई । जोईत सिद्ध जम्माई ॥
नजोई सजोई । गोईत सिद्ध जम्माई ॥ छ० ॥ २०१ ॥

मालती ॥ गुरु प च सत्तति चामरे । चहुआन अच्छर धामरे ॥
सति पीय पिंगल व धए । गिय मालती प्रति छ दए ॥
॥ छ० ॥ २०२ ॥

स जोगि जोवन ज वन । सुनि सर्वद्र गुरु राजन ।
नग हेम ह स जुथप्पन । गै मग्ग ह स उथप्पन ॥
॥ छ० ॥ २०३ ॥

तल चरुन अरुनति अद्दय । जनु श्रीय श्रीपँड लद्दयं ॥
नप कुद मल्लि सुवेसन । प्रति व्य व श्रोन सुदेसन ॥
॥ छ० ॥ २०४ ॥

करि कासमीर सुर गन । विपरीत र भति ज धन ॥
रस नेव र जि नित विनी । कुसुमेप इक्क बिल विनी ॥
छ० ॥ २०५ ॥

उर भार मध्य विभ गन[1] । दिय रोम राय सुथ भन ॥
कुच कंज परसन ज अली । मुप मयुप[2] देपि[3] काल काली ॥
छ० ॥ २०६ ॥

हिय[4] अयन सयनति सिद्धयौ । भजि ग्रहन ग्रहनति रिद्धयौ ॥
उर झीन झीलति कचुकी । भुज ओट जोटति पचकी ॥
छ० ॥ २०७ ॥

नलि नील पाणि वअच्छयौ । जनु कुद कुदन सुरच्छयौ[5] ॥
कल जीव रेह चिवसया । जनु पच जन्य सुथसया ॥ छ० ॥२०८॥

अधरेव पाक सुविवन । सुक सालि आलिन खडन ॥
दस नेव मुक्ति सुनदन । प्रति भास मुद्रित बदन ॥
छ० ॥ २०९ ॥

(१) ए कु को विल्गन (२) को नयुप (३) मो दोष
(४) ए सिय (५) ए च छयौ

मधु मधुरया मधु सद्दया। कलयंत कोकिल बद्दया ॥
भ्रम भवन जीवन नासिका। नसु अंजनी पिय भासिका ॥
छं० ॥ २१० ॥

गल मलत श्रवन तटंकता। रथ भंग अरक विलंबता ॥
तुछ तुच्छ इष्यहि इच्छसी। षष लज्ज सैसव संकसी ॥
छं० ॥ २११ ॥

सित असित उररि अपिंगज्यौ। जनु सेड वंदर वच्छज्यौ ॥
तसु मज्झि भ्रग्ग मद बिंदुजा। दुति इंदुनिंदत सिंधुजा ॥
छं० ॥ २१२ ॥

कच वक्र चक्रति कुंतलं। तसु ओपमा नह भूतलं ॥
मनि बंध पुहपति दीसए। जनु कन्ह कालिय सीसए ॥
छं० ॥ २१३ ॥

चिस रावली वनि वंनियं। अवलंबि अलि कुल अ्रिनियं ॥
चित चिच चिचत अंबरं। रति जानि दृष्टति सम्मारं ॥
छं० ॥ २१४ ॥

जनु सीस फूलति अच्छयौ। भनु कन्ह कालिय सुच्छयौ ॥
* * * * * * * छं० ॥ २१५ ॥

संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन।

वेत्त ॥ जिहि उदद्धि मथ्थ ए। रतनचौदह उद्धारे ॥
सोइ रतन संजोग[1]। अंग अंगह प्रति पारे
रूप रंभ गुन लच्छि। बचन अम्रत विष लज्जिय ॥
परिमल सुरतरु अंग। संष ग्रीवा सुभ सज्जिय ॥
वदन चंद चंचल तुरंग। गय सुगति जुव्वन सुरा ॥
धेनह सुधनंतरिसील मनि। भौंह धनुष सज्जौ नरा ॥
छं० ॥ २१६ ॥

ह। ॥ समर समंडन समर ग्रह। समर सुरप्पर भोग ॥
समर सुज्जित्तिय पंग नप। तिहि[2] चल्लन संजोग ॥
छं० ॥ २१७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सोइ संजोग सुअंग (२) ए. कृ. को.-वल्लह।

मन्नि राज गुर राज रस। कवि वर वरनिय सत्ति ॥
जस भावौ तस भुग्गवै। तस विधि अप्पै मत्ति ॥
छ० ॥ २१८ ॥

उभै उभै रस उप्पयौ। मिले चद गुर राज ॥
कब वयनन आनन मिलहि। नयन निरप्पहि राज ॥
छ० ॥ २१९ ॥

कविचन्द और गुरु राम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना।

भुजगी॥ मिले विप्र भट्ट अनूप मधाम। मनोहि दवान सवान[1] तकाम ॥
उभै सूर साई सुअग्गी विनान। चढे एक चोडोल नर एक जान ॥
छ० ॥ २२० ॥

महा प्रीति अग मन एक कीन। मिले हथ्थ हथ्थ सुतालीय दीन ॥
उभै ओपमा सूर चद सुचद। उभै पूजन राज राजन वंद ॥
छ० ॥ २२१ ॥

अनेक सुभती उभै जानि वान। उभै ब्रम्ह कित्ती रथ चाहुआन ॥
उभै आस पास महाजन चालैं। जिन देख देस महानौच हालैं ॥
छ० ॥ २२२ ॥

कहै जे समाचार दूर म होता। मिलै लोक सथ्थे तमासा निजोता ॥
* * * * * * * छ० ॥ २२३ ॥

कवित्त ॥ एक रथ्थ आरुहिय। सरद दिन इद मनोहर ॥
समुह राज दरबार। पलक उम्मह्यि सगोहर ॥
कलस बधि बधियन। सगुन सचारि विचारिय ॥
वढे कित्ति वल्ली[2] सुघट्टि। घट आउदि हारिय[3] ॥
उच्छह उतग छदह बयन। गयन गज्जि बज्जिय जलह ॥
दरबार राज धुधरि धरनि। सरन रप्पि दुग्गा वलह ॥
छ० ॥ २२४ ॥

(१) ए कु को सन्नानन
(२) मो-वेल्ली (३) मो भट आय निहारिय

संयोगिता की ओर से नरभेष धारण किए हुए पहरेदार स्त्रियों का राव लोगों को मार कर भगा देना।

दिष्षि दइय दरबार। पंग कुंअरि चर बारहि ॥
नारि भेष नर वस्त्र। सस्त्र लकरी कर धारहि ॥
मार मार उच्चार। बाल तरुनि सुगंध रस ॥
तुरिय नष्षि गज नष्षि। नष्षि रथ विरद वंदि जस ॥
बाजहि विसाल रन तूर रव। भवर भीर भामिनि भवन ॥
दिठि परत लरथ्थर पय परत[1]। नकरि जीव अग्गह गवन ॥
छं० ॥ २२५ ॥

षलक भग्गि गय सथ्थ। छंडि चौडोल लोग गय ॥
लाल लहरि लक्करिय। छाह सिर विप्र भट्ट भय ॥
बिन अलच्छि लच्छि नह। विहनि इच्छा भइ सुग्गह ॥
उग्गाह ग्राह मिल्लिग[2] पवारे[3]। रवरि राह ठिल्लित ठिल्लिग ॥
दासी दिवंग सम अच्छरिय। मिलित दरह दोउनि बुल्लिग ॥
छं० ॥ २२६ ॥

कविचन्द का ड्योढीवाली दासियों से बातें करना और कंचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना।

चंद्रायना ॥ मिले चंद गुरराज विराजत राज दर।
जहां पंगा प्रभानु कियो प्रथिराज बर ॥
तहां अपुब्ब रस रास विलासति सुंदरिय।
थित बिन नप दरबार जिनग बिन सुंदरिय ॥
छं० ॥ २२७ ॥

दूहा ॥ इम जंपै कविराज गुर। कंपिग पहन वार ॥
को गुर देव नरेस सों। दिसि गज्जनी पुकार ॥
छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिठि परतल रथ्थर पय परत। (२) ए. कृ. को.-पिल्लिग
(३) मो-दवरि, ए पवरि

सुनि सुनाइ आवन मिटि। दिष्षि कवि द न्नप थान ॥
जै जीवन तौ प च बुलि। दर बोले दरवान ॥

छ० ॥ २२९ ॥

वर किचिक पुछ्यह न्नपति। सुनि कलरव कवि वानि ॥
धाय चद दरसन कियौ। ध्रम्म परिग्गह ठानि ॥

छ० ॥ २३० ॥

सुनि कवि वानि प्रमान धन। कहि इछनी सेँ जाइ ॥
जु कछु कहौ वरदाय वर। ज्यौं हित दिसा पसाइ[1] ॥

छ० ॥ २३१ ॥

अन्दर से इस दासियों का आकर कबिचन्द से कहना कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें।

चद्रायना। ॥ तब कुटिल भौंह चख सोहति मोहति दासि दस।
कछुक हँसिय[2] पय लग्गिय ज पी अलीय[3] लसि ॥
तुम सरवग्य सुकबि राज गुर राज सम।
तुम तन समुह निरष्पि गये पति पाय हम ॥ छ० ॥ २३२ ॥

दोहा ॥ आसन असु दिय चरन रज। कच झारिय तन रेन ॥
सब्ब सिगार सु सुदरिय। आदर आभर नैंन ॥

॥ छ० ॥ २३३ ॥

दिट्ठौ सो दिट्ठौ नही। अनदिट्ठौ दिट्ठाय ॥
तुम सरवगिय कवि सुनिय। इह अचिज्ज किहि भाय ॥

छ० ॥ २३४ ॥

कवि अचिज्ज सब अप्प घर। तरह तरह वतिनाइ ॥
नैम्रिय धन तिन नाव दस। किह भूत गीताय ॥ छ० ॥ २३५ ॥
आदर दर दिन्नौ कविहि। आयस मग्यो दासि ॥
कहा पय पहु न्नपति सोँ। कहौ चद गुर भासि ॥

छ० ॥ २३६ ॥

(१) मो -पठाइ
(२) ए कृ को हसीय (३) ए कृ को अलिय

कवि चन्द का राजा को एक पत्र और राँदेरा देना।

कग्गर अप्पह राज कर। भुप जंपह इह वत्त ॥
गौरी रतौ तुअ धरनि। तूं गोरी रस रत्त ॥
छं० ॥ २३७ ॥

कवित्त ॥ नश्थि कग्ग षहुआन। धीर पुंडीरन निड्डर ॥
नहि सुमंत कयमास। राय गोयंद अषंडर ॥
नहि सुलोह लंगरिय। अत्तताई सुभंग भर[1] ॥
नहि पज्जन पंवार। सलष लष्षन बघ्घेल नर ॥
भोहांन भूप बंधुन बरन। सरन जाहि ढिल्लिय नयर ॥
घर नयर राय रावर समर। सक सहाब गोरी वयर ॥
छं० ॥ २३८ ॥

दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर राँदेरा कहना।

दूहा ॥ दासि संपत्तिय तिहि महल। जहं संजोगि नरिंद ॥
सनमुष सषी निरष्षयौ। मनो पृथौपुर इंद ॥ छं० ॥ २३९ ॥
क्रम क्रम दासिय संचरिय। दस दस दिसि दरबार ॥
पग मुकत उक्कत लिषिय। निप निय नयन निहारि ॥
छं० ॥ २४० ॥
अन्थ महल दासिय निरष। परषि पयंपन जोग ॥
उन्नित मुष रुष राज किय। नपति सपत्तौ लोग ॥
छं० ॥ २४१ ॥
इय कहि दासिय अप्पि कर। लिषि जु दियौ गुर चंद ॥
पहिली औली बंचियौ। भूमिय जाय नरिंद ॥
छं० ॥ २४२ ॥

कवि चन्द का पत्र।

* षग तिस जस तिस दान तिस। तिस लग्गै हरि नाम ॥

(१) मो.-मह सुम्भर

* यह दोहा मो० प्रति में नहीं है

अह निस ते मन वीर वर। तिस रष्यें सग्राम ॥
छ० ॥ २४३ ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आयौ असभ। सह सेन सकिल्लिय ॥
दै चादर आदर अनद। दिल्लिय दिसि मिल्लिय ॥
दस हजार वारूनि विसाल। दस लाष तुर गम ॥
तह अनेक भर सुभर। मीर गभीर अभ गम ॥
आवरन वत्त चहुआन सुनि। प्रान रष्षि प्रारभ करि ॥
सामत नही सोमत करि। जिन वीरहि ढिल्लिय सुधर ॥
छ० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज का पत्र फाड़ कर फेंक देना और शृंगार से वीर रस मे परिवर्तित हो जाना।

दूहा ॥ सुनि कग्गर फाट्यौ सुकर। धर रष्यै गुर भट्ट ॥
तरकि तोन सज्यौ न्रपति। जिम वदल्यौ रस नट्ट ॥
छ० ॥ २४५ ॥

कल किंचत किंचित भयौ। गुनियन मयन उढारि ॥
वर पचौं छिन छिन छुटति। लज्ज पच वढि पार ॥
छ० ॥ २४६ ॥

राजा का कुछ विमन होकर सयोगिता की ओर देखना और सयोगिता का पूछना कि यह क्यों।

प्रिय अप्रिय दिष्यौ वदन। किय जिय न्रप भौ सष्य ॥
इ पूछौ वर वरह तुहि। कहि सम दौरति कथ्य ॥छ०॥ २४७॥

राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आगया है।

अद्भुत इक दिष्यौ न्रपति। रयनि गलित [1]पिन प्रात ॥
सुरति एक सम्मुह रही। सा सुपन तर बात ॥
छ० ॥ २४८ ॥

(१) ए कु को बिन

संयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है।

कवित्त ॥ कहै पीय पोमिनिय। कंत धन धन्यौ तोन धन ॥
सुष सुमार आरोह। सार संसार मरन मन ॥
दिन दिनयर निसि चंद। रेनि दिन दिनयर आवै ॥
जंतु मंतु इह बरनि। श्रवन लग्गवि समुझावै ॥
अरधंग धरा अरधंग हुअ। अरि अंग रंग अरधंग करि[1] ॥
जिम हंस रहत तस हंसनिय। सर सुकै जिम पंक परि ॥
छं० ॥ २४९ ॥

राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट रूपक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है।

दूहा ॥ कहै राज सँजोगि सोँ। अद्भुत चरित सुनंत ॥
निय पाइन लग्गिय सुप्रिय। कहि कहि कंत सुमंत ॥
छं० ॥ २५० ॥

संयोगिता का हठ कर कहना कि अच्छा तो बतलाइए।

कहै राज संजोगि सुनि। सुकथह कथ्थ अकथ्थ ॥
श्रवन मंडि कनवज्ज निय। सा सुपनंतर अथ्थ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ अज्ज सुपन सुंदरिय। रंभ लग्गिय परि रंभह ॥
तहं तुअ संग सुकिय। तेज अच्छिय रवि गिम्मह ॥
तहं तुम मिलि गग्गरौ। गहहि करिवर कर जंपहि ॥
तहं अदिष्ट आरिष्ट। दुष्ट दानव तन चंपहि ॥
तहं तून हून नन अच्छरिय। हर हर हर सुर उप्पज्यौ ॥
जानै न देव दैवान मति। कहन्निग्गान कह निप्पज्यौ ॥
छं० ॥ २५२ ॥

(१) ए. कृ. को.- अरि अरधंग अरंग करि

राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना।

सुनि उट्ठिय सजोगि। वचन जै जै जपत जस॥
धनि सूरति चहुआन। राज सिगार बीर रस॥
इक्क मरन सुर नरा। मरन सिध साधक मुक्कै॥
मरन रहै जग नाम। चित्त रप्पत म्रत चुक्कै॥
अध अध करे अरियन दुअध। तू उधतदि अरध ग हौं॥
सामतन को सो मत करि। राजस अप्प पधारिहौं॥
छ० ॥ २५३ ॥

राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का वलिदान और दान पुण्य करवाना।

सुपनतर पुच्छनह। राजगुर कविगुर बुल्लिय॥
सो सुपनतर सुनवि। तेन सुप तिन प्रति षुल्लिय॥
सुवर हथ्थ दै मथ्थ। अभय पंजर पढि दिन्नौ॥
सहस कलस भरि पीर। अरथु रवि ससि को किन्नौ॥
दस वलि दिसान दस महिप हनि। मित अनत मित दान दिय॥
तिहि दिवस देव प्रथिराज दर। सभ सुभर भर महल किय॥
छ० ॥ २५४ ॥

दूहा ॥ आवस्यक भावी विगति। कहा महिप वध होइ॥
जो जतननि टारी टरै। नल[1] पडव सम कोइ॥
छ० ॥ २५५ ॥

पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुनकर पश्चात्ताप करना और मन्त्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा लाने का उपाय करो।

पद्धरी ॥ किय महल राज आरभ सभ। पद्धरी छद वन्नैति मभ॥

(१) मो भल।

धुक्किय निसानि हुक्किय जिकीव। दिसि दिसि रिसान धाए नकीव
छं० ॥ २५६ ॥

षोलिय सुषग्ग है गै पलान। रथ अरथ दिष्ट गुष्टिय गुमान ॥
पट नरम गरम जरि जिमित षान। जे लए दंडि सुरतान षान।
छं० ॥ २५७

आवध अरद्ध सिलहन सकोड़। जंपरिय किरन किरनाल होड़।
उच्छरिय मुच्छ बंकुरि कपोल। बिदिन बिरद्द उत्तंग बोल॥छं०॥२५८
छह रंग छक्क आषत्त दान। इल भग्गग्ग नंज वंवरि विपान ॥
लिषि भ्रित्त भ्रित्त कग्गर सुइष्ट। जोगिन जमाति जन मिलि गरिष्ट
छं० ॥ २५९ ॥

सनमंध प्रिथापति चिचकोट। बहु लज्ज बीस बासरति ओट ॥
पुछ्यौ प्रधानह हंकरि हकारि। कह करी प्रथापति जनु जुहार।
छं० ॥ २६० ॥

कामंध अंध बीसल कुलेन। अपराध कोटि कामिनि रसेन ॥
जित महल पुरष रस बस अरक्क। भुग्गवै भूप ते निज नरक्क ॥
छं० ॥ २६१ ॥

मो बर समान धरपति सुइष्ट। मो कहि न कवन डर कवन कष्ट
गोग्रहन धरनि ग्रह अतिथ राज। रष्षहि सरीर सुष[1] कवन काज
छं० ॥ २६२ ॥

अप अप्प दोष चित चिंति बीर। इहि लज्ज अज्ज छंडो सरीर ॥
धरनर नरिंद जोगिंद मंत। पति चिचकोट अरु प्रिथा कंत ॥
छं० ॥ २६३ ॥

उतर्यौ आय धर निगम बोध। मुहि दइन सुगध किन आय सोध
अब करिव कोइ जिहि तिहि उपाय। जिम चलै अप्प ग्रिह समर राइ
छं० ॥ २६४ ॥

रिस दिसर जान संजोगिबान। फिरि भग्गग्ग बोलि पिय सुनहु आ
महिलान मंत पुच्छै न कोइ ॥ हुं कहों नाथ ज्यों समझि होइ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुष।

सब चिया बुद्धि नीची गिनत। मानै न सच्च जो फुनि सुनति॥
ससार चिया बिन नाहिं होत। सजोगि सकित सिव माँहि जोत॥
छ० ॥ २९६ ॥
एह रन सस्त्र बहु भाति जानि। गुन अगुन अविधि विधि सबै ठानि॥
ग्रह चरित सबै जोतिग माहिं। चिय चरित करत कवि सुद्धि नाहिं॥
छ० ॥ २९७ ॥
अनादि रीति सुनि एह बात। तिन काज कहै हम बुद्धि घात॥
हम सुष्ष दुष्ष वटन समथ्थ। हम सुरग वास छडै न सथ्थ॥छ०॥२९८॥
हम भूष प्यास अग मैं देव। हम सर समान पति हस सेव॥
छ० ॥ २९९ ॥

संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना।

कवित्त ॥ अग रष्यि सजोगि। नाम सुभना सुभ लच्छन॥
रूप तेज अति तास। सकल काल ग्यान विचष्यिन'॥
आइसु मझ्झ महस। देषि द्रिग राजन उच्चिग॥
गहर लज्ज बर बान। नेम निज नाथ स दुच्चिय॥
इछै सुमझ्झ सजोगि तुम। आवन राज पिनक्कनह॥
सुनि सुभर सबै बैठन कहिग। सजोगी सपत्त ग्रह॥ छ० ॥ २७० ॥
दूहा॥ उठत राज मुह मुह हगनि। भरमडी सन सन्न॥
चिया रसन तृपतो नहीं। राज कोज नह मन्न॥ छ० ॥ २७१ ॥

राजा का संयोगिता से पूछना कि तुम मन खिन्न क्यों हो।

दिप्पिय राज संजोगि द्रिग। मन मलिन्न चलचित्त॥
कहै राज पगानि किम। तू तन मनै अहित्त॥ छ० ॥ २७२ ॥

संयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसीके लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है।

कहै सजोगिनि स्वामि तुम। सभा सु जपिय बत्त।

(१) ए कृ को सुलच्छिन।

सोइ कारन प्रभु संभर्‌यौ। सुहों पगि कहों सत्त ॥
॥ छं० २७३ ॥

संयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया।

कवित्त ॥ प्रथौ कंत आगमह। कंत मोंकलि प्रधान दिय ॥
सुभर अन्न वस्तर सुगंध। आदर अदब्ब किय ॥
ननद देउ सिंगार। हार उत्तंग दुति मुत्तिय ॥
विजै करत विजैपाल। तात कै तात लिए निय ॥
विस लेप[1] प्रीति अंतर निमय। भवन राज आनंद दिय ॥
गुरमंच तंच जिम प्रौढ तिय। पिय पियूष ज्यों रैनि पिय ॥
॥ छं० २७४ ॥

पानिग्रहन वर्णन।

चिय जु प्रीय उच्चरिय। चिय जु प्रिय बिन जिय[2] रष्यै ॥
अग्गि लोपि रव रवन। रवन बिन घटिन परष्यै ॥
पवन पंथ हाहंत। रहिन ग्राहत ग्रह तन्नै ॥
अंसु रष्षि तजि अंसु। हार सिंगारत जन्नै ॥
जुरि[3] चक्र चक्र बोलह अगनि। चरित चित्त सुज लोक चित्त ॥
अरधंग अंग संदेह नहि। सुहो मोहि पिय पंग पित ॥
छं० ॥ २७५ ॥

दूहा ॥ पिय बिन तनपंन अनंन धनं। भूषन वसन न रत्त ॥
जीवन बिन जीवन रषन। तो पति एह परत्त ॥
छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को आलिंगन करना।

* हँसि आलिंगन अंग दिय। जुरि लोयन पिय पीय ॥

(१) ए. द. को.-विषलेष। (२) ए. द. को.-तिय।
(३) ए. कृ. को.-सुरि।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

लव लावन्य समुद सर। समुध सुधा रस दीय॥
छं० ॥ २७७ ॥

आलिंगन समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ हँसि आलिंगन देत। उपजि आनद अपारह॥
कनक लता जनु उमडि। लपटि लग्गी सहकारह॥
नृप पयान सुनि कान। असु फिरि उअर समावत॥
मानो आगम मरमडि। विरह पावक बुझावत॥
चहुआन चलत सुजोगिता। पग आनि करि कै कहै॥
सदेस सास सभरि धनी। पलन प्रान पच्छै रहै॥
छं० ॥ २७८ ॥

पृथ्वीराज का इछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना।

दूहा ॥ अतर गति अतर मिलन। ए सुप बुद्धि न कोइ॥
कै जानै बिछुरन मिलन। कै सरवग्य जु होइ॥
छं० ॥ २७९ ॥

चिपति नयन बयनह चिपति। चिपति अलिंगन देह॥
रमन रमन्न विलास करि। फिरि दिय गठि अछेह[1]॥
छं० ॥ २८० ॥

इछिय इछिनि बछिनौ। सथ्थनि सुच्छ सुहाग॥
दस रवनी दस धटिक मिलि। जानि भवर कुसुमाग॥
छं० ॥ २८१ ॥

कवित्त ॥ सुनि इछिनि पम्मारि। लज्ज सागर मति नागर॥
सील लील लच्छिन वतीस। परसी रति आगर॥
लज्ज मेर दुति तन सुमेर। सत्त सीताहि समानन॥
अलप बानि नव रसति। जानि षट भाष प्रमाननि॥
जानै न मानि पट्टै विनय। अम्म रूप लच्छी सहज॥
मडिनि निवच्छ चहुआन कै। बदि काम लीनी गहज॥
छं० ॥ २८२ ॥

(१) ए कृ को गेठिय छेह।

दसर वन्नि दस घटति। फिरिग कुसमंग भवर जिम ॥
ग्रह ग्रहज्जि अलि मुक्कि। फिरिय कुंडली वाम इम ॥
नयन कंति फिरि देषि। चंद ओपम फिरि पाई ॥
कमल कोस ग्रह जुथ्थ। भँवर फिरि फिरि लग्गाई ॥
संभरे चित रावर समर। दइ दुबाह दुज्जन हरन ॥
जोगिंद राव जुग उप्परह। नर नरिंद करनी करन ॥
छं० ॥ २८३ ॥

पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगम बोध को जाना।

दूहा ॥ चल्यौ राज संबोधि तिय। लिय बहु भांति वसत्त ॥
प्रीति सहित अंतर उमग। करन सु सीतल गत्त ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ कुसुम पट्ट सिर पग्ग। कुसुम रस गंध भवर सम ॥
श्रवन साष दोउ लष्ष। द्रथ्थ बहु मोरि[1] जोरि जम ॥
सुरत रत्त अंतरह। रत्त तन बिरत मोहि मनि ॥
फुरत हथ्थ आतुरत। धुरत नीसान धुक्कि सुनि ॥
मन मुरित मोह सेना सुरत। रुरत रात[2] सामंत सथ ॥
न्रिप समर सीह राजन मिलन। निगम बोध भिट्टन सुतिथ[3] ॥
छं० ॥ २८५ ॥

दूहा ॥ करिय मतौ मँडलौ महल। छँडि चावँड वर बंद ॥
बगरि देव दरस्यौ नृपति। सुमन मानि आनंद ॥
छं० ॥ २८६ ॥

आनंदेअत भर सुभर। दिन दुलंभ न्रिप काज ॥
सुबर बंध बंध्यौ न्रपति। साहि गह्यौ जिहि साज ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-मोहि।
(२) मो.-रास (३) ए. कृ. को.-कथ

तब न्रप उत्तर अप्प दिय। समर सपत्तौ ग्रेह॥
तास मदन विधि अप करौ। होय मविस्यति[1] तेह॥
छ० ॥ २८८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामतमंडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुचना।

भुजगी ॥ चढ्यो भेटन राचि आवाज बज्जी। दिपौ रत्ति निद्दौ रही ताहि लज्जी।
चव मास पट्ट छह रत्ति गज्जी। क्रम मोह छडे ग्रिह काम लज्जी॥
छ० ॥ २८९ ॥

फिरै कुडली डोरि निस्सान तज्जी। मनों पातुर चातुर नृत्त सज्जी॥
मय मोर मुत्ती हय हीर मडे। मनो सेत नेत सुमेर प्रचडे॥
छ० ॥ २९० ॥

चढ्यौ चाइ चहुआन दै वाध पानी। भई जैत आजैत आकास वानी॥
रवौ जोग बैठौ अकास सनीर। दिस वाम ईसान सद्यौ[2] करीर॥
छ० ॥ २९१ ॥

फल फूल पन्न सुवन उडाये। मनी वार वार सुवाह चढाये॥
सबै बोलि सामत सामत मन्ने। भई अग्गि या चहून सब्ब जन्ने॥
छ० ॥ २९२ ॥

चढे सथ्थ सामत सब्बै समथ्थ। बजेह नीसान सद्दे अकथ्थ॥
चढ़े सेन चल्ले निगबोध मग्ग। गए पासि सिध चर चारि अग्ग॥
छ० ॥ २९३ ॥

चढ्यौ रावल्ल समुह मगि वाजी। चढी सब्ब सेना भर नामसाजी॥
मिले समुप सेन दो राज राज। दिठे[3] दिट्ठ दिट्ठी रसाल विराज॥
छ० ॥ २९४ ॥

मिले प्रेम पूरन्न सामद्धि राज। बजे अत्ति उच्छाह सुच्छाह बाज॥
भए चित्त आनद मानद दून। बढी प्रेम बान कुसल्ल सजन॥
छ० ॥ २९५ ॥

मिले जाय बैठे निगबोध थान। चित दोय रजै प्रिय प्रेम पान॥

(१) ए कृ को मविष्यति (२) मो चद्यौ (३) ए कृ को ठिले

घने आदरं सादरं सहि बैठै। मनों काम देवं दोज रूप पैठै॥
छं॥ २९९॥

एक दूसरे की कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावल जी से अपना सब हाल कहना।

दुहा॥ कुसल तन पुच्छिय नृपति। हय गय भूमि भरान॥
ता पच्छै सुत सुति सुपरि। सुष दुष पुच्छि परान॥
छं॥ २९७॥

चौ अग्गानी सट्टि बर। पंगानी प्रभु आनि॥
रहे सूर सामंत ते। नव जग्गहि पहिचान॥
छं॥ २९८॥

सा संषेपक उच्चरिय। विहुन विरद्दह तोल॥
जग्गराज जयचन्द ग्रह। पुच्छि करै तिहि बोल॥
छं०॥ २९९॥

रावल जी का कहना कि स्त्री संभोग से भला कोई भी संतुष्ट हुआ है।

कवित्त॥ * सोम वंस राजिंद। नाम ससि वंध विचक्षन॥
घर घर प्रति इक रूप। रूप लावन्य सुलच्छन॥
दस हजार तिय परनि। करेहु अग्गैर महल्लं॥
एकादस हज्जार। गए संवच्छर चल्लं॥
चय कोडि लाष पचास हुअ। पुच तास बलवँत सरस॥
रावल पयंप प्रथिराज सम। ते पन धपिय न काम रस॥
छं०॥ ३००॥

कविचन्द का नवीन सामंतों के नाम कहना और रावल-जी का प्रत्येक से सादर मिलना।

दूहा॥ सामंतनि भेट्यो समर। प्रति प्रति आदर दीन॥
नाम कहे कविचंद नै। छंद अनुक्रम कीन॥ छं०॥ ३०१॥

* यह कवित्त मो. प्रति मे नहीं है।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-19

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju

CANTOS LXVI *Continued*

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

पर्व्व ६६

PRINTED BY THAKUR DAS MANAGER AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1911

मूल्य १।)] Issued 15th October 1911 [*Price Rs 1/4/*

सूचीपत्र ।

(६६) बड़ी लड़ाई प्रस्ताव (अर्पण)... ... ... २१५३ से २२८०
रासोसार ... . ३५९ „ ३९

नवीन सामतों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय ।

भुजगी ॥ अपें अब्बुआ राव भेयौ नरिंद । सुतीधार राजा सुसज्जी समुद्द ॥
मिल्यौ बग्गरी देव पौंची प्रसंग । गुन दान मान जयो जास अंग ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

लगे पाय कुम्मार दोनों सलीह । लये लाय कंठ सनंमान जीह ॥
मिले सिंघ पामार साधार भार । कमद्धज्ज आरज्ज सारज्ज वार ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

तबै आय परिहार सिंघ महन्न । सम पीप वंध सुभेयौ सहन्न ॥
तबै आइयै ताम आजान बाहु । अजम्मेर हुनौ समत्तौ उछाह ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

लगौ रावल पाय सा चाहुआन । सम प्रीति रत्तौ सुमत्तौ द्रिसान
मिल्यौ चंद चंडी विरद्द सुवाच । बल बुद्धि पग्ग सुअग्ग साचं ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अवद्दूत राजंग गोरष्य राय । कलंक सुराय सु अंग उहाय ॥
सुअ जन्ह हत्थो सुमत्या कलेव । धरा ध्रम्म रूप कलौ देव एव ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

गुर राजजोगिंद इंद सुमास । अविधात मंत्र सन सद्धितास ॥
अठ सठ्ठिनीरष्य मो अज्ज पाया । मुप देपतें चिंत कोट सुराया
छं० ॥ ३०७ ॥

कवीताम आभासि जोगिंद राय । मिले पुच्छि वत्त कुसल्ल ग्रहायं
मिलेताम मारुहन्न सो बीर बीर । धरै स्वामि ध्रम्म सदा पग्ग धीर
छं० ॥ ३०८ ॥

लगे ईसर दास चहुआन पायं । नर नाह कन्ह सुअंसचभायं ॥
पर्यो राव परताप राय पुमान । बर लज्ज दाहिम्म कैमास मानं ।
छं० ॥ ३०९ ॥

सुअ भिटि गहिलोत गोयंद राज । समंतोल सामंत सौंह सु ताज ।
जय ग्राम देव सुजुद्ध जुधान । बिय भूप भोर सु जोर बियान ॥
छं० ॥ ३१० ॥

(१) मो -प्रासाय

बियं तेज मुत्ती सु जोति क्रिसानं। इमं तेज अंगं सुरंगं दिसा
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक वानै सदा एक लाजं॥
छं० ॥ ३११ ॥
दिठे दिट्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो भेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ भ्रमाथा
छं० ॥ ३१२ ॥
बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों जामनी राज सोमेस गेलं
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती
छं० ॥ ३१३ ॥
दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ पीगि पांवार बोल्यौ बिच
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभा
छं० ॥ ३१४ ॥
तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुग्ग भियै सब्ब सामंत लाः
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। विना हथ्थ राजंन की हथ्थ षंडं
छं० ॥ ३१५ ॥
अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लम्भों इको रन्न अं
सबै कूर कूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटं
छं० ॥ ३१६ ॥
बढी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेलं
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रजे राजरू
छं० ॥ ३१७ ॥
बढी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंग
तबै बद्धि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुग्गान आसन्न हो
छं० ॥ ३१८ ॥
सषंसी कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
इमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं।
छं० ॥ ३१९ ॥
समं जाम देवं तनं सब्ब काजं। सबै[२] अन्नइ राज जहों सु जाज

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली।
(२) ए. क. को.-सजै।

घन तर्क अवतर्क करि राजवेह । मनो वेरि पुम्मान चावड एह ॥
छ० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय बिचारो।

कवित्त ॥ देषि चरित चहुआन । चित्त वत्तह विचारिय ॥
भय भवस्य न्निम्मान । कन्न ज पिय उच्चारिय ॥
घटै बढै सग्रहै । जीव सापी सुष दुष्यह ॥
नव जम्मह चिचग । चिच कोटह वंध रष्यह ॥
सम्माव मरन गज मत्त जिम । पै सकर बधी सरर ॥
आमत मत सामत हौ । कौन मत रष्यो सुधर[1] ॥ छ० ॥ ३२१ ॥
चहुआना वर बस । ब्रह्मवेदी जगि जन्ना ॥
ता राजन क्रत काज । सित्त सामत उपन्ना ॥
पच सूर इक अग्ग । जथ्थ कथ्था कुल जाए ॥
दइय क्रम्म करि जोग । भोग जोगनिपुर आए ॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिया । वर सु केलि रावर समर ॥
सगपन सु प्रीति वासुर दुदस[2] । निगम बोध उत्तरिय धर ॥
छ० ॥ ३२२ ॥
बोलि मत सामत । समर ज पहु न समर वर ॥
अग्गै ही चितरग । बध जस बधि अप्प घर ॥
ए अभग राजग । मरन जानै तिन मान ॥
इन कालकनन ग्रेह । बीय कालकन मान ॥
सुम्मर सुमहन रमह सुभर । वर बीरग विहारि घन ॥
जोगिद राज जग हथ्थ वर । वर विढार विरुम्माय रन ॥
छ० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद । पूरन प्रेम भर ॥
अति अनन्द मन चद । नेह उच्छग देह वर ॥

(१) मो कौन मत रषहु सुधर। (२) मो हुदस

मिलिय सुभर उम्भय नरिंद। पित नाम जाति तव ॥
कुसल बत्त पढि तत्त। हित्त अभित्त चित्त सब ॥
बैठे जुपंच सत्तह घटिय। लै रावर संमुह चढिग ॥
आए सुग्रेह नद्द त नद्द। अति उच्छव सुच्छव बज्जिग ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पृथ्वीराज और रावल जी का संयोगिता के महलों में बैठना रावलजी का सरदारों सहित भोजन करना।

बाधा ॥ बैठे आइय ग्रेह पँगानी। अत संबोधि रुचिय रस बानी ॥
धवल उंच साला सम रुच्चं। अति सुष्मान[3] मान थल सुच्चं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

आरोहित आसनयं सारं। अति गति रूप ब्रन्न तन पारं ॥
जरा जरान अति अंग उभारं। देखत चित्त चढे के बारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

जे जे अस्थि पंग ग्रह उत्तं। देषन चातुर चित्त अभूतं ॥
ग्रिह साला सिंगारि अनूपं। समताहीन इंद्र पुर रूपं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

तहां आसन्न उतंग विराजं। जे मानिक्क विवह मनि भ्राजं ॥
तहां रावल सम रोज अरोहं। मानहु इंद्र उदे उभ सोहं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

बोले सुभट सब्ब नर तथ्थं। जे भर अथ्थ जुरावल सथ्थं ॥
भुष भुष किद्ध प्रसंस विचारं। जे भर सथ्थ सुरावल सारं ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

विवह सु सुद्ध वास रुचि रासं। मुक्कि गंध वर धूम सुवासं ॥
साष जाति अत्ति हित्त सुभावं। विवह सुगंध प्रसंसन पावं ॥
छं० ॥ ३३० ॥

कुसुम सुवास जाति अत्ति भत्ती। रूप अनूपम गुंथि सुगत्ती ॥

(३) ए. कृ. को -सुषासन

कासमीर मृगजा घनसार । करदम जच्छ दच्छ तातार ॥
छ० ॥ ३३१ ॥
विधि विधि भति सुरावल रचै । पूजा देव समान सुसचै ॥
अति आनन्द सेव' सह सार । तव सुअ पग आय परिहार ॥
छ० ॥ ३३२ ॥
भोजन कजि अतर आभास । साला पहु स पन्न सहास ॥
साल असन अनुपम रूव । आसन वैठि नेह पहु दूव ॥
छं० ॥ ३३३ ॥
वैठे सुभट सध्य सम थान । आभासित भोजन विधि वान ॥
छ० ॥ ३३४ ॥

भोजन के समय किन किन पशु पक्षियों को रखना उचित है।

दूहा ॥ * कुर्कट निकुल करोंच कपि । हिरन हस सुक मोर ॥
असन करत न्नप रप्पि ढिग । सूचक जहर चकोर ॥
छ० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ हस होत गति भग । मोर कटु सवद उचारै ॥
रोवत क्रौच कुरग । सुकपि छडत आहारै ॥
सूआ वमन करत । निकुल कुर्कट मिचाई ॥
ऐसे चरित करत । जानि आगम दिनाई ॥
चकोर परस्पर हित रहित । कहत चद पारध्य लहि ॥
तिहि काज आनि रप्पत इनहि । भूपत भोजनसाल महि ॥
छ० ॥ ३३६ ॥

षट रस व्यंजनों का ब्योरा।

दुविध अन्न फल त्रिविध । साक पचम सुहार ॥
जुग विधि गोरस गुनित । ईष गति इक्क विचार ॥
लवन तेज साहिग । अठ्ठ दस भोजन भत्त ॥

(१) मो देव * यह दोहा मो प्रति में नहीं है

ता अनंत गति रचे। गनिक को गनै कवित्तं ॥
संजोगि एक अनेक सचि। षट रस षटु विधि लहिग सुचि ॥
सारदा मंति समुझै भलै। जुपहु आहारै अन्न रुचि ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

साटक ॥ त्रिविध मुदित मन्नं भृंग घंटं सुसीषं।
जड़ दल पल पुहपं पल्लवं पंच साकं ॥
जल थल नभ मेतत् सास मेनं त्रिधापि।
षट रस अत जुतं षटू त्रिधा भक्ष[1] भोज्यं ॥ छं० ३३८ ॥

भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कवि चन्द और गुरु राम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें।

त्रिभंगी ॥ भोजन कीन रावल नरिंद। मन्नेव रुचि आनंद इंद ॥
आहार जुत्त कर्पूर पन्न। सुर वास रोहि सो सोभि तन्न ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

कसमीर अंग रचै सुरंग। गिय गान तर्क मानि सुचंग ॥
रस रास हास बढ्यौ अपार। गुन गुंथि नेह बल्ली सुसार ॥
छं० ॥ ३४० ॥

अव चक्क चक्ककरि सिंघ ताम। अग्गियां मंगि सासुर इथाम ॥
चढ़ि चल्यौ अप्प पति चित्त कोट। सम चढ़े सब्ब सामंत जोट ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

संप्रेरि सब्ब रावर सुताम। सामंत सपत्ते निज्ज धाम ॥
संवित्त अद्ध निसि घटी दून। सुष सेन किन्न रस रत्ति जून ॥
छं० । ३४२ ॥

उग्गौ सु सूर बज्जे घर्यार। सम देव संष गज्जे सर्यार ॥
जग्गे वितास संजोगि राज। विचार मंत सामंत काज ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-भष्ष

ग्रिह जाइ अप्प जौ ग्रिथा कत। सुहरै काज अप्पा सुसत ॥
थपि मत बोलि सामत तव। आये सुनंत सोतव्व सव्व ॥
छ० ॥ ३४४ ॥

बुझ्झैव मत सव्वा समूर। विधि कही राज कज्जा सजूर ॥
सम चव्यौ ताम दिल्लिय नरेस। गौ सिघ ताम चिंता सुमेस।
छ० ॥ ३४५ ॥

मिलि उभै राज आनंद अंग। वरनेह देह रज्यौ सुरंग।
मिलि बैठि तत्त सम सथ्थथान। अन्योन्य रंग वज्यौ रसान ॥
छ० ॥ ३४६ ॥

पल्ल बीह धट्टि उप्पर दिनेश। दिन आय रुद्र मौ रत्त रेस॥
गुर राम आय वरदाय ताम। पट्ठए काज प गजा जाम ॥
छ० ॥ ३४७ ॥

आसिष्प उभै दिय राज हित्त। बैठे व कह्यौ न्रप कारन वत्त ॥
उट्ठेव बैठि न्रिप अन्य थान। करि मत कथ्थ रावर समान॥
छ० ॥ ३४८ ॥

पट्ठए चंद गुर राम ताम। जामानि जहँ गुज्जर सुराम ॥
पौंची प्रसंग पम्मार जैत। विधि कही अव्व[1] कारन सुभैत ॥
छ० ॥ ३४९ ॥

सो करौ सबै वर विधि उपाइ। जिम चलै अप्प ग्रह समर राइ॥
सो चलै जथ्थ[2] रावर नरिंद। लग्गी सु तलव कारज्ज भिंद ॥
छ० ॥ ३५० ॥

दूसरे दिन प्रात काल से दरबार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की बिदाई की तैयारी करना।

कवित्त ॥ प्रथम जगिय घरियार। सेष रजनी परगट्टिय ॥
फुनि जग्गिय तमचर। प्रसिद्ध करि सद्द उघट्टिय ॥
पूरव दिसि त्रिय जगिय। सुकुर जिम आनन मंजिय ॥
रवि कर जग्गिय अरुन। वदन रंगन जग रंगिय[3] ॥

(१) ए कृ को अव्व (२) ए कृ को सथ्थ
(३) ए कृ को वदन रंग निज गुर गिय।

दुज कमल जगिय किन बचन अलि। जगिय जगत प्रथिराज ज
बरदाय चंद जग्गिय धरम। मारतंड मंडल दरसि ॥छं०॥ ३५
हा ॥ सब सामंत सुबोल लिय। और चंद बरदाय ॥
सुकल काज मन्नेव सब। जो प्रिया कंत घर जाय।
छं० ॥ ३५२ ॥

सोचि समग्गि सामंत सब। मिलि आए सब थान ॥
स्वामि अग्ग हित चिंत कै। काम करन सु प्रमान ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

वित्त ॥ ता सम दम सामंत। राज संजोगि सपन्नौ ॥
हय हथ्थी सृंगारि। हेम नग मुत्ति सु दिन्नौ ॥
प्रिथो कंत घर जाहु। हमहि गोरी घर लग्गिय ॥
को जाने किंहोय। कोय सज्जिय को भग्गिय ॥
संचरो जाय संभरि धरा। अरु संभरि अव धारयौ ॥
सब जंत रीति जग्गन मरन। समर राय विचारियौ ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

रावल जी का चित्रकोट जाने से नाहीं करना।

डलिया। जंत रीति जग्गन मरन। चाय जु सुन्यौ नरिंद ॥
तुमहो जान प्रमान बर। बर दंपति सुष बंद ॥
बर दंपति सुष बंद। रत्त सहजंत सुजानं ॥
मरन मोह मोहन्न। मोह मल्लं रस ठानं ॥
अंक निद्धि चित बंध। उलजि निधि मुक्की अथ्थह ॥
उत्त ढुंढ बंस बर चतुर। मरम जानै सब जतंह ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

पृथ्वीराज का पुनः विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए परन्तु रावल जी का पुरुष हो कर उतार देना।

चिचंगी चितवनि परषि। निरषि बदन कुंमिलान ॥
अै अदब्ब हम रष्षही। इत्ती बेर प्रयान ॥

इत्ती वेर प्रधान। कहत तुम लज्जा नही ॥
कौन काल जीवन्न। काज जस सचौ आही ॥
तुम चित छंडि हम घर चलहि। इह अवथ पचग ॥
जुद्ध जुरो चिचग तौ। अग चौहान नरिंद ॥
छ० ॥ ३५६ ॥

कवित्त ॥ समुद विहि सभरिय। राज अग्गिय अहुट्ट पति ॥
अत दान कालिंद थान। राजग पान गति ॥
देस काल पातर पवित्र। सभरि सभारिय ॥
अत दान सकलपि। सोम कन्या अवधारिय ॥
मुरप मुपग तौ अग सौ। प्रान देह दावन सुवन ॥
प्रिथिराज सथ्थ सामत सौ। धुनि निसान मच्चौ सुदिन ॥
छ० ॥ ३५७ ॥

दूहा ॥ धन चोरी मुक्यौ सु धन। सही न पुट्टि अवाज ॥
मोहि चलतह चितवन। घर चित्र कोट सुलाज ॥
छ० ॥ ३५८ ॥

कवित्त ॥ विभौ जाय जौ ध्रम्म। कम्म जौ जाइ भजत हरि ॥
मान जाइ सम प्रान। ग्यान जौ जोइ तत्त जरि ॥
भ्रत्य जाइ विन लज्जा। हेत सो जाय कपट्टह ॥
चित्त जाय पर नार। नारि जौ जाइ लपटह ॥
रस जाहु जाहि अपजस लगै। वस जाय जौ जुद्ध मुप ॥
प्रति प्रथिराज रावर कहै। इनहि जत लग्गै न दुप ॥
छ० ॥ ३५९ ॥

चदानौ आयास। वास अगुटी रद्दानौ ॥
द्वै नयना द्वै सूर। तेज अस्विनि ना सानौ ॥
जीह वरुन जल स्वाद। कर्न मडल वायालय ॥
बाहु इन्द्र आसरै। ब्रम्ह इद्री दासालय ॥
सब देव विसन अग्यार मै। आन अनदे तौ फिरै ॥
चिचग राय रावर चवै। प्राहुना भग्गा भिरै ॥
छ० ॥ ३६० ॥

मो[1] भग्गे संग्राम। मोहि भग्गै भग्गै अरि॥
वसों साज रन सूर। सुमत मुक्कै कलहं करि॥
तत्त पांच पाहुना। भगत चुक्कियै न कित्ती॥
नव ग्रह ग्रह फिरि ग्रेह। मुक्कि जीवन ग्रह जित्ती॥
सगपन सुनेह सनमंध नहि। लज्ज अग्ग धन चुक्कियै॥
चिचंग राय रावर चवै। तत्त पंथ नहि मुक्कियै॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारे पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य की रक्षा कीजीए।

तुम पाहुना परदीप। राज पर कै का झुंझ्यौ॥
चहुआना कुल पुज्ज। राज दुज्ज की बर पुज्जौ॥
तुम पुट्ठे गिरि जंग। द्रुग्ग दाहग गंभीरा॥
गुज्जर वै माल वै। हम भज्जौ हम्मीरा॥
फल फूल पान अंबर सुबर। मुकुट बंध चामर सरज॥
सामंत सूर जो राज घर[2]। एक सुदिन मानै बरस॥
छं० ॥ ३६२ ॥

एक बरष सामंत। जानि गोरिय भिरै भर॥
एक बरष सामंत। बंस सिसपाल पल्ह जर॥
एक बरष सामंत। बीर अब्बू गढ़ छंद्यौ॥
एक बरष सामंत। जुद्ध भोरा भर मंद्यौ॥
दिन इक सोय सामंत को। पंग अग्ग दरहंत जिय॥
साधुम्म बाल बोल्यौ तहा। मरन छंडि महिला रजिय॥
छं० ॥ ३६३ ॥

रावल जी का उत्तर देना कि मैं खुरतान गो मिलूंगा।

मो भुंजानी ढाल। माल कमला रुद्रानी॥

(१) ए.-सो (२) ए. कृ. को.-रा वरह, मो

मो नाग सुपी सिलार। ब्रह्म मोगर सिद्धानी॥
हो सिंगी रा अवधूत। जोग बच्छो जुद्धानी॥
हो आहुठाम भ्रामि। स्वामि कहि जो सुरतानी॥
सामंत मंत केते कहो। केते घर गोरी वहन॥
हों कालक राय कप्पन विरद। महन रभ चाहो कहन॥
छ० ॥ ३६४ ॥

महन रभ आरंभ। छत्र जैजै तप वारिय॥
महन रभ आरंभ। राय जद्दो पग भारिय॥
महन रभ आरंभ। साहि वध्यौ गुज्जर वै॥
महन रभ आरंभ। पग्ग भट्ठी करि हैवै॥
कालक राय दुज्जन दवन। निगम सोह वंधे रवेन॥
भग्गौ सुवध संग्राम कौ। जो चित्रंगि कोनो गवेन॥
छ० ॥ ३६५ ॥

रावल जी को कुपित देख कर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड़ कर कहना कि जो आप कहें सो करु।

सुनि सुवत्त चहुआन। नयन सम सिंघ निरप्पिय॥
अकुटि वक्क द्रगस्त। करन सुप वरन सु दप्पिय॥
अक तेज असहेज। ग्रीपम मध्यान भान सम॥
गहिय पाय प्रथिराज। कहहु सोइ मत मन्न तुम॥
जपै सु सिंघ चहुआन सुनि। हम अयान मत न कहै॥
पुच्छौ सुमंत सामंत सब। जिन बोला घर उग्रहै॥
छ० ॥ ३६६ ॥

कहै राज प्रथिराज। सुनौ पति कोट चित्त तुम॥
तुम वड्ढे वड्ढाय। सब्ब राजन्न देस जुम[1]॥
तुम जुगिंद जग जित्त। तुमह हम पुच्छि प्रीत गुन॥
मति अथाह जुध राह। छल्ल्य सब नीति मंत मन॥
तुम वत्त मत्त कुन उचरै[2]। तुम उप्पर हम कोहि तुअ॥

(१) मो सब सामंत है तुम, (२) ए कु को तुम सत्त मत्त कों नुच्चारै

उच्चरौ एक बत्तिय तुमै। सो हम मानै मन्न धुअ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तो किये सो किये परन्तु चामंडराय को बेड़ी क्यों भरी।

क्यों ग्रहियौ दाहिमौ। राज गंजन का[1]गज्यौ॥
पातिसाह परबंध। ताहि भर मह कां भज्यौ॥
मान हीन क्यों कर्‌यौ। तुच्छ करि कांइ दिपायौ॥
भिरि भारथ सम पथ्थ। नाहि पुरपत्त गमायौ॥
प्रथिराज काज साधन समर। गय[2] धट संमुह टिल्लिय॥
चामंड राय दाहर तनौ। तिहि पग लोह न मिल्लिय॥
छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरा सर्व श्रेष्ठ हाथी मार डाला।

इसौ हार सिंगार। जिसौ ऐरावति इंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ लिष्मी गयंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ गज ग्राह स्याम घन॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ सुप्रति करि नंगन॥
कुवलया पीस जनु कंस कौ। बरन सोभ गनपति बनिय॥
चिचंग अग्ग चहुआन कहि। सो दाहिमै किम हनिय॥
छं० ॥ ३६९ ॥

हा॥ संभरिवै रजबट रहन। पनि रावल इह कथ्थ॥
सिंधुर भाम उलालि रिन। गय नंगन भारथ्थ॥छं०॥ ३७० ॥

रावल जी का कहना कि चामंड राय को छोड़ दो।

सिंघ कहै प्रथिराज सुन। एक मत्त बर सत्त॥

(१) ए. कृ. को.-क्यों। (२) ए. कृ. को.-गज।

दाहिमौ छडौ न्रपति। एह मत्त मुझरत्त[1] ॥
छ० ॥ ३७१ ॥

कवित्त ॥ महन रभ आरंभ। राज रावल रा हिंदू ॥
सत्त मत्त वर बैठि। जवन जोगिन ग्रह जिंदू ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी वड गुज्जर ॥
जादो रा रघुवंस। पार पुंडीरति पब्बर ॥
रट्ठौर पवार सुरस्थलिय[2]। ब्रह्म चालुक्क जगल भरा ॥
चामंड राय कट्ठौ न्रपति। जो किवार संभरि धरा ॥
छ० ॥ ३७२ ॥

महन रभ आरंभ। सांई सामंत विचारौ ॥
तौ छडौ चामंड। ढिल्लौ मंडल उच्चारौ ॥
समर चलत रब्बियै। समर वधियै समर वर ॥
सुवर सूर गोरी नरिंद। दह गुन्न[3] सज्जि दल्ल ॥
कलहत केलि लग्गिय विषम। हैवै सिंधु समुत्तरौ ॥
मंडियै जुद्ध सुरतान सौं। सुगति मग्ग पुल्लहि दरौ ॥
छ० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज का चामंड को छोड देने पर राजी होना।

दूहा ॥ छडन कहि चामंड रा। जुग जोगिंद सुदेस ॥
धर रब्बन जो तोहि न्रप। करि सामंत नरेस ॥
छ० ॥ ३७४ ॥

पगी पाय[4] सुरग जग। सामंता सत भाव ॥
जुद्ध निवध्यौ साहि सौं। छडो चामंड राइ ॥छ० ॥ ३७५ ॥

चामंड की बेडी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वयं चामंड राय के घर जाना।

कवित्त ॥ वभन वाहौ वच्छौ। ठेलि ठट्ठौ पर जारिय ॥
जिहि मुगल मैंचात। मारि मोहिल उज्जारिय

(१) मो मुझ परत। (२) ए कृ को सुरस्थलिय। (३) मो दहगुनौ।
(४) ए कृ को पाग

जिहि केहरि कंठेरि। तारि कथौ तत्तारिय ॥
जिहि राया रघुबंस। आय संभर संभारिय ॥
इंद्रपथ्थ सुपंथह कारनै। बाहर बीर बिचारियै ॥
इहि बार बेरि कहुन नपति। राजन पोरि पधारियै ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

दूहा ॥ मन्निय राजन सिष्ष सब। संबोधिय सब नाम ॥
आय परंतै अबसरह। पुरषहि सिझहै काम ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

इक सुरतान अबाज सुनि। बिय राजन ग्रह आय ॥
द्वै आनंद बधाइयां। है घर चामंड राइ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

चामंड राय की माता की प्रशंसा।

सीला संगर मात तुहि। तिहनौ धीर पियाइ ॥
सिंघनि सिंघ सु जाइयौ। दंगे दाहर राइ ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

राजा का कविचंद और गुरु राम को चामंड के पास भेजना

तब बिचार नृप संचुकिय। पठए सब तिहि ठाय ॥
आप राज फुरमान दिय। कहौ लोह सुपाइ ॥
छं० ॥ ३८० ॥

गये चंद सामंत तहं। जहं चामंड वर बीर ॥
देष्यौ देव समान तहं। सूर सत्त रन धीर ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

चामंड राय का कहना कि इस समय मेरी बेड़ी उतारने का क्या प्रयोजन।

ए सम राजन राज कौ। राज काज तुम जानि ॥
लाज उरै धरि रष्षना। कहि संजोगि पगानि ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

जाहु सबे सामंत हौ। कहौ न्रपति प्रथिराज ॥
ता दिन मुक्यौ लोह पग। अब मोसो कुन काज ॥
छं० ॥३८३॥

कविचन्द का चामडराय को समझाना।

कवित्त ॥ दाहिमा को फेरि। दियौ उत्तर कविचंद ॥
सकल सूर सामंत। सुनत चिंचग नरिंद ॥
नीसरनौ असमान। तुहिज कालौ हर वेहर ॥
तू पाताल कुदाल। हथ्थ सत्तौ ना लेयर ॥
दीपक पतंग जिम तुट्टि के। सम रँगनमे परन भय ॥
चामंड राय तिहि तुच्छ पग। लोह धसि चहुआन लय ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ लाज राज निकेसन्न धन। अप्पा नैन दुराइ ॥
सामंता बर हुकम करि। कट्टौ लोहनि पाइ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

औलौ रब्बिन आलि करि। बड्डे बोलन बोलि ॥
ते रन जगो बज्जिहै। ढोल्ली हद्दे ढोल ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कवित ॥ जे रन जोग जुसद्द। ढोल बज्जै ढिल्लिय धर ॥
जस औजस तन मुक्कि। जोगि जूह स जोगि बर ॥
तनु जानै तिन मान। सूर अवसर कि मुक्कै ॥
सूर कित्ति ग्रहि जाय। सुवर अवसर क्यों चुक्कै ॥
चामंड राय दाहरतनौ। जुग्ग जात तन मंडियै ॥
तो भुज्ज अज्ज जोगिनि नयर। रोस छिमा छिम पंडियै ॥
छं० ॥३८७॥

दूहा ॥ से वेरि पग समुहौ। से राजन पग लग्गि ॥
से ठट्ठे ठट्ठाइया। जानि उन्हइया अग्गि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ भट्टी अग्गि अबुझ्झ। ठाढि भग्गी सुरतानी ॥
तरुन तप्प गोरी नरिंद। हेवरन विप्र चढानी ॥

चामंडारै भाग। समर रावर ग्रह आइय ॥
जंपि बीर प्रथिराज। दई सुरतान बधाइय ॥
लम्भ चय लम्भ दाहिम्म करह। मुगति भग्ग रावर दरसि ॥
सुरतान जुद्ध चहुआन रिन। दैन बीर चाह्यौ उलसि ॥
छं० ॥३८९ ॥

दूहा ॥ पांमारां पुंडीरियां। कूरंभा जद्दूनि ॥
गुज्जरिया दाहिम्मियां। घर हस लग्गी दोनि ॥ छं० ॥ ३९० ॥

बित्त ॥ जिहि जद्दों जामानि। राज लग्यौ कूरंभां ॥
वीची राव प्रसंग। देव बग्गरी दुरग्गां ॥
गुज्जर रामह देव। जैत साहिब अव्वूरा ॥
होइ अबारी होस। क्यों सुभग्गौ बंबूरा ॥
मुख जीह लोल बोलै बयन। राजन काज वरहिया ॥
पावै न पीर पंजर तनी। मन पथ्थै भट्टह बिया ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

दूहा ॥ तब तरिवारन बंटनो। इह बंटनी न देस ॥
मोसा बोलि न दाहिमा। होइ अपानै भेस ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

इह बंटना न देस धर। इह बंटनीन लच्छि ॥
तन तर वारिन बंटना। चावँड राइ सु अथ्थि ॥
छं० ॥ ३९३ ॥

बर बानै बंधै सकल। अप्प अप्पनै भाग ॥
ते बांधी सुरतान पर। षंगे षंगी पाग ॥
छं० ॥ ३९४॥

को बंधै ग्रहनी ग्रहन। को बंधै बिन मान ॥
ते बंधी सुरतान पर। मालिम सो चहुआन ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

पामंडराय का कहना कि राजा की पाहिनाई बेड़ी मैं कैसे उतारूं ॥

जौ मंड्यौ अपपग्ग हम। सो किम साहौं हथ्थ ॥

न्निप अपान पासन तजहु । कहौ चंद कवि कथ्थ ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

पुन कवि चन्द का चामंड की वीरता का वखान करके समझाना ।

कवित्त ॥ ते जित्यौ गज्जनौ । तू जु अहौ हम्मीर। ॥
ते जित्यौ चालुक्क । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
ते दल पग नरिंद । इंदु ग्रहियौ जिम राहा ॥
ते गोरी दल दह्यौ । वार पट्टह वन दाहा ॥
तेग तेग तुअ उच मन । ततो पास न मिल्हियै ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज[1] उप्पर पिल्लियै ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

तौ सज्जत गज्जनै । हक्कहै कंप उठे अति ॥
परै उचकि सुरतान । हरम हैहै आतुर गति ॥
ते जित्यौ परमार । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
जा बूदल ते सहै । ते जुहीरा रघुवीरा ॥
पहु मीस राम हनुमान सम । ततो पासन मेल्हियै[2] ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज उप्पर पेलियै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

दूहा ॥ राजा मान पुंडीर कुल । तेहनौ पुत्र प्रताप ॥
से राजन पग लग्गिया । आज हनंदे पाप ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । दरसि रावर वर भग्गा ॥
कप्पन विरद कलंक । जीह किल कित्तिय लग्गा ॥
आहुट्ठा मझ्झामि । छित्ति छत्री परमान ॥
हिंदवान तुरकान । सस्सि उग्गै जिम भान ॥
औधूत राइ माया अडरु । गोरप रा गोरप्प जिम ॥
बर तिथ्थ तिथ्थ रावर समर । मार[3] रूप भंजन विक्रम॥छं०॥४००॥

(१) मो भुअ (२) मो ना मलियो।
(३) मो सार

पृथ्वीराज का चामंड को अपनी तलवार देना।

दूहा॥ छोरि तेग न्रप अप्प कर। अप्पी हथ्थति सूर॥
लै चामंड सु बंधि द्रिढ़। तू धर रप्पन नूर॥
छं० ॥ ४०१ ॥

चामंड राय का प्रणाम करके तलवार बांधना और बेड़ी उतारना।

तब सामंत सुसिर धरिय। सुप जंपिय इह वैन॥
जो सिर पर प्रथिराज है। तौ कित्तक गोरिय सैन॥
छं० ॥ ४०२ ॥

बेरी कट्टत चरन न्रप। नमित कियो तिहि सीस॥
राजन मनह प्रमोद करि। दैन कही बगसीस॥
छं० ॥ ४०३ ॥

जा न्रप रुट्ठे भय नही। तुट्टै नह धन आस॥
ग्रहनि ग्रह नाहीं समथ। ता न्रप वृथा प्रयास॥
छं० ॥ ४०४ ॥

पृथ्वीराज का चामंड राय को सिरोपाव और इनाम देना।

डेढ़ हजार तुरंग बर। हसती तेरह तीन॥
मुत्तिय माल सुरंग दस। राजन अप्पि नवीन॥
छं० ॥ ४०५ ॥

चीर पटंबर फेरि सिर। बज्जा बज्जन बग्ग॥
बर बरदाइ बरहिया। बोल समंगल लग्ग॥
छं० ॥ ४०६ ॥

चामंडराय के छूटने से सर्वत्र मंगल बधाई होना।

कवित्त॥ चीर पटंबर फेरि। बज्जि बाजिच राज बर॥
अति अनंद मन चन्द। करै मनुहारि देव नर॥

राजा मानि पुंडीर। राजसुत वरन[1] दिपारिय॥
ता छडन चहुआन। करिय सो मच विचारिय॥
आनद राज कुम्मार ग्रह। मातपष्प आनद हुअ॥
राम ति सव्व पष्पी फिरै। भिरि चामड सुवज्ज भुअ॥
छ० ॥ ४०७ ॥

दूहा ॥ लोहानी पग कढ्ढिकै। लज्जानी पग वधि॥
लज्जि लज्जि गुन लज्जि कै। तेग धरी भर कध॥
छ० ॥ ४०८ ॥

घर घर मगल वोलिये। घर घर दीजै दान॥
से सुप धनि धनि उचरै। भल छोरयो चहुआन॥
छ० ॥ ४०९ ॥

कवि का कहना कि लोह की वंडी के छूटने से क्या होता है नमक की बेडी तो पैरों मे और राजा के आनकी तोष गले में आजन्म के लिये पडी है।

हथ्थ हथ्थ करि प्रेम की। पाइन वेरी लोन॥
गलै तोप न्रप आन की। छुट्यौ कहत है कोन॥
छ० ॥ ४१० ॥

लोक लज्ज ग्रह लज्ज उर। हठ न ग्रही रिस एक॥
लोह लगर कढ्ढत चरन। लरन हथ्थ लइ तेक॥
छ० ॥ ४११ ॥

कुंडलिया ॥ लरन हथ्थ गहि तेग वर। वोलि समीप प्रमोन॥
वर वधन सुरतान को। रिन अप्पन चहुआन॥
रिन अप्पन चहुआन। कहै चावड समेरी॥
लोहानी कर कढ्ढि। लज्ज वधी वर वेरी॥
हठनि ग्रहन ना करै। करै निग्रह रन मरनह॥
तेगे सिपर जलाइ। देह रावल रन लरनह॥
छ० ॥ ४१२ ॥

(१) एक को चरन।

पृथ्वीराज का सामंत को घोड़े देना। उन घोड़ों का वर्णन।

भुजंगी ॥ गही तेग भू दंड सामंत राजी। दियौ बाज राजं सुजक्की सुताजी॥
छबी रत्त स्याहं हबी जानि जंबू। रच्यौ रूप राकी पक्यौ जानि जंबू॥
छं० ॥ ४१३ ॥

जरी जीन साकत्ति हेमं हमेलं। निसा निम्मलं किस्न नच्छत्र झेलं॥
उचं कंध कन्नं नयन्नं न नासं। गनै रंध्र रंध्रं सुधा स्याम सासं॥
छं० ॥ ४१४ ॥

नषं मंडलं डंड संधं सुधारै। उवं पुट्ठि मंमं दु पुट्ठं उचारै॥
दुमं इंछनं चाय ढारंत बायं। छिमा छत्र छाया तनै बाजि रायं॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कवित्त ॥ नटिय नट्ट जिम चपल। बदन जिम सरस सद्द कवि॥
बग्गह मुनि मन गहिय। तिम सु उड्डिय सुरंग दवि॥
इम चब्बिय करियार। तिम सुमुहरस मुहंभिट्ठिय॥
तिष्षन तरुन कटाच्छ। तिम सुमन मोहन दिट्ठिय॥
अभिसार रसन उच्छाह जिम। तुंग प्रमत्त सुसील मय॥
हिंसत[1] हसंत हरसंत नप। बाज राज दिन्नो तुरिय॥
छं० ॥ ४१६ ॥

पवन पाय पूजयो। बेग पुज्जिय कवि चित्तह॥
पिट्ठि चाप पूजयो। पसम पूजिय नव नीतह॥
पुच्छ चमर पुज्जयौ। कंध केसनि पुजि केहरि॥
श्रवन अग्र पुज्जयौ। अग्ग तिष्षह सुडगार सर॥
पुज्जयौ जगत जिहि पूजयो। सालिग्राम सुंदर सुद्रिग॥
संभरिय तुरिय पुज्जिय जगत। षंजन नट भट मीन मृग॥
छं० ॥ ४१७ ॥

सूर्य्य के रथ के घोड़ों की चाल का वेग।

दूहा ॥ देषि अश्व दाहिम्म कौ। पुच्छ चंद चिचंग॥
कहौ कित्त कत तौ षडै। रैवत रथ्थ पतंग॥ छं० ॥ ४१८ ॥

(१) ए. कृ. को. हिसतह सतह।

कोस सहस नव षट्ट सय। अ पिनि अरध फुरक्क ॥
गय न गन कविचंद कहि। अस्व क्रम त अरक्क ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

सूर्य्य के रथ की सपूर्ण दिन की चाल।

गाथा * ॥ गुन चालीस अरब्ब। अट्ठ परब्ब असीय लष्ष ॥
असी कोरि परिमानत। दिन मान कोस भानय चल्ल ॥
छं० ॥ ४२० ॥

दूहा ॥ सो वाँज राज दिन्नौ बगसि। मिलि मगल गल्ल लग्गि ॥
निसि निसान भेरिय सबद। जनु वीर जगावति वग्गि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगम बोध स्थान पर जाना।

कवित्त ॥ अप्पि न्रपति हयराज। कट्टि वेरी वर छड्डे ॥
हरनि सुनी सुरतान। इला अग्गार भर मड्डे ॥
मत्त सूर सामंत। मिलिव मत तत्त विचारौ ॥
सबला सों सग्राम। मत बिन मत सुहारौ ॥
चित्र राव रावर समर। समर बिद्धि जानै सकल ॥
बिय निगम बोध धनुह सुदिति। मत्त राज मोहै अकल ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

एक शिला का डोलना और सब का विस्मित होना।

दूहा ॥ धर धर धरनिय धरहरिय। कुडलि किय फनि पुच्छ ॥
तेग पकरि सामत तब[1]। मिलि बर घल्ल्यौ मुच्छ ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

कवित्त ॥ सिला एक पाषान। हथ्थ तीसह बिय लबिय ॥
दोइ दसकर चवसट्ठि। सट्ठि अगुल उदर भिय ॥
ता नीचे कदरा। तहा को सूर निद्रामै ॥

* यह छन्द मो प्रति में नहीं है।

(१) ए कृ को-सब।

ता उप्पर तिहि दिवस। राज बज्जै सादानै ॥
आघात सुनत करवट्ट लिय। बज्जे बज्जावन गुरिग ॥
अचरिज्ज[1] करिग सामंत प्रभु। भट्ट सहित पारस फिरिग ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

इक्क कहै भुअकंप। इक्क कहै सेसह हल्लिय ॥
इक्क कहै उट्ठवै। याहि उठवत भ्रम घुल्लिय ॥
छह लंगर गर घल्लि। ग्राव लीनौ उच्छंगह ॥
मुष अनिंद चष निंद। अग दिष्यौ बहु रंगह ॥
प्रारथ्थि चंद पुच्छै तिनहि। कहं सुजाम कहं उप्पनिय ॥
को मात पित्त को[2] नाम तुम। किम सुधान इह नींद किय ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का निकलना। कवि चंद का पूछना कि तुम कौन हो।

विराज ॥ बरं न्नति स्यामं, समंरत्ति कामं। नपं पंडि पीतं, भयं भीम भीतं ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

जगं जानु रत्तं, हवी जानि लत्तं। कटिं नाभि नीलं, उरं सु अपीलं
छं० ॥ ४२७ ॥

चषं धूमरूपं, मुषं जोग भूपं। भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिद्धि मूरी ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

सिरं सेत नेतं, विरागी पवेतं। रजंताम नेनं, सुसातुक्क हैनं ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

डकारंत डक्कं, द्रिगं कंप हक्कं। महाबीर बल्ली, दया अग्ग पल्ली ॥
छं० ॥ ४३० ॥

वरं वप्पुजीहं नको लोपि लीहं। गयं गात गेनं, बुलै चंद्र बेनं ॥
छं० ॥४३१॥

वरहायि बाचं, कहै बीर[3] साचं। * * छं० ॥ ४३२ ॥

(१) मो.-अरज।
(२) मो.-किहि। (३) ए. कृ. को.-कव्वि।

वीर का कहना कि मैं शिवजी की जटाओं से उत्पन्न वीर भद्र हूं। वीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है।

कवित्त ॥ दच्छ प्रजापति जग्य। रुद्र निद्रा सति सभरि ॥
तनु तिनु जिमि जग्गयौ। जलन जग्गिय मन मजरि ॥
हय हय हय त्रिभुवन। नाग सुर नर गंधव गन ॥
भिरि भिरि न दिय सुभग। भइय पुकार छडि रिन।
भयभीत भूत वेताल धन। कंपिल कंपि कैलास डरि ॥
तिहि त्रिसल तेज लग्गिय नयन। जट जुगिंद पिट्टिय सुफिरि ॥
छ० ॥ ४३३ ॥

मो जटा जनम तिन दिनह। नाम सुहि वीरभद्र धरि ॥
तात नाम त्रिपुरारि। जग्य विध्वंसि सीस हरि ॥
सतजुग सकर पनिय। तत्र चेता तु वालिय ॥
द्वापर सुम्भर सलित। धम्म धरनिय प्रतिपालिय ॥
आनन्द निंद जोगिनि पुरह। काल नाम कलजुग्ग लहि ॥
आवत्त सोर फुट्टै श्रवन। किम सुसोर कविचंद कहि ॥
छ० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामंडराय की बेड़ी खोली गई है उसीके आनंद बधावे का शोर है।

इह सुसोर सुनि स्वामि। इन्द्र वृत्ता सुर लग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। राम रावन घर भग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। पंड कौरव फट्टै अभु ॥
इह सुसोर सुनि स्वामि। जरा सिंधव जद्दव प्रभु ॥
इह सोर स्वामि सामंत मिलि। सुपति साह गोरिय वयर ॥
चावंड राइ कढ्यौ लरन। इह सुसोर ढिल्लिय नयर ॥
छ० ॥ ४३५ ॥

बीरभद्र का कहना कि मैंने बड़े बड़े युद्ध देखे हैं यह क्या युद्ध होगा।

इह मनुष्य मत्ताई। देव देवासुर दिष्पिय ॥
से रंभातारिका। जुद्ध रोजस्तू परष्पिय॥
रामाइन मंडलिय। मग्ग मागध मॉधाता ॥
मान तुरंग दुरजोध। पथ्थ पंडव छह भ्राता ॥
बरदाय द्रुग्ग द्रुग्गह सुजिय। भट्ट जाति जीहं दुनौ ॥
सा भ्रग्ग जुद्ध हिन्दू तुरक। कथ समंत ताथें सुनौ ॥
छं॰ ॥ ४३६ ॥

बि का कहना कि आपकी देव रांशा है आपने देवताओं के युद्ध देखे हैं यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे।

तुम देवह समदेव। जुद्ध देषैति सषाने ॥
ए सामंत उमंत। फ्रुफ्रुफ देषत बिरुझानै ॥
इन आवध आवधै। फ्रुक बज्जै फ्रुक फ्रांइय ॥
उत्तमंग उत्तरै। सीस हक्कै धर धोइय ॥
जित रुधिर बूंद कंदल परहि। ते कंदल उठ्ठहि भिरन ॥
उन बीर संग तुम बीर हुअ। निमिष नेह नच्चै फिरिन ॥
छं॰ ॥४३७॥

देव देवानहि जुद्ध। ते पुष्प देषे पुरषारथ ॥
पन्न बीर अति सौम। धीर देष्यौ षट भारथ ॥
देषि बीर मनि[1] हसिव[2]। कही मन्नौ नहि सच्चौ ॥
उत्तमंग उत्तरै। सूर सथ्थह होय नच्चौ ॥
बज्जै विसाल असिवर निझर। सिव समाधि साधक षुलिय ॥
जे पुब्ब देव भारथ दिषिय। दिषि भारथ चिंता डुलिय ॥
छं॰ ॥ ४३८ ॥

तुम मनुछ गति देव। बोल बोलौ मनुच्छ सम ॥
मैं देषे जदु महिष। तौ न नच्च्यौ छुट्टिय भ्रम ॥

(१) मो.-थनि। (२) ए. कृ. को.-हसवि।

धरी एक मै भीत। एक आचिज सुनि वीर॥
रंगत वीर जसमान[1]। लच्छि दह हेाइ सरीर॥
अचरिज्ज मेर परवत ढहै। धर हलै पटतार वर॥
कालक रूप कालो धरा। सुपनि वीर दिष्यौ समर॥
छ० ॥ ४३९ ॥

वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है।

दूहा। तब जग्गि वीर मडिग नयन। वयनह अलप प्रबोध॥
मोहि जगावनं जुद्ध को। बिन दुरजोधन जोध॥
छ० ॥ ४४० ॥

रुधिर बूंद कदल परहि। असिवर सज्जिय हथ्थ॥
कहैं वीर न्रप वीर कहि। अमितचंद इह वत्त॥
छ० ॥ ४४१ ॥

कवित्त। जग्गि वीर भैभीत। मुष ज्वाला हवि छुट्टिय॥
डक डकार कंपै त्रिलोक। कंपि कंधर जग षुट्टिय॥
छिन एक छिमि समूह। वीर हुहुं उचार॥
बिन दुरजोधन जोध। जोध दिष्यो न बिचार॥
आमंत मनुष आमंत सुनि। पुब्ब कथा दुरजोध सुनि॥
करि राज जग्ग गगमन्न वर[2]। मन जग्गत नीसान धुनि॥
छ० ॥ ४४२ ॥

दुर्योधन की वीरता और हठ रक्षा की प्रशंसा।

जिहि दुरजोधन जोध। सधि मानी न दैव बलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। भूमि दीनी न जीव कलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। दवा अब दसन परष्पिय॥
जिहि दुरजोधन जोध। चीर कढ्ढत नन रष्पिय॥
भष्पिया भष्प[3] पर भूमि पर। धर समान धर नवयौ॥

(१) मो रंगल मज्ज बीर जस मान।　(२) मो करि राजगाइ गमन्न वर।
(३) ए० कृ० को०— भेष।

संकल कलप्प रुधि मंस सों। पंड भोग भुअ चप्पयौ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

महाभारत के युद्ध की संक्षेप भूमिका।

प्रान रष्षि रा पंड। डंड आरन्नि वास किय॥
हेत रष्षि बलिराय। सपत पाताल जाय जिय॥
भगत रष्षि प्रहलाद। तात दिपि नष्ष विदारत॥
क्रग्ग रष्षि रघुराइ। दैत जुरि जग्य बिगारत॥
धन धवल गरुव गंधारि उर। गदा कदंब वपु अटल धुअ॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। मान रष्षि दुरजोध भुअ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

न को जियत दिष्षियन[1]। मरन दिष्षियै न लोई॥
मात ग्रभ्भ जनमीय। काम अवसर जुग सोई॥
क्रोध लोभ माया न मोह। तार तंत्री जिड भोगी[2]॥
विक्रम क्रम नच्चियन। जोग नंचै विधि रोगी॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। बहुत काल इहि थान भय॥
हा हंत हंत तत गुर गनिय। सुनो भट्ट तत मत्तलय॥
छं० ॥ ४४५ ॥

भीष्मजी के विषम युद्ध का संक्षेप वर्णन।

भुजंगी। जिनै जोध दुरजोधनं जुद्ध कीनौ। जिनै दीहनौ दूनकौ ब्रत्तलीनौ
जिनै अप्प अप्पं प्रतंग्या निवारी। जिनै नंदनंदं[3] परं पैज पारी
छं० ॥ ४४६ ॥

जिनै चक्रधारी कियौ चक्र रूपं। जंही जांहि रुंधे तहीं तांह जूपं
जबैं पग्ग रग्ग चषं लोपि कोपं। कियौ षंड षंडं रथं बान धोपं
छं० ॥ ४४७ ॥

(१) ए० कृ० को दिष्षिगन। (२) मो० जोगी।
(३) मो०—नद नंदी।

हनूमान पर्यौ[1] पताकी पतग । हन्यौ सेत बाजी जुअ जोगि भग ॥
अप्प तोन कब्यौ नग जीव गज्यौ । दियौ देवदत्त धनुजीव वज्यौ॥
छ० ॥ ४४८ ॥

कियौ छीन छीन सनोहति छीन । जटू देववादी रुधिर्देव भीन ॥
सुभ स्याम रत्त सु स्याम सुदेस । मधू माधवें जानि माधुर्य्य केस॥
छ० ॥ ४४९ ॥

जकी जोगमाया बकी थान थान । कहै देव देवीन जान न जान॥
न जान न जान न जानति जान । न तची न जची न मची न मान॥
छ० ॥ ४५० ॥

हयती हयती हयती प्रमान । भरती भरती धरतीति बान ॥
रथती रथती रथग सुपान । * * * * छ० ॥ ४५१ ॥

कुर पडपड पल्ल पड जूर । सुरग सुरग बर काल रूर ॥
ततथ्थे ततथ्थे तथ न्नत्थ वार । निरपत फट्ट करत उधार ॥
छ० ॥ ४५२ ॥

चवट्ठी चवट्ठी चवै सिध पूर । वितालो वितालं करै तार तूर ॥
फिरै जोगिनी जोग माया सतथ्थ । ढुढे लोक लोक चलोक सुनथ्थ
छ० ॥ ४५३ ॥

स्वय ब्रह्म पूछ्यौ धरै ध्यान ईस । दिषे देव देवाग[2] भारथ्थ रीस ॥
तहा आय दिष्यौ स्वय ब्रह्मनाथ । कियौ वज्र रूप कियौ वज्र हाथ
छ० ॥ ४५४ ॥

पथत पथत पथ पार पार । झरती झरती झरतीति सार ॥
कथती कथती कथ मार मार । * * छ० ॥ ४५५ ॥

वजती बजती बज[3] धाय धाय । नवती नवती नवतीत पाय ॥
लुटै[4] पट्ट पीत कवी तेज वान्यौ । धवै सिघ सैल महामत्तजान्यौ ॥
छ० ॥ ४५६ ॥

करै चक्क वक्क उनके प्रवानौ । भुले भट्ट नाही चित मत्त वानौ ॥

(१) ए० कृ० को—छट्यौ । (२) मो०—देवज । (३) मो०—बजनी निद्याय ।
(४) ए० कृ० को०—तुटे ।

उचै चरन उट्ठै लगे भूमि आवै। पिन्ने वेग अप्पै जु पाताल पावै॥
छं० ॥ ४५७ ॥

कटी पट्ट छूटौ लुथ्यौ पट्ट पीतं। नसंभूल वंभू भया भीम भीतं॥
छं० ॥ ४५८ ॥

दूहा ॥ अभय भीति भीगम सुभर। इप दिय अरध उदार॥
आनु आनु अवनिय धरन। कह्यौ संतन राजकुमार॥
छं० ॥ ४५९ ॥

भै भ्रित रोम सभ्रित्त भर। तारस लागि क्रिसान॥
दसों दिसिनि द्रिगपाल डर। मै अरन्थ त्रिह्मथान॥
छं० ॥ ४६० ॥

वीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देख कर तब से मैं सोया हुआ हूं।

छित श्रोनित छिंछै सुतन[1]। सुतन लागि चष दून॥
जनों अमर पूजहि अमर। बर बंधन परसून॥
छं ॥ ४६१

सुकरि ग्यान सूतौ सुमरि। हिय धरि ध्यान गुविंद॥
मंद हास मंडिग बयन। कहि कविंद[2] कविचंद॥
छं० ॥ ४६२

तल वैतल धुक्किय धरनि। करस चक्र लिय धाय॥
सुर नर नागनि बंधि घन। मै भग्गै अकुलाइ॥
छं० ॥४६३

चरन नीच उंचिय अवनि। कमट पिट्ठ दर नाग॥
चकित अट्ठ द्रिगपाल कुल। मुष चिक्करि भै भाग॥ छं० ॥४६
प्रलै जलह जल हर चलिग। बल बंधन बलिचार॥
रथ चक्रह हरि कर करिय। परि पर बत परतार॥
छं० ॥ ४६५

(१) ए० कृ० को०--सुवन। (२) ए० कृ० को०--कहिद।

वीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष।

भुजगी ॥ धरे ध्यान सूतौ वली वीरभद्रं। मनों पेषि आकास विद कविंद्रं ॥
हय जोय एक कर चक्र एक। प्रलै काल सज्ज्यौ मनों ईस वक्र ॥
छ० ॥ ४६६ ॥

भुअ भार भार सुभार सुनेन। रिसा रत्त अरविंद सवै सवैन ॥
सपा भीर छूई धर भार भान। चिपा छत्र छत्री न छत्री दिदान ॥
छ० ॥ ४६७ ॥

भिगू पत्ति जान्यौ सु तान्यौ धनुक्क। करो दृत्त जानी सुतानी पिनक्क॥
जुरी डड पड पिता माहि सुक्क्यौ। तुमै जानि पड परा काम चुक्क्यौ॥
छ० ॥ ४६८ ॥

रज ताल वीछी रथ वधि उच्च। सिध सस्त्र कट्टौ धरा पारि नच्च
महारथ्थ सारथ्थ पारथ्थ पान। लघु लाघ विद्या सुपूजै गियान ॥
छ० ॥ ४६९ ॥

गुन दिट्ठ लोन[1] जुधानं धरान। क्रिपाल क्रिपाकी क्रिपाकें निधान॥
सुप तो सुकद सुकत्ती प्रसाद। प्रतग्या प्रमान केली क्रत्ति वाद ॥
छ० ॥ ४७० ॥

अभेद सरीर द्रस तोपि नैन। त्रित लोक सोक भय भै अभैन ॥
त्रित पुन्य पुन्न न जानौ गुसाई। ग्रसै काल व्याल भए को सहाई ॥
छ० ॥ ४७१ ॥

दूहा ॥ मै दिठि दिठि निहट्ठि हरि। धरि मिट्टिय निज निद्द ॥
जिहि सुकज सूरति हियै[2]। विसरि जाइ तेगद्द ॥
छ० ॥ ४७२ ॥

कवि का वीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा मे चलकर सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते है।

कहन चद उद्दिम कियौ। सुनन वीर धरि कान।
भाषा सब्ब परब्बहु। नव रस सब्ब सुरान ॥ छ० ४७३ ॥

(१) को तोन। (२) ए कृ को तिहिजिये।

तुम भवस्थ जानहु सकल। अकल अपूरब बत्त ॥
सुमत बैठि सामंत सब। सुनहु तौ कहूं कवित्त ॥
छं० ॥४७४ ॥

कवित्त ॥ अगह मगह दाहिमौ। देव रिपुराइ पयंकर ॥
कूरमंत जिन करौ। मिले जंबू बै जंगर ॥
मो सहनामा सुनौ। एह परमारथ सुझ्झै ॥
अष्पै चन्द बिरद्द। बियौ कोइ एह न बुझ्झै ॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी। इह संभलि संभारि रिस ॥
कैमास वलिष्ट[1] बसीठ बिन। म्लेछ बंध बंध्यौ मरिस ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

दूहा ॥ सभा बत्त इह चंद कहि। सुनिय बीर धरि कान ॥
राजन मन अदेस धरि। जु कछु बिधि निमान ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

बीर का जंभाई लेकर उठना और पृथ्वीराज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त कविचंद। बीर अदभुत्त मंनि मन ॥
एह बत्त आचिज्ज। सूर सामंत कहिय जन ॥
उट्ठ बीर करि जंभ। अंग मोरिय उत्तानह ॥
जाय बयट्ठौ पास। सूर सामंत सभा महि ॥
पुच्छी सुबत कविचन्द सों। अहों चन्द बरदाय सुनि ॥
लै नाम सूर सामंत सब। मोहि दिषावहु मंत गुनि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

कविचंद का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यदुव का कहना कि कैमास के मरने से मुसलमानी दल सहजोर हो गया है।

इ जैत राव चामंड राव। इह देव रा बग्गरिय ॥

(१) ए, कृ को बासिष्ठ।

इह वलिय राव वलिभद्र। राम कूरभ सभरिय॥
इह पीची राव प्रसग। जाम जादो भर भब्बिय॥
रवनि[1] राज पहु प्रान। साम दानह धर रब्बिय॥
सामत मत कैमास विन। वल वध्यौ सुरतान दल॥
सामत सिघ दुज्जन सया। दया न किज्जै काल पल॥
छ० ॥ ४७८ ॥

चामंडराय का कहना कि गत पर सोच क्या, जो आगे आई है उस पर विचार करो।

कहै राव चामड। जाँम जदों सुनि वत्तिय॥
गत्त सोच जिन करौ। सोच भग्गै वल छत्तिय॥
सुप अतर दुप होइ। दुपह अतर सुप पाइय॥
सुप दुप वध्यौ जीव। जीव वध्यौ मन गाइय॥
मन स्वामि ध्रम्म वध्यो रहै। स्वामि धरम वधिय सुगति॥
सा सुगति वध सुरतान दल। मथिन सूर कट्टौ जुगति॥
छ० ॥ ४७९ ॥

जामराय का कहना कि तुम्हारी तो अकल मारी गई है इधर देखो सौ में से सात बाकी है।

पुनि जंपै जद्दो जुवान। चामंड राव सुनि॥
तुम पग लग्गो लोह। लोह लग्गै गत मत[2]हनि॥
साम दान अरु भेद। वक तौ कक करिज्जै॥
कक वक भरि होइ। वक भर भूपति छिज्जै॥
सुरतान पान पुरसान पति। दल वद्दल पावस मनो॥
प्रथिराज साथ सामत सौ। तिनमहि छह सतह गनो॥
छ० ॥४८०॥

चामंडराय का वचन।

तब जपै चामड राइ। जादो जम वत्तिय॥

(१) ए० कृ० को०—वरनि। (२) ए० कृ० को०—मत्तनि मतनि।

हम पग लग्गो लोह। लोह लग्गो गत मत्तिय ॥
जौ तो सूं तूं कहै। तो राज को काज विनासै ॥
अद्ध रयनि उठि जाहि। करै दुज्जनपुर वासै ॥
हम पगनि बहुरि बेरी भरौ। लरि न मरैं जहों कहै ॥
जहं जहं सुदैव कुल संसवै। तहं तहं पंजर पुरस है ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

बलिभद्रराय का बचन।

तब कहै राव बलिभद्र। काम कूरौ मंतानिय ॥
सबलों सों संग्राम। राज भज्जै राजानिय ॥
गहै गहां कै ढोलरै। ढाल ढोरी ढुंढारी ॥
कूरंभा ऊपरें। डाढ़ ढिल्ली उच्छारी ॥
औरैं सुमुष्ष अंसर उरी। मन साषी जानैं जनां ॥
असुमेध जग्य यौ है तंनौ। जनमेजै वरज्यौ घनां ॥ छं०॥ ४८२॥

रघुवंस राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना।

बर बीरह रघुबंस। राम रति बाह उचारिय ॥
जीव संक छची अग्गा। मिलि जु संकर पह सारिय ॥
आगैंही इहि बंस। बाच दिठ मरनह डिज्यौ ॥
सांम अग्ग समलीह। अजै गिरि में रचि गढ्यौ ॥
तुट्टै कमन्ध उट्ठै धपिग। बिपथ सीस हंकारयौ ॥
प्रथिराज संग बन्धौ मरन। परिय नृपति अरि धारयौ ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

रे गुज्जर गांवार। ग्रब्ब तजि सज्जि सुमंतं ॥
मोहि ईस आसीस। लागि अंगन रवि रत्तं ॥
मरन सोय अरि हरन। सेन साहाब सबन मथ ॥
भान रथ्थ षंचि है। देव देषै सु रुक्कि रथ ॥
भारथ्थ थंभि रष्षै अरी। रतन रष्षि बर रतन लजि ॥
चहुआन आन सुरतान सों। सामर[1] सजि लज्जी बरजि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सागर।

बलभद्रराय का वचन।

फिरि उच्चरि क्रूर भ। तत मतह उच्चारिय॥
जै पुत्रह बन्धान। टरै सनबन्ध न टारिय॥
व्यास वचन जनमेज। सत्त जानी असत्ति करि॥
क्रम बन्धन पै आहि। मन्ति आयौ सुम डि धरि॥
आचिज्ज हरिय उत्तर दिसा। मद्दे बडवानल विसहि॥
वरजयो सत्त वचननि तवै। तात जानि नाही असहि॥
छ० ॥ ४८४ ॥

सुनि अचिज्ज है हेरि। राज स मुह उच्छाइय॥
हरि दिप्पी मनु फिरै। जग्य वड वाजि वसाइय॥
वड वन्धा करि वन्ध। उच उंवी जु सेमेरी॥
व्यास वचन करि असति। जग्य जपन कहि फेरी॥
सोइ जग्य कियौ पहु पडकुल[1]। तरुन वीर वभन्न वरि॥
सनम ध जीव जुद्धह सुगति। सो न टरै टारीय टरि॥ छ० ॥ ४८५॥

दूहा॥ ऐ उदार लज्जिय सुजल। कवि वुधि उट्ठिय आस॥
मरन सुलज्जी वधयौ। जपि उदार प्रयास॥
॥ छ० ॥४८६ ॥

रामराय वडगुज्जर के वचन।

कवित्त॥ कहै राय रामदे। राइ रावत अज्जूना॥
है हथ्थी नौसाज। राज[2] लद्दौ पज्जूना॥
सामता उभ्भार। जुद्ध अथ्था सथ्थानी॥
सौ अग्गानी सट्ठि। सट्ठि आनी पगानी॥
म्हें गामी गुज्जर गल्लिय। ह साई ह साइया॥
रतिवाह देहु सुरतान दल। रपि राजन लगि पाइया॥
॥ छ० ॥ ४८७ ॥

तुम भोरे भीमकै। रत्ति सोमति ज्यो जित्तिय॥
ज्यौ दुज भोरे अव। धाय धत्तूरस पत्तिय॥

(१) ए कृ को पहुपग कुल। [२] ए० कृ को० रात।

आसामी असपत्ति। लाष कुरकार[1] चढाइय ॥
हस्तीनी चिक्कार। फटै रासभ उरझाइय।
पुंडीर राव भग्गौ भिरां। जे सुरतान बंधाइया ॥
आभंग जंग[2] अनभंग भर। ते कनवज्ज जुझाइयां ॥ छं० ॥४८८॥

चामंडराय का रामराय को व्यंग बचन कह कर हँसी उड़ाना।

दै गारी गुज्जरह। राय चामंड कहानौ ॥
ए जादों कूरंभ। जिय न बंछै सु सदानौ ॥
षीची राव प्रसंग। चोर बंधे सुपुराना ॥
ते बीरंग बिडार। डाक बज्जै उभ्भाना ॥
गोयंदराज बोला बरै। महिल केलि कलपंत किय ॥
पंजाब पंच पंचह सुपथ। जात गात रष्यौ सुजिय ॥
॥ छं० ॥४८९॥

दूहा ॥ लछ बल छुट्टे पंग पहि। सत छह छत्रनि छत्र ॥
समर सगण्पन देव तन। कहौ न मुह भरि तत्र[3] ॥
॥ छं० ॥ ४९० ॥

सब लोगों का हँसना और बलिभद्रराय का राबको धिक्कारना।

कवित्त ॥ तब सुराव बलिभद्र। हथ्थ जद्दों दै धारिय ॥
बड़ गुज्जर दाहिमा। बोल लगै अधिकारिय ॥
को सेवक को सांई। कोन भर धर किन षाइय ॥
केहुं ना घर जरै। हाससे कैको आइय ॥
सनमंध राय सगपन कियौ। पच्छै को केही कहै ॥
सहगवन राज सुरपुर करै। ढोली कछु वासन लहै ॥
॥ छं० ॥ ४९१ ॥

[१] ए० कृ० को०-साकुर। [२] ए० कृ० शो०-बुज्झ।
[३] ए० कृ० को०-बत्त।

रामराय यादव का चामड की चिध्धी उड़ाना।

तब कहै जैत पवार। साम ध्रम्मह इन जानिय॥
कारन अग्गै द्रोपदी। चीर दुस्सासन तानिय॥
पिता दोष जान्यौ न। सेव अंगद घनमडिय॥
बध दोष बेगी प्रमान। राव चामडह छडिय॥
जो दोष सामि तुछ उप्परै। काम दुप्प वड्ड कर॥
परसग राव पीचौ सुनै। सुक्कि राज छडिय वर॥
॥ छ० ॥४९२॥

चामंडराय का गुस्से होकर जैतराव की तरफ देखना।

दूहा॥ चिसल तेज लग्गी बिभुअ। चपरता हवि जान॥
जैत राव वरजौ इन्है। इकटिह देखवियान[1]॥
छ० ॥ ४९३॥

इन कठन दिस्सिय नगर। इन कठन लगि राज॥
इन आवध काढै न्रपति। साहि आज की काज॥
छ० ॥ ४९४॥

जैतराव का दोनों के शान्त करके राजा से कहना कि लोहाना से पूछिए?

कवित्त॥ राज काज पामार। सिघ उचार वार तिहि॥
हो जादो जामानि। वलिय बलिभद्र वार इहि॥
वह गामी गामार। राम रति वाह सुजपै॥
ससि पडौ पुरसान। अधर गुज्जर ग्रह जपै॥
न्रिधात पात भज्जै सयन। गहन राज रवि उग्रहै॥
आजान वाह पुच्छौ न्रपति। स्वामि ध्रम सिर न्रिवहै॥
छ० ॥ ४९५॥

लोहाना का कहना कि जहा रावलजी उपस्थित है वहा और कोई क्या कह सकता है।

तब लौहानौ आजान। वाह वह वह वकारिय॥

[१] मे' एक टह दिपालेया पान।

समर सिंघ रावर। समुष अग्गै हक्कारिय॥
तुम सुधरम राजन। अनेय लब्भा अधिकारिय॥
जो अमंत सामंत। ताहि मंता उत्तारिय॥
दस लष्ष भष्ष सुरतान दल। तनु तुरंग उत्तंग बर॥
रुधि मंस अरि बस प्रान तुम। कन पिसान दूपहि सुकर॥
छं० ॥ ४९६॥

पुनः लोहाना वचन।

तब चिचंग नरिंद। चिंत चिंता चिंतोनी॥
भव भविष्य निब्भयौ। ब्रह्म जानै न बिनानी॥
तुम अजाब अंगवनि। जंग सुरतान विचारिय॥
रत्ति बाह दिन बोहु। कलह केली सु सुधारिय॥
सुभ थान प्रान पतिसाह कौ। राज पान संमुह लरै॥
बत्तीय बिकत्ति जंपै सुकवि। बहसि बहसि बुल्ल्यौ बुरै॥
छं० ॥ ४९७॥

चामंड राय वचन।

कहै राव चामंड। अरि कर दुष्षिन सागर॥
काली कर दुष्षैन। रकत वर जोगिनतावर॥
इन्द्र आदि दुष्षैन। पंच प्रव्वत्त प्राहारै।
चंद हथ्थ दुष्षैन। गुह्य तारक्क वीचारै॥
थक्कैन हथ्थ वर करन सुअ। मंस काज विभ्भूत बर॥
संग्राम काम कारन भिरन। सो न थकै रजपूत कर॥
छं० ॥४९८॥

पृथ्वीराज वचन।

पहुमि ईस पलटौस। रोस तजि रहसि बिचारिय॥
प्रिया कंत सोभेस। तनं हँसि हँसि दिय तारिय॥
निसा अद्ध वत्तरी। देव कंदल नहि पिष्षै॥
हम मनुष्ष तन रूप। कित्ति कहि कहि कह भष्षै॥
धवली सुरेंन धवली दिसा। धवल कंध सनमुष लरहि॥

सोमेस आन सुरतान सो। जौ न जुद्ध इत्तौ करहि ॥
छ० ॥ ४९९ ॥

लोहाना आजान बाहु बचन।

अद्ध रयन अतरिय। जोम जामानि भतारिय ॥
सामंता रौ साथ। अरध चढि[1] अरध उतारिय ॥
मुक्कि बान कम्मान। तुग तरवारि कटारिय ॥
हथ्थ[2] घल्लि सिर मडि। रुद्र लोह उचारिय ॥
आजान बाहु इम उचरै। बावारौ लबौ भुआ ॥
प्रथिराज काज इक्कै सरै। पै चिचकोटि रावल दुआ॥
छ० ॥५००॥

प्रसगराय खीची बचन।

विहसि राव परसग। पिजे पीचौ चमरालिय ॥
राज नैंन दिय सैंन। बयन बुल्लयौ बेढारिय ॥
रे गुज्जर रे जैन। अरे चावड राइ सुनि ॥
राजादो कूरभ। बलिय बलिभद्र सीस धुनि।
सुरतान छत्र अनछत्र करि। राज सीस छत्रह धरो ॥
इह समर सिध रावल सुनै। जौ न जुद्ध इत्तौ करो ॥
छ० ॥ ५०१ ॥

चामड राय का बचन।

पिभ्यौ राव चामड। चिल लग्गि चय भूअ वरा ॥
अवर मत्त सामत। बोल बौलैति मत्ति धरा ॥
राज मद्द धन मद्द। मद्द जोवन धन धारौ ॥
सबै मद्द उत्तरै। पग्ग सुरतान सुझारौ[3] ॥
जे होय सूर सूरह सुबर। निपन सूर जुद्ध जई ॥
बोले न बैंन समझे घन। सग्रामह अरि इकई ॥
छ० ॥ ५०२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चढ। (२) ए० कृ० को० हाथ वध गर घल्लि।
(३) मो० सूपारौ।

बरहमंड चामंड। षग्ग उच्चरिग मंत महु ॥
षग्ग मग्ग अन दग्ग। अम्म स्वामित्त रत्तरह ॥
उमरि साहि बिधि बद्ध। छिनन इत उत बर बज्जै ॥
टरै न द्रिग टारंत। बीर गाजै धर गज्जै ॥
नर मंत देव मंडल मुषह। सुषह सद्ध अध अद्ध हुअ ॥
बर बरै बीर दाहर तनौ। रहति चंद मन्नेति धुअ ॥
छं० ॥ ५०३

जैत प्रमार बचन।

कहै जैत पामार। बार बिग्गरी तुम्हारी ॥
कहौ सुनौ चामंड। जाम जद्दों अधिकारी ॥
अप्प पान तोलियै। सेन सुरतान निहारौ ॥
भवन मंत चुक्कियै। धरम छत्री जिन हारौ ॥
सर बर सुबीर[1] संभरि धनिय। मुहि प्रतीत राजन तनी ॥
जै अजै भाग भूपति बढ़ै। पै चढ़ै धार धारह धनी ॥
छं० ॥ ५०४

गुरुराम प्रोहित का बचन।

तबै कहै राम गुर राज। सेन तोलौ राजानी ॥
सुनौ सूर सामंत। मंत कलहंत प्रमानी ॥
किं जानै किं होय। सूर उट्ठै ढिल्लानी ॥
उतराधी उत्तरै। जाय संमद साहानी ॥
भज्जै भरग्ग चहुआन कौ। मंत मग्गग्ग कलहंत भौ ॥
जानहि न जुद्ध बंभन मरन। इन महि छुट्टिय सग्ग भौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

देवराज बग्गरी बचन।

देव राज बग्गरी। बीर बीरह बरु बंध्यौ ॥
करौ जु कोइ करि सकै। साम दानह मिलि संध्यौ ॥
मोहि राज प्रथिराज। काज केवल कलहंतिय ॥

(१) मो.-रस वर सुवर

जब जोर सुर सारि। सार भग्गै रहि तत्तिय॥
जीवन हथ्थ तुम सथ्थ सुर। तनक लाज दुहु भुज धरौ॥
मो बुझ्झि जुझ्झि ससुह लरौ। न लरौ तौ फुनि पच्छै मरौ॥
छ० ॥५०६॥

गुरुराम वचन।

कुसुमै जुध कीजै न। सार भर धार भिरै कस॥
अजै होत अरि हसै। विजै सद्देह देव बस॥
ता कारन घर घेरि। भिरत जुटि प्रथम जोरी॥
इन बात करत कुढ ग। मूल बहुरतर फोरी॥
गुरु राज राम इम उचरै। समर सिह प्रथिराज प्रति॥
धर साम दान भेदह रहैं। जु कछु करौ सो मंत मति॥
छ० ॥ ५०७॥

पृथ्वीराज वचन।

तू कुपट्ट दुजराज। राज राजन क्रित कपी॥
जुद्ध रूप पुर प्रथम। जुद्ध करि जुद्ध निकपी॥
बस्सू जाइ भर जीय। सुकति कित्ती भर[1] अग्गा॥
सोइ जब सुह भोगवै। चिहुट चीर जिम लग्गा॥
कायरन काज आवै वसुह। वसुह न काइर घर रहै॥
ज्यौ वसुरत्ती सुर सूर सुआ। त्यौ राजा वसि इल रहै॥
छ० ॥ ५०८॥

वीर माल्हन वचन।

समुह वीर समवीर। मत माल्हन इह सारिय॥
राज समुह रासलह। दिट्ठ सूरति सचारिय॥
सुमन जेम जन महै। क्रम्म गोरिय गुर ढिल्लन॥
इअ अजद्ध मन मत्त। टरहु जीवन कलि पिल्लन॥
अनुचरहु धरम चहुआन रन। मन सुसाहि साहाव सम॥
दुरजय दुराय छुट्टन सुगति। निय निधान घुट्टै सुदम॥
छ० ॥ ५०९॥

(१) में भग

गुरुराम बचन।

बहसि गुजर परिहार। जियन जुग तत्त विचारिय ॥
सुभट मंत जानहु न। राज भंजै पचारिय ॥
मत पच्छै कै मास। जुद्ध बंध्यौ सुबिहानं।
बिरद मंत मंतयौ। सबर अरि तजि सुरतानं ॥
जप होम मंच बलिदान तप। दुष्ट ग्रह ग्रह टारियै ॥
चौरासि जीव भोगै मनिछ। सो जीव मत्त बिन डारियै ॥
छं० ॥ ५१० ॥

राम राय रघुबंसी बचन।

सुनि गुज्जर गांवार। राम उच्चरै सत्ति बर ॥
सर पुट्टै गा हंस। अद्ध पिष्पियै अधा धर ॥
दै अचार कुल अधम। राम रोगौ नह बुझ्झै ॥
ताव जुरा धृत देहु। कित्ति अन कित्तिय सुझ्झै ॥
सुरतान सेन कित्तक बहन। अरु कित्ती कुल भंजियै ॥
पारथ्थि राव रावल सुनै। जिन कित्ती ते लज्जियै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

भाल्हन परिहार बचन।

परसि अमत परिहार। गुज्ज गांवार बात सुनि ॥
जनम लोभ इह जानि। कित्ति मंडियै तनह फुनि ॥
जु कछु जंत निम्मए। कहै सब माया मेरी ॥
माया मेरी कहत। निमुष चलतें नह हेरी ॥
सो मिच नंद अप्पन सुगति। जुगति मोह भंजै भिरै ॥
भोगवै दुष्ष जीवै बहुत। कहौ जु कछु जिहि उब्बरै।
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रथंगराय खीची बचन।

फुनि कहै राव परसंग। बिहंसि बुल्ल्यौ चमरारिय ॥
इनहि ऱ्हूर सांमंत। बार बेरह नह[1] गहालिय[2] ॥

(१) ए० कृ० को०—हरन। (२) ए० कृ० को०—डालिय।

विषम दोह लज्जी प्रमान। रति वाह करिज्जै ॥
अजहु हमे सग्राम। फेरि सुरतान गहिज्जै ॥
रप्पनह राह ज्यौ उडगनह। सयन चद चँपि चद गहि ॥
ग्रह भजन भरम जामन मरन। कित्ति काल कूटी फुरहि[1] ॥
छ० ॥ ५१३ ॥

सुनि सुमत सामत। सुचिय वधवति पुत्र सम ॥
साम अग्गि गुर मच। तत्त जानौ सु छुट्टि भ्रम ॥
सहस धीर ज्यौ सूर। सहज लग्गीत ग्रहन[2] वर ॥
वुद्धि[3] पराक्रम वध। सुरन अप्पौ राजी वर ॥
चिचग राव रावल समर। समर मोह ग्रह जस छुटी ॥
कविचद छद इम उच्चरै। यों अवाज सम्मर फुटी[4] ॥
छ० ॥ ५१४ ॥

देवराज वग्गरी वचन।

दूहा। देवराज जपि जैत सों। तुम जानौ सब तत ॥
उहि दिन वहु जित्तेरवद। इहि दिन इह गत मत ॥
छ० ॥ ५१५ ॥

कवित्त। एक सुदिन सामत। साहि गोरी गहि वध्यौ ॥
एक सुदिन सामत। पग जग्यह घर रुध्यौ ॥
एक सुदिन सामत। चाय चालुक्क विडार्‌यौ ॥
एक सुदिन सामत। राज रिनथभ उधार्‌यौ ॥
दिन एक स्वामि सामत कौ। मत छडि कालहत रजि ॥
मुष लोकि लोकि जीवत जरिय। घरिय पट्ट घरियार वजि ॥
छ० ॥ ५१६ ॥

सब सामत अमत। सुनिय बोल्यौ गिरवर पति ॥
अहो सूर सामत। अत कालह विगरिय मति ॥
अप्प अप्प मुष चवै। भेद अतर गति मडै ॥

(१) ए० कृ० को०—लुरहि। (२) ए० कृ० को०—ग्रहत।
(३) ए० कृ० को०—वहत। (४) ए० कृ० को०—पुटी।

इहै अष्टम अत होय। अहित दित दोऊ पंडै ॥
तुम करहु मंत एकंत मिलि। जुद्ध अग्ग छत्रपति छिति ॥
जानौ न और उपजै न कछु। इहै पंथ आदिहि विगति ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

दूहा। समर समर बत्ती सुनी। हुए सबै मति एक ॥
इह जुगिंद अग्या दई। ग्रहैं लरन कर तेक ॥ छं० ॥ ५१८ ॥

सामंतों की बात सुन कर रावल जी का किंचित रुष्ट सा होना।

कवित्त। जुद्ध मंत सामंत। थपिय चहुआन प्रान धन ॥
सबै सूर सामंत। चिंत लागै सु जोर मन ॥
मुष्ष तेज असहेज। नैंन नंचै सु सूर रस ॥
उद्धलोक आपेष। अग्ग अम्मैव स्वामि तस ॥
सा लष्षि अष्षि गिरि चित्रपति। दुसह काल कारन धर्यौ ॥
सनमंध सगप्पन जानि जिय। सुअन सोम प्रति उच्चर्यौ ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावल जी कहें सो हम सबको स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय।

पद्धरी। उच्चर्यौ इष्षि दष्षिन नरेस। मन्नेव विषम क्रित काल एस ॥
अंथह्यौ मेव अंतर उरेव। जग्गयौ बीर दैवात देव ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दिल्लीव बंध बंधौ सु पश्च। रष्षहु कुमार भर रेन सश्च ॥
सभरे वत्त सा संभरेस। मन्नेव मत्त हित्तं हरेस ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बोल्लयौ राज जामानि ताम। साहाब अव्व बल बिषम काम ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनंत। मडौ बथित्ति पच्छेव मंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

जपौ सुबत्त रावल सहित्त। सच्चौ सुसोय सुम्मा सुभित्त॥
बुम्मान ग्यान जोगिंद राज। त्रैकाल ज्ञान सुभ्भ्भै सुभ्राज॥
छ० ॥ ५२३ ॥

चयगुन अतीत बुझ्झ्भै त्रिलोइ। जग तत[1] मत कारन सुजोय॥
वैदेह जेह वैदेह अप्प। पग्गह सुबुद्धि सुव ग ग तप्प॥छ०॥५२४॥
ब्रह्मंड पिंड बुझ्झ्भै पुरान। पट दूअ दूह विद्या विनान॥
आगम गम बुझ्झ्भै गुराह। बुझ्झ्भैव ग्यान मग्गा अथाह॥
छ० ॥ ५२५ ॥

अवधूत राइ गोरष्ष ग्यान। नर लोइ देह देव ग जान॥
सनमध सगप्पन अप्पनेह। जप्पौ सुकित्य कारन्न तेह॥छ०॥५२६॥
हम हीन आउ सोमत सूर। बुझ्झ्भैव पच्छ मडौ समूर॥
रप्पौ सुपच्छ रैन समुझ्झ्भ। रप्पहि सु देस दिल्ली सु गुझ्झ्भ॥
छ० ॥ ५२७ ॥

उच्चर्यौ ताम जादो सुजाम। धनि मत्ति गत्ति चहुआन ताम॥
रप्पौ सु दृह भर पच्छ काज। थभै सुदेस रप्पै सुलाज॥छ०॥५२८॥
जिहि पुत्त एक सा पुत्त ग्रेह। थभै सुरोज कुल वट्ट तेह॥
बिन पुत्त जेम देवल अथभ। ढहि परै भिन्न भिन्नह अचभ॥
छ० ॥ ५२९ ॥

बिन पुत्त पच्छ जानै न नाम। सुभ क्रम धम्म को करै काम॥
देवत देव देवौन लोक। मागत पुत्त बिन सबे फोक॥
छ० ॥ ५३० ॥

तिन कज्ज राज इह मतौ मन्नि। चिंचग राज जपै सु धन्नि॥
छ० ॥ ५३१ ॥

पृथ्वीराज का रावल जी का वचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना।

कवित्त। सुनिय बत्त चहुआन। हित्त आभित्त मन्नि मन॥
पहु चित्यौ पामार। छोनि[2] कुम्मार लाज तन॥

[१] मो०—चित्त (२) को०—छोर।

मंत गंठि मन संठि। जैत रष्षहित राज रह ॥
घरिय छीय साधीय। अष्ष गंभीर धीर तह ॥
सनमुष्ष आय सिर नाय करि। कहि राजन परसंस करि ॥
राषहु सुराज ढिल्लिय सुथल। राज चित्त जानहु सुपरि[1] ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सो संभरि ढिल्लीस। जैत अष्षह आभासिय ॥
करिय कित्ति विधि नीति। रीति राजंग रहासिय ॥
रयन पान संग्रहौ। देस सिर भार सुधारौ ॥
रष्षहु रज चहुआन। प्रीति अष्षा प्रतिपारौ ॥
उच्चर्यौ गरुअ पामार गजि। पग्ग सीस आयास सजि ॥
आरत्ति नेन अ्रुति बेन तन। उहसि रोम मुछां उसजि[2] ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

जैतराव का राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करना।

तबै कहै जैत पामार। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
अज्ज कज्ज मोकंध। रेन कारन्न आनि गुनि ॥
आदि छत्र तुम सीस। अज्ज सिर सुक्ख कित्ति पल ॥
भर गोरी गरुअत्त। करौं उक्खार खार दल ॥
संचरो अंक्ख बिंबे बहरि। विधि कारन मो कंध दिय ॥
को करहु बंध संधहि सकल। में जित्ते हरि लोक लिय ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

प्रसंगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे वीरसिंह को राज्य का भार देना और सामंत कुमारों को साथ में छोड़ना।

पद्धरी। सुनि बत्त सच्च संभरि नरेस। परसंसि जैत अष्षह असेस ॥
परसंग राव षीची स बोलि। गरुअत्त गात उत्तंग तोलि ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

(१) ए० कृ० का०—सुपरि। (२) ए०—उसामि।

तुम धरौ पानि कुम्मार रेनि। रप्यौ सु रज्ज कज्ज हत्ति रेनि॥
बोलयौ ताम पौची सुगाजि। उभ्भेर अग खूरत्ति आजि॥
छ० ॥ ५३६ ।

जित्तौ सुलोक सुरपत्तिराज। उद्धरौं सीस पग स्वामि काज॥
कूरभ राव बलिभद्र बोलि। पामार सिघ ओडे सु ओलि॥
छ० ॥ ५३७॥

जादव सुजात आरज्ज कमध। आभासि कहिय न्रप करहु बध॥
उभ्भरे सोय भर च्यार भार। गज्जेव गेंन असि रुद्ध भार॥
छ० ॥ ५३८॥

जित्ते सुलोक जे उद्ध उद्ध। सज्जै विलास सुरतरु निरुद्ध।
जे जे सुराज आभासि खूर। जपैव मेव तेते करूर॥
छ० ॥ ५३९॥

अति दुमन देखि जगल नरेस। चिच गराव चिते सहेस॥
निज बधु सुअन बरसिय बोलि। खूरत्त गहर जिन लाज तोल॥
छ० ॥ ५४०॥

रप्पे सुभट्ट सै सत्त तथ्थ। खूरत्त धत्त सग्राम हथ्थ॥
सह रप्पि पोस रेन कुमार। बधेव बध सारज्ज सार॥
छ० ॥ ५४१॥

ईसरह दास सुअ कन्ह सादि। कमधज्ज वीर चद्रह सुवादि॥
कैमास सुअन परताप मानि। सुअजैत करन आभासि आनि॥
छ० ॥ ५४२॥

सामत सिह गहिलोत गानि। परतोप सुअन परताप जानि॥
जयसिह महन सुअ बोलि वदि। परिहार तेज खूरत्त नदि॥
छ० ॥ ५४३॥

आभासि सब्ब परसस किन्न। गुन जपि प्रथक उचान भिन्न॥
रप्पै सु पान रेन कुमार। वाजे अनत वज्जे उदार॥
छ०॥ ५४४॥

हय दोय दोय दिन्ने सउच। राषे सु सब्ब भर राज सच॥
छ० ॥ ५४५॥

यह समाचार सुन कर कुमार रेनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना।

कवित्त। तब सुनि रेन कुमार। पच्छ रष्षै राजानं॥
पंच पथ्थ कै काज। मोहि दिल्ली धरवानं॥
इंद्रपथ्थ तिल पथ्थ। पथ्थ सोवन पानीपथ॥
बाग पथ्थ धर काज। और रष्षै सामंत सथ॥
छत्रीन अग्ग धर राज सुनि। जौ आपन अनकन करै॥
हरै जनंम मानुष सुपति। अरु निहचै नरकह परै॥छं०॥५४६॥

पृथ्वीराज का कहना कि पिता का वचन मानना ही पुत्र का धर्म है।

दूहा। तब राजन बोलै सुपुत। आदि अग्ग सु विचार॥
पिता वाच मानै सु सुन। ते धर राषहि[1] सार॥छं०॥५४७॥

कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरु राम और कवि चंद के समझाने से चुप रहजाना।

भुजंगी। तबै जंपितामं सुरेनं कुमारं। सज्यौ साथ राजंग जगं सुभारं॥
पिता देव सेवं[2] सुसेवं विरंची। न चूकै तनं षचि राजं सु अंची॥
छं०॥५४८॥

करो चूक सबि लागि राजं सुकाजं। सजौ बन्न मारग्ग बद्री सुआजं॥
जटा बंधि लंगोट अंगं तपेसं। महा मोनधारी वधं पंडवेसं॥
छं०॥५४९॥

तपै जाय कासी प्रयागं सुथानं। ग्रहै धोर तथ्यं करै धूम पानं[3]॥
इला आदि छत्री कर्यौ छित्ति कामं। रहौ लोभ माया धरे पच्छधामं॥
छं०॥५५०॥

इसी बात कहुँ ति कै मूढ प्रानी। कही बाद बादै कुमारंति बानी॥
सने[4] उच्चर्यौ ताम दिल्ली नरेसं। सदा विद्धि सिद्धी व राजंग एसं॥
छं०॥५५१॥

(१) ए० कृ० को०—राषै। (२) ए० कृ० को० देवं।
(३) ए० कृ० को०—नही मोह कामं पिता राजधानं। (४) ए०—मते।

महाजन्न मारग्ग बूझौ विचार । तर वेलि कित्ती चढै अम्म धार ॥
तन रीति आदित्त गत्ती समान । पुन जात अत पुन्न जात आन ॥
छ० ॥ ५५२ ॥

अह सक्रम प्रान सुरतान साथ । सजौ सूर राह चलै कित्ति काथ॥
कहै राज राम गुर पुच्छि दिष्यौ । कवीचद बानी सुवानी विसिष्यौ॥
छ० ॥ ५५३ ॥

गुर राज बोलै भट चद सायौ । पिता वाच मानै इहै पुत्र भायौ ।
अहो आदि माता पिता मूल जान । पछै तीरथ आठ सट्ट प्रमान॥
छ० ॥ ५५४ ॥

कहै गग गोदावरी ग्रेह माहै । जिनै मात सेवा पिता सेव ताहै॥
धरा अम्म राषे पिता बाच मानै । ग्रहै राज भार सुर पथ्थ थानै॥
छ० ॥ ५५५ ॥

व पूछित्ति काजै धर्यौ सूर लाजै । अरी आय लागै तवै जुद्ध साजै ॥
तुम काज ढिल्ली गरै लोज आनी । जवै आय लागै तवै काम जानी॥
छ० ॥५५६॥

तुम सथ्थ सामत पुत्र सुभट्ट । सजै भारथ सार ठेलै सु यट्ट ॥
इन वत्त कज्जै तुम पच्छ रष्प । सनी राज पुत्त न बोलेति भष्प ॥
छ० ॥ ५५७ ॥

उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना ।

सोइ विद्दि आरिष्टसोचै अपार । धरा व्योम पान तर बन चार॥
धरा धूरि गाजी रहै वारि वाह । रस छोनि सुक्कै दिग दाह दाह॥
छ० ॥ ५५८ ॥

फलत विकाल तर सुम्म नार । अव श्रोन धार वन वार वार ॥
गहक्क त गाजै चईत चिकार । दिन सह वद्दति फेकी पुकार ॥
छ० ॥ ५५९ ॥

करे मालय धप्पि प्रासाद कोट । प्रतिम्मा प्रतती चलै आस नोट ॥
सुप धोन छोन सनेन प्रचार । प्रती थान छुट्टै अपुट्टी उसार ॥
छ० ॥५६०॥

बहै अब्ब सम्मीर नीरं अपातं। भ्रमै गिद्धिनी चिल्लनी रूप रातं॥
विकंतं सकंतं अनूपं उहासं। परी गौप जायं गवायं परासं॥
छं० ॥ ५६१ ॥

सिरं दून चेवं अनेवं प्रसायं। नयंनं बयंनं श्रवंनं विथायं॥
बड़ं बागवा चीय माहीष तामं। प्रसंवं सरुंडं अभूतं दुरामं॥
छं० ॥ ५६२ ॥

तनं कंप स्वेदं फरक्कंत रोमं। मनं भीत रीतं चरं चंच लोमं॥
सु पन्नं दुपन्नं सुदीसै उरानं। लपै सूर सामंत कैलास थानं॥
छं० ॥ ५६३ ॥

महा बुद्धि दैवग्य बुझग्गै वजामं जगं ज्योति व्यासं हरी जोति तामं॥
लहै सब्ब जोतिष्य विद्या विनान[1]। उरं इष्ट भासे सरूपं सन्यासं॥
छं० ॥ ५६४ ॥

दुअं पुच्छि आभासि दिल्ली नरेसं। कही अंत आरिष्ट सोचै असेसं॥
कहौ बिप्प भा सैंवरा सेव सब्बं। निरष्पै सु कालं दुरासह अंबं॥
छं० ॥ ५६५ ॥

ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रहपाल का फल बतलाना।

कवित्त। तब जंपत जग जोति। व्यास हरि जोति अपारं॥
सुनौ राइ दिल्लीस। तजो मन षेद सुभारं॥
काल व्याल संसार। ग्रसै सब रिद्धि लोक रह॥
करौ न रोस सदोस। हंम जंपैं सुविद्धि इह॥
उच्चरै राज प्रथिराज तब। कहौ चित्त छंडैद्र मय॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनत। हिय हम मानहि अंत षय॥छं०॥५६६॥

हनूफाल। जंपे वतं जगजोति। हरि ज्योति वयासह जोति॥
विधि काल व्याल विनान। सुक मुनिय जान गियान[2]॥
छं० ॥ ५६७ ॥

आगंम आगम विद्धि। अति इष्ट बुद्धिय सिद्धि॥
ग्रहचार वक्र विगत्ति। षिति सयल भेद विभत्ति॥
छं० ॥ ५६८ ॥

(१) ए० को० कृ०—विज्ञानं। (२) ए० कृ० को० ग्यान विनान।

सनि वक्क दिल्लिय देस। सुरभन नयर विरेस॥
अरि ग्रेह कोप्यौ अप्प। सुर असुर मचि यद्दप्प॥छ०॥ ५६९॥
ग्रह विषम तन चहुआन। ग्रह दुष्ट छत्रि छितान॥
हुअ हि दु युद्ध तुरक्क। रह उच सजहि इक्क॥ छ०॥ ५७०॥
दिल्लीस[1] गज्जन ईस। सम चलहि प्रान पुरीस॥
दिल्लीय के दिन राज। चहुआन रेन विराज॥ छ० ॥ ५७१॥
साहाब सूअ सहाव। अति तेज होय सताव॥
करि बदि जीतहि देस। दल जोरि जर अस हेस॥छ०॥५७२॥
सब कारहि धरनिय पानि। सजि चलह कनवज थान॥
नन जुरहि कमध नरेस। सिर करहि गग प्रवेस॥छ०॥५७३॥
पिति जीति गज्जन ईस। सम जरहि दिल्लि सरीस॥
सम जुद्ध जगल राज। मिलि करहि आमि स आज॥छ०॥५७४॥
सम जग्गि गोरिय जुद्ध। पद रेनि पामहि उद्ध॥
दस एक सवत सट्ठ। सवि अग्ग द्वादस तत्त॥ छ० ॥ ५७५॥
ताव तच्चेव समथ्थ। असुरान दिल्लिय तथ्थ॥
एवत्त बुझि भय राज। स सच्चौ जरध काज॥ छ० ॥ ५७६॥

ज्योतिषी की वाणी सुन कर राजा का कुपित और क्लान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना की गोविन्द का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए।

कवित्त। सुनिय वत्त दिल्लीस। रोस उभ्भार अप्प तन॥
मन उदास चितास। काल मन्निय सु क्रत्त मन॥
निरषि स्वामि सामत। ताम पुम्मान स जपिय॥
अब्ब काल सथहै। छोनि इह फेरि न कपिय॥
रष्यहु सुरेन कुम्मार रज। धरावध ब ध्यौ सुमर॥
मम करौ मोह चितौ सुहरि। सजौ स्वरग मारग सुझर॥
छ० ॥ ५७७॥

(१) मो०—दिल्लेस।

तब जलद मेघ मंडिलिय। नयन पुंडीरिय सुसोभित ॥
चिसल पीत अंमरिय। गुंज मंजरिय अरोहित ॥
श्रुत कुंडल मंडरिय। मोर पंषरिय सिरोयनि ॥
मुरलि मधुर मुष्परिय। चक्र बंकुरिय करोयनि ॥
इय धयान मंन राजन धरिय। मत्त धत्त पच्छै सरिय ॥
कैलास वास सामंत सथ। कलह केलि रची ररिय ॥छं०॥५७८॥

हनूफाल। वपु स्याम धर मति भेष। चष पुंडरीक सुरेप ॥
कच वक्र कुंतल लीन। मकरंद जै मुप पीन ॥ छं० ॥ ५७९ ॥
सुक्रीट हार बिहार। तम हरन किरन प्रहार ॥
श्रुत कुंड लेन विलाल। सक सकल ग्रीव विसाल ॥छं०॥५८०॥
निज नास मोति सुहंद। तिलकं सुसम अति विंद ॥
तें प्रतिय[1] अमर प्रतीत। रघुवंस राजस रीति ॥छं०॥५८१॥
करि करिय सिंगिनि पानि। मधु मधुर मिष्टित बानि ॥
धरि पुट्टि तूर धनुक्क। जिय जासि जानि जनुक्क[2] ।छं० ॥५८२॥

कवित्त। सुमन मयन मंजरिय। रमन षंजरिय विरग्गिय ॥
तिलक अलक जंजरिय। असित अंजरिय द्रिगंमिय ॥
सुश्रित चिसिति अग्गारिय। चिहुर उग्गारिय सिरन्निय ॥
सरन[3] हंस गंगरिय। डंड डंमरिय करन्निय ॥
बर बिदुष सुष्प कह हंकरिय। धरिय भगति दिसि नंजरिय ॥
अइय द्रग्ग पंपं परिय। राज ध्यान उमया धरिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दूहा। हरि माया उमया सुहरि। निपवर चिंतिय ध्यान ॥
मन एकंत समंचरिय। प्रति बोधे सब्बान ॥ छं० ॥ ५८४ ॥

क्रोध और क्लान्त अवस्था में पृथ्वीराजकी मुखप्रभा वर्णन।

कवित्त ॥ अति तरक्क[4] बर तिष्प। षंभ तिष्पन[5] तररक्किय ॥
बंभ अंड विहरिय। मनहु दारिम दरक्किय ॥

(१) ए० कृ० को०—प्रीति। (२) मो०—जनक्क। (३) मो०—रसन।
(४) ए० कृ० को०—तरप्प। (५) ए० कृ० को०—तष्पन।

फनिन परिय फु फरिय। फेन फु करिय फनिदह ॥
परम उग्र वपु दुर्ग। दिग्ग मुद्दिग दिग अतह ॥
नर हर अपुव्व नहपुव्व पर। दुरद दनुज दारुन दिसनि ॥
जन हेत विघुन्निय अधम उर। रुहिर चद घुटिय रिसनि ॥
छ० ॥ पृ८५ ॥

नद्दिय भीमह नद्द। षुभ षुभिय अररक्किय ॥
अध धक्किय धर धरनि। सीस फनपति सुररक्किय ॥
पिष्पिय रूप अपुव्व। सव्व लोयन वल घट्टिय ॥
अट्टहास टह टह उघट्टि। वरपुज निघट्टिय ॥
गहि पलय ताहि तिम दुर्ग द्रिग। नर हर तप्पिय तीन पुर ॥
चव्विय वहहु विद्दरि नपन। दप्पह चद दवित्त[1] उर ॥
छ० ॥ पृ८६ ॥

काल चक्र की प्रभूति और राजा का रेनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना।

वाधा ॥ इह भविष्य बीतय दिलेस। आवरि वीर अग अस हेस ॥
मनि काल कित कारन रूप। सादैवत्त आदि गति ओप[2] ॥
छ० ॥ पृ८७ ॥

काल दैव देव सहार। काल मदिर मेर ढहार ॥
काल जगत जगत्त विलोम। काल सिध साधक्क न ओम ॥
छ० ॥ पृ८८ ॥

काल अजा जठर हरिवास। काल मानुष इद्र विनास ॥
काल लका गढ किय पाज। काल दिय म्वभषन राज ॥
छ० ॥ पृ८९ ॥

काल जादव कुल सहार। काल द्वारिक समुद सिधार ॥
काल जलयल एक पसार। काल कन्ह वडपन्न सघार ॥
छ० ॥ पृ८९० ॥

(१) ए कृ को तवित। (२) ए कृ को सा दैवत आदि गति ओप।

कालं बालं कालं वृद्धं । कालं जोगी कालं सिद्धं ॥
कालं सूरिज कालं चंदं । कालं नवै डुंगरी नंदं ॥छं०॥५९१॥
कालं ब्रह्मा केइ संहारे । कालं ग्रह नव नाषिच तारे ॥
मन्नि काल गति उति चहुआनं । आवरि निज मारग कुल कान[1]॥
छं० ॥ ५९२ ॥

तब सुनि रेन कुंअर कहि सारं । इह गति इह संसार असारं ॥
इतनी बार न बोल्यौ एसं । गुरु भट नृप तीने सविसेसं ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

इह अब काल बयाल गति जानी । ते हम ग्रहै तेग परिमानी ॥
बोलै अग्गर रेन कुमारं । किय परसंस राजगति सारं ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

राषहु रयन थान गति थित्ती । जानहु चित्त रीति रज गत्ती ॥
का जानै सज्जी का भज्जी । जग जानै दुज्जर गति लज्जी[2] ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

रष्षहु रयन दिल्ली रजभारं । तुम जानहु षिचौ षग सारं ॥
राषहु बंध नयर सुभसाजं । जं निरमितं सकल कुल काजं ॥
छं० ॥ ५९६ ॥

तब जंपै नमि रेन कुमारं । सेवा वाह पिता अगि सारं ॥
कै साजो सेवा जुध अष्षं । कै परसन बद्री पति दष्षं ॥छं० ॥५९७॥

बार बार जंपन नहि कामं । अब हम तुम रष्षौ रजमामं ॥
तब जंपै रावल प्रति राजं । तुम रष्षहु बुग्गरि सुत आजं ॥
छं० ॥ ५९८ ॥

तब धरि पानि षुग्गान कुमारं । किय संबोधि सुचित चित सारं ॥
किय अप रेन कुमार सुचित्तं । जंपे सहु चहुआन सहित्तं ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

राषहु कुमर सष्ष भरसारं । जे रज्जै साजै रज भारं ॥
उट्ठिय मंत चिंत करि राजन । बाज्यौ बीर धीर सब तोजन ॥
छं० ॥ ६०० ॥

(१) ए. कृ. को.-आवारिन मारग कुलकानं । (२) ए०-लग्गी ।

जै जै जै बानी आया सह। सुनिय मनि क्रित काल सुतासह ॥
छ० ॥ ६०१ ॥

रेनसी जी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा।

कवित्त ॥ * चक्रव्यूह मारय्य। रचिय द्रोण आचारिज ॥
दुरजोधन नृप कुंअर। नाम लषमनो मद्दि सज ॥
दस हजार अनि कुअर। रप्पि पारथ्थ जुध काज ॥
एक एक भुजबल प्रमान। भद्र जातीक अयुत गज ॥
ते हनिबि सकल कहि रयनसी। भजि व्यूह लगि षग्ग रस ॥
अभिवन्न कुअर अरज्जुन कौ। काम आय षोडस बरस ॥
छ० ॥ ६०२ ॥

कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना।

पद्धरी * ॥ कविचंद जपि मधु वचन जीह। राजिंद कुअर सुनि रयनसीह ॥
सत एक पुत्र हुअ रिषभ देव। बड पुत्र भरथ तिहि सुनहु भेव ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

बैराग चित्त लग्गौ सुरंग। माया अलिप्त भेदै न अंग ॥
तप करन चलिय तजि राज पाट। परमोधि आय मिलि रिष्य घाट॥
छं० ॥ ६०४ ॥

पित मात जियत तू तजहि देस। अपहास करहि अनि सुनि नरेस
उत्तानपात सुत ध्रुअ जेम। रहि जाय वत्त इल अचलतेम ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

पाटवी पूत छडहि न रज्ज। आगम निगम बेदन बरज्ज ॥
इन भति उक्ति अन्नेक उक्त। तिहि काज राज नवषंड भुक्त ॥
छं० ॥ ६०६ ॥

समझाय आनि ग्रह फिरि भरथ। दै राज रिषभ निज हुअ अतिथ्थ
भागवत कथा सभलि प्रबन्ध। नगहट्ठ छडि मन महि समध ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

* ये दोनों छन्द मो. प्रति में नहीं हैं।

पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्यभिषेक करना।

कवित्त ॥ करिय सुचित भर सब्ब। रोज दिन्नेव द्रव्य भर ॥
मंगि मदन शृंगार। गज्जबर पट्ट मद्द गर ॥
रयन कुमर आभासि। दीन माला मुत्ताहल ॥
असी बंधी निज पानि। बंदि कीनौ कोलाहल ॥
आरोहि गज्ज कुमार निज। पच्छ बंध सा सिंधु किय ॥
जोगिनिय बंदि चहुआन पहु। कत्थ काज मन्नेव इय ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

दूहा। रेन कुंअर सोचित्त थपि। ठयौ जुद्ध मति मानि ॥
उट्ठि राज सब ग्रेह कों। दिय अग्या बर बानि ॥ छं०॥६०९॥

दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना।

अरिल्ल ॥ उठ्यौ मंत चित्त करि राजन। जै जै जै बानी आयासन ॥
बज्यौ धीर बीर रस ताजन। सुनिय मंच किलकान सुतासन ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कबित्त ॥ उट्ठि महल प्रथिराज। मंगि आरोहन बाजिय ॥
रावल प्रथम चढाय। चल्यौ चहुआन सुताजिय ॥
करि अस्तुति सम सिंघ। तुमहि बहुं बहुइय ॥
तुम जोगिंद जग जित्त। कित्ति तुम कहिय न जाइय ॥
परसंस करत अन्नेक परि। करि डेरा रावर समर ॥
चढ्ढनह[1] बर निसि सेष कहि। आयो बज्जान बजत घर[2] ॥
छं० ॥ ६११ ॥

उधर से शहाबुद्दीन का सिंधु नदी पार करना।

बाजि घरिय घरियार। साहि उत्तरिय सिंधुनद ॥
विषम वाव उड़ि भ्रिंग। सिंधु छुट्यौ कि सद्द मद ॥
तमसि तमसि सामंत। राज रजस किय तामस ॥

(१) मो.-चढतिहि। (२) मो.-आयौ बजत बजन्न रघ।

घुमरि घुमरि नौसान। थान जग्गे मन पोवस ॥
निसि अद्ध अनेही पीय तिय। पिय पिय पिय पप्पीह तिय ॥
प पनिय फरकि अंपिय अनपि उद्य अनद[1] सुबीर किय ॥
छ० ॥ ६१२ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरग त्याग कर जंग के लिये सजना।

उदै अनदिय बीर। बाजि रनजग बीर बर ॥
क्रोध लोभ मद उतरि। मद पिन्नो मुगत्ति सर[2] ॥
अद्ध अनेही[3] राति। अद्ध नेह सुलितान ॥
दुहु मिलंत महिलानि। मिलत चित अच्छरि धान ॥
तिय मद्धि प च घट्टीय घटि। वर मिलान पोमन्न करि ॥
वर वीर वेखि वढ्ढिय विषम। करन[4] छिमा छिम छन उसरि ॥
छ० ॥ ६१३ ॥

मोतीदाम ॥ सुबीर अनद अनदिय नद। नच्यौ अम छ डि भयानक छद ॥
कला काल अप्पिर सुच्छिर बानि। सिपौ सिप अभ्भ सिक डिय जानि ॥
छ० ॥ ६१४ ॥

गये निज मदिर समंत सूर। मिले नर नारि महारस नूर ॥
मिले रस राजस पग कुँआरि। करी परिकम्म सुनेदिय नारि ॥
छ० ॥ ६१५ ॥

अनेक सुगध सउद्ध अनूप। मिलत[5] छिनेक सु मन्नहि भूप ॥
करी घन नेहिय नेह प्रकार। मिलन सुमनहि मनहि सार ॥
छ० ॥ ६१६ ॥

करी नर नारि सुरग उधग। पुछै चर आगम साय सुरग ॥
रज निय अत रही इक जाम। कहै दोइ दूत सुआइय ताम ॥
छ० ॥ ६१७ ॥

(१) मो अनदिय। (२) ए कृ को वर। (३) ए कृ, को सनेही, सनेही।
(४) ए कृ को करिय। (५) ए,कृ को मिल्ल।

पिय करुना मुष पी मुष बीर। दियौ रस संकर अंतर चीर॥
संयोग वियोग नवै रस बंध। लही चक्क चक्किय है निसि अद्ध॥
छं० ॥ ६१८ ॥

षिय पिय पिट्टन दिट्ठ भवन्न। रहौ चित पुत्तलि जनि भवन्न॥
पुरं पुर भ्रग्गनि केवल साहि। मनों बिंब चोल करुन्न मिलाहि॥
छं० ॥ ६१९ ॥

बिथा विथ कंपिन जंपिन सेइ। को पुच्छहि काहि को उत्तर देइ॥
कथौ कथि अंगन अंगन ताहि। रहे चप जानि टगट्टग चाहि॥
छं० ॥ ६२०॥

क्रमं क्रम जग्गिनि लग्गिन नेन। गये रस छंडि मनो असु हैन॥
रसी रस सिद्धिय विद्धिय माल। असे सब सुष्य[1] भयानक वयाल॥
छं० ॥ ६२१ ॥

निमेष करी करुना रसकेलि। उठी बर वीर बरब्भट बेलि॥
दिषे दिषि कंत सु दंपति चाहि। मिले चित मित्त सु अंगन साहि॥
छं० ॥ ६२२ ॥

जनौं पर निद्धि सु देषिय रंक। टरै नहि चेतन ज्यों निधि संक॥
भये रस सत्त प्रभात प्रामन। बजे रन जंग चढे चहुआन॥
छं० ॥ ६२३ ॥

सुने धुनि राज गवन्न गवन्न। तजे तिन मत्त भवन्न भवन्न॥
घनंकि निसाननि नादानि वद्द। षलक्कि जंजीर उमद्द निमद्द॥
छं० ॥ ६२४॥

षनक्किय संकर अंदुनि अद्द। ठनंक्किय घंट सु घंटन हद्द॥
धुरक्किय घुध्धर दादुर भद्द। * * * छं० ॥६२५॥
जयंजय सद्द वदै चहुं ओर। करै जनु प्रात सिषं डिय[2] सोर॥
झनक्किय भेरि सु झझ्झर वद्द। रनक्किय बीरन फेरिय सद्द॥
छं० ॥ ६२६ ॥

(१) ए० मुष्य। (२) ए० कृ० को०—सिकडिय।

हरक्किय झूझ सुराज रवद्द। भरक्किय नाग गयो सिरलद्द॥
तुरक्किय तुग तुरगन हीस। सरक्किय सप्पथ सेसनि सीस॥
छ०॥ ६२७॥

धरक्किय पष्पर पष्पर तोन। ढलक्किय ढाल सुढिल्लिय ग्रीन॥
हलक्किय हाल फवज्जिय सूर। धरक्किय धाम सु कातर कूर॥
छ०॥ ६२८॥

कथं कथमान गुमान उमीन। दुअ दस कोस मिलान मिलान॥
सु हि दुअ मेछ बज्यौ रन तोल। गयौ दिव देव कवी दिय बोल॥
छ०॥ ६२९॥

निभेपक भूमि अयासह अग। चढ्यौ जनु इद्र धनुहद्द रग॥
जय जय सद्द करी तिहि बीर। कह्यौ तिनि राज रवन्नह पीर॥
छ०॥ ६३०॥

कविचन्द का बीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और बीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकडा जायगा।

दूहा। तुम सु बीर आनहु भवसि। कहौ राज निस्मान॥
बीर कहै समर परै। यहै मेछ चहुआन॥ छ०॥६३१॥

पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पडाव डालना।

साहस गहन सहन्न किय। सुरिग रास चहुआन॥
पच सबद बज्जिय सघन। दिय दस कोस मिलान॥
छ०॥ ६३२॥

पृथ्वीराज के कूच करते समय सयोगिता की बिरह बिथा का वर्णन।

कुडलिया। नृप पयान पोमिनि परषि। घटि साहस घटि एक॥
सुकथ केलि पियू प्रिय। जतन करहि सपि केक॥
जतन करहि सपि केक। हाय करि जै जै अपहि॥
दैत कट्ट कर मिंडि। थरकि थरहर जिय कपहि॥

(१) ए० कृं० कौ० तिहिं।

इह प्रयान नृप करत। परी संजोगि धरा धपि॥
सषी करत सब जतन। चलत पयान तहां नृप॥
छं० ॥ ६३३ ॥

त्रोटक ॥ जतनं जतनं किय झंझलियं। दिषि दीपक भौन भर्यौ सुहियं॥
भवनं भवनं भवना गरियं। धर मुच्छि परी बुधि सागरियं॥
छं० ॥ ६३४ ॥

ससि सूर चयं रवि जोग ससी। विष ज्वाल असी सुमनं विगसी॥
द्रिग चंचल अंचल सोमुदयं। विरहा उर उग्ग ग्रसी सुधियं॥
छं० ॥ ६३५ ॥

अहि धुट्टि लियं बयरं जुलियं। यह तुट्टि सुधा निधि की विधियं
बर बिंब बिलोकि सषी करियं। असु आसिक नासिक सें झरियं॥
छं० ॥ ६३६ ॥

अह कट्टहि निट्ट निसान घटे। बिरही घटिका जनु अग्गि पढै॥
बिरही बरनेह अनंग कसं। भए जानि किरोग चिदोस बसं॥
छं० ॥ ६३७ ॥

सुबढी विरही न घटे न घटं। सु चढी जनु वेलिय ब्रध्ध बटं॥
जल नेननि बूंद परै कुचयं। तिनकी उपमा नयनं सचयं॥
छं० ॥ ६३८ ॥

जुरठी हुति पुब्ब कमोद कली। तिहि तारक सोम बसीठ हली॥
इहि सारन प्रान न मुक्कि पती। तिन मंडि रहे दुष देषि जती॥
छं० ॥ ६३९ ॥

चल चंदन चीरति सीर करै। लहरी बिष जानित प्रान हरै॥
सषि सूंठिन भूढ़ रसे सुतनं। घन सार निहारनि नारि थनं॥
छं० ॥ ६४० ॥

नटि नारिय नारिय पानि गहै। तजि जाहिन अंक वियोग सहै॥
पल ध्याननि आननि नेन चहै। अलि ओटन ओट वियोग सहै॥
छं० ॥ ६४१ ॥

घन धूमरि झूंमि समीप रहै। ठग ठग्ग लगी चष कोन चहै॥
षिन दाषिन षीनह षीन भई। घरियार निहारत प्रात भई॥६४२॥

कुंडलिया ॥ घर धयार वज्जिग विषम । हलिग हि दु दल हाल ॥
दुतिय चंद पूनिम जिमैं । बर बियोग बढि बाल ॥
बर बियोग बढ़ि बाल । लाल प्रीतम कर छुट्टौ ॥
है कारन हा कंत । आस आसु जानि न फुट्टौ ॥
देषत नेन सुभझै न दिसि । परिय भूमि सथार ॥
सजोगी जोगिन भई । जब बज्जिग धरियार ॥
छ० ॥ ६४३ ॥

कवित्त ॥ बढि बियोग बहु बाल । चंद विय पूरन मान ॥
बढि बियोग बहु बाल । वृद्ध जोवन सनमान ॥
बढि बियोग बहु बाल । दीन पावस रिति बढ्ढै ॥
बढि बियोग बहु बाल । लच्छि कुलवधु दिन चढ्ढै ॥
बढ्ढै बियोग बालनि बिरति । उत रावन सेना चढिय ॥
करकादि निसा मकरादि दिन । बाल बियोगत सम बढियं ॥
छ० ॥ ६४४ ॥

वही रत्ति पावस्स । वही मघवान धनुष्य ॥
वही चपल्ल चमकंत । वही बगपंत निरष्य ॥
वही घटा घनं घोर । वही पप्पीह मोर सुर ॥
वही जमी असमान । सही रवि ससि निसि वासुर ॥
वेई अवास जुग्गिन पुरह । वेई सहचरि मंडलिय ॥
सजोगि पयपति कंत बिन । सुहि न कछू लग्गत रलिय ॥
छ० ॥ ६४५ ॥

दूहा । जल अधार[1] रष्यो जियन । व्रत रष्यौ नन प्रान ॥
अब रवि मंडल बर मिलन । कै जोगिनिपुर थान ॥
छ० ॥ ६४६ ॥

हरिह, आदि अमर सकल । अलि रष्यह, अलि झोर ॥
जोग भोग पिय संग रहि । तियन ब्रम्ह घर और ॥
छ० ॥ ६४७ ॥

कै धरणी कै अम्बरह । कै अंतर तरु मूल ॥
दैवकाल वातूल मिलि । उडहि तंत तन तूल ॥
छ० ॥ ६४८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अबीर ।

पृथ्वीराज की चढ़ाई की तैयारी का वर्णन।

पद्धरी॥ चढि चल्यौ साह चहुआन सूर। धुंधरी बिदिसि दिसि दिपिकरूर॥
सुर धुनि निसान बज्जे सुरंग। नप फेरि रंग सिंधू उपंग॥
छं० ॥ ६४९॥

दल चलहि दवरि चंपे दुरंग। उरगंत पंथ इत्ते कुरंग॥
सो सद्द बद्द संभरे सूर। उट्ठति मुच्छ बंकी करूर॥
छं० ॥ ६५०॥

चिंतवै सूर सा भ्रंभ हेरि। मन कहै गहै सुरतान फेरि॥
बारुन्नि बद्दै गजदान भद्द। क्रोधद्द कुरंग दीसै रवद्द॥
छं० ॥ ६५१॥

आरुहै मिट्ठ गज तुरंग बद्धि। कातरिति कंमि[1] गिरि धुम्र चद्धि॥
धावंत तेज पुब्बैन धाइ। छुट्टै न प्रान जिन करै ठाइ॥
छं० ॥ ६५२॥

मंद सरक धरक जोगी समान। क्रम क्रमनि असो पयपयन जान॥
दीसै तुरंग अवधूत धूत। मानी सुदंति पब्बै सपूत॥
छं० ॥ ६५३॥

चतुरंग सेन सजि बर प्रमान। सिंधूरन अस्स चढ़ि चाहुआन॥
षोले किपाट बर सुगति रूप। सोमेस पूत अवधूत भूत॥
छं० ॥ ६५४॥

चहुआन को चलते समय अशकुन होना।

त। चढ़त राज चहुआन। छीक अगनेव देव दिसि॥
मिल कुंजर बिन दंत। अश्व अपलानि चिंत वसि॥
खूच मंत तुट्टयौ। राज दिट्ठ सु विचारय॥
गौर कुंभ उप्परै। स्याम कुंभद्द अद्धारिय॥
तजि मोष रस्स संधी चिषा। आवै क्रित गवनन छची॥
असु नीम जोग पंचमि दिवस। चढयौ राज निस[2] तुछ षची॥
छं० ॥ ६५५॥

(१) ए० कृ०को०— कार्य। (२) ए०—निज।

गजनी के गुप्त चरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना।

दूहा। इह चरित्र पिष्षिय चरन। वह चरित्र नहि राय॥
सो चरित्र सुरतान मों। सिध उल्लघिय धाय॥
छ०॥ ६५६॥

हुवि हमीर दल हाम करि। मन करि अग्गो पच्छ॥
दूधैं दह्यौ ब्यौ पिर्यै। फूकि फूंकि कै छच्छ॥
छ०॥ ६५७॥

कुंडलिया॥ कूच कूच पंथार परि। हलिग हिंद दल हीच॥
कह्यौ राज सुरतान कह। सिंधु विहथ्थै बीच॥
सिंधु विहथ्थै बीच। फेरि पुच्छै चहुआन॥
कहौ मग्ग परिमान। जेह सख्या तुम जान॥
कौन ठौर जुध मेल। होइ चितौ तुव सोचह॥
सकल सबै सामंत। करौ नदि उत्तरि कूचह॥
छ०॥ ६५८॥

राजपूत सेना का पहला पडाव पानीपत में होना।

दूहा। आय जलह पथ उत्तर्यौ। दिल्ली वै चहुआन॥
हूरन अति आनंद हुअ। सहि सजोगी हान॥
छ०॥ ६५९॥

शाही सेना का चिनाब नदी पार करना।

कवित्त। दिल्लिय ते सत कोस। अग्ग सिंध[1] नदी कहिज्जै॥
द्वादस नद संतनज। तहा न्रप दल सलहिज्जै॥
दिल्ली ते सत दोइ। नगर लाहौर सु थान॥
असी कोस नदि विथह। परें लाहौरथि जान॥
उत्तरी सिंधु साहाब दी। विहथ परै आयौ सुरजि॥

(१) ए०—सिंध, कृ० को०—सिंह।

दिन सत्त अट्ठ महि जानिहौ। ओ आयो चिन्हाव गजि ॥
छं० ॥ ६६० ॥

दूहा। सा चिन्हाव लाहौर तें। कही कोस च्यालीस ॥
अप्पन सेन समाहिकै। जाय मिलौ दिल्लीस।
छं० ॥ ६६१ ॥

पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मांगना।

कवित्त। इह अवाज पुंडीर। सुनिय वह रोस उपन्नौ ॥
पावस राइ हिंसार। कोट छंडवि संपन्नौ ॥
आज राज कौ काज। करौं तिल तिल तन बंटौ ॥
तौ धौरंजा धीर। स्वामि अग्गैं रन नट्टौ ॥
इनवार भ्रत्य जग्गौ नही। छोनी छल कायर करै ॥
हारै जनंम मेटै सुजस। कहर क्रूर दोजिग परै ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

आयौ छंडि हिंसार। राज सतरंग मिलन्नौ ॥
सबैं सूर सामंत। जाय अग्गैं होय लिन्नौ ॥
लग्यौ पोइ रा जान। भाव रष्यै मन उंचौ ॥
हेत बत्त पुच्छी न। नैन ते नैन दुमंचौ ॥
यौं कहै सबैं सामंत तब। राज पाय पुंडीर गहि ॥
अपराध कोटि बगसंत नप। हूई बात पिछली सही ॥
॥ छं० ॥६६३॥

पृथ्वीराज का पुंडीर वंश का अपराध क्षमा करना।

डलिया। तब तुम लुटि छंडिय सहर। अब आए जुध भीर ॥
धीर लाज कबि लगी गनौ। रे पावस पुंडीर ॥
रे पावस पुंडीर। धरि लाजह जल रष्यौं ॥
नत[1] सोमेसर आन। मान गढ़ते गहि नष्यौं ॥
हंसहि[2] मोहि सामंत। लैजु आय तुम सब्बह ॥

(१) मो० नन। (२) ए० कृ० को—सहहि।

कहै राज पृथ्वीराज। सहर लुट्यौ तुम तग्गह ॥
॥ छ० ॥ ६६४ ॥

कवित्त। तुम लुट्यो लाहौर। भौमिभज तुमौ भग्गा ॥
साम ध्रम्म पथ मुक्कि। पथ सो द्रह सुलग्गा ॥
ध्रम्म धीर अरु सुकथ। पुन्न भग्गा चहानौ ॥
राज मह चहुपो। भगि अग्या राजानौ ॥
पुंडीर राइ साधन सकल। अकल मोह बधौ नजिय ॥
दिन अठ द्रह चहुआन कौ। रहा न नृप दरबार विय ॥
॥ छ० ॥ ६६५ ॥

धरिय चयारि पुंडीर। छिमा छिम अदव परयौ ॥
सामतन सब सुनत। मत अच्छौ मिलि भर्यौ ॥
हमहि द्रोह लग्यौ दिवान। सुतौ सुरतानह जानै ॥
दोह सत्त अट्ठमै। होइ मौलिप चहुआनै ॥
जब लोह कोह परियारतें। काटि अरिन भजौ सुरिन ॥
प्रथिराज काज तरवारि झर। जौव उडवि लग्गौ तरनि ॥
॥ छ० ॥ ६६६ ॥

शाही फौज की चाल और नाके बंदी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये लेजाना।

दूहा। धरिय पच वत्ती सुवर। कागद आय सपन्न ॥
अरियन दिसा जु विघ्नी। जोग नेव कर दिन्न ॥
॥ छ० ॥ ६६७ ॥

सोरठा। सोत औ फल लाभ राजन वर गोरी ग्रहे बंधन ।
पावक अरि रोह दाहन वर भूभार उत्तारय ॥
भान पगय पग जग्य सरस वेग्ग वर छीमय ॥
नेय अूत विधान न्निमित वर साम भुज राजय ॥
॥ छ० ॥ ६६८ ॥

दूहा। ॥ सो मतन मतौ नृपति। वामन जब राइ ॥
और काम चहुआन कौ। कहै सुकिज्जै धाइ ॥
॥ छ० ॥ ६६९ ॥

कवित्त ॥ सुभर उतरि सतलंज । चंद पट्टौ कंगूरह ॥
लै आयौ जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
अरु जाल पाप रसि परस । परस दरसत दुष अप्पौ ॥
आदि जुद्ध दय दीन । सिंघ पप्परि किन दिप्पौ ॥
हम नमसकार करि पुच्छयौ । अरु पुछमौ पछ्नौ बिगति ॥
हुं कहों सुतुम जानहु सकल । चलहु चंद अग्गे निरति ॥
छं० ॥ ६७० ॥

कवि चन्द का जालंधर गढ़ जाना और हम्मीर को रामझाना ।

मुरिल्ला ॥ मग्गह चलंत नहि करि विरम्भ । सामंत सूर सुभर सुदित्त तम्भ ॥
जालंध जाहु नृप पति सुकाज । राषहु तराज प्रथिराज आज ॥
॥ छं० ॥ ६७१ ॥

कवित्त ॥ कह्यौ चंद बरदाई । बत्त हाहुलि हमारीं ॥
स्वामि अग्ग चिंतियै । दोस टारियै सरीरह ॥
चहुआना दौ राज । धान जंबू ग्रह लग्गौ ॥
बोल वंक तजि कंक । साम अग्गाह पथ जग्गौ
जंमन मरंन भंजन भिरन । जंत रीति सह जानियो ॥
कंगुरह राइ बत्तें अचल । भई बचन परमानियो ॥
॥ छं० ॥ ६७२ ॥

चलत मग्ग इह मंगि । राजा तव लगि इहि धीरह ॥
लै आउं जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
नदि विषाह उत्तरिग । आय कंगुर सपन्नो ॥
पंच सत्त पंच पैडि । आय अग्गौ होइ लिन्नौ ॥
भोजन भगति बहु भाँति किय । सब पुच्छिय राजन बिगति ॥
जालंध राइ जंबू धनि । सुनि हमीर चंदह सुमति ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

प्रथम बाह असनान । अष्ट भुज देवि परसनरासौ ॥
तहं सुदेह रा ग्राम । बान गंगा अब दरसौ ॥

गए पाप जनमत। भेट कगुर गढ रानी ॥
और मिले हम्मीर। सामि भ्रम्मह सहि नानी ॥
तुम कहि जुहार सामत सब। अरु राजन बहु हेत धरि ॥
इन वार तुम्म हम्मीर नृप। सजौ सेन सुरतान परि ॥
छ० ॥ ६७४ ॥

दूहा ॥ मुष मिट्टी रुट्ठी सुजी। हाहुलि राध नरिंद ॥
बोल बक सो कक करि। जपि सु मुप जै चंद ॥
छ० ॥ ६७५ ॥

कवि चन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो।

कुंडलिया ॥ ढिल्ली वै है गै दिसा। ता राजन लगि भीर ॥
हा तौत रन आतुरह। चढि हैवर हम्मीर ॥
चढि हैवर हम्मीर। साहि नदि सिंधु समुक्की ॥
राह रोस गोरी नरिंद। चहुआन सरुक्की[1] ॥
पग्ग मग्ग अकलक। कित्ति बोहिय चलाई ॥
तौ लागो संग्राम। भार अप्पो ढिल्लाई ॥
छ० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ कै कारन भौ वै दिसा। चढि ढिल्ली वै भद्द ॥
बक बिसाएन भरह घौ। लै लाहौरी हद्द ॥
छ० ॥ ६७७ ॥

कवित्त ॥ इन लाहौरी हद्द। कक करि बैर बिसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। भीर व्यापार बसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। मूल बिन व्याज साहि लिय ॥
इन लाहौरी हद्द। बाल चहुआन सत्य किय ॥
लाहौर हद्द अजहू सकाल। करि जग्य व्योपार बर ॥
हाहुलि हम्मीर दो पग्ग बचि। करो धरहर साहि बर ॥
छ० ॥ ६७८ ॥

(१) मो०—भान चहुआनाह रुक्की।

बोलां बंकस कंक। केलि संभलि रा गोरी॥
वे उ-ऐं उन्हां कहै। पंचौ नद मेरी॥
जुआनी बज्जागि। लागि बीरां उन्हाई॥
हो हमीर नरिंद। चंद आयो न बुझाई॥
खगधार भ्रग्ग षत्री तनौ। चूकै न्यक निवासियै॥
जै काम सूर साधन चलै। धूधू मंडल वासियै॥
छं० ॥ ६७९ ॥

हम्मीर वचन।

के दीहां[1] लगि केलि। करौ काहे लगि गहुगहगौ॥
हट गलहां सों लागि। जाइ कैरव[2] कुल बुझगौ॥
हो हमीर हग्गीर। चंद बत्तां करि दिष्यौ॥
जो पंचानदि पंच देस। अद्धा अध नष्यौ॥
कहियै न सुष्य नर लोक को। किंसुर लोक सुहाइयां॥
मिष्टान पान भामिनि भवन। पुच्छो तोहि कहाइयां॥
छं० ॥ ६८० ॥

कवि चन्द वचन।

धिग्ग सुष्य संसार। धिग्ग मिष्ठान पान बर॥
सुपन में ईषह षत्त। मिष्ट लग्गै हाहुलि पर।
न्यक संधि में परै। क्रग्ग धर बंध भार गिर॥
कातर मन छंडियै। जीह सल बंधै दुद्धर॥
सुर लोकहु नर न्यकपन। जस अपजस बंधी रवन॥
मो बुझि गहुगिहगह पच्छै मरौ। जानि वक्र ग्रह मुगति पनु॥
छं० ॥ ६८१ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। नाम तुम चंद न्याय धरि॥
कहौ मंच कुल वह। कबहु उतरै न संभरि॥
राज नीति जानहु न। साहि दिष्यौ दल अप्पन॥
गलहां करि मरिहौ जु। विरद लभ्भौ उर कंपन॥

(१) ए०कृ०को० हीहां। (२) ए०कृ०को० कोरां।

जद्यपि सुभोन उग्गर तपै। जद्पि संभ्रु च पिरु गहन ॥
चहुआन अगते दिन नही। गहन राज ते रिपु रहन ॥
छ० ॥ ६८२ ॥

कविचन्द वचन।

सुनि हम्मीर नरिंद। विधिनि वधे बंधन वर ॥
डोरी धन न्निम्मान। काल पचौ निकट कर ॥
पय लग्गोनिय मीच। मत कौ करै जियन कौ ॥
विधि विधान न्निम्मान। झूठ उच्चार कियन कौ ॥
गल्हा न सच सचै ननह। सो न[1] रहै गल्हा रहै ॥
उच्चरै चंद जंबू धनी। साच एक जुग जुग चहै[2] ॥
छ० ॥ ६८३ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हम्मीर सुनि चंद। हुअै दिन अदिन बिचारौ ॥
जब रावण हरि सीत। कियौ गढ लंक संघारौ ॥
अदिन काज पंडवनि। जूअ सों हेत बिचारौ ॥
अदिन काज परिछित। रिष्य गल अप्प हकारौ ॥
इह अदिन बुद्धि सामंत सब। कलह केलि अति बल सरिय ॥
हरि हरा देख इंद्रादि सुर। वरजि गये अति गति धुरिय ॥
छ० ॥ ६८४ ॥

मिटै न बर सबंध। इतो अनयो क्यों सहिय ॥
चंद बिंब चहुआन। भूमि भारह न्निब्बहियै ॥
जैत सुभर बलिभद्र। बीर बंधन सुविहान ॥
बड गुज्जर रा रोम। झूठ बंधै बर बान ॥
बीरम भग्ग मन जिहि बरनि। नर बरनि तिहि सोइ नर ॥
जानियै न मन छिज्ज सबर सुगति[3]। यो धर बंध पूरन कर ॥
छ० ॥ ६८५ ॥

कविचन्द वचन।

चंद कहै हम्मीर। अनय पचौ क्यों आवै।

(१) ए० छ० को०—मोन। (२) मो रहै। (३) ए०कृ०को०—सुगति।

जबहि समर संपजै। तबहि अंबर सिर लावै।
जहां रुध्यौ तहां मरै। घाट अवघट न बिचारै।
जस लज्जा गल बंधि। स्वामि अस्सह उच्चारै॥
संसार अथिर सामंत[3] मत। सक सहाव बंधन भिरिन॥
जानहि पराक्रम पुच्छ तम। इन अग्गें को वर करम॥
छं० ॥ ६८६ ॥

हम्मीर बचन।

काली कल बिष धरै। डंक बीछी उच्छारै॥
नीलकंठ सिव वरै। मोर महौरंग निहारै॥
काल अंब ढरि जाहि। जीह पप्पौह पुकारै॥
धप्पै बहै गयंद। चढै सिक्कार सिआरै॥
सुरतान काम सद्दै सलष। जैत राइ बिरदां वहै॥
हाहुलि राइ भट्टै कहै। को अनंष इत्तै सहै॥ छं०॥ ६८७॥
दावानल पांवार। अनल चहुआन सहाई॥
घटजनमा रिषिराज। समद सोषै धरताई॥
जैत राव कंठीर। हथ्थ सामंत राज सिर।
पहु पहार पांवार। घडै भंजै गोरी धर॥
अच्छुआ राव अग्गै पहर। बिन न जोर जंबू रहै॥
चुंगलिय बाज जोगिनि पुरिय। जं जं भावै तं कहै॥
छं० ॥ ६८८॥

कविचन्द बचन।

सुन हम्मीर नरिंद। मरन आवै अभाग मति॥
अंत काल बिक्रम नरिंद। भष्षि वायस अविद्धि गति॥
मरन वार वर भोज। धूम्म सुक्के भलेच्छ भौ॥
मरन काल षंडवल। ग्यान छुट्टौ मोहि लम्भौ॥
चित्तौ न चिंत चिंतह नहौ। नरक निवासी होंहि नर॥
धिग धिग सुबीर बसुधा करै। तौ न छुट्टै नर काल गार॥
छं० ॥ ६८९॥

(३) पृ०कृ०को० - संसार।

हम्मीर वचन।

सुनौ भट्ट कविचंद। रहसि पुच्छौ जबू पति ॥
मो जिय इय अदेस। मत पुच्छौ जालंध गति ॥
उभै लिषें कागद प्रमान। राज राजन सुलितान ॥
बीय अग्गै मुक्कियै। सोइ अप्पै फुरमान ॥
बत्ती विवेक द्रुग्गा सुपत। हथ समप्पि हम्मीर कर ॥
आरभ होइ इह बत्त गति। सुबर बीर जपौ सुबर ॥

छ० ॥ ६९० ॥

कविचन्द वचन।

असत राज जब ग्रहै। नीति भ्रम दृगि बिडारै ॥
सती असत जब ग्रहै। पैसि भाडै भडारै ॥
जती असत जब ग्रहै। कनक कामिनि मन मडै ॥
सूर असत जब ग्रहै। मरन माया तन मडै ॥
हो अबुधि न करि जबू धनी। इह सुबुद्धि कौ पुच्छियै ॥
जालंध देवि गम अगम बुधि। सो बुधि पुच्छन इच्छियै ॥

छ० ॥ ६९१ ॥

हम्मीर वचन।

कुंडलिया ॥ मगि वायस जग्गिय अलुक। धपि परवार कपोत ॥
भौम नही बधाइ बंध। धरक न मानै जोत ॥
धरक न मानै जोति। धरक मुक्कै न धरहर ॥
धर मुक्कै मुक्कहि न मान। सिध सा पुरिस बाज बर ॥
ऐव दिसिरु चढ़ि चरौ[1]। चद जन मातहि पग्ग ॥
कौ अनप इह सहै। कहै सामंत सुर मग्ग ॥

छ० ॥ ६९२ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ सोइ ज सूर सा भग्ग। जुग्ग सा अग्ग न पुज्जै ॥
दया दान दम तिथ्थ। सबै सो भ्रम भनि रुझ्झै ॥

(१) ए०कृ०को०—चलै।

सांमि भ्रग्ग बर भुगति। नरक बर तिथ्थ निवासौ॥
सुनि हमीर सा भ्रग्ग। करै सुरपुर नर बासौ॥
सा भ्रग्ग मुकति बंधै रवन। सांमि भ्रग्ग जस भुगति वर॥
अब किति किति करतार कर। नरक चूक गहुगहुगौति नर॥
छं० ॥ ६९३ ॥

हम्मीर बचन।

अब्बूरा पांवीर। जैत हाहुलि कहि बुल्लै॥
सुनि कन्नां चहुआन। ताहि प्रथिराज न पल्लै॥
पूछानी चामंड। डंड मंगै लाहौरी॥
जिम खाना गंधान। कोल लद्दौं कारोरी[1]॥
उचार भार बोलै हरै। राज उलग्यौ साहनी॥
उपरैं जांम जद्दौं लगर[2]। सुभर उभारै पाहनी॥
छं० ॥ ६९४ ॥

कवि चन्द बचन।

इन वेरां हमीर। नही औगुन बंचीजै॥
इन वेरां हमीर। छचि भ्रग्गह संचीजै॥
इन वेरां कै सिंघ। बर विषर जेम उंभारै॥
इहि वेरां हमीर। सूर क्यों स्यार सँभारै॥
वेरां हमीर पौरुष पकरि। इह सु बात रंडां ररी॥
सामंत राज काजह समथ। न करि ढील निंदा करी॥
छं० ॥ ६९५ ॥

हम्मीर बचन।

की लोहानै जंग। सांम लग्गा अजमेरी॥
कैमासें उच्छेरि। तुरी तूंवर विच्छेरी॥
जेती तारू गांमि। ढाम ढंढा ढुंढारा॥
कूरंभा पज्जून। काम किन्नो कुट्टारा॥

(१) ए०कृ०को० कालोरी। (२) ए०कृ०को० गरला

सारुडै झुझझ उलझिझया। लोहानै लग्गी वही॥
जछगा बधन सेवरा। तें भट्टा द्रुगा लही॥

छं० ॥ ६९६ ॥

कविचन्द बचन।

सलप अलप करि जुद्ध। साहि गज्जन वैसाह्यौ॥
कैमासे वर वधि। भीम भोरा घर गाह्यौ॥
तू वर वर उच्छारि। अप्प वाचा कहि फेरी॥
कमधज धरधक धोरि। धरनि जित्ती अजमेरी॥
हौं भट्ट चट्ट जस अजस पढि। भरौं साषि सूरह समर॥
हम्मीर मत चुकत सभर। हसहि देव दानव अमर॥

छं० ॥ ६९७ ॥

हम्मीर वचन।

भोरै रा भारथ्थ। कथ्थ जानै तू भाई॥
पामारा पज्जून। लिये पट्टन वै साई॥
मे कह्यौ कैमास। हथ्थ भीमा बहुनी॥
तू जानै बहुआन। बार बर तू इच्छानी॥
सलपा सलम्भ अद्धा हुआ। अब लग्गाई बत्तरी॥
सुरतान कालिह आनौं धरा। आज तुम्हारी रत्तरी॥

छं० ॥ ६९८ ॥

मुह कढ्ढानी बत्त। चद जानी पहिलाही॥
ते सोई रै काज। भरकि उट्ठे अच्छाही॥
तू आवज आजान। बार ढिल्ली घर[1] अड्डा[2]॥
तू रप्पन हिदवान। पान राजन तो चड्डा॥
आगर बुलाह गो बभना। गर बड्डा पड्डा मुहा[3]॥
जालपा जागि पुच्छाइया। जो रायै अम्मा दुहा॥

छं० ॥ ६९९ ॥

[१] ए० कृ० को०—वर। [२] मो० चढा।
[३] ए०कृ०—गर वढा पढा सुहा।

चहुआना रै रजधान । सोसंत बड़ाई ॥
ते बोलो बर लागि । जाइ कनवज्ज फहराई ॥
ए गोरी साहाब । दीन जानै पहिलोना ॥
हसम हय गय रेस । देह दष्यौ दह गोना ॥
कै काम कलह कंदल चढौ । कै कन्नां मन्नां गढौ ।
बे काम भट्ट गल्हां पढै । जिन भंजौ दिल्ली सढौ ॥
छं० ॥ ७०० ॥

कविचन्द बचन ।

हां काज हमीर । देव देवी सिर दिन्ना ॥
हां काज हमीर । अग्ग सधयौ गुउजिन्ना ॥
हां काज हमीर । राज मुक्यौ रघुराई ॥
हां काज हमीर । भंस[1] कथ्यौ सिव सांई ॥
न गल्हवांन गल्हां करैं । तुम गल्हां लग्गै बुरी ॥
त लोक जीव जम पंजरै । तुम जानौ छुट्टै दुरी ॥
छं० ॥ ७०१ ॥

हम्मीर बचन ।

रे चंद तुम गल्ह । इहां नाही अधिकारिय ॥
घर जानी षेल । नही डिभरु षिल्लारिय ॥
है अग्गि नहि दीप । ग्रहै आगैं होइ दिष्षै ॥
न फुट्टै आकास । कौंन थिगरी लूरष्षै ॥
म दुरैं नही जीवन मरन । नह लागै गल्हां बुरी ॥
ो मत्ति इहै अप उब्बरौ । करौ मंति गो ब्रह्म छुरी ॥
छं० ॥ ७०२ ॥

चन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण दे कर हम्मीर को समझाना)

न हमीर इक अलुक । गल्ल गाढी मिचाई ॥
ब्ब उलूकह देषि । गल्ल जोरा मुसकाई ॥

१] ए० कृ० को० सग ।

तब अलूक भय भयौ। गरुर अग्गैं करजोरै ॥
मोहि तहा लै जाहु। जहा कोई जीव न तोरै ॥
धरि पय ढंकि साइर गुहा। तह बिलाव भय्यह मरन ॥
तनमध देह जय्यह परन। मिटै न सो राजन मरन ॥
छ० ॥ ७०३ ॥

दूहा ॥ पारधि बागुरि सिघ कौ। दावानल भय मानि ॥
ससि मडल में मृग बसत। ग्रहन राहु सोइ आनि ॥
छ० ॥ ७०४ ॥

गाथा ॥ ईस सीस मयक। सरन रहिय जा भय मने ॥
रुड माल छल राह। अनचितिय आय घेरिय तथ्थ ॥
छ० ॥ ७०५ ॥

हम्मीर बचन।

कवित्त ॥ केहरि कदर हार। भिल्ल मुगता फल पायौ ॥
फिटक जानि पाषान। मूढ अज गल बधायौ ॥
कोइक समै पारषी। मिल्यौ जवहरी विचष्यन ॥
मुह मय्यौ दै मोल। तोल करि आनि ततष्यन ॥
अवलोकि तेज पोनी सरस। महिपति जरिय किरीट मनि ॥
इहि रीति चिति कविचद कहि। हाहुलि राव हमीर कहि ॥
छ० ॥ ७०६ ॥

पुनि अप्पिय हम्मीर। सुनहु देविय वर दाइय ॥
मार पिट्ट मोरिग। अग सोभा दरसाइय ॥
तिन को लै मदमति। चोटि नपत करि लघुता ॥
मडल ससी रमत। वडिय सो पावत प्रभुता ॥
ब्रजनाथ हाथ गहि माथ धरि। सुरली सुख बज्जावही ॥
मिलि सकल गोप गोपगना। मुकता फल सुबधावही ॥
छ० ॥ ७०७ ॥

कविचन्द बचन।

चरचि तेल सिंदूर। बहुरि बधे सिर चमर ॥
आभूषन पहिराइ। ढकि ऊपर पाटबर ॥

चलावंत मुह अग्ग। दुरद नरपति कैं दिट्ठे ॥
गहगरि गहुंड में धोत। आथ बन मंझ अपुट्ठे ॥
अप अप्प उतन लग्गत सद्दा। मिट्ठौ हाहुलि राव धन ॥
कविचंद कहत पिछताइगौ। मत्ति करै दिसि जवन मन ॥
छं० ॥ ७०८ ॥

हम्मीर वचन।

दूहा ॥ बहुत कहत हम्मीर सुनि। अब कछु रहत रसन्न ॥
थान भिष्ट सोभत नहीं। नर नष केस दसन्न ॥
छं० ॥ ७०९ ॥

कवित्त ॥ दसन दुरद सों भइय। पहिर बनिता कर चूरिय ॥
सरहि केस सोभइय। राज सिर सभा सँपूरिय ॥
केहरि नष सोभइय। कनक मढि कुंअर घलत गर ॥
सूर बीर सोभइय। सिघ सा पुरस परद्दर ॥
हाहुलि कहंत कविचंद सुनि। अब्ब जुगति बन बहि घनिय ॥
पहिले न करिय आदर भरनि। मन विचारि संभरि धनिय ॥
छं० ॥ ७१० ॥

कविचन्द वचन।

अरनि मद्धि धसि कूप। परत नर पथिक अद्ध फर ॥
बट बल्ली अवलंबि। नाग अवलोकि चरन तर।
सिर पर सिंधुर आय। सुंड गहि साष हलावत ॥
तुह छत्ता मुह आलि। उड्डि तिहि तन पलटावत ॥
मधु बुंद परत चट्टत अधर। सकल दुष्ष जिय भुल्लइय।
इम विषय सुष्ष कविचंद कहि। किम हमीर मन डुल्लइय ॥
छं० ॥ ७११ ॥

कविचंद और हम्मीर का जालंधरी देवी के स्थान पर जाना।

॥ तत्त वत्त जानौ सबै। हम माया इछांमि ॥

चलि जालंधर दैहरै। मिलि जालंध पुच्छामि ॥

छ० ॥ ७१२ ॥

नालिकेर फलदल सुफल। कर कपूर तंबोर ॥
उभै सुनर पूजन चलै। दै सब सथ्थ बहोरि ॥

छ० ॥ ७१३ ॥

जालंधर के स्थान का वर्णन।

कवित्त ॥ देषि थान जालंध। पंच पीडस बारस गुर ॥
करित कोट अछिरन। पति पतिनि दिप्पत बर ॥
मनि न्रिप उत जंबू नरिंद। चंद बंदी बंदत उर ॥
मनो बडवा नल लपट। कोटि फुंदी जालंधर ॥
मनो मोहनी रूप ह्वै अवतरी। कै महिल काहल झांई बंधी ॥
ससि एक कोटि घर ज्यौं जुवह। सो कविराज ओपम सधी ॥

छ० ॥ ७१४ ॥

च्यारि कोट वज्जग। मंझि जालंधा सुथानह ॥
इम छत्र जरि मुत्ति। मंचद्गंगा जपानह ॥
करिय सनान पवित्र। धोइ धोवंत तन मंडिय ॥
सम सुगंध पढि छंद। जाय कुसम जलि छंडिय ॥
करि धूप दीप नैवेद मिलि। राज अंदेस संदेस कहि ॥
बोली न बयन देवि तदिन। अजुत हमीर सुवत्त लहि ॥

छ० ॥ ७१५ ॥

कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना।

दूहा ॥ कुसुम मंडि मंडलि सिरह। चंदन चर्चित चंदि ॥
मुक्ति गंध दिय धूप दिव। जै जालंधर बंदि ॥

छ० ॥ ७१६ ॥

अवनी अंबी अंब सुनि। अंबी अंब सुबंभ ॥
अंबनि चंद उचार किय। सुतन अनंदिय संभ[1] ॥
छं० ॥ ७१७ ॥

देवी (जालपा) जालंधरी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ हुमो हिंदुराजान बंदी न आयं। जपै जाप जालंधरं तूं सहायं ॥
नमस्तो नमस्तो हि जालंध रानी। सुरं आसुरं नाग पूजा प्रमानी ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

ह्रीं कार रूपं सुआपे विराजी ह्रींकार झंकार हंकार साजी ॥
ऊंकार रूपं श्रींकार धारी[2]। प्रियं कारनं कारनं सार सारी[3] ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

सिवं संपुटं बीज पनव्व रूपं। स्वहाकार षटकार हंकार ओपं ॥
सुरं षोडसं रूप चोदस्सि मानी। चयं जीस[4]ब्रन्ने सुविन्ने प्रमानी
छं० ॥ ७२० ॥

चयं रूप ब्रह्मादि संध्या सकत्ती। चयं कास चैलोक धैबेद रत्ती
अदम्भूत रूपं सुअब्बै समाया। गुनातीत आतीत[5] जालंध राया
छं० ॥ ७२१ ॥

जपै तोहि जापं सुधामं प्रमानी। दियौ अब सिद्धिं सुरिद्धी सुरानी
प्रथीराज चहुआन दीनौ उतारं। तहां हुंद नाभी करै अब्बसारं
छं० ॥ ७२२ ।

कह्यौ तोहि प्रन्नाम[6] मो सिद्धी देवी। प्रकारं सुधारं विवद्धी सुसेवी
अहं मोकल्यौ हाहुली पास काजं। तिनं पुच्छमं माव साक्षित राः
छं० ॥ ७२३ ॥

कहौ कारनं अब साराज अंबी। पुहं पंजली छंडि सीसं सुलंबी
रह्यौ आप यहौ दुअं पानि मंडी। अगं कारनं जानि बोली न चं
छं० ॥ ७२४ ॥

(१) ए० कृ० को० सिंभ।
(२) ए० कृ० को० साजी।
(३) ए. कृ. को -राजी।
(४) ए.—ब्रयं जीम।
(५) मो. आनीत।
(६) ए. कृ. को. प्रमान।

हम्मीर का देवी से निवेदन करना।

कवित्त ॥ कहि हमीर सुनि देवि। तत्त वादी कवि आया ॥
कै को हिंदू को तुरुक। कौन रक सु को राया ॥
को रविद को जिद। कौन तापस को छाया ॥
को साहब को राज। कवन सुकवि कह गाया ॥
इह परम हंस संसार हित। तू माया तू मोह मत ॥
जानौं न बाम दच्छिन करन। हौं साई संसार रत ॥
छं० ॥ ७२५ ॥

कविचन्द का देवी के मंदिर में बन्द हो जाना और हम्मीर का शाह की सहायता के लिये जाना।

इह परत्तर दीह। चंद जान्यौ चहुआन ॥
जिन भुजानि धर भार। भोमतीय अधर भान[1] ॥
इसम हय गय देस। दीह घट्टै बल घट्टै ॥
धन्न सरन तिन जानि। महल सिर सारे पट्टै ॥
आवृत्त बात जोगिनि पुरह। भव भवस्य इह निमयौ ॥
कविचंद रुकि अच्यौ जियन। ग्रिह गोरी हाहुलि गयौ ॥
छं० ॥ ७२६ ॥

उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त चहुआन त्रिप। धरिय धीर मन पान ॥
हौं अभग अनभग बर। हौं भंजन सुलतान ॥
छं० ॥ ७२७ ॥

कुंडलिया ॥ रोकि कवि दहि अप्प मिलि। सो सुरतान अबुझ्झ ॥
सुनत राज पृथिराज कै। हवि लागी उर मझ्झ ॥
हवि लागी उर मझ्झ। सझ आई गुर गल्हा ॥
भट्ट बसीठह रोकि। अप्प है वै दिसि हल्ला ॥
दस हजार हैवरनि। लष्ष पयदल्ल अम वृंदा ॥

(१) ए० कृ० को—भोमति अधर भान।

मिल्यौ जाइ सुलितान। रोकि देवलें कविंदा॥

छं० ॥ ७२८ ॥

चामंडराय का कहना कि राव लोग चार चार तलवारें बाँधें, जो जिसमें जा मिला सो जानेदो।

दूहा॥ चवै राइ चामंड इम। अहो राज प्रथिराज॥
चारि चारि तरवारि गहि। भर बंधै सब आज॥

छं० ॥ ७२९ ॥

मरन तुच्छ मारन बहुल। हम उन अंतर एह।
एक सु पक्की निजर की। अरि कर कच्ची देह॥

छं० ॥ ७३० ॥

वेस। सुनिय राज इह रीति। बीर संसार सपन्नौ॥
अवर रत्त संकुचित। गुनज मुक्कित अपन्नौ[1]॥
सहन अगर[2] तन संग[3]। मनह छंचिय छल लग्गा॥
क्रोधतअग्ग। भथिवचन। लोभ लग्गा सह अग्गा॥
सलिता सुनीर वित्तें सरद। अवब सुप्प दंपति मिल्ली॥
आसौज बीज संसार कर। रंज रंजि राजन मिल्ली॥

छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावरा पुंडीर को हम्मीर को रोकने के लिये बीड़ा देना।

बोलि राज प्रथिराज। पान अप्पै से पानं॥
तूं धीरं जा धीर। भीर भंजन सुरतानं॥
है हमीर आधीर। सांइ द्रोही सिर बंधी॥
लाज बड़प्पन पाइ। सिंधु हम्मीर जु संधी॥
सामंत सूर सगपन सरै। सुतेग बेग बंधै न कोइ॥
पुंडीर राइ पावस्स सुनि। बंधि तेग रावत्त होइ॥

छं० ॥ ७३२ ॥

(१) ए० कृ० को० -अवसर तहां सकुचि गुन जनुकंत अपन्नो।
(२) ए० कृ० को०—अंगार। (३) मो०—अंग।

पावसपुंडीर का बीडा लेकर तैयार होना।

पानि सामिलिय हथ्थ। व दि सुरसरि चढि आइय ॥
बीर द्रगनि झलकंत। काच करवत जलझाइय ॥
सुवर राज प्रथिराज। सजिय बर अप्प तुरंगम ॥
नृप सनाह पावस नरिंद। हरचंद अभंगम ॥
दल मलन अरि आवृत्त बर। बंधन हाहुलि राव भर ॥
रनधीर धीर तन तन दलन। पुहप भ्रसम पावस सहर ॥
छं० ॥ ७३३ ॥

चौपाई ॥ मनो नागपति कन्ह जगायौ। कै प्रलै काल चैनेच लगायौ ॥
कैहर हरन त्रिपुर सुरधायौ[1]। कै छिति हरन हरनाकुस सायौ ॥
छं० ॥ ७३४ ॥

जामराय यादव का मुसल्मानी सेना के निकास का रास्ता बाधना और पावस का सीधी पसर करना।

चौपाई ॥ तब पावस पुंडीर। बोलि राजन जमजंदों ॥
कै कोसन सुलतान। कोस कै प्रघत बंदों ॥
बोलि राव रंधरी। निरत कीनी कीहानी ॥
पंच पान परवत्त। सत्तपान सुलितानी ॥
जगलौ धाम सामंत सह। सेम बढी बाढी बलह ॥
हम रुप्प जाहि मीरां दिसी। चढि पावस पावस कलह ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

तब पावस रा पुंडीर। सज्जि सन्नाह सँपन्नौ ॥
तीन सहस पुंडीर। बंध अग्गै रस भिन्नौ ॥
अप्प अप्प चितयौ। होय अग्गी जन मान।
लच्छि सु लूटन काज। रक धावै धन धान ॥
लिये रावत्त किलिय कला। है गहि मोह माया तजे ॥
दुति ध्रम्म ध्रम्म सोभंत दुति। धीर धवल कंधह सजे ॥
छं० ॥ ७३६ ॥

(१) मो०—कै हरन हर त्रिपुरार सुधायौ।

पावस पुंडीर की पसर का रोरा और कांगुरे को तिरछा देकर सीधी राह जाना।

दूहा ॥ पावस चढि, पावस अगमि। घन छत्री छिति रूप ॥
गावहि नीर हमीर घर। सुकि जवास उर भूप ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चढि पावस पावस रवनि। गजि दल बदल निसाम ॥
धनि षग पंति[1] सनाह तुअ। मनु बद्दल विज्जुल भान ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

पावस पावस मेघ सम। कै सम सुरति[2] प्रमान ॥
चित्त सुमन पुंडीर षरि। बाजि गुडिग्ग निसान ॥
छं० ॥ ७३९ ॥

कवित्त ॥ सह सेना चालीस। मध्य सत पंच तुरंगम ॥
टारि सूर सामंत। बज्र करिवार वज्र सम ॥
सस्त्र तेज जम जुत्त। जुद्ध आकूत अभंगम ॥
पुच्छि ध्रग्ग सा धुम्म। कुग्ग बंधीन बंध भ्रम ॥
कांगुरौ तिरच्छौ मुकि कै। बर अग्गें को धाइया ॥
तिन ठाम चूक चिंत्यौ हतौ। मिलन सरोसन पाइया ॥
छं० ॥ ७४० ॥

हम्मीर की और पावस पुंडीर की आगे पीछे छुआ छाई होते जाना।

यों छेटी भंजीय। मुद्ध भंजै नर धायौ ॥
चच्छया अवा भज्जंत। गरुर आगें नन जायौ ॥
ज्यौं अरथ न छिपै कविंद्र। मोह नन जाय ग्यान अग ॥
सुनि न जाय गम भावि। रूप नन जाइ दिष्ट अग ॥

(१) ए० कृ० को०—पंति।

(२) मो०—गुरति।

वन जाइ म्रिग्ग म्रगपति सुअग। आप जाइ नन गुरव अगि ॥
नन सकै जाय हम्मीर तिम। इम हक्यौ पावस सुलगि ॥
छ० ॥ ७४१ ॥

पावस पुडीर का नदी का घाट जा बाधना।

प्रात गयौ हम्मीर। साँझ पुडीर सपन्नौ ॥
रच नाव थकि गयौ। अजहु पत्तयो जिवन्नो ॥
पथ वान पुच्छयौ। वग्गी पावस घर जित्तौ ॥
रा हमीर उत्तरयौ। राव वीरत्त विरत्तौ ॥
आडौ उलगि परिव वजि। धार धार सौं उत्तरौ ॥
लोहा सुलहरि तप छडि वपु। दिसि कगुर समुह भिरौ ॥
छ० ॥ ७४२ ॥

तेंही वार सलित्त। नीर लग्गौ दो कठ छलि ॥
ज्यौ वछैल तिय मिलत। पाप छल्लै सुध्रम्म वलि ॥
ज्यों समद सित पय प्रमान। कित्ति फल करै सलिता ॥
मिह कलक छिप ईस। फूल चम्मै सुप हलता ॥
यों परम जीव दावह सुटत। वज्ज कोट तारन सुगुर ॥
दुहु सेन मझि सलिता परिय। सो ओपम जपौ सुवर ॥
छ० ॥ ७४३ ॥

वज्ज काय दिप्पियै। सूर दिप्पियै नीर सुर ॥
ज्यो मृनाल दिप्पिये। कमल दिप्पियै उपर धर ॥
प्रवल वाल सैसव समूह। मझिझ जोवन चिन्ह न लपि ॥
अरुन उदै ज्यौ भान। किरन रत्तो सुमत पिपि[2] ॥
द्रिग लपै क्रोध हिय मझ्झते। अजुलि मे जल दिप्पियै ॥
सुर सहस मझ्झ वड्ढेति पट। सत वज्ज वढाई अप्पियै ॥
छ० ॥ ७४४ ॥

हम्मीर की सेना के नदी पार करते समय पुडीर सेना का हमला करना। दोनों की लड़ाई।

तजिय राव हम्मीर। वीर उत्तरति विषम घट ॥

(२) ए० कृ० का०—पपि, पप।

दुहु जोजन संभवति। रोकि पुंडीर सतें[1] थट ॥
कलपंतर फिरि रोकि। बार उतरि हथि पारं ॥
मार मार उच्चार। दीह धहति पछिवारं ॥
पुंडीर धीर नंदन नवल। दिसि हमीर असिवर कढिग ॥
उच्चरिय बेन पछिवान अरि। बीर बलिय संमुह चढ़िग ॥
छं० ॥ ७४५ ॥

रा पावस पुंडीर। बोलि षंगा[2] रस पुंछी ॥
बे बरह लिषि धीर। बीर बीरा रस कंछी ॥
कंक बंक रस पंक। बीर षुत्ते रस जुट्टी ॥
दोउं बल धुनि प्रान। कंक क्रित कुंम अवट्टे ॥
बिभ्भाय भाय षंजर कढिग। बढिग बीर बल्ली सुभर ॥
मद मोष जानि छुट्टे जुरन[3]। बजिग लोह सह सूर धर ॥
छं० ॥ ७४६ ॥

हूं धीरं जा धीर। सस्त्र छुट्टै पुंडीरं ॥
पावस पावस राव। धार उज्जल फरि बीरं ॥
षग्गानी गिल्लोर। सार बुट्टे तिन गानी ॥
मनो बीजली बाल[4]। सथ्थ उम्भासैं पानी ॥
घरी एक जुद्ध आवृत्त करि। जुद्धानी गंजागि लगि ॥
हम्मीर राव पावस पुरिस[5]। बरिषा जिय आवृत्त जगि ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

दूहा। जंबू हाँहुलि राव सो। जज्जर बज्जि सनाह ॥
भिरि संमुह पुंडीर बजि। बन जज्जर अगि दाह ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

(१) ए. क. को. सवें।
(२) ए कृ. को. षंधार।
(३) ए० कृ० को० लरन
(४) ए०—बाज
(५) ए० कृ० को०—सरिस।

इस लडाई में पाच पुडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना। हम्मीर का भाग जाना।

कवित्त ॥ निकरि वीर जल छडि। रुद्धि जब पति अग्गा ॥
भग्गा वर हम्मीर। पुत्र चिय फेरि विमग्गा ॥
पंच सहस पुडीर। जुद्ध कीनी अधिकारी ॥
हो हम्मीर नरिंद। षेत वोल्यो हकारी ॥
पुडीर राव पावस पहर। झर उम्मार लग्गी गयन ॥
कट्टैति लोह परियार तें। सुनहु खूर खूरन वृनन ॥
छ० ॥ ७४९ ॥

वीर रुप उन्नयन। सरुप विज्जल कट्टी वर ॥
भय पावस पावस प्रमान। गज्जि घन वात रस्सगिर ॥
क्रोध पवन तट ईट। टाढ़ कंपे कर करिवर ॥
सागर सलित सुसस्त्र। रुधिर जल वहै सारझर ॥
सुप हुए खूर सजोगिनी। वीर वियोग कारन कथ ॥
बैठति चित पावस रिपह। सजोगिनि नरपत्ति हथ ॥
छ० ॥ ७५० ॥

दूहा ॥ उभै पूत रन परिग वर। वर वधे गिरि पुत्त ॥
रोस चढ्ढि फिरि वज्जि वर। उतरि सलित्त सुरत्ति ॥
छ० ॥ ७५१ ॥

पुडीरा भग्गा भिरै। गहन हर जुध भीर ॥
विषम तज आवृत्त नर। धनि धीरजा धीर ॥
छ० ॥ ७५२ ॥

कवित्त ॥ सो पुंडीर वर जुद्ध। भिरे बुद्धे सा रानी।
तीर छुटे जह नीर। तहा हम्मीर जुठानी ॥
बरवि मिले सो वीर। तुटि मडे वर नीर ॥
मनु वृछय भार सो भज्जि। रुरै तुटि अतर भीर ॥
उरझे सरीर तुट्टे पगा। तार जेम बज्जे सुमिर ॥
निवरत्त सिद्ध मिटि कक रव। पन हमीर मुकि षेत तर ॥
छ० ॥ ७५३ ॥

उभै बंध हम्मीर। षेत बंध रघुवंसी ॥
पंच बीर पुंडीर। मुगति लद्धी रन गंसी ॥
ज्यों बाहनि सुक्कि धाइ। लग्गी पानी बर भग्गा ॥
गहबि बाग पुंडीर। नीठ फेरे बर अग्गा ॥
यों लहरि लोह बाजी विषम। रा पुंडीर भारथ्थ जित ॥
हम्मीर भंजि हम्मीर पें। चढि तुरंग गोरी सुगत ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

दूहा ॥ असी सत्त ग्रह गगन बर। परे झुट्टि[1] पुंडीर ॥
सामि द्रोह नट्ठो गयौ। मिले राज रनभीर ॥
छं० ॥ ७५५ ॥

चरन लागि सो राज कौं। जै बीरां गिर युत्त ॥
सकल सूर धनि धनि कहैं। जिति हाहुलि राधुत्त ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

पावस पुंडीर के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडीर योद्धाओं को चौतेगी होने का हुक्म देना।

बद्धाइय बाजी घरह। ढिल्ली वैवर थान ॥
हम्मीरह भज्जे भरह। जित पुंडीर प्रमान ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

राजन अप्पन उचित करि। दिय सिर पाव सुच्चारि।
हुक्कम बेग बंधन कियौ। च्यारि च्यारि तरवारि ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

पुंडीर वंश की राजनई का ओज और शाह का समाचार पाना।

कवित्त ॥ च्यारि च्यारि तरवारि। बंधि पुंडीर सहस चिय ॥
बज्र काल बज्र बहन। बज्र झल्लै सुबरन निय ॥

(१) ए० कृ० को०—झुंडि।

यो पन व धन हमीर। छडि पथ्थर सनाह अग ॥
वीर सर साधिक्क। पच वीरह पावस मग ॥
भै द्रग्ग वीर निधि खज्ज जग। दुसह साहि अड्डी सुचलि ॥
अगि लग्गि धीर पडोन ज्यो। सजत सथ्थ उत्तरह पुलि ॥
छ० । ७५९ ॥

इह सुनि बत सुलितान। चर[1] धाय साहि पै पत्त ॥
कहिय चरित पावस सरिस। साहिब धीर नमत्त[2] ॥
छ० ॥ ७६० ॥

हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुच कर नजर देना।

कुडलिया ॥ चमर पमर[3] मृग मद मधुर। बाजी कष्ट कठोर ॥
मिल्यौ जोइ गोरी धरा। हाहुलि राव हमीर ॥
हाहुलि राव हमीर। हाम द्रोही घर लग्गी ॥
सील साच तप तेज। अम्म धुर धारनि भग्गी ॥
गौ विप्रह पप छडि। और प्रब्बत पति पामर ॥
मिल्यौ जाप सुरतान। मधुर मृग मद लै चामर ॥
छ० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ चाँरि चारि तरवारि झर। भर बधै चर धाय ॥
इह चरित्त चहुआन दल। कह्यो साहि सों जाय ॥
छ० ॥ ७६२ ॥

शाह का कहना कि पक्की पकडी हुई एक तलवार चार को मात करेगी।

तबै हाथ वज्यौ सुवर। धुनि पुच्छी सिसुताइ[6] ॥
झुझ्झ परट्टयौ छिद्दुदल। रहै निदान कि जाइ ॥
छ० ॥ ७६३ ॥

(१) मो०—वर।
(२) मो०—साहि वध रन मत्त।
(३) ऐं० कृ० को०—परम।
(४) ए० कृ० को—साव।
(५) ए० कृ० को०—साइ।
(६) ए०कृ० को गाव।

बाल वृद्ध जुव्वन कहिय। वे मरो मत्ताय ॥
तेग एक पक्षी ग्रहैं। चौ कच्ची भग्गाय ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

करि निवाज सुरतान कहि। क्षित्रिय बुद्धि दिलीस ॥
गहिव साहि कंधै हनो। अब जित्तौं इमि[1] रीस ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

शाह का काजी से भविष्य पूछना।

कुंडलिया ॥ इह गंदी मट्टी मुरद। तुम मरदौं मरदानि ॥
तुम ग्रब्बी सब्बी हरन। मैं फकीर सुलतान ॥
मैं फकीर सुलतान। आप कहि पुच्छिय काजी ॥
भिरित भाष जो कही। होइ हाजी कै गाजी ॥
जो उमेद जिय होइ। राज दोइ अल्लह बंदी ॥
कोइ गुमान जिन करो। कहै काया इह गंदी ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था।

दूहा ॥ सज्यौ सेन सोहन सभंद। जंगल वै चहुआन ॥
धर अंगन मंगन सरिग। सुनत सूर अकुलान ॥

छं० ॥ ७६७ ॥

सबें सेन सारि सहस। घटि वढि अन्नत बार ॥
जे भर भीरह मुह सधै[2]। ते बत्तीस हजार ॥

छं ॥ ७६८ ॥

सहहि भीर नप पीर जिम। लज्जा धर भर भार ॥
धरनि धरनि तिन वर गनत। ते मर[3] बीस हजार ॥

छं० ॥ ७६९ ॥

बीस हजारन मद्धि दस। जे अग्या बर स्याम ॥
कर वज्जह वज्जी सहैं। ते पहु पंचह ठांम ॥

छं० ॥ ७७० ॥

(१) ए० कृ० को० इहि।
(२) ए० कृ० को० सजै।
(३) ए० नर।

तिन महि कवि गनि पच से। साथ भाष द्रढ काज॥
देव गति दैवान सों। तिन महि पहु प्रथिराज॥
छं० ॥ ७७१ ॥

पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ बढी सेन न्रिप राज। वधि पुडीर तेग चव।
धीर बोल बर पुब्ब। दाय चहुआनह हथ्थव॥
सुरहर चष सुलितान। वधि अप्पौ परिमान॥
दई दुवाह पावस नरिंद। गहन उचरि सुविहान॥
करतार हथ्थ केतिक कला। नर अवरे जपै वयन॥
सबूह बार भावी सगति। पग्ग काम लग्गै गयन॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ देषि सेन चर साहि पे। लै चरित्त चहुआन॥
चारि चारि तरवारि बर। सह बधी सुविहान॥
छं० ॥ ७७३ ॥

पावस आगम धर अगम। दल साजे दोउ दीन॥
अवर छायौ अभरन। छिति छाइय छवीन॥
छं० ॥७७४॥

उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुलतान। वत्त कहि या पुरसानह॥
या ततार रुस्तमा। छुओ तुम साच मुसाफह॥
मे आलम आलम। सकल हिंदू रा उप्पर॥
जिहि थहि छुओ वार। वेर सो आप अप्प कर।
तिहि ग्रहन हेत इछौ सुमन। साच झूठ करतार कर॥
भग्गहु अभग्ग मत सग्गहै। धरहु लाज निज दुलन मर॥
छं० ॥ ७७५ ॥

सरदारों के शाह प्रति वचन।

बोलि षान पुरसान। षान रुस्तम षां ताजी॥
षां ततार पीरोज। षान असमान बिराजी॥
षां नूरी हुज्जाब। षान षाना पुरसानी॥
हबस षान हबसी हुरेब। षान सुविहान बयानी॥
सुविहान षान षुरसान पति। बीरम सूरति रत्ति करि॥
इहि बेर मरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन लरि॥
छं० ॥ ७७६ ॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का कराग खाना।

षां ततार रुस्तम। साहि अग्गें करि जोरै॥
आन साहि सुविहान। हिंदु दरिया ढंढोरैं॥
गहि मुसाक गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ बर॥
हों ग्रहयौ उन बेर बेर। छुट्टेव डंड भर॥
बर बंटि फौज दिष्षौ निजरि। सिंधु उतरि सुविहान बर॥
सत पंच सूर सोलषि घटी। बंधौ बीर द्रोनति सुधर॥
छं० ॥ ७७७ ॥

पुनि षुरसान ततार। षान रुस्तम कर जोरहि॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन बिछोरही॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज बे काज। जाय गोरी गुमानहि॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न चाल बंधे भिरहि॥
दै मश्थ हश्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि॥
छं० ॥७७८॥

शहाबुद्दीन का रोना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सजिय सन्नाह सदिष्षिय॥
अद्द सेन किय अच्छ। वज्ज सस्त्रं गिल्ल अष्षिय॥

तिन मे पंच तिलप्प। वज्ज झिल्लै कर वज्जी॥
एक लप्प दस भाग। फेरि दीय न सुसज्जी॥
तिन मझ्झ एक सहस सुभ्रित। अद्ध पंच प्रप चनि अधिक॥
तिन मे सब मत समुद्र वर। पुन जेही गुन गुन सधिक॥
छ० ॥ ७७७ ॥

दूहा॥ सजी सेन गोरी सुवर। सिंधु उतरि सुविहान॥
राति सब्ब वर तिन सयन। आन पान पुरसान॥
छ० ॥ ७७८ ॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना।

कवित्त॥ समन कमन मो नदी। मीर महमुद रोहिल्लौ॥
नव सुकोरि भुअ दंड। एक इक लहै इकल्लौ॥
कितीक गढ्ढ ढिल्लरी। कोन मंडल इह वारह॥
कितेक सूर सामंत। कोन हम सम झुझ्झारह॥
साहाब दीन सुरतान सुनि। प्रगट एह पर तग बहि॥
दो जिग्ग मग्गहम सचरहि। जौन देइ चहुआन गहि॥
छ० ॥ ७७९ ॥

शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना।

सजल पूर सतनज। चरन साहाब सुमुक्किय॥
पां कमाल गप्परिय। निरति सेना रसु लप्पिय॥
परि प्रतीत सत्तन सयन। देस नव नव बल तोलन॥
अय जुवार[1] परवर दिगार। जुम्मी[2] जुर बोलन।
दिव निसा देपि हित चित्त दल। कलन लोह कुंजर हयन॥
बचन भेप[3] लप्पन पिपन। करि कग्गर अग्गर बयन॥
छ० ॥ ७८० ॥

तम जित्त जित बचलिय। राज राजन ग्रह गुद्दर॥
हमस हाँम सामंत। मत पूरन भर सुम्भर॥

(१) ए० कृ० को०—जुआर। (२) मो०—जम्मी।
(३) ए० कृ० को०—भाप।

राज मिलन सुलतान। लिपि सुकग्गर फुरमानं ॥
हवि वचन्न असमान। असंय गज्जिय सुरतानं[1] ॥
सम सिफति सील उत्तर तरह। दिसि दुत्तर संग्राम रन ॥
सम विषम बत्त पारसि कुसल। स्वामि वचन हिंदू सधन ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना।

चनिका ॥ बंधानौ कै लाजरी। कागर बंधी हेमांजरी ॥
मसि रुद्धीई मद्ध। काजी कतेव सद्ध ॥
मुल्लांन उचार उच्चै। वंचन राजा श्रोतान सच्चै ॥
राजा प्रथिराज आगें। सामंत सूर संचार लागे ॥
इन विधि सरजन हार जोरे। सुरतान जलाल दीन लोरे।
इनि विधि हिंदू मुसलमान मुहानी। वयन नीरां रा जंजे सुरतानं
छं० ॥ ७८२ ॥

शहाबुद्दीन के पत्र का आशय।

भुजंगी॥ बने भिस्ति बेषा षमे षान मंडौ। सजे षंभ थंभं नए रंड डंडौ।
इला सस्त्र रत्ती न केली मुहाबं। जमी जोर मंनै न ओरं किसाब
छं० ॥ ७८३ ॥

हमं तुम्हा एकं दुरं देव दाने। सभं सिंध लोरै नहीं एक बाने
विनै देव अम्मां कुरानं पुरानं। न जानं सुने है कि आने सुमानं
छं० ॥ ७८४ ॥

उभै रीति उत्तंग दुत्तंग देही। छिनं भंग भंजे सुकामंध केही ॥
मिलौ आदि मीरा सुभीरा भिरंदे। बिबी गल्ह मल्हे सुसद्दै सिरंदे
छं० ॥ ७८५ ॥

प्रियं प्रीति पैगंबरं साहि सज्जौ। सुअं जोर बंध्यौ सुलितान मज्झं
मिले हाहुली हेत हिंदू हमीरं। जनं जोर ठद्दै गुमानं गंभीरं
छं० ॥ ७८६ ॥

कियौ साहि सिष्टा सआपै आपनं। छलं छच्च हिंदू सिरं दीन मान

(१) मो०- षुरसान

मिलौ साहि साहाब सोहैत बधी । दहै देस छत्रज पजाब अद्धी ॥
छ० ॥ ७८७ ॥

बर पग्ग पुरसान सो मडि छडो । सुत रेन उद्देव सौ सेव मडौ ॥
इला जुद्ध कौने कहा लाभ पडौ । निय नेहनी जोतिसों सेव पडौ ॥
छ० ॥ ७८८ ॥

सदो जोर हिंदू नथे मुसलमान । जुराजोध दुर्ज्योध ससार आन ॥
उव उत्राव देह सुसामत राजे । तट चन्द्र चिन्हाव सुरतान बाजे ॥
छ० ॥ ७८९ ॥

बर बोल चामड राय सुनदे । चित चेत चिता सुदेही भरदे ॥
छ० ॥ ७९० ॥

शाही दूत के प्रति चामडराय के बचन ।

कवित्त ॥ सुने सह चामड राइ । सुरतान बसीठ ॥
अप्रमान बौलहु बयन । राजन सौं ढीठ ॥
तुम जानहु सामत । मत जेहा अभ्यासै ॥
सारुडै पट्टनै । पन पानी पथ आसै ॥
बोला न बोल कित्तो बढै । हेला हकि हमीर सुनि ॥
जालिम्म जोर मै मेछ धर । सार बहदै धार धुनि ॥
छ० ॥ ७९१ ॥

पुहुवि नरेसर सबल राइ । है वै हठ जित्तौ ॥
काटि सुभट थट बिकट । कलह घघ्घर मे वित्यौ ॥
गजि गोरि हम्मी तुरक्क । मरिया पत्ताई ॥
बधे साहिब दीन । लियौ अजमेर चढाई ॥
इम जपै चद बरद्दिया । कपिसुल्लिह कुद्दी कनै ॥
दस सहस लड्ड तें डड मे । अजहुँ सुथक्कै गज्जनै ॥
छ० ॥ ७९२ ॥

सिध स्यार परधान । वध कौनों इक जतह ॥
मिल्यौ न भय्य दिन एक । स्याल आन्यौ पर मत्तह ॥

फुनि आन्यौ समझाइ। हन्यौ केहरि वलवानं ॥
विश्राम सिंघ हिरदै सुक्कंन। भप्पि गिद्दर जब पुच्छयौ ॥
नहि क्रान रिदै इहि सिंघ सुनि। देषि गत्त पच्छौ अयौ ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

दूहा ॥ रहि बिधि तुम पति साह कौ। कही सुवंचा ध्यान ॥
निलज भेछ लज्जै नहीं। हम हिंदू लजवान ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

दंत दरिद्री द्विपद रज। एपरि निपट घटंत ॥
सिंघ सिंचानौ सापुरिस। ए परि परि सुउठंत ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

जद्दव जुआन और वलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजो।

बर जंपै जद्दू जुआन। बलिभद्र सुध्रम्मं ॥
हम सुलतान सुक्कम्म। सेव कीनौ बहु भ्रम्मं ॥
तुम आछानौ तक्कि। बक्कि हाहुलि हम्मीरं ॥
थट्टा बंभन बास। पास उतरे गंभीरं ॥
हम तुम्म तेक भें सोस धरि। बीच करीम कुरान कौ ॥
बंचौ जु सौंह सांद्राह दर। लम्भौ लम्भ पुरान कौ ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

मुसलमांन दै हथ्थ। हाम हम्मीर मुहाई।
राज कुमारह रेन। सेव संचार दुहाई ॥
तुम मांगै पंजाब। अद्ध पहु[1] ग्राम न मुक्कै ॥
दाइ मित्तह उद्दोत। परौ जम्मौ जित सुक्कै ॥
हम लम्भनि तुम्म लराइयां। बर भराहिं सिंघह समर ॥
गुफ अभै लूनि संचरि रहै। सुभ तियार चम्भहि अमर ॥
छं० ॥ ७९७ ॥

मम्मह रावल समर। सिंह सिंह तन पुच्छिय ॥
जे भंता भंतेह। हवै लड्डू[2] दुअ लच्छिय ॥

(१) ए० कृ० को० -यह। (२) मो० दुअ।

जौ जीवदे जित्त । मुत्ति तो सरग समानी ॥
ना दिप्पो प्रथिराज । मुरै सुग्गल चहुआनी ॥
अवृत घत्त मता लहौ । पर कज्जा सज्जा समर ।
ततराहत तत्र पराइया । अपै देव दानव अमर ॥
छ० ॥ ७९८ ॥

शाह के यहा से आने वाले सरदारों क नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना ।

पा पट्टीय नसीठ । सथ्य सुरतान कहदे ॥
तुम सारा है भुज्ज । डड भरि जीव रहदे ॥
के भूले उपगार । कन्ह उपगार सुझ्झा ॥
होहि न बहुा बोल । चढे चपो अन बुझ्झा ॥
दिथ दूत हथ्य कागर दुजर । अगर प च मन साहि दिसि ॥
सोनी सुजान नीसथ्य कथ । कहन बोल बर बीस बिसी ॥
छ० ॥ ७९९ ॥

सा बट्टू को थली । प च तेरह करि मडिय ॥
लप्पा छप्पिय च्यारि । पाम कागर करि छडिय ॥
पान पान ततार । पान रुस्तम पां हाजिय ॥
पा पौरोज कुसाब । हिदु तुरकी पढि काजिय ॥
दीहाइ प च पथे वह्या । दल सुरतानति समुहा ॥
पजाब मद्धि टिल्ला पहर । मिलि मधयानति विम्मुहा ॥
छ० ॥ ८०० ॥

कहि सोनी पतिसाहि । दुष्ट होइ कैसट भगिय ॥
या लज्जो[1] सुरतान । सिधु कह कज्ज उलघिय ॥
पैगवर दै बीच । मिटै वाला बर सधिय ॥
एक वेर दूवेर । वेर वेरह इन वधिय ॥
सौ न होइ पहिलोन हल । मुप देपावन देपिया ।

(१) मो०—लज्जीया । (२) ए० रु० को—एक वार दुरवास ।

क्रित हित्त चित्त मलै[1] नहीं। कहै बढ़ै गुर सिष्षियां॥
छं० ॥ ८०१ ॥

सतलज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना।

त्रिपथ पंथ पव्वा पहार। गट्ठी दिसि वामह॥
जेलं लंगर ग्राव। बिहथ बंधी जथ नावह॥
साहि तक्कि ताजिय चढंत। मुनाम मुन्नारह॥
दैकागर दूतान। कियौ सोनार सलामह॥
औ बंचि अप्प कुथ्याहिया। न किहु किय करतार कर॥
बच अद्ध कट्टि षिज्जिय षलां। बंधि याहि चंपौ सुधर॥
छं० ॥ ८०२ ॥

तब बोलै साहाब। प्रति पट्टए चहुआनह॥
सो आयौ सानंमि। पान जोरे रव्वानह॥
बुझ्झै गोरी नरिंद। सयल जंगलपति जानह॥
तब बोल्यौ कम्माल। सुनौ बत्तां सम्भामह॥
सामंत सूर सब जोर बर। बिन बेरी चामंड किय॥
भ्रित अप्पा स्वामि रत्ते रहसि। तिन बर सज्जै ताँम जिय॥
छं० ॥ ८०३ ॥

चहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना।

दूहा॥ सुनिय बत्त गोरी गरुअ। तनमन कंप्यौ ताम॥
चल्यौ मंद गति मन विकल। ज्यों ग्रेह नउढा काम॥
छं० ॥ ८०४ ॥

अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है।

कवित्त॥ विहथ कंठ साहाब दीन। सुरतान संपत्तह॥

(१) ए० कृ० को०—मिट्ट।

दल बद्दल दरिया हिलोर। उप्परि कलि ऊतह ॥
समय ताम दुअ दूत। आय अति हित्त मत्त वर ॥
सोलप्पे सुरतान। बोलि बुझ्झे सुवचचर ॥
नमि कहै गरुअ गौरी सुनौ। चाहुआन बर जोर जुति।
मिलि आय सुभर सामत सब। प्रान कलप्पे काज पति ॥
छ० ॥ ८०५ ॥

शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना।

दूहा ॥ पुनि गोरी पुच्छेव चर। दल संप्या चहुआन ॥
जे आगम सजोर दल। कहौ सुभट सद्दान ॥
छ० ॥ ८०६ ॥

पद्धरी। सबचहि दूत प्रति गज्जनेस। चहुआन सुदल बल अस्सहेस ॥
उत्तर्यौ आय सतनज सेन। सामत सूर सिर लग्गि गेन ॥
छ० ॥ ८०७ ॥

पुम्मान राव पति चिचकोट। सनमध सगप्पन आय जोट ॥
दह तीन अग्ग सेना समथ्थ। भर लाज सुदल बल सिद्ध हथ्थ ॥
छ० ॥ ८०८ ॥

कथ्था गुलोह चावड राव। चित्तै सुधत्त जुद्धा जुदाव ॥
पुडीर आय चव सहस सथ्थ। चव तेग बंधि सज्ज्यौ समथ्थ ॥
छ० ॥ ८०९ ॥

पामार तेत अन्नुअ नरेस। पहुमी सकाज आयौ असेस ॥
पोमार सिध अनभग जग। लग्गौ सुअप्प रन रोह रग ॥
छ० ॥ ८१० ॥

परिहार महन सम पीप बध। लग्गौ सुलाज भर जुद्ध कध ॥
कूरम राव बलिभद्र सथ्थ। परसग पग्ग जा जुलिय हथ्थ ॥
छ० ॥ ८११ ॥

जामानि राव सब सथ्थ ताम। जा काज सोज साजग साम ॥
बग्गरी देव देवग पेत। परसग राय पौचिय सनेत ॥
छ० ॥ ८१२ ॥

मालहन सुतेज बीरत सहेंज। गुज्जरह राम जज्जा[1] अजेज ॥
आजानबाह माजे जुधान। अनभंग सूर जुद्धह जुतान ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

मोकल्यौ चंद कंगुर सुठांम। हाहुल्लि काम जुद्धा जुराम ॥
मुक्कांम आय सभ संतुलेम। संजुरे सुभर सब्बां असेस ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चैअग्ग सयन[2] असीस उद्ध। भर सबें सुद्ध एकंग जुद्ध ॥
इहि बिधि सबै सेना सुगाजि। जानेव साहि साजौ सुकाज ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

* जिहि थान उमा हम रहे जाई। सो भू दुहथ्थ नंपी पुदाय ॥
हिंदू तुरक घन परिय अंटि। छिति छोति मेटि जलगंग छंडि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

सुभि अवन बयन साहाब दीन। छन एक रहिय मन होइ मली
दिल्ली दिसानि तरवारि तोलि। गज्जनेस गज्जि पुनि कुप्पि बोलि
छं० ॥ ८१७ ॥

हिंदवान थान नंपो उपेरि। कौं बच्च बेलि जिम कप्पि हेरि ॥
कर फेरि मुंछ दड्ढी सुलग्ग। असपति परत्त घरि फेरि पग्ग ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

जितौं संग्राम चहुआन जब्ब। सनमुथ्थ करों सिर पथ्थ तब्ब ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना।

दूहा। मुरग पेच फुनि बंधि सिर। कर पंचै कम्मान ॥
सब उमराव बुलाई ढिग। मतौ मंडि सुविहान ॥
छं० ॥ ८२० ॥

सरदारों का उत्तर देना कि अबकी बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे।

कवित्त ॥ चिंति साहि साहाब दीन। सुरतान तांक कुबि ॥
वोहि सबै उमराव। मंत सोंचिंत स्वामि तबि ॥

(१) मो० जाजा। (२) ए० कृ० को० अयन।

* छन्द ८१६ से लेकर छन्द ८२१ तक मो० प्रति में नहीं है।

घर चरित्र चहुआन । कहिय सो आदिरू अतह ॥
सोइ चित चितेव । सबौ सब्बै मिलि मतह ॥
जपेव ताम तत्तार तमि । करै चित्त साहाव चित ॥
कै सजहि भित्ति मारग सकल । कै तुम आनहि जुद्ध जिति ॥
छ० ॥ ८२१ ॥

काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकडा जायगा।

भुजगी ॥ तबै बुझयौ ताम काजी मदन्न । तम वुद्ध विद्या सुराज्जै[1] सदन्न ॥
सदा बंदिगी साह लागै सुमन्न । सदान[2] कुरानं सुभासै सवन्न ॥
छ० ॥ ८२२ ॥

कहै ताम काजी सम साहि गोरी । धरौ सुम्भ बात पर चित्त छोरी ॥
दिन कालिह कुद्ध दिन उच दीन । गहौ चाहुआन कला इद पीन ॥
छ० ॥ ८२३ ॥

परै सैन दूनी भर भार भार । रन रौद्र बित्तै अभूत सुसार ॥
पल रुद्र रसस अभूत भयान । विभच्छ समथ्थ उहथ्थ सयान ॥
छ० ॥ ८२४ ॥

चढे कालिह चपौ चिर हिंदु सेन । न चुक्कै कुरान सुभान सवेन ॥
गहौ जौन हिंदू पल दुष्ट जेस । करौ पोदि पोसी तनह प्रवेस ॥
छ० ॥ ८२५ ॥

सब मुसलमान सरदारों का बचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब सोइ । बध्यौ जोर जुरान ॥
चढ्यौ अनी[3] नीसान दै । चित्ति चित्त ईमान ॥
छ० ॥ ८२६ ॥

कवित्त ॥ आनि पान सुरतान । साजि साहाव सुहित्त ॥

(१) ए० कृ० को०—सज्जै। (२) ए० मदान
(३) ए० कृ० को०—अण

हेरा षाना मानि। करो प्रस्थान मिलत्तं ॥
धरे धीर उद्दंग। चंग सुरतान चढंदे ॥
मन बद्धै हग्गीर। सत्य लै लीह कढंदे ॥
दस सहस संग आलम्म के। एजु देह दह पंच बस ॥
संसार सकल पूजै बली। करो जोर छोनीय गस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

दूहा ॥ मेछम सूरति सत्य किय। बंचि उराम कुरान ॥
बीर विचारति रत्ति हुअ। दिय मैलान मिलान ॥
छं० ॥ ८२८

शाही सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सजि सेन सुगोरिय साहिरनं। सु मनों दल बद्दल पंति बनं ॥
दसमत्त पयोहर पंच गुरं। इह तोटक[1] छंद प्रमान धरं ॥
छं० ॥ ८२९ ॥

घन अग्ग निसान दिसान सुनं। थलहूं जल जल्ल सुपल्लवनं।
विसरी द्रिग अद्ध न सुग्गहयनं। गु बजे घनघंट निसान[2] घनं
छं० ॥ ८३० ॥

रन लंकहि भेरि न केरि धुरं। सुबजे घन सिंधुअ राग सुरं॥
सुभयं गजराज उतंग उभै। सुचलै गिरि कैं मनु जंम सुभै ॥
छं० ॥ ८३१ ॥

गज गुघघर उघघर यों गुबरै। सु मनों तम के तन सो बुहरै ॥
बर गात परब्बत सें दिषियं। छर वछछर भेरति तेल लियं ॥
छं० ॥ ८३२ ॥

दिन छिप्पिय रेन दिसा गुनियं। वर सद्दन कान नही सुनियं
छं० ॥ ८३३ ॥

ा ॥ सबद कान सुनियै नही। मुंदि निसा दिन जान ॥
मीर पीर पैगंबरहु। सजि चल्लौ सुरतान ॥
छं० ॥ ८

ए० कृ० को० मोदक।
(२) ए० कृ० को० निघट।

सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन।

पद्धरी॥ सजि चल्यौ साहि आलम असभ। उप्पयौ जानि साइरन अभ॥
जय तथ्य साहि सेना सुदीस। उन्नयौ मेघ[1] बर वैर रीस॥
छ० ॥ ८३५ ॥

बाजहि निसान घन जिम दिसान। दामिनी तेग बर बक्कमान॥
बाहनि बहत मद बूंद गध। सुझ्झै न भान दिसि विदिसि धुध।
छ० ॥ ८३६ ॥

धुम्मलिय मिलिय कलग निगसद। झझ्झलग[2] हर सुह सुरिग मद॥
प्रज्जरहि पथ पहननि सिंध। मिलि चलहि सिगि आरम्भ गिद्ध॥
छ० ॥ ८३७ ॥

सिधुर धरनि सघरिहि सान। सुनियै न वयन सह दुरिग वान॥
चक्कीय चक्क सुक्के विझलत[3]। निसि दरस सरस सारस मिलत॥
छ० ॥ ८३८ ॥

प्रतिबिंब अंब अंबरनि तार। सुकतै न सुगति मंजर सिवार॥
धुंकार धुनति गाजहि निहंग। इस दिग्ग धरा पूरे समग॥
छ० ॥ ८३९ ॥

चक्रित सुचित्त मन मित्त हित्त। रस उभय अम्म आनंद चित्त॥
दीपै अदृष्य आलोल नैन। विसरीय कोक सुर मग्ग बैन॥
छ० ॥ ८४० ॥

निकुरिय ढाल धर धरिय कोक। सचिय सुसाल सभरिय सोक॥
हसि चक्क चकी सो कहिग छंद। माननिय जानि दामिनिय चंद॥
छ० ॥ ८४१ ॥

असपति असभ धर गहन छिद्द। कोप्पौ कमाल गोरी नरिंद॥
"दिवि दिवस स्यार इक करहि फेर। जोगिनि अनंद अच्छरि सुमेर"[4]
छ० ॥ ८४२ ॥

(१) ए०—मेघ। (२) मो०—झझ्झिल्ल।
(३) मो०—विचलत। (४) मो०—माधव दिवस इक कराहिं फेर।

कुह किलकि सौन बर बरहि बीर। उच्छरहि मीन धर गरुव नीर
आवरत सेन दल हलिग[1] साहि। गाहन असंषि अदि भीम धारि
छं० ॥ ८४३ ॥

अग्गें सुरेंन पच्छैं पुकार। भावसिय संक्रमन सन्निवार ॥
रवि घरह राह अरु केत गत्ति। जानी न चंद ग्रह ग्रहन मत्ति ॥
छं० ॥ ८४४ ॥

दूहा ॥ कहहि चंद रन अम्भरन। मरन सुधन्न धनाह ॥
बर नरिंद दल हिंदु कौ। भई सनाह सनाह ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

राजपूत सेना की तैयारी वर्णन।

पद्धरी ॥ कहि कूह बहि सन्नाह सद्द। मंगिय सुहिंदु पुरसान रुद्द ॥
डंमरिय डहकि अंमरिय रत्ति। संभरिय रोव रावल सुवत्त ॥
छं० ॥ ८४६ ॥

बंबरिय बीर रोमंच उट्ठि। ब्रह्मान भ्रंम कसि अंग पुट्ठि ॥
ब्रह्मानि हेम कमलानि कंठि। बंदिय विभूति सिंगिय सुगंठि ॥
छं० ॥ ८४७ ॥

अवधूत धूत जोगिंद राज। चढ्यौ सुसक्क गढ़ चिच लाज।
धज मुंज धज्ज नीसान नद्द। आहुट्ठि राइ असि कसिग हद्द ॥
छं० ॥ ८४८ ॥

सक सकति नाग भुज भाग साजि। प्रज्जरिग क्रन्न मुष ब्रन्न गाजि
नभ मिलिन रन्न चष दिष्टि दिष्टि। मंडिय सुटोप सिर[2] निट्ठ निट्ठ
छं० ॥ ८४९ ॥

मृग जाति काय पष्षर पवंग। सित असित पीत कुंजनि कुरंग ॥
उर राह बाह रावत्त भीर। निरमलिग नेह जनु लज्ज नीर ॥
छं० ॥ ८५० ॥

गुन गनत तत्त वज्जी सुवत्त। बंधिय सुहंसि सिर छहति सत्त ॥
हिल्लुरिग अंब बर बरन बीर। प्रिथ प्रिथम हेत निप तिरन तीर
छं० ॥ ८५१ ॥

(१) ए० कृ० को० लहिग। (२) ए० कृ० को०-सन।

पडव सुपड चहुआन चड। सजि चढिय राज जोगिद दड॥
सुनि निज नफेरि सजोई कत। आरुद्धो गरुर हय हय हसत॥
छ० ॥ ८५२ ॥

जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं।

कवित्त ॥ पानि जाम जद्दों जुबान। लगि कान कह्यौ इह॥
प्रिथा कत इह वार। तात कुसलत्त होय यह॥
छद राइ कूरम। सिभ पूजन[1] पति जपिय॥
करुन हथ्थ पुडीर। राव पावस कत कपिय॥
महि महन सौह सिह गुरिग। तिह सहाय रावर समर॥
तुम सम न कोइ हिदू तुरक। भिरि न सकहि दानव अमर॥
छ० ॥ ८५३ ॥

पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए।

गरुर हकि दानव नरिद। दिसि वाम काम तत॥
झलकि झलकि झि गुरिग। नेन दग[2] बेन कहत वत॥
तुम दिप्पिन गिरि गरुअ। सग रन रग हरष्पय॥
तुम समान कोइ आन। हमहि[3] हम हितू न दिप्पिय॥
जब लग्गि मुझ्झ भीर न परै। तब लगि भट भिरन न करौ॥
आरज्ज सोम सकट सतिन। सजिन सेन चपत परौ[4]॥
छ० ॥ ८५४ ॥

(१) ए०—पजून।
(२) मो०—द्रग।
(३) मो०—हमहि हि दू नह दिप्पिय।
(४) ए० कृ० को०—फिरौ।

रावल जी का कहना कि रामर से विमुख होना धर्म नहीं है।

हंसि नरयंद आनंद। राज राजन प्रति पत्तिप।
तुम सनेह सम्भरिय। मोहि दष्षन लगि बत्तिप॥
ना हं ना तुं ना जगत। न मिच्छ इच्छ नन॥
नहिन छूर सामंत। छूर अंकुर गहन मन॥
संग्राम धाम धर छत्रियन। पर इत पुर परतर लहै॥
षहुआन आन सोभेस सुअ। विमुष जीह जंतनि कहै॥
छं० ॥ ८५५ ॥

रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना।

दूहा॥ दय दच्छिन दच्छिन अपन। प्रथम प्रिथा पति कंत॥
गहर कंध थप्परि प्रथुत। प्रभु प्रथिराज सुभंत॥
छं० ॥ ८५६ ॥

असुर सेन सम संचरिग। दल बहल बिष मंत॥
बहुरि बियौ प्रब्बत सुभित। प्रथुरु संजोई कंत॥
छं० ॥ ८५७ ॥

भुजंगी॥ दुअं सेन आवृत्त उत्तंग अंगं। दुअं छच्च सेतं पियं नेत रंगं॥
दुअं सार सिंधू उरं अग्र दौनं। दुअं बीच सा चंग लंकाल भौनं।
छं० ॥ ८५८ ॥

दुअं पथ्थ रथ्थं सरथ्थं परामं। दुअं सेन आपासि आपा विरामं।
दुअं जोर जीवा रजं नार कंधं। समय एन संमं कलिं कहत धंधं॥
छं० ॥ ८५९ ॥

रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से कुछ कहना और राजा का उसे समझा जाना।

दूहा॥ तन अलंग अंगह उभय। अप अप्पानैं सेन॥

पाछु जुक्कन्न लगिके कह्यौ। [1]सुन न्रप परपिय वेन ॥
छ० ॥ ८६० ॥

रावल जी के इशारे पर सेना का व्यूह बद्ध किया जाना।

पद्धरी ॥ रस प्रीति सुसाजन बार तिन्न ।खप भेटि समर रावर सुक्कि न ॥
रस करन सथथ पावस पुंडीर। हनिवत जिसो धीरह समीर ॥
छ० ॥ ८६१ ॥

उनलक जालि परबत्त पारि। अजनिय अनिल ग्रम्भह विचार ॥
रस मरद देषि जादोंनि जाम। वय रूप रूप एकह सुभाम ॥
छ० ॥ ८६२ ॥

गल कठ माल मोतिय सुमेलि। सजोगि तात दन्नियत[2] केलि ॥
लिय लष्प हेम कैलास गूर। रेसमिय सोप उद्दोत भूर ॥
छ० ॥ ८६३ ॥

अद्भुत देषि बलिभद्र सद्द। गाजने साहि जे हरन मद्द ॥
अभिलाप हास्य घट जीव कौन। अनलषिय आन लषियै प्रवीन ॥
छ० ॥ ८६४ ॥

बीभच्छ नेन मस लद्दन सीह। जय लागि गरुअ हय छडि लीह ॥
निरवान राइ रथन सुसत। गल गलिय[3] नेन लांगत पत ॥
छ० ॥ ८६५ ॥

सजोगि सयन अगुलि बताय। सम समर साहि रावल दिषाइ ॥
नर सहित नेत बधै नरिंद। मनि मरन भौन जिम सुक मुनिंद ॥
छ० ॥ ८६६ ॥

पहु परी छित्त अवतार सुम्भ। हरि चक्कवान रापै सुरम्भ ॥
उहि बरन भेष चिच्च राव। मिलि दैव जोग सजोग दाव ॥
छ० ॥ ८६७ ॥

इन सम सुसम्भ लाह्न विषानि। इन मरन जियन देषियन हानि॥

(१) ए० कृ० को०—सुनत परच्छिय वेन।
(२) मो०—दिछियत, प०—दिन्नियत।

दरसी दल की दल ढल्लरियं। सुमिरैं घर कायर बल्लरियं॥
छं० ॥ ८८० ॥

जिनकै मुष मुंछनि मच्छरियं। निरषें तिनके तन अच्छरियं॥
न्रप जोइ फावज्ज सुबंटि लियं। मुह मारक चावँड राय दियं॥
छं० ॥ ८८१ ॥

भुज दच्छिन अब्बुअ राव रच्यौ। सिर छत्र सपेद सुआनि सच्यौ
भुज की दिसि वाँम पुँडीर भरी। कटि कंध कबंध गिरंत लरी॥
छं० ॥ ८८२ ॥

कूरंभ अरंभति अप्प अनी। सुधरी कविचंद सुनी सुभनी॥
दल पुट्ठ सुमोरिय राव सुन्यौ। कवि उत्तिन संच सुन्यौ सुभन्यौ।
छं० ॥ ८८३ ।

निरवान चँदेलति जुद्ध मिले। हय मुक्कि लरें जम सों जुरले।
तिन मद्धि सुसंभरि वार इसौ। भुज अर्जुन अर्जुन वार जिसौ॥
छं० ॥ ८८४ ॥

अमरावलि छंद प्रमान कियं। न्रिप जोइ फावज्ज सुबंटि दियं॥
छं० ॥ ८८५ ॥

राजपूत सेना की कुल संख्या और सरदारों की स्फुट अनीकिनी सेना की संख्या वर्णन।

दूहा॥ अप्प अप्पनी फौज बँटि। नाम ठाम सामंत॥
संख्या दल कविचंद कहि। तिन बल जुद्ध अनंत॥
छं० ॥ ८८६ ॥

भुजंगी॥ सबं सेन साहस्स अस्सी त्रयग्गं। चवै फौज साजी जयं जुद्ध जंगं
सुरं संषि हज्जार सा फौज वामं। पतिं चिच कोटं जयं क्रत्य कामं
छं० ॥ ८८७ ॥

तहां साजि साहाइ साजाम देवं। बलीभद्र कूरंभ सथ्थे सुनेवं॥
सुअं धीर पुंडीर पावस्स तथ्थं। तहां पारिहारं महन्नं समथ्थं॥
छं० ॥ ८८८ ॥

सजी जैत अन्नी सुदाहिन्नि भारं। भरं राज हज्जार इकईस सारं

तिन मम्मभ आरज्ज कमधज्ज राज। अचल्लेस भट्टी सुजादव्व भाज॥
छ० ॥ ८८९ ॥

तहां बकटी राव पामार धीर। बड गुज्जरं चन्द्र सेनं सुवीर॥
बर सिध पचाइन चाहुआन। धरा ध्रम्म रायै पल्ल पित्त टान॥
छ० ॥ ८९० ॥

न्रप देवती लष्यन धार ईस। बिजै राज बघ्घेल सथ्थे सजीस॥
तहा दछ्छ परिहार ते जल्ल डोड। सजै जैत भीरं अरी साल सोढं॥
छ० ॥ ८९१ ॥

सुप अग्ग सेना सुचामड राजं। तहा साजि साहस्स सासच्च काज॥
तहां पीप परिहार भारथ्थ राय। भर दाहिमा जगली राव सोय॥
छ० ॥ ८९२ ॥

रचै ढढरी ठाक पुज्ज पहार। भरे भीम चालुक्क वज्जैन सार॥
तहा राज रावत्त सथ्थे सपेत। सजे जूह दाहिम्म सा सुम्भनेत॥
छ० ॥ ८९३ ॥

सजे सेन पुट्टीय सा चाहुआन। भरं तथ्थ इग्यार उनईस थान॥
सथ्थे सिध पामार पीची प्रसग। बडं गुज्जर राम देव अभग॥
छ० ॥ ८९४ ॥

तहा बग्गरी देव आजान बीह। गुरू राम देव सुसथ्थेव ठाह॥
गुर चाल गं हिल्ल सा पच थान। भर अन्य सज्जे न्रप ठान ठानं॥
छं० ॥ ८९५ ॥

सजी फौज लथ्थे सुदिल्ली नरेस। चढे इथ्थन इम्भ राज सुरेस[1]॥
चढे व्योम विम्मान अप्प अपान। मिली अच्छरी मंजि रज्जे सुजान
छ० ॥ ८९६ ॥

पिलै नारद तुमर तति तार। करे हूह हाक गुरगै उछार॥
मिलै वीर बेताल पेयाम पेत। मिली चौसठी सकत्ति सोय अनेतं॥
छ० ॥ ८९७ ॥

घन धप्प गोमाय गिद्धी गहक्कै। पलंचार श्रोन चर दद्द हक्कै॥

(१) ए० कृ० को०—नरेस।

मिलै श्रोनचारं लषे मोन[1]भारं। अनी जाम बंधी न्रिपत्ती करारं
छं० ॥८९८॥

शाही सेना का रांतूलपुर के पास आना।

कवित्त ॥ सजि आयौ सुरतान। जूह सेना अति आतुर ॥
तुरिय लष्ष दह भुभर। दंति दस सहस मंत वर ॥
पुर संतुल सा निकट। आय दलबल संपत्तौ ॥
सज्यौ देषि दिल्लीस। नाम गोरी अनुरत्तौ ॥
पुछ्यौ सुमंत ततार षां। षुरासांन साहाब सदि ॥
टट्टौं सु सज्जि जंगल सुपह। रचौ बंध अप्पान[2] रदि ॥
छं० ॥८९९॥

शहाबुद्दीन के आज्ञानुसार ततारखां का अपनी सेना को व्यूहबद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम।

षड्डरी ॥ सं बच्यौ तांम तत्तार तंमि। षुरसान षान साहाब समि ॥
बंधौ सुअनी साजै सुबानि। संहरौ सेन ग्रहि चाहुआन ॥
छं० ॥९००॥

संचौ सुबत्त सब्बान ताम। बंधौ सुअनी पंचौ दुराम ॥
दाहिनी सेन सज्ज्यौ ततार। द्वै लष्ष तुरिय सारङ्ग सार ॥
छं० ॥९०१॥

द्वै सहस दंति उनमत्त मंत। संजूह सब्ब बानै अनंत ॥
नौ चम्म षान रुम्मी समथ्थ। नारंग निस्सूरनि सिंघ हथ्थ ॥
छं० ॥९०२॥

साहाब बंध सुअषान षान। महमुंद षान रुस्तम षान ॥
गज गरुअ षान तह षुरेस षान। षे हान षान जंगी जनान ॥
छं० ॥९०३॥

हमियाम षान भै[3] रुंस भार। मीरां मसंद षल षित्त ढार ॥

(१) ए० कृ० को० जुद्ध।
(२) ए० कृ० को० आनद।
(३) ए० कृ० को० मैरू।

काजी कमाल हवसी हुसेन। सादी मलिक अद्दिय अनेन[1] ॥
छं० । ९०४ ॥

मारुह न हस हम्मीर तथ्थ। सह स च यच गप्पर गुरथ्थ ॥
सज्जे सुसज्ज सेना ततार। वधी सुअनी भर भीर सार ॥
छ० ॥ ९०५ ॥

बाई दिसान पुरसान सज्जि। हैलप्प मीर गरुअत्त गज्जि ॥
गज सहस इक्क सारङ्ग सथ्थ। बाने विरद्द वबरि विहथ्थ ॥
छ० ॥ ९०६ ॥

ईसण्फ पान आली अपूव। गाजी वपान गर वर हवूव ॥
आलील पान दम्माद ईस। सारीर पान सुरतान जीस ॥
छ० ॥ ९०७ ॥

पीरोज पान पाहार पीर। अलि असद पान उम्माद मीर ॥
महमुद पान मीरन सुधारि। सारीर पान सेरन सुभारि ॥
छ० ॥ ९०८ ॥

ताजन पान तुरकाम ताम। कम्माल पान गरवर गुराम ॥
रोचन्न पान रोहन्न राज। सलेम पान सेकद ताग ॥
छ० ॥ ९०९ ॥

महमुद सैद फत्तेन सूव। अवदुल्ल मीर मुलतान जव ॥
साजे सजूह मारूफ पान। सावद्द नद्द अनभूल वान।
छ० ॥ ९१० ॥

साहाव सेन परठे सुपुट्ठ। सारङ्ग लथ्थ सेना सुदुट्ठ ॥
गय सहस एक साजे सुभार। बानैत वान अनभूल सार ॥
छ० ॥ ९११ ॥

सथ्थेव साजि मारूफ मीर। पीरोज पान फत्ते नसीर ॥
पीरन्न मीर सेरन सादि। मरहट्ट मान गाजी सुरादि ॥
छ० ॥ ९१२ ॥

कनर कनक्क हरचिच सेन। सारग देव गव्वर सवेन ॥

(१) ए० कृ० को०—अलेन।

उम्माद पान फत्ते फरीद। वंकट्ट राव वामन वरीद॥
छं० ॥ ९१३ ॥

संचे समुट्ठि सेना सहाव। परसंमि सूर मद्धान आव॥
सजि मधय सेन गज्जन नरेस। द्वै लष्ष मीर साजे सुभेस॥
छं० ॥ ९१४ ॥

गज सहस चैव मंते उमंत। वंवर विरद्द वाने वहंत॥
लालिन मलिक्क गालिब्ब वंध। वाजंन पान गोरी विरद्द॥
छं० ॥ ९१५ ॥

मंगदह राव मरहट्ठ मेह। कोतन अमंन गज्जर अरेह॥
सनमुष्ष सजि मारूफ पान। सुअ गज्जनेस गरुअत्त वान॥
छं० ॥ ९१६ ॥

चैलष्ष मीर सेना समाज। द्वै सहस इम्भ सारद्द साज॥
संमन कमंन महमुंदमीर। मों नदी अग्र सेना सधीर॥
छं० ॥ ९१७ ॥

तोसंन मीर ताजंन पान। ओलीस सैद पाना सुवान॥
सादीप षान हबसी सलेम। आबूव पान रुम्मी अलेम॥
छं० ॥ ९१८ ॥

महदीय सहद्दी मीर बंध। रत्तेव क्रन्न वक्रंत कंध॥
सल्लेम षान साकत्त सेष। जा जन्न जमन मीरां विसेष॥
छं० ॥ ९१९ ॥

सल्लेम सैद सेना सरूप। मोसब्ब मीर सुलतान रुप॥
हाजिय पान न्याजी सताज। अहमद्द पान षिति पग्ग लाज॥
छं० ॥ ९२० ॥

साजिय अनीय साहाब पंच। गज बाज बिरद वाने न संच॥
उग्गरा मीर साजे असंष। को गनै पार अप्पार तंष॥
छं० ॥ ९२१ ॥

संषैप चंद जंपै समूह[1]। आभूत सेन गोरी गरूह॥
षट तीय लष्ष संग्या गिनंत। सेना अनंत पयदल मिलंत॥
छं० ॥ ९२२ ॥

(१) ए० कृ० को० सतूह।

सर बंधि सधि साजूह भार। आवरै अग भर अनिय धार॥
गज बाज सुदल बल पय पगार। बाजे अनंत बज्जे करार॥
छं० ॥ ९२३ ॥

जबूर भूर हथ नारि भार। आतस चरित्त अद्भुत पार॥
बाजत राग सिंधुर वद्द। धर पूर व्योम नीसान नद्द॥
छं० ॥ ९२४ ॥

बहु रूप बिरद्द बाने अनंत। सुरपत्ति विपन रज्ज्यो वसंत॥
आरोह एक डमर डरान। लोपत व्योम सुझ्झै न भान॥
छं० ॥ ९२५ ॥

सुर बैठि रथ्थ साजे अनंत। धर अतुल चार अद्दन अंत॥
पल चार ओन चर इंपि अनंद। हसि हस्सि धीर नच्चै पसंद॥
छं० ॥ ९२६ ॥

दुअ सेन साजि राजे रवद्द। ठट्ठै सुआय आसुर उरद्द॥
छं० ॥ ९२७ ॥

श्रावण वदी अमावास्या शनिवार को दोनों सेनाओंका मुकाबला होना।

दूहा॥ साक सु विक्रम रुद्र सौ[1]। अट्ठ अग्र पंचास॥
सनि वासर सक्राति कक्क[2]। श्रावन अद्धौ मास॥
छं० ॥ ९२८ ॥

सावन मावसि सूर सुअ। उभय घटी उदयत्त॥
प्रथम रोस दोउ दीन दल। मिलन सुभर रन रत्त॥
छं० ॥ ९२९ ॥

दरसे दल बद्दल विषम। रागरुलाग निसान॥
मिले पुब्ब पच्छिमह ते। चाहुआन सुलतान॥
छं० ॥ ९३० ॥

सारन धीरी सारुहै। धीर न धरी प्रमान॥
चाहुआन गोरी सरिस। गोरी रा चहुआन॥
छं० ॥९३१॥

(१) ए० को० को०—सत्त सौ। (२) मो० क्रम।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन*।

भुजंगी॥मिले चाय चौहान सुलतान षग्गं। मनो बारुनी छक्किवे बारुलग्
उठे हथ्थ हक्कं कहं कूहकालं। जुटे जोध जोद्धं तुटै ताल तालं
छं०॥ ९३२ ॥

भए सेल मेलं दुहुं मार मारं। बढ़ी संग लग्गी वजी धार धार
सुभट्टं मुथट्टं सुरीसं समेकं। भई सेलमेलं अनी एक एकं॥
छं० ॥९३३॥

परें घाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं। कटै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं॥
परै सूर सग्गं उतंगं सुधारं। भमै वयोम विम्मान आरंभ हार
छं० ॥ ९३४ ॥

छुटे बान चहुआन आवद्ध राजं। लगे मेछ अंगं मनों वज्ज बाः
फुटै संगि संनाह के अंग अंगं। उठै ओन छिंछें जरैं जानि दंग
छं० ॥९३५ ॥

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं। भए मेछ अद्धे मनों राह केतं
बब्यो बीर न-री सुहूली अन-री। नचै भूत भैरूं बकें जानि बं
छं० ॥ ९३६ ॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं। ग्रहे गिद्धिं सेवाल लुथ्थानि लुथ
चुवै ओन सट्टी किलक्कंत धुंटै। ग्रंह मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै।
छं० ॥ ९३७ ॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं। परें पंच पंचास चोवंड बीर
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने। परे देवरा जेद्ध ते दून जूने॥
छं० ॥ ९३८ ॥

परे सांषुला सव्व भाटी सुराने। परे हंस माल्हन मिलि हंस थानें
परे राह रट्ठौर रनभूमि ठोरे। मनों सार संसार रन सामि छोरे
छं० ॥ ९३९ ॥

परे चाइ चालुक्क ते सार दूने। मुरे मोरिया सव भए जाति सूने
परे सहस षट सूर कूरंभ वाला।[1] परै गज्ज सिंदूक कते ढालढाला
छं० ॥ ९४० ॥

[१] मो० "फिरै गज्ज सिंदूक ठालेति ठाला"

परे पीचिया पग षेलै सुपाला। परे टाक च देल पुडीर माला॥
सहै भीर रन रग जे तुंग लाला। चले ब्रह्मइस पुले मुत्तिमाला॥
छ० ॥ ९४१ ॥

परै जैत पंम्मार आवु सुरायाकरी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पच से पच चहुआन बट्टे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठट्टे[1]॥
छ० ॥ ९४२ ॥

परे सहस पचीस सब सेन गोरी। रहै तुरक हिंदू मनो षेलिहोरी॥
भिरे देव दानव्व जिम बैरू बित्यौ। सुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ॥
छ० ॥ ९४३ ॥

परे लष्षि अगिनत जानों न सख्या। रची जाँनि जोगिंद सा मुनि दग्या॥
मिले पान सुरतान रनभूमि पिष्यौ। तहा एक देवास मे देव दिष्यौ॥
छ० ॥ ९४४ ॥

परी बिट राजग सा अग मौर। करी कुंडली काल रज्यौ कठोर॥
कथे काव्य कुब्बेर साई सु अग्गे। चित अत्ति आनंद उम्भास लग्गे॥
छ० ॥ ९४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, सुवेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना।

कवित्त। ताम ठाम ज लप्प। जाय जटधार सपत्तौ॥
आहुत्तौ बलिभद्र। वीर बीराधि सहित्तौ॥
आति आदर दिय देवि। पुच्छि परपंच सच विधि॥
बर आसन उत्तान। मान रष्पिय सु प्रान उधि॥
आयौ सु जच्छि सुबेर तह। सँग जोगिनि बेताल साथ॥
बीतौ सु जुद्ध हिंदू तुरक। कहिय ईस दिय भेट अथि॥
छ० ॥ ९४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो।

तब कहै ईसमन मंडि। [2]अहो सुबेर दच्छ सुनि॥

[1] ए०कृ०को०—वट्टे। (२) मो०—अहो सु मेर द्रव्य सुनि।

किम हिंदू तुरकानि। पान[1] जंपौ जुद्ध गुनि ॥
इहै जोग सारत्त। मंत दिष्यौ जुध जग्गिय ॥
इहै बीर उनमद्द[2]। साधि भष्यौ सा अग्गिय ॥
बलिभद्र कहिय अति उद्ध कथ। रुद्र सूर सामंत रन ॥
भारथ्थ कथ्थ लग्गै अतुल। कहौ पान उत्तान तन ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

सुवेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पाहिले राव बलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना।

दूहा। कहिय दच्छ कैलासपति। सुनि रन संकुल सार ॥
चाहुआन सुरतान षिति। जे भर जुट्टे धार ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

कहै सूर सामंत सह। जस जीतन यों काज ॥
जो जीतन तुम होय नहि। तौ रष्षहु प्रथिराज
छं० ॥ ९४९ ॥

प्रथम जुद्ध आवृत्त मचि। कर थक्के दोउ दीन ॥
ओसरि दल दूनौ रहै। ज्यों प्रमुदा रस भीन ॥ छं० ॥ ९५० ॥
मिले सूर सामंत मत। पति चिचंगे पुच्छि ॥
तुम माया मद जित्त हौ। हम मानव मन तुच्छ ॥ छं० ॥ ९५१ ॥

बलभद्र और जामराय का रावलजी प्रति प्रश्न।

कवित्त। विपथ राव बलिभद्र। सुपथ जादों पति कथ्थिय ॥
समरसिंघ रावलह। समर साहस गति पिथ्थिय ॥
राज भग्ग अत भम्म। भग्ग छत्री सालोकिय ॥
कह सु हंस आनंद। बुद्धि कहि तत्त सलोकिय ॥
कहं कहां सु मोह मरयाद कहं। कहां सुजोति जोतिहि लहै ॥
जोगिंदराव जगहथ्थ तुअ। जग सु देव तत्तह कहै ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

(१) मो० पात। (२) मो० उदमद्द।

रावल जी का उत्तर देना।

विपथ सुबंधयौ मोह। सुपथ जिहि स्वामी निवरतै ॥
राज सु अग्या रवन। सेव तिन वज्ज प्रवत्तै ॥
म्रित सु स्वामि सोरत्त[1]। नीय निंदा न प्रगासिय।
अह निस व छहि मरन। सु पहु सकुरै निवासिय ॥
हा हस हस मंडल रूरै। मन अनंत अंतहि रूरत ॥
सामंत सिंघ रावर चवै। सुगति सुगति लभ्भै तुरत ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

प्रश्न "क्षत्रियों का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते हैं।"

कहै राव जामानि। अहो चिंचग रावं सुनि ॥
तुम सु जोग जोगिंद। जोगधर मूल ब्रम्ह गुनि ॥
तुम सुधीर अवधूत। व्यास जिम लहौ सकल गति ॥
तुम सुभ्भै चयलोक। सकल कल्ल कलय तुभ्भ मति ॥
हम कहौ धम्म छत्तिय सुधर। राज भ्रम भ्रत भ्रम ॥
सालोक साज सज्जौ प्रथक। कहौ मुत्ति[2] सारूप भर ॥
छं० ॥ ९५४ ॥

रावल जी का बचन कि धर्मरहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते हैं।

तब कहि रावर सिंघ। सुनहि जामानि राज वर ॥
भल पुच्छिय भर समथ। सार ससार कला धर ॥
कहिय पुरानंनि वत्त। रिष्य आगम वहु विथ्थरि ॥
कपिल गाय कह्यौ भरथ। कहिय पारथ ग्यान सु हरि ॥
इन काल द्रष्ट इय चित्त निज। सुप अग्गै आसुर सयन ॥
सषेप कहौं तुम तत्त मत। मझ्झ गहि राषौ सुमन ॥
छं० ॥ ९५५ ॥
काल तिमिर पर वर्यौ। चिंति तिहि भ्रम न बुझ्झै ॥

(१) ए० कृ० को०—सौरत्त ॥ [२] ए० कृ० को०—मुत्ति ॥

अंतकाल मुष अद्ध। ग्यान चय कालह सुगह्गै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़। राति चै काल[1] पलट्टै ॥
निंद मद्द धन काम। धाम आवरदा घट्टै।
बंधनह अप्प अरमुप्प किय। गज्ज जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्यो नयन। नहि अचिज्ज नरकहि[2] पिरै ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

प्रश्न क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा। [3]कहैं राइ जामानि तव। किमि भव तरियै पार॥
कहौ राइ जोगिंद तुम। गुरमति त्रिभुवन सार ॥
छं० ॥ ९५७ ॥

रावलजी का बचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त। जाग्रति सुपपति सुपन। तुरिय अवस्था ये चारहि ॥
ता मध्ये वय ग्रहै। लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव। देवकरि आवध मांनै ॥
सवामि अम्म आचरै। दुष्ट क्रित धरै न कानै ॥
समपै सुक्रंम सह हरि सहस। अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्ष स्वामि निज सुद्धरै। इम पची पारह तिरै ॥
छं० ॥ ९५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै। स्वांमि अम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै। अप्प हरि ध्यान न मुक्कै ॥
सबद जोति रहै लीन। अग्ग क्रत वासर क्रम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त। आय अरि षुत्तह अम्मै ॥
संकलपि सीस सांई सरिस। मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन। एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

(१) ए० कृ० को० त्रैरेह (२) ए०कृ०को० नरकह परै।
(३) ए० कृ० को० "कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को० देव। (५) मो० मुकति।

पियै सगति धर ओन। पिंड पावक आहारै ॥
साइ समप्पै प्रान। सीस उर ग्रक्कर धारै ॥
अत तुट्टि पय चपहि। डिंभ लग्गहि सुग गिद्धिय ॥
जय बल्लै निज स्वामि। लगै ताली मन बद्धिय ॥
मडलह हस हसह जुरै। जीय जोग गति उद्धरै।
निरकार ध्यान रापै जु निज। इम भव सारूपह तिरै ॥
छ० ॥ ९९० ॥

नृबैर भूत भव सकल। अकल आनद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित। अहित हित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति। रमति स्वा मित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर बज्ज। अङ्ग वज्जग अरिन गन ॥
जप्पौ सुएम जामानि जद। अनहद सद मत्ता मवन ॥
जानत विदुष मति सकल तुम। बहुत बात जपत कवन ॥
छ० ॥ ९९१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छिय सुकारि। जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छत्री भव उत्तरै। जपि समर न्रप राइ ॥ छ० ॥ ९९२ ॥

रावल जी का बचन-राजनीति वर्णन।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात। सुनि कहो जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति विद्द पहिलै सुध्रम्म। मालीय काम त्यो[2] न्रपति कम्म ॥
छ० ॥ ९९३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै सुहित ते हीन पुष्टि। मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छ० ॥ ९९४ ॥

फल फूल डार लुनि लेइ कच्छि। न्रप सचिय करपि कर हरै लच्छि ॥
नहि लेइ माल न्रप करि उपाइ। सरिजाइ सुफल त्यो लच्छि जाइ ॥
छ० ॥ ९९५ ॥

(१) कृ० ए०—जात, मो०जात।
(२) ए० कृ० को०—ज्यो।

सिरजोर सीस सचिव जौ होइ। होइ साप भैद विपरीत कोइ॥
ज्यों कौन पातवै रोचनेव। नृप सावधान मन रहै तेव॥

छं० ॥ ९६६ ॥

लघु बट्ठि दृष्टि ज्यों करि उतंग। त्यों हीन नरनि[1] नृप करै चंग॥
हुअ बंक डार जे चलहि भूलि। तिन छंटि छुंटि वट्टवै सूल॥

छं० ॥ ९६७ ॥

जे अत्त राज मन्ने न पंक। तिन जर उपारि कट्टै सुवंक॥
बंबूर बारि ज्यों बाग होइ। कंटकनि बंक भट रप्पि जोइ॥

छं० ॥ ९६८ ॥

जे धरा काज धरधरै धाइ। अंकुस गयंद त्यों जोर जाइ॥
वर जोर सचिव बघकर अषान। द्रिष्टतव[2] सरप ज्यों दुगध पान॥

छं० ॥ ९६९ ॥

परधान चीय नृप जोर जाहि। धर जात वेर लग्गै न ताहि॥
[3]सेवकिनी पत्ति जित रामै नाह। विलसै ससचिव लै लच्छि लाह॥

छं० ॥ ९७० ॥

दूहा ॥ इह जामानी कथ्थ कथि। कहि संषेपिय उद्ध॥
सजौ जूह सज जुद्ध भर। सनमुष अरि बेनु युद्ध[4]॥

छं० ॥ ९७१ ॥

रावलजी का सब राजपूत योद्धाओं को रामझाना और सब का रणोन्मत्त हो का युद्ध के लिये उद्यत होना।

पद्धरी। संबोधि सुभट षुम्मान राइ। आभासि सबें अप्पा सुभाइ[5]॥
सामंत सीह अरसिंह बोलि। जैतसी लषमन लष्ष ओलि॥

छं० ॥ ९७२ ॥

साजंन सीह सदि लषम सीह[6]। सत स्याम सीह[6] रतनं अबीह॥
तेजसी राव कुंडल करंन। देवरा देव न्निम्भै सरन्न॥

छं० ॥ ९७३ ॥

(१) ए० कृ० को०—जननि। (२) ए० कृ० को०—दृष्टंत।
(३) ए० कृ० को० ज्यों सव किनी पत्त जिम रमै नाह।
(४) ए० कृ० को०- वे युद्ध। (५) ए० कृ०को०—राइ (६) ए०कृ०को०—बामंनसिंह।

आभासि भीम भय अभय सिध। सूरत्त दत्त एक ग रिध॥
सामंत राइ भर समर राउ। उद्दसे रोम अगुटी उथाउ॥
छं० ॥ ९७४ ॥

जपेव ताम दप्पिन गुरेस। आयस्स साइ अप्पौ सुदेस॥
उच्चरहि ताग आहुट्ट ईस। अप्पौ सुमंत सामंत दीस॥
छं० ॥ ९७५ ॥

प्रोकम्म कम्म उम्भार इट्ठ। असि दाव घाव नपौ अदिट्ठ॥
दैवत्त कत्य आघात अप्प। रप्पै सुदंड चारी सु दप्प॥छं० ॥९७६
तुम उच नाम सूरत्त साप। लप्पियै एक मझ्झेव लाप॥
सव सजौ उद्द सौजुद्ध मत्त। कीरत्ति अत्ति वड्ढै कवित्त॥
छं० ॥ ९७७ ॥

जपहि सुभट्ट सुनि समर राज। लप्पहु सु घत्त साव्रत्त काज॥
असि झाक वाक वज्जै अयास। सम मिलहि सूर नर जोति भास
छं० ॥ ९७८ ॥

उच्चरिग ताम सामंत सीह। निज भ्रात जुद्ध लप्पहु स लीह॥
सामंत सूर चहुआन भार। बुझ्झामि धीर वाजत सार॥
छं० ॥ ९७९ ॥

आये सुभट्ट रावल रहस्सि। उम्भरे व्योम लग्गे उहस्सि॥
आयो सुकन्ह सुहवन्न तोम। सुअ अनुज बंध सिप्पहि सुरोम॥
छं० ॥ ९८० ॥

वाने विरद्द बंधे सुचार। आवरिय अधिक सूरत्त भार॥
भर हरिय भीर अग्गर सहार। सकरहि विषम सुर सोइ पार॥
छं० ॥ ९८१ ॥

भज्जना राइ सकर पगार। सरनैत भत्त वाहा उगार॥
झल हलिग तेज वर भाल भास। सूरत दत्त लग्ग अयास॥
छं० ॥ ९८२ ॥

उद्दसे रोम अगुटी उथाह। वीरत्त घत्त वड्ढै वराह॥
विस्साल अग आरत्त ओप। जग्गैव प्रलै मनु काल कोप॥
छं० ॥ ९८३ ॥

रोमच उच्च झल्लरि उथाल। उच्चर्यो सिंघ अग्गे सुढाल॥

इह मत्त रत्ति अगाव सानि। उतमेछ सज्जि उम्भै उतानि।
छं० ॥ ६८४ ॥

बलिभद्र वीर कैलास वान। कुब्बेर दच्छ मंते मतान॥
इह जुद्ध विद्धि अप्पै वपान। कलहंत केलि लग्गी भरानि॥
छं० ॥ ६८५ ॥

उम्भरै सद्द सुनि सुनि निसान। संभरिय राइ चहुआन पान॥
आतुर अनंत पग मग्ग दान। पति सरस सुगध वांछित विहान॥
छं० ॥ ६८६ ॥

शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का संपूर्ण वर्णन करो।

कवित्त। सुनिय बत्त जटधार। चित उम्भार रहसि रजि॥
मन विलास तन भास। रोम उल्लास तास सजि॥
कहै दच्छ सम ईस। कहो वेताल विवरि कथ॥
अति लग्गै आनंद। प्रेम पूरन भारथ्थ कथ॥
प्राकंभ नाम सुभटन प्रथुक। कहै वीर सा विवरि विधि॥
असुरान पान हिंदू तुरक। ताहि सु जंपौ जुत्त अधि॥
छं० ॥ ६८७ ॥

यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना।

दूहा॥ कहै दच्छ कैलासपति। सुनि धर अवन सुठान॥
सुभर जुद्ध लग्गे अतुल। चाहुआन सुलतान॥
छं० ॥ ६८८ ॥

प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलांजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना।

कवित्त। होत प्रात सब सूर। बज्जि घरियार कट्टि पहु।
मिलि बारन बर राज। बीर संदेस तत्त कहु।
स्वर्ग मग्ग रुक्किये। चित्त रथ्थौ पुनि धीरं॥
अच्छरि वर संग्रहै। लेहु अच्छरति सरीरं॥
इत्तौ न हेच दंपतिय हित। दुहुं न सरन हित आजयौ॥

जाने कि चित्र पुत्तरि लिखिय। जीव कविन इन लग्गा॥

छं० ॥ ६८६ ॥

दूहा। दै पानी छिलो धरा। मन सा पानी रब्बि॥
सो चित्यो सभरधनी। जन्म सुकित्तिय अब्बि॥

छं० ॥ ६९० ॥

लज्ज सुही गहिय इला। कहुय किति न लग्गि॥
दिन सो नर मिलि आइयै। गोरी अग्गि सुजग्गि॥

छं० ॥ ६९१ ॥

रावल जी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेना की सम्हाल पर रहो।

जोर मंडि कन्हा रहै। बढ गुज्जर रब्बाइ॥
सज्जि सेन चतुरंगिनी। उत्तर रतन बजाइ॥

छं० ॥ ६९२ ॥

हाल सूर सो उग्गते। चहुआनो सह पार।
कूक मच्चि सन्हौ मरिय। जग्गि अमगे भार॥

छं० ॥ ६९३ ॥

सूर सुअन जुत्तिय अथिग। गई सु तिथ्थि अतीत॥
वाम कलह कंदल अनी। मौ प्रतिपदा अदीत॥

छं० ॥ ६९४ ॥

कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहले जूझेंगे।

चित्रकोट पति सौं कहै। कन्ह सुभर बर तोड॥
हम तुम अग्गे झुझ्झिहै। इक्क जुद्धानी रोड॥

छं० ॥ ६९५ ॥

कवित्त ॥ गिर सभरि दच्छिन नरेस। निज सत्त मंत बर।
तुम जपहु सामंत। सूर अति तेज जुद्ध जुर॥
आज देव तुम सेव। कौन साजै जुध कथ्थ॥
पल असंप युद्धहि। पयार बंधौ बर हथ्थ॥
पल परहि जाम तुहहि धरनि। जाम हहु कहै सुभर॥

दह गुनौ बीर बीरत्त जगि। तांम तेज बंधहि सुभर ॥
छं० ॥ ९९६ ॥

रावल जी का पुनः समझाना परंतु वीर कन्हा का हठ करके युद्ध में प्राण देने को उद्यत होना।

बिअष्षरी ॥ तब रावर जंपै सम जानहं। हौं बुझ्झौं तुम तेज महन्नं ॥
तुम रष्षहु सुपच्छ धर बंधं। तुम राजौ गति राज सु संधं ॥
छं० ॥ ९९७ ॥

तुंधर तेज तेज दल तोहं। तू रापै दच्छिन गिरि सोहं ॥
[1]सो पच्छा जेहौं बर बीरं। है सुर है राजै तौ नीरं ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

तब हसि कन्ह कहै पति बंधं। रजै नही तुम बिना निबंधं ॥
हौं बंधो बर बिरद चियारं। लहियै सो[2] लागंते सारं ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

मैं बंधेव बिरद तुम सोहं। सो जागें जेलंते लोहं ॥
अज्ज[3] कज्ज साईं मो कंधं। मो कंधै जोगिनि पुर बंधं ॥
छं० ॥ १००० ॥

जुद्ध अज्ज[4] मो इन्द्र निरष्षै। अज मो कंदल देव दनु लष्षै ॥
पल परबत्त रचौं गढ़ भारं। सलिता ओन प्रगट्टै सारं।
छं० ॥ १००१ ॥

जुध कोतिग कारी आनंदं। जोगिनि जच्छ बीर उनमदं ॥
रनचर आस करौं पल पूरं। को सामंत मत्त भर सूरं ॥
छं० ॥ १००२ ॥

तब समसिंघ कहै पुग्गानं। हौं बुझ्झौं तुम तेजर नानं ॥
मैं रष्षन तुम दिल्ली न किन्हं। सोइ कारन मैं चिंतन चिन्हं ॥
छं० ॥ १००३ ॥

रहैं नही बर सिंघ पच्छ बर। बिनसै क्रत कारन जोगिनि पुर ॥

(१) मो० तो पच्छै जैहै बर बीरं।
(२) ए० मौ।
(३) मो० अन।
(४) ए० कृ० को०—कज्ज।

तुम प्राक्रम लही भर सार। बधहु बध भिरौ भर भार॥
छं० ॥ १००४ ॥

तब रावर मिलि कन्ह प्रससे। आलगे राजे रह असे॥
छं० ॥ १००५ ॥

रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ धरिय हथ्थ सिर कन्ह। अप्प अति अत्ति प्रससे॥
आभासिय बर भर। अपान जये गुन असे॥
उभै पय्य सम सय्य। बध बधे भर रय्यै॥
न्निमल नेह निज लीह[1]। धम्म स्वामित्त सुलय्यै॥
उम्भारि तेग एकेक अग। स्वामि अग्र वेलै विहसि॥
इय्यैव अग्र आसुर सयन। गयन लग्गि गय्यै रहसि॥
छं० ॥ १००६ ॥

रावल जी के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुड़व्यूहाकार रचा जाना।

अप्प सुभर आहुट्ट। ईस देपे अति दुज्जर॥
ताम हरपि सुअ तेज। गज्जि बीरत्त बीर बर॥
तब जद्दव कूरभ। इप्पि चिते मन अप्प॥
अनिय व्यूह सज्जन। सुभार उम्भर दल दप्प॥
बुझ्झैव ताम चिचंग पहु। बर आसुर झ्झ्झार बर॥
भिड्डै न अकल अरिहर गहर। अति आवट्टहि दुट्ठ पल॥
छं० ॥ १००७ ॥

तब जद्दव कूरभ। राय रावल[2] प्रति बद्दिय॥
चामर छत्र रथत्त। ग्रद्ध व्यूह रचि गट्टिय॥
एक पय बलिभद्र। एक पयह आमानिय॥
चुच[3] कंध पुहीर। सेन समुह सुरतानिय॥
यग पिंड सिंध आहुट्ट पति। पुच्छ रचि मारु महन॥
बामग अग प्रथिराज कै। सुभर जुद्ध मत्तौ गहन॥

(१) ए कृ को नेह। (२) मो जद्दल। (३) ए कृ को—चेंच।

छं० ॥ १००८ ॥

उधर हम्मीर को बीच में देकर यवन सेना का चन्द्र व्यूहाकार होना।

॥ उत आसुर सेना रची। मग्गुग्गे[4] हाहुलि जंबु ॥
वह देवी बहुआन नृप। [5]सुष गहलहलि लगि लुंब ॥
॥ छं० ॥१००९ ॥

पुंडीर सेना का धावा करना।

॥ अरध चंद्र तत्तार। पान पन पान पुरेसी ॥
षां सुलतान मारेफ। गरुअ गप्परति गुरेसी ॥
हाहुलि राव हमीर। चमर बंधै सुल दोही ॥
जिहि संसारह आय। सांइ दोही सिर जोही ॥
जिहु भाय दलनि बहुल मिलिगो। करिगह मीरह दुअ बहसि ॥
पुंडीर राइ पावस निपति। सरन लोह कहु सुहसि ॥
छं० ॥ १०१० ॥

॥ फुनि पावस पुंडीर पति। बहु करि बिनवै बत्ति ॥
गहि आनौ सुरतान कौं। कै हमीर सिर लत्त ॥ छं० ॥ १०११ ॥

पृथ्वीराज का पावस पुंडीर से कहना कि नमक हराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय।

तब राजा प्रथिराज कहि। सुनि पावस पुंडीर ॥
इतनौ परिहस सार[3] तुअ। काटहि सिर हम्मीर ॥
छं० ॥ १०१२ ॥

जब्ब गरुअ गोरी सयन। गगन लग्ग उंडीर ॥
हुकम हंकि प्रथिराज दिय। तब्ब भिरन पुंडीर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

(४) मो.-मद्दें। (५) मो.-मस्सा लहलि लागि लंब।
(१) ए. कृ. को.-साह।

पुंडीर योद्धाओं का युद्ध।

रसावला ॥ अे पुंडीर जत्ती। महामल्ल धत्ती।
लगे लोह गत्ती। मनो बीज पित्ती ॥
छ० ॥ १०१४ ॥

अविहात छत्ती जुटे मेछ पत्ती ॥
भुदगी सुरत्ती। हरी भोरि[1] मत्ती ॥ छ० ॥ १०१५॥
गज घाय अत्ती। सत बानि रत्ती ॥
गहे दंत दत्ती। चढी कुंभ मत्ती ॥ छ० ॥ १०१६ ॥
मचै जुग्गवत्ती। मनो इन्द्रपत्ती ॥
रुधी धार रत्ती। मनो इन्द्र छुत्ती ॥ छ० ॥ १०१७ ॥
दुसो बीर बत्ती। सु भारथ्थ नत्ती।
निरख्खी फिरत्ती। मन बेन रत्ती ॥ छ० ॥ १०१८ ॥
दुह सेन अत्ती। सुअ बानि रत्ती[2] ॥ छ० ॥ १०१९ ॥

कवित्त ॥ भरी अछ आइत्त। मेछ छिदुअ जुध जुट्टे ॥
सार धार निवार। सार झर सारह तुट्टे ॥
दई बाह आहुट्ठ। समर पारस रह धाइय ॥
घरिय एक घरियार। सार बज्जै घन घाइय ॥
प्राहार धार धारह धनी। कन कलक सम्हो चढ़िय ॥
प्रतिपदा सधन आवत्त जुध। धरिय एक आवृत बढ़िय ॥
छ० ॥ १०२० ॥

हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गध्धरों सहित कई यवन सरदारों का घेरा रखना।

सहस तीन गध्धर गुराय। हाहुलि हमीर बहि ॥
मुरनि मुरनि मारूफ। ओट तत्तार थान रहि ॥
धल पुरेस घन थान। जानि छड्डिय पग झिल्लिय ॥

(१) ए कृ को—मीर। (२) ए कृ को वर्त्ता।

मनहु महिष मद मत्त। [1]कहर कानी दइ ढिल्लिय॥
पुंडीर राइ पावस पहुर। गहर उगार लग्यौ गयन॥
कूरंभराय अरु जोद्धनि। अमर मोह भुल्ल्यौ सयन॥
छं० ॥ १०२१ ॥

पुंडीर रोना का हम्मीर पर धावा करना।

हाय हाय उच्चार। भिरे पुंडीर सूर गहलि॥
बजिग लोह तन घन विहार। ब्रह्म संधी न मुष्य पुलि॥
पग्ग गहटकि पायक प्रमान। बीर उत्तरे सरम्भर॥
रज्जि मेर बज्जे प्रहार। घाय अभंग भंग धर॥
चढि कंध कमंधन जोगिनी। सह मह उन मह फिरि॥
नारद सु तुंमर जुद्ध चर। जै जै जै उच्चार करि॥
छं० ॥ १०२२॥

रसावला ॥सु पुंडीर भारी, महमे पचारी। सुअं धग्ग गारी[2], सु सौभै उभा
छं० ॥ १०२३॥

सो नंगा सु नारी, हकारै उभारी। दई देवि तारी, गिधिं उत्त फारै
छं० ॥ १०२४ ॥

करि नैर तारी, गिरिचा प्रहारी। कुलं सत्ति तारी, लगैं जानि भारै
छं० ॥ १०२५ ॥

धिग्गै बीर कारी, रतं नैन सारी। महं मोह धारी, छिनं मैं विसारी
छं० ॥ १०२६ ॥

कहूं अस्स तारी, [3]सुभैरव्व कारी। उतंमंग पारी, धवै षग्ग धारी
छं० ॥ १०२७ ॥

निषंदी विधारी, असीसं उचारी। अग्गं जोग गारी मुकत्तीन[4] हारी
हु
छं० ॥ १०२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-कहर काती दई ढिल्लिय।
(२) ए. कृ. को.-सारी।
(३) ए. कृ. को.-नारी।
(४) मो.-मद्धें।

पग मग्ग पारी, भिन मझ झ पारी। सिर ईस सारी, हर यौ ब्रह्मचारी ॥
छ० ॥ १०२९ ॥

हम्मीर के एक भाई, पुंडीरों में से बारह योद्धा और वैजल खवास का काम आना।

कवित्त ॥ परिग धाय नारेन। बघ हमीर मुकतिवर ॥
द्वादस पट पुंडीर। सुभट उत्तरिय पग्ग झर ॥
धीर पवास वैजुला। झार धर धर तुटि बधर ॥
उप्पर मडि उचार। बस्यौ हाहुलि हसमर ॥
भजि बस अग्ग पारिग परी। परिगह सीसह सीर धरि ॥
जीवत मरत्त भजन दुजन। साम द्रोह कीजै न बर ॥
छ० ॥ १०३० ॥

पुंडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख जवानों का हम्मीर को घेर लेना।

दस हजार असवार। लष्य पैदल सुपति करि ॥
जबर जग डरवाम। छूटि हथनारि कूह करि ॥
सबर सूर पुंडीर। सार सहि सन्हो धायौ ॥
मार मार उचार। बीर बर बीर उचायौ ॥
पन बढ्ढि सूर कायर घटे। धरिय दीह उबरीय बर ॥
हम्मीरराइ जबू धनी। सरन लोह पावस पहर ॥
छ० ॥ १०३१ ॥

पावस की पावस से उपमा।

सुरिल्ल ॥ झरि पावस सिर वर प्राहार। बरपत रुद्धि धर छिछवार ॥
पग विज्जुल जोगिनि सिरधार। बग्गी सौ जबू परिवार ॥
छ० ॥ १०३२ ॥

चोटक ॥ कटि टूक करे जिनके किरय। मनौ इंद्रवधू धरमे रचय ॥
[1]झमकै सपग्गीन पग्गनि बजै। सुनि बहति झिगुर सह लजै॥
छ० ॥ १०३३ ॥

(१) ए कृ को – झमक्कै स बग्गा नग्गन बजै।

लपटांइ सुमोकिय वेलतरं। पर रंभन रंभन रंभ वरं॥
अकुरी बढि बैलि सुवीर वरं। बहि पावस पावस गहारगहरं॥
छं० ॥ १०३४ ॥

पावरा पुंडीर का हम्मीर का सर काट लेना।

कवित्त ॥ स्वामि बचन संभारि। हक्कि हैगै पावस तह॥
लाषति दल मिलि गयौ। साम द्रोही हंमीर जह॥
उहि सोही करि संग। इहित कर षग्ग समाह्यौ॥
घरी सुतन षिजि षेत। सीस दुरजन कै बाह्यौ॥
बाहंन षग्ग कंप्यौ पिसुन। धमकि अंग धरनिहि पर्यौ॥
नारद बीर बेताल मिलि। जोगिनि सद जैजै कर्यौ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

दूहा ॥ सीस छेदि लिय संगि वर। मनि साह दल भीर॥
आय सूर सामंत पें। धनि धनि जंपत धीर॥
छं० ॥ १०३६ ॥

कवित्त ॥ पिरिग धरनि हम्मीर। भीर भंजी सेना भिरि॥
निघटि सेन हम्मीर। तदिन ठढ्यौ पुंडीर लरि॥
षान षान षावास। चढ्यौ धीराहर तह॥
स्वामि अम्म पावस सुपति। चढे किन्नौ चित सद्धौ॥
दलमलिग नाम दुज्जन सुपर। दह भज्जिय प्रथिराज वर॥
धीरंज धीर धीरहु तनौ। जस सुअम्म लीनौ सुघर॥
छं० ॥ १०३७ ॥

पावरा पुंडीर का हम्मीर का सर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे स्वामिधीन कहना।

जित्ति सेन हम्मीर। मान भरदे हम्मीरं॥
बजिय बाज नौसान। धजिय गज मबद सुबीरं॥
नृप अग्गी उर दहत। सुतन चंदन भो चंदन॥
अंकत संचिमन उलमि। भयौ अरि कंद निकंदन॥
सो देह कही चहुआन वर। तिन सुष सों साअम्म चहि॥
पुंडीर धीर तसलीम करि। तेग बेग चौहान गहि॥
छं० ॥ १०३८ ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-20

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju

CANTOS LXVI-LXVII

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की-सहायता से

सम्पादित किया ।

पर्व ६६-६७

PRINTED BY PT BAIJNATH JIJJA MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1911

मूल्य १।)] Issued 5th August 1912 [*Price Rs 1/4/*

सूचीपत्र ।

—०

(६६) बड़ी लड़ाई समय ... ...पृष्ठ २२८१ से २३८५ तक
(६७) बानबेध समय ....,, २३८७ से २४०८ ,,
रासोसार .... ३९९ ,, ४३० ,,

च्यारि च्यारि बर तेग । राज अप्पी पुडीर ॥
बर बध्यौ हम्मीर । बध बधन हम्मीर ॥
तु धीर जा बीर । धीर किन्नौ सोइ किज्ज ॥
चहुआना सुलतान । हथ्थ तेगह जब दिज्जै ॥
सो जननि भूत ग्रह्य गरिय । पुत्तह मंगल गोन बर ॥
जो जीवत पचह पजरै । गहै साहि ब्यौ स्वामि धर ॥
छ० ॥ १०३९ ॥

तू चदन कहि चद । धीर सम धीर समान ॥
तू अजब बधै पग्ग । पग्ग पट्टौ पुरसान ॥
तु चालुक्कौ चुक्कि । भयौ सन्नाह जु सोई ॥
तें बर जित ते तही । दइय दाहिम उग्गाही ॥
अड्डौ नरिद गेरौ दलहं । तो अग्गै चिनवर असुर ॥
बधौ सुतेग[1] सुरतान पर । दै दुचाह दुज्जनह उर ॥
छ० ॥ १०४० ॥

दूहा ॥ धनि पावस पुडीर पति । धनि धनि कहै सुदेव ॥
लै सिर अरि नृप पैं गयो । कह्यौ आगिलो भेव ॥
छ० ॥ १०४१ ॥

हम तुमसो बहु वचन कहि । तब लाहौरी वत्त ॥
अब दग गज्जनं साहि कै । पग बज्जन रह घत्त ॥छ० ॥ १०४२

पावस पुडीर के भाई का मारा जाना और पुंडीरों का पराक्रम वर्णन ।

रेसावला॥सुलितान रज्ज, वजे पग्ग सज्ज । चढे सोह पज्ज, बधे ग सि ल
छ० ॥ १०४३ ॥

सुने सह अज्ज, निसान निगज्ज । रुरी अत रज्ज, म्रिनाली बिरज्ज
छ ॥ १०४४ ॥

तुटे कध गज्ज, कमद्ध ति भज्ज । झमै पग्ग छज्ज, मनो बीज घेज्ज ॥
छ० ॥ १०४५॥

भयानक कज्ज, तुटै बाजि भज्ज । परे भूमि तज्ज, ॥
छ० ॥ १०४६ ॥

(१) मो०—पग ।

ढरैं ढूर अंती, गजं सोम दंती। कहै भूमि छत्री, सुभारथ्थ बत्ती।
छं० ॥ १०४७ ॥

सुतं सुत्त मानं, उछारै उमानं। कही देवि जीयं, बरदाइ दीयं ॥
छं० ॥ १०४८ ॥

हिंदू मेछ ढूरं, तुरं बाजि तूरं। उपग्गाम पूरं, गुरं भोजि धूरं ॥
छं० ॥ १०४९ ॥

दुधं मट्ट ढूरं,..... । दे। उंता उतारी, ...॥
छं० ॥ १०५० ॥

घार रुद्री छरी, काल नट्टै जरी। चट्ट पट्टं अरी, वाहवानं सुरी ॥
छं० ॥ १०५१ ॥

हिंदवानं गुरी, रन्नती अच्छरी। कीय ढूरं जुरी, ज्योंभरथ्थं थुरी
छं० ॥ १०५२ ॥

घरी[1] च्यारं चुरी, चबं जे पुक्करी। भेद हिंदू अरी, मेछ प्रत्तंतरी
छं० ॥ १०५३ ॥

घार पारस फिरी, सुरत्तानं गुरी। मान बिंटं परी, ससी रहं जुरं
छं० ॥ १०५४ ॥

॥वित्त॥ धरिय सुच्चारि चरिच। उदै पति अरुन चढ़त बर ॥
[2]परि पारस लहु बंध। मथिय गोरी सयन्न भर ॥
चिद्दस असुर नर नाग। जीति पुंडीर उचारिय॥
जीति किति जमनीति। जित्ति षस कुल षय कारिय ॥
दंपत्ति हंस जय जय कहय। पंषिन जै जै उच्चरिय ॥
ढूरंत चुक्कि हथवान[3] कजि। जै अच्छरि पंकति फिरिय ॥
छं० ॥ १०५५ ॥

शहाबुद्दीन के हाथी का वर्णन।

सेत छत्र सुलतान। सेत चोरनि ढुलावै ॥
गज्ज मेघ आरिष्ट। सेन संमुह हलावै ॥
जूह जुद्ध आवत्त। चाव चतुरंग चंपि चलि ॥

(१) ए० ह०—धरी

(२) ए० कृ० को० जीत की तिम जीति। (३) ए० कृ० को-हथथान।

धुह निहचल चहुआन । मेर आनद चिंत डुलि ॥
मधपान मान घरि अद्ध टलि । हिंदु मेछ कट्टै विषग ॥
जगली जुद्ध सामंत सहर । सिर वज्जी घरियार मग ॥
छ० ॥ १०५६ ॥

दोपहर को रावल समर सिंह जी और तत्तार खां का मुकाबला होना ।

समर सिंह रावरह । सहस तेरह इय छडिय ॥
उत ततार गोरिय । विसप्प रोहीं रन मडिय ॥
बिंदल डाल ओडन । अभग पग पेलि विहथ्थह ।
कहैं चंद बरदाय । सुनहु छत्रिय इह कथ्थह ॥
भजि भर भरम जमन मरन । तिरन तुग सहै समर ॥
सुरि गये छडि भारथ्थ में । कोइ अग्गै अप्पौ अमर ॥
छ० ॥ १०५७ ॥

दूहा ॥ मिले सूर सामंत सब । असुर तेग सम कट्टि ॥
समर सिंघ रावर समर । समर भुअन वर चट्टि ॥
छ० ॥ १०५८ ॥

भजि भरम जमन मरन । कर नन सिंघ समार ॥
[1]मुरिगन छिन भारथ्थ किय । अपौ अप अमार ॥
छ० ॥ १०५९ ॥

रसावला ॥ हिंदू मेछ भुर, तार वज्जे हर । पग्ग पेलै विय, घाइ वज्जे निय ।
छ० ॥ १०६० ॥

सार सार भुर, मंत मत्ते पर । वारुनी वारया, सूर पाना रया ॥
छ० ॥ १०६१ ॥

दंत कट्टै करी, वीर नचै अरी । ढाल माल ढरी, गज्ज जुथ्थ परी ॥
छ० ॥ १०६२ ॥

थान थान धरी, रोस ज्यों विच्छरी । जोत जोत जुरी, काल वयाल फिरी ॥
छ० ॥ १०६३ ॥

(१) मो०— मुरिग जिन भारथ्थ किय ।

घाट जा उत्तरी, फंद कट्टे नरी। सीस जा उत्तरी, दोम नंचै धुरी॥
छं० ॥ १०६४ ॥

समर सिंह जुरी, भार बितं तुरी .... ।
छं० ॥ १०६५ ॥

दूहा ॥ समर सिंध भारथ्थ मिलि। उभ मिलि पान ततार ॥
अप्प अप्प भीरग्ग करि। ज्यों बद्दल घन सार ॥
छं० ॥ १०६६ ॥

युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ दुअं सेन हक्कैहलक्कै गुमानं। बजै तुंब तुंबी द्रुमं के निसानं॥
भयं नपफेरि भेरी भयानं। मनो मेघ गज्जै दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ १०६७ ॥

बजे धाइ आवद्ध बज्जी हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई ॥
हबकी हबक्का करै नेअ नेजं। महा मल्ल वल्लै अमं जानि तेजं ॥
छं० ॥ १०६८ ॥

गिरै उतभंगं उठे ओन खल्लै। सुभै दंग लग्गे सुपावक प्रल्लै ॥
नचै कंध हीनं कबंधं कलापं। जगी[1] जोगनी जोग जापं अलापं।
छं० ॥ १०६९ ॥

रंगी रंग भूमी वितालं उसद्दं। धरै कंध उद्धं बिरद्दं बिरद्दं ॥
गयंनंति गिद्धं सुसिद्धं विमानं। बरं रंभ रथ्थं सुरं लंत थानं ॥
छं० ॥ १०७० ॥

चवं लोक पालं कहं कूह भीरं। लियौ तात संगं महा मल्ल बीरं॥
जयौ आप जोगिंद जालप्प थानं। दजी डक्क डोंरो सु सिंगी गियनं॥
छं० ॥ १०७१ ॥

तहां तत्त बेदो कबी चंद गट्टौ। उमा ईस दीसं बलीभद्र ठट्टौ ॥
तहां सुध्ध दुध्धं न मानं न तातं। चयं तुंग तुंबी[2] महा मोह बात
छं० ॥ १०७२ ॥

दूहा ॥ जालप सों जटधार कहि। समर समर आवृत्त ॥
देव न दानव असुर सुर। इह जुद्धानी बत्त ॥ छं० ॥ १०७३ ॥

(१) ए० कृ० को०-लगी। (२) ए०कृ० को० त्वंग त्ववी।

तत्तार खां के मारे जाने पर निसुरत्त खां का समर करना।

कवित्त ॥ सुरत पान तत्तार । ताम निसुरत्ति पान लघि ॥
अनुज वध साहिव । ध्रम्म स्वामित्त सूर तथि ॥
सहस दून सेनो । सुभार गज्जे गरुअत्त ॥
बीर धीर बर बस । जुद्ध जानै जुर घत्त ॥
उच्चरै मच्च घर आसु चिर । अनिय बुध चल्लै विहसि ॥
चमरैत बीर बिरदैत घन । कलपि प्रान उभ्भारि असि ॥
छ० ॥ १०७४ ॥

चपत आसुर सेन । हक्क उभ्भार भार असि ॥
हल्ल हलत दल हिंदु । भइय षुब्भान भीर वसि ॥
तोम कन्ह गुरु मन्त्र । पग्ग सज्जो सु व्योम सिर ॥
सिघ कज्ज चिचग । लाज गज्जे व भार सिर ॥
सय सत्त सच्च भर बीर वर । हक्क धुक्क बोले विहसि ॥
बधेव चाल मन मडि हरि । लोहरिम्म लग्गे रहसि ॥
छ० ॥ १०७५ ॥

भुजंग प्रयात ॥ मिलि लोह उहस्सि उहस्सिय हस्सिय आवरि[1] बीर सुधीर भर
सब जपिय इष्ट अभिष्ट तन पति जग्गिय असि उहस्सि झार ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उभ्भर आनन सूर उवन उव[2] ॥
असि व्योम सुधूम धरे धुअ मडल सूर प्रससिय सूर सुअ ॥
छ० ॥ १०७६ ॥
मिलि पग्ग उनग्ग करूर करष्यिय पडहि पड विहग पल ॥
धरकत धरहर झार झरगझर होय हल मल दून दल ॥
विहरत धराधर सार विपडल तुट्टित बाह दुबाह दुर ॥
मुरुकतह हड्ड कड्डकडत कधर ग्रीन दउक्क दउक्क जुर ॥
छ० ॥ १०७७ ॥

हहकत हकंतह बकत बकत सैल हवकह बक्क पग ॥
वचय भर आनदु आनदु अप्पति कठह कठ सुकठ लग ॥

(१) मो०—आदरि । (२) मो०—अनत्त उच ।

किमनं कित बाजिय सार सुसाजिय तुट्टि सुसुंड विकारि भजं ॥
पल पूरिय गूंदह कीच परारिय श्रोन प्रवाह दुवाह सजं ॥
छं० ॥ १०७८ ॥

धननंकित[1] घंट सकत्ति स छूरिय पूरिय कंठ पियास धरं ॥
धर नंचिहि बीर सुभीर बजामह गिद्धि झरझर हेर झरं ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उब्भर दुब्भर हंकि हिलोलि दलं ॥
दह पिंड अहुट्टिय आसुर सुझर हंकिय चंपिय हिंदु दलं ॥
छं० ॥ १०७९ ॥

निसुरत खां के एक हजार योद्धा मारे जाने पर शाह का उसकी मदत करना।

कवित्त ॥ दल आसुर दह पिंड । लोह झर भर आहुट्टिय ॥
सहस एक निज सेन । देषि निसुरत्ति सु घट्टिय ॥
तब आवरतन बीर । सेष सेना आभासिय ॥
मम भज्यौ धरो लाज । करौं कंदल असि रासिय ॥
परसंसि सहस सेना सकल । बल बंधयौ साहाब गजि ॥
तजि मोह पिंड सजि भिरति मन । भाय दीन महमुंद भजि ॥
छं० ॥ १०८० ॥

दूहा ॥ इह कहंत दल बल भरिग । धरि दिसान सुलितान ॥
उररि सेन उप्पर परिग । चहुआना सुविहान ॥
छं० ॥ १०८१ ॥

कन्हराय और निसुरत खां का द्वंद्वयुद्ध और दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं कन्ह आवंत सेनं । सयं तीन सेषं भरं अप्प अैनं ॥
तजे इन छोडंन गज्जे गहक्के । दुअं पास क्रप्पान धारे सुबक्के ॥
छं० ॥ १०८२ ॥

करें झार उभझार झारं करारं । सभै छूर क्रभै थलं सार सारं ॥
हहक्कंत धक्कंत धक्कंत धीरं । दुए षग्ग षंडे धरं षग्ग झीरं ॥
छं० ॥ १०८३

(१) मो०—धननंतिय ।

कटै जघ जग बनं रभ जान । पस गूद हड्ड थर सम्म थान ॥
अलुम्भत अत सुभट्ट सुपाय । करै धाय सेल दुहथ्थे दुहाय ॥
छ० ॥ १०८४ ॥

धारक्कत फेफ सरक्कत डिभ । धरक्कत झुम्मझै धर हकि सिभ ॥
पस चार ओन चर हस चार । अघाय सु घाय नचै सुभ्भकार ॥
छ० ॥ १०८५ ॥

लगे आसुर हिंदु सो पग्ग पारे । करे घाय गज्जे गहक्के गुरारे ॥
सयतीन ताई परे जाम मत । सत बीस अग्ग करें हिंदु अत ॥
तबै कन्ह देव निस्सूरत्ति पान । मिल दिट्ठ दिट्ठी करूर दुरान ॥
छ० ॥ १०८६ ॥

दुअ हक्क हक्के गहक्के व सूर । बिरहैत दून दुअ जुद्ध पूर ॥
धरै स्वामि धम्म दुअ उद्धकम्म । दुअ तेन धारौ जुरे जुद्ध सम्म ॥
छ० ॥ १०८७ ॥

दुअ हक्कि आसासि साभासि दून । दुअ सग्गि उब्भारि निभ्भारि जून ॥
करौसिह साहाव सो साहि आन । मिले झुम्मझ ढिल्लझ्झ दुक्क ठीर जान ॥
छ० ॥ १०८८ ॥

चल्यौ कन्ह गज्जे व लग्यौ अयास । दुअ आय अड्डे निस्सूरत्ति तास
दुअ बध हम्माम कम्माम पान । हवस्सी चले हकि सो कन्ह ढान ।
छ० ॥ १०८९ ॥

करै मार झार स उब्भार नेज । फटै टट्टर दून तुल्लम रेज ॥
हने पग्ग कंध दुअ सीस झारे । मनो श्रीफल फट्टि मल्ल सुठारे ॥
छ० ॥ १०९० ॥

बिनो असुकल्लेवर कन्ह न षेचल्यौ रिम्म सम धरे जुद्ध षेषे ॥
मिले हकि कन्ह निस्सूरत्ति पान । करे पग्ग उब्भै चवै ढान ढान ॥
छ० ॥ १०९१ ॥

हए पग्ग झार दुअ सीस तुट्टे । लगे व्योम कम्म ध साहूर उट्टे ॥
दुअ बाह पग्ग उछ्ज्जे बिराजे । बिना देवल इंदु धज्जा सुसाजे ॥
छ० ॥ १०९२ ॥

असी झार झारें तिनं बप्प लग्गै । धर छोनि लुट्टै जुरै बीर जग्गै
उठे सेन कल्लेवरं सूर षेतं । दुअं बीर गहभग्गहै निज स्वामि हेतं
छं० ॥ १०९३ ॥

प्रसंसे तुरक्कं सबै हिंदु तासं । धन धन्नि जंपै सुरं सो अयासं ॥
कल्लरं मुगत्ती जगी जोग राहं । लहै[1] अच्छयं लोक सो हंस ठाहं ॥
छं० ॥ १०९४ ॥

इसौ जुद्ध कन्हं महाबीर कीनं । महा जोति में जोति संयान लीनं ॥
महाजोग धयानं सुग्यानं जुमत्ती । जुरै जुद्ध पावैतिका सार दत्ती ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

जिके कन्ह चिचंग सों बोल बोले । तिके षग्ग मग्गं दरंबार षोले ॥
इसौ जुद्ध सेनापती राउ कीनौ । जिने यान निसुरत्ति कों भिस्त दीनौ ॥
छं० ॥ १०९६ ॥

वेत्त ॥ परे षान निसुरत्ति । करै प्राक्रम उद्धअति ॥
सुभट सहस सारद्ध । सथ्थ निज रोह मुत्ति षिति ॥
सो मुनि असुर सेन । भयौ हलाहल चालमनं ॥
सायर लहर उलट्टि । कप्पि थट्टं थट्टं घन ॥
संभले तांम साहाब तमि । क्रमि सुअंत गहलगाल चषि ॥
कलमलिय कोप आरत्त तन । फिरै तप्पि साचित्त लषि ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

मियां मुस्तफा का धावा करना ।

मियां मान मुस्तफा । उभै बंधव असि उम्भर ॥
धरा रोम उद्धरन । धरा स्वामित्त समुद्धर ।
सोय निरषि साहाब । दई अग्या तमि तामं ॥
तुम लग्यौ तत्तार । भार मंडे सिर कामं ॥
निसुरत्ति हयौ रावर भरन । हलहलंत तत्तार दल ॥
तुम आय जुरौ उप्पर करौ । परौ बुध बंधेव भर ॥
छं० ॥ १०९८ ॥

(१) ए०कृ० को०— चले ।

रावल जी के सरदारों का अतल पराक्रम और दोनों भाई मुस्तफा मीरो का माराजाना।

भुजगी। दुअ सभले बाच गोरी नरिंद। सजे बघोम सीस बिकस्से सुबिंद॥
दुअ नाथ सीस चले ब्रम्मधारी। मनों उभभरे बीर बीरत भारी॥
छं० ॥ १०९९ ॥

सहस्स दुअ चैव सथ्थे सभीर। चढ़ें बाग उच्चै बिरच्चै अभीर॥
मिले आय अड्डेव आहुट्ट राय। भर अत्ति चिंते बनी धन्नि ताय॥
छ० ॥ ११०० ॥

गजै जैत सिंह अरस्सीह बीह। तमे तेजसी बीर बावन लीह॥
नर सिंह साजन सो बधिचालं। रजै तेज रत्त न सारत भालं॥
छ० ॥ ११०१ ॥

बधे बीर सामंत सी बीर रूप। अरज्जुन्न जेम अरज्जुन्न ओम॥
भर भीम जेम गजे भीम देव। जग माल जग्गे अरी साल छेवं॥
छ० ॥ ११०२ ॥

सहस्सं समेक्क सत एक सथ्थ। मिले पेत पग्ग गजे हथ्थ हथ्थ॥
तिन मुस्तफा मान सो सेन हक्के। धरा बीर बाजिय नीसान धक्के॥
छ० ॥ ११०३ ॥

सुरं पूरि सिंधुर वहं सुपेतं। झलक्कं झलक्कं बंधे बंध नेत॥
तबै आसुर दीन गोरी दुहाई। जपै आन पुम्मान हिंदू सराई॥
छ० ॥ ११०४ ॥

दुअ सभरे इष्ट अप्प अपान। मिले नेत धारी उभारे क्रिपान॥
रुके बान भासग मुहै मरीच। तिरच्छे मिले पग्ग तत्तं तिरीचं॥
छं० ॥ ११०५ ॥

तिने तार आवद्ध बज्जै त्रिकूटं। हुवै षड षंड लगै जूट जूट॥
कटै जंघ रंभ सम हेम भास। ढरै बाह कम्मोद नालं सुरास॥
छ० ॥ ११०६ ॥

परी सीस हुक्कै सुधक्कै कलेवं। रजे बीर रस्सं विसम्मे सुदेवं॥

(१) ए० कृ० को०—ज्ञान

पलक्कंत श्रोनं अवोलं प्रवाहं। पलं कीच मच्ची मरुग्गह्ग मर
छं० ॥ ११०७ ।

धरं गज्ज भारं दुआरं करारं। तरं ढाल मेजा दुरोजा उभारं
घनं बालुकी बाह आसत्ति रेहं। रसंमं असंमं उतं रम्भ[1] दे
छं० ॥ ११०८

नदी रत्त पूरं गज्जं सीस कंप्पं। समं अप्प वेनी नरं तंत म
रजे केन उस्नीष आवृत्त रूपं। जलं जात वेनं अली नेन ओप ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

कटे दुम्भ बाहं सग्राहं करूरं। मिले कम्म है गात भातं दुरूरं ॥
मराली ग्रहे तंत अंतीस मझी। रजे पंप हारी उदारी सुसिद्धी ॥
छं० ॥ १११० ॥

दुसौ जुद्ध आसुद्ध मन्नौ[2] अपारं। मिले वाहु घत्ता तुटे सुद्ध सारं
लषे देव आहव्व कौतिग्ग उत्तं। न दिट्ठौ मनं अप्प मन्नै अभुत्तं
छं० ॥ १११० ॥

जुटे मुस्तफा सीह सामंत षग्गै। दुअं वृत्तधारी क्रितं स्वामि अग्गै
उभै धारि उम्भारि संगी दुहथ्थं। जपै आनईसं जपै इष्ट तथ्थं
छं० ॥ १११२ ॥

देाज लग्गि[3] जरं चले चंपिपूरं। लगे हथ्थ बथ्थं जमं जट्ट सूरं।
तनं षंड षंडं समं सानि मंसं। चले उत्त गत्ती न लष्षेव अंसं
छं० ॥ १११३ ॥

महाजोध चिचंग औधूत राजं। अयो जानि मेरंडिगै नाहि वाज
प्रलै काल लग्गौ सुअसुरान सेनं। करे देव जै जै उचारं तिवेनं।
छं० ॥ १११४ ॥

वरं जुद्ध बिरदैत रावल समानं। नहीं सूर कोई इसे नेजवानं ॥
छं० ॥ १११५ ॥

(१) ए० कृ० को० इत्त
(२) ए० कृ० को० मत्तौ। (१) ए० कृ० को० लान।

मीर मुस्तफा के मारे जाने पर शाही सेना में से ग्यारह मीरों का धावा करना।

कवित्त ॥ पर्‌यो मीर मुस्तफा। इष्षि घर रोम समुद्दर ॥
इल्ल इल्लि सेन ततार। पच्छ दह पिंड धरद्दर ॥
तब मसद दह एक। आय अड्डे वर बीरह ॥
मिले सुभर चिचग। जग उत्त असि धीरह ॥
गजनेस साजि आयास सिर[1]। लगे लोह तत्ते तरसि ॥
रन परे विहडे पड झर। अनिय धार सोनें[2] धरसि ॥
छ० ॥ १११६ ॥

अरिल्ल ॥ पर्‌यौ टेपि मुस्तफा महाभर। इल्ल इल्लि आसुर सेन रि घन
लग्गे टोय बीर रस बयोमह। गज्जहि सूर कट्टि पलकौ मह ॥
छ० ॥ १११७ ॥

हिन्दू मुस्लमान दोनों सेनाओं में घोर युद्ध।

चिभगी ॥ इष्षि ततार सेन सुभार मुस्तफ छार इल्लिहाल ॥
जग्गे तन बीर अप्प सनीर धीर सुधीर लपि ढाल ॥
चपे चहुआन कर उत्तान जपै आन सुभ्भान ॥
गज्जे गह मीर सेन सुभीर बधे तीर चलिचाल ॥
० ० ० ० ० ० छ० ॥ १११८ ॥
बज्जे बज्जान रन रुद्दान मय महान ढरि ढाल ॥
सिध सुररद्द बीर बिरद्द रज्जे नद्द रन[3] चार ॥
चौसट्ठि सुरार गाजि गुरार मद्दि मदार जैकार ॥
छ० ॥ १११९ ॥
आहुट्ठ ईस चपि सुरीस लेहु वचीस बीरेस ॥
हिंदुअ असुरान पग्ग पिलान बज्जि विनान नीरेस ॥
हक्के हहकार होइ हलार ढहै ढलार सहार ॥
गज्जय चिक्कार हय हिसार षुदि पुरार रुद्दार ॥
छ० ॥ १११० ॥

(१) ए० कृ० को०—धर।
(२) ए० कृ० को०—सन्ने। (३) मो०—रुच।

कड़ कंधे कंधं संध उसंधं तुट्टि दुरंध भयकारं ॥
उर ओन दडक्कं इड्डुकडक्कं षग्ग कनक्कं पैकारं ।
गज्जहि रन सूरं बिर विरूरं अच्छरि झूरं बजि तूरं ॥
रत्ते रन चारं देषि दुरार रज्जि उरारं ओपूरं ।
छं० ॥ ११२१ ॥

फेकी फिक्कारं गिद्धगरारं सिद्ध मुदारं जैकारं ॥
कट्टे फार जरं अत अदूरं डिमरूरं भैकारं ।
आयौ गजि मानं हंनि जिहानं भीर विहानं दिषि पानं ॥
जै जै विज्जित्तं हरी सुइत्तं कढि क्रवत्त कृप्पानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥

भेलें, असि धातं सूर सुभात बाहु दुबातं दुग्गारं ॥
तुट्टे मझार दुझ्झर सारं कंठ उग्गारं हसि हारं ॥
जग्यौ जम दट्टं घाव पहट्टं धारह डट्टं बरि बीरं ॥
मुत्तिय चलि राहं सूर सुढाहं भौदिव राहं दुब्बीरं ।
छं० ॥ ११२३

जुद्धं जुद्धानं षत्त फट्टानं बीर रसान सन्नानं ॥
कविचंद कहानं कित्ति बषानं उभै पुरानं बतानं ।
छं० ॥ ११२४

ग्यारहों भीरों और सरदारों सहित रावल जी का खेत र

कवित्त ॥ परिम संद दह एक । सत्त परि रावर सिंघं ॥

उब्ब जुब्ब उब्बरे । इक्क एक रज्जि रिंघं ॥
रतन सिंह अर सिंह । सिंह तेजस्स समथ्थं ।
बीर देव बानेत । करै प्राकृ[illegible] अकथ्थं ॥
अरिजुन्न जेम अरजुन्न करि । सामंत सिंह हुब्बे[1] बरन ।
साजैति सूर भेदे वरह । षल्ल अनंत पुट्टे वतन ॥
छं० ॥ ११२५

छप्पय ॥ सहस्स च्यार सधि भीरं । निबड्डे विषंस नंद बिय सत्तं ।

(१) मो० – दूब्बे वे वरन

न दे पलचर ओन । हालाहल विति विप माइ ॥
छ० ॥ ११२६ ॥

जामराय जद्दव का हरावल में होना ।

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ । गिद्ध जंबुक कोलाहल ॥
रगत बुद निम्मरहि । अंत डवर[1] डोलाहल ॥
वार वार गुन धुक्क । हक्क श्रवनं झक्क झाइय ॥
हो बलिभद्र सुभद्र । सिघ रुक्यौ रन साइय ॥
सग्राम वत्त रम्मिय कहै । लग्गै गत्त दुहोइया ॥
मोडनह[2] गरुअ गोरी घटा[3] । सु जद्दव तेग उचाइयां ॥
छ० ॥ ११२७ ॥

तब रन रत्तौ बलिभद्र । रोइ पावस पग लग्गौ[4] ॥
तु धीर जा धीर । भीर रावत[5] ते भग्गौ ॥
हो ढढोरी ढाल । हाल कट्टौ सुरतानौ ॥
वड गुज्जर दाहिमा । बोल वट्टै उरतानी ॥
प्रारम्भ राव पज्जून सुअ । वद्धरू वट्टै भरां ॥
असवार सनाहरू सस्त्र । वे वधव वट्टै धरा ॥
छ० ॥ ११२८ ॥

शाही फौज में से सुभान खां का धावा करना ॥

अग्गै[6] वद्धघ[7] विश्राय । पच्छि जद्दव दव लग्गिय ॥
हय गय नर आरुरिय । भरि गोरी घर भग्गिय ॥
पग छुट्टत पतिसाह । पान पाना पुरसानी ॥
हिंदवान कीहद्द । बोलि अग्गें सुरतानी ॥
सिरदार सिवान निसान पति । सुविहान असमान मति ॥
हो हाल गहो चहुआन को । तौ पठान अगिवान पति ॥
छ० ॥ ११२९ ।

(१) ए० कृ० को०—अवर ।
(२) ए० कृ० को०—गोडनह । (३) ए० कृ० को०—सुघर ।
(४) ए० कृ० को०—लग्गे । (५) ए० कृ०को०—रावर ।
(६) मा – घुब्बे वे बरना

जामराय जादव और सुभान खां का युद्ध ।

वभंगी ॥ लहु[1] गुरु छह सत्ता तेरह मत्ता एहा अछिर[2] अंदोई ॥
षगपत्ति सुनंदा नाग भनंदा चैभंगी छंदा एदोई[3] ॥
कूरंभा बाले संमर गाले सिंधुर ढाले उच्छाले ॥
गोरी घर धाले[4] असु करि ढाले परि बेहाले तन लाले ॥
छं० ॥ ११३० ॥

बर धरि सुलतानं से षुरसानं तरतुरकानं भुज भानं ॥
डह डह नीसानं बज्जि दुआनं असि झंझानं उब्भानं ॥
जद्दव जामानं कहि धरि धयानं गहि गैबानं सुरतानं ॥
सुनि सुनि सबिहानं बक्किय आनं तेग उचानं असमानं ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

बहु मिलि भरदानं झरझर घानं असुकिय ढानं परधानं ॥
आवध तुटि तानं मिलि बथ्थानं जानि बिनानं मल्लानं ॥
धम धम्म लतानं बहु रग नानं[5] राजा मानं सु बिहानं ॥
तरकिय तष तानं नह[6] सितपानं रहसि रिसानं विरुझानं ॥
छं० ॥ ११३२ ॥

कवित्त ॥ हूक सबद उचार । सुन्यौ जद्दव जुआनै मन ॥
मनहु मेघ गरजहि दिसान । नीसान सुहम[7] घन ॥
रन छीतर तोषार । हरसि हालाहलि दिट्ठौ ॥
मनो कुमुद मुद्दयौ । चंद लग्गौ नह मिट्ठौ ॥
भरभार कीर कूरंभ कर । कमल अमल मुष उच्चर्यौ ॥
बिधि जुद्ध रुद्ध सांइय सधन । सुगद[8] गिद्ध मिट्ठौ चर्यौ ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

दूहा ॥ रवि चक्का चक्की चरन । दिठ लग्गिय असजोई ॥

(१) मो.-लघु । (२) ए. कृ. को.-अच्छिर ।
(३) ए. कृ. को.-विज्जूमाला छंदोई । (४) मो०—काले ।
(५) ए, कृ. को.-लालं । (६) ए. कृ. को. तह । (७) ए. कृ. को.-मु
(८) ए.-सुगंद ।

गहर करै सिद्ध तिय मन । धन रप्पै नव लोई ॥
छ० ५ ११३४ ॥

कवित्त ॥ उए सेन आलम्म । आय आलम सपतौ ॥
ए हिंदू आलम । आय जदु पर हहकतौ ॥
इए उए अकुरिय । धरिय बज्जी झर झझर ॥
नरे नरा वित्तरिय । हरिय जम्मन आवन धर ॥
रन राम दुजोधन भर भिरन । वालमीक व्यासह करिय ॥
हूए न होहि हिंदू तुरक । मुगति मग्ग वित्तिय घरिय ॥
छ० ॥ ११३५ ॥

जामराय जादव का खेत पडना ।

परयौ पेत परि जाम । लियौ धर साहस झोलिय ॥
तह आयौ बलिभद्र । पग्ग पेलत रस होरिय ॥
असिवर ओडन झोरि । तार बज्जत निधाइय ॥
परि पथार अगवान । थान थर हीय थराइय ॥
मझि ढाल धरिग गोरी गरुअ । मुच्छि बहुरि जग्गिय घरिय ॥
बलिभद्र जुद्ध दिप्पौ करत । हनौ हनौ[1] अप्पन करिय ॥
छ० ॥ ११३६ ॥

पज्जूनराय के पुत्र बलिभद्र राय का धावा करना ।

बलिभद्रह आगमन । पुट्ठि नव आय महाभर ॥
समर सीह सेवज । लहै लज्जिय अद्दब हर ॥
सिंघ राव सापुला । रोव पूरन परिहारह ॥
पति पहार सारग । वेन बध्धेल सुभारह ॥
देवरा राव सारग समथ । पौचौ हर देवह सुहर ॥
चालुक्क वीर डोडह रतन । तोवर सागर तेगतर ॥
छ० ॥ ११३७ ॥

नौ सरदारों का बलिभद्र राय की सहायता पर उतरना ।

नवै सुभट वै नुत्त । गात उत्तग तेग गुर ॥

(१) ए कृ को हनौ आप अप्पन करिय ।

कुल अरह सुषद्दह । जुद्ध उद्धरिय केय धुर ॥
स्वामि धुम्म समरथ्थ । अथ्थ बर हथ्थ प्रचारन ॥
अगम मग्ग ननचहै । धार षग तिथ्थ सुधारन ॥
दिष्यौ सुराज प्रथिराज तिन[1] । करन अप्प[2] रिमहर कचर ॥
[3]अनु नंमि सीस असमान लगि । आय प्रचारिय तेक गर ॥
छं० ॥ ११३८ ॥

बलिभद्र के मुकाबले में जलाल जलूस का आना और दोनों का खेत में पड़ना ।

ौदाम ॥ समैं तिन सथ्थ बलीभद्र बीर । लगे अरि सौ असि तेग तरीर ।
सनंमुष आय जलाल जलूस । ततारह बंध जरे तन जूस ॥
छं० ॥ ११३९ ॥
रचे सथ पंच सु सथ्थिय मीर । तरक्कस नंषि कमानस तीर ॥
धरै कर षग्ग उनंगिय ताम । अगें पर पुट्ठि सुधारिय काम ॥
छं० ॥ ११४० ॥
करै असि हंकि बलीभद्र बीर । मनों मधि दंतिन गज्जि कंठीर ।
संभारिय अप्पन इष्टह संभु । तरक्कि बढ्यौ बल सायर अंभु ॥
छं० ॥ ११४१ ॥
धरी बर उप्पने उत्तर षान ॥ झनक्किय दच्छिन षग्ग षिलाम ॥
मच्यो तन मार करीर असंभ । निरष्षहि आतुर उप्पर रंभ ॥
छं० ॥ ११४२ ॥
बलीभद्र हक्कि हन्यौ अप कंन । चंपे कजि उप्पर वाह विधंन ॥
चले भर सथ्थ गहक्कि जुनब्ब । करन्नह उप्पर आतुर रब्ब ॥
छं० ॥ ११४३ ॥
तिनं बजि आवध रीठ अपार । कटक्कट लग्गिय सोर करार ॥
कटै धर सीस बिसंधह संघ । तुटै पय पानि सु जानि बिरंध ॥
छं० ॥ ११४४ ॥

(१) ए. कृ को. तन । (२) ए. कृ. को.-किरत अपरि ।
(३) ए. कृ.को. नमि सीस राज लगि गैनतर, आय प्रचारिय लेकझर ।

पलकहि सुम्भर श्रोन प्रवाह । पलम्भय सीस अिगुह गुराह ॥
बलीभद्र पारस एक पठान । कुम्यौ अप लप्पि जमालन ठान ॥
छ० ॥ ११४५ ॥
करप्पि जमाल कमान करूर । हयौ तिनकै वर कूरभ जर ॥
सनमुष च पिय अग्रवप जून । ग्रहे तन मडिय षेनिय पून ॥
छ० ॥ ११४६ ॥
नप सिप भजिय हुहुरू मस । करै धर न पिय पिडन अस ॥
दिषे तब तम्मिय ताजन षोन । भगन्निय युत्त ततारह मान ॥
छ० ॥ ११४७ ॥
हहक्किय धक्किय धामिय ताहि । पर्यौ दिपि व धव लग्गिय दाह
सनमुष सारिय झारिय पग्ग । पर्यौ बलिभद्रह सीस अलग्ग ॥
छ० ॥ ११४८ ॥
हयौ बिन सीस असीवर झाझ । पर्यौ सिर सथ्थह तुट्टिय साक ॥
बिना सिर धप्पिय धामिय वीर । परे सय दून सुहथ्थिह मीर ॥
छ० ॥ ११४९ ॥
धरी दुअ केलि करी सु विसम । सिरप्पर न पिय देव कुसम ॥
छ० ॥ ११५० ॥

गिद्धिनी का सयोगिता प्रति सवाद वर्णन ।

कवित्त ॥ पर्यौ राव बलिभद्र । झुझिझ धर अग्गर साइय ॥
गय रवि मडल भेदि । जोति हर जोति सहाइय ॥
परे मीर से तीन । परे पट सुम्भर राजह ॥
अित्त सु रावर सिघ । लगी उर अच्छरि साजह ॥
सुभट च्यार सो राज रहि । गहकि भग्गि आलम्म भर ॥
गिद्धिनिय कहै सजोगि सुनि । धनि सु जुद्ध तुअ कत गर ॥
छ० ॥ ११५१ ॥
दूहा ॥ समर सिघ भर जुद्ध परि । अनी बाम दिसि भजि ॥
ता उप्पर पुडीर गजि । हनन मीर धर सज्जि ॥
छ० ॥ ११५२ ॥

कवित्त ॥ परे विषम पथ्थार । वीर पावस गुर गज्यौ ॥
गाजी षान गहंति । वंधि सो साहिव सज्यौ ॥
उभै सहस भर भीर । सहस पुंडीर सहत्तौ ॥
विषम वीर उभ्भार । उभै लग्गै उत तत्तौ ॥
झर झार धार लग्गिय विषम । सिर धरि पत पुन पूर धर ॥
लुट्टंत असिय उट्ठै अलग । मनों घन दीमिनि दंपि झर ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

गाजी खां और पावस पुंडीर का द्वंद्व युद्ध । पावस का मारा जाना ।

गद्दरी ॥ लग्गे सु घाव पुंडीर मीर । जग्गयौ विषम रसरुद्र वीर ॥
कट कटी षग्ग लग्गे विरूर । आवरे वीर गाजंत सूर ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
गाजीय षान पुंडीर बोलि । उत्तंग गात गरुअत्त तोलि ॥
चयभाग संगि तोली सुवीर । मनु मिले सिंघ गज्जे गुहीर ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
बिक्कसे नयन मिलि मुंछ मोह । अकुटी सु सीस मिलि जम्म जूह ॥
उट्ठिय सु बीर वंवरि दुआन । चिकुटीय साजि कारूर कान ॥
छं० ॥ ११५६ ॥
सुष रत्त श्रोन बिंवह सुनेन । जंपेय उभय भर उंच वेन ॥
होउ स्वामि अम्म रत्ते सुराह । उच्चरहि आन दुअ ईस दाह ॥
छं० ॥ ११५७ ॥
मुक्किय जु संगि उन्हे उनाह । लग्गिय सुउअर फुट्टिय पराह ॥
चल्ले सुसंग बर बीर दून । असिझाक सीस तुट्टे सजन ॥
छं० ॥ ११५८ ॥
सिर परे दून लग्गे सुबथ्थ । चंपयौ षान गाजी सुहथ्थ ॥
नथ्थयो धरनि गाजी सुषान । संमुहौ सूर धायौ परान ॥
छं० ॥ ११५९ ॥
बिन सीस हंसे तीन मीर । धर ढर्यौ धरनि सा सुतन धीर ॥

धनि धनि सबद उट्ठे अयास। आकुम्म देवि देषे सुरास ॥
छं० ॥ ११६० ॥
इन किये जुद्ध चय दून वार। पछिल्ल की सख कौ गिनै पार ॥
हाहुलिय राय कौ जैत वार। सुरतान सेन कौ पयकार ॥
छं० ॥ ११६१ ॥
चहुआन पान कौ रप्पवार। धर पय्यौ स्वामि कौ[1] पत्त फारि ॥
धीरजधीर कोनौ प्रमान। भावी विगत्त मन चाहुआन ॥
छं० ॥ ११६२ ॥
दूहा ॥ अदिन राज अच्छिन मने। जब छीजे बर भत्त ॥
कै अनीति राजन करै। कै बल छंडै चित्त ॥
छं० ॥ ११६३ ॥
कवित्त ॥ परत राइ पुडीर। भीर बज्जे बहु बज्जे।
मनहु भाद्र पद ऐन। गेन गेना घन गज्जे ॥
अचल चमू चतुरग। कृप्पि कुप्पार अपारह ॥
असिनि भरनि तर अतर। पग्ग कर दंड सपारह ॥
जै जै चवत चव रुप्प चर। वरनि वरनि अच्छिर छरनि ॥
भव भाव भवन हिम हय तजि। वसि पावस आवस धरनि ॥
छं० ॥ ११६४ ॥

रात्रिवार पारिवा का युद्ध समाप्त।

मोतीदाम ॥ ॥ पय्यौ धर पावस राइ पुडीर। कियौ बर कासिवर भ्रकरीर[2]
धरधर धार सुधार झरीर। सच्चो[3] करि मावस मत्त कठीर ॥
छं० ॥ ११६५
तिल्ल तिल्ल तेगहि वट्टिनि भीर। झरै कुस मगन अंगन झीर ॥
नचै धर सीस अते धर बीर। नचै धर सीस अते धर बीर ॥
छं० ॥ ११६६ ॥
बजै मृदु मद्दल आनक भीर। हलज्जल सैल लरत्त तथीर ॥
गजै गज बाजि बजै तम तीर। छयै रवि आरथ पारथ बीर ॥
छं० ॥ ११६७ ॥

(१) ए० कृ० को—मौं। (२) ए० कृ० को०—गरीर।
(३) ए० कृ० को —सच्चो।

परै षग लगगत बट्यनि हीर । जरें जनु मम्म महा भर पीर ॥
टगट्टग चाहत तुंडन लीर । मिलि झलि गुंग उदद्धि सुनीर ॥
छं० ॥ ११६८ ॥

हकै हक्क हक्क सुकातर ईर । झुकें झुक्क कुंतनि झुक्क झुकीर ॥
भकें भक्क रत्त निषत्त भकीर । धुकें धुक्क धुक्क उगाझकि उझीर ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

पर्यौ षन षान उषान उषीर । कटे षट धुम्महि मीर सुपीर ॥
सुजद्दर हैदरषान दरीर । मुर्यौ मपिषांदस पेंड अरीर ॥
छं० ॥ ११७० ॥

षहै षुरसानत कित्तकि तीर । झरे असु मध्य तन धर झीर ।
* * । * * ॥
छं० ॥ ११७१ ॥

दूहा ॥ परिविसि निसि पत्तिन उदै । ठठुकि सेन दुअ दीन ।
सहस एक आहुट्टि परि । मन न छीन तन छीन ॥
छं० ॥ ११७२ ॥

तजि सुनेह संकित सयन । थान थान रहि भीर ॥
प्रात तार से दिष्षियै । जोध जोध बर वीर ॥
छं० ॥ ११७३ ॥

कवित्त । भयत भीति निसि अद्ध । मेघ डंबर दिसि छाइय ॥
विषम बाय बर बज्जि । भूत बेताल चिघाइय ॥
बज्जि घाय रन हक्कि । करै नारद किलकारिय ॥
गिद्ध सिद्ध जोगिनी । मंझि[1] काली दै तीरिय ॥
बर बीर भद्द नच्चै तहां । धक्कि हक्कि दैकर फटै ॥
अच्छरिनि गान गावै उमा । चित्त कर ढुंढै भटै ॥
छं० ॥ ११७४ ॥

बीर भद्द अरु वीर । जीति जालपा जलप्पिय ॥

(१) ० कृ० को० तग्गी दै कारिय ।

कहौ वीर वेताल । सूर सामंत कलप्पिय ॥
कहौ वीर सक्कमन । वीर सनि ज्यौ रन मज्झौ ॥
को हिंदू दल जानि । ग्यान दिन एक न पज्झौ ॥
अरिष्ट राह झंपै रविहि । चंद जोति चहु दिसि दवै ॥
ग्रह माल लोह वद्दै नहीं । नीर मझि रव्वै हवै ॥
छं० ॥ ११७५ ॥

दच्छ बंध कुव्वेर । नाम सुव्वेर सु बत्तिय ॥
तुम सह कंदल कल्यौ । सूर सामंत कलप्पिय ॥
कै मनु छिंदनु रूप । भूप ववरि करि उट्ठिय ॥
किम अरिष्ट आवंद्र । सगि बाना वलि फुट्टिय ॥
किम किम सु पग्ग पंजर वज्झौ । किम सुराह गह गह गहिय ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवहि । दच्छ राज अच्छौ कहिय ॥
छं० ॥ ११७६ ॥

कै इन्द्री वल सूर । गुरू ग्याहौ सनि तीजौ ॥
नौंम सुक्र विन सुक्र । जनम मंगल बुध बीजौ ॥
राह केत मुय रव्वि । विग्र दच्छिन हरि चितिय ॥
जोति चक्र जुध चंद्र । दुष्ट दानह करि मित्तिय ॥
चय चिपुर जोति चिपुरारि हुअ । पलनि मद्धि रव्यौ तिनहि ॥
ग्रह ग्रहनि गठि पूजै पुहप । सुपहु जुद्ध जैते पिनहि ॥
छं० ॥ ११७७ ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन ।

सुरिस ॥ वाम अनी कंदल सों वीत्यौ । प्रती पद आदित्य अतीत्यौ ॥
सोम दिनह दुतिया तिथ रज्यौ । दाहिन कलह सुकंदल सज्यौ ।
छं० ॥ ११७८ ॥

निसा भई आकम्मि सुसेन । दल वल अप्प अप्प मिलि एन ॥
फुनि सामंत सेन बर गज्यौ । दिच्छिवध[1] कहनह को सज्यौ ॥
छं० ॥ ११७९ ॥

(१) ए०—दिसी वध ।

दूहा । अति आतुर जित्तन असुर । अरु जित्तन सुर लोक ॥
प्रतिपद रवि निसि यों गई । ज्यों रस रमनी कोक ॥
छं० ॥ ११८० ॥

दोनों सेनाओं का दुतिया के प्रातःकाल का मेल ॥

भयत प्रात निसि मुदित हुअ । उदित रूर छिन मंझ ॥
बीर वीर संमुह चढे । चाहुआन सुर तंझ ॥
छं० ॥ ११८१ ॥

शाही व्यूह का बल वर्णन ।

कवित्त ॥ सेत छत्र सिंदूक । सेत चामरन सेत धज ॥
सेत धजा आभरन । जुद्ध आवरन पाट गज ॥
हेम मुत्ति गज झंप । दंत कलयंस कटारह ॥
चवनि अंग झारहि । झनंक पायक पुंतारह ॥
सुरतान अग्र षुरसान पां । षां अग्गे मद्दह सरक ॥
दुअ वाह सैन सन्नाह बनि । मनु पच्छिम उग्यौ अरक ॥
छं० ॥ ११८२ ॥

राजपूत सेना का व्यूह बल वर्णन ।

सेत छत्र नीताय । जैत उभ्भौ दिसि बांई ॥
चाव चलन चित धूअ । धूअ रथ्थन चित सांई ॥
दिसि दच्छिन चावंड । पाय मुक्कै सिर नग्गा ॥
समर सिंघ रावर नरिंद । साहि रुक्के रन अग्गा ॥
सुरतान छत्र पावार परि । चतुरंगिय चंपिय सयन ॥
आहत्त रत्त दुनियां विषम । देवरथ्थ बंधे गयन ॥
छं० ॥ ११८३ ॥

दूहा । उन जीते जित्ते तुरक । उन भज्जे भज्जाइ ॥
उररि सैन पग्गार परि । सेत छत्र नेताइ ॥
छं० ॥ ११८४ ॥

कवित्त ॥ तब हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट चामंड अंबरिय ॥
रे जद्दव वग्गरिय । राम कूरंभ संभरिय ॥

पीची राव प्रसग । सोधि पावस पुडीरह ॥
अप्प अप्प मुप छडि । आय भज्जौ भर भीरह ॥
न्रप जैत राय उप्पर करन । दई दुचाह दाहर तनय ॥
तिरछौ सुतक्कि लग्गौ लरन । मनौ अग्गि जज्जर वनह ॥
छ० ॥ ११८५ ॥

चामंड राय के मुकाबले पर गाजी खा का उतरना ।

दूहा ॥ विषम सरच सुरतान दल । वल प्रति वज्जी धाय ॥
जैत छत्र सित उपरै । तुरी वज्ज वर साय ॥
छ० । ११८६ ॥

कवित्त ॥ एक सूर सामत । दत दती उप्पारिग ॥
सिध हक्कि गय सिघ । अम्भ लगि पग्ग उपारिग ॥
सुछल सोम नदनह । रत रावत्त विरुद्धौ ॥
अति करकस जु कमध । पित्त को रहे जु सुद्धौ ॥
भर हरिग पान प धार लपि । वर विरुद्ध दाहर तनय ॥
विम्भार हस धर सिर जुरन । सुकल कित्ति सुर वर सुनय ॥
छ० ॥ ११८७ ॥

चामंड राय का विषम युद्ध ।

रसावला ॥ मेछ हिंदू दल । हाल लग्गी दल ॥ वीरवीर वुल । सीस हक्कै चल ॥
छ० ॥ ११८८ ॥

व्रभ कौतूहल । जोग जोग गलं । पान हुलौ पल । छत्र पत्ती चल ॥
छ० ॥ ११८९ ॥

चोर मूर मलं । उड्डि लग्गी कल । काजसाई छल । दीन देई दल ॥
छ० ॥ ११९० ॥

हाय हाल वुल । दाहिदाहि मल । उंच साहीथल । मिच्छ किन्ने तल ॥
छ० ॥ ११९१ ॥

दोय दोय उल । मेछ हिंदू थर । एक एक गर । झारि वड्ड कर ॥
छ० ॥ ११९२ ॥

कारिजा कप्फरं । गेन लग्गा बरं । गिद्धि जाला जरं । दोमि नंचे धर
छं० ॥ ११९३ ॥

सीस हक्का करं । दंति दंत सरं । अंत आलु झरफरं । इम्भ सोहै परं
छं० ॥ ११९४ ॥

नाल कट्टै सरं । ढाल पीलं परं । केलि सापा ढरं । वीर सा बंबर
छं० ॥ ११९५ ॥

जानु कट्टै परं । कंध बंधे भरं । ताल बज्जे हरं । सट्टि कंठे तरं ।
छं० ॥ ११९६ ॥

पंच पंचं घरं । मुत्ति लद्धी नरं । राइ चामंडरं । वीर गोरी लरं ॥
छं० ॥ ११९७ ॥

मुत्ति लद्धी भरं । पंथ बोली दरं । रुद्धि नद्दी षलं । पंक पंनं पल
छं० ॥ ११९८ ॥

साहि साहं गलं । अस्सियं झलझलं ॥ .... । ... .
छं० ॥ ११९९ ॥

कवित्त ॥ झलकि सेन सुरतान । कलकि हिंदू कर बज्जिय ॥
सार धार आंकूत । बाज राजह तुटि तज्जिय ॥
स्वामि मंस है मंस । सानि संकट किय एकं ॥
लोथि हथ्थ सें पंच । नेह कीनी निजु केकं ॥
निज भ्रत्त निरथ्थत संभरिय । राज रंजोइअ अंषरिय ॥
संग्राम धाम तुट्टिय सकल । साग सुनाई पंषरिय ॥
छं० ॥ १२०० ॥

पहकि पंति पंषिनिय । हकि मंकिनिय सुझो रुअ ॥
जहकि जच्छ अच्छरिय । कहकि अच्छरीब सु हरुअ ॥
हनकि जग्गि जोगिनिय । रहकि रुधि रंग सुरत्तिय ॥
दहकि मंस जंबुकिय । हलकि सिद्धिनि असु बत्तिय ॥
धर नरन हरन हिंदुअ तुरक । अरक भरक चामंड किय ॥
दब दिष्टि मिष्टि सारह सरस । सुकल कित्ति कलजुग्ग जिय ॥
छं० ॥ १२०१ ॥

दूहा ॥ लगि गोरी चहुआन सों । भरे रुधिर जल पूर ॥
बहु दल अरि तन गजि कै । तिन सधारिग सूर ॥
छ० ॥ १२०२ ॥

जैतराव का घोड़े पर सवार होना ।

चढ्यौ जैत है मगि कै । थप्परि कध सुपानि ॥
दल सुमिच्छ तिल तिल करन । करि जुहार चहुआन ॥
छ० ॥ १२०३ ॥

चामडराय की वीरता का बखान ।

कवित्त ॥ ऐ साहस सातरह । करिय पावारह आन ॥
लप्प दलह मिलि गयौ । कियौ साहस आजान ॥
लत उलत्त पेलत । धार उद्धार पिलतह ॥
सिर तुट्टे समुहै । भिर्यो क्रमध सिर वत्तह ॥
सिर तुट्टि सुधर सभौ भिर्यौ । धर कटत सिर विप्फुरिय ॥
बिन सीस सहस अध पारि रन । इम सु केलि कासिम करिय ॥
छ० ॥ १२०४ ॥

रसावला॥पग्ग पेलि पन। साहि गोरी अन । जैतछत्र तन । अवुआरायन ॥
छ० ॥ १२०५ ॥

मेछ भज्जे जिन । अद्ध अद्धे तन । वाह वाह घन । रुंड मुंड बिन ॥
छ० ॥ १२०६ ॥

वेलिता लम्मन । पेपि साच मन । उक्क लग्गी बन । इप्पि थोर थन ॥
छ० ॥ १२०७ ॥

वदि वदे लिन । लोक लोक गन । मग्ग मग्गे सन । जोग मग्गे जन ॥
छ० ॥ १२०८ ॥

पग्ग लग्गे छन । देव पचीयन । स्वामि छुट्टे रन । ओन रेन पन ॥
छ० ॥ १२०९ ॥

पिंड सारे घन । सूर भिरित यन । कधि चिच किन । वद वदाइन ॥
छ० ॥ १२१० ॥

देव बरदायनं । गरुअ गोरी सनं ॥.....।.....॥
छं० ॥ १२११ ॥

॥वित्त ॥ भिरि भारथ दाहिम्म । छुट्टि रन चीय प्रकारं ॥
मात पित्त अरु स्वामि । बाच मन क्रम्म सुधारं ॥
बेद मग्ग उथ्थापि । मग्ग थप्प धर धारं ॥
जोग मग्ग लम्भैन । क्रम्म नप्पै भरतारं ॥
आवृत्त जुद्ध गिरि जुरिग[1] भर । भिरिग सूर सामंत नर ॥
अग षित्त षगिग दोउ दीन बर । चढ्ढि भंति बर विप्पहर ॥
छं० ॥ १२१२ ॥

दो पहर होने पर जैतराव का हरावल सम्हालना।

अर विपहर संमान । जैत रुधयौ गज गोरिय ॥
दुह दुआह पावार । बज्जपित वज्जह जोरिय ॥
दंति अंति आघात । तंत जरि मंच भ्रमाइय[2] ॥
कवल पीर ज्यौं कन्ह । दंति गावहि रुकि धाइय ॥
प्रथिराज बीर उप्पर करन । सिंह समर सो रंग भर ॥
बर बिषम तेज घन छंह छल । हक्कार्यौ वर वीर बर ॥
छं० ॥ १२१३ ॥

मियां मनसूर रुहिल्ला और चामंड राय का द्वंद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना।

मोतीदाम *॥ सबै दल गज्जन वै सुरतान। हलक्कि गहन्न चढ्यौ चहुआन।
बजावति नौवति सिंधुअ राग । देवासुर कंक मनों फिरि लागि ॥
छं० ॥ १२१४ ॥

छुटे हथनारि तुवक्क जंबूर । षिवै जनु बीज गरज्ज गरुर ॥
बगत्तर पष्षर टोपन थाग । बचै किमि सिप्पर उप्पर लागि ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

कबूतर ज्यौं धर लोटन लोटि । परै चतुरंगिनि एकहि चोट ॥

(१) ए० कृ० को० भरिग ।
(२) कृ० ए० बिचारिय, को० उचारिय । *यह छन्द मोतीदाम मो० प्रति में नहीं।

मचै भय भीति अकारिय वार। भयौ तब सभरि वार किवार ॥
छ० ॥ १२१६ ॥

सहस्सह च्यारि गिरै असवार। नग्यौ हय दाहिम वग्ग उपारि ॥
झलमलि लोह भनी इक मेक। हयग्गय पाइल पारि अनेक ॥
छ० ॥ १२१७ ॥

वही असि कुत सरजम दड्ढ। धरातर मस चर चक्क चड्ढ ॥
भ्रमक्कत श्रोन चले परवाह। मनो नदि पावस मास अथाह ॥
छ० ॥ १२१८ ॥

चमू असुराइन चौसठि पग्ग। दई सुत दाहर ठेलि अलग्ग ॥
जहां जह आइ पर्यौ नृप भार। तहा तह पारप हथ्थ दियार ॥
छ० ॥ १२१९ ॥

गहह्यह सेन करतह चूर। दिप्पौ मफरह मियां मनसूर ॥
चवद्दह से तजि अश्व रहिल्ल। धरै कर सिगिनि साइक चिल्ल ॥
छ० ॥ १२२० ॥

कटि कस कध भुजा उर थूल। सधे तस पाइक वद्द अभूल ॥
क्रमे करि साहिब दीन सलाम। गहे मन वेगम लुट्टि विराम ॥
छ० ॥ ११२१ ॥

कहैं मुप जीवत लेहु सुवन्नि। सकापति जौ हनुवत उदन्नि।
निजै मन आगम जानि मरन्न। पवगम पागर काटि चरन ॥
छ० ॥१२२२ ॥

उपानह छडिय चावड राइ। पवन्नह वेग जवन्नह धाइ।
जिन पथ भारत पार उतारि। तिन हरि कौ उर ध्यान सुधारि ॥
छ० ॥ ११२३ ॥

करे किलकार प्रकारिय सग। फुटी मुफरह हियै अरधग ॥
करथ्यि कमान तज्यो सर मीर। लग्यौ उर मध्य कैमासह वीर ॥
छ० ॥ १२२४ ॥

तिनें मनसूर पहु चिथ आय। छल करि पिट्ठ कियौ असि घाइ।
कटे सिर दाहिम कट्टिव पग्ग। हयौ मनसूर पर्यौ कटि भग्ग ॥
छ० ॥ १२२५ ॥

इसी कर मद्धि सुभै किरवान । जिसौ सुतद्रोन कौं दी सिवदान ॥
रह्यौ धष जीव सहाव कि ओर । धकें परि सिंधुर ढाल ढंढोरि ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

हिल्यौ पहिलै गज मारन राज । ढहावत सोव गयंदन आज ॥
गए घर कहुन राजन लोह । लरै इन भंति सुन्याय ससोह ॥
छं० ॥ १२२७ ॥

कमंध कियौ धपि अधम एम । मनौं फरसी हर अंधक जेम ॥
करें असतूति षरे दुइ दीन । रिनंमद चढ्ढि अछक सुपीन ॥
छं० ॥ १२२८ ॥

मिले रिन अंगन बीर बिताल । षुसी होइ नाचि बजावति गाल ॥
दिये कलि कौतिग कोरि तेतीस । अपच्छर ईस कि पूरि जगीस ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

चवट्टिय तुट्टिय संषह पूरि । अपुट्टिय फौज फिरो सब सूर ॥
घनं घन जंगन के जितवार । तिनं तिन सुम्भर पारि पथार ॥
छं० ॥ १२३० ॥

संघारिय भारिय गोरिय सेन । सक्यौ नह कोइ सुगोरिय लेन ॥
करे घन उप्पर जैत पवार । दुअंतिय बार बजाइ कें सार ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

चवद्दह सें कटि षेत मसंद । पर्‌यौ धर दाहिम जंपिय चंद ॥
छं० ॥ १२३२ ॥

कवित्त ॥ च्यारि सहस असवार । मद्धि चामंड दहिग्गौ ॥
चौदह सें मफरह । मियां मन सूर रुहिल्लौ ॥
हूह हक्क किलकार । सीस तुट्टहि धर धावहि ॥
आनंदित अपछरा । आज इच्छावर पावहि ॥
चावंड राइ दाहर तनय । हर हारावलि सट्ठयौ ॥
मफरह षान पीरोज सुअ । तेजवंत भिस्तिहि गयौ ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

जैतराय का वीरता के साथ काम आना ।

पर्‌यौ जैत पांवार । छच नीचै छिति पूरिय ॥

ढाहे मीर मसद। पति पप्पलि[1] परि नूरिय ॥
सहस वीस इक ब्रन्न। सकल आसुर परि सथरि ॥
हड्ड मस कट्टवसु। ओन गूदह तथ्थ करि ॥
किलकत जुथ्थ जौगिन नची। रची रथ्थ अच्छरि बरी ॥
डहकत डक्क सुर बीर हर। रजिय गनन जवुक ररी ॥
छ० ॥ १२३४ ॥

जैत के मुकाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भाजे का आना।

सजिय जूह साहाव। रौद्र बज्री रिन संगिय ॥
परे पेषि पाभार। पूरि असि छत्र उछ्गिय ॥
या ताजन सा तप्पि। पेखि गज जौत समौ अरि ॥
देषि दिष्ट प्रथिराज। कोपि तनताम थरथ्थरि ॥
हक्केव अप्प उप्पर जवन। भिरन अप्प जपै अटल[2] ॥
चप्यो[3] सु गज्ज राजन्न जुरि। ताहि सार सुषु दि पल ॥
छ० ॥ १२३५ ॥

पद्धरी ॥ समरिय राम ढिल्ली नरेस। दिधाय जाति उक्कसिन सेस ॥
विस्साल विव सम प्रात रत्त। सम ललित लाँम सुप तेज तत्त ॥
छ० ॥ १२३६ ॥

थरकत अहर फरकत बांह। रोम च अग मुक्का उछाह ॥
उघरिय भ्रकुटि चिकुटी करार। कोपे सुसार कर दड धार ॥
छ० ॥ १२३७ ॥

उप्पारि वग्ग उभ्भारि थग्ग। सारथ्थ हस सम सूर अग्ग ॥
सूरिमा मुख्य हकारि हक्क। न्रिघात जेम धावत धक्क ॥
छ० ॥ १२३८ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुप्पलि।
(२) मो०—अतुर।
(३) ए० कृ० को०—भज्यो

हय छंडि दंति गहि दंत दंपि । सिर फोरानिंपि उभ्भार झंपि ॥
हुअ हड्ड चूर धुर हंस गज्ज । धर नंपि छोनि ताजन्न तज्जि ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

राजन्न षान ताजंन बंध । भानेज साह साहाब संध ॥
नव सहस मीर सम आय गज्जि । आतस्स जानि आहुत्ति जज्जि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

लग्गे सु घाव सम चाहुआन । षट पट्ट षग्ग गाजी षरान ॥
तुट्टति घाव जोसन्न होय । हल सूर सिल्लह होयं विभाय ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

आसन्न युद्ध लग्गे अपार । तुट्टंत सुधर झर मुझ्झि यार ॥
उड्डंत श्रोन तन उद्ध अत्ति । दव लग्गि जानि आयोस भत्ति ॥
छं० । १२४२ ॥

देखियन जुद्ध दावन दनेव । नच्चंत नच्चि नारद्द भेव ॥
राजन्न लग्गि राजन्न मुष्ष । चहुआन रज्जु संगी सुवष्ष ॥
छं० ॥ १२४३ ॥

धर धार धरनि राजं न झारि । दल भग्गि फारि मनु फुट्टि पारि
फिरि आय राज उप्परि पवार । अरि जित्ति राइ बुल्ले विचार ॥
छं० ॥ १२४४ ॥

जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुःख करना ।

दूहा ॥ पर्यौ राव जैतह सु रन । पति अब्बू घन घाय ॥
सूर राय सोमेस सुत । करिय अप्प सिर छाय ॥
छं० ॥ १२४५ ॥

कुंडलिया ॥ हम दिय छच गुछांह कों । तुम लिय छच मरन्न ॥
हम दुर्जोधन जोधभय । तुम कलि करन करंन ॥
तुम कलि करन करन्न । हंकि उठि सिंघ सिंघ पर ॥
झर उझारि झंझोरि । तोरि गहि दंति दंत धर ॥
गौ वच्छां प्रति मोह । दोह लग्गौ सुदाह कह ॥
कहै राज प्रथिराज । छच हम दियौ छांह कह ॥
छं० ॥ १२४६ ॥

दूहा ॥ राजन अचर छोरु करि । जैत प्रसन काज ॥
दिल्ली धर अग्गार इहै । जुझ्झ पर्यौ धर आज ॥
छ० ॥ १२४७ ॥

गवरि हार उचिग अवनि । पुच्छिय दच्छ प्रबंध ॥
समर सुपन सुपन वि समर । ओपु सुनै कविचंद ॥
छ० ॥ १२४८ ॥

खीचीं प्रसग राय का युद्ध के लिये अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हस्ति पीत पय्यर्यौ । पीत चावर गज गाहिय ॥
पीत टोप टट्टरिय । लोह हय चय्य सनाहिय ॥
सारि सिलह प्रज्जरिय । पीत बानावलि सोभित ॥
राज राव परसग । पित्ति झुझ्झै परिया भति ॥
तनसार धार घटि भार घट । अवर लय्य वर पच सै ॥
अनभग बीर आइय न्रपति । सौस नवाइय सत्त सै ॥
छ० ॥ १२४९ ॥

शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसग राय का युद्ध करना और मारा जाना ।

गीतामालची ॥ विटयौ मीर राज धीर अस्स हीर असिसय ।
गज्जे सनूर सूर सूर सा करूर कस्सिय ॥
उच्चे सुगात मुय्य रात तेग तात रोसए ॥
माते मसद अस्सि वद सा गिरद्द गोसए ॥
छ० ॥१२५० ॥

विटयौ राज मीर गाज सब्ब साज सकुल ॥
चौ अगति सैन गज्जिगेन अय्य तेन उज्जल ॥
वज्जे सुवाज सिग राज जेर नाज जगय ।
अरियो गोरी झल्ल पोरी जुद्ध रोरी रगय ॥
छ० ॥ १२५१ ॥

गज्जौ सुप्रानं चाहुआनं रन्न ढानं रज्ज ए।
संभरी मीरं अप्प मीरं संगु हीरं गज्ज ए॥
हक्के मसंदं लेहु बंधं राज सद्दं संक्रमे।
देषे प्रसंगं सूर अंगं जुद्ध अंगं उम्भमे॥

छं० ॥ १२५२ ॥

गज्जं सुराहं गज्ज गाहं रथै ढाहं रज्जए।
बाहंत मीरं बंधि तीरं नेह भीरं जे जए॥
लग्गे करारे अनी धारे पित्त पारे पग्गए।
बाजंत तारं षग्ग धारं जीह मारं जग्ग ए॥

छं०॥ १२५३ ॥

ओनं प्रवाहं पूर पाहं राह राहं रप्पए।
मारंन षानं मीर मानं राजधानं धप्प ए॥
देषे प्रसंगं संमु षग्गं ओय अंगं अंग ए।
बाजे विहारं हार मारं रोहि आरं रिंगए॥

छं० ॥ १२५४ ॥

सेलं प्रहारं असि धारं सार सारं बज्ज ए।
झाक झरक्के धक्क धक्के दोय हक्के गज्ज ए॥
प्रसंग राजं बीर गाजं मीर साजं दुट्ठए।
मल्हे प्रहारं तीन तागं झार झारं बुट्ठए॥

छं० ॥ १२५५ ॥

चय बीर जुट्टे दुट्ठ दुट्ठे मिले रुट्ठे मत्तए।
बे हथ्थ षंडं हथ्थ षंडं तुट्टि रुंडं गत्तए॥

छं० ॥ १२५६ ॥

दूहा ॥ दुने मीर षीची प्रसंग। सानि अनो अनमंस।
बाज षड्ड ससुगिन परै। भयौ कीच पल अंस॥

छं० ॥ १२५७ ॥

कवित्त ॥ परयौ राव परसग । पग्ग पीचौ पति पुत्तौ[1] ॥
चोर मौर गजगाह । भार पारथ ज्यौ भुत्तौ ॥
से हथ्थे से हथ्थ । गेन गंभ्रव किय गानह ॥
वरन इच्छ धरमिच्छ । द्रोह श्रोनह किय पानह ॥
सभिरय राव सभरि धरा । सघन घाय समुह लरिय ॥
जिम जिम सुजुम्मिक्क धरनि परिय । तिम तिम इंद्रासन टरिय ॥
छ० ॥ १२५८ ॥

बग्गरीराय की वीरता और उसका पाच मुसलमान सरदारों को मार कर मरना ।

मोतीदाम । पर्‌यो रन पीचिय राव प्रसग । तिलत्तिल वीर सुवटिय अग ॥
घुसौ भय मेछ गहक्किय ठान । क्रमे फिरि कुडलि राजन ढान ॥
छ० ॥१२५९ ॥
घन घन पष्पर पारस भीर । ढनक्किय घट रनक्किय तीर ।
हन हन सद्द सुवज्जिय हाक । धरहर वज्जिय[2] पग्गनि धाक ॥
छ० ॥१२६०॥
चमकहि पग्गरि मसिरि राज । मनो घन मद्धि सु वीज विरोजि ॥
फडफ्फहि फेफ तडफ्फहि भीर । [3]नचै तिन सद्द सुनद्दिय वीर ॥
छ० ॥१२६१ ॥
पलक्कहि पोनिय श्रोन[4] सपूर । बरै वर अच्छरि सुच्छरि छर ॥
प्रबोधहि जोधहि गोरिय अप्प । करै प्रथुसिध समावरि धप्प ॥
छ० ॥ १२६२॥
गहक्किय गज्जि मस दह राज । चले गुरु हक्कि गहक्किअ गाज ॥
नयो सिर साइ सुबग्गारि बीर । भिल्यौ मनु कुजर मझि कठीर
छ० ॥ १२६३ ॥
नथ्यो हय मझि सु साजिय तार । जथ्यौ सुप रुचित उचित मार

(१) ए० कृ को०—पुत्तौ ।
(२) मो०—गज्जिय । (३) मो०—नचै तिन सद्दह मद्दह वीर ।
(४) मो०—श्रोनाहि ।

हए चव मीर मसंद सुढाह । पर्यौ हय षेत सुधाय अघाह ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

लयौ हयराज सुमार मसंद । दयो तब बग्गारि राय सुविंद ॥
चढ़े हय नंषिय राज प्रसंग । चढ्यौ हय ताम हुआ हय अंग ।
छं० ॥ १२६५ ॥

दयौ फुनि राज हए अरि बाज । चढे सोइ भंजिय बग्गुरि गाज ॥
दयौ फिर राज सु बाजह देव । कढे हय दस्स अनो अनि एव ॥
छं० ॥ १२६६ ॥

टर्यो रनि बग्गरि घाय अघाय । हए दह पंच मसंद सुराइ ॥
.... ॥
छं० ॥ १२६७ ॥

कवित्त । पर्यो झुझिझ बग्गरिय । बरुन झग्गरिय सुरंगिय ॥
सुरहलोक शिवलोक । लोक जारथ्थ कुरंगिय ॥
बालध्यन जोवनह । बडे बड़पनह बड़ाइय ॥
समर राज प्रथिराज । बाज दस वेर चढाइय ॥
दिव दिवसु देव जैजै करहि । पुह पंजरि अछै धरनि ॥
तजि लोक लोक लोकन[1] सघन । पर्यौ देव मंडलि तरनि ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना । सिंह प्रभार का आड़े आकर १५ झुंड सरदारों का मार कर आप मरना ।

भुजंगी॥ पर्यौ बग्गरी देषि गोरी नरिंदं भयौ राह रुपं ग्रस्यौ जानि इंद
कहैं सब्ब मीरं समं सह नंषे[2] । चितं आतपं जानि ग्रीषम्म धंषे ॥
छं० ॥ १२६९ ॥

धरे लेहु लेहू सबै हिंदु राजं । चले चाल बंधे गुरं मीर गाजं ॥
परे पारसं झुंडली चाहुआनं । मिले मीर हक्कें ढुके राज धानं ॥
छं० ॥ १२७० ॥

(१) ए० कृ० को० लोकत ।
(२) ए० कृ० को० तंषे ।

गजै नद्द गीसान भेरी भयद । रन्न तूर पूर नदे सिघ नद्द ॥
गज बिटय राज मद्द सुमत्त । ठनक्कै धन धूधर घटयत ॥
छ० ॥ १२७१ ॥

घनक्कै पित पथ्थर घान पान । फिर ढाल ढाल पताक परानं ॥
झलक्कै सवे धीर बानैत बान । हन हन्न सद्द बुल्ल चाहुआन ॥
छ० ॥ १२७२ ॥

चमक्कै चमक्क सनाह सनाह । किल कार धक्कार हक्कार ग्राह ॥
गहै हथ्थ हथ्थ कमान कमान । धरे नेज पग्गे उचज्जे उपान ॥
छ० ॥ १२७३ ॥

वचे दीन दीन सुएन मसद्द । झलक्कै सुधे मीर तेज सुइद ॥
दिषे मीर राजे गिरदे गहक्के । कढे चाहुआन कुपान सुहक्के ॥
छ० ॥ १२७४ ॥

दिषे राज पामार सिघ समुष्यं । नयौसाइ सीस फिर्यो रिम्म रुष्य ॥
हनूमत इष्ट जपै जाप ताम । कुम्भ्यै सिघ जेम गजेदति दाम ॥
छ० ॥ १२७५ ॥

मिल्यो धाय गज्जे गजे मीर जूहं । घटं धीर पडे कल मचि कूह ॥
हने सिघ पग्ग गुर गज्जि गज्ज । हने सुडि दंत पथ कंध भज्ज ॥
छ० ॥ १२७६ ॥

धनक्के धरा नाग नाग सभाग । भजै केवि चिक्कार छडे बिआग ॥
धकै वीर पामार रूप विरूर । ढरै मीर सीस धरन्नी कारूर ॥
छ० ॥ १२७७ ॥

भमैं आवध भूर सामुष्य मुष्य । थल अवुज पूरि सा सीस रुष्य ॥
कर अग्ग कट्टै तिन बाहु तुट्टै । मुष अग्गहै धरा नाम लुट्टै ॥
छ० ॥ १२७८ ॥

द्रिग मडि देषै सिर तुट्टि तेषै । हय मस मीर कटे सानि सेषै ॥
भरक्के स भज्जै सकाज्जै सुमीर । करी मक्क पामार गज्जे कठीर ॥
छ० ॥ १२७९ ॥

फिरै कुडली तेक तार[1] करोर । फिरै मीर जे म मनों दड धार ॥

(१) ए० कृ० को०—त कतार ।

लषै द्रिग्ग पामार सा मुक्कि बामं।मनी प्रातमीरं ढकै मैन' ता
छं० ॥ १२८० ॥

गजं बाज तुट्टै असी सिंघ सेसं। पलकै सुश्रोनं परे पंड वेसं॥
भरक्कै विभज्जै द्रिगं जेथ सथ्थे। रवं भान मध्यान ग्रीषम्म रथ्थे
छं० ॥ १२८१ ॥

जबे देषियं सोह भाअंत सेनं। जपे तात मातं विरूरं सुवेनं
तबै पान राजन्न तोजन्न सेरं। असी पान आकूब कोरंन फेरं।
छं० ॥ १२८२ ॥

बली मीर रोसंन दोसंन दाहं। असीपान आसन्नि असीपां उमा
दहं पंच साहाब सापास वानं। बरं तेक भूरं समं प्रान थान
छं० ॥ १२८३ ॥

विचल्ली जबे सिंघ साहाब सेनं। करे हक्क कम्मो दहं पंच तेन
सयं आप सिंघ समं जुद्ध लग्गो। सहा सारं आवद्ध आवद्ध जग्गं
छं० ॥ १२८४ ॥

दहं पंच मीरं पबें सिंह हथ्थे। सय सेन धायं अधायं समं
छं० ॥ १२८५ ॥

महाबीर ज्यों भूत सेनं सुनंचै।सकै[3] क्षोनि नाही धरं ढाहि रं
तबै पेलयौ गज्ज गोरी सहाबं। हयौ पग्ग पामार भासुंड ताबं।
छं० ॥ १२८६ ॥

कटे सुंड दंत समं जार धारं। फिर्यौ गज्ज भग्गौ विरग्गौ विरं
धुक्यो धाय अध्घाय सा सिंघ सारं। सिरं देव सुम्मन्न नंषे अपार
छं० ॥ १२८७ ॥

ढर्यौ अप्प सुभ्भाय तब्बे परन्नं। सुतं निरभयं निरभयं अप्प मन्
पर्यो सिंघ पामर सामार बच्चै। षलं षेत ज्यों भूत भैरूं सुनच
छं० ॥ १२८८ ॥

षुल्लै देषि सिंघं भभक्कं सुमीरं। रहे बान मानं फिरै फौज तो

(१) ए० कृ० को० नेनं।
(२) ए० कृ० को० मार।
स(३) मो० - समो क्षोनियं नाहि धर ढार

ढुर्यौ सिंघ ज्यों सिंघ छोनी सुषेतं। गहक्के सुमीर रजेही रहेत॥
छ० ॥१२८९॥

कवित्त। परत सिंघ आचिज्ज। विरद साई भुज पंजर॥
सुनहिन कट्टौ जीह। नतरु रप्यौ मुष मंजर॥
ते कतार कुंडलिय। राम मंडली उलसिय॥
दल दल मुष मुष चढ। इंद्र वर सरवर फुलिय।
घनघाय अघाय निघाय अरि। सत्त सुभाय परतग्ग करि॥
दल होत जोन जोतिहि तिनहि। मिलत सूर दिष्यौ सुहरि॥
छ० ॥ १२९०॥

शाही सेना का और जोर पकडना और लोहाना का अग्रसर होकर लोह लेना।

उत्तम सद्दह सत्त। इत सामंत अट्ठ परि॥
धरिय वीह दिन वित्त। वहिय सलिता ओनह भर॥
उभै ईस दुअ विभर। विरस हालाहल विन्नौ॥
थक्के अग समेत। करत जुद्ध तन रिन्नौ॥
दिष्यौ सु राजग्रन सीस पर। करत युद्ध हक्कत सुभर॥
मोनदिय मीर मीरह समन। गहन राज दौरे दुआर॥
छ० ॥१२९१॥

दूहा। आवत अमीर अभीर दै। विन है गहन सुराज॥
देषि लोहानौ दौरिपरि। अहि असिवर गुर गाज॥
छ० ॥ १२९२॥

लोहाना का खड खड होते हुए भी अतुल पराक्रम कर के अपने मारने वाले को मारकर मरना।

भुजगी॥ तबै गज्जिय बीर आजानबाहु। मिल्यौ मीर अद्धो सुर जुद्ध राहु॥
असी वक्क उम्भारि गज्जे निहग्ग। लई अस काजै रज कज्जि जग्ग
छ० ॥ १२९३॥

लगै मीर सो धीर जुद्ध जुधार। तबै आय अद्धे भर साठि सार॥

तिनै जुद्ध अनभूत मत्तौ अपारं। तिनं तेग बज्जे अरुझ्झे करारं॥
छं० ॥ १२९४ ॥

तबैं संभरे इष्ट आजान बाहं। मुषं उच्चर्यौ बीर मंचं विवाहं॥
तिनं हाक धाकं सुबज्जी बिरूरं। मच्यौ जुद्ध आनुद्ध जूरं करूरं॥
छं० ॥ १२९५ ॥

सिरं तेक तुट्टे न उड्डंत दीसं। बिना पंष पंषी परे नभ्भ सीसं॥
कटे मूल बाहं लषे उद्ध आनं। मनो आननं पंच चीलं चिरानं।
छं० ॥ १२९६ ॥

दियौ तार तारी चवट्टी अनंदी। दिषै बीर कौतिग्ग सारंग मंदी।
झरं झार उझ्झार लाहं सुहानौ। किअं लत्त आलत प्राहार प्रानं
छं० ॥ १२९७ ॥

परे मीर बीसं उभै अग्गिवानं। तबै आयसं मंत तेगं उभानं॥
दिषै मोन दीनं जये दीनं रहं। समं राज दौरै गजे मेघ महं॥
छं० ॥ १२९८ ॥

तिनं उंच गातं बरं उंच हाथं। अंग अंग तुट्टै तिन लात धा
तबै आइयं अद्ध आजान बाहं। तिनं जुद्ध लग्यौ करूरं कराहं
छं० ॥ १२९९ ॥

मिले लोह लोहान सम्मन्न मीरं। उभै सूर साझग्ग गज्जे गहीरं॥
उभै तेक उतंग उम्भारि भारं। मिले बीर तत्ते उभै नेकतारं॥
छं० ॥ १३०० ॥

हयौ झाक तेकं सुउन्नै उनाही। उभै सीस तुट्टे परे भूमि थाहं
लग्गे बध्ध हथ्थं बलं दून सक्कं। हयौ मीर कट्टारि लोहान धक्कं
छं० ॥ १३०१ ॥

पर्यौ मीर संमन्न भूमी भयानं। चढे देव कौतिग्ग देषंन जानं॥
तबै आय तेकं हयौ मोन दीनं। कटी मध्य तुट्टौ दुअं भाग कीनं
छं० ॥ १३०२ ॥

धर्यौ अद्ध भागं धरन्नी सुएसं। उधंभाग कंठं लग्यौ काल भेसं
हयौ मोनदी ताम कट्टारि ऊरं। धरा ताम नष्यौ महामेछ गूरं
छं० ॥ १३०३ ॥

परयौ जाम लोहान पड धरन्नी । जय सद्द भासत सेना परन्नी ॥
* * * * छ० ॥ १३०४ ॥

कवित्त । परयौ हेाय आजान । बाह चयपड धरन्नी ॥
जै जै जै जंपत । मुष्य सब सेन परन्नी ॥
धनि धनि जपि सुरेस । सु धुनि नारद उचार ॥
करिग देव सब कित्ति । वुट्ठि नभ पुहुप अपार ।
कौतिग्ग सूर थक्कौ सुरइ । भइय टगट्टग भुअ भरनि ।
आसस करैं अच्छरि सयल । गयो भेदि मडल तरनि ॥
छ० ॥ १३०५ ॥

लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना ।

स्वामि चहु निज अत । आनि कोप्यो कमधज्ज ॥
पग्ग आएहि वर देह । आनि कुल अप्पन लज्ज ।
परे सु धन सोमत । अग्ग देषे सुरतान ।
सजे हयग्गय सूर । वीर वर वीर कमानं ॥
जुध करत राज दिप्पो दुहर[1] । अप्प मच भैरव जप्यौ ॥
उम्भारि पग्ग औडन उक्कसि । करि किलक्क समुह धप्यौ ॥
छ० ॥ १३०६ ॥

आरज्ज सिह का पराक्रम और एक मुसल्मान सरदार का उसे पीछे से आकर मारना ।

भुजगी ॥ किलक्कार हक्कार कुम्यौ कमद्ध । सथ भैरव आय सौमच वद्ध ॥
चली जोगिनी सथ्थ सद्द भयान । चढे आयस सब्ब देषत जान ॥
छ० ॥ १३०७ ॥

भर आरज रूप देप्यौ अनूप । किते नेन ढके किते जुद्ध जप ॥
अरी जूह मध्ये कम्यौ पग्ग धार । गजे सिध आवइ वाहै अपार ॥
छ० ॥ १३०८ ॥

विय पड वाजी नर तेक तुट्टे । तर जानि कावारिया कूट कुट्टे ॥
निज पान पडे करे विद्धि पड । भजै गज्ज चिक्कार फुट्टै भसुड ॥
छ० ॥ १३०९ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुहर ।

असीतार नंचंत वीरं चिधाई। नचै जोगिनी श्रोनधुंटै अ
सहस्सं च पंच पंचं मधे सहि दिष्यौ।चल्यो तथ्थ मग्गं जुद्ध तंजु
छं० ॥ १३१० ॥

जबें आय अद्धे सतं मीर एकं।मिल्यौ मद्धि जुद्धं तिनं तंमि
करे लाघवं षग्ग वाहंत वेगं। सरं केवि तुट्टै धरं केवि रेगं
छं० ॥ १३११ ॥

परे मीर षंड विहंडं धरन्नी। टगं टग्ग लग्गी जुधं ओय र
सिरं तेग तुटंति उड्डंति दीसें। हरे बाय मानो फलं ताल ज
छं० ॥ १३१२ ॥

परे पग्ग आयास तुट्टी धरन्नी। मनो अच्छरी माल नंषै व
परे षोल उड्डे जनची जुवासं। परे भानु जोतिष्ष विद्धं अ
छं० ॥ १३१३ ॥

पलं कीच मच्यौ धरं श्रोन धारं। करै भैरवं मद्द मत्तौ फिका
परे बीस अग्गं दहं पंच मीरं। बिए निकरे षेत नट्टे सभीरं
छं० ॥ १३१४ ॥

पर्यौ दिट्ठ आरज्ज साहाब सग्गं। मध्ये पंच साहस्स मीरंदु
चल्यौ मार मारं जपे जीह तामं। भजै आसुरं सेन देषे दु
छं ॥ १३१५ ॥

षंप्यौ साहि बाजीसनं मुष्ष अष्षं। करीआरजं सिंध जेगं सु
करं जच जभार षंडौ करूरं। भरक्कंत सेना करै झूर झूरं।
छं० ॥१३१६ ॥

दिष्यौ साह संभीप सारूप षानं। चपै अश्व आयौ चपी अस्स
तुमे आय पुट्ठी हए असिस तामं।वरं सीस तुट्ट्यौ फिर्यौ भूमि
पर्यौ
छं० ॥ १३१७ ॥

तबै आय
साहाब संभीप मन्ने। बिना सीस धायौ करे षग्ग उ
ाकं हयं कंध तुट्यौ।हयं जुत्त साहाब साभूमि लुव
धर्यौ अद्ध भ।
छं० ॥ १३१८ ॥

गिर्यौ भूमि आरज्ज सारज्ज सूर । कुसम सुनयै सिर देय मून ॥
छ० ॥ १३१९ ॥

सोमवार के युद्ध का विश्राम ।

दूहा ॥ मिले पान पट्टान सब । ग्रहे पंचि लिय साहि ॥
भयौ श्रम्म विश्रम्म जुध । धनि धनि जपिय[1] ताहि ॥
छ० ॥ १३२० ॥

योगनी और वेतालों का शिव के समुख युद्ध की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ नह देवासुर जुद्ध । चद तारका न होई ॥
नह पारथ भारथ समान । राम रावन जुध जोई ॥
नह सुचि पुर त्रिपुरारि । देव दानव नम मानव ॥
समर सिध नारद[2] नरिंद । सतु कहै जुध जानव ॥
चामंड राइ बर जैतसी । समर सिध राजन्न धनि ॥
सग्राम जिम्म[3] भारथ्थ जिन । [4]अमर महा बलवेर ढुलि ॥
छ० ॥ १३२१ ॥

दूहा ॥ हथ्थ एक एकह विहथ्थ । विहथ्थ एक इक पंड ॥
दल राजन समुझि न परौ । बाज राज चामंड ॥
छ० ॥१३२२ ॥
तव कुक्कस वज्जिग दसन । जसन जेम चितितार ॥
कलह सुप्रिय मनमथ मथन । सुनि गवरिय[5] उर हार ॥
छ० ॥ १३२३ ॥

यक्ष का वीरों के शीस ले जाकर शिवजी को देना और मृत वीरों का पराक्रम कहना ।

कवित्त ॥ दच्छ सीस लै पच । ईस अग्ग सुसपन्नौ ॥
समर सिंघ चामंड । जैत जद्दव बल दिन्नौ ॥
ओर वित्त भारथ्थ । सेन घुट्टौ सुलतानी ॥

(१) ए० कृ० को०—जपै । (२) ए० कृ० को० रावल । (३) ए० कृ० को० सिम्म ।
(४) ए० कृ० को०-अमरहा वर तेज ढुलि । (५) मो० गरिय ।

है हुबाह दुअ जुद्ध । जास बोली सुर बानी ।
दिन अथ्थित निसि वर उदित । सर भग्गी दिव दीन भौ[1] ॥
सामंत सत्त पंतह परिग । एक समर रावर उभौ ॥
छं० ॥ १३२४ ॥

अद्ध रयनि अंतरिय । जुद्ध वतरिय संपत्तिय ॥
अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । अट्ठ वेताल विछन्तिय[2] ॥
जालंधर संसुपिय । ईस अग्गें इह कथ्थिय ॥
भिरि जिते हिंदुअ तुरक्क । भारथ जो वित्तिय ॥

पासंड राय की तारीफ ।

पावंड राइ सिर समर सिर । सिर जद्दव कूरंभ बलि ॥
पांवार सीस पंचौ पवित्त । रुद्र माल गंठिय सुगलि ॥
छं० ॥ १३२५ ॥

महन सीह बल्लार । नाम जानौ रोहिल्लौ ॥
दल्ल सोसन सुरतान । अग्ग अग्गें सु इकल्लौ ॥
ताइय धर झल्लरिय । सार हिंदू सर बुट्ठै ॥
पग पच्छा न फिरंत । पग्ग फेरें मुख उट्ठै ॥
षग भार मान तेतीसनौ । रुहिर भषै झल्लौरियौ ॥
कट्टिय कुल्लाह[3] कलहंत रह । ढकी ढाल ढंढोरियौ ॥
छं० ॥ १३२६ ॥

भारू महनंग राय की तारीफ ।

भारु रा महनंग । धक्कि नीसान दियंदे ॥
बर केंबर बंगाल । तरसि तोप्पर चढंदे ॥
समर सिंघ रावर सभीर । वीर पावस रा अग्गी ॥
सारब्बर षरब्बरहि । तेग तेरह सें भग्गी ॥
कचरत्त षान ततार सों । वर बिचाल बोल्यौ समुष ॥
मुहि मरद जानि मिलि मरद हौ । हौं सुहिंदु तुअ मेछ रुष ॥
छं० ॥ १३२७ ॥

१) मो०--सौ, मौ । (२) ए० कृ० को०—विवथ्थिय ।
३) ए० कृ० को०—कहार ।

परत पान तत्तार । परत मारू रा भग्गन ॥
हय कधह दिय पाइ । उतरि वियक्कन सुभग्गन ॥
उच्च गात उरहाथ । तेग लच्छी उभ्भारिय ॥
धात पभ न्निघघात । जानि झल्लरि झल्लारिय ॥
वर करिय तुट्टि फुट्टिय सुसिद्द । रुहिर धार समुह ढरिय ॥
सोभियहि सुभट हिन्दू तुरक । जस जोगिनि जै जै करिय ॥
छ० ॥ १३२८ ॥

नाहर राय परिहार की तारीफ ।

इत नव सहस नरेस । उत्त पधार ततारह ॥
इत गोरिय कुल सवल । उत्त नाहर परिहारह ॥
दुवै सेनपति सूर । पूर हकार हवाइय ॥
इत संभरिय सहाय । उत्त पुरसान सहाइय ॥
मद मोप छुट्टि जुट्टिय विसर । दुझ्झर[1] तेग लगिय सुभर ॥
अै उदर वृत्त लज्जिय सुभर । दुहु नरिंद फुट्टिय जुसिर[2] ॥
छ० ॥ १३२९ ॥

जिहि सुप कूर कपूर । सुवर तंबोल प्रकासिय ॥
जिहि सुप मृग मद वद्द । सुद्ध किसना गिर वासिय ॥
जिहि सुप रम्यह रम्य । अधर रसधरनि पराइन ॥
जिहि सुप हरिहर भजन । मुत्ति लभ्भय पाराइन ॥
सो सुप्प परपि परिहार पर । पग ततार समुह मिलिय ॥
सोइ साम काज हिन्दू तुरक । सो सुप पड विहड किय ॥
छ० ॥ १३३० ॥

यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सित सदेह समुच्चरिय । वध कुवेर सुवेर ॥
दिसि दस राय दलत रहि ॥ समर समप्पन वेर ॥
छ० ॥ १३३१ ॥

(१) मो०—दुतर । (२) को०—सुमिर

कवित्त । दिषित राव दिल्लेस । देष मंगल पुर वासिय ॥
समर सिंघ रावर रव । अंगे गृह गासिय ॥
मंच जंघ तंचह छलंग । छित छेल वल जग्यौ ॥
भिरन तेक गोरिय ततार । गज्जवि गल लग्यौ ॥
महि महन सीह उप्पर करन । हरन हार सिर मुक्कयौ ॥
चाचग्ग बीर हथ्थह सुहथ्थ । धरनिधार धर धुक्कयौ ॥
छं० ॥ १३३२ ॥

परत ताहि परतष्षि । बीर अहवं असु लिन्नौ ॥
जोति जगत उच्छरिय । महन सीहं दिट्ठ दिन्नौ ॥
कलि कलाप रंधरिय । राय बंसं छल बुट्टौ ॥
तन तिल तिल व्है मत्त । मरन जीवन पहि छुट्टौ ॥
सामंत राय सिर सिंघलय । कछु सुवार बीरह बहिय ॥
सित कंत तंत तिहि बार तब । विवरि विवरि अप्पह कहिय ॥
छं० ॥ १३३३ ॥

हा ॥ सुविधि ऐक हम कुल कलिय । कै सुनि दक्षन कान ॥
गुरजन गुर बंचत रहै । अमी पयंपि पुरान ॥
छं० ॥ १३३४ ॥

कवित्त ॥ एव देव मन्यास । सुगंध तारुनि ब्रमचारिय ।
इंद्रिय दल दलमलिय । पुरुष पर चरन न नारिय ॥
एक सचल छंचिय संधम्म । धुमंतं सवामि सुभ ॥
गुन गौ ग्रह ग्रह धंनि । बीर बहिय सुवाद उभ ॥
मंडलिय मरद मेवार पहु । मिलि प्रधान पुच्छिय प्रसन ॥
रिषि कहिय सहिय संभ्रित सकल । सुविधि वेद बंदिय[1] सु सुन ॥
छं० ॥ १३३५ ॥

हा ॥ तुम वय उहिम मोर मन । उन रस सरस न दिट्ठ ॥
दस दस रंध बिरंध कथ । सुनहु सुनावन इट्ठ ॥
छं० ॥१३३६॥

(१) मो० वंचिय ।

कवित्त ॥ बीर मच्च बावरिग । राय दिष्पत देवगिरि ॥
समर सिंह रावल रवह । भिरनह बाहू बरि ॥
ते उधान मंडल नरिंद । छच्च छच्च धर ॥
सन्य ससी उद्दय गलग्ग । पूजिग गवरी वर ॥
सिर सिरह दीन सुरपति सुपति । विपति वीर गवरिय दलह ॥
तत्तार पान सुरतान छल । विषम वीर कंदल करह ॥
छं० ॥ १३३७ ॥

अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम ।

तब सुरत हिंदुअ नरिंद । मुह किय मह न सिय ॥
पारिहार परतष्पि । इष्पि मंडलह न हसिय ॥
जुरि जुआन सारंग । अंग ठेलिय दल गोरिय ॥
उह समेछ सम सूर । रहत हिंदुअ वर जोरिय ॥
प्रिथ प्रथम राव पीची पिज्यौ । पिग पिन पिन सारह झरिय ॥
अरू अंत दंत दंतीय तन । सुपति राव पुन्नर परिय ॥
छं० ॥ १३३८ ॥

दूहा ॥ पट असिय निसि पट घरिय । भरिय सुभूमि भयान ॥
पलचर चरवर विधु विनह । सुरत भूमि सुलतान ॥
छं० ॥ १३३९ ॥

एक सूर सामंत पट[1] । सह पग्गिह पट दून ॥
त्रिटि राज प्रथिराज कौ । फिरि पारस दिसि सून ॥
छं० ॥ १३४० ॥

कवित्त ॥ छक्कै सार नरिंद । पग्ग पारस दल सक्किय ॥
बर आतुर पतिसार । सैन चावहिसि मुक्किय ॥
सवै सष्य प्रथिराज । रष्पि साई दल दुक्किय ॥
पग्ग मग्ग बोहिथ्थ । बीर अवसान न चुक्किय ॥
लोपत लोह गोरी सुभर । पति अड्डो पति मेर भौ ॥
तन लग्गि धार धारह धनी । पर्यौ बीर सिर भग भौ ॥
छं० ॥१३४१॥

(१) एक को सत ।

सारंगराय के मारे जाने पर पारंहार वीरों का पराक्रम करना।

परत भोमि सारंग। गुरज बज्जिय सिर गोरिय॥
बज्ज बीर कर वज्ज। बज्ज अग्गे वर जोरिय॥
सस्त्र घात आघात। कट्टि कुट्टर ग्रहि तारं॥
पल्लै पति तब बिंठि। मेछ लगि असिवर मारं॥
परिहार परिग्गह सोमि सम। फेरि राज पारस परिय॥
चहुआन बीर संमुह असुर। गह गह गोरी उच्चरिय॥
छं०॥ १३४२॥

सुनि गह गह सुबिहान। भाव भर मान रष्षि रथ॥
चरन अचल चल हथ्थ। चित निहि निह निहचल कथ॥
सस्त्र तेज जम जुत्त। दंत कट्टै मतवा रुन॥
दोउ अस्तुति उच्चार। पुहय नंषै सुरताउनि॥
पितभार अग्ग जल सामि कै। धार असीधर धार वर॥
बुड्ड्यौ विंव पामार भर। प्रकृति बुग्गै नन अप्प कर॥
छं०॥ १३४३॥

परत षेत पामार पान। बर धार धार चढि॥
बर द्रोपति जिम चीर। सत्त बेली सुरंग बढि॥
बर गौरी बै सेन। प्रंच क्रम मग्ग चलावै॥
परि पावस चहुआन। फिरत छिन मग्ग छुड़ावै॥
साध्रम्म मग्ग जिहि बंधयौ। सो धार धार होय उत्तरिय॥
चंपयौ फेरि गोरी गरुअ। फेरि राज पारस परिय॥
छं०॥ १३४४॥

॥ कटि मंडल सहसेन वर। उभै परिग्गह राज॥
गई आस गौरी गहन। गहन मोह गह आज॥
छं०॥ १३४५॥

॥ उभै बंध परिहार। सन दुह मग्ग समाही॥
दल धय्यौ प्रथिराज। बल न घय्यौ बलधाई॥

बार बेर चहुआन । साहि मुष चढि गज चढ्ढी ॥
वज्ज पट्ट तिन छीन । आय प्रत्तर अग बढ्ढी ॥
फिरि वाम मग्ग उम्भौ न्रपति । है हक्कै चल्लै नही ॥
मधयान कत कौ नीर ज्यौ । कछु अग्या भज्जै जही ॥
छ० ॥ १३४६ ॥

परत मीर मारुत्त । वीर बज्जिय सुरतानह ॥
देव भूमि दस पान । जान जानीहि रसानह ॥
एक राय दस पान । धान घुटिय धर पग्गह ॥
आसमान अच्छरिय । भयौ कोतूहल मग्गह ॥
सुर कहिय ससीहर आपनौ । अप अपलोक सुपन्नौ ॥
बर बीर बीर सित कत सहु । जोनि सुहागिन सुपन्नौ ॥
छ० ॥ १३४७ ॥

सब हिन्दू या मुसलमान वीरों की बहादुरी ।

सारग सारग रूप । मिले दसपान महोमद ॥
यौ गज्जयौ गुर रन्न । जत मुनि हक्क गरुअ सद ॥
पग वँधरि उच्छारि । ढारि हथ्थर पथ्थार ॥
सार ओन झझरिय । नप्प प्राक्रम्म सथ्थार ॥
ताजीय कह जगदीस दिय । सुप सुम्रद्धि सभर धनिय ॥
लवलोक लोक मडल गयौ । धरकि हस एकह मनिय ॥
छ० ॥ १३४८ ॥

पूब पान तत्तार । पूब मारू महन सिय ॥
पूब पान आपूब । जेन सधयौ रन गँसिय ॥
पूब धुम्म सामित्त । पूब सिर तेग प्रहारिय ॥
नाहर राय नरिंद । परिय पप्पर प्राहारिय ॥
अदिहार हिन्दु साहिब सुदिन । बह झोरी वह पेत मुअ ॥
ढालक नेज नीसान ढरि । सेन सयन मडी सुमुअ ॥
छ० ॥ १३४९ ॥

दूहा ॥ गिरिजा गुन पुच्छिय गुपत । सुनिय सुपुष्प निधान ॥

जुद्ध धरिय लग्गिय लरत । चाहुआन सुरतान ॥
छं० ॥ १३५० ॥

दूतिया सोमवार का युद्ध समाप्त ।

कवित्त ॥ दुतिय दिवस संग्रम । धाम धवरिय दिसि उत्तर ॥
देवराज दीलति षान । जुट्टिय रन दुस्तर ॥
दुओं राय सामित्त । मुंह मुंह झरि झरि आवध ॥
सिर सिर सिर तुट्टंत । तंति बज्जिय सुरगावध ॥
कथ कमल केलि कमला पतिय । दुअग दच्छि दुल्लह कथिय ॥
सुनि सुनि अवन्न जट धर जुगह । भुगति भंगि नंदि पारथिय ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

सुबर बीर बन सिंघ । धीर जिहि धर उत्तारिय ॥
मिच्छवान सुरतान । लोह लाहौर उबारिय ॥
ता षौरुष परतष्षि । इष्षि अष्षर कबि चंदह ॥
देवासुर दलन हिय । भिरिय मुअ पर भुज दंडह ॥
आवरत रीठि नन पिट्ट दिय । पहर एक वज्जिय बिषम ॥
जम जुरन हथ्थ लग्गिय न कछु । सूर मंडि मंडल सुषम ॥
छं० ॥ १३५२

रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना ।

नववति निसि नंसीय । बज्जि नीसान सवज्जिय ॥
हिंदवान सुरतान । हिंदु धर बर करि सिज्जिय ॥
गय भग्गिय अग्ग लह । सह्ह संभरि संभरयौ ॥
षिन षिन जन जन जुरन । कीलि गोरिय घर धरयौ ॥
तहिन तुरंग मोहिल मरद । अरुन अरुन मंडल गहिय ॥
चुचकारि चित्त चिचंग पहु । बर विषान रंधह रहिय ॥
छं० ॥ १३५३॥

गहकि सेन हिंदुअ नरिंद । चंप्यौ धरि आवध ॥
तब आए भर दुसह । सीस धारंत साइ उध ॥

सत्त सुभर सामंत । चेव भर रावर सिधह ॥
तिन दिष्यौ प्रथिराज । जुद्ध रस रप्पत रि यह ॥
नृप नाई सीस अम्मर उकसि हक्कि सुलग्गे वीर रस ॥
उट्ठे सुलोह दुअ सामि छर । एक तत्त अस्सिय उकसि ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पड़ना ।

विअष्परी ॥ सोलकी भीमह बर वीर । पारिहार दच्छन रनधीर ॥
कमधज्जह रयसिघ महाभर । माटी अचल अचल आवध झर ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

विजय राज बघ्घेल गुभझग । मोलन से गर रत्त जुद्ध रह ॥
मल्लन सायर अरसी सूरं । आए निज पति अग्ग कूरं ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

तीन सुभट रावर नमि सिधं । आए पहु प्रथिराज उरध ॥
सिलहदार भापर बर अंग । सुअन धाय दुज्जन छल जग ॥
छं० ॥ १३५७ ॥

पग्ग धार देदल पावास । अथि चपि पहु जगल पास ॥
बीर करारे आवध वज्जे । भरहरि मीर अपुट्टे भज्जे ॥
छं० ॥ १३५८ ॥

परिय मीर देषिय पहु सिघ । दिय आयस प्रथिराज अरध ॥
गये सूर दह रावर चड्डे । आए पान साठि तमि अड्डे ॥
छं० ॥ १३५९ ॥

पा पिरोज नव राजन सूवं । आलम सालम फते अपूवं ॥
पीरन रेसन महबति मीर । राजन ताजन हाजन पीर ॥
छं० ॥ १३६० ॥

तोगन कालन हाजी गाजी । सेरन पोन गनी पां न्याजी ॥
हासन पा बिरहमपा पान । गजनी पान दादुपा मान ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

मुस्तफा षां उम्मर षां अत्तन । को अग षान अलाल समत्तन ॥
हीरन मीरन देगन दीसन । लाल नगालिब षान समीसन ॥

छं० ॥ १३६२ ॥

ए रन मीर एलची षानं । तीसुन भूसन सो सन बानं ॥
अलीषान सूरेम सुरेजं । सक्कत षान अलूषां जेजं ॥

छं० ॥ १३६३ ॥

कायम षान मीर जा महदी । जोसन षान अलेवस हद्दी ॥
मत्तौ मार समर सी अग्गें । मनो कज्जि सिंध सो लग्गे ॥

छं० ॥ १३६४ ॥

आवध आवध बज्जि अपारं । सेलहि सेल सों सारे सारं ॥
अस्सी गज्जर कर पटा पहारं । धरब हार चढ्ढिय षग धारं ॥

छं० ॥ १३६५ ॥

रुंडूगे कंठ कंठ एकेकं । करे घाव छलि का छल केकं ॥
अंत अंत रुंभक्कै सम सूरं । मानों कच्चर जुद्ध करूरं ॥

छं० ॥ १३६६ ॥

केस उक्कस्से तुट्टे आवध । धर ऊपर भर करें महाजुध ॥
औन प्रवाह षलक्कै षालं । फुरके फेफार तुट्टै बालं ॥

छं० ॥ १३६७ ॥

धरिय पंच जुद्धह परचारं । हिंदु मेछ घन परे पथारं ॥
साठि षान दस राय रवहं । परि धरनी क्रित करे रवहं ॥

छं० ॥ १३६८ ॥

आर्या ॥ यह रावर बर बीरं । सट्टिय षान ढान भर धीरं ॥
गहुगहे गये सुरेहं । रोहत रवि बिंब राय पुग्गानं ॥

छं० ॥ १३६९ ॥

दूहा ॥ भगी सेन सुरतान रन । गए पास बन षान ॥
देषि अप्प दोरयौ बिहसि । सज्जि सीस असमान ॥

छं० ॥ १३७० ॥

शाही सेना में से शाह के भाँजे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन।

भुजगी ॥ तब तज्जयो पान पानौ करूर । सुरतान भानेज जुद्ध जरूर ॥
सहस्सच पच बर बधि फोज । बचै वाच दीन सुदीन सरोज ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

हहक्कारि गज्जे सुमीर गुहीर । करी सब्ब मान सुरक्की कठीर ॥
सनमुष्य रा स्वामि चिचग कोट । सहस्स चिवीर बर बधि ओट ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मिले धाय दूम उभै हिदु मीर । वकै उच बाक जुटै जुद्ध धीर ॥
दुव डारि ओडन गज्जे गहीर । घन घाय अध्धाय तुट्टे सरीर ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

फक्कत फेफ सुअत अलुग्भे । चले ओन धार पलक्कीच झुज्झे ॥
परै अग अग सुभट्ट सुरेस । कटै गात गौर ब्रध बाल बेस ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

हहक्कत हक्कत धार करूर । उभै हथ्थ बथ्थ मिले सूर सूर ॥
नचै वीर आवद्ध तारी चिधाय । उकास्सत कास्से छुलिका छुराय ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

मिले दिट्ठ पान पुमान सजूर । चलै सम्भरी मग हक्के करूर ॥
चढे जन दून भर बीर रुप । मिले बोल बोल सुभै सब्ब जूप ॥
छं० ॥ १३७६ ॥

हयौ पान पुम्मान सगी सजूर । चले पग सीस हय पग्ग सूर ॥
समजौन फुट्टी हय जौन जाम । धन धन्य जपत आयास ताम ॥
छं० ॥ १३७७ ॥

फिरे आय पुट्टे सुपान जमान । हय पग्ग लग्ग कटि तुट्टि थान ॥
करै धार हमेल लीनौ समुष्य । हयौ ताम कट्टार नासुष्य[1] कष्य ॥
छं० ॥ १३७८ ॥

चली जोति पान पुमान अयास । सम तेज तेज सम सूर नासं ॥

(१) ए० कृ० को०—सुष्य ।

परे सहस त्रय मीर हिंदू सहस्रं । कटे मंडलं द्रन भर रूक र
छं० ॥ १३७९ ।

खानखाना के सिवाय अन्य १४ मीरों को मार कर रामर सिंह जी का स्वर्गवासी होना ।

दूहा ॥ भचि आवृत्त सुजुद्ध बर । तुटि षुट्टे सब सस्त्र ॥
अनो अन्न समभंस सुनि । किरच किरच बहु अस्त्र ॥
छं० ॥ १३८० ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ सिर सीस । छंद छलनी कित आसह ॥
इह अमुष्य नन भाष्य । हयं कूदति आरासह ॥
नन आई आचरन । आन अच्छरी उछंगह ॥
धर धरन्त तुटि तन्न । तान जोगिय भग्गा मह ॥
असवार सनाहति अस्सु बर । धार पार होइ उत्तरिय ॥
चिचंग राइ रावर समर । बिहुन अस्त्र समगि न परिय ॥
छं० ॥ १३८१ ॥

जब दल षान ततार । मार मग्गे परिहारं ॥
समर सिंघ अवलोकि । हयौ ओडन करिवारं ॥
चपल हथ्थ बरमथ्थ । सीस तुट्यौ रडवंडह ॥
रुडं मुंड हुअ षंड । सुंड कट्टे दती बंडह ॥
परि टोप अग्ग बगतर जिरह । षां अपुट्ठ भेरें[1] भरां ॥
ढहि गजराज साज गलपट भयौ । समर सिंघ पावक करां ॥
छं० ॥ १३८२ ॥

बर दिट्ठ मुट्ठि षंधार । षान नवरोज सिसानिय ॥
भिरिय छंड़ि दोजिग परंत । तुच्छ अग्गैं हिंदवानिय ॥
वे भग्गिन मारूफ । गुलब गाजी सुनि संमन ॥
क्या काफर फरजंद[2] । फते पीरोज षां कंमन ॥
दूहा ॥ भगौ सूरेज गुंजार षां । पढ़ि कलमा मुष करिकहौं ॥
देषि अप्पान चहुआन सम[3] । सब हिंदू एकत ग्रहौं ॥
छं० ॥ १३८३

(२) ए कृ. को.-फरइंदं । (३) ए. कृ० को०-कं

दूहा ॥ समर सिंघ केते कते । जह तह कट्टे भार ॥
गनै कोन हयगय झरे । परे पान दस च्यारा ॥ छं० ॥ १३८४ ॥

कवित्त ॥ *परे पान नवरोज । टूक टूकह तन तच्छिय ॥
जो भग्गिन मोरूफ । सार सुम्भिय मुष अच्छिय ॥
परे पान गुलाव । समन रेचम मम रेजह ॥
गुजार पान बाजी । समर सिंघ से हथ्थ ढहि ॥
पीरोज पान मीया मरद । वे ओडन घल्ले सु वथ ॥
चित्र ग राव चावहिसा । चवै ईस अच्छरि सु कथ ॥
छं० ॥१३८५ ॥

दूहा ॥ सिरदारह दस च्यार गिरि । समर सिंघ धन घाइ ॥
सू विहान उत्तरि परे । चढ्ढे पील मगाय ॥ छं० ॥ १३८६ ॥

कवित्त ॥ दिप्पि पान पुरसान । गुर वर जमथ्थ उपदिय ॥
समर सिंघ मुष चहर । हिंदु मेछन मिलि जुट्ठिय ॥
गिद्धिन पल सग्रहन । जुथ्थ लवे रन आइय ॥
ओन परत निज्झरत । पच जुग्गिनि लै धाइय ॥
पल चरिय मेछ हिंदू सहर । अच्छरि मल्ल अति जग्ग किय ॥
महदेव सीस बंधे गरा । काल झरपि लीनौ[1] नुजिय ॥
छं० ॥ १३८७ ॥

प्रिथा कत परदीप । लज्ज सकर गर बधिय ॥
जिय बासुर दोइ च्यार । बहुरि कलिजुग्ग सुपढ्ढिय ॥
सोई लज्जा के काज । रज्ज मुक्यौ रघुराइय ॥
रावन लंक विनास । लज्ज बध्यौ सरिताइय ॥
लज्जा सु काज नग देव नृप । सीस कट्ठि हथ्थ धरे ॥
इह कवित एक लघ सरिस । सरनहार लज्जा झिरे ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

मोतीदाम ॥ परयौ धर रावर सावर धाइ । पय पग पेग तन मिछताइ ॥

* इस छंद के चतुर्थ चरण से मालूम होता है कि बीच में कोई एक आध कवित्त छूट गया है केवल उसके पचम या षष्ट चरन की यह एक पक्ति शेष रह गई है ।

(१) मो० लीयौ ।

घटत्तठ घाइ निघाय अघाइ । कटे कट युत्तर उत्तर नाइ ॥
छं० ॥ १३८९ ॥

उथ्यौ दल षां षुरसान अपार । मनो दधि गंग मिलान प्रचार ॥
अगें गजबाज चिकार हंपार । भंडी धर बाधुर घोर निकार ॥
छं० ॥ १३९० ॥

फरक्कत नेजनि नेत उतंग । मनौ रति राज विराजत दंग ॥
झरै गज रत्त द्रवै गिरि धत्त । परै गन मोतिय आरति तत्त ॥
छं० ॥ १३९१ ॥

चमू चतुरंग चवै चवसट्ठि । बजावत ताल वितालं अतट्ठि ॥
परे महि मीर महाभर भार । वजै पग कुंतनि तारनि तार ॥
छं० ॥ १३९२ ॥

लरथ्थर लुथ्थि अलुथ्थि पलुथ्थि । फरफ्फर गिद्ध तरफ्फर तथ्थि ॥
उड़ै घन छिंछ लगैं असमान । उठै जनु होरि फुलिंग प्रमान ॥
छं० ॥ १३९३ ॥

लगे वर सावध आवध वथ्थ । नचै धर मीर बिना धर मथ्थ ॥
जयज्जय सद्द सुवद्दहि एत । पर्यौ कटि रावर राइ सु पेत ॥
छं० ॥ १३९४ ॥

मिल्यौ प्रथिराज विराजत[1] रेन । पर्यौ गज सिंघ अवीहन सेन ॥
कर्यौ पयपान धरी गज भाल । कढ़ै रथ कालिय नथ्थ गुपाल ॥
छं० ॥ १३९५ ॥

ढरै धर गज्ज वहै रत धार । निसातम भै चँप छुट्टि अपार ॥
हुए सम षानहि एहक सेर । उरथ्थर जरध अद्ध विरेर ॥
छं० ॥ १३९६ ॥

मनों द्रुम राज लगे दोउ वीर । निकस्सिय एमय पारनि सीर ॥
भरे अगतून तनं तन राज । लगे अहि धाय मनों तर राज ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

लगी मुष संगिवि षान षँधार । बजावति मागध भेरि भँकार ॥
परे कर कुंत गहै कर षग्ग । महिथ्थह सेन वियं गज मग्ग ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

(१) ए० कृ० को०-विराज विरेन ।

परी गज कुभनि कुभनि तार । घयघ्घन बीज छुटी अतिभार ॥
इते परि सीस पुतार समेत । उते परि नोग सिदूक समेत ॥
छ० ॥ १३९९ ॥

भए चव कोदनि मीरनि मीर । लगे रवि ते घट बीरनि बीर ॥
लग्यौ न्रप रस्स झरज्झर पग्ग । जगो जनु बीज घन घन वग्ग ॥
छ० ॥ १४०० ॥

चलै रत वान चलै घन बुद । गन रज निद्धि अनु मिटि दुद ॥
गिरे दह दाह मसद सु घाय । गिनै कुन नाम तिने अतताइ ॥
छ० ॥ १४०१ ॥

पटा झट कुतनि वाननि मान । परे गज कुभति कुच्छ प्रमान ॥
परे कटि पट्टनि पडनि पड । फरस्स फिरत्त तरप्पर तुड ॥
छ० ॥ १४०२ ॥

विथारिय दुरिति ओन अपार । मनो नपि धीमर जार मझार ॥
गहै इत उत्त सु गिद्धनि गिद्ध । मरालिय अंचि सिवाल अतिद्ध ॥
छ० ॥ १४०३ ॥

विचे सिर रूह तिरै सिर सार । तिरै मनु वारि वतकनि लार ॥
करै चवसट्ठिनि मगल चार । नचै नव नारद जुद्ध विहार ॥
छ० ॥ १४०४ ॥

कटे जुग तोन दह नवसूर । रहै चवकट्ठि सबे वर मूर ॥
छ० ॥ १४०५ ॥

दूहा ॥ के सांई भर उप्परह । के भर उप्पर साइ ॥
कटि मडल हिंदू तुरक । हय गय धाय अघाइ ॥ १४०६ ॥

बाईस अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए ।

रावर सिघ रहत रहि । साठि पान दसराइ ॥
परत महन परिहार रन । मेछति सहस सवाइ ॥ छ० ॥ १४०७ ॥

भुजगी ॥ परे साठि पान दस देह राय । ढहे ढाल नेजानि नीसानठाय ॥
छुटै मत मैमत दीसै दिसान । चढी पति पपैयरे पीलवान ॥
छ० ॥ १४०८ ॥

उलोलंम आलंम छत्री छितानं । जुटे जोट जुट्टे भए भै भय
रुप्यो रंघरी राव बाराह षेतं । रच्यौ रोह आपूव षानं सु जै
छं० ॥ १४०९ ॥

भरै बान सन्नाह सुगै सु देही । वियौ चष्ष लष्षै अषे जानि
गहै षग्ग धावै सु बाहै पचारै । लगै धाइ पुंडीर सांई सभा
छं० ॥ १४१० ॥

नियं अंम रष्षै सदाव्रत गैही । हडुहु षेलंत बालक जेही ।
परी का भषै का जरै का हुतासं । अस्तूतीन तेकै घरं की अ
छं० ॥ १४११ ॥

कियं जुद्धि हड्डं रनं रत्त रत्ती । लही मुत्ति छत्रीन सुछिग्ग ग
फटे सेन दूनूं भरंगो उभारं । दिषें थान थानं जिसे प्रात त
छं० ॥ १४१२ ॥

म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेर जाने का वर्णन ।

दूहा ॥ वाम अनी कंदल भयौ । सो जान्यौ[1] दछिराज ॥
सित संदेह समुच्चरयौ । अबरन रुंध्यौ राज ॥
छं० ॥ १४१३ ॥

भुजंगी ॥ चंपी सेन दूनं चहूआन गोरी । वजे घाइ आवत्त असुरत्त
उवं धाइ छिंछं सु सौहै प्रकारं । भनो बीर रायं वसंतं सव
छं० ॥ १४१४ ॥

तुटे मंस अंसं चलं खूर खूरं । तिनं देषियं भंति कंती कल
वजे घाइ गांई मिटे जो निसानं । उडै गिद्ध सिद्धी सु पावै न ज
छं० ॥ १४१५ ॥

उडै बीर बत्ती सु भारथ्थ जित्ती । मिसे मत्त मंतं लगे लोह त
.... छं० ॥ १४१६ ॥

रसावला ॥ इत्त अैसें भरी, सेन भग्गा परी ।
सोहि जा ढल्लरी, चोहुं पष्षा फिरी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
राइ जा संभरी, लेहु, लेहड्डरी ।
ढिल्लि रा जंभिरी, उट्ठियं अग्गारी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥

(१) ए० कृ० को० अष्षौं ।

नैन रत्त भरी, पोलिय पजरी ।
एक एक तरी, जानि विज्जु झरी ॥ छ० ॥ १४१९ ॥
अद्ध अद्ध धरी, भूमि लुट्टै परी ।
वारि तुच्छ घरी नेज चोरी सुरी ॥ छ० ॥ १४२० ॥
ओन रग तरी, देव देव हरी ।
बरन अछी वरी, सुगति पोखी दरी । छ० ॥ १४२१ ॥
दोन दोउ टरी, सामत चै परी । छ० ॥ १४२२ ॥

पृथ्वीराज को अपने को घिरा हुआ जान कर गुरुराम को कुंडल दान करना ।

कवित्त ॥ या रष्यै गुर राज । राज विग्रह मुष चायौ ॥
पच इत कुडलिय । लहै द्रव्य कोरि सवायौ ॥
जा जोगिनिपुर देव । राज रायहु चहुआनिय ॥
मों काया बल भग्ग । सग हुं हु सुरतानीय ॥
दुग हस्त मडि छद्यौ तुर्यौ । [1]मोहर जुद्ध विरुद्ध दिन ॥
छिन भग देह विज्जुल छटा । दुष्य न करहि महत जन ॥
छ० ॥ १४२३ ॥

गुरुराम का कुंडल लेकर चलना और मुसलमान सेना का उसे घेर लेना ।

पानि मडि लिय दान । सुस्ति भनि वेद सष दिय ॥
मच जाप जालपा । राज अगह अभंग किय ॥
सार धार न्निधघात । भेद छेदन राज[2] वप ॥
सिलहदार सारग । सथ्य किय इन्द्र देव जप ॥
वज्रंग पाट गाजीय सकति । धरि घट गोरीय सुधर ॥
सुनि धक्क धक्क हैगय सुरिय । सहस पच उत्तरिय भर ॥
छ० ॥ १४२४ ॥

रहस पच उत्तरिय । थान पुरसान सपतौ ॥
पहुपच्छै पतिसाह । आय सुरतान मिलतौ ॥

(१) ए० कृ० को० मोह रुद्ध विपुद्ध दिन । (२) मो० राय ।

तीन वान पञ्चून। मारि अंकुस गज फेरिय ॥
चक्रवान चतुरंग। पंपि धावहिसि घेरिय ॥
परि सिलहहार सारंग दे। गरुअ पान गोरी गसिय ॥
उर उरमि उरझि अच्छरि अछिनि। उर बंसी हिरदै वसिय ॥
छं० ॥ १४२५ ॥

कुंडलिया ॥ दिव कुंडल अलबस्ति थपि। फिरि दष्षिन गुर राज ॥
मरन जानि इच्छी मरन। स्वामि सु भुल्ल्यौ काज ॥
स्वामि सु भुल्ल्यौ काज। सु दल धायौ दल प्रोनह ॥
वहै न सरक्ष समथ्थ। उभै वड गुज्जर द्रोनह ॥
उर पंथ्यौ कट्टार। रोह हथ्थह रन मंडसि ॥
विप्र जाति व्यप ऐत। अपिथ मवस्सिय दिय कुंडसि ॥
छं० ॥ १४२६ ॥

बहवल खाँ का गुरुराम का सिर उड़ा देना, गुरुराम का पड़ते पड़ते शाह के भाँजे को मार गिराना।

कवित्त ॥ गुर द्विग कुंडलि देषि। पेषि बहवल्ल पान धपि ॥
द्रोपद सुत जिमि तेग। वेग कारी कनंग[1] कपि ॥
राम सीस लिय ईस। कमल बिन पंजर कट्टयौ ॥
हथ्थ छेदि उर पान। पीठि पच्छै दल वट्टयौ ॥
वामंग हथ्थ अचरिज सुनहु। अरि कटि तें असिवर लियौ ॥
भानेज साहि साहापही। दय समेत चव षंड कियौ ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

दा ॥ द्वै बंधव भानेज द्वै। द्वै दुष कीनौ साहि ॥
दुज कौ दुज प्रथिराज भय। गुरु बिन बंदी काहि ॥
छं० ॥ १४२८ ॥

गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चात्ताप करना।

वित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। बाज तजिहौं पनि कुरुकौं ॥

(१) ए० कृ० को०—कनंक।

मुओ राम गुरु राज। मंत कासौं मिलि सुभ्भ्यौ॥
आज मुओ सोमेस। आज कै मासह भ्भ्यौ॥
आज कन्ह गोयंद। हूर सोमंत न सुभ्भ्यौ॥
इह जान दयौ कुंडल करन। हम घाय्यौ गुर जाय घर॥
कूरंभ कहै चहुआन सुनि। दुब्ब न धरहि महंत नर॥
छं० ॥ १४२९ ॥

दूहा॥ हम अब दुब्ब न सुब्ब मन। मह दिसिय धन धाय॥
मोरे मेछ मसंद जुरि। इह लग्गौ मन आय।
छं० ॥ १४३० ॥

पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना।

भुजंगी॥ मिले आय चहुआन सुविधान गोरी। महा सूर मंडं रची जानि जोरी।
तिनकौ उपमा कविपद घट्टे। उभै छूट पीछे सटं इष्ट भट्टे॥
छं० ॥ १४३१ ॥

तिनं मभ्भ्भ पग्ग सुवक्की चमक्के। सिय मेस चंद पक्ष बान हक्के।
धवै गिरि सिखी दुब्ब पेम पग्गा। धन रत्त धार धरपन्न लग्गा॥
छं० ॥ १४३२ ॥

निसानं घाय अवाज फुरक्कै। सुटै सत्त तिप्प पजै धार वक्कै॥
चली लासची जोगिनी पंच छक्कै। घुटै पंच रुंडी सुरत्तीव कट्टै॥
छं० ॥ १४३३ ॥

तुटै सीस भारी द्रयौ द्रोन न पै। मनौं बीर नट्ट सय भग रचै॥
पिज्यौ पान तत्तार चपै सयन्न। दिषे साहि गोरी भ्रुकै बीर तन्न॥
छं० ॥ १४३४ ॥

कवित्त॥ सकल सूर सामंत। परौ पावस चहुआन॥
षेत हथ्थ चढ्यौ। तारि कढ्यौ सुरतान॥
या तत्तार मारूफ। इक्कि चतुरंग चलाइय॥
विषम लोह वज्यौठयौ। बीर बर मचि चढाइय॥
तुटि वध कमध नभ्भिवर। धार धार धर उतर्यौ॥

पत्तेसु समर सौभाग हर[1] । असु ध्रुव मंडल चित्तर्यो ॥
छं० ॥ १४३५ ॥

गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना ।

यह धारिष गुर राज । मंच सन्नाह कवच दिय ॥
नष रष्षा नर सिंघ । चरन चच्चु भुज रक्ष किय ॥
पग पिंडी जग पिंड । वसे वैकुंठ जंघ वर ॥
रोम रवनि कटि रच्छि । गूढ़ गोविंद गदाधर ॥
थल उरद्ध पाषर परजयौ । भुज वामन कंठह हरी ॥
मुष रसन कान द्विग केस वर । काल बंध इत्ती करी ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

हा ॥ मच्च अगंम सुगंम करि । षग अभग्ग बहु भान ॥
दिसि दच्छिन प्रथिराज पर । उसरि सेन सुविहान ॥
छं० ॥ १४३७ ॥

वित्त ॥ प्रथु आवध फुट्टिह न । गुरज बज्जिय गुज्जर पर ॥
जनु पषान पर बुंद । रुंद लग्गिय दुज्जर धर ॥
टुटि टट्टर सिर ओन । छिंछ उट्टे भुमि बुट्टिय ॥
सुर गिरह मन मंत । सहस आवध लै उट्ठिय ॥
असुलेत आय[2] इक्कत घरिय । लरियति जीय डरियति परिय ॥
धन सेन साहि गोरी गरुअ । तिरन तुंग तिनवर करिय ॥
छं० ॥ १४३८ ॥

रामराय बड़ गुज्जर और वीर पंचाइन का पराक्रम ।

बड़ गुज्जर रा राम । ढान ढुढ्ढि सुरतानह ॥
हैं गै नर बिच्छियन । जानि अगराज अगानह ॥
सबै सेनपति साहि । कंध कट्टिन झक्क झुक्कै
कुटिल दिष्ट जहं फिरै । सकल मिलि मित्तह रुक्कै ॥

(१) ए० असुक्रव मंडल वित्तस्यौ ।
(२) ए० कृ० को० आउ ।

उम्मरिय उहकि जोगिन हँसै । जिम जिम धज वबरि खसै ॥
दनु देव दच्छ गम्भव्व नन । सकति रूर कित्तिहि कसै ॥
छ० ॥ १४३९ ॥

दूहा ॥ मत मत के दत पर । हनी सग वर राम ॥
कहुँ कर उकढै नहीं । वत्त कहत भए ताम ॥
छ० ॥ १४४० ॥

कवित्त ॥ लष्य लष्य कहु गहिय । कठिन कृकस कृस वानिय ॥
सुरिन मीर भारत । साज ससारह जानिय ॥
सुर नर गन गम्भव्व । तिनहि लगि सत्त न छड्यौ ॥
अगद जिम अकुरयौ । भीम जिय भारथ मड्यौ ॥
डहे वहरनि हिदू तुरक । घरह लाज सो विस्तरन ॥
करि उर हनत तुट्टिय कटकि । सुरी सगि कारन कवन ॥
छ० ॥ १४४१ ॥

सुहिन दोस यह देह । सु मेरौ वचन इक्क सुनि ॥
स्वामि काज सदेह । करत विसठार सबनि सन ॥
एक धरनि लरपरहि । एक गहि धरनि पछारै ॥
तीये तरण तुपार । तिनहि तिनुका करि डारै ॥
न्निमलिय सगि कुअर डरह । तुम सु तेज अग्गर बहिय ॥
मन सुरिय राम रजवि[1]मनह । रुहिर पीयत लुम्भि सुरहिय ॥
छ० ॥ १४४२ ॥

घोटक ॥ नचि नचि नरे[2] जुयय जुयय । ततये ततये तह थान थय ॥
असिज असिज असि झझलय[3] । लुथि लुथिय उलथिय प्रलै पथय ॥
छ० ॥ १४४३ ॥

गज बाज फिरक्कि फिरै हथय । गन गम्भव जय्य कथै कथय ॥
जुध भारथ पारथ जेम थय । दिवि दिट्ठिय सोन सुनी अथय ॥
छ० ॥ १४४४ ॥

(१) ए० छ० को—रजाहि ।
(२) ए० छ० को०—जुरे ।
(३) मो०—झलालिय ।

उड मंडल लो उड़ता कथयं । ठग ठग्गिय नेन निसेन थयं ॥
छं० ॥ १४४५ ॥

मुकुदंड।भर॥सक साल सुसाल सु चाल सुचाल हहंकि जभाल हलं मिलयं।
अगिवान रुवान विवान रुभान क्रिवान रुपानि क्रिसान जलं ॥
घर जा पढि अंच सु सजच समस्त रनोरन रत्तिन छत्र हलं ॥
किल किंचित बीर सुमीरहि मीर गए रन भीर असोज थलं ॥
छं० ॥ १४४६ ॥

किन नंकि तुरंग कुरंग कि भाए विआह सुवित्तिम भार भरं ॥
घटि कायर सिंघ गए दिव विच्छ परें इत छिंदुअ मेछ धरं॥
.... छं० ॥ १४४७ ॥

कवित्त ॥ मुष निहारि छत्र धार। पर्यौ पंचो पंचानन ॥
गोरिय दल बल अच्यौ। चुंगल चंच्यौ मेछानन ॥
एक सार उर धरिय। एक धारह उर धारिय ॥
एक मार सम्मार। एक कारह उर कारिय ॥
बर बरनि बिहसि दच्छि जु कथै। रहसि रहसि पुच्छै जुरह ॥
धरि एक तरंगिनि लछि पल। कमल आनि नच्चै जु सर ॥
छं० ॥ १४४८ ॥

राज राव परसंग। देव बग्गरी बड़ गुज्जर ॥
षग्ग मग्ग अकलंक। सिंघ सांई भुज पंजर ॥
राज गुरु दुज राम। कलिय बंभन भय भंजन ॥
सिलहदार सारंग। सार सिंधुर भर गंजन ॥
छिति छत्र धार पंचाइनी। लछस अछ अछेस सर ॥
सिव सुनि सुदच्छ अस्तुति करै। साषि भरै गिद्धिन समर ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

एक गिद्धनी का संयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना।

पंन धारि दिय पच्छ। कंन लग्गवि कर सायौ ॥
पंग पुच्छि किय पन्नि। बंचि संदेस सुनायौ ॥
अमिय गयौ कल चंद। कमल मंडिय सुमान सर ॥

गति गयद गत इद्द। रूप रति रंभ सुरगंधर ॥
मति[1] मान विनय लज्जी सहज। मोर पंछ जैसो समन ॥
हाइत तार इक्कयौ हियौ। उड्डै न हंस तुअ हंस बिन ॥
छं० ॥ १४५० ॥

संयोगिता का संकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का संक्षेप में वर्णन करना।

सोचे सर न्रप फुट्टि। हंस पंजर दुष विद्धे ॥
दस लप्पा बरनेह। वीर मंजुर आलुद्धे ॥
प्रीति आउ उर हंस। हंस बिन हंस न उड्डै ॥
छिन पंजर परि भई। वाम कहि माया चड्डै ॥
झंकैव हत चल्लै नहीं। चित्त पंथ उत्तर गही ॥
हंसनी हंस औ हंस को। हंस हंस करती रही ॥
छं० ॥ १४५१ ॥

रे पन्नधार परिहार। हंसनी हंस हंस किय ॥
हंस परा भव गत्त। उडे पग्ग नहि मुक्किय ॥
सोइ हंस हंस सो नेह। हंस बिन नेह न जोई ॥
मोह हंस सौं बंध। हंस बिन मोह न होई ॥
आबुद्ध हंस हंसह सरस। सुन्यौ मोह छज्यौ हियौ ॥
उड्डै न हंस न्रप हंस बर। जोस मुद्ध मुद्दह कियौ ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

पन्नधार परिहार। गुप्त गामार वार तिहि ॥
सु ग्रह नारि उर धारि। कहै स देस वार इहि ॥
निवर पेम सकरिय। सबर सकर गल लज्जिय ॥
छल बल काल छुट्टै न। जोनि जिम वाल सा लज्जिय ॥
तुअ काम नाम केहरि कमल। सार धार चट्टै विमल ॥
पल चारिय जाइ जोगिनि पुरह। कहै कथ्थ गिद्धिनि सकल ॥
छं० ॥ १४५३ ॥

(१) मौ०—मन।

कुंडलिया ॥ जनम आनि अंतर गिलन । जोगिनि पुरह अवास ॥
चरन लग्गि वंछ्यौ मरन । सह परि गहक पवास ॥
सह परि गहक पवास । जन महिय आनि अंगोरह ॥
काम धाम धग्गारि । पार छंडिय परिहारह ॥
छच धार सुरतान । मारि सिरपां सनमुष्यह ॥
करहि देव बंदना । पग्ग पावास जनम कह ॥

छं० ॥ १४५४ ॥

दूहा ॥ इह कहंत कूरन बयन । उदै अनंदी वीर ॥
चाहुआन उप्पर परिग । दोउ दीन अरु मीर ॥

छं० ॥ १४५५ ॥

गिद्धिनी का संयोगिता के महल में राजा का चमर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा संयोगिता का गिद्धिनी से हाल पूछना ।

कवित्त ॥ चमर जंग नीसान । षान वर बाग विछुट्टिय ॥
भुअ[1] विहार अैराक । गोर जंबूरन छुट्टिय ॥
चीर ढार चा चिग्ग । चोंर ढारत कर भग्गिय ॥
धर अंधर संचरिय । चंद करि सावसि उग्गिय ॥
गहि चुंग घरी इक सुअमरिय । जोगिनी पुर जोगिनि विमल ॥
हिंडोल हेम संजोगि ग्रह । चमर डारि गिद्धनि समल ॥

छं० ॥ १४५६ ॥

कुंडलिया ॥ हाहंतन कीनौ सषिन । दिषि गिद्धिनि हिंडोल ॥
चमर इष्षि चिंतनु कियौ । नग मोती अंमोल ॥
नग मोती अंमोल । सोहि तरुनी उर चंप्यौ ॥
इह सांई संदेस । समल गिद्धिन मुष जंप्यौ ॥
उदिक अघ आरम्भ । कह्यौ भारथ कथ कंतह ॥
चमर चंपि उर तरनि । सास कट्टन हा हंतह ॥

छं० ॥ १४५७ ॥

(१) ए० कृ० को० भुँइ ।

गिद्धनी का आरंभ से युद्ध का वर्णन करना ।

चोटक ॥ पति वृत्त सुनत सँजोगि सती । समसी घर गिद्धनि उग्र मती ॥
उह कालिह कुछ दिन कद लभो । घटि एक घट महि रब्बिन ज्यौ ॥
छ० ॥ १४५८ ॥

प्रथम प्रथ कत कथत कथं । फुनि राज बधू तप राज सघ ॥
दिसि वाम उठी घुरसान अनी । तिनकै मुष रावर सिंघ रनी ॥
छ० ॥ १४५९ ॥

कर सिंगि गुलाग मुषी विगसी । पछिमे दिस दस्तम या नगसी ॥
न सही प्रभु जबुक की जरयै । धक ही धक धौग पर्‌यौ धरयै ॥
छ० ॥ १४६० ॥

गिरयौ पग[1] धान घुरेस गिरयौ । दस पेड हिषान तमार ठिरयौ ॥
विझि षेत रह्यौ पग पानि जिहा । ते आम गुवाल अजान तहा ॥
छ० ॥ १४६१ ॥

पग सेल हुलै हमला घन षे । गिरवामह मेल भुजा बल के ॥
उर पार फुटे घुलसे निकसे । अनो पलष षेतिकि के विगसे ॥
छ० ॥ १४६२ ॥

जिन रावर राइ पुँडीर वर्‌यौ । तिन धार नगहत्र कोन रह्यौ ॥
मनु पच हजार तिन थ्थि मिले । दस तीन समध उठत षिलै ॥
छ० ॥ १४६३ ॥

सिर हक्कि सियाल सुगिद्धन सौ । इति अथ्थ अथो समसी सरसौ ॥
फुनि गिद्धनी ग्यान कहै रहसी । घिन घिट्ठ षेत्र भए विघसी ॥
छ० ॥ १४६४ ॥

दूहा ॥ ते सब मिलि वर जपि कथ । रावर राज नरिंद ॥
सौ वित्त भारथ्थ मे । सो कहि दुष्ष अनंद ॥
छ० ॥ १४६५ ॥

हे चिरही भारथ्थ कथ । जपि गुगिधनि सुद्ध ॥
सुनिय श्रवन भारथ्थ कथ । उठै हस वर सुद्ध ॥
छ० ॥ १४६६ ॥

(१) मो०—मग ।

कवित्त ॥ पिथ्थी धंत सुनि बत्त । जुद्ध सामंत समर कौ ॥
बर मनुष्य आनेन । आन दानव अंमर कौ ॥
सिर तुट्टै घरि एक । द्रोन नचि असि वर गारिय ॥
सबै सेन सुलतान । थान अस्तुति उच्चारिय ॥
सिर तुट्टि कमंधन मथ्थि दस । सो ओपम बरदाय बर ॥
वर जपत जिमी गज्जे बरह । बरजोरी जुग्गमार बर ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

दूहो ॥ दय बंध इह बरन थिय । सीस ईस को दीय ॥
तन धारा धर उत्तरिय । पल्लचर भूषन कीय ॥ छं० ॥ १४६८ ॥
कहि गिद्धन समसी सुसछि । ज्यों वित्थी भारथ्थ ॥
समर बीर सथ्थह परी । सुकहिन सुमर भर कथ्थ ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सुभर षावास । सेन सुरतान ढंढोरिय ॥
षरि सुगौर नाहर नरिंह । रेह रष्षिय अजमेरिय ॥
पर्यौ बंध मुरकिल्लह । बंध हक्किग अबंध बनि ॥
परि भुआल गुज्जर सुमेर । सार सुरतान भज्जि मन ॥
रावर नरिंद सत अष्ट परि[1] । परि भग्गा भग्गा न कज्ज ॥
तातारषान षुरसानपति । भुष चढ्ढे आहुट्ठ रज ॥
छं० ॥ १४७० ॥

साटक ॥ आचिज्जौ आचिज्ज राजस रनं भूपाल भूपालयं ॥
भारा क्रांत निवर्तयंत धरनी निघातयं घातयं ॥
धारा धाक सु धुक्क धक्क धरनी छूरं सुरत्तानयं ॥
गोरी सेन चिवार तुंग तरनी तारायं तारायनं ॥
छं० ॥ १४७१ ॥

दंती दंत उमत्त मत्त उमही कूहाई कूहाइनं ॥
ढालं ढाल उढाल भाल उललं भभाइउनं ॥
हायं हाय सु हंस हंस तुअगी जूते जटो जूटनं ॥
लूटा लूटि सुषग्ग षग्ग षचरं षड्डामि षायाननं[2] ॥
छं० ॥ १४७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सत । (२) ए० कृ०—सायइनं, को०-षायइम ।

अंतो अंत सु अंत रोइ उडन पुगाय चु चूपुट ॥
रमी रंभ सुरंभयाइ वरणी वभोइ रंभाइन [1] ॥
चामंडाय प्रचंड जैत छितयं मेछ समुद्र मही ॥
नेज नेज सुनेत नेत छिरय लम्भाय मुत्ती सही ॥ छं० ॥१४७३॥
नव सूरा षंड गुज्जराइ सिरय ओन छिता ओनय ॥
सारूर [2] घर ढकि गोरिय धरं धर नाभित गिद्धरं ॥
तार्क ललत वकत कुंड लि जिम वाना छिता वानय ॥
सा वान सुनि मिच्छ इच्छ डवन आरंभितं अमर ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

तब भीमच्छ पुंडीर पावसरस सिंधा छिनंरावरं ॥
घा याना पुम्मान औति उभय इछानि इछ उर ॥
वाहंते कूरंभ वग्ग वलय आमानि अहों दस ॥
है है कति कहति हुति उरवी नक्क ति नाय पुर ॥छं०॥१४७५॥
सा सुनय चहुआन सीस धुनयं भूमी विधराइनं ॥
चोर ढार सुचोर पानि उडय सकतस्य उप्पोरय ॥
सा सक तिग रजत साह पुलय होसत देवं पुर ॥
अगी अंग विछुट्टि छुट्टि भरय चढ़ाय आयासनं ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

चामर चुंगल चंपि अभ्रमिय एक्क घटी जुद्धय ॥
सा जुद्ध प्रथिराज राजन इक्क अेछानि से सत्तय ॥
सै मुष्य पुरसान पान भरिय हिंदवान हिंदू हद्द ॥
बाहं साहि सहाव गोरिय घर कम्मान भूनष्पाय ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

अरबखाँ उज्जबक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ सारे आलम का गुमान । आरब उजबक्किय ॥
बासवान सुरतान । सार लग्गै नह छक्किय ॥
दह भारा कम्मान । तीन सायक तेरह सैं ॥

(१) ए० सभाइन। (२) मों०—सापूर। (३) ए० कृ० को—दह।

अट्ठारह सोहंग। अंध कढ्ढे सुर हंसै ॥
पेहथ्थ कराई हथ्थ को। बथ्थ राज घत्तान कहै ॥
सुजनंक मुसाइत[1] छंडि हय। तक्कि तक्कि संमुह रहै ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

वह तब्बै प्रथिराज। राज कै उहितोरन ॥
दिट्ठे दिट्ठ सरूप। मिले बरदां सुष औरन ॥
वाई उभै आई। चाप पुंनप उच्छट्टिय ॥
सारंगी सारंग। भीम वनसद्धि उपट्टिय ॥
पहुआन कमाल कस्सि करि। अग्गिवान ठट्टर वहिय ॥
लगि षाल पषान ग्रिसान उड़ि। वहर नक्कि भल्लीं रहिय ॥
छं० ॥ १४७९ ॥

पृथ्वीराज की बानावली से यवन सेना का छिन्नभिन्न होना।

बीय बान सिंदूर। भद्दि सुरतान भान वहि ॥
वहवस षां ढिल्लरिय। सीस सिप्पर समेत ढहि ॥
तीय बान ताबंत। ओढ्ढि करि आलम गोइय ॥
चेह बान पुरसाल। षान भुप भद्दि सलोइय ॥
पंचमी बरम बरनिय बरषि। भरकि पुट्ठि गोरिय सुभर ॥
अस उंच बाह अस्सुति करै। पूव पूव हिंदु सुहर ॥
छं० ॥ १४८० ॥

मोतीहाम ॥ षरै गुन पंच उभै इक तोल। रच्चो प्रथिराज गुरु जिम द्रोन
सुरंगिय भूमिय पथ्थ ओन। तमी तलके मति घट्टित जोन ॥
छं० ॥ १४८१ ॥

समी सम बुद्ध पिच्छलि मोन। कुमे पह पंजुलि अंमर गेंन ॥
कुमी कुमि अच्छरि कच्छरि ढोंन। बढै बर गिद्धनि संभर दोन ॥
छं० ॥ १४८२ ॥

मुरी घर गोरिय साहि सुदुट्ठ। पराक्रम राज प्रथी पति रुट्ठ ॥
.... छं० ॥ १४८३ ॥

(१) ए० कृ को०—मुसाइत।

संयोगिता का कहना कि युद्ध का अंत कहो।

दूहा ॥ रन रुध्यौ गिद्धनि कहै। सिद्धि सजोइय कंत ॥
समली स्याम सुलच्छनिय। जंड जिय कहि न्रप अंत ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

अस्तु गिद्धनी का सारे युद्ध का वृत्तांत कहना।

हनूफाल ॥ कर करपि कावंड बान। फटि थान अगिभर बीन ॥
बजि पंप तेज प्रमान। लगि उपल उडंत किंसान ॥
छं० ॥ १४८५ ॥
जनु होरि जारिय अग्गि। लगि सजर उडि गय नग्ग ॥
दुति तोमर सिद्धूक। ढहि कंक जोगिनि कूक ॥
छं० ॥ १४८६ ॥
सुरतान वसंत सनूर। वह बल ढलरि चूर ॥
चिय बान तक्कि करप्पि। धन सेन सिंध भरप्पि ॥
छं० ॥ १४८७ ॥
वरवद्द वेदहि सप्पि। वढि छुट्टि अचि परप्पि ॥
पुरसान रदन सुपडि। धर दसन इक्क सुमडि ॥
छं० ॥ १४८८ ॥
धर धरनि पंचम बान। वहि पिट्टिय सुरतान ॥
सुर असुर कोतिग कीन। दिन अवधि अनहि सुभीन ॥
छं० ॥ १४८९ ॥
गज मत्त जिहि सर फुट्टि। पहु प्रान तजि धर लुट्टि ॥
लपि दीह अन सुरपत्ति। वर वरनि अंत सुगत्ति ॥
छं० ॥ १४९० ॥
कर मच्छ करि भर पाज। रन विटयौ प्रथिराज ॥
फिरि घेरिय न्रप मौर। जनु गिरन लागे बीर ॥
छं० ॥ १४९१ ॥
बल प्रबल करि करि सेन। रन रेन छहित गेन ॥
गज कंध गोरिय साहि। गन सूर सनमुष चाहि ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

षुरसान षां गज चूरि । सनमुष्ष आसन पूरि ॥
अनु अनल अग्ग उतंग । चिहुं पास विंटित गंग॥
छं० ॥ १४९३ ॥

भर मेच्छ कूट प्रकार । मधि इंद मनो मुनारि ॥
धरि कंध धनु अपचास । गहि कुलिस सुत नित तास ॥
छं० ॥ १४९४ ॥

दिव देव दैवै रूप । अरि वलनि वल्लिय भूप ॥
जल जलधि विथरित वज्जि । जनु मंदिरा गिर मज्जि ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

गह्ह अमन भर सुरतान । प्रिथिराज वधन प्रमान ॥
धरगेन सुर सुअ सूर । तिय लोक चरपति मूर ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

कविचंद दंदन देषि । इह दइय रोस अलेषि ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

वीरभद्र का शिव से कहना कि सब रोना के मार जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया।

। ॥ सुमुष गल्ह सिव अग्र कथि । वीर भद्र सम वीर ॥
रह्यौ एक संभरि धनी । लाज ओटलै धीर ॥
छं० ॥ १४९८ ॥

टक ॥ कृप्पानं कृप्पान मांनय पनं दति वंस पासज्जरं ।
पुंजं कुंजर कूटि तूटि समयं पौरस्स जा सिद्धरं[1] ॥
तरुनं तेज समान गैन हनयं धृड्डीर धत्तं घनं ।
सा षग्गं किरपान पत्त गहियं उम्भारि बंका दिनं ॥
छं० ॥ १४९९ ॥

। ॥ हे चिल्हिनि गिल्हन सुअग । धज सम धवल नरिंद ॥
और न पल पंषिन परै । अलप जलप्पय निंद ॥
छं० ॥ १५०० ॥

उड़ि पंषिनि अंषिनि निरषि । अषिल[2] अषंडल लोगि ॥

(१) ए० कृ० कै० सिद्धयं । (२) ए० को० अष्षि ।

घरी एक पाछै प्रगटि । बीर बिभाई जागि ॥
छं० ॥ १५०१ ॥

दूहा ॥ चय जु समर गिद्धिनि समल । कहि पहपत्ति सहाय ॥
५५थि कुक बुद्धह सुबुधि । आइय कहनं बिभाइ ॥
छं० ॥ १५०२ ॥

युद्ध की रात्रि को संयोगिता का एक डंकनी को स्वप्न में देखना ।

कवित्त ॥ डंबरु हथ्थ डंकिनिय । दसन एकय अधरानन ॥
स्याम तिलक जुप्पियन । कन लंबे कंधानन ॥
उरध केस सिर रुरिग । नेन पंगिय कुल नंगिय ॥
पिय आलिंगन अलग । चमर अंबर कटि ढंगिय ॥
पुस्तक प्रसंग वंचय विहत । राज रवनि मंडहि श्रवन ॥
बरवान विप्रन्नौ पंचमौ । सुनि सुन्दरि जुद्धहि रवन ॥
छं० ॥ १५०३ ॥

डंकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

भुजंगी ॥ उब जुद्ध हद्द सुज पै बिभाई । जहां सेन छंच पती पातसाही ॥
जहां सेत चोर जु मौर धिमाही । जहां वैरप सेत ता गज्ज गाही
छं० ॥ १५०४ ॥

जहां सेत गज्ज झप गज्ज मुत्ति झौर । जहां पय्यरी सेत मौज हिलोर ॥
जहां सेतवास सिता नेज झंडे । जहां सेत दंतीन आवद्ध मंडे ॥
छं० ॥ १५०५ ॥

जहां सेत आरंभ पारंभ सेत । जहां सेत ताजी सिता ग्रीव नेत ॥
जहां सेत उच्चारिका सेत साज । जहां सेत सारंगही फौज राज ॥
छं० ॥ १५०६ ॥

जहां सेत सिंदू सिता लागि वाजी । जहां सेत ढाल सुआलम्म गाजी ॥
तहां नंघि बाजी धरे लाज राज । जुटे देषियै हूरते स्वामि काज ॥
छं० ॥ १५०७ ॥

पद्धरी ॥ भर हरत भार नृप सार भार । घरहरत पलक सरकर अपार ॥

थरहरत मेरु सुग्गल हमीर । सरहरत सेस धर हरत धीर ॥
छं० १५०८ ॥

फरहरत एक धर परत तुट्टि । झरहरत रगत सिर गुरज फुट्टि ॥
झरहरत छुट्टि सत एक षेत । ढरहरत ढार ढरि लाग षेत ॥
छं० ॥ १५०९ ॥

तरपरत एक उप्पर चढंत । धरपरत कंध धर असि कढंत ॥
परहरत धीर धावंत रुंड । पारंत चीह वकि वेंन मुंड ॥
छं० ॥ १५१० ॥

बरहरत बीर बर करन बार । भरहरत तुंग असिवर दुभार ॥
उड्डंत सार बुड्डंत भीर । रुड्डंत अंत जल रत्त नीर ॥
छं० ॥ १५११ ॥

फारंत फरड हडमंस तुट्टि । इम समर सूर तुअ नाथ जुट्टि ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन ।

मत्त ॥ वज्जपात निरघात । धरनि कै अंबर तुट्टिय ॥
दरिया दधि किय मथन । मद्धि गिरराज अहुट्टिय ॥
हनुअ द्रोन उप्पारि । आनि लंषिय किलंक तट ॥
गोरवधन गोकुल कि नाथ । छंप्यौ किलीर घट ॥
दल धरकि सिरन सिप्पर लई । दैव कि किन उप्पर परै ॥
डंकिनिय कहै तुअ कंत इम । हू बिहान अस्तुति करै ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

री ॥ देषेव पाल चहुआन आरि । प्राक्रम तास लम्भं न पार ॥
कीनो सुजुध आनुध तेम । उपमान मनहि आवै न नेम ॥
छं० ॥ १५१४ ॥

मन भयौ विकल गोरी नरिंद । भग्गै सुमौर कष्षे रबिंद ॥
अस्सि कसे मीर महमुद्द ताम । आएव साहि कीनौ सलाम ॥
छं० ॥१५१५॥

(१) ए० छ० को०—रकत।

उत्तग अग परचड भुअ। भुज लहै कोरि एकेक जूअ ॥
हय उच जाति ऐराक वस। आरोहि तेन बाजी उधस ॥
छ० ॥ १५१६ ॥

सम पूरि सिखह दोउ अग आप[1]। अदभूत तेज पग पचि ताप ॥
कम्मान काल सिर धारि ढाल। पेषत सेन भज्जै पराल ॥
छ० ॥ १५१७ ॥

बोलयौ गाजि सम गज्जनेस। चहुआन पान कट्टन[2] सरेस ॥
जपयौ ताम गोरी सहाव। बिन हयै कित्ति बट्टै सुआव ॥
छ० ॥ १५१८ ॥

हम बेर बेर इन गहे मुक्कि। वरतार ताह कट्टै सुसुक्कि ॥
सग्रहौ तुम्ह जगल नरेस। हम तेज ताप दैयौ असेस ॥
छ० ॥ १५१९ ॥

सुनि फिर्यौ सज्जि महमुद मीर। [3]बधन सुपानि चहुआन धीर
सम आय पास हय तक्कि तार। प्रथिराज दिट्ठि दिट्ठी करार ॥
छ० ॥ १५२० ॥

महमूद खा का राजा के साम्हन आना और राजा का उस मार गिराना।

कवित्त ॥ निरषि राज प्रथिराज। दिट्ठ महमुद करारिय ॥
मुट्ठि बान मडयौ। तक्कि ताजी उप्पारिय ॥
बथ्थ तथ्थ चित्तिय समथ्थ। चहुआन मनि मन ॥
धरिय झलक सिगिनिय। सुलल विषझाल काल फन ॥
नषयौ तानि हिट्ठ विहट्ट। आवतो सर मार मनि ॥
पचेवि हयौ केवर कहर। तुट्टै मंडि निरुद्ध उन ॥
छ० ॥ १५२१ ॥

पुष भाग परि अग। उड्डि आयास पोनि पर ॥
लागि बान सपष। मनो बिन हस धरा ढरि ॥

(१) ए० कृ०को० पार। (२) मो०—कहने।
(३) ए० कृ० को०—बधनि सुपनि चहुआन धीर।

अग्रबान लगि उरनि । भयौ महमुंद सुरेसं ॥
बड़ौ अंग बिहंग । मनो बिल उरग प्रवेसं ॥
महमुंद विकल तन परि अवनि । जानि कि नट्टह लाग सहि
धन धन्य सयल जंपिय सकल । विकल चित्त विभ्रम्भ रजि ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

कुंडलिया ॥ जिहि बिध्यौ सुरतान दल । सो रुंध्यौ रन रष्षि ॥
गुरु गुस्तानो वज्जिया । बीर बिभाई भष्षि[1] ॥
बीर बिभाई भष्षि । सेन नंच्यौ पतिसाही ॥
गजकंधां आरोह । दिट्ठ दिट्ठै सिरताही ॥
राजबान उब्भान । समर तक्क्यौ करि संध्यौ ॥
सो रुक्क्यौ रन राज । जनही पति साह सु वंध्यौ ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

महमूद के भरने पर ३१ गौर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना ।

हा ॥ देष्यौ देव रस महयत । रन उट्ठौ चहुआन ॥
फिरि घेर्‌यौ गोरी सयन । मनो नछत्र नभान
छं० ॥ १४२४ ॥

कवित ॥ चिहुटे बाण विछुट्टि । दिट्ठि उन्निय मुठि भिन्निय ॥
कछु घन तारे घत्त । सगुन झंझारि बर धुन्निय ॥
कछु आवरदा सान । मास अट्ठा दिन उन्निय ॥
टोप सहित सिंदूक । छुट्टि अुब्भी रहि झुम्मिय ॥
अलि अलिय बंध लग्गिय कहर । धरधमंक मुच्छिय धरह ।
एकतीस षान सुरतान सम । धरनि राज गह गह भरह ॥
छं० ॥ १५२५ ॥

लेहु बंध तुम हिन्दु[2] । राव बाराह करन भष[3] ॥
पैगंमर कै पास । बान हिंसान भरन लष ॥
हथ्थ मंडि आरब्भ । लइ मांमा महि छिन्निय ॥

(१) ए० कृ० को०—लाष्षि । (२) ए० कृ० को० हिन्दुअ तुम्म ।
(३) ए०.नप ।

जैचंदा गल पाय । तेक तिस जपर किन्नियं ॥
कै वीर[1] हथ्थ दीया हिया[2] । अब लम्भै पच्छो किया ॥
इकतीस मसद विसद फिरि । लेहु लेहु राजन जिया[3] ॥
छ० ॥ १५२६ ॥

मीर सरदारों का कहना कि कमान रखदो । राजा का न मान कर वाण चलाना पर चूक जाना ।

दूहा ॥ वाहहि मेछ सुह अग्गरे । वे कोफर फरजद ॥
वाह पान पुरसान की । सिगिनि अप्पि नरिंद ॥
छ० ॥ १५२७ ॥

सह्यौ न वोल सम्मुह हयो । वाह पान पुरसान ॥
इह अपुव्व संजोगि सुनि । दिन पलट्यौ चहुआन ॥
छ० ॥१५२८ ॥

दिन पलट्यो पलट्यौ न मन । मुज वाहै सब सच्च ॥
अरि भिटन मिट्टै कवन । लिप्यौ विधाता पच्च ॥
छ० ॥ १५२९ ॥

श्लोक ॥ विधाता लेपित यस्य । तन्न मुचति मानवा. ॥
म्लेछाना बंधन हस्ते । सुबिहान दिलेश्वर ॥
छ० ॥ १५३० ॥

[4]यत्र सुक्ख तत्र दुक्खं । उभयो. प्राणवधयो ॥
नही सुक्ख नही दुक्ख । प्रान ज विधयो लयो ॥
छ० ॥ १५३१ ॥

कबित्त ॥ जो पलटै सुदरिय । पै जीय पाल्हन पिय चायौ ॥
यो पलटौ प्रथिराज । सौस लग्गा गुन पायौ ॥
पाँ पुरेस सुध धप्प । गोन कम्म पट्ट सहसपत ॥
परो सीस कल्लान । पान लग्गी सस सो गत ॥

(१) ए०—गाई । (२) ए० कृ० को० दीना किया ।
(३) ए० कृ० को०—हिया । (४) मो० कहा सुख्य तहा दुख्य ।

भिरि भीर मीर पंतर सुगत । टरिय राज जिय गोपरी ॥
जानें कि द्रोन बलिभद्र ने । सुत पर जद्दव सम्भरी ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

राजा का कटार निकालना और पकड़ा जाना।

एक बान कम्मान । साहि चहुआन कोप गहि ॥
षां ततार लहु बंध । कढ्ढे सुरंग बहि ॥
ओड़न लंघि नरिंद । वार कट्टिय कट्टारिय ॥
दिन पलट्यौ चहुआन । हथ्थ छुट्टै नह तारिय ॥
भावी बिगत्ति भजंन घडन । दइ दुवाह इह निम्मयौ ॥
[1]पृथिराज गहन सुरतान कै । मुष जंपन बर सुम्भयौ ॥
छं० ॥ १५३३ ॥

होतव्यता की प्रभूति वर्णन।

भरत बार दुरजोध । पानि संग्रहि रोरह वर ॥
नल भुक्कै भट नट्ट । गोपि ग्राहत तन पंडर ॥
मलह सिंह कछि ब्रदंग । गूजर राव अंगन ॥
खूर राह संग्रहन । दान छुट्टंत सो पुनि घन ॥
राजेस खूर संभरि धनी । अरि वसि परि भंचन सुगुर ॥
सामंत खूर सब्बैं परैं । रह्यौ एक रूपे[2] पहर ॥
छं० ॥ १५३४ ॥

पुं जापै जपहार । बलिय बंकट बध नौरौ ॥
जोगिनपुरिय सनाह । देव देवर रन वौरौ ॥
दहिया जंगल राइ । चन्द्र सेनापति तारं ॥
भारी भारथ राइ । अरक करिवर उच्छारं ॥
ठंठरिय टाक चाटा चपल । चावहिसि रथ्थे न्रपहि ॥
देवतिय तुंग चहुआन प्रभु । विगाइ भोयन जपहि ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

रति वाहां सोभ्भति । राइ आजा गज चढ्ढे ॥

(१) ए०कृ० को०—सुरतान गहन पृथिराज को ।
(२) ए० कृ० को०—रुप्यौ ।

गज उप्पर ढहि पर्‌यौ। जानु तुट्टिय जिय कट्टै।
कम्माला कालक। बिरद बाहाँ जिस ऊपर॥
पहुपी नगी ढाल। सूर सुट्टै जुग जुप्पर॥
सुरतान काम सट्टै समर। राज सथ्थ जट्टो बियन॥
अरिवान अ औलो बोलनौ। बोलै डकिनि याहि मन॥
छ० ॥ १५३६ ॥

भूत होतव्यता का सकीर्तन।

लोहानौ आजान बाह। पानी पति गट्टै॥
लहुआ लौलहु आइ। बीर वड्ढा ही वट्टै॥
पानी पन्न सुअन्न। धन बसतर वास दे॥
हय हथ्थी चय वास। ग्राम उप्पर ग्रास दे॥
अग्याय स्वामि स्वाना गहै। चामडा वेरी भरन॥
बिभाई भीम भारथ भिरन। हय हन्ना अग्गे लरन॥
छ० ॥ १५३७ ॥

दिन चवथ्थि चतर ग। मेत सुरतान निपुट्टिय॥
विम्भाई भारथ्थ। वान प्रथिराज विछुट्टिय॥
ढरिय ढाल वेहाल। परिय पथ्थार सुनार॥
धन धन धन चहुआन। देव सुरलोक उचार॥
प्राक्रम कथ्थ संजोगि सुनि। इह दिप्पी दिप्पी न कहु॥
पारस पतग दीपक जवन। चाहुआन क्रिस्सान सहु॥
छ० ॥ १५३८ ॥

करन राइ कुडलिय। समर रावल वज्जीर॥
अनहल पुर आम्रन्न। राज रावत तिन भीर॥
धोरै धुम्मिल केस। राइ कन्हर कन्नर वै॥
कूर भौ बलिभद्र। वध आरज निड्डुर वै॥
सुरतान ढान ढुंढत फिरै। रन वज्जित प्रथिराज लहि॥
डकिनिय दुसह दुज्जन समर। बोलिय विद्रुम छद कहि॥
छ० ॥ १५३९ ॥

दूहा ॥ दस सत्ता सामत रन। दहतिय एक मसद॥

कहर कलह बल्लहनि सुनि । है संजोगि नरिंद ॥
छं० ॥ १५४० ॥

जिहि गुर पंच विपंच लहु । मंत विसोरह बंद ॥
डंकिनि डंवरु डहडहिय । रन हवि दुरगम छंद ॥
छं० ॥ १५४१ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ने वाले मीर योद्धाओं के नाम।

दुर्गम ॥ इवि हथ्थ तथ्थ असीसनं । गल कथन वथ्थ ग्रहीयनं ॥
भर भरनि भर सुर भारनं । झुक्कि झुम्मि होय मेछारनं ॥
छं० ॥ १५४२ ॥

धर धक्कि धमिक्किन धारनं । मिलि असुर सूर प्रहारनं ॥
पहुमीन मह मद आरनं । धकि जंग पान सुधारनं ॥
छं० ॥ १५४३ ॥

आलीस आषुब षानयं । सारीर षां सुरतानयं ॥
पीरोज षान-प्रमानयं । उआरि गाजी पानयं ॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अरि बाह ईसफ पानयं । नारिंग नोचम जानयं ॥
चहुआन गहि वथ्थानयं । अविहात भूप रिसानयं ॥
छं० ॥ १५४५ ॥

अलि अलूषान सषानयं । कासिम्म कायम षानयं ॥
धर पंथ सेरन संचबी । महमुंद जैन सुने दवी ॥ छं० ॥१४४६॥
विपरी तभर भिरि मीरने । मुहिमाम षान सुधीरने ॥
अलि आल आलम काम को । आकूब सामिस नाम को ॥
छं० ॥ १५४७॥

हा ॥ इलि गआहि अआम सुवन । भिरि भिर हिंदुअ मिच्छ ॥
आलम बिन हिंदु आलमहि । साहन सहु ग्रछ इच्छ ॥
छं० ॥ १५४८ ॥

नारंगि भैरौं भूत तन । अरि गिल आलम षान ॥
पुछि[1] पिरोज नौरोज नै । सुबर[2] चंप्यौ चहुआन ॥छं०॥१५४९॥

(१) ए० कृ० को० पुष्टि । (२) ए० कृ० को० सुबर ।

कवित्त॥ बान एक बाराह। पान ढाहे धर उप्पर॥
करन राय कलहत। पिनक भिय्यौ सिर जुप्पर[1] ॥
औहट्टी हम्मीर। बीर बिच्यौ बारुन बर ॥
दस मसद मसलिग। महत आवलि करि उप्पर॥
सोवलि ग सिघ पट्टन पती। मति सुमेर सुरतान सम ॥
डकनिय कहै सजोगि सुनि। सच पयप्पौ सुमति हम ॥
छ० ॥ १५५० ॥

वेसोद्रुम ॥ डहडहति डव डकिनिय। कहकहति कूकह जोगिनिय ॥
तहतहति तेग तरगनिय। बहबहति बान बिरुद्दनिय ॥
छ० ॥ १५५१ ॥
हरहरति बज्जन बज्जनिय। पलपलति ओन पलक्कनिय ॥
धरधरनि सिर बिन नचियन। परपरति पजुलि पजियन ॥
छ० ॥ १५५२ ॥
कवि करत कलह न कज्जियन। रस निरति नोपुर रजियन ॥
अति राज राजन अज्जियन। ॥ छ० ॥ १५५३ ॥
कसि माह मार मसदय। इसि पार पच्छति छदय ॥
उडि[2] हस हसनि इदय। नत[3] अच्छरी प्रभु वदय ॥
छ० ॥ १५५४ ॥

डंकनी का मुसलमान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना।

दूहा ॥ छिति छत्री सद्ध धरम। सुद्दह मन समूल ॥
वीर इष्ट सभारि करि। मडि पग्ग सम झूर[4] ॥ छ० ॥ १५५५ ॥
गाथा ॥ पति अग्गिनि विभ्भाई। वित चतुरथी समर सो वुद्ध ॥
पचमि कलह सगुर और। कथि कविचद साइ निज धाम ॥
छ० ॥ १५५६ ॥
कवित्त ॥ आलम यो इक बान। इक्क बानह भुअ भैरू ॥
एक बान मारि गनेस। ज गिय कुल केरू ॥
छचचोर सब्बान। नेज झडे झकझोरिय ॥

(१) मो०—सरजू पर। (२) मो०—उह।
(३) ए० कृ० को०—तन। (४) ए० कृ०—कूर।

कट्टै अरि अंकुरिय । तिष्प तोरन तन तोरिय ॥
हिंडोल लोल छिन छिन फिरिग । कर कमान कंदल करह ॥
बारधि विलोरि सुरतान दल । जदौं जाजु अतुलित वलह ॥
छं० ॥ १५५७॥

अतुलित महमद महि मसंद । असु असन न एतिग ॥
सतुलित सारथि कर कमंध । जंवूर वहं तगि ॥
मतुलित मीरां महिरवान । धुक्किय धर नंपिय ॥
धरपरंत सामंत । मार मारह करि हंकिय ॥
जग्गयो जाज आवाज सुनि । सजि परिंत गेवर धटिय ॥
हय हय जुसह त्रिभुवन त्रिपुर । वर विमान कुलटह छुटिय ॥
छं० ॥ १५५८॥

पारि हारि पीपा प्रसिद्ध । सुरतान जु दिट्ठिय ॥
बिहर कुंत सामंत । अंत अंतरिय सुनट्ठिय ॥
पति पसाव पंडव जुरंत । हक्किय हक्कारिय ॥
उल हल्ले हलकारि । कुंद वंदन उच्छारिय ॥
बल विषम सुषम स्वामित मतह । हित सुराज रंज्यौ रनह ॥
इय बाह वाह हिंदुअ तुरक । समर सत्त तुट्टिय तनह ॥
छं०॥ १५५९ ॥

दूसासन दिट्ठिय षंधार । आडौ पुर पारिय ॥
केस साहि उर चंपि । बीर बंवरि उच्छारिय ॥
षान आन चहुआन । बान वर धरनि पछारिय ॥
रे हिंदू रे मुसलमान । भिरि भिरि पुक्कारिय ॥
छंडौ जुगौइ छंडन जुगति । बर निसान बुल्लै मनह ॥
सक सिंघ नाद सिंघह गुरिग । गहर गिंभ सिंघौ घनह ॥
छं० ॥ १५६० ॥

घन धुरंत गोरिय सयन्न । पौरोज षान धपि ॥
तिहि टट्टर तकि तेग । बेग झारिय झनंक झपि ॥
षूब साहि साहाब । सनमान मुहन्निय ॥

गहि गप्पर[1] परिहार । अस्त सम सम दुय अन्निय ।
नौधक्क धाम डिग[2] महर । हहुम स मिडिग असन ॥
वाजी वनिक करि कुथ्थरिय । जनों पारिक पलहक्क सन ॥
छ० ॥ १५६१ ॥

आनन अन जवूर । बीर विद्दिग धर तुट्टयौ ॥
तव व कट वधनौर । राइ केहरि कर छुट्यौ ॥
गोरिय गज्ज गुजार । हल्लि हथ्थ हहकारिय ॥
छल्ल पुच्छै पच्छारि । वाघ लग्यौ वक्कारिय ॥
गहनाय गरुअ गे वर मुरिग । ढाल हाल आलम ढरिय ॥
वलि अष्ट वलिय ओनह अवनि । पति पवित्र कीनी घरिय ॥
छ० ॥ १५६२ ॥

जूना चिचह कूट । राम रावन भर भारौ ॥
समर सिह की आन । साहि लग्यौ ग्रह कारौ ॥
दान मान छुट्टै न । गरुअ गे वर गुरि हल्लिय ॥
आउ ग्रह उग्रहिय । राह धुति तेवर पल्लिय ॥
पर पुट्ठि दिट्ठ नयनह पिसुन । वारर वर आय वुहहै ॥
सुरतान पान पजर वहिग[3] । जग हथ्थह जीवत रहै ॥
छ० ॥ १५६३ ॥

नूफाल ॥ इति अत कालनि इच्छ । सुरतान मुच्छिय गच्छि ॥
भै भीत जननिय लच्छि । परि भूय आवलि कच्छि ॥
छ० ॥ १५६४ ॥

इसि असद पान कमान । निय नपि दै अहुआन ॥
परिवार पारस झुझ्झि । दस दैव गति आवुझ्झि ॥
छ० ॥ १५६५ ॥

वित्त ॥ इकतीसौ आसद्द । मारि मस्सद महाभर ॥
दह सत्ता सामत । सूर जजुरिग धरा धर ॥

(१) ए० कृ० को०—पप्पर ।
(२) ए० कृ० को०—मौंडिग, मिंडिग ।
(३) ए० कृ० को०—पगर ।

द्वै घायां कल्हरिय । सोम जीवत उप्पारिय ॥
अग्गामी अगिवान । राज बष्थां पच्छारिय ॥
ए बष्थ परं दादिट्ठ भें । भग्गा भग्गा इन हर्‌यौ ॥
सावन वदि पंचमि पंच कर । सांई मेछाइन धर्‌यौ ॥
छं० ॥ १५६६ ॥

संयोगिता का डंकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह ।

दूहा ॥ हे डंकिन भष्यिन सुजन । मंस रुधिर सम अष्थ ॥
कहिन पराक्रम राज कौ । मीर समाहत वष्थ ॥
छं० ॥ १५६७ ॥

कौ रामायन कप्पिवर । भारथ भीम न पुट्टि ॥
पिथ्थ पराक्रम पष्थ सम । भावी दैव न छुट्टि ॥
छं० ॥ १५६८ ॥

सकल सूर सामंत रन । भए छिन भिन्न सरीर ॥
उदधि बिषम सज्ज्यौ नृपति । हय गय नरनि अरीर ॥
छं० ॥ १५६९ ॥

पृथ्वीराज की वीरता पराक्रम और हस्तलाघवता का वर्णन ।

मोतीदाम॥ रुप्यौ रन राज सुरज्जिय अच्छि । मनों दसकंध सभा वलिवच्छ।
रहे करि कुंडलि मिच्छ करेर । मनों लघू पब्बय सेवहि मेर ॥
छं० ॥ १५७० ॥

महा महि गोरि समुह्ह सयन्न । मनो वड़वा नल रज्जि रयन्न ॥
चिहू दिसि चंपहि बग्ग उठाय । ते दीप पतंग ज्यौं मध्य समाय ॥
छं० ॥ १५७१ ॥

झरप्पहि बाज ज्यौं मीर झुझार । लुहार जलं जिम बुड्डहि सोर॥
सिहह जलह ज्यौं भद्रव सूर । तरप्पहि बीज ज्यौं राज करूर ॥
छं० ॥ १५७२ ॥

गही कर संगिनि संभरि वार । मनों दल दंगति दीसय सार ॥

परें ढ्ढि मुट्ठि निहन्नत तक्कि । परोक्रम पिप्पि रहै सुर जक्कि ॥
छ० ॥ १५७३॥

भरीकर कन्न लगै तिन पार । धुकै धर यौ भर ज्यो पहतार ॥
सविद्ध हयग्गय पप्पर घाइ । लगत गिरत फिनग न पाय ॥
छ० ॥ १५७४ ॥

मयंद गयद गिरैं वल फारि । लगत निपान गिरत चिहारि ॥
ढल तिथ ढाल सुझ्ड निहारि । मनों गिरि तैं गिरि सय वयारि ॥
छ० ॥ १५७५ ॥

चलत अनी लगि टोप सिरन्नि । मनो रवि उद्दि उरग्ग धरन्नि ॥
करी तनय हय हनत तक्कि । वगत्तर पप्पर मक्कि सनक्कि ॥
छ० ॥ १५७६ ॥

मची धर धुधि न सुझ्झय नेन । अवन्न न सुन्निय सद्द सवेन ॥
पहचरय धर पलन सुझ्झि । मनों दव दगल[1] गाधर वुझ्झि ॥
छ० ॥ १५७७ ॥

सिवालरुस्वान तेअत अलुझ्झि । मनो ध्रद पारधि पग्ग अकुलझ्झ ॥
रही कर सिगिनि पुहिय तोन । जितत्तित उड्डत दिप्पिय ओन ॥
छ० ॥ १५७८ ॥

किरवान कटी सुमनो डुडवारि । नचौ कर जोगिनि पप्पर डार ॥
दुहथ्थ नहनत हथ्थिनि सीस । मनो दल लग्गिय पव्वय दीस ॥
छ० ॥ १५७९ ॥

भसुडनि दतनि टूक उडति । ससि अप्प मनों जल रत्त बुडत ॥
उठै वहु छिछ कारी निधरन्न । मनो झर वहुति नन[2] धरन्न ॥
छ० ॥ १५८० ॥

घन जिम वज्जहि घाय घनक्कि । लगै तिन यतन तच्छ छनक्कि ॥
टुटे पग हैकर सगिय सज्जि । मनो वन पड धनजय रज्जि ॥
छ० ॥ १५८१ ॥

हनतति तानति तामस मच्चि । मनों बलिभद्रह लपल पच्चि ॥

(१) मो०—दल दंग । (२) ए० कृ० को०—नीन ।

किधौं हलवंत गदा कर कीन । दुनों दल दुंदुभि रावन भिन्न ॥
छं० ॥ १५८२ ॥

रही नन अच्छरि इच्छि वरान । जयज्जय भंपहि देव विमान ॥
चवंसठि नच्चिय रच्चिय रारि । रहे रस रच्चि पडं अटधार ॥
छं० ॥ १५८३ ॥

निरत्तहि नारद बज्जिय तंत । उभं यति साचरु भूतनि भंति ॥
जुटे सब सस्त्रन आवध हथ्थ । वढ्यौ वल राज समाहिय वथ्थ ॥
छं० ॥ १५८४ ॥

धरें पग हथ्थ हनंत धरन्न । रज्जक सिला पट पीटि वरन्न ॥
गहै भर नंपत हथ्थिन ठेलि । मनों मद गंध चलाइ चवेल ॥
छं० ॥ १५८५ ॥

सिर सों सिर दै कर हंनत दीस । ज्यों जोगिय तुम्भर फोरत रीस
बड़वा बढ़ि वाय सहाय ज्यौं दंग । [1]इसे नृप इष्ट वलं रन रंग ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

सहै न मसंद सनंमुष जंग । मनो दल दानव ज्यों कपि पंग ॥

पृथ्वीराज को पकड़ कर हाथी पर बैठा गजनी ले जाना ।

करी मति धेरन हथ्थिय गंस । सुत रावन ज्यौं चतुरानन पंसि ।
छं० ॥ १५८७ ॥

परी चिहुं कोदह धेर नरिंद । कढे कर दंत ज्यौं भिल्लिय कंद ॥
सुसंग्रहि संकट सूर निसंधि । लियौ नृप गोरिय साहि सुरंधि ॥
छं० ॥ १५८८ ॥

गजंभर ढाल बैठाय नरेस । चल्यौ गुरि गोरिय गज्जन देस ॥
छं० ॥ १५८९ ॥

दूहा ॥ ग्रहे राज गज्जन चल्यौ । तब रन रत्ता सूर ॥
अड्डे आवध वज्जि अत । संधारिग भर सूर ॥
छं० ॥ १५९० ॥

कवित्त । गहत राज प्रथिराज । भोम कंपिय पायालं ॥
भौ अंमर ग्रह पत्ति । पति अंमर मंतालं ॥

(१) मो० इसे नृप इष्ट वलं च परंग ।

गै अभग लै वद । मत्त भग्गै भ्रम मग्गो ॥
चरन च पि वर पार । बीज हिंदवान दिपग्गा ॥
हिंदवान प भ भग्गे उमै । समरसि हि चहुआन वर ॥
काल क सकल प्रगट्यौ भुवी । दीऊ अवनि कलि भग्ग धुर ॥
छ० ॥ १५९१ ॥

दूहा ॥ भग्गे दोय वियान वर । सत भग्गा बल भग्ग ॥
चाहुआन सुरतान कर । परग बीर लग्ग ॥
छ० ॥ १५९२ ॥

गहि चहुआन नरिंद वर । घेत ढुंढि सुविधान ॥
भर प्रथिराज नरिंद कौ । गवन कीय ग्रह थान ॥
छ० ॥ १५९३ ॥

भज्जि परी प्रथिराज ग्रहि । जमुन नीर दल सज्जि ॥
तद्दिन साहि गोरी ग्रहन । वज्जे मंगल बज्जि ॥
छ० ॥ १५९४ ॥

पृथ्वीराज का बंधन सुनकर संयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना ।

कवित्त । अनाचार परवरयौ । पर्यौ यातिक सह भुभिक्षय ॥
हाहुलि राइ हम्मीर । साइ दोही तिर बुभिक्षय ॥
सिव केसव करि भेद । भेद करि देवह नश्यौ ॥
प चतत्त प्रमथ्त । सत्त भजि साहस सध्यौ ॥
पहुपग राइ पुचिय सुनहि । मुत्ति[1] विलंब न कत मिलि ॥
पट मास बीस वासर विहत । लहित सोममंडल सुहलि ॥
छ० ॥ १५९५ ॥

चोटक । हति[2] हतति हतति हत तिह । डवरू डहकतति जोगिनिय ॥
भवरी वर हसनि हस तिन । फुटि रभ्र दिस। पहुप्रान विन ॥
अलि आलिनि आलिनि सोह सिय । छ० ॥ १५९६ ॥
चिग तंत अनत सु मच मन । छलहो छलहत सुहत हन ॥
छ० ॥ १५९७ ॥

(१) मो० मुत्ति । (२) ए० कृ० को० तिहि ।

पद्मा पद्मा सन आसनयं[1] । पिय प्रेम प्रबंध सुवासनयं ॥
भरि ध्यान उमा मनसास लयं । उडि सिद्धि अयासन आसनय
छं० ॥ १५९८ ॥

कवित्त । संजोगिय आसनह । जीव जंजरिग जरिय गत ॥
षंजरीट मृगराज । इंद गय हंस भ्रिंग पति ॥
अप्प अप्प अप्पियन । सपन जंमन दिठि अप्पन ॥
भ्रिभै राज गत[2] काज । काज किन्नौ क्रम चप्पन ॥
चिंतिय सुचिंत डंकनि उड़िय । पुडिय परंत परेव ग्रिह ॥
संचरिग जुद्ध सामंत दह । उगति बंध कविचंद कह ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

न मिटै लिषित लिलाट । लिष्यौ ब्रह्मासिर अप्पर[3] ॥
असुर गह्यौ प्रथिराज । सुनत संजोगि परिय धर ॥
चंद्र सूर ग्रहरिष्प । इंद्र सुर नर असुराइन ॥
सिध साधक मुनि राइ । मंत तंतिय तारायन ॥
की सकै अवर आरंभ करि । जो विधिना विधि गति भन्यौ ॥
निग्यान बात जुग जुग लगै । नह दिट्ठौ मिंटन[4] सुन्यौ ॥
छं० ॥ १६०० ॥

दूहा । बहु बिलाप सब मिलि करहि । नहि सुधि बुद्धि गियान ॥
प्रीय बचन अप्रीय सुनि । गये संजोगिय रान ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

प्रान जात नह पल लग्यौ । सुनि संदेस विराग ॥
सुनत बचन प्रियजन कु काल । धन्नि चिया तो भाग ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

दह सामंत परंत रन । ग्रह उग्रह न मरंत ॥
सत्त सुराजन ग्रहत जुध । मुरि मुरि मेछ मुरंत ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

(१) मो० बासनयं ।
(२) ए०कृ० को० गज ।
(३) को०—इष्षर ।
(४) मो०—मिंतन ।

पृथ्वीराज के पकड जाने पर शाह का पडाव साफ करना ।

कवित्त । आनि गह्यौ प्रथिराज । टट टटरिय ठुक्कि दल ॥
धक्कि धार धारिय । परत वार डह विरद वर ॥
हसम गरुअ गोरिय गुमान । भुअवल उप्पार्‌यौ ॥
साई काज सग्राम काम । धरति तिल तिल करि डार्‌यौ ॥
सुरतान अग्र अग्रह कियौ । सुर गह सभु न दिप्पयौ ॥
असमान आस असपत्ति अस । कसि कसि कद्दल पिप्पयो ॥
छ० ॥ १६०४ ॥

कासमीर कामरूअ । टक्क टकह उप्पार्‌यौ ॥
भड करार हमीर । धीर पच्छै पति पारौ ॥
साहि सब्ब गिल करत । तेग झकझरिय न झिल्लत ॥
छत्रि छत्रपति छत्र अस । भूमी गहि[1] मिल्लित ॥
आलम लभ्म आलम न हुअ । आभन असमानहि धरत ॥
रस रासि रसातल जाति गति । जौ न सूर इत्तौ करत ॥
छ० ॥ १६०५ ॥

पैज वलिय पाहार । देव दहिया दल पित्तह ॥
ओछम्मी ओछाय । घाय राजन इत उत्तह ॥
चाय गरुअ चहुआन । राइ देवत्तिय दिवानौ ॥
परत घाइ[2] धिध राइ । सहन तक्यौ सुरतानौ ॥
वड व्रत्ति गत्ति छत्रिन तनिय । कुल घटि वढि न बपान कुय ॥
भडार विधाता मुकति दिय । लुट्टन हार सुलुट्टि सुय[3] ॥
छ० ॥ १६०६ ॥

तव राजा गोरी जवाव । दीनौ हम्मीरा ॥
औ हठ्ठी गभीर । राय पहु कर पहु भीरा ॥
सामि साच चहुआह । सामि अहुा सनाही ॥
ना जानो मे मिच्छ । तेक कैसी सा वाही ॥

(१) ए० कृ० को०—महि ।
(२) ए० कृ० को०—राइ । (३) मो०—लिय ।

रे राजपुत्त राजंग छल। पलक मान रथ छंडि[1] रहि ॥
मंडलह भेद भेदिग भुअन। उर अलोकु सबह सुकहि ॥
छं० ॥ १६०७

दूहा ॥ भर भिरि सुर मंडल भिदै। ग्रहि लीनौ सुरतान ॥
ए तीनो सोभंत ने। घर घल्लिय[2] सुबिहान ॥
छं० ॥ १६०८

कवित्त ॥ इह भाष्यौ संझरिय। बात वज्जरिय दिसा दिस ॥
राइ केलि चहुआन। समर बित्तयौ गसा गस ॥
नील गात पग पीत। भीत भेरिय भुंकारिय ॥
तं बरिया पहु फुट्टि। काम कुल्लिय संसारिय ॥
निग्रह्यौ राज सुरतान छल। रुधिर धार छबि उच्छरिय ॥
चहुआन अनावध आन नह। सु कबिचंद भनियन धरिय।
छं० ॥ १६०९

जिहि करिवर अरि जरहि। जर्यौ तिय कर तिहि कट्टति ॥
जिहि संकति मुह सकति। सकति षंचि न सक छंडिति ॥
जिहिं बाना बरि षान। प्रान कंपहि मधु सिंधुर ॥
तिन मद सिंधुर सुंडि। डंड सिर छच चिपति पर ॥
जिमुष सहाब संभुहल सहि। तिहि मुष जंपत गह गहन ॥
प्रथिराज देव दुअ ननि ग्रह्यौ। रे छत्री गुर ग्रब्बहन ॥
छं० ॥ १६१०

सूर गहन टरि गयौ। सूर गह भयौ राज तन ॥
भारथ भर बित्तयौ। भार उत्तर्यौ भुअन थन ॥
हर हरानि मंडयौ। सार संभरि[3] तन तुट्यौ ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। बग्गह षल षुट्टयौ ॥
संचरिग गल्ह संसार सिर। षरह संग्र ग्रम्भह भरिय ॥
घन धाय साहि चहुआन दिय। गज्जनेस दिसि संचरिय ॥
छं० ॥ १६११

(१) मो० छोडि। (२) मो० घर घल्यो।
(३) ए० कृ० को०—संमरि

पृथ्वीराज को पकड कर शाह का गजनी जाना और इधर देवी के मंदिर से कविचंद का मुक्त होना।

गहि चाहुआन नरिंद। साह गज्जनै सपत्तौ ॥
थान रप्पि दिल्ली प्रमान। साहि पीरोज प्रमत्तौ ॥
उत उतग वाजिय। नहसहनाय सुभेरिय ॥
जीति लियो चहुआन। दोउ दिप्पत दल फेरिय ॥
सुरतान गह्यो चहुआन वर। कवि छुट्टो जालंध ते ॥
सपन्न खूर पत्तह दिल्ली। भौ कवि रत्त सुअ मतै ॥
छ० ॥ १६१२ ॥

दूहा ॥ तन मझ्झे वर ब्रह्म है। ब्रच्छ्य उतप्पत द्वार ॥
लगै न तरवर फिरि सुक्कम। फिरि लग्गै सो धार ॥
छ० ॥ १६१३ ॥

चौपाई ॥ सो दिष्टान सुतत प्रमान। तर वर बीज तुटे धर थान ॥
सुक्रम बीज लै विदुर[2] वर चल्लै। कु क्रम गार सिरने कह पुल्लै ॥
छ० ॥ १६१४ ॥

ब्रह्म बीज के ब्रह्मह माई। ब्रम नीर रसु सत सर माई ॥
क्यों दिन व्रत क्यों तपकर धारी। क्यों क्रम क्रम यू करत पसारी ॥
छ० ॥ १६१५ ॥

कवित्त ॥ उर उकट्ठ तम दीह। सुनहि जो काल प्रान रहि ॥
जब्ब कुमत्त गतमत्त। वढत[3] गुन अग दीप महि ॥
मोहन मत गजदेह। हरहि अ के सोए चित ॥
हरि कमलन मन भमर। गाढ बधिये एह मित ॥
पच जैत वर लग्ग। वीर त्यापोसु जुद्ध हिन ॥
हरि पावस भृगुलता। बध सुगति लह्यै न धन ॥
छ० ॥ १६१६ ॥

देवासुर उद्दम। भयौ उद्दमन भारथ ॥
गदा प्रब्ब उधम। वान उद्दमन पारथ ॥

(१) ए०—उत। (२) मो०—विदुर। (३) ए० कृ० को०—गढत।

म्लेछ हिंदु उद्दम । भयौ गोरी चहुआनह ॥
भिरत पंच दिन पंच । रति वित्ती सुविद्दानह ॥
लिष्षिय म्लिच्छ हिंदुअ बयत । पित्त दयग्गय अयुत इछ ॥
[1]संग्राम कथन कथ्थह तनी । कहिय चंद कव्वी सुइछ ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

दिल्ली में पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार पहुंचना और राजपूत रमणियों का सती होना ।

कुंडलिया ॥ चर आए ढिल्लिय नयर । दसमि सुदिन अंगार ॥
बुद्धवार[2] एकादसी । चली बरन सगदार ॥
चली बरन सुगदार । सूर सामंत तीय वर ॥
सब परिगह प्रथिराज । भयौ मंगल मंगल भर ॥
षट सुरतिय चहुआन । अग्गि आलिंग अंगवर ॥
षद्दु बंधि संजोगि । जोग संजोग कहै चर ॥ छं० ॥ १६१८ ॥
गाथा ॥ संचाह संझ रयनी । नच्चति विताह वीर वताहं ॥
दहकोह गिद्ध गोमं । रन थल थल रहिय पंच दीहाई ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

पृथा का रावल जी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतिनियों का अपने पतियों के शस्त्रों के साथ सती होना ।

कवित्त ॥ निरषि निधन संजोगि । ग्रिथी सज्जिय सु सामि सथ ॥
हक्कि हंस तत्तारि । वीर अवरिय प्रेम पथ ॥
साजि सकल शृंगार । हार-मंडिय मुगतामनि ॥
रजि भूषन हय रोहि । जलज अच्छित उछारति[3] ॥
हैहया सह जंपत जगत । हरि हर सुर उच्चार वर ॥
सह गमन सिंघ रावर चले । तजि महि फूल[4] श्रीफल सुकर ॥
छं० ॥ १६२० ॥
प्रथा सथ्थ सह गवन । रवनि साजिय सुराज दह ॥
सघन कुसुम सुर बास । सिल्लिय सुष गुंज मुंज तह ॥

(१) ए० कृ० को०—संग्राम कथ्थ नथ्थह तनी । (२) मो०—बंधबीर ।
(३) मो०-उछारहि ((४) ए० कृ० को०—महिसुष ।

सुगता मनि उच्छार । मार आयौ सु समुज्जल ॥
अग रप्पि दुअ सत्त । तिके आवरिय अप्पहल ॥
विम्मान बान सुर अच्छरिय । पहु पजलि पुज्जै सघन ॥
सुर रिप्प जप्प तचिय धरन । कल कौतिग देषहि सुतन ॥
छ० ॥ १६२१ ॥

सहस पच सह गवनि । अवर सामत सूर भर ॥
चलिय मिलिय मन सधि । सकल निज नाह साह वर ॥
भूषन सबनि विराजि । साजि सिगार सैल तन ॥
मन अनत उद्दरिय । करिय हरि हरि जुद्दान दिय ॥
जहा जुथान सुनि प्रिय गवन । न करि विरम मन धरिय धुअ ॥
धनि धन्य सह आयास हुअ । लषि कौतिग अनभूत भुअ ॥
छ० ॥ १६२२ ॥

चदन मदिर दार । रचिय वर दिघ्घ लघ्घुद्दर ॥
विवह[1] कुसुम वर रोहि । सोहि पट वसन सुरह वर ॥
जिय जवू नद दान । रथ्थ हय गय सुगता मनि ॥
विप्प वेद उच्चरहि । धेन सुरवर आयासनि ॥
किय[2] लोक लोक अजुलि कुसुम । सजि विमान सुर सिर फिरहि ॥
सक्रमिय अप्प साहागवनि । मझि गवन हव्विहि हरहि ॥
छ० ॥ १६२३ ॥

विविह तरुनि दिय दान । अवर सामंत सूर भर ॥
अप्प अस्स हय लीय । मिलिय रह हित धाम धर ॥
चित चिंतै रव रवनि । गवनि पावक प्रज्जालिय ॥
प्रम प्रीति किय प्रेम । नेम गेमह प्रति पालिय ॥
उज्जलिय झाल आयास मिलि । हर हर सुर हर गोम भौ ॥
जह जहा सुवास निज कत किय । तह तहा तिय पिय मिलन भौ
छ० ॥ १६२४ ॥

एकादस से सत्त । पच पचास अधिकतर ॥

(१) ए० कृ० को०—विविधि ।
(२) ए० कृ० को०—दिय ।

सावन सुक्कल सुपष्ष । बुद्ध एकादसि बासुर ॥
बज्र विद्धि रोहिनी । करन बालव धिक तै तल ॥
प्रहर सेष रस घटिय । आदि तिथि मकल पंच पल ॥
बिष्थरिय बत्त जुद्धह सयल । जोगिनि पुर बासुर बिषम ॥
संपत्ति थान सरि सतिअ जुरि[1] । रह सुरब्बि कीनो विरम ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

शाह का गजनी पहुंच कर पृथ्वीराज को हुजाब खां के सुपुर्द करना ।

गहि चहुआन नरिंद । गयौ गज्जनै साहि घर ॥
दिल्लिय हय गय द्रव्य । ताहि तन इह सुअ्खिधर ॥
बरस अट्ठ तस अट्ठ । सुद्ध कीनौ नयन्न बिन ॥
जन्म जन्म जुग अवरु । जाय प्रथिराज इक्क षिन ॥
कह करै न्यपति समुझै मनह । अप उपाव सो बहु करय ॥
विधिना विचित्र निरष्यौ पटल । निमष न इक्क लिष्षित टरय ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

तब सुसाहि गज्जनय । अहियं जंगल पति तानह ॥
षष्ष लभ्षि हुजाब । सुविधि रष्यौ बल मानह ॥
भैडिय कोट महल्ल । अष्षि दिसि दष्षिन धामह ॥
तहां रष्षिय प्रथिराज । सुबल रष्षक रहमामह ॥
बिग्रह सुरष्षि पारस्स दस । बेनिय दत्त दये सुबुष ॥
नन करय राज आहार कछु । कहिय तेज हुजाब रुष ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है ।

बिरदावलि बिरदाइ । पाय अंदू कर ढीले ॥
तामस बुझवन काज । बोलि मधु वचन रसीले ॥
गढ़ गिल्लोल गज बाग । लागि सक्कै न डरहि उर ॥

(१) ए० कृ० को० सर सुनिय जुरि ।

नीठ नीठ रष्यौ । आनि उम्भौ जल ऊपर ॥
नरबदा तट कज्जली सुबन । जूथ हस्तिनि सभरिय ॥
पीय न उदक कबिचद कहि । मद सिंधुर जिम बलभरिय ।
छ० ॥ १६२८ ॥

तव चिंतिय हुज्जाव । गयौ अप्पन गोरिय प्रति ॥
किय सलाम तिय वार । धरिय अगुरि धनिय नति ॥
कीय[1]अरज कर जोरि । सुनहु साहाव मन्नि धुअ ॥
बिन अहार चहुआन । पष्प सारह तीन हुअ ॥
कलमलिय चित्त सभलि सुचिर । अप अमुपति चहुआन गय ॥
आरुच्यौ विकट रस न्रिपति बर । दिट्ठौ दिट्ठ करूर मय ॥
छ० ॥ १६२९ ॥

दूहा ॥ प्रथुल पभ साला प्रथुल । सकल प्रथुल परीभ ॥
बन आरोहिय सिघ जनु[3] । अनुक्रम कज्ज ईभ ॥
छ० ॥ १६३० ॥

शाह का पृथ्वीराज की आखें निकलवाने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ चमकि चित्त साहाव । सुनिय चहुआन सु अथ्यह ॥
बोलि हुजाव सुआव । सेप काल न समथ्यह ॥
तुम कहहु चहुआन । नयन दिठ बकन छडय ॥
जौ बधन बधियौ । तौइ समुप द्रिग मडय ॥
सिर धारि बोल कानै फिरिय । सहस मीर मिलि अप्प वृग ॥
भ्रम पारि तेन चहुआन गहि । बधिय राजन कहि द्रिग ॥
छ० ॥ १६३१ ॥

नेत्रहीन होजाने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मागना ।

भुजगी ॥ पर्यौ बंधन गज्जनै मेछ हथ्थ । विचारै करी अप्प करतूति पिथ्थ ॥
हन्यौ दासि के हेत कैमास बान । गज पून चामंड वेरी भरान ॥
छ० ॥ १६३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—गुदरि ।
(२) ए० कृ० को०—दिप्पिय । (३) मो०—सम ।

बंधे कन्ह काका चषं पट्ट गाढ़े । बिना दोस [1]मुंडीर सें भ्रत्त काढे
बरम्मंत चंद चल्यौ हूं कनौजं। तहां सूर सामंत कटि घट्टि फौजं॥
छं० ॥ १६३३ ॥

लियें राज लोकं रमंतं सिकारं । भ्रमं केहरी कंदरा रिष्य जारं ॥
रह्यौ गैर महलं लियें राजलोकं । कटे सूर सामंत कीयौ न सोकं।
छं० ॥ १६३४ ॥

भुलानौ सरूपं भयौ काम अंधं। निसा वासरं चित्त जानी न संधं।
दरब्बार भेटी अदब्बं बड़ाई । छरी ऊपरी सीस हम्मीर राई ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

करन्नं पुजारं प्रजा पौरि आई । बरहाइ प्रोहित्त सें बिसराई ॥
षड़े आय साहाय काजं षुमानं । गयौ चूकि अवसान सनमुष्य जानं ।
छं० ॥ १६३६ ॥

भई बुद्धि विपरीति इह होनहारं । छलं पारि सुबिहान चष्यं बिकारं
पलट्यौ सुदीहं रही लग्गि तारी । भले राज गोविंद अब्बा प्रहारी ॥
छं० ॥ १६३७ ॥

सही फूल की फूलनी नाहि नाथं । तुरत्तं तरायौ जु मालीन हाथं
नही सूर सामंत परिवार देसं । नही गज्ज बाजं भंडारं दिलेसं ॥
छं० ॥ १६३८ ॥

नहीं पंगजा प्रान तें अत्ति प्यारी। नही गोष महिला इतं चिचसारं
नहीं चिग्ग अग्गं सुनंषे परद्दा। नहीं क्रोक हम्माम गरसी[2] सरद्दा।
॥ छं० ॥ १६३९ ॥

नही रेसमं के दुलीचे गिलम्मे । नहीं हिंगु बाटं सुवन्नं हिलम्मे
नहीं सीरषं रुप रंके उसीसा। नहीं पल्लमी तक्किये पल्लिंग पोसा
छं० ॥ १६४० ॥

नहीं गद्दियं सुथ्थरी भूपि छोरा । नहीं मेन बतीन के दीप जोरा॥
नहीं डंमरी योंन आवै सुगंधा । नहीं चौसरं फूल बंधे अबंधा ॥
छं० ॥१६४१ ॥

नही मृग्ग नयनी चरन्नं तलासै । नहीं कूक कोका सबद्दं उलासै ॥

(१) ए० कृ० को.—षृन । (२) ए० गरमी ।

नहीं पातुर चातुर न्रत्यकारी। नहीं ताल संगीत आलापचारी ॥
छ० ॥ १६४२ ॥
नहीं कथ्थक सथ्थ जपै कहानी। पय सक्कर छत लग्गै सुहानी ॥
नहीं पासवान पवीस हजूरी। सबै मंडली मेछ लग्गे कसूरी ॥
छ० ॥ १६४३ ॥
नहीं रूपक राग रंग उचार। सुनो कन्न सावद्द वंग पुकार ॥
नहीं चोम मौज कारू लप्प दान। नहीं भट्ट चंदं विरद्द वपान
छ० ॥ १६४४ ॥
चंप मंजरी के रहे चौगिरद्द। दव दंग ज्यों लग्गि देही दरद्द ॥
कहा हाल रैन कुमार धरत्तौ। कहौं कौन सौं कौन आनै निरत्तौ
छ० ॥ १६४५ ॥
निराधार आधार करतार तूही। बच्यौ संकट आय मो जीव सोई
कह्यो कृष्ण मंगाय वृंदावनी को। संभालौ नहीं तौ कहा औधनी कं
छ० ॥ १६४६ ॥
करै उच्च नीच कुत्तं दास काजै। भए सारथी पारथ के न लाजै
प्रभू रथ्थ भारथ्थ में इंद्र साजै। प्रह्लाद भभ्भीषन भ्रू निवाजै ॥
छ० ॥ १६४७ ॥
त्रिया द्रूपदी सीत को मेटि दुष्पं। गज गोप गोवर्द्धन धारि रथ्थ
चरावत धेन वन अग्गि लग्गी। कर्यौ पान दावनल होय अग्गी
छ० ॥ १६४८ ॥
हन्यौ कंस राज दियौ उग्रसेन। प्रर्यौ पारधी फंद में कट्टि एन
पचाए पजावै मँजारी कुमार। उग्गारे इसै दास केइ हजार ॥
छ० ॥ १६४९ ॥
नृप आठ से बीस हजार पासे। जरा सिंध कौ बंदी मे ते निकासे
रषे अंबरीक परीपत्त चेन। अजामेल उद्धारि राजीव नेन ॥
छ० ॥ १६५० ॥
भए अर्जुन नारद आप दीन। नल कूबर फेरि सा रूप कीन ॥
डस्यौ पन्नग नंद कौं मग्ग जाते। दई गत्ति गंधर्व को लात धाते
छ० ॥ १६५१ ॥

दुजं दीन गोदान फिरि पच्छ आयं। गिरे कूपकं निग्गसग्गंवस
स्वयं पूतना विष्प दाता तिराई। गऊतम्म नारी सिला कीनि पाई
छं० ॥ १६५२ ।

पढ़ावंत स्रूअ। सुरं रघुराई। गनिका गयन्नं विमानं चढाई ॥
जरासंध षोजी किये अग्र फौजं। तिरे तीकमं तक्कि चरनं सरोजं ॥
छं० ॥ १६५३ ॥

जरा नाम व्याघात करि घात पग्गें। मुकंदं मुकत्ती दई तीर स
पवारै गिनाजं कहां लग्गि तोरे। करों वीनती इत्तनी हथ्थ जोरै
छं० ॥ १६५४ ॥

विसार्यौ न विश्वंभरं विश्व सांरौ। अना अप्पराधं अहं क्यो विसार
अबे होय निरदै न देषौ तमासौ। ग्रह्यौ ग्राह ज्यों गज्जसाई निकासयं
छं० ॥ १६५५ ॥

विना राज आजं सरै कौन काजं। निबाहौ विरुद्दं गरीवं निवाजं
सदाई कहाऔ करुन्ना निधानं। करौ आय साहाय कहि बाहुअ
छं० ॥ १६५६ ॥

करुन्ना करे फेरि अय्यौ संभार्यौ। हरै पिच धूम्मं दियौ सौं विचार्यौ।
ग्रह्यौ बार बेरां सु आणंम वंदी। श्रिया मान अभिमान नष्यो निक
छं० ॥ १६५७ ॥

ग्रह्यौ तेन दिल्लेसुरं काल गत्तं। इवं मेघनादं हनूमान तत्तं ॥
तिनं लंक जाली प्रजाली लकालं। ग्रह्यौ साहि गौरी तिनं काल चाव
छं० ॥ १६५८ ॥

पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना।

था संभरि पाले सवदे, संभरि दीन श्री धरं सुपनं ॥
ब्रह्मा विश्णु महेसं, मूरती तीन एकयं देवं ॥
छं० ॥ १६५९ ॥

इरी ॥ संभरि परि पति सबद्दं। संभरि जेपि श्रीधरं रामं ॥
सुपनंतर दे संभं। समझायौ आय राइ दिल्लेसं ॥
छं० ॥ १६६० ॥

पद्धरी ॥ विन द्रग्ग भयो चहुआन रान । मनं मक्षि रोस सुभिक्ख पान ॥
उद्दस रोस घुटहि नरिंद । आहार पान जल तजिग निद ॥
छ० ॥ १६६१ ॥

रजनी सुअत महुरत्त वभ । देषत दरस सुपनंत सिंभ ॥
आरोहि वृषभ सिर एच तुग । अवह उद्ध सरि चर्म अग ॥
छ० ॥ १६६२ ॥

उर रुड उरग कठ कालकूट । रजिभाल चद बुध जटाजूट ॥
इह वाह पूरि आवद्ध अप्प । रज्जिय विभूति प्रमि पार तप्प ॥
छ० ॥ १६६३ ॥

चैनेत तुड प्रति वर विसाल । वडवान मद्धि झलकत झाल ॥
इह रूप आय उचर्यौ[1] ईस । मम भन्निषेद चहुआन जीस ॥
छ० ॥ १६६४ ॥

आहारि अन्न मति होइ पीन । छुट्टौ सराप पूरव प्रचीन[2] ॥
आहारि अन्न मति छडि मद । उद्धरै आय तुहि भट्ट चद ॥
छ० ॥ १६६५ ॥

कारन्न परहि तुअ अग्ग प्रानि । मम करहु पान बल आसमान ॥
इम कहि ईस हुअ अचध्यान । जग्गयौ राज मौभर[3] विहान ॥
छ० ॥ १६६६ ॥

शाह का वेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज का भोजन कराने की आज्ञा देना ।

वित्त ॥ भौ विहान सुविहान । बोलि हज्जूर हुआवइ ॥
वेनीदत्त सुविप्र । आय सनमुप्प सिताबइ ॥
दिय आयस साहाब । रहौ तुम राजन पासत्त ॥
सो उपाय तुम करो । भषे जिम अन्न उदासइ ॥
आए सु उभै राजन प्रति । वेनीदत्त सुविद्धि कहि ॥
प्रथिराज अहारो अन्न रस । इम जच्चे तुम पाव इह ॥
छ० ॥ १६६७ ॥

(१) ए० उद्दरयौ । (२) ए० कृ० को०—पूरन प्रवीन । (३) ए०।कृ० को०—भौ वर ।

बेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना।

दूहा ॥ तब बेनी दत विप्र कहि। सुनि बंधन सुविहान ॥
अन्न प्रसाद राजन करौ। आस सांस चहुआन ॥छं०॥१६६८॥

कवित्त ॥ तब चिंते चितराज। संभु बर बोल संभारिय ॥
मानि कियो आहार। तिने सब परिकर सारिय ॥
दस बंभन रहे पास। चिन तर[1] भोम सुधारिय ॥
करे पाक विधि विप्र। विविध ब्यंजन रस कारिय ॥
जल उस्न राज असनान किय। बर रोहिय धौतह वसन ॥
करि ध्यान संभु जप निति किय। आहारे अन्नह व्यसन ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इहि विधि विति चहुआन रहि। बर सेज्या सुभथान ॥
बत्त पुरान कवित्त प्रति। सुनहि बचन गुर ग्यान ॥छं०॥१६७०॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना।

चोटक ॥ इति दछ्य कथा सुकथी कथियं। अलिकावलि अंग नमं सययं
भव राजित धूअरसं धुनियं। तन जग्गित रोम रोमावलियं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

कर डोलअ डक डहक्क कियं। विथुरे सिर अर्क कुसुंम हियं ॥
उनमत्त पहुप्प पराग कियं। बड़वा नल नेंन ग्रलं मलयं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

गल चंद लिलाट अमी विसयं। पुनि डंमर डोंरु पुने उचियं ॥
सिर गंग सिरोहिय कै धसियं। सिव आनब देषि लिवा हँसियं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

पुनि बधध चरम्मा करीम जियं। पुछ उच्चत नंदिय के वछयं ॥
पुहकारत भेष लग्यो अछियं। इय चंद कवी कविता कथियं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

(१) ए० कृ० को०—तन।

दूहा ॥ पहिचान्यौ तिहि चंद कवि । वीर भद्र सम वीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जगलिय । अब धरनि न रय्यै धीर ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

धीर भद्र पहिचान रज । पुछिय बत चहुआन ॥
कथ्थ मारथ पारथ सुप्रथु[1] । किम वित्यौ सुरतान ॥
छं० । १६७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार कहना ।

भुजंगी॥ बजी इक्क दिग धक्क दुहु कोद मीरागहीं बग्ग हौद्र अग्गनिप वीर मीरां
तुटै गेन गुरग्गैर होय घोर सोरा फटै धरनि दर राय बर राइ जोर ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सौसातर तरकि भर भरकि मन भुवनदीसा
पर्यौ चिकुट गढ कूट लकेस थान । करषि विकट दनुमाल मय चाल पान ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

बरकि कन्ह कर करकि धन घोर पब्बं । झरनि रुम झमझार गहि चक्क गब्बं ॥
ठय्यौ सागर आगर पब्ब पत्ती । इत्ती उट्ठि चहुआन अनि आन गत्ती ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

पर्यो सिंध धर तुट्टि आघाट बाज । चिहुं ओर सुरतान नीसान गाज ॥
मनों पंजर बान हनुमान औपै । घनं घाय सोमेस तन बीर कोपै ॥
छं० ॥ १६८० ॥

चिहु[2] बाह सामंत साधट्ट कट्टैं । छत छक्क उड्डि छिछ्छ[3] भुअ भीर पट्टैं ॥
सुने ईस उम्मा बलीभद्र कथ्थ । भर भीषमं द्रोन भारथ्थ पथ्थं ॥
छं० ॥ १६८१ ॥

पर्यौ कुंभ दल मद्दि चहुआन ऐसौ । घिरे बंनर बीर नीरद्धितैसौ ॥
परें पंच सिवमाल जरि कंठ इथ्थे । तहा चंद उट्ठो उर माल दिथ्थे ॥
छं० ॥ १६८२ ॥

बलीभद्र जैत जद्दो जाम सिंध । भरं चांमंड पावस बीर बंध ॥

(१) मो०—कि प्रभु । (२) ए० कृ० को०—चिहु बाह सावंत सामंत कट्टै
(३) ए० कृ० को०—सीस ।

रनं बग्गरी देव गुर राज रामं । हनू लोह लोहान छोहान तामं ॥
छं० ॥ १६८३ ॥

परस्सांग भारथ्थ पूजा पहारं । घटं चाट संग्राम बंकट्ट धारं ॥
करन कुंडली राइ अनभंग भारे । जुरे आजु आवाज त्रयलोक नारे ॥
छं० ॥ १६८४ ॥

अरें सुंघुल्ले सोषियं ओन कंठं । परीहार पीपा हरं माल संठं ॥
परे सत्त दह सूर सामंत षग्गे । ग्रहं भान जिम मीर चिहुकोद लग्गे ॥
छं० ॥ १६८५ ॥

सुनिय चंद झरिहनेंन जल उरह सोषं । गहे दिष्षि समदेव सुरतान घोषं ॥
छं० ॥ १६८६ ॥

दूहा ॥ कहै बीर हिन्दू तुरक[1] । सुनि कविचंद सुजान ॥
बदि सावन पंचमि दिवस । गह्यो मेछ चहुआन ॥छं०॥१६८७॥

युद्ध में मृत सामंत एवं रावत योद्धाओं की नामावली ।

पद्धरी ॥ सुनि चंद भट्ट कहै भद्र बीर । परि सुभट सूर चहुआन धीर ॥
पति चित्र कोट परि समर राव । दस तीन सहस अरि करन धाव ॥
छं० ॥ १६८८ ॥

चामंड राव परि दंड दाह । जदु जाम गूझ आजान बाह ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बीर । पामार जैत भुक्कि षग्ग धीर ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

परसंग राइ षोची प्रचंड । वग्गरी देव अरि पारि ठंडि ॥
परि राज काज गुर राम राज । सक सिलह दार सारंग साज ॥
छं० ॥ १६९० ॥

परि पन्न धार परिहार षेत । [2]गुज्जरह राम परि स्वामिहेत ॥
साहाव सेन करि सूम सोम । दिषि प्रात तार जनुथान थाम ॥
छं० ॥ १६९१ ॥

मुरि मुगध षेत जिन स्वामि जीन । बिन जुद्ध बुद्ध को[3] बुद्ध हीन ॥
सकरह सिंघ मोरी सुराव । बिन लोह छोह छंद्यो पराव ॥
छं०॥ १६९२ ॥

(१) मो० चरित । (२) ए० कृ० को०-परि जुझिझ जुद्ध-राजि स्वामि हेत ।
(३) ए० कृ० को०—को ।

जगमन्न राव धधेर [1]साम । सम सथ्थ षेत छद्यौ पराम ॥
निक्कर्‌यौ राव हाडा सुमेर । हम्मीर सुतन तन लोह झेर ॥
छं० ॥ १६९३ ॥

गध्धरह राव सारग देव । निक्कस्यौ पच हय कट्टि तेव ॥
चालुक्क वभ वर भान साह । हय अट्ठ कट्टि गुर गिम्म गाह ॥
छं० ॥ १६९४ ॥

रनसट्टि घाव वीध्यौ जुअग । उप्पारि लीन जब वित्त जग ॥
परिहार वीर[2] आयौ सुपुट्टि । रन वीर सुतन करि तिथ्थ तुट्टि ॥
छं० ॥ १६९५ ॥

सुध्यौ सुषेत नर पुट्ठि आय । उप्पारि षेत भर केकजाइ ॥
सर सत्त रच्यौ रन चाहुआन । तिन कच्यौ सुक्रम अदभुत्त पान ॥
छं० ॥ १६९६ ॥

गुर राम अग अनभग कीन । ननभेदि सस्त्र सब अग तीन ॥
सथ्थ्यौ मेछ हिट्टू नरिंद । कट परे असुर हय गय सुभिंद ॥
छं० ॥ १६९७ ॥

सब सहस्र वीस परिहदु सेन । दुअलप्प मिच्छ कटि पित्त तेन ॥
अनि सुनिय कथ्थि जे कहिय दच्छ । सुनि चद अवन धर पर्‌यौ मुच्छि
छं० ॥ १६९८ ॥

दुहा ॥ करि जुहार ढिल्लिय नयर । मुक्कि नयर जुगिनेस ॥
जस भावौ तस न्निम्मयौ । करिन वीर अदेसु ॥छं०॥ १६९९ ॥

राजा का बधन सुनकर कवि का मूर्छित होकर गिर पड़ना ।

सुनिय बत्त कविचद न्निप । तन मन कप्पौ ताम ॥
पर्‌यौ विकल धुक्किय धरनि । कट्टि मूल तर जाम ॥
छं० ॥ १७०० ॥

वीरभद्र का कवि को प्रबोध करके समझाना ।

कवित्त ॥ कवि आश्वासित वीर । बाहु धरि धरनि उठायौ ॥
मुष आरोहिग पान । ग्यान गुर तथ्थ सुनायौ ॥
न करि दुष्प हो भट्ट । काल गति कठिन दुरिथ जय ॥

(१) ए० कृ० को०—ठेठरे । (२) ए० कृ० को०—धीर ।

तुहि रुवंथो जालप्प । काज निप काज अरिय तय ॥
तुहि भयो इष्ट अभिष्ट जे । साइ क्रित कारन आनि जिय ॥
संचरहु दिल्लि मारग सुकवि । करहु राज उद्धारनिय ॥
छं० ॥ १७०१ ॥

कवि का कहना कि मैं बाल स्नेह के कारण विकल हूं ।

कहै ताम कविचंद । अहो बीराधि बीर सुनि ॥
हम मनुच्छ भय[1] मोह । उदधि बुड्डै सुतत्त तुनि ॥
हमहि राज इकवास । सथ्थ उतपन्न संग सदि ॥
नेह बंध बंधियै । करिय अति प्रीति राज रिदि ॥
सामंत सकल अति प्रेम तर । बाल नेह उर धुर कियौ ॥
बलिभद्र नेह संसार सुष । किम सुनेह छंडै जियौ ॥
छं० ॥ १७०२ ॥

बीरभद्र का कवि से कहना कि अब चिंता न करके राजा का उद्धार कर ।

तब हँसि जंप्यो बलिभद्र । अहो बरदाय मोह भय ॥
कहौं ज्ञान अति आदि । उअर संग्रहौ सोय सय ॥
तुम उतपन संग राज । षपति होय है जुराज सँग ॥
तुम सहाव सम्मान । आय बंध्यौ सुब्रह्म अँग ॥
मम करहमोह चिंता चतुर । धरहु अथ्थ गुर ग्यान हिय ॥
तुम चलो सु कवि जोगिनि पुरह । करहु राज उद्धार दिय ॥
छं० ॥ १७०३ ॥

दूहा ॥ कहै सु कवि गुर बीर सुनि । जिहि आदि अंत जुति सग ॥
नेह गंठि रस रंजियौ । किम चुक्कै चित रंग ॥
छं० ॥१७०४ ॥

बीरभद्र का कवि को प्राचीन इतिहासों का प्रमाण देकर समझाना कि एक दिन सब का अंत होता है होनी अमिट है अस्तु शोक न करके कर्तव्य पालन करो ।

(१) ए० कृ० को० मन ।

कवित्त ॥ परम हंस फल बस । राम वाचिष्ट मंत्र सुनि ॥
अवधि राज रघुबीर । नटियौ सभ मंडि छत्र धूनि ॥
छिन नरिंद लहि निंद । भयौ चंडाल परस तह ॥
न छुअ न छुअ सुहित्त । मुहि, सु लग्यौ कलंक इह ॥
जाग्रत जोग दिग्यौ सुपन । न करि चंद सनमंध दुप ॥
संचरिय लोक सोकह वसन[1] । कह कविंद्र लम्भिय समुप[2] ॥
छं० ॥ १७०५ ॥

सोक लोक संसार । मिटै आव सर[3] ब्रत्त कह ॥
तुअ जुगिंद जट्ट पुत्र । ग्यान गोरष्य तत्त लह ॥
हो मनुष्य म्याया समंद । तिर तह तन बुड्डिय ॥
हरि तरंड लागत । कोह कंदल सों जुड्डिय ॥
बीरा[illegible] बीर जपहि सगुरु । जहा सुजीव दुष्पन लहै ॥
देवाधि क्रम्म पुलय कमल । सो सिव पुत्र सचिय[4] कहैं ॥
छं० ॥ १७०६ ॥

जय करन भूपति चसग । वाचिष्ट बुलायौ ॥
विस्वामित्र सो समर । पर्यौ अटो नह आयौ ॥
नेम रिष्य मप मंडि । सुन्यौ वाचिष्ट लोपि गुरु ॥
आप दियौ करि कोप । भयौ चंडाल भूप डरु ॥
तप जोर ओर दिस लोक रचि । विस्वामित्र पद इंद्र दिय ॥
कह्यौ वीरभद्र कविचंद सम । च्यार जुग्ग लगि अमर विय ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

विस्वामित्र तिहि रचिय । साप तरवर लय भानुप ॥
प्रात समय जिम कुसुम । प्रफुल्लि तन पाय महा सुप ॥
नव रस करत विलास । धरे उर अंदर मच्छर ॥
सभ्भ परत कुम्हिलात । कहत बहु जिए स वछर ॥
तुम तौ नरिंद राजस भुगति । बहुत दिवस मृत लोक महि ॥
सताप सोक माया तजहु । वीरभद्र समझाय कहि ॥
छं० ॥ १७०८ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुवन । (२) मो० सुसुप ।
(३) ए० कृ० को०—मिटै आवन सर ब्रत कह । (४) ए० सज्जिय ।

एक भूप रेवंत। तास पुत्री रेवंतीय ॥
पर नावन की बार। सदा सो धनुष [illegible] ॥
ब्रह्म अग्ग लै जाय। रह्यौ [illegible] ऊभौ सुघरीय दुअ ॥
तिहि धट काके गिनत। [illegible] छत्तीस बरष भय ॥
ते परन नरिंद कविचंद सुन्नि। काल आनि इक दिन हरिय ॥
सोमंत [illegible] नृप मोह तजि। बीर [illegible] भद्र इम उच्चरिय ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

पिथ्थलाज रिषराज। करत कैलास तुंग [illegible] तप ॥
पुत्र हेत मन आनि। गयौ ब्रह्मा देषन अप [illegible] ॥
होइ प्रसन्न कह्यौ मंगि। तोहि इछावर अप्पहु [illegible] ॥
तिहि अप्पिय मुह अचल। राज कछु वस्त समप्पहु [illegible] ॥
हँसि कहिय मात सावित्र तब। पुत्र भजन भगवान [illegible] करि ॥
संसार सकल काचौ अवर। ताहि छंडि आतम उधरि [illegible] ॥
छं० ॥ १७१० ॥

बीरभद्र का कवि के सिर पर हाथ रखकर मुल गुरु मंत्र देना।

दूहा ॥ तब हथ्थ धर्यौ सिर भट्ट कै। षल बंधन कविनथ्थ ॥
तब त्रिकाल सुरझ्झिय मनह। गहि जोगिनिपुर पथ्थ ॥
छं० ॥ १७११ ॥

कवित्त ॥ तब कहै बीर कविचंद। ग्यान गुर कहौं। गहौ उर ॥
नाभि एक संषिनी। भद्दि दस लोपि गग्गि गुर ॥
तिहि संपूरन रस भर्यौ। ब्रह्म रंध्रह सधि आसन ॥
उलटि कमल उद्धर्यौ। बंधि तारी सुर सासन ॥
प्रज्जारि जोति प्रग्गट कर्यौ। चढ्यौ तेन आयास दुति ॥
छुट्टौ सुमोह भव पास सह। मिलिय अप्प हरि आस जुति[1] ॥
छं० ॥ १७१२ ॥

(१) ए०-क०-को०-हुति।

आसन मूल उधारि । इंस ससि हर मुरि बंधहु ॥
चिसर रोकि द्रिग जोरि । अग्र नासिक द्रिग सधहु ॥
सबद एक धुनि रूप । मद्धिता जोग प्रगासहु ॥
चमकि चमकि घन गरजि । किरनि बिद्धौ न अयासहु ॥
झलकत मे न अग्रे सुमनि । निकट निरजन रह नित ॥
गुर अथ्थ तत्त ग्यानहि गहौ । जिम छुडौ मन मोह मत ॥
छं० ॥ १७१३ ॥

कविचन्द का मोह दूर होकर प्रसन्न चित्त होजाना ।

दूहा ॥ तब र ज्यौ कविचद चित । उर लहौ अविनास ॥
जान्यौ कारन अप्प जिय । उर आनद्यौ तास ॥
छं० ॥ १७१४ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके रावल समरसी प्रमुप सामत मोच, हमीर बधने राजा घल पराक्रम कथनो नाम राजाग्रहन चद दिल्ली आगमनो नाम छाछठवो प्रस्ताव समाप्त ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज रासो ।

छठां भाग ।

अथ बान बेध प्रस्ताव लिष्यते ।

[सड़सठवां समय ।]

देवी जालपा के मन्दिर के कपाट खुलने पर कविचन्द का दिल्ली को जाना ।

दूहा ॥ कहै चद बलिभद्र सम । अहो वीर जटजात ॥
इह विस्रम सुस्रम सुमन । वज्रपाट विध्धाट ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ वज्रपाट विध्धाट । पाठ उच्चारिग सबद सुनि ॥
घट घोर सक्कमन । भद्दय आकास सवन[1] धुनि ॥
तप्पि त्रिविध गुन तीन । भौन जोगिनि पुर थानह ॥
गहन चद विय अध । सुनिय सचरि किलकानह ॥
परिनाम विरत उर तन्न मन । आस वास आसन तज्यौ ॥
रस राज सपिम्मह मित्त तन । भ्रम्म छाडि भ्रम्मह भज्यौ ।
छं० ॥ २ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ रह ईस अलक्कह थान । छहक्किय जम्मरु घट्ट करान ॥
कम्यौ रह सथ्थ बलीभद्र वीर । प्रसंसिय चदह चित्त सुधीर ॥
छ० ॥ ३ ॥

चल्यौ रह जोगिनि थान सुभट्ट । परी हिय गठि मनों परि पट्ट ॥
सुरत्तह चित्त निरंजन अप्प । धर्‌यौ हिय ध्यान अजप्पह जप्प ॥
छ० ॥ ४ ॥

चल्यौ रह अप्पन मल्लह सुतन । रच्यौ निरकारवि खीयन मन ॥
धर्‌यौ मन अप्पन सूनि सुभाइ । सुपपति धाम धर्‌यौ निज माय ॥
छ० ॥ ५ ॥

(१) ए० कृ० को०—सबद ।

धरी रह मग्ग अमग्ग सुथान । न मंनहि उंचरु नीच नियान ॥
न मुगग्गहि छुद्ध पिपास सुमंन । तरस्सहि सीतरु ताप सुतंन ॥
छं० ॥ ६ ॥

प्रपु छहि कोय न ऊतर देय । उलट्टिय जीह सुधारस लेइ ॥
न लष्पहि ग्राम न थान उघान । तरस्सहि ताप न सुष्प नमान[1] ।
छं० ॥ ७ ॥

न बूझहि ताप न तस्स सरम्म । चिंजामन वासुर तास विरम्म ॥
भयौ कवि ग्यान ग्रथस्सित रूप । न मंनहि अंतर अम्मरु भूप ॥
छं० ॥ ८ ॥

नहीं सुष नंषत ताप असीस । चरन्न उलास सुमंनन दीस ॥
सजै सुविरास भिरामह भुष्प । चले चकि दिस्सिय रोह सरुष्प ॥
छं० ॥ ९ ॥

चल्यौ निज मग्ग सुमन्न उसहास । सँपत्त सुदिस्सिय सारध मास ॥
छं० ॥ १० ॥

दूहा । कवि आयौ दिल्ली पुरह । देष्यौ नयर विरूप ॥
बिन आभ्रन नर नारि सब । बिना तेज ग्रह भूप ॥छं०॥ ११ ॥

श्रीहीन दिल्ली नगर की दुर्दशा देख कवि का हार्दिक विचार वर्णन ।

ग्रेह गयौ कविचंद तव । मन गग्गनिय दिसान ॥
पुत्र कलत्र मिलंत कवि । सित जट्टे हित जान ॥ छं० ॥ १२ ॥
बर पुरन्न लोइय सघन । कन दिट्ठे नहि राज ॥
मन माया छंडै ग्रहौं । प्रान प्रमुक्कन काज ॥ छं० ॥ १३ ॥
प्रथम वैर भंजन मनह । दुति सांई उद्धार ॥
लोक जोग कित्तिय कहैं । सुकीय चंद सुद्धार ॥ छं० ॥ १४ ॥
वित्त ॥ हक्कि चित्त कवि अष्प । पेम राजन पर अत्यौ ॥
नयन मंडि सब निरषि । दिष्षि सब लोक विरत्यौ ॥
लषि आयौ कविचंद । नयर नर नारि सबनि मिलि ॥

(१) ए० कृ० को० समान ।

मनहु महुर मधु मास। अहो अचिज्ज चित्त वलि ॥
पुच्छै न कोय उत्तर दियै। नयन झरै गिर विझ्झरन ॥
उच्चै न वच्च आपूर कठ। रुवेदस वपै ताम मन ॥
छ० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ निरषे कवि सब लोक मुनि। दुरज काल गति मान ॥
राम प्रेम अति चास उर। चल्यौ अप्प गृह गाम ॥
छ० ॥ १६ ॥

कवि की स्त्री का सब हाल कहना और राजा का बंधन सुन कर कवि का दुखित होना।

इम कवि आयौ जात करि। गृह सुपिष्पि द्रिग काज ॥
पुछ्यौ सुत्त सुतीय तिहि। कहा करै प्रथिराज ॥
छ० ॥ १७ ॥
तब सुचिया उत्तर दियौ। बोलि सुहावने बैन ॥
गोरी दल नृप संग्रह्यौ। कियौ साह विन नैन ॥ छ० ॥ १८ ॥
सुनत श्रवन धरनिय परिग। हरि हरि हरि सुप जपि ॥
उठ्यौ मनह विश्राम करि। भयौ विव्रिन[1] मन कपि ॥
छ० ॥ १९ ॥

कवि का राजा के उद्धार का निश्चय विचार करके योग धारण करना।

मन राजन उद्धार मति। मान काल छत नद्धि ॥
भसम अग औ धूल किय। जोग रूप जट वधि ॥
छ० ॥ २० ॥
पुचि पुच पारस फिरिग। तब तरसे कवि तपि ॥
छडि वसन दिपि रूप दुर। मन विरत्त रत अपि ॥
चद वाक्य ॥ छ० ॥ २१ ॥
वृथा गल्ह ससार सुप। गल्ह सत्ति अविनास ॥
आषेपित आतम सरिस। करौ गल्ह गुर भास ॥ छ० ॥ २२ ॥

(१) ए० कृ० को०—विभ्रम।

कवि का भवानी की स्तुति करके निर्विघ्न ग्रंथ की पूर्ति के लिये बिनय करना।

भुजंगी॥*ॐकारं नमौ कल्यानी सु कमला। कला रूपिनी काम दाई सु विमल
कुमारी करुन्ना कमंक्षा कराली। जया विज्जया भद्र काली कंकाली
छं० ॥ २३ ॥

शिवा शंकरी विष्णु वीमोहनीयं। वराही चमुंडा दुग्गा जोगिनीयं
महालच्छमी मंगला रत्त अंषी। महामाइ पारवत्ती ज्वालमुंषी॥
छं० ॥ २४ ॥

तुहीं गंग गोदावरी गोमतीयं। तुहीं नर्वदा जमना सरस्वतीयं॥
तुहीं द्वारिका मथुरा रूप कासी। तुहीं तीरथं अब्ब मद्धे निवासी
छं० ॥ २५ ॥

तुहीं कोटि सूरिज्ज लोइं प्रकासा। तुहीं चंद कोटेक आनन्न भासा
तुहीं कोटि सामुद्र हीयै गंभीरा। तुही कोटि प्राकंग लीयै समीरा॥
छं० ॥ २६ ॥

तुहीं कोटि आकास विस्तार धारा। तुहीं कोटि सुम्मेर छाया अपार
तुहीं कोटि दावानलं ज्वालमाला। तुहीं कोटि भैभीत जंमं कराल
छं० ॥ २७ ॥

तुहीं कोटि सिंगार लावन्य कारी। तुहीं राधिका रूप रीझे मुरारी।
तुहीं विश्वकर्ता तुहीं विश्वहर्ता। तुहीं थावरं जंगमं मै प्रवर्ता॥
छं० ॥ २८ ॥

तुहीं पातिकं नासिनी नारसिंघी। तुहीं जग्गमाता अनेकं सुरंगी
तुहीं साकिनी डाकिनी रूप धारे। तुहीं आप लग्गे तुहीं यै उवारे
छं० ॥ २९ ॥

तुहीं तोहि जानै सुतेरे किरत्तं। कहां लग्गि चंदं लषे तो चरित्तं॥
अजमेर थानं सिकारं भुलायौ। तहां बीर बावन्न सिद्धं मिलायौ॥
छं० ॥ ३० ॥

* इस छन्द के कई चरण भुजंगी छन्द के प्रस्तार के विरुद्ध पड़ते हैं परन्तु पाठ चारों प्रतियों में समान है।

पहिल्ले उमा कामती मट्ट किन्नौ। वल सेवरा मच छडाय दिन्नौ॥
वढे वाद आयौ सुदुग्गा केदार। तहा अविका अव रय्यौ अपार॥
छ० ॥ ३१ ॥

विना पून पछै किए एह वोलंगयौ रूकि सा द्रोह मझ्झ दिवा
पठायी नृप कगुरानी पुकार। उठी बाहर ठाहर फेरि धार॥
छ० ॥ ३२ ॥

सकत्ती हरी तै सकत्ती सुभाट। ग्रह्यौ मेछ सोईन पुल्लै कपाट॥
गयौ गज्जनै पाति की पत्ति लीयैं। करुन्ना न आई पल दुष्ट हीयै
छ० ॥ ३३ ॥

इसं पत्ति कट्टी कुपे पिथ्थ अपी। पर्यौ पजरै जानि वेहाल पपी
दई गत्ति राज गती कौन जानै। कहा लेप लेप्यौ अजू चाहुआनै
छ० ॥ ३४ ॥

जिनै हथ्थल सिंघ हस्ती निपातै। तिनैं घेरि मारै कुरंगी सुलातै
जिनै वाज सिकार पिसौ सवा कीतिनै चप्प लावै दिपावै दवा वं
छ० ॥ ३५ ॥

इसी गत्ति तेरी अलप्प कहानीकहा लौं गिनाऔं कहौ वागवानैं
करौ राव तै रक रकं सुराव। कहा हाथ आवै किए ए सुभाव
छ० ॥ ३६ ॥

पराक्रम छत्ते अछत्ते भए क्यों। दिल्लीपत्ति से वधि के मा दए क्यों
हुए अभ्झ वैरीन की जित्ति दिय्यौकिना चाहियै सेवक कौन पिथ
छ० ॥ ३७ ॥

वुरे मुय्य वारे ल गूरै सुहानै। सुर सारिये सूर सामंत मानै॥
कर जोरि जपौ सुनौ श्रीभवानी। भली कित्त साहाय ससार जानै
छ० ॥ ३८ ॥

करौं पूरन पुस्तक अध्य जौ लौ। विधन्न हरौ संभरी राव तौ लौ
छ० ॥ ३९ ॥

दूहा। मौत करन कारज चल्यौ। जौ मात प्रसादे भोग॥
करि रासो प्रथिराज कौ। कित्ति चलाऔं जोग।
छ० ॥ ४० ॥

अन्न पान पानीय मुकि । षुध पिपास तजि मोह ॥
देव दुग्ग सों चंद कवि । गय राजन वर छोह ॥
छं० ॥ ४१ ॥

कविचन्द का कोरी पोथी हाथ में लेकर भवानी का ध्यान करना ।

कबित्त ॥ भट्ट ग्याति नप पिम्म । मित्त सामंत सूर सब ॥
उभय सुरिन प्रिथिराज । तेने निवृत्त करौं अब ॥
प्रान कलपि पति काज । एक रिन एम उधारौं ॥
जीह गंठि गुन गरुअ । उभै रिन नाम उतारौं ॥
इम चिंत चिते कविचंद उर । अप्प थान जुग्गिन गयौ ॥
आकृम मंच देवी सुकबि । बिन अप्पर पुस्तक लयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रासो की छंद संख्या वर्णन ।

ग्रहि पुस्तक कविचंद । मंच सरसैं उच्चरिय ॥
मुष निवास किय जाम । ग्रन्थ सुर वर विस्तारिय ॥
लिषि पुस्तक कविचंद । सहस सत्तह नष सिष उभ ॥
मूत भयछ्यत वृत्त । सबै भूत वंस क्रम सुभ ॥
इम करिय ग्रंथ पूरन सुकबि । पढ़िय पुत्र हथ्थे दियन ॥
लिषि मंच पछ्यय कबि जस्स सुअ । अप्प मग्ग गुज्जन लियन ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ इम चिंतिन कविचंद करि । भौमन वच क्रम एक ॥
सारद सुभ मति ध्यान धरि । वानी वचन विवेक ॥
छं० ॥ ४४ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का वर मांगना ।

अरिल्ल ॥ लै पुस्तक पढ़ि मंच घनं । करि कविचंद सुवेद धुनं ॥
बहु भंति अनेक अलाप कियं । बहु जाप सु मंचय होम बिय
छं० ॥ ४

दूहा ॥ बानि उमा माधुर धुनी । पढ़ि अनेक रस भति ॥
देवि दरसि कविचद कौ । झलहलत दीसत ॥ छ० ॥ ४६ ॥

सरस्वती वोच ॥

जाहु अचिंतिय कवि कहय । वर सुभट्ट गुन वीर ॥
जौ प्रसाद वर मागिहै । दीय वयन मुह तीर ॥ छ० ॥ ४७ ॥

कवित्त ॥ वाल समपिय भत्ति । भट्ट लिन्नौ संपुत करि ॥
सोगुन मुह अप्पयौ । जिहि सगुन विस्तरै राज धुरि ॥
चलै कित्ति जग मग्ग । चद चदान देव वर ॥
धरन राज अप्पन्न । वास न्निम्मान अप्प कर ॥
जे देव मनत तरवारि तन । तिहि अप्पन चहुआन रिन ॥
त तत्त वान जानै सकल । अकल कित्ति जपौ सुमन ॥
॥ छ० ॥ ४८ ॥

रासो के रचना समय की सीमा ।

दूहा ॥ उभै मास दिन अट्ठ वर । किय रासौ चहुआन ॥
रसना भट्ट सुचद कौ । बोलि उमा परमान ॥ छ० ॥ ४९ ॥
सहस सत्त रूपक सरस । गुन सुदर बहु वित्त ॥
ले पुस्तक कविचद कौ । दिय माता बहु रित्त ॥ छ० ॥ ५० ॥

कवि का अपने पुत्र जल्ह को रासो पढ़ाना और स्त्री से विदा मागना ।

फिरिय आय जोगिनि पुरह । रासौ गुन दै पुत्त ॥ य ॥
पुच्छि पीय परिवार सब । कहौ तौ साधौ मुत्ति ॥छ०॥ ५१ ॥
मिलन चद चहुआन वर । पुच्छि सुचिय मत चार ॥ य ॥
दपति गठि अछेह बधि । अरु न कि अछिनन चारु ॥छ०॥ ५२ ॥
वरनिय वर पुछ्यौ सुवर । मम तजि जिय तर जीय ॥ य ॥
सो अहि वर पावन्न करि । सो ढिल्लिय अन पीय ॥ छ० ॥ ।

कवि का अपनी स्त्री से कहना कि संसार में एकम कीर्ति ही सार है।

कविचँद वाक्य।

वित्त ॥ न रहै तन धन तरुनि। तरुनि किरनह उदै असतं ॥
चंद कला परिपूर्ण। राह करि असत विगरतं ॥
न रहै सुर नर नाग। जोग भग्गै जुग भग्गै ॥
न रहै बापी कूप। संत सायर गिर लग्गै ॥
जानै सुजान अच्छर अमर। विवरि विषरि पूछत रहै ॥
भषि काल व्याल कषि काल सब। रहै तौ गुर गल्हां रहै ॥

छं० ॥ ५४

रहैं जुगैं जुग गल्ह। द्रुग्ग परहरे अष्ट गिरि ॥
दिष्टि मान विनसिहै। इंद्र तुटि राह सुसंकरि ॥
तहां हहंत जप बली। बंध नन नाटिक कथ्थं ॥
माया तन[1] चुक्कयौ। चंपि कल पंच सु हथ्थं ॥
अब कित्ति कित्ति भाजै नहीं। गयौ प्रान सें संग्रहै ॥
दो हंस हंस संजोगि सों। मिलन हथ्थ अग्गी दहै ॥

छं० ॥ ५५ ॥

॥ सुभ विसाह न करौ चिय। गुर गल्हां गुन संचि ॥
जो दिष्षिय सो भज्जिहै। कलन कहौ वर वंचि ॥

छं० ॥ ५६ ॥

का योगी भेष धारण करना और स्त्री का पूछना कि योग की पराकाष्ठा क्या है।

द्रुपन लैं बंदै सु कवि। तच दिषावन चीय ॥
जुग गहँनौ माया तजन। चित गज्जन दिस कीय ॥

छं० ॥ ५७ ॥

[1] ए० तेन।

मोतीदाम ॥ ग्रहै वर द्रव्यन तत्त प्रकार । रसी रस निह्न सुविद्ध सुभार ॥
भयौ कल्पना बर बीर सुभट्ट । छिन तत पत्त सुतत्त अघट्ट ॥
छ० ॥ ९८ ॥

सुगल्ह बिना दिय बीर सुभट्ट । धर्‌यौ सिर केसन जट्ट सुकट्ट ॥
छिन छिन द्रव्यन लै कर तथ्य । करै प्रतिव्यव सुरगिय कथ्य ॥
छ० ॥ ९९ ॥

हहतुअ हह तु हत्तुअ कौन । सुनत सु सह रहै करि सौन ॥
कहौ तुअ जाति सुभतिय नाम । कहौ तिहि जोति प्रगट्टय काम ॥
छं० ॥ ९० ॥

अजब्ब गयान कहौ गुर गत्ति । सुप दुप भोगिय को जिय पत्ति ॥
सु कौ प्रभु कौन पुरौ कह बास । कहौ अविनासिय काहि विनास ॥
छ० ॥ ९१ ॥

सु को सुविद्यनि दासन कौन । सु को वर तद्व्य कौन समौन ॥
कहौ रत रत्त विरत्त प्रकार । को जोग तरन्न बुझै नन भार ॥
छ० ॥ ९२ ॥

कहौ कहि मग्ग पिया पिय जोति । कहौ कहि कम्म सुगत्ति सुहैति ॥
अहौ कथि कथ्थि कवी जल विंदु । सु उत्तर ताहि दियै कविचंद ॥
छ० ॥ ९३ ॥

कवि का स्त्री को योग साधना की विधि और उस की सिद्धि संक्षेप में बतलाना ।

दोधक ॥ द्रव्यन लै प्रतिव्यव सु सहय । चंद सुचंद कला प्रति बहय ॥
द्वादस दून तितन तें जनिय । पंचनि आस प्रकित्ति सु हनिय ॥
छ० ॥ ९४ ॥

ता सर एक कवल्ल प्रगासिय । देषत ताहि गयौ भ्रम नासिय ॥
नीलहि नील चरन्न सु मुत्तिय । जुत्तिय मान प्रमान सु जुत्तिय
छ० ॥ ९५ ॥

तापर सह अनाहद होइय । ब्रह्म अनंत अनंद सु जोइय ।

रेचक कुंभक पूरक पूरय । नाभि बटै जुग वह संजूरय[1] ।
छं० ॥ ६६ ॥

उट्ठय बीर कलंकल वानिय । भौंर सुभट्ट भयानक जानिय ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अरिल्ल ॥ बेद अभट्ट सुतत्त प्रकारं । पंचरु बीर प्रकित्ति सुमारं ॥
सुष प्रति तीन भयं गुनवासी । विंदुग लुट्टिय मुगति सुरासी ॥
छं० ॥ ६८ ॥

नीसल नील बरन्न सुमोती । प्रोति प्रमान प्रमान सुजोती ॥
भुग्मि द्रवै द्रिग अंभर भीजै । द्वै भृगुटी रविमंडल[2] लीजै ॥
छं० ॥ ६९ ॥

नासिक अग्र दिठै हिठ रष्षै । है उर मंझ अलष्ष सुलष्षै ॥
कांम विराम षगैं षग षंडय । जीरन वस्त्र जेम तन छंडय ॥
छं० ॥ ७० ॥

जैसौ नीर मनसा निध पायौ । तौ ब्रह्म अनंद अनंदह जायौ ॥
पंच दमै मनसा दम मारै । कुम्भ सबै सिर तै भर डारै ॥
छं० ॥ ७१ ॥

आंसन इष्ट विभूति सुदीसन । ग्यान सु छत्र विग्यानन सीसन ।
श्रीमन मच्छर मारहि मारं । तौ भ्रम दाह तिरै भव सारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

मारुत रस भोगंतत भंती । ग्यान षग्ग विस्तर कर दित्ती ॥
कहै संकि तजि संक न भट्टं । चलै चंद मुगती वर वट्टं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जो जग दिष्ष सु दिष्षन कव्वी । ज्यौ घटिका पट दस्स झहि हव्वी
है घट घट्ट घटं बहु जानै । पूरन ब्रह्म ब्रह्म पहिचानै ॥
छं० ॥ ७४ ॥

जोति मैं जोति सु तोहि बतायौ । सोइ चंद विरलै किहि पायौ
छं० ॥ ७५ ॥

। वपु विभूत बहु विंटयौ । जट बंधी जम जूत ॥
मन माया मुक्कवि चल्यौ । को पूजै अवधूत ॥ छं० ॥ ७६ ॥

१) ए० कृ को-पूरय । (२) ए० कृ० को०-तीजै ।

चंदचिया वाक्य ॥

कवित्त ॥ सुनौ चंद पापड्ड । केस लोचै जट धारै ॥
कीय भसम ऋतु[1] काम । अन्न तापसी विचारै ॥
वेद कुरान पुरान । ने असा सुर नर ध्यान ॥
परम मंस रावर भगत । कव्वि मुनि सेवि सुजान ॥
त्रिक्रम सबद इह गहह कहि । मच जंचक वेदत पुन ॥
कौ धूत रत्त अनरत्त कौ । सबै तप्प माया तप्पन ॥छ०॥७७॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ इन विध जोग जुगति लिपि । चिय बुझ्झी तन ग्यान ॥
क्रोध मोह[2] माया तजै । और विटंबन जान ॥ छ० ॥ ७८ ॥

कवि की स्त्री का शंका करना कि एक पथ दो काज कैसे सध सकते हैं ।

चंदचिया वाक्य ॥

चौपाई ॥ उत्तर जानि चिया पय लग्गी । तुम पिय नाद अनाहद जग्गी ॥
जोग[3] जुगति उद्धार न साम । दो दो गहह सरै किम काम ॥
छ० ॥ ७९ ॥

कविचन्द का उत्तर ।

चंद वाक्य ॥

दूहा ॥ सकल जोग सांइ सुध्रम । तप जप सांई ध्रम ॥
मोहि मुगति सूझत मरम । सुजस कित्ति गुन क्रम ॥छ०॥८०॥
दिवस रयन राजन सुमति । अरु गज्जन वै रोस ॥
मन वच क्रम्म एकग होय । सांमि उधारौ दोस ॥ छ० ॥ ८१ ॥
[4]उभै सत्त नव रस त्रिगुन । किय पूरन गुन तत्त ॥
रासौ नाम उदंडि भुति । गहौ मत्ति मै सत्ति ॥ छ० ॥ ८२ ॥

(१) ए० कृ० को०— ऋ ।
(२) सो०—लोभ ।
(३) ए०—जोर ।
(४) मो०—उभय सत्तर नौ रस त्रिगुन ।

कविचन्द के पुत्रों के नाम औ सर्व श्रेष्ठ जल्ह को कवि का रासो पढ़ा कर रवाना होना।

कवित्त ॥ दहति पुत्र कविचंद । सूर सुंदर सुजानं ॥
जल्ह बल्ह बलिभद्र । कविय केहरि बखानं ॥
बीर चंद अवधूत । दसम नंदन गुनराजं ॥
अप्प अप्प क्रम जोग । बुद्धि भिन भिन करि काजं ॥
जल्हन जिहाज गुन साज कवि । चंद छंद सायर तिरन ॥
अप्पौ सुहित्त रासो सरस । चल्यौ अप्प राजन सरन ॥
छं० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ दहति पुत्र कविचंद कै । सुंदर रूप सुजान ॥
इक्क जल्ह गुन बावरौ । गुन समंद ससि भान ॥ छं० ॥ ८४ ॥
आदि अंत लगि वृत्त मन । वृन्नि गुनी गुन राज ॥
पुत्तक जल्हन हथ्थ दै । चलि गज्जन नृप काज ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कविचन्द का अपनी धुन में मस्त होकर गजनी की राह लेना।

॥ वपु बिभूति बिंटियौ । केस जग्गान बिधि बंधी ॥
बहु बियोग ग्रह जोग । चित्त जुग जुग्गह संधी ॥
छुध पिपास दम मोह । छोह बिंध्यौ बर सांई ॥
बर बिग्रह चिंतयौ । मुक्ति बिग्रह जुक्त्ताई ॥
बरदाय चंद दुब्बल अबल । वपु सुपेम मुक्कंद षुत ॥
मुंकयौ मान बिमान बस । इह अजुत्त जौ पैत जुत ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ एकाकी सह संग तजि । मिलि राजन सुत सोम ॥
[1]तपत तुंग तो वत्त जहि । है इह जग षग नोम ॥ छं० ॥ ८७ ॥
इह कहि कवि चल्यौ भवन । गवन कियौ दिसि साहि ॥
दुसह जग्ग सज्जन मिलै । धर गज्जनी सुगाह ॥ छं० ॥ ८८ ॥
सरसैं बर अरु कंठ बरु । अरु सु हियै बर बीर ॥
हिंदु कहै हम देव[2] है । मेछ कहै हम पीर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) एक कृ० को०- तपत तुंग जो वृत्त काहि । (२) मो०- दीन ।

चिति ठाम प्रथिराज कौ । बालप्पन निज नेह ॥
चल्यौ भट्ट सजि जोग तन । ता न्निवहन अछेह ॥ छ०॥ ९० ॥
चल्यौ चंद वरदाय बर । तजि समुद्र वर मोह ॥
पट्ट वरन भर भट्ट कौ । दहि विरद्द बर छोह ॥ छ० ॥ ९१ ॥
गहिग चद रह गज्जनौ । जट पट वधि विधान ॥
प्रान हरौं साधौं सुगति । जो मिलिहौ चहुआन ॥ छ०॥ ९२ ॥
गहिग चद गज्जन सुरह । जह सज्जन सु नरिंद ॥
कवहो नैन निरष्षि हौ । मनो सूर अरविंद ॥ छ० ॥ ९३ ॥
जोग जानि लग्यौ सुमन । जोति सबद जिय लीन ॥
अगम निरंजन आदि सुनि' । तिहि अचित चित चीन ॥छ० ।९४॥
सूर सबर अरु कंठ वर । हिय रोहे बर वीर ॥
सब देवन में देव है । मेछ महमद पीर ॥ छ० ॥ ९५ ॥

दुर्गम मार्ग की कठिनता का वर्णन और कवि का क्लान्तचित्त होना ।

पद्धरी ॥ सम चल्यौ भट्ट गज्जन सुराह । बन विषम सुषम उग्गाह गाह
रह उच नीच सम विषम थान । गह वरन सैल रन जल थल
छ० ॥ ९६ ।
द्रिग जोति लग्ग मन सबद भीन । भुल्ल्यौ सरीर निज मग्ग पौ
रत्तौ सुजोग मग्गह सरव । जग्गमगत जोति आयास भूव ॥
छ० ॥ ९७ ॥
भिल्यौ सप्रीति प्रथिराज अग । निरकार जोय रत्तौ सुरग ॥
भुल्ल्यौ सुमग्ग गज्जनह भट्ट । बन चल्यौ थान उद्यान थट्ट ॥
छ० ॥ ९८ ॥
उम्भरत इम्भ सम अम्भ नद्द । के लरत भिरत भज्जत समद्द ॥
उद्यान तज्जि सथ्थे एक । गुजहिति वध्ध मग्गह अनेक ॥
छ० ॥ ९९ ॥

(१) ए० कृ० को०—मिलि । (२) ए० कृ० को०—मेछ कहै हम पीर । (३) मो०—छो

जुग देत दंति सिंघहि सुरम्भ । म्रिग बघ्घ पंषि अजगर अदम्भ ॥
सा पंच चिल्ह संग्रहै सास । सा बद्द बनंचर विषम भास ॥
छं० ॥ १०० ॥

गुंजरत दरिय सम्भीर सद्द । निझ्झरत झरत नद रोर नद्द ॥
बन बिकट रंध कौ चक्क राह । सद्दहि सु ताम संभीर गाह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

उद्धुत उरग्ग धर तर सुलग्ग । सुझ्झहि न विदिसि दिसि मझ्झ भग्ग
बन चल्यौ मझ्झ भट्टह भयंक । रत्तौ सुजोति सज्जे निसंक ॥
छं० ॥ १०२ ॥

निझ्झरहि झरिय झरहर करूर । उब्भरहि सलित सलिता सपूर ।
कलरव करंत दुज नेक भास । तर विकट सघन पंषिनि हुलास ॥
छं० ॥ १०३ ॥

निसि दिवस भट्ट बन चल्यौ जाम । संभर्यो राज भौ अम्भ ताम ।
बेध्यौ सुअंग छुद्धा पियास । तर धवह देषि लग्गे अथास ॥
छं० ॥ १०४ ॥

बैठौ सुतक्कि भौ संझ स्याम । चितै सुचिंति चंडी भिराम ॥
छं० ॥ १०५ ॥

षट पुरान पारसि निपुन । निगम अगम नह चंद ॥
अद्ध निसा कानन कुहर । भयौ भट्ट गति मंद ॥छं० ॥ १०६ ॥

छुध पिपास लग्गी तनह । निद्रा भै मिटि गैन ॥
नहीं कहूं चंहु दिसि सुगम । दिसि दिष्षियै जसौन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दिवस तीन पंथह वहिग । गनौ न अह निसि संझ ॥
षट दिन नयन असुझ्झ भय । थकि रूतौ वन मंझ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

विपन्द का भगवती का स्मरण और स्तुति करना ।

मन वच क्रम चित्तै सुचित । वरदाई वर देव ॥
तुअ कारन तारन तवन । नमो नमो सुर देव ॥छं० ॥ १०९ ॥

भुजगी ॥ नमोह नमोह नमोह सुचंडी । सथान चिसच सभू पच मंडी ॥
निकार अकार सकार सरूप । महा तत्त सौ तत्त चौबीस नूप ॥
छं० ॥ ११० ॥

चय मझ चेय गुन चेय थान । चय पाय धामन चेय किसान ॥
कला षोडस रूप षोडस्स राया । दुग्र चौस रूप इस छं परायं ॥
छं० ॥ १११ ॥

रुच पच वान दहस समीर । दह नारि दुवारि वाह समीर ॥
ऊकार सार श्रीकार सज्जै । ह्रीकार हुंकारि सारूप रज्जै ॥
छं० ॥ ११२ ॥

क्लिंकार ह्रूंकार[2] कुंकार कारी । श्रीकार झ्रूंकार श्रीकार सारी ॥
श्रीकार छूंकार सामाच माई । नमस्ते नमस्ते नमो जग्ग जाई[3] ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जहा सगट दुध्धट निज्ज सेव । नही मात तात नही बंध देव ॥
नहीं को सहाय जहा कौन चाय । तहा तौ अरप्पै निज सेव साय ॥
छं० ॥ ११४ ॥

हरौ मुझ्झ चिंता तन तप्पि भारी । दियौ चित्त ता सह सायं कुमारी ॥
छं० ॥ ११५ ॥

हा ॥ सुमरि देव वरदाय वर । मझ्झि वन बीझ भयंक ॥
लहौ न दिस अरु विदिस निस । जग्गि नहीं मन सक ॥
छं० ॥ ११६ ॥

तिहि पिपास लग्गिय बहुल । धव ढुढन वन जग्गि ॥
तहा सुइक्क बढ तट निकट । कालयल्ल सिघ सुलग्गि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

देवी का कवि को दर्शन देना और कवि का अपनी सं विपति निवेदन करके सहायता के लिये वर मागना ।

तिन सिघह मझ्झह तरुनि । कइ कइ जपिय सत ॥
मनहु धुमंत्र मझ्झे अगनि । झलहलत दीसत ॥
छं० ॥ ११८ ॥

(१) ए० कृ० को०—हलव । (२) मो० व्ज । (३) ए० कृ० को०—माइ

कवित्त ॥ देषि चंद मन मंद । वृषभ वन महिष सिंघ घन[1] ॥
सिव सिवात सुभ्भयौ । बजे डक्क डकरु गज्जि वन ॥
दरस वान सिंघ घोर । वियै जम धाम पंच मस ॥
रुध तुंबरगि बंद्धि । बज्जि तारीक तूर रस ॥
मंचह सुजंपि वरदाय वर । चंद पट्टि अंपै रुहसि ॥
सहदेव ध्यान नर कवन ते । वर मनुच्छ उम्भै वहसि ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दूहा ॥ तौ जानै सब देव भ्रम । नर नागिंद्र विचार ॥
ओई असुरां अपहरन । इह विरदावलि सार ॥ छं० ॥ १२० ॥
दरस देवि किय भट्ट वर । कर सिर मंडिन मंत ॥
सो पसाव[2] कवि सुंदरीय । जिहि जप संग सुअंत ॥छं०। १२१॥
तौ जानै सहदेवपुर । षित प्रकृतीय सुतथ्थ ॥
जो हौं जंपि जानंत तौ। देवि जानयौ नथ्थ ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पुच्छि मात कविचंद वर । सुह दुह कहि वर भट्ट ॥
जो जस[3] संग सुमंगी कवि । कहत काज इहि घट्ट[4] ॥छं०॥१२३॥
सुम मनुच्छ राजन सकल । अकल अपूरव कथ्थ ॥
कहौं सवै आरथ्थ कथ । जौ सुनौ छिनक रुकि रथ्थ ॥छं०॥१२४॥
॥ पच्छै ही सुरतान । विंदु दल जोर अहुट्टै ।
सुनी कहौं रबि ग्रहन । तदिन भारथ्थ सजुट्टै ॥
उभै बीह[5] वर दीह । भान अच्छै दिन चल्यौ ॥
सुनिधर राव सबद्द । वीर ब्रहमंड सुहल्यौ ॥
चहुआन सेन रावर समर । भीर भगैं प्रथिराज गहि ॥
वर भट्ट रुक्कि हाहुलीय भ्रम । जालंधर बर थान रहि ॥
छं० ॥ १२५ ॥
सुनिय धुनिय बर सीस । उभय उमया पति पुच्छिय ॥
सुनिय ग्रहन विग्रहन । जुद्ध मंद्यौ मति अच्छिय ॥
भव भवस्थ निस्सांन । जान मत अच्छ विचारिय ॥

(१) मो० सम । (२) ए० कृ० को०—पसाच । (३) ए० कृ० को० जग ।
(४) ए० कृ० को० रम घट्ट । (५) ए० कृ० को०—वाह ।

नरन नाग अरु देव । सुवर ग्रह दुष्ट प्रकारिय ॥
सिवसिया जित जित अरि सिवर वर । हेमदान सोभै सुलछि ॥
जौ[1] होय प्रेम तो निग्रहै । सोय कित्ति पावन्न अछि ॥
छ० ॥ १२६ ॥

भगवती का प्रसन्न होकर कवि को अंचल का चीर देना ।

दूहा ॥ हँसि हर सिद्धय सुद्ध भुप्प । नृप दुप दहौ भट्ट ॥
चरचि चीर अंचल धजा । दिय सिर वदन[2] पट्ट ॥छ०॥ १२७ ॥

देवी की स्तुति ।

मोतीदाम ॥ हसी हस सिद्ध तवै सुप पाय । जयज्जय सद्द कहै बरदाय ॥
तुही मुक्त तारन सारन काम । तुही प्रकिती[3] पुर पधर नोम ॥
छ० ॥ १२८ ॥

तुहीं ईक्क अनेक अचभम आय । तुही मति ग्यान तुही रज माय ॥
तुही गति काम तुही सुनि धाम । तुही धुर वेद तुही गुठठाम ॥
छ० ॥ १२९ ॥

तुही कृत कारन तारन देव । तुही सिध साधक सारन सेव ॥
तुही धर सोपन पोपन मात । तुही ससि सूर तुही सरसात ॥
छ० ॥ १३० ॥

तुही सिसु जीवन बाल रु वृद्ध । तुहीं घट भाप नवै रस सुद्ध ॥
तुहीं विप अमृत समृत सार । तुही घट औघट रप्पन हार ॥
छ० ॥ १३१ ॥

तुही नर नागिद इंद सुरेस । तुही जुग आदि तुही लवलेस ॥
तुही तत पंच चलावन हार । तुह गुन तीन करै उपचार ॥
छ० ॥ १३२ ॥

अलेप अगोचर तु नर[illegible] । तुही नट नाट नचावन छंद ॥
तुही ब्रज नारि तुही ब्रज नाथ । तुही गिरधार अँधारन[4] पाथ
छ० ॥ १३३ ॥

(१) ए० छ० को०—नो । (२) ए०—पदन । (३) मो०—प्रकृतं । (४) मो०—अतार

तुहीं धर गंग उधारन सेव । तुहीं चय वेनी सुतीरथ देव ॥
आकास प्रकास तरायन तेज । नवग्रह नाम तुहीं सम रेज ॥
छं० ॥ १३४ ॥

तुहीं सब मंचन आगम मांहि । कहै सब ठौर विना तुअ नाहिं ॥
धरै कर आवध दंड छचीस । तुहीं तुं नाम तुहीं कर वीस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

तुहीं अब चंद सुधारन आस । तुहीं चहुआन भुजा करि वास ॥
तुहीं पिथ अंत सुधारन काम । तुहीं यवनेस संघारन नाम ॥
छं० ॥ १३६ ॥

तुंही तन मुक्क्क उवारि उवारि । कह्यौ अब कारन संकट टारि ॥
छं० ॥ १३७ ॥

। ॥ वर संकट कविचंद कौ । पुर भारे कुर भीर ॥
जु कछु मनोरथ चिंतषै । सत्य होय वर वीर ॥
छं० ॥ १३८ ॥

भुगति मुगति जस स्वामि कित । रिन भग्गै क्रम भग्गि ॥
छिन छिन पायौ दरसनह । मिटि चलि चंद सुअग्गि ॥
छं० ॥ १३९ ॥

देवी की कृपा से कवि का प्रसन्नता पूर्व्वक गजनी पहुंचना ।

सिर पट्टर भट्टर सुभट । भव भै भग्गौ तास ॥
परम तत्त रत्तौ वघट । नयर सपत्तौ तास ॥
छं० ॥ १४० ॥

इहि विधि पत्तौ गज्जनै । जहं गोरी सुरतान ॥
तपै मेछ इछ अप्पनी । मनों भान मध्यान ॥
छं० ॥ १४१ ॥

चौपाई ॥ इह अरंभ जुग्गिनी पुर अत्तौ । गुर नियान जोगह मन रत्तौ ॥
दिसि विचारि लोकह अवलोकिय । गोरिय घर गज्जन वै सोषिय ॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ हैगै अभूत सुभूत गति । नठ नाटक वहु वार ॥
इह चरित्त पिष्षन नयन । गयौ चद दरवार ॥ छ० ॥ १४३ ॥

गजनी नगर की शोभा और प्रतिभा वर्णन ।

वृहनाराच ॥ हय गय अनेक भति जोध जोध राजय ॥
म्लेच्छ दुष्ट तेज तोम ता कुरान साजय ॥
पढत मीर पारसी गियान सामि ध्रम्मय ॥
नमत चद चौथ चद पीर सीस नाम्मय ॥ छ० ॥ १४४ ॥
निमाज तत अत तीर नीत राज राजय ॥
वहत गज्ज वारुनी सुवारनी न साजय ॥
कोहूत हट्ट हट्ट कक सेर के मनुच्छय ॥
अलच्छि लोह लच्छन विनान लोल लच्छियं ॥ छ० ॥ १४५ ॥
सुनै न चद वेद सद्द वद्द त कल मयो ॥
मरोरि मुछ उग्र मेछ दिप्पयो विलमयो ॥
कमान वीर पचयौ सुटक जो अढारयौ ॥
समान मेछ दिप्पियै सुजम्म तैसु ढारयौ ॥ छ० ॥ १४६ ॥
विपास वीर चातुरी सुढारह हट्ट सोहय ॥
विभास नम्भ सामि कौ सुसिद्धि मोह मोहय ॥
कटत ते सुनार हे मतार तार राजही ॥
मयूप साँझ प्रात की किरन्न भान लाजही ॥ छ० ॥ १४७ ॥
अमग्ग हट्ट पट्टन सुरग सुग्र सोभय ॥
ग्रिह ग्रिह सुदिप्पिय तुरग तग लोभय ॥ छ० ॥ १४८ ॥
नाराच ॥ सपत्त भट्ट गज्जन । विभूति घट्ट गज्जन ॥
सुकट्ट जट्ट वधय । प्रगट्ट रूप सिद्धय ॥ छ० ॥ १४९ ॥
सुधट्ट कट्टि तुट्टय । मृगतु चाल पट्टय ॥
सुभाव छडि रुद्रय । विराग को समुद्रय ॥ छ० ॥ १५० ॥
हुतौ मनो कविद्रय । अनादि कौ जुगिद्रय ॥
गयद नेम धुम्मतौ । पग पग विरमतौ ॥ छ० ॥ १५१ ॥
[1]निरप्पि मदिर सुम्मयो । सुवास रास उम्मयौ ॥

(१) मो०—निरप्प इक्क मदिर ।

गवष्ष अच्छ उच्चयं । कनक्क ढारि कच्चयं ॥ छं० ॥ १५२ ॥
जरे जराव थंभयं । जगंमगे अचंभयं ॥
अनेक तथ्थ बालयं । रमंत चिच सालयं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
परे चचिग्ग ओटयं । उगें कि चंद कोटयं ॥
जुगिंद ते निरंषयं । हिरन्न लग्गि अंषियं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
तमोर कोर रत्तियं । दसन्न में सुभत्तियं ॥
मनों कि डार पक्षियं । अनार ते दरक्कियं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
हलें अलक्क लंबियं । उरोज सों बिलंबियं ॥
मनों कि ते उरग्गियं । कली कुमुद्द लग्गियं ॥ छं० ॥ १५६ ॥
जुबन्न मद्द मत्तियं । जुगिंद[1] को छरत्तियं ॥
रयन्न की उनिंदयं । पवन्न सौं झकुकं दियं ॥ छं० ॥ १५७ ॥
हरे हरे हसंतियं[2] । विलोकि रुप चंदियं ॥
समान की सहेलियं । रही सुहथ्थ झेलियं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
मनों कनक्क बेलियं । लपट्टियं चमेलियं ॥
सकोमलं सुरंगियं । पकी मनो नरंगियं ॥ छं० ॥ १५९ ॥
जवादि कासमीरयं । चरचि अंग चीरयं ॥
*सुमन्न सत्त भीगयं । सुकेस पास चिंगयं ॥ छं० ॥ १६० ॥
अभूषनं अलंकियं । चलंत सिंघ लंकियं ॥
गुमान लग्ग घेरियं । पयं पती पहेरियं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
फिरे न दिट्ठ फेरियं । हैरान भत्ति हेरियं ॥
चल्यौ सुचंद भग्गयं । डगं मगंत पग्गयं ॥ छं० ॥ १६२ ॥
तुही तुही अलष्षियं । सबद्द मुष्ष भष्षयं ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवि का शाही दरबार को जाना ।

। नैर निरष्षि परष्षि कवि । धरकि हरष्षि न चित ॥
मात प्रसन्न प्रसन्न पय । तौ मिलियै वर मित्त ॥ छं० ॥ १६४ ॥

(१) ए० कृ० को०—कविदं । (२) ए० कृ० को०—हसंदियं ।
इस पंक्ति के दोनों चरण मो० प्रति में नहीं हैं आगे दो चरण बढते भी हैं इससे
ाता है कि ये दोनों चरण क्षेपक हैं ।

उभै जाम वर उत्तरी । पढि सुमत्र वर चद ॥
गय गोरी दरबार वर । बुझ्यो जगावन दद । छ० ॥ १६५ ॥

दरबारियों का वर्णन ।

रसावला ॥ दरबार गोरी, भर भीर जोरी । उडै रेन झेन, करै बत्त सेन ॥
छ० ॥ १६६ ॥

मुष मेछ दड्ढी, पय पेम चड्ढी । कटि तोन ठान, कसे कस्स मान ॥
छ० ॥ १६७ ।

४सै के हसक्के, महीने अधिक्के । फरी तेग झार, गने के दिहार ॥
छं० ॥ १६८ ॥

वहै मोन रज्जी, करै केन वज्जी । तसद्धी तुसान, पढै के कुरान ॥
छ० ॥ १६९ ॥

पढै पत्ति सोही, सुरत्तान दोही । मरोरत मुच्छ, गुर ग्यान तुच्छ ॥
छ० १७० ॥

दिठी दिट्ठ भट्ट, हियौ पट्टि फट्टं । कुम चपि पान, दरबार थान ॥
छ० ॥ १७१ ॥

कवि के विषय में लोगों की कल्पना ।

कवित्त ॥ प्रथम मुक्कि दरबार । लज्ज सकर सुरतानी ॥
है गै नट नाटक्क । भ्रम्म दिप्पिय परमानी ॥
एक कहै इह भट्ट । इक कहै सिद्ध प्रमान ॥
एक कहै ठग ठोठ । एक वेताल सुजान ॥
इक कहै जोग पाषंड इह । भ्रम लग्यौ रोकन कवि ॥
तब लगि चद वरदाय वर । गयौ थान दरबार छवि । छ० ॥ १७२ ॥

कवि का राजद्वार पर जाकर द्वारपाल से अपना परिचय देना ।

तह अग्गै गय निरपि । कनक लकुटीय नग जटित ॥
हय गय नर असरान । थान इद्र सम थट्टित ॥

(१) ए० कृ० को०—फहि । (२) ए० कृ० को०—बिभूति ।
(३) ए० कृ० को०—अरु । (२) गो०—सैल ।

गज्जनवै सुरतान । भान सम तेज सुदिट्ठौ ॥
तुछ अंमर संमरन । अहित चित बुग्गिग्ग सुमिट्ठौ ॥
बुझ्यौ विभूति वपु भंति बहु । चंद धूत सिर बंधि पट ॥
भव भोग भवन रह छंडि कै । किम जोगी भय भट्ट नट ॥
छं० ॥ १७३ ॥

बथू घा ॥ हौं सु जोगिय हौं सुजोगिय जनन पर दार ॥
जोग जम जोगिनि पुरंदर सुरस चबिधि कल कवित्त जानौं सव ह
सरस रसायन भायनह गीय गाह गुन ग्यान ॥
छैल इच्छ अच्छी कहौं जो पूछै सलतान ॥ छं० ॥ १७४ ॥

द्वारपाल का कवि का सादर आसन देना ।

दूहा ॥ हेजम हिय बासी सुबर । दिष्ट परष्पिय भट्ट ॥
बहु आदर आसन दियौ । पाय अरचि दिय पट्ट ॥छं०॥१७५ ॥

कवि का अपनी विद्याओं का बखान करना ।

गज्जरी ॥ कविचंद कहै सुनि जमन भीर। झलमलहि तेज तुम सुमनभीर ॥
लहौं विद्ध बल अनत अथ्थि । देषिय जुसाह साहाब तथ्थ ॥
छं० ॥ १७६ ॥
अट्ठ च्यार उच्चार भेद । लघु दिघ्घ रूप आनूप छेद ॥
अस्व सस्व विद्या गुनाह । लुक अंग गुटिक साजं सुराह ॥
छं० ॥ १७७ ॥
मनी भेद तिथि लहू अथ्थ । मारनह मोह बसीह जथ्थ ॥
ग भेद बिधि धिर विचार । रस धात पीत उद्धार सार ॥
छं० ॥ १७८ ॥
भाष रस नव नट्टनाद । जानौं विवेक विचार बाद ॥
दिष्षि जोति जोतिक्क भेद । गारुढ़ह मंच द्रिग पंष षेद ॥
छं० ॥ १७९ ॥
तिहास अट्ठ दह अंक माल । पौरान पृथक बुझ्झौं विसाल ॥
टक्क भरह पिंगल प्रबंध । जानौं सुअरथ उद्धार संध ॥
छं० ॥ १८० ॥

विग्राह चतुर दस चित्त मोहि । बुझ्झै सुकहो त्रिभुवन होहि ॥
भिट्टै जु एक पिन मोहि साहि । मन उकति[1] अथ्थ पुज्जों सुआहि
छ० ॥ १८१ ॥

द्वारपाल का कहना कि कविचन्द मैं तुझे पहचानता हू जरा ठहर इत्तला होती है ।

दूहा ॥ इस्यौ जमन परद्दार तव । तुहि जानौ कविचद ॥
छिन इक दरह विलंबियौ । कवि न करहु मन मद ॥
छ० ॥ १८२ ॥

हौं रमून जानों सकल । तुहि जानों कविचद ॥
परसादह तुहि देविहै । पढि आनद सुकद ॥
छ० ॥ १८३ ॥

चथुआ ॥ तुह रमूजि सह जम[2] नरिद । निपुन वेद सह सकल समझन ॥
तु लहत गुन भेद जान जानन गुनिक जन । तू लज्ज रूप माया अभूप धन
धन पारथन सजन तुवर बुद्धि विनान । जान को नाहिन तज्जन ॥
छ० ॥ १८४ ॥

चौपाई ॥ हित अहित सनमुप पहिचानी । भावी गति आगति सब जानी ॥
अतर दद्द[3] चद मति सज्जिय । छुटन अग सकर गढ लज्जिय ॥
छ० ॥ १८५ ॥

पद्धरी ॥ परदार मुष्य लज्जिय सुचद । तू किय[4] विभूति सिर धरै वद ॥
मुप फेरि हसति दस्तक निपानि । उठि भेद भट्ट जानों पुव पिछानि ॥
छ० ॥ १८६ ॥

कवि का अपना प्रगट होना जान कर वहा से चल देना ।

दूहा ॥ तव विरम्म कवियन कविग[5] । रुचित अप्पनी इच्छ ॥
सह सद्दाव दर दिप्पियै । जि कछु भुमि परि मिच्छ ॥
छ० ॥ १८७ ॥

(१) ए० कृ० को०— उगत ।
(२) ए० कृ० को०—मझे ।
(३) ए० कृ० को०—दत ।
(४) ए० कृ० को०—वकी ।
(५) मो०—करिय ।

गाथा ॥ साजति अनेक भत्ती । षुरसान पान सुविहानं ॥
गोरी गुर तुरकानं । दानवं देव दुरवाहं ॥ छं० ॥ १८८ ॥

शाही पासवान सरदारों का और शाही ड्योढ़ी का औसाफ वर्णन ।

भुजंगी ॥ रहंमी रहंगी सुहिल्ली सुरोगी तरुन्नी तियाजी[1] सुहन्नी कुरोमी ॥
धरंते तरंते सुधारे मुसल्ले । हरव्वी सहेवी सरंते गुमल्ले ॥
छं० ॥ १९९ ॥

सकन्नी तिषन्नी षुरन्नी षुरेसी । सरद्धान भट्टी जिलंगार गोसी ॥
धरन्नी धरंती समल्ले सुसल्ली । तुरकान चिंतं चिगत्ते तु सल्ली ॥
छं० ॥ १९० ॥

हबल्ली सुगोरी सुकल्ली सुपन्नी । प्रकारं प्रवानं प्रवानी तिवन्नी[2] ॥
नियाजी सुबाजी सुकाजी कुसल्ले । तजे जम्म तेजं करं वज्र गल्ले ॥
छं० ॥ १९१ ॥

तुरकी ममकी सनं नेज[3] लल्ले । पवंगे पवन्ने बनं चार गल्ले ॥
सुभं सेषजादे अबादे पठाने । महा मंच गुद्दंग सुद्दंग जाने ॥
छं० ॥ १९२ ॥

निमाजं सुरोजं नमो पंच बानं । पढै अथ्थि कौरान सोरान जानं[4] ॥
सिपारा चिवोरा पढै तीस तामं । धरै राह अथ्थं सुतथ्थं सुधामं ॥
छं० ॥ १९३ ॥

चलै अग्गि आसीमि अथ्थं सुराहं । तिनं गात लथ्थै गुरंजीव गाहं ॥
नही ग्रेह माया निराया विरागं । तिनं राह बंछै धनं तीय तागं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

इसे देस देसं सुवेसं सुरेसं । दिथ्थो साहि गोरी दरब्बार सेसं ॥
अनेकं वरं ब्रंन ब्रंने वियाने । दिठै साहि गोरी गरज्जे सुहाने ॥
छं० ॥ १९५ ॥

बली जिल्ल बानी पबीरज्ज लावी । तुलंगा हरासे हरंमी सुतावी ॥
गनै कोन इच्छै जिते मेछ जाती । ग्रहे आय जानं दरं दिथ्थि भाती
छं० ॥ १९६ ॥

(1) ए० कृ० को० निराजी । (२) ए० कृ० को० निवन्नी ।
(3) ए० कृ० को० तेज । (४) ए० कृ० को० बानं ।

कवित्त ॥ दिप्पि थान सुरतान । पान सुविहान मसद्दत्ति ॥
तीन लप्प निसि दिवस । रप्पि वज्ज ग वज्ज झत्ति ॥
वर वज्जै नीसान । सद्द कन्नारव भग्गा ॥
सूर तेज तप साहि । गोर गोरी गुर लग्गा ॥
सुरतान सुवर चित पति चढै । पाय विलग्गी चग गति ॥
तहिनह चद वरदाय कौ । रस सकर सकर विपति ॥छ०॥१९७॥

दिन के तीसरे पहर शाह का हदफ खेलने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ इह विध जाम दु वित्ति गय । भयौ चतीय पहरान ॥
हदफ साहि पिल्लन चढन । दियौ आप फुरमान ॥छ०॥१९८॥

हदफ खेल के लिये शाही सवारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रथम वज्जि घरियार । वज्जि नववत्ति पलान सजि ॥
दस दिसि वर धाए नकीब । साहि गजराज वीर गजि ॥
दुतिय वज्जि नीसान । सबे चतुरंगनि सज्जिय ॥
पानपि भर घुरसान[1] । आय दरवार सुरज्जिय ॥
वाज तैंतीन नीसान वर । बर गोरी वर वीर चढि ॥
आलम अदब्ब देपत[2] कवि । वाम कोद वर भट्ट ठढि ॥
छं० ॥ १९९ ॥

चौपाई ॥ उठि उठि भट्ट कहै हम जान । वपत अनद रस्यो सुविहान ॥
विस लज्जह वोल्यौ मेछान । कहिहै सो करिहै सुविहान ॥
छ०॥ २०० ॥

दूहा ॥ उठि अवाज आलम सघन । वहु अदब्ब जमनेस ॥
दिसि दप्पिन लघु वध नृप । चल्लै अम हुअ मेस ॥छ०॥२०१॥

शाही सवारी का निकलना और कवि का शाह का हाथ उठा कर आशीर्वाद देना ।

पद्धरी ॥ चढि चल्यो साहि गोरी प्रमान । जानै कि ग्रीव ग्रीपम्म भान ॥

(१) ए० कृ० को०—सुरतान । (२) ए० कृ० को०—देपन ।

तब सह सलाम मंडहित मीर। फिरि वंधि फौज रहे तीर तीर ॥
छं० ॥ २०२ ॥

अंगुलि अधरनि[1] करि करि मसंद। सिर नाइ भई जब निजर मंद ॥
पारस सहस्स लकरीय लाल। वरनंत साभ मानहु प्रवाल ॥
छं० ॥ २०३ ॥

अग्ग सुवंध निसुरत्ति पान। दरस पंच हथ उत्त सुद्धिहान ॥
[2]गोरीय सुअह तत्तार साह। पुच्छंत वत्त चढ़ि पातिसाह ॥
छं० ॥ २०४ ॥

को गिने साह षानह असंष। दिष्षे सहाव जुग जुगति अंषि ॥
आसनह अंस ताजी सुहाय। नग जटित जीन रवि ससिय षाय ॥
छं० ॥ २०५ ॥

कंचन लौल करनीय जग्ग। चित रहिय चुंधि मन भ्रमय लग्ग ॥
रँग रंग पीत वनि सेत लाल। प्रगटें सु प्रगट मान षिनमाल॥
छं० ॥ २०६ ॥

रँग रंग रंग अंमर सुचंग। दिष्षियै एक चंदह विरंग ॥
आलम अदब्ब दिष्षौ न जाय। रुक्यौ सुमग्ग कविचंद धाय ॥
छं० ॥ २०७ ॥

लक्करिय लाल अड्डिय करंत। उम्भौ[3] सुदिट्ठ दिष्षौ तुरंत ॥
पर दुअन देस जानै अकाज। निय सामि चहु अप्पन काज ॥
छं० ॥ २०८

मुर एक घटी चित्तत तंभ। आवाज साह किन्नौ हुकंम ॥
तब अली बेग आलंम सज्जि। घन जेम भह नीसान बज्जि ॥
छं० ॥ २०९ ॥

भनन कि भेरि भारथ्थ सज्जि। सुरपत्ति कंपि द्रिग झंपि रज्जि ॥
दिसि दिसा मिले सहे सदान। धर धमकि बंध बंधव अदान ॥
छं० ॥ २१० ॥

(१) ए० कृ० को० अधराति।
(२) मो०—गारी सूसोहि तत्तार नाम।
(३) ए० कृ० को० लम्भौ।

सोभैत पावरी मनौ मस्त । हैं कप होत अमुष्ठुरी हस्त ॥
लक्करी लाल इतमाम तान[1] । ओपम चद जपै सुवान ॥
छ० ॥ २११ ॥

जानै कि साह रिजि सब्ब भूप । निक्कस्यौ अग धरि कोटि रूप ॥
सुनि हथ्थ राज किलकार कोर । यौ चल्यौ अग्ग सुरतान जोर ॥
छ० ॥ २१२ ॥

मानौ किरीट वैं[2] सीस[3] भान । दुहुं परी होडकिर निट्ठ जान ॥
पहरीय वृन गभीर ओप । [4]जान्यौ कि मडौ मौनज सु कोप ॥
छ० ॥ २१३ ॥

वारुन निसा अष्टि छुट्टि[5] विवाह । जाने कि रूप वहु करै राह ।
मज्यौ सु छत्र सुरतान सीस । सुरतान जित्ति चहुआन रीस ॥
छ० ॥ २१४ ॥

मनौ भान सूर सह हरे छाह । चसे जुकाम धरि रूप वाह ॥
दुहु पास वाह चालुक्क हीर । तिन दिप्प रूप सुरतान मीर ॥
छ० ॥ २१५ ॥

नीयज्जपान निज वध मान । सामुह्ह धरी लज इद्र जान ॥
वधै सुअग द्वै द्वै कुवान । उप्पम चद जपै निदान ॥
छ० ॥ २१६ ॥

कटि किसन सूर सव बार तोन । जमनेस भेस धन पत्ति द्रोन ॥
सिगिन सवद्द वेधी सुपान । भारथ्थ वेर अरजुन समान ॥
छ० ॥ २१७ ॥

दह वेर सूर सूरन सलाम । वर हुकुम चढन देपन्न ताम ॥
वर भट्ट भेप पथ अनिव होत । पै भूप जानि सव्वे समोत ॥
छ० ॥ २१८ ॥

विभुत्ति तनह अवधूत दीस । वर दून उन्न दीनी असीस ॥
छ० ॥ २१९ ॥

(१) ए० कृ० को —ताम, बम । (२) ए० कृ० को०—कै ।
(३) मो०—सिस । (४) ए० कृ० को०—जानैं कि मडौ वहु करिव कोप ।
(५) ए० कृ० को०—गुटि ।

कवि का शाह की विरद पढना ।

त्रचनिका ॥ साहि आर साहि विभार । वैरिआ[1] सोह कंद कुहार ॥
सबर साह मान मरदन । * * * ॥
निवर साह थापना चारिज । अषिल रीत दुसाल आरिज ॥
दुरवेस साह धारी तरक । नीरन्न साह भैं गै अरक ॥
लोभीन साह उर अंकुसाह । उत्तर दष्षिन दिस साह गाह ॥
इसै कुरान मूसे मुलान । महमंद दीन ईमान आन ॥
हजरति साह आलम जलाल । साहिब करान गाजीय लाल ॥
आषंड जमी कंटक विडार । आदल्ल रीति जालम निडार ॥
फक्कर फरीद रिज कान दार । वगलीस पंनाम काम दार ॥
औलिया पीर पैगंम रार । इक वीस चारि कामति कार ॥
दावा दरिद्र भंजन विभार । साहन समंद विरदे पगार ॥
तबल तबल घालि तबलेश्वर । अंग उपांग भोग भोजेश्वर[2] ॥
कालि क्रतांत कलह कोलेश्वर । भैयौ ईस सुरतान साहवेश्वर ॥
छं० ॥ २२० ॥

शाह का कवि की तरफ मुतवज्जह होना और कवि का अपना परिचय देना ।

दूहा ॥ देत असीसह सिर नयौ । विन अप्पन फुरमान ॥
दुसह भट्ट दिष्यौ नयन । वेपुच्छे सुलतान ॥
छं० ॥ २२१ ॥

पातिसाह साहाब दीन वाक्यं ।

साटक ॥ दुष्टं तो सुविहान तेज तरुनं भूपाल अपालयोः ॥
तो चढ्ढे बर बीर जोति जुधयं जित्तंधरं जालयो ॥
बिबौ पान षुरेस बीर बलनं करनं वधं जंमयो ॥
शुद्धं तो जलि क्रंन बीर उपमा भट्टं सिंचदो मया ॥
छं० ॥ २२२ ॥

(१) ए० कृ० को० बेरिया । (२) ए० मोगेश्वर ।
(३) ए० कृ० को० नूपालयोः ।

शाह का कवि को पास बुलाकर सब हाल पूछना। कवि का सब बातों का उत्तर देना और शाह का उसे ठहरने के लिये कहना।

कवित्त ॥ देषि चद मन मद्द। साहि आनद उपन्नौ ॥
निजरि अप्प सुविद्दान। बोलि आलम अप लिन्नौ ॥
हथ्थ अप्पि दस तक्क[1]। वत्त पुच्छी दुप सुप्प वर ॥
विधि विधान निम्मयौ। कौन उद्दस कविय वर ॥
सग्राम स्वाम क्यौ मुक्कयौ। क्यो कविद्द भारथ्थ तजि ॥
किहि थान लोइ सभरि धनी। कहौ सुवत्त लज्जौ न लजि ॥
छ० ॥ २२३ ॥

पद्धरी ॥ सुरतान पान सद्दंति मीर। तहा बोलि चद मन मद्द वीर ॥
बिन बोल बोल बुल्यौ सुछद। हो सुनौ साहि वर भट्ट चद ॥
छ० ॥ २२४ ॥

अवतार लीन प्रथिराज साथ। वह ग्रच्छौ हौव अच्छौ अनाथ ॥
सग्राम धाम मोकलि वसीठ। जालध राव हम्मीर धीठ ॥
छ० ॥ २२५ ॥

तिहि होत वीर सुरतान सधि। जालध थान मो चद वधि ॥
सग्राम राज भारथ्थ कीन। सुरतान वधि जस जीति लीन ॥
छ० ॥ २२६ ॥

सुलतान वधि सुविद्दान सार। आहुट्ठ समर पग छीन धार ॥
हिंदवान पभ दीउ असत वीर। सध्यो जुक्कम तहिन सरीर ॥
छ० ॥ २२७ ॥

मै सुन्यौ साहि विन अपि कीन। तजि भोग जोग मैं तप्प लीन ॥
वह पनग विप्प सुरतान छानि। मै अट्ठ राज मन अनत पान ॥
छ० ॥ २२८ ॥

इह मच जन पालै न जाउ। वैराग राग धुअ मेछि पाउ ॥

(१) ए० कृ० को०—फन्त।

सुरतान आन तप मंधन काज । अस भट्ट सज्जि जोगिंद राज ॥
छं० ॥ २२९ ॥

मैं तक्यौ तप्प बद्री सुथान । थिर रह्यौ सुनत सुरतान कौन ॥
धरि एक सोचि बोल्यौ सुसाहि । रिस अंग अग्गि पच्छी बुझाइ ॥
छं० ॥ २३० ॥

वे चंद अंध मैं रिस न कौन । वर बंक दिष्ट छंडै न भौन ।
सुविहान थान रष्षै[1] अदब्ब । करतार हथ्थ लक्करिय ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २३१ ॥

करतार केलि जानी न जाइ । चिंतवै आन आनह सुथाइ ॥
बलिराइ कौन जीतन सुइंद । बंध्यौ विधान थानह फुनिंद ॥
छं० । २३२ ॥

धरि अब्ब रह्यौ तिन बार तब्ब । सुरतान बोलि वर कहिग सब्ब ॥
हम जाहिं चंद षेलनह दप्प । दोय गल्ह कल्हि करि चलहु तप्प ॥
छं० ॥ २३३ ॥

सुरतान हरन माया सुभट्ट । जिहि काज चंद सिर बंधिय जट्ट ॥
षट मुर पंचवि जो लग्गि घट्ट । सुरतान प्रात बन गहौ[2] वट्ट ॥
छं० ॥ २३४ ॥

दो ॥ जु कछु न्यायौ भट्ट वर । तुम जानौ बहु बुद्धि ॥
सो टरै न विधुना मुहथ[3] । महत न दुष्प अलुद्ध ॥
छं० ॥ २३५ ॥

शाह का पीरोज खां हबसी को कवि की खातिर करने की आज्ञा देना ।

दुरी ॥ बुल्यौ सुबीर सुविहान जान । हबसी सबोलि सुविहान षान ।
फिरि सोहि ताहि फुरमान दीन । हम बहुत चंद महमान कीन ॥
छं० ॥ २३६ ॥

(१) ए० कृ० को० निरषै ।
(२) ए० कृ० को० गसौ ।
(३) ए० कृ० को० विहथ ।

कवित्त ॥ वर इवसी पौरोज । हथ्थ सुविहान भट्ट दिय ॥
पुव्व दिसा पचिय हुज्जाव । अस्तुति समन्न किय ॥
सुप सुपग मिष्टान । पान सुग्गध धूप घन ॥
दिय्य धाम दह वाम । कुमति पाहार जुद्ध मन ॥
वसतर सुरग घन सुमन दुति । दुतिन वढिय वर चद की ॥
आनद कद वहून दुतिय । दुति वढ्ढिय वर दद की ॥
छ० ॥ २३७ ॥

दूहा ॥ फिरि सुचंद चलि नगर कौ । दियौ साहि फुरमान ॥
विधि उद्दय कमुदिनि मुदय । गयौ अस्तमित भान ॥छ०॥२३८॥
करत चद महिमान सब । अगर धूप दिय देह ॥
भिद्दै न सुप तन दुप्प वढि । ज्यौ अतक वरगनि नेह ॥छ०॥२३९॥
निमासा मनपिन विमुप । पिन रेनी मन वित्त ॥
साहि सहाव अदर गयौ । मौर समोधन पित्त ॥छ०॥२४० ।
है हद्दक करि पेद्दौ । ग्रह आयौ सुरतान ॥
ऋषत चद मन में सुनिसि । इम अप्पै[1] सुविहान ॥छ०॥२४१॥

कवि का भीम नामक खत्री के घर डेरा दिया जाना ।

पद्धरी ॥ हुज्जाव चद दोउ एक सथ्थ । आए सुग्रेह पचीय तथ्थ ॥
बोलयौ भीम हुज्जाव ताम । वे आम कव्वि रथ्यौ सुमाम ॥
छ० ॥ २४२ ॥
सुनि भीम अत्ति आनद अप्प । लग्यौ सुपाइ पचौ सुतप्प ॥
हुज्जाव फिर्यौ कवि प्रेरि ताम । लै गयौ भीम कित मनि काम ॥
छ० ॥ २४३ ॥
किय अर्ध पाद पचौ सुकव्वि । उपचार विमल बोनौ सुतव्वि ॥
आसनह सुप्प अति सेव सज्जि । उपचार देपि कवि कित्त रज्जि ॥
छ० ॥ २४४ ॥
अग्गिया मांगि पचिय अहारि । सम रुचिय[2] भाव रथ्यौ सहार ॥
छ० ॥ २४५ ॥

(१) मो०—अप्पै । (२) मो०—साहिव ।

कविचन्द का भीम से एक एकान्त स्थान मांगना और कवि की रुचि के अनुसार भीम का एकान्त स्थान देना।

दूहा ॥ रंजि सुकविता षिचि सम । कहीं सत्ति साभिष्टि ॥
देहु निरंतर ग्रेह इक । हम भुक्ख्यौ जुनि[1] इष्ट ॥छं०॥ २४६ ॥
तब षची कर जोरि कहि । अहो सुकवि आरोह ॥
अत्ति निरंतर ग्रेह इक । तुम आअम्हु तेह ॥छं० ॥ २४७ ॥
अद्भुत कवि षिचिय जगति । ग्रिह हेषवि मन ह्लास ॥
एक सिंघ अह पष्यर्यौ । अब मन पूरौ आस ॥छं० ॥ २४८ ॥
सुरिह्ल ॥ कवियन भद्वि ताम आयासह । संपन्नौ जहाँ भासन भासह ॥
हेषि अवास रीझि उर बासह[2] । अति निरमल कञ्चल सुर रासह[3] ।
छं० ॥ २४९ ॥
तहं विरम्भ किन्नौ कविरामह । बोलि कवी षिची बर तामह ॥
मंगे परिकर होम प्रचारं । होम जोग प्रति पूजा सारं ॥
छं० ॥ २५० ॥
जे जे परिकर मंगिय कव्वी । ते ते आनि भीम दिय तव्वीं ॥
करि आसन कविचंद महामय । बैठो धारन धयान सज्जि सय ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पूजन की सामग्री जुटा कर कवि का हवन करना।

करे जाप सा मंच बीज वर । लग्गो करन होम सा त्रिधि पर ।
करे ध्यान पूरन जप कव्वी । सनमुष तोन प्रगट्टी हव्वी ॥
छं० ॥ २५२ ॥
मंनिय षेद कविय जन तामं । लग्गो करन मंच स्तुति कामं ॥
न्यास षडंग अंग रष्या करि । बैठो मग वच काया संवरि ॥
छं० ॥ २५३ ॥
द्वार करंक कपट करि दूरं । इन विधि मंडप कुंड सपूरं ॥
श्रित गुग्गल कनयर जा सूलं । मधु दधि दुगध मिश्र लां मूलं ॥
छं० ॥ २५४ ॥

(१) ए० कृ० को० अति । (२) ए० कृ० को० भासह । (३) मो० राजह ।

जुग जातक मेवा बहु भती । श्रीफल पट्ट पितावर दती ॥
समिध त्रिप्य ब्रह्मह सनमानी । चाटुति[1] अगुल जुग नषजानी ॥
छ० ॥ २५५ ॥

एक पट्ट पहिरन भट्टान । बैठी करन अत तुरकान ॥
प्रानायाम करे आचमन । दस द्रिगपाल षेचपति सुमन ॥
छ० ॥ २५६ ॥

अग्रज दती देव अराधी । इम करि मात उमा कवि साधी ॥
अष्षर आदि अनादि उचार । बीज गुपत जिय काया धार ॥
छ० ॥ २५७ ॥

कवि का बीज मंत्र का जाप करना ।

दूहा ॥ प्रनव आदि षोडस बरन । नाम अनत विचार ॥
इन में त्रिभुवन साधनी । विद्या नेक प्रकार ॥ छ० ॥ २५८ ॥

बीज मत्र के जाप की विधि और ध्यान ।

लघुनाराज ॥ अहो प्रनव्व रूपय । जगत्त बीज जूपय ॥
श्रिय सरूपय सय । समीर तेजय तय ॥ छ० ॥ २५९ ॥
सवास बीज माइय । सुवाग बीज ताइय ॥
प्रभास सूर वासय । अनग बीज रासय । छ० ॥ २६० ॥
विधान बीज सारय । सुधा सुमोम कारय ॥
स्वर सरूप षोडस । वरन्न ब्रन्न जोड़स ॥ छ० ॥ २६१ ॥
सकत्ति रूपय तय । प्रचार चार चित्तय ॥
कनक्क रूप माइय । प्रकार जग्ग ताइय ॥ छ० ॥ २६२ ॥
निबध बध वधय । विलोम लोम सद्दय ॥
वरन्न रूप मन्नय । विनद्दि विजन मय ॥ छ० ॥ २६३ ॥
अकास रूप मायिय । न बुद्ध पार पाइय ॥
पुरस्स देक कज्जय । अनेक रूप रज्जय ॥ छ० ॥ २६४ ॥
अहस सद्द सेवय । निबद्ध नेह एवय ॥
दरस्स रूप देविय । सुवास वद्ध ते वय ॥ २५ ॥

(१) ए० कृ० को —चाटुनि ।

देवी का प्रगट होकर वर देना कि शाह पृथ्वीराज और तूं तीनों एकही घड़ी अन्त को प्राप्त होंगे।

गाथा ॥ सुनि देवी कवि कव्वं । दीय हुंकार अप्प आयासं ॥
मम करि दुप्प सुभट्टं । दरसन समय नथ्थ लहि बुद्धं ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ निसि निसह उत्तरिय । चंद जग्गे रचि होमं ॥
वेद मंत्र आरंभ । जाप पूरन पढ़ि सोमं ॥
दियसु[1] मात हुंकार । देवि धुनि सुनिय वीर भट ॥
छंद बंध उच्चार । जंत्र जंत्री[2] सुमंत्र पट ॥
उच्चार भट्ट चित करन वर । बीर प्रबंधन छंद किय ॥
चिंतयो जोग बंछै सरन । और न तात विचार विय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

गाथा ॥ साह बदी सुलतानं । तो प्रथिराज अंत दिन एकं ॥
तो चहुआन स कित्ती । वहै वर बेलि मुहमि परचोरं[3] ॥
छं० ॥ २६८ ॥

करि साहास रचि बुद्धी । सिद्धी सिद्ध मंडि सा क्रज्जं[4] ॥
उहिम सुहिम सारं । करि कविराज चित्त थिर थप्पे ॥
छं० ॥ २६९ ॥

तब कहि चंद सुकव्वी । सुनि जग मात मुझ गिरं[5] विग्यानं ॥
बालप्पन निज नेहं । सो निब्बाहे नेह सा देवी ॥छं०॥२७० ॥

छं॥ सुनि सा सकति किद्ध हुंकारं । झमके विज्जल तेज सभारं ।
सुनि वरदाय धीर मय सारं । मकरि मोह मय षेद अपारं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

जे निम्मान विधानं भावं । सो निम्मान मिटै नह ठावं ॥
बेली कित्ति बंध राजानं । उरध लोक तुम पावै प्रानं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

ए० कृ० को० दियत । (२) ए० कृ० को० मंत्री । (३) मो० परिवार ।
(४) मो० कज्ज । (५) ए० कृ० को० बुज्झि विज्ञातं ।

दूहा ॥ रीझ उमा कहि डरन करि। दरस मिट्टि कविराज ॥
बैठि रसन सुलतान कै । चद करन क्रित काज ॥
छ० ॥ २७३ ॥

सुनि आन द्यौ कन्नि जिय। धरिय अत मन ध्यान ॥
सिद्धो कारन जानि जिय। विरतौ प्रेम पुरान ॥
छ० ॥ २७४ ॥

कवि के पूजन समाप्त करने पर भीम का पूछना कि आप अपनी इच्छा को क्यो कर पर्ण कर सकते हैं तब कवि का उसको देवी के दर्शन कराना।

कवित्त ॥ प्रान कलपि पति काज । चित्त सर वेद भेद उर ॥
आसन वासन तजिय। पूजि द्रुग्गा पूरन करि ॥
तब दिपि बोल्यौ भीम। एक विग्यान मुझ्झ सुनि ॥
तुम राजिद सुभट्ट। भस्म अप्पित इप्पित मन ॥
जल उस्न आनि कुकुम सक्रित। पर स्यालन तन ताम किय ॥
वसनह सुदिय्य आछोदि मुनि। अति आनदिय भीम जिय ॥
छ० ॥ २७५॥

दूहा। उमरि साहि घन घाइ इहि। रस रेती करि दाय ॥
तमनि किरनि लग्गत विषम। बीर मच परदाय ॥ छ० ॥ २७६ ॥

देवी का स्तुति।

भुजगी। निराधार विद्या देवी देहि चद। जपौ तुझ तू ही जतू ही प्रबध
कहा साहि गोरी असमान सूर। कहा भट्ट फकीर लोटत धूर ॥
छ० ॥ २७७ ॥

कहा राज अधान बध विधाय। कहा कोस कम्मान आवै न दाय॥
जही वान आतम्म मात्म भारी। तुही बीर रूपौ विराजी करारी॥
छं० ॥ २७८ ॥

तु ही सत्य सत्य वदै वेद मच। तु ही भेद अभ्भेद जायासि तच॥
तु ही तेज सूरज्जि सो वेलि चद। तु ही आसमान तु ही भीम नद।
छ० ॥ २७९ ॥

तुंही प्रकृति पारं अपारं सुरब्बं । तुंही अजै अरधंग अजपादि सि
करामाति कंधं करत्तार काया । तुंही कामनी काम संसोर जाए
छं० ॥ २८० ॥

कली काल चालंत चामंड भाली । तुंही बाल जोवन्न ब्रह्मंति क
रटै नाट रागं विराजी विराली । हरै मोह रंगं बजै बज्र तालो
छं० ॥ २८१ ॥

हरै सच्च बुद्धी कमिच्चं जयंती । जपै तोय सायं प्रली लागियंतं
बध्यौ तब्ब तेजं जयौ अद्ध मुंडं । अजै वा विजै वासही देह छं
छं० ॥ २८२ ॥

घरी पंचली देवि को तिग्ग देष्यौ । सती साहसी सिद्ध तूंही विस
धरी ध्यान देषी बढी बीर रूपं । चढ़ी जोति देषी बिमानं अनू
छं० ॥ २८३ ॥

जमी अंत सोहंत जालंधरानी । सरै सब्ब काजं बरदाय बानी
उमा भो विसासी परत्तीत पाई । जहां अब्बि सासी तहां देविन
छं० ॥ २८४ ॥

नियं देह देषै विरूपं रिसानं । तजै मोह माया गई आसमा
निसा पंग रंगी अरंगी सुजायं । सुभं सुग्ग जानै लियै हथ्थ ह
छं० ॥ २८५ ॥

सकुन्न जनंने मरन्ने विहाने । बजै दुदुंभी देवि भूमी निसाने
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा । भई सबद आयास धुनि । भय सुकाम तुह सत्त ॥
तब विचिच चिंत्यौ सुमन । नीति न रष्यौ हित्त ॥
छं० ॥ २८७ ॥

उस रात्रि को मुसलमानी जंत्र मंत्र कान चलना और मुल्ला के मन में विस्मय होना ।

भुजंगी । महल साह साहाब सुरतान गोरी । जगी अलनि किरनानि
सँभान जोरी ॥
किते वे कुराने कुसी कान लग्गे । डरे देव बानी नहीं मंत जग
छं० ॥ २८८ ॥

डरे दान दैये सुलीए फकीरे। तहा करि सकै कौन ग्रह साहपीरे॥
फिरस्ते न हस्ते न मुल्ला पुकारे। ठठै मुट्ठि दिट्ठी तहा गातझारे॥
छ० ॥ २८९ ॥

चले सेप सीपी भये दड लीधा। रहै सच मिचे गुरू ग्यान बीधा॥
[1]हित अन हित्त दिपै जा उलप्पै। सत दूअ विधी पर जीव लप्प
छ० ॥ २९० ॥

सयते धन ते तवी वेव तेहा। चित अन्न पाने नही जाव जेहा॥
निय ध्रम्मधारी धुर पासवान। सदा सुप्प सेवै जन गातवान॥
छ० ॥ २९१ ॥

पके पक्क पान समान त नेह। अप अप्प रप्पै जिसे देह देह॥
वस विस्तरे सा पवास सहथ्थ। अभुत्त सु ज्योतीतग हेम तथ्थ॥
छ० ॥ २९२ ॥

सुछ चुन पूगी कथा पान धारी। जिके अप्रवाहे जिसे भूप भारी।
जहा मच सापी चिया चेय लोपै। वर कि करै दुष्ट वै रीति कोपै
छ० ॥ २९३ ॥

जितै पान पधार अनुकूल सारे। मन कपट घरियार चित्त विचारे
छ० ॥ २९४ ॥

दुहा॥ भय विद्दान सुविद्दान दर। वजि नववत्ति निसान।
तम चूरन जूरन किरन। प्रगटि दिसान दिसान॥
छ ॥ २९५ ॥

प्रातःकाल हे तेही शाह का कवि को बुलाने की इच्छा करना।

कवित्त। भय विद्दान सुविद्दान। सद्दि वदगी निरामय॥
वजि नववत्ति निहाय। घाय वज्जिय घरियारय॥
नट्ठि तिमर तपि सूर। प्रवर रह दीन तत्त मति॥
जग्गि साहि साहाव। काज किन्नौ नित्थह गति॥
आरोहि बसन उस्नीप रजि। पां पियारि धरि आदरस॥
निरपत निवासह[2] मडिकिय। चडिय कारन चड रस॥
छ० ॥ २९६ ॥

(१) मो०—हित अनहित देपि जास उलप्प। (२) ए० कृ० को०—हिरपत निवारह।

दूहा । हरष हहकरि गिल्लयौ । घर आयौ सु विहान ॥
झषत चंद मन मंझ निसि । नीठ सु भयौ विहान ॥छं०॥२९७॥

शाह का हुजाब को कवि के लाने की आज्ञा देना और तातार का उसे मना करना ।

किय आदरस निवास । द्रुग्ग मधि सेव सधारन ॥
तब चित्तह चढि चंदु । मिलन मन किन्नौ धारन ॥
तिहि सु समय सल्लाम । आय ततार षान तब ॥
षां रुस्तम षां जमन । आय बर पास सेव सब ॥
उच्चार्यौ साहि हुज्जाब सौं । बोलि भट्ट चहुआन तत[1] ॥
सिर धर्यौ बोल हुज्जाब जब । तब बुल्ल्यौ ततार तत[2] ॥
छं० ॥ २९८॥

चौपाई । इम चिंतत चिंत्यौ सुलतान । बे कहां भट्ट निसुरत्ति षान ॥
बैराग राज बन जाय चंद । दोइ करै गल्ह दुनिया सदंद ॥
छं० ॥ २९९ ॥

कवित्त । सुनिय हुकम निसुरत्ति । करिय तसलीम साहबं ॥
बंदो की इह नाहि । करै सुविहान जुबाबं ॥
अबिचारी करि बत्त । हाय पौछै पछितावा ॥
मंत मंति किज्जियै । दोस दुनिया नह आवा ॥
हित कहै स्वामि सेवक सुभ्रम । अबर बोलि मत पुच्छियै ।
जानौ न बत्त कपटी करह । क्यौं विसास 'नस[3] इच्छियै ॥
छं० ॥ ३०० ॥

शाह का कहना कि देखें तो उसमें क्या रहस्य है, बातों बातों में बड़े रहस्य प्रगट होते हैं ।

बैठि मत्त सुरतान । रसनि निम्मयौ करन बर ॥
अन्न राज दिन पुज्ज । चंद प्रानेज काल चर ॥

(१) ए० कृ० को०—वत ।
(२) ए० कृ० को०—तस ।
(३) ए० कृ० को०—तस ।

सूर उदै बिन भेद । चंद सुरतान समरिय ॥
बोलि पान निसुरत्ति । पान हुज्जाव उच्चरिय ॥
मट्टहि सु[1] तत्त जानन सकल । नवि अकाल गति बुझिअयै ॥
जानै न लोय इह लोक मे । कोन भेद कत सुझ्झियै ॥
छ० ॥ ३०१ ॥

सुनिय पान निसुरत्ति । पान ततार पधारिय ॥
गरुह दद टारियै । गरुह आनद उचारिय ॥
निदा कुल सपात । काल गच्छै अबुद्धि मति ॥
सिद्धि बोध जिहि होय । काल गच्छै जु गरुह भति ॥
इक रहै गरुह सोई ग्रहन । रहन सोय सो ग्रह नही ।
इहि रोज साहि साइति कुफर । करहि अरज आनन गहि ॥
छ० ॥ ३०२ ॥

तत्तार खा का कहना कि शत्रु और सर्प का विश्वास करना उचित नहीं ।

तब तातर निसुरत्ति । पानि बर जोर समीप ॥
बे अदब्ब सुलितान । नेक जपौ पुब्ब अप्प ॥
अदब रष्षि दै दान । निजरि दिष्षियै न दुर अरि ॥
बर कुरान काजौ कहत । अदब सुविहान पुब्ब करि ॥
नट भट्ट सद्द डकनि[3] डहर । अप्प षेल दुसमन दरस ॥
विष वाद वाद पापड बिय । करि न साहि आलम परस ॥
छ० ॥ ३०३

सुनि ततार हुज्जाव । करन जुलि साहि सिकदर ॥
कीय बहुत अरिजग । फेरि अग्या सब बदरि[4] ॥
हिंदवान धर कही । कब्बौ सेना सब साजिय ॥
मिले राह बिच आनि । स्याह चौटिय दल माजिय ॥
महिमान साहि दल सबै करि । तब पुच्छिय इह कोन गति

(१) ए० कृ० को०—कहै भट्ट। (२) ए० कृ० को०—नेक पुब्ब सुनाप
(३) ए० कृ० को० मकनि। (४) मो०—दरिर।

मुक्काम कोय मोदी दियन[1] । पर्‌यौ पान लीनौ सुभति ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

तातार खां का कहना कि खाड़ा खुदा कर तब कवि को बुलाओ ।

दूहा । फिर्‌यौ सिकंदर बात सुनि । तब कहं काजि किताब ॥
षाड़ा हथ्थ षुदाय कै । आनौ भट्ट सिताब ॥ छं० ॥ ३०५ ॥
फुनि तातार अरदास करि । अप्प अहित जो चम्म ॥
कालिह स पिष्यौं विकट वित । साहि न कीजै गल्ह ॥ छं० ॥ ३०६ ॥
फिरि तातार अरदास करि । वे आलम सु विहान ॥
नट नाटक डिंभी[2] डमरू । ना बूझहिं सुलतान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
वे फकीर अरु जोइ तप । हम करामाति सुलतान ॥
कहिग गल्ह देाय पुच्छियै । अरु जु लेइ कछु दान ॥ छं० ॥ ३०८ ॥
वेत्त । सुनहु साहि साहाब । बषत या गहिय अम गुर ॥
समय करीम कुरान । सजहु निमाज बंदिधुर ॥
इह अदीन कफरान । कान तस नाम न लिज्जै ।
जिते आनि अप्पनी । तिते या रहन न दिज्जै ॥
तुम जान ग्यान अति मुनि गरुअ । दैन सीष को तुम समन ॥
अति मान जान गोरी गरुअ । समय विचारौ सत्ति मन ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

शाह का कहना कि वह गुणी पुरुष है मैं उससे अवश्य मिलूंगा तू मूर्ख क्या जाने।

तब अंपै साहाब । सुनहि तातार षान तत ॥
इह सु चंड मति मंडि । दीन मंदित सदा हित ॥
छंद प्रबंध कवित्त । पढहि आलम मन रंजै ॥
विषम बैर उद्धार । ताहि सुनि बोत समुझ्झै ॥
बुझ्झवन बत्त जीरन जुगति । इय बरदाइय ग्यान गुर ॥

(१) ए० कृ० को० दियत । (२) ए० कृ० को० दंभी ।

चिहु देस[1] चंड मंडै सचिर । रसन प्रेम रस ध्रम्म धर ॥
छ० ॥ ३१०

तमि जरै तत्तार । साहि आनौ स बिद्धि बर ॥
इह सु चंद कोफरे कुराइ । बलहं अरियन दुर ॥
इह सु सेव सज द्रुग्ग । मच आनै अति आगम ॥
तच मच सुट्ठिय प्रमान । बूझिय बीरागम ॥
कीजै न बत्त इह जुगति मिलि । जो बुझै धन चंड सब[2] ॥
इछौ जु साहि गुनियन गरुअ । तौ बहु आनौ भट्ट अब ॥
छ० ॥ ३११ ॥

दूहा । तब जपै साहाब तमि । रे सुनि पान तत्तार ।
जे निस प्रेही गुन गरुअ । सुन्यौ सयल मति सार ॥छ०॥३१२॥

तत्तार खा का पुन मना करना परतु शाह का न मानना ।

पा तत्तार तब उचर्‌यौ । सुनि सुलतान सुभास ॥
अरियन जन जेवस्त हो । को मिलियै नर तास ॥छ०॥३१३॥
जिहि छड्यौ ससार सुप । जिहि छड्यौ ग्रह बास ।
ता पुरप कौ दुज्जनह । जो सजन को आस ॥ छ० ॥३१४ ॥
इह सुभट्ट चहुआन को । सुन्यौ वीर बरसत्त ॥
अरजु साहि आलम करै । सु कहै बनै छचपत्ति ॥छ०॥३१५॥
[3]वे तत्तार गोमर गुमर । बत्त न बुझ्झै तत्त ॥
विधि विधिना भजन मतै । को रप्पै हित गत्ति॥छ०॥३१६॥
सुनि कक्कस बर बेन त्रिप । बरजि अप्प दरवान ॥
गो फकीर बर है सुभट । दुप्प बहुत चहुआन ॥छं० ॥ ३१७ ॥

कवि का दरवाजे पर आना परंतु तत्तार खा के इशारे के अनुसार दरवान का उसे भीतर जाने से रोकना ।

कवित्त । बोलि पान पत्तिय इसाब । पान पीरोज बुलाइय ॥
कहा भट्ट कविचंद । हथ्थ अप्पै बरदाइय ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहु देस ।　　(२) ए० कृ० को०—जुब ।
(३) ए० कृ० को०— वे ततार गुम रप्प गुर सुनन बुझ्झ तत बत्त ।

जोग जुगति पुच्छियै । तंत पुच्छियै सुभग्गा ॥
कहि गल्हा लै दान । प्रान संतोष सुजग्गा[1] ॥
बर मित्त अस्सप्पति भट्ट वह । कां भंजै निग्गान गति ॥
तत्तार षान षुरसान षां । हमति जान जानै सुभति ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

दूहा । तब सहाब मुष उच्चर्यौ । मियां मल्लिक जै पान ॥
दौरि चंद संमुह चलै । बे बुल्लै सुलितान ॥ छं० ॥ ३१९ ॥
चल्यौ चंद समुहाय तब । मीर मल्लिक न सथ्थ ॥
देषि रूप दर जोग कौ । रुकि दरबानन तथ्थ ॥ छं० ॥ ३२० ॥
आवत जान्यौ चंद जब । तब मति षान ततार ॥
साहि अजानै अप्प मति । रुक्कायौ दरबार ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

कविचन्द का रोके जाने पर देवी का स्मरण करना ।

जब रक्यौ कविचंद दर । तब चिंतिय चिय धीर ॥
मंच रूप असतुति करन । लग्गौ बर बिधि बीर ॥ छं० ॥ ३२२ ॥
॥ नमो देव देवंस वीरोधि बीरं । स्वयं जापिनोकं स्वयं ना कसीरं
चयं[2] काल रूअं चिगुन्नं चिधामं । हुअं[3] कारनं क्रित अन्नेक नामं
छं० ॥ ३२३ ॥
रूअं लघ्घु थूलं सु आयास तूलं । बरं अग्र कालो स्वरं सद्दिमूल
सदा भैरवं रूप बीरं बिराजं । बरं अग्र काही सुधारी सुकाजं ॥
छं० ॥ ३२४ ॥
जहा संकटं[4] सेव मानै अपारं । तहा आप[5] आयं नियं[6] काम सा
रमै बीर लोकं चिलोकं चिसूलं । गदाचक्र बाहं[7] हथं धंनु जूयं
छं० ॥ ३२५ ॥
मद्दग्गं चिसूलं परीधं सुषासं । ग्रहै ब्रह्म संकीति संगी दुरास ॥
कनै कुंत कत्ती पुरस्सी कुठारं । धरै सब्बलं सेल नाली कनारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

(१) मो०— सुभग्गा । (२) ए० कृ० को० अयं । (३) ए० कृ० को० हुकं ।
(४) ए० कृ० को० सकया । (५) मो०—अयं । (६) मो०—निजं । (७) मो—बान

हस्त मूतल भिडि पाली फरिक्का। जम दड्ड निड्ड परस्स छुरिक्का॥
धरै आवध एक अन्नेक नाम। जहां सक सेव तहा आय काम॥
छं० ॥ ३२७ ॥

अह सकट आय लुभ्यौ अनूपं। करौ आज काज अम्ह[1] आय जूप॥
करौ आज माया प्रगट्ट सरूप। महा मोहन आसुर शब्ब नूप॥
छं० ॥ ३२८ ॥

सुने आइय वीर असतुत्ति चद। भई आसुगान सबै बुद्धि मद॥
भयौ आय वीर स हुकार सद्द। धरा धम्म धम्म उड़ी रैन रद्द॥
छं० ॥ ३२९ ॥

फटी पौरि परदार झमी झमीर। भई हाय हाय महो माहि मीर॥
छं० ॥ ३३० ॥

शाह के आज्ञानुसार हुज्जाव का कवि को शाह के समुख लिवा जाना।

पातिसाह वाक्य।

चौपाई॥ तब सहाव बोल्यौ हुज्जावह। अहो भट्ट आनो मित्तावह॥
तब हुजाव आयौ कवि पासह। बोलि चल्यौ कवि अदर तासह॥
छं० ॥ ३३१ ॥

उस स्थान का वर्णन जहा पर कवि शाह के समुख गया।

पद्धरी। सम कहिय वत्त पर दार साहि। हित अहित चित्त दिष्यौ सताहि॥
आलस्स कहहु सो करहि तथ्य। आवन्न देहि कै रुकहि पथ्य॥
छं० ॥ ३३२ ॥

बुल्यौ सुचद हज्जूर साह। बुझ्झन्न वत्त अप पातिसाह॥
वैराग चद तुम जोग सत्त। जोगह विरुद्ध हम मिलन[2] मत्त॥
छं० ॥ ३३३ ॥

सग्रह्यौ पान पानह हुजाव। तुम चल्यौ चड बुल्ले[3] सहाव॥
लै रष्षि सद्धि ठड्डौ मदस्स। सुव्वास रास अदर चदस्स॥
छं० ॥ ३३४ ॥

(१) मो—अम। (२) ए० कृ० को०—मिनव। (३) मो०—बोले।

बैठक सुरंग सुभ चित्त साल। सोहंत अति उज्जास भाल ॥
विसाल महल वर रंग भोम। प्रासाद उंच मंडप सिरोम ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

वात्थानि[1] जाल पति भत्ति नूप। हिम थंभ जोति जग मग सरूप
झलकंत कनक कुंदन सुभाल। एकेक रूप रंजत रसाल ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

जग्गहि सजोति नग जटित जास। राजंत रवनि दसकंध वास ॥
चयकाल रूप तरुनी महल्ल। दह इक्क भुग्गि रोचित रहल्ल ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

जालीय वार छजि मुत्ति दाम। नग जंबु वह सज्जे सु काम ॥
सत षन्न उंच साला सु एक। तहां मयन सयन सुष सेज नेक ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

वनि गौष पट्ट सज्जे सुथाल। आछादि साम आसन उछार ॥
मूढाव गादि मंडौ सुथान। बैठा सु[2] साहि आसन उतान ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

दस पंच हथ्थ अधि चित्तसाल। सम फिरत मंडि सह मत्त[3] आल
उमराव मीर बैठै सुतथ्थ। कुलवंत सूर संग्राम हथ्थ ॥
छं० ॥ ३४० ॥

उंचे उतान बंधे अनूप। धनि ग्रिज्ज[4] मनहु मंडे सरूप ॥
ठट्ठौ सु कियौ कविचंद आनि। उग्गारा मीर सब अन्नि मानि ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

हा। दिष्षन रूप सु जोग कौ। आए सब नर नारि ॥
अंदर बासी अथ्थि सह। मिले निरष्षन हार ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
टक। मिलि साह हरष्ष हरग्ग चढ़ी। प्रिथीराजह अंत अनंत बढ़ी ॥
जर कंबर अंबर से पटयं। झमि जानि भुमंकत ता तटयं ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

मिलि तुंगत मासिक ताटकयं। जनु देव विमान सुरा सकयं ॥

(१) ए० कृ० को० बासानि। (२) मो० जु।
(३) ए० कृ० को० सहसत्त। (४) ए० कृ० को० घनग्रज्जि।

दिषिन धन सासि कविंद इह । नव रासित भासि सबद्द कह ॥
छ० ॥ ३४४ ॥

दुहा चित्त[1] रूप कविचंद कौ । जै जगि गोविंद राव ॥
जिहि दुचित्त अरि गजियै । सो अथवै उग्गाव ॥छ० ॥ ३४५ ॥

गाथा । निरषे रूप सुभट्टं । तन विभूति जट्ट जूटाय ॥
कल पानी चष पानी । निरषे अद्भुत तेज विद्यान ॥
छ० ॥ ३४६ ॥

पातिसाह वाक्य ।

शाह का कवि से योग के विषय में प्रश्न करना ।

पद्धरी । बुलाइ चंद हजूर साह । बूझै सुवत्त अप पातिसाह ॥
वैराग जिद्द कहो जोग गत्ति । जोगहि विरुद्ध हम मिलन मत्ति ॥
छ० ॥ ३४७ ॥

कविचंद वाक्यं ।

सुरिल्ल ॥ एक मझरत रूप निरष्ये । बुझ्यौ साह कवी सम सष्ये ॥
माया मोह सुष्य ससार । दारा पुत्र पौत्र परिवार ॥
छ० ॥ ३४८ ॥

धन धामं चौपय अनि अष्यी । मोह जाल विलसन विस बष्यी ।
नह छुट्टै कसि कुम प्रकार । जोग धम जनु पडाधार ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

बंधे पच इंद्री परिवार । बंधे पच धारना धार ॥
कचन जेम उपल अवि लष्ये । बधे गठि आतमा सष्यै ॥
छ० ॥ ३५० ॥

झंगर विघ्न गिरिवर वास । मिलन एक आतमा सहास ॥
इहि विधि विवरि सु जोगह जित्तै । अवर उभै चुकै मुह रत्तै ॥
छ० ॥ ३५१ ॥

तब जपै कविचंद महामय । सुनि गोरी साहब गज्जन बय ॥
दरस जात सब लोक समथ्थय । दरसन कारन तीरथ अथ्थय ॥
छ० ॥ ३५२ ॥

(१) ए० कृ० को०—चित्त ।

धरपति दरस सहि करतारं । तिहि पहु दरसन वंचि विचारं ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

कवित्त । से। जोगी परिमान । लेय अहार इन सुभति ॥
ज्यौ लेपन मिसि ग्रहै । अधिक नन लेप अप्प छति ॥
से राजन परिनाम । कबहुं चपै नन लच्छिय ।
ज्यौं अंषि रूप नन चपै । सोय राजन मन अच्छिय ॥
पंडित सु विनय विद्या चपै । चिपाति रुवामी जिय चपै ।
सुत साय तात रिन उद्धरै । पिता सोय अध्यहु अप्पै ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

पतिसाह वाक्यं ।

गद्दरी । कविचंद कही जब इह सुकथ । पतिसाह तबैं अप्पिय सुवत्त ॥
शृंगार वीर जौ जौग सत्त । जोगह विरुद्ध हम मिलन मत्त ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दूहा । हमहि निलैं जैचंद सुनि । विरह दरिद्रीय लोभ ॥
अरु जु दुनौ महि संचरहि । हम सौं मिलत न सोभ ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

चन्द वाक्यं ।

तबही चंद कवि उच्चर्यौ । सुभ पुच्छहु सुलतान ॥
जोग भोग इहि रीति तौ । सब जानौ सु विहान ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

पातिसाह वाक्यं ।

कवित्त । जोग सुनौवरदाय । इक्क संतोष तत्त गुर ॥
अप्प पावन रहै प्रान । ग्रहै संतोष मंच उर ॥
कंद मूल चिन पत्र । रहै मुनि अरघन कालं ॥
बन गज कीटी भ्रंग । अंग संतोष सुपालं ॥
संतोष रतन पर मन्नि नर । तजि संतोष हम चिंतियै ॥
जोगह विरुद्ध हम मिलन मति । इह अबुद्धि इह मंतियै ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

चंद वाक्य ॥

दोहा ॥ हम अबुद्धि सुरतान इह । भट्ट भाष सुष काज ॥
नव रस मे रस अप्परस । इहै जोग सुष काज ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

कवित्त ॥ जोय सुष्प कविचंद । होय वितराग देह घत ॥
सुपनि सोय मुनि रुद्र । चक्कवरती न लहु छित[1] ॥
सो न सुष्प हरि हरन । ब्रह्म पावै न नाग नर ॥
लहि न सुष्प ससि सूर । सुष्प लहै न काल वर ॥
लह्यौ न सुष्प सुर असुर नर । नह लह्यौ द्रिगपाल किहि ॥
सो सुष्प जोग क्यो मुक्कियै । क्यौ कविंद्र आयौ सुइहि[2] ॥
छं० ॥ ३६० ॥

चंद वाक्य ॥

चौपाई । वीतराग सह चित्त सहायौ । सुपह काज तज्यो सुष भायौ ॥
इक्क जपूई[3] अरदास नरिंद । करै साहि तौ मुक्कौ[4] दंद[5] ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

दोहा ॥ जो कछु मगहु भट्ट वर । करै वनै सुविहान ॥
भुम्मि लच्छि द्यौ चंद तुहि । नह अप्पौ चहुआन ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

चंद वाक्य ॥

नह मगै कविचंद नृप । कहौ न रसना छंडि ॥
कथ्थ पुव्व आलम कहौ । छिनक अवन जो मंडि ॥
छं० ॥ ३६३ ॥

वालपनै प्रथिराज सम । अति मिच तन कीन ॥
जुकछु स्वाद मन मैं भयौ । इच्छा रस मंगि लीन ॥
छं० ॥ ३६४ ॥

(१) मे० छिन ।
(२) ए० कृ० को०—ब्रह ।
(३) ए० कृ० को०—जपौई ।
(४) ए० कृ० को०—मुक्कैं ।
(५) ए०—दिद ।

पुब्ब पराक्रम राज किय । कछु जंपो तुछ ग्यान ॥
अरु जु कछू तुछ जंपिहौं । सब जानौ सुविहान ॥
छं० ॥ ३६५ ॥

इक्क सुदिन प्रथिराज रस । मुष कट्टी तिहि वार ॥
सिंगिनि सरवर इच्छिविन । सत्त हनन धरियार ॥
छं० ॥ ३६६ ॥

वर सुनंत कंपै हियौ । दिल न रहै सुरतान ॥
सुद्धरोग भौ रोग मन । कट्टन कौं सुविहान ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

तौ[1] आयो तुहि आस करि । तो पासें चहुआन ॥
सो दरोग दिल लग्गि मुझ । कट्टन को सुविहान
छं० ॥ ३६८ ॥

मैं जान्यो अचरिज्ज मन । नृपति संच कौं लीह ॥
तब लगि इहि विधिना लषो । आय संपत्ते दीह ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

अरिल ॥ कट्टन कौं पतिसाह तुंही । मनमंझ रह्यौ कविसाल जुही ॥
आयौ सु आज करि पैज तही । बन जांउ सुसाह सहाव गही ॥
छं० ॥ ३७० ॥

पातिसाह वाक्यं ।

दूहा ॥ सुनि सहाब गह गह हंस्यौ । वे वे भट्ट सुभट्ट ॥
अंषिहीन मति हीन भौ । कहा मग्गै[2] मति नट्ट ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

अंषिहीन सौं बल धर्यौ । मति नट्टी सुरतान ॥
जु कछु मोहि अप्पन कह्यौ । बोल होय परिमान ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

चंद वाक्यं ।

तबैं भट्ट अरदास करि । सच कही सुविहान ॥

(१) ए० कृ० को०—तिहि ।
(२) ए० कृ० को०-मंगौ ।

जु कछु कही कविचंद कौं । सो दिज्जय सुविहान ॥
छ० ॥ ३७३ ॥

पातिसाह वाक्य ।

कवित्त ॥ अवे चंद मन मंद । नच भग्गो मृदंग भगि ॥
गयौ सुरह मिटि तार । पथ जन्नी जचह लगि ॥
रहै [1] इक्क औसाफ । पथ लग्गे पथी सह ॥
अप्प वाट लग्गयौ । पथ कट्टै कहि गह गह ॥
को मात तात को पुत्त को । को सेवक साई सुहुअ ॥
साजम मत लभ्भौ रवनि । गयौ राज बल राज तुअ ॥
छ० ॥ ३७४ ॥

चंद वाक्य ।

दूहा ॥ सब विधि घटी नरिंद की । हम जाचक नह पीर ॥
वचन परै सिर कट्टि दै । ते पिचो कुल धीर ॥
छ० ॥ ३७५ ॥

पातिसाह वाक्य ॥

तब चितिय साहाब मन । हँसि वुल्ल्यौ सम चंद ॥
जाय मगि सम राज सौं । हम दिप्पहि आनंद ॥ छ० ३७६ ॥

पद्धरी * ॥ सुरतांन जाम फुरमान किन्न । हुज्जाब पान तिहि सथ्थ दिन्न ॥
ले जाहु चंद प्रथिराज पास । तू मग हम्म दिप्पै तमास ॥
छ० ॥ ३७७ ॥

दूहा ॥ तब गोरी हुज्जाब प्रति । कहै सुकवि लै जाहु ॥
अरस परस विन दूरि तै । लै आसीस कहाउ ॥
छ० ॥ ३७८ ॥

हुजाबपान वाक्य ।

कवित्त ॥ बोलि पान पब्बी हुजाब । बोलि पौरोज पान वर ॥
दस हथ्थनि प्रिथिराज । निजरि रथ्यौ अवन्न कर ॥
दरस द्रिगन अप्पियौ । परम दरस नन पावै ॥

(१) ए० इहे ।

* इस छन्द को ए० कृ० को० तीन प्रतियों में मुरिल्ल और मो० में अरिल्ल करके लिखा है।

जु कछु कहै संभरौ । मंगि सोई यह आवै ॥
घरियार हनन मंगै वरह । अकल अपूरब वत्त इह ॥
दिष्पियै चित्त अंषिन सुचित । कहौं साह अग्गैं सु कह ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के पास जाना ।

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट चित मन्नि कल । संकट तज्जन प्रान ॥
फुट्टत नन [1] दिष्पत नयन । इन अवस्थ चहुआन ॥छं०॥३८०॥
अग्या मन्नि हुजाब पहु । लै चल्लिय कवि सथ्थ ॥
प्रथम राज पासह गयौ । तब रुक्क्यौ दह [2] हथ्थ ॥ छं० ॥३८१॥

दर्शकों के बीच कवि का कौतुक करना ।

अरिल्ल ॥ बाल वृद्ध मिलि मत्त तमासै । मनौं इंद्र मिलि मेछ छमासै [3] ॥
गुर जंबू नट नाटक किन्ने । आचिज षरषस रासिक भिन्ने [4] ॥
छं० ॥ ३८२ ॥
तारी तीन दई तिन बारह । बज्जन मिसि बुल्ल्यौ बिहु बारह ॥
हहि वेरह कवि रेन उछारिय । टग टग लग्गि रहे नर नारिय ॥
छं० ॥ ३८३ ॥
भुजंगी ॥ टगे टग्ग लग्गी हरभी सुभीरं । नटी नट्ट बुल्लै सुवाने गँभीरं ॥
ठटी दुग्ग रच्यौ घरी पंच नीरं । बटी घट्टि घरियार वंधे सु बीरं ॥
छं० ॥ ३८४ ॥
हहक्कंत कौतूहलं धाम धामं । भई भुम्मि छाया विमानंन जानं ॥
ग्रहं मुत्ति लालं बिहारंत वीरं । ग्रहै पानि उज्जाब बुल्यौ सुधीरं ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

चंद वाक्यं ।

त ॥ सुनि हुजाब मुष आब । उजाब पुच्छै सुदि उंतुहि ।

(१) ए० कृ० को० नेन ।
(२) मो० दस ।
(३) ए० कृ० को० छडौसै ।
(४) ए० कृ० को० सिन्ने ।

छडि पानि सुनि वानि । हानि जिन देइ भ्रम मुहि ॥
सेत पीत कल्हरिय । लाल पुत्तरीय सुअ बर ॥
तहा उचारत वत्त । हनै गोरीधर उम्मर ॥
आचभ एक नजरहि निरय । हम सौपह हसिय दसम[1] ॥
अम लष्य अमग उचित्त कर । तब सुभट्ट दिष्यौ असम ॥
छ० ॥ ३८६ ॥

दूहा ॥ जब निरष्यौ हुज्जाव उध । मच थभि उचरष्पि ॥
चलि कारन प्रथिराज कौ । कह्यौ सुमीत समप्पि ॥
छ० ॥ ३८७ ॥

कवि का राजा की करुणामय मूर्ति देखकर आशीर्वाद देना परन्तु राजा का कवि को सिर न नवाना ।

पद्धरी ॥ तब गयौ चद नृप तथ्थ थाह । जहा मित्र बयट्टो दिट्ठ चाह ॥
दस हथ्थ रष्पि दिन्नी असीस । सिर नयौ नहीं मन करिय रीस ॥
छ० ॥ ३८८ ॥

दूहा ॥ चप्प हीन द्रुबल न्रपति । दस बभन रहै पास ॥
रोस अगनि तन प्रज्जरै । चिन्ता अतिहि उदास ॥ छ० ॥३८९॥

कवित्त ॥ निम्मिल जीय वर सिध । दई तन दुष्ट भाव करि ॥
रोस अगनि प्रजरंत । जाय आक्रित अग्गि झर ॥
भौक्रित तत्त निकाम । वीर तन छीन सु पजर ॥
अरि[2] तित्त चित्यौ सुकान्न । सभर्‌यौ चद सुर ॥
घत सिचि वीर पावक्क झर । रौ स रवत तन प्रज्जर्‌यौ ॥
कहि भट्ट वीर विरदावली । देत राज रज सभर्‌यौ ॥
छ० ॥ ३९० ॥

कवि का बिरदावली पढना और राजा का कवि का वाणी पहिचान कर क्रोधित हो उसे धिक्कारना ।

पद्धरी ॥ धर पथ राय आजान वाह । [3]दुरजनन भरि घर राय दाह ॥

(१) मो०—हसम । (२) ए० कृ० को०—अति ।
(३) ए० कृ० को०—दुरजन नरीद्र रा वीर दाह ।

चालुक्क राय पर पैज पार । पंगुरे राय जग जग्य ढार ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

वर वीर जित्ति ससिवृत लिन्नि । कमधज्ज राय सिरदार किन्नि ॥
संभरे वत्त संभरि नरेस । सुर बंधि बंध जिहि कियौ भेस ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

रनथंभ थंभ जस मंडि पान । चालुक्क चंपि जालौर थान ॥
धनु धनुष धीर अर्जुन नरेस । जित्तया वीर दष्पिन सुदेस ॥
छं० ॥ ३९३ ॥

मन मध्य राय अवधूत धूत । संभरीय राव सोमेस पूत ॥
जग रष्षि नाम जर जर सरीर । चलि संगि संगि आयौ सुधीर
छं० ॥ ३९४ ॥

पहिचानि चंद सिर धुन्यौ राय । संगह सरन्न बुल्यौ जुवाय
छं० ॥ ३९५ ॥

दूहा ॥ सुनि कवित्त चलि चित्त किय । अद्भुत भट्ट सरीर ॥
मोहि उलंघ्यौ जानि कै । चिंतत प्रबुधुन धीर ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

कवि का कहना कि मैं होनहार को क्या जानूं ।

भवति न सुझ्यौ मोहि पै । हैं। क्यों कंगुर जांउ ॥
हम तुम छेहौ इह भयौ । भावी देवह थांउ ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

पाई ॥ बोलि चंद संकर वर दाइय । ग्रहे रहैं ज्यौं मनसा धाइय ॥
मत्ति कविंद कविंद उपावै । एक चोट षग मग्ग दिषावै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

वित्त ॥ दिष्पत षान पीरोज । अग्ग चल्लै बिमान वर ॥
स्याम सेत अरु रत्त । पीत धज भिरित्त देव धर ॥
पीर फेर तौ जाइ । जाय अच्छरी प्रगुंभर ॥
इह अचिज्ज दिषियै । इंद्र इंद्रान चंद वर ॥
चवरुष उचोर बर मंच किय । हल्लन बन बन रुंकि मुष ॥

तिहि धरी भट्ट सुप सामि तन । कही बत्त मडीत[1] रुप ॥
छ० ॥ ३९९ ॥

कवि का गला भर कर राजा को समझाना परन्तु राजा का फिर भी सिर न नवाना ।

दूहा ॥ नेह[2] नीर रुकि कठ कवि । नैंन झलझ्झल पानि ॥
बिन बोमत[3] बोल्यौ नृपति । चद चिति वर बानि ॥छ०॥४००॥
समझि राज मन मझ्झ तुअ । ग्रेह निसा मझ्झ[4] बैठि ॥
उलुक अद्ध निसि अत की । ग्यान सवद्दह दिट्ठ ॥
छ० ॥ ४०१ ॥

पद्धरी ॥ बिन्नह सुदेव नवत नह अग्गि । ढरि अ पि पानि मन चित्तह लग्गि
पहिचानि चद वर धुनिग सीस । सिर नयौ नही मन करियरी
छ० ॥ ४०२ ॥

कवित्त ॥ सभरि नरेस करि रीस । सीस धुनिन धनु सज्जहि ॥
ईहि मित्त तन चित्त । चित चितत सोइ सज्जहि ॥
निकट सुनै सुरतान । वाम दिसि हथ्थ उच सो ॥
जस अवसर सत नचि । अथि लुट्टहि न करिन भौ ॥

कवि का राजा से कहना कि तू वह वरदान दे जो तूने देने को कहा था ।

दै दान जानि सभरि धनी । उहि गडुहि तुहि जलहि हवि ॥
दित अदित इस दोउ उडहि चलि । इह उप्पर कह करहि कवि
छ ॥ ४०३ ॥

राजा का कहना कि मैं नेत्रहीन होकर अब कैसे निशाना बेध सकता हूं ।

दूहो ॥ चद मत पुनि जानयौ । एह अवस्थ कवि देपि ॥

(१ मो०—मडिय सुरुप ।
(२) ए० कृ० को०—तेह ।
(३) ए० कृ० को—बोलत ।
(४) ए० कृ० गै ।

दिष्टमान[1] सेवे सुकुन । बिन दिठ हनै विसेषि ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

वे अंषिन हीनौ सु हौं । तूं चव अंषि न चूक ॥
असुर बधों किम बिन सुरह । उर[2] सुर बध्यौ उलूक ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

कवि का कहना कि मैं शाह को बुलाऊंगा आप बचन दीजिए ।

चौपाई ॥[3] तूं राजा समरथ्थ सुजान । सुरग अरथ जानहि सग्यान ॥
अरथी दोष न पूछिय राय । बगसि नरिंद बुलाऊं साहि ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

राजा दनह सुरत्ति सुमेक । धरियार सत्त सर बंधन तेक ॥
अंषि पान मन चित्तव लग्ग । दोइ सुजस तुअ नरपति भग्ग ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

राजा का कवि का अभिप्राय समझ कर शोचित होना ।

। ॥सुनि कवित्त चल चित्त किय । हय गय भूमि न दब्ब ॥
असमै जो भंगै सुकवि । निपति बिचारिय सब्ब ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बहु बिचारि चिंते नृपति । विपति तनह मन अंषि ॥
सर सरीर सुक्कत सुबर । तेजति उड्डहि पंष ॥ छं० ॥ ४०९ ॥
चित चिंतिय मिचह बयन । दह दिसि भूम पयाल ॥
सिर धुनि सीस निषेध करि । लग्गै चंद मुहाल ॥
छं० ॥ ४१० ॥

कवि का पृथ्वीराज को प्रबोधन कराना ।

वित्त ॥ अरे नरिंद वा वंध । पिंड कच्चौ सुर[5] सच्चौ ॥
अंब तेज संमीर । धरा आकासग पंचौ ॥

(१) ए० मिष्टमान । (२) ए० कृ० को० उह ।
(३) ए० कृ० को० तू राजा समरथ्थह धीर । सुरग अरथ जानहि सब बीर ।
(४) ए० कृ० को० भूप । (५) ए० कृ० को० सर ।

जरा जोल विड्डयौ । काल आनन महि पिल्लहि ॥
इत पपि ह अजप । जपि सरवर करि मिल्लहि ॥
उडि चलै हस हसह सरस । छडि नेह तन पजरहि ॥
प्रथिराज आज सोमत करि । [1]जस नरिंद जिहि उब्बरहि ॥
छ० ॥ ४११ ॥

राजा का कहना कि कवि सो सब सभव है वा असभव है ।

दूहा ॥ समय सुपंती समय रन । समय भोग सुध जोग ॥
असमै कोइ न आदरै । क्यौ आनौ सजोग ॥ छ० ॥ ४१२ ॥

कवि वाक्य कि करतूत लेने को सब समय है ।

कवित्त ॥ अरे नरिंद नर भत्त । कूहकूह निज रप्प ॥
कगुर गोल सथ्रह्यौ । [2]काल भप्पै उन भप्प ॥
काल पग्ग लै जम्म । काल गुरमच उचार ॥
वितति वित्त आवित्त । वित्त ते वित्त निहार ॥
जो होय मेस तौ राम बल । असमौ समौ परप्पियै ॥
ना रहै देव अहि देव बल । देव दहन हर पिप्पियै ॥
छ० ॥ ४१३ ॥

राजा वाक्यं ।

दूहा ॥ अरे चद असमैं समै । परप पुरिप दिन होइ ॥
उहै काल अतर परै । नर निरबल पप जोइ ॥ छ० ॥ ४१४ ॥

कविचद वाक्य ।

कवित्त ॥ सुनि नरिंद सब धध । [3]कौन हतौत तुज नर ॥
जौत वच सजोग । जोग जीव [4] प्रमान वर ॥
जोग क पानी परत । उठै बुद बुद जोनी जिय ॥
पच मूल बँध पच । पच गो बधि सम्मि जिय ॥

(१) मो० जेहि नरिंद जग उब्बरहि । (२) मो कालपै उन भप ।
(३) ए क को कौन हतौ तनुजनर । (४) ए क को जिव जत

इक रहै किति चिंती सुचिंत। चिंतनहारौ चिंतियै ॥
नचियै सुजोय अवसर बनै। अवसर नचन मत्तियै ॥
छं० ॥ ४१५ ॥

दूहा ॥ जस जीतन जुग बत्तड़ी। सह बत्तड़ी अकथ्थ ॥
बोल[1] रहै धर सथ्थियै। [2]वत्त तत्त वह अथ्थ ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

राजा वाक्यं।

बार बार मोही कहै। एक बैन मों मान ॥
धाम धरत्ती जो लहौं। तौं अथ्थौ तो दान ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कविचंद वाक्य।

कवित्त ॥ साठि हजार बरथ्थ। करत तप पलक चथ्थ पुलि ॥
गंगा जल महि मच्छ। देषि क्रीड़ंत चित्त डुलि ॥
मानधात पुत्रिका। वरिय प्रारथ्थि पचासं ॥
पंच हजार कुमार। जनमि सुकदेव प्रकासं ॥
सो भरी रिथ्थ राजस रचे। भंति भंति सुष भोगवत ॥
कहि चंद ग्यान ऊपजि चथ्थौ। माया छल तजि सुपन वत ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

षंडीवन प्रजलत। एक पथ्थीलक निकसि ॥
जदुपति पेषि पयंपि। पथ सों कथ क्रपा वसि ॥
इह सुजीव करि जथ्थ। भयौ षटबार पुरंदर ॥
अजहूं क्रम लगि जोग। फिरत चौरासी अंदर ॥
कहि चंद मत्ति मेटै जगत। कीरति सा दाने बजत ॥
संभरि नरिंद संभरि कितक। ता कारन षिचवट तजत ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

पच पुरातन रारिग। बहुरि नह चढ पलासह ॥
इह सुनि संभरि वार। बहुरि ना भोग विलासह ॥
असमै संभरि वार। प्रान जो सत सों मुक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-बोध। (२) ए. कृ. को.-तनन वत्तन अथ्थ।

सुजस होय ससार । बान किम पय्यह चुक्कै ॥
ससार सकल इम उच्चरत । वेही कठह धवल हर ॥
अवसान गयै सा पुरिस कौ । लय्यौ जीवो लय्य सर ॥
छ० ॥ ४२० ॥

रे नरिंद सह सुपन । अपन दिप्पिस अस जग्गन ॥
नरक राज किय साज । रक भौ रज्ज सिक मन ॥
जीव जत सह रवनि । पच भूलह प्रपच वनि ॥
दिष्टमान विन नही । मुकत ससै न करै फनि[1] ॥
सहदेव विस्न अग्य । दवन । गति अगति ससौ न करि ॥
सह मुकति इच्छ्य किति सय्य बँधि । ग्रिहत बिना न्निमान धरि ॥
छ० ॥ ४२१ ॥

एक बान कवरी । एक सर एक समुट्टौ ॥
इय गुन विन जे जरै । इच्छ विन काम सु कट्टौ ॥
श्रवन चप्पि कर साहि । साहि दिष्ष दिसि बाई ॥
स्वर वध अरि वध । चित चिते वह, नाई ॥
न्नप राज गरुह रय्यै सुजुग । जीव दिसा सो मुक्कि बर ॥
न्निप रहै जोग तन छडिहा । तन रय्यौ जुग रहन भर ॥
छ० ॥ ४२२ ॥

श्लोक ॥ उलूको वदतो येन । तादृश क्रियते बलं ॥
अनुसार सु शब्द न । वाक्य म्लेच्छाधिप शृणु ॥
छ० ॥ ४२३ ॥

चौपाई ॥ हो समै अध जस अध प्रवीन । बैर अध आतुर मति हीन ।
अधा दुष्य न देयै राइ । बगस नरिंद बुलाज साहि ॥
छ० ॥ ४२४ ॥

दूहा ॥ प्रकृत पुरुष किष्पन कहर । काम अध चित चित ॥
ए पर दुष जानै नही । तु किन जानै मित्त ॥
छ० ॥ ४२५ ॥

तीन बान चहुआन बर । प्रगट कहै सुलितान ॥

(१) ए० कृ० को०—फुरै तुनि ।

काल ग्रहै संभरि धनी । वर अप्पौ मुहि दान ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

पृथ्वीराज वाक्यं ।

सुनौ चंद वरदाय वर । कह न्निम्भै न्निग्गान ॥
सबद प्रगट गोरी कहै । तौं तुम अप्पौं दान ॥
छं० ॥ ४२७ ॥

कविचंद वाक्यं ।

जौ अप्पौ मुहि दान बर । चंद चित्त बहु धीर ॥
तौ न्निमान सुनि न्निग्गायौ । जीय न तत्त सरीर ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

आनंदे प्रथिराज जिय[2] । बंध कियौ कवि सथ्थ ॥
हनौं साहि घरियार सौं । उभै इथ्थ मिलि हथ्थ ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

जिहि वेधै जग जित्तियै । जिहि वेधै जस होइ ॥
सो विद्धन[3] सोमेस सुअ । कित्ति प्रगट्टै लोइ ॥
छं० ॥ ४३० ॥

हुजाब का कवि को लिवा कर शाह के पास आना ।

कवि बुझ्झ कवि प्रथिराज कौं । गय्यौ धाय हुज्जाब ॥
सबै रीति किहि राज कूं[4] । [5]जुगति सुवथ्थ जवाब ॥
छं० ॥ ४३१ ॥

॥ भाई या बिध आकर्षि जाम । बुझ्झै न कपट हुज्जाव[6] ताम ॥
घरियार घात हुंकार राज । करि फिर्यौ कब्बि हुज्जाब ज्वाब ॥
छं० ॥ ४३२ ॥

आए सुपास गोरी नरिंद । बुझ्झयौ अथ्थ घरियार भिंद ॥
बिक्कस्यौ उअर गोरी सहाब । मानहि सुहीन बलहीन आब ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

(१) ए. कृ. को०-तीयन । (२) ए०-दिय । (३) मो०-वेधन ।
(४) ए० कृ० को०—सौं । (५) ए० कृ० को०- जुगति जुथ्थ जुवाव ।
(६) ए० कृ० को०-चहुआन ।

अग्या सुदीन धरियार साहि । पुर पुरह छोरि आनहु सुरोहि ॥
घरिआर आज बधन सुमत्त । कौतिग्ग काज[1] मिलि सब्ब सत्त ॥
छ० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का शाह से कहना कि यदि आप आज्ञा देना स्वीकार करे तो राजा दान देना स्वीकार करता है ।

कवित्त ॥ तब सुचद बरदाय । साहि अग्गे कर जोरे ॥
कृपन गठि जिमि साहि । राज गठि न अव छोरे ॥
नट नकोर नहि करहि । जाउ जिहि आस छडि तव ॥
अद्भुत रस असमान । जाइ मुक्यौ न धन[2] अव ॥
छ्यौ सुलोभ जिय जम कह । और अतिव अतर रहै ॥
फुरमान साहि सत्तहि बंधौ । बिन फुरमान न सर गहै ॥
छ० ॥ ४३५ ॥

तत्तार खा का खिझकर कविचन्द को डपटना ।

तब ततार झुकि उठ्यौ । मट्ट जीवन पर रुठौ ॥
पातसाहि गोरी नरिंद । अग्गै भयौ झूठौ ॥
सत्त सुभर घरियार । अग्र बिन इक्क न बिद्धिय ॥
मरद सुमुष उचरहि । होइ अग्गै जो सिद्धिय ॥
फुरमान साहि तुहि तौ नहीं । जिय चहुआन न होइ काल ॥
इह बाह एह सिगिन धरिय । ए धरियार न बिद्धि बल ॥
छ० ॥ ४३६ ॥

कवि का पुन कहना कि यदि शाह बचन दे तो प्रत्यक्ष तमाशा देखलो ।

दूहा ॥ जो फरमानत अप्प मुष । दै तिह बेर हमीर ॥
घर धरियारन वज्जिहै । सर सौ सद्द गँभीर ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

(१) ए० कृ० को०—राज ।
(२) ए० कृ० को०—बहू ।

सपत घात घरियार धन । पंच घात हनि जान ॥
कठन काम गोरी हनन । अप्प देत फुरमान ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
साहि जलाल दुहाइ कहि । जल जानीत निवाज ।
अप्प देइ फुरमान तिय । सुनै सुमत्तिय राज ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

शाह के शब्द देने पर राहगत होना और घरियार मंगा कर बजाया जाना ।

सुनि ततार सुनि रुस्तमी । सुनि निसुरति हुआव ॥
दिल्लियपति सो अप्पिहै । देय साहि जो आव ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ मंगि साहि घरियार । दिसित मंडे उत्तर दिसि ॥
सौ क्रम नृपति घरीव । क्रम्म सत अद्ध साहि लिस ॥
सिंधु राग सहनाइ । पंच सहावर बद्दं ॥
मेघ ग्रज्ज आकूत । बीर नीसानति नद्दं ॥
प्रजपत्ति षां षुरसान षां । चाव दिसा निप बिंटियौ ॥
चहुआन कलातक जग तपैं । किहि लष्यौ वर मिंटयौ ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

कौतुक देखने के लिये दर्शकों की भीड़ होना ।

गातीदाम ॥
[1]चढि बेगम सथ्थ सुगोष हरम्म । चिगजारि न बाल सुवेसन रंम[2] ॥
सुभै थन थान प्रकार निनारि । मनं क्रम चित्र चितंत सवार ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

सकंगुर सोह कुरंग नयंन । किधों गिरि कूट ससीक सवंन ॥
सितं सित कंगुर बाल उरुक्कि । तिनं मग्गि नारि नरीर तलक्कि ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

चढे बर पुब्ब उकत्ति हरे । मनु दंपति काम कैलास धरे ॥
बिकसंत नरी नर कित्ति मुहं । मनुं अंक रका दिन अद्ध सुहं ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

(१) ए० कृ० को- चढ़ि वेग हरम्म सुगोष हरम्म ।
(२) ए० कृ० को० सुकैसन रम्म ।

चिहु पास भुवन हूरम रजै।[1] छरिय हथ्थ मनु सुब्रन्न छजै॥
मनु देवन राज तमास गुरी। ससि सूर अए सन मुष्य जुरी॥
छ० ॥ ४४५ ॥

उडि धूम बजी विषम पवन। परियौ दस मदरवार मन॥
छ० ॥ ४४६ ॥

तत्तारखा का कहना कि आज जुमारात है आज रहन दीजिए।

दूहा॥ देषि भूप नक पून बर। या ततार कहि भाति॥
आज रष्षि साहाब बर। पर्‌यौ दिवस जमारति॥
छ० ॥ ४४७ ॥

तत्तार खा का शाह से अपने स्वप्न का हाल कहना और समझाना।

कवित्त॥ बोलि यान तत्तार। साहि सपन तर जक्कहि॥
अद्‌भुत चरित मै दिट्ठ। सीस दिट्ठौ न पोज लहि॥
ग्रहसार ससार। पीर पैगबर रुट्ठ॥
बिन बहर उम्मरी। मेघ आकूत सु वुट्ठ॥
बर स्वान सिध जबुक सयन। हरसिद्ध बीबी झग्गरी॥
प जरत बार पट्टन सकल। अकल कित्ति सम्हौ लरी॥
छ० ॥ ४४८ ॥

दूहा॥ सेत वस्त्र कत्ती रहौ। मो बिटे तिनि वार॥
औ रन मुक्‌यौ दिष्षियै। राज निद्धि वड सार॥
छ० ॥ ४४९ ॥

कवित्त॥ कहै यान तत्तार। साहि दुलभ मनुच्छ जम॥
बार बार पावै न। बहुरि अवतार राज कुम॥
छिन मै देह भजत। प्रान धरिजै इह धत्ते॥
बर कोटर घरियार। उत न बहुं जुध तत्ते॥

(१) ए० कृ० को०—छरि हथ्थ सुब्रन्न सु हथ्थ छजै।

इह देह जतन करि पारियै। कहै पीर पैगंबरह ॥
षल भट्ट तदिन निधि अष्ष वह। सुनौ साहि कहि उम्मरह ॥
छं० ॥ ४५० ॥

छिनू बार धरि भेष। इंद्र हरि जात अग्य यह ॥
अश्वाजीत कुँवार। कोपि मारंत षग्ग लग ॥
प्रथुराजा पहिचानि। आनि ग्रह मष्ष सुमंडिय ॥
करे रूप तिन सहित। जियत सुरपति को छंडिय ॥
मघवान लाज लुप्पि न सकिय। कलियुग कारन रष्षए ॥
तत्तार कहत पतिसाह सों। ते प्रगट्ट अप पिष्षए ॥
छं० ॥ ४५१ ॥

शाह का कहना कि मैं तो अब कहा हुआ वचन नहीं पलट सकता।

दूहा ॥ सुनौ षांन ततार इह। गुर गलहां इत तत्त ॥
जु कछु बत्त मुष कढ्ढियै। करैं बनैं सुनि मित्त ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

उवन सूर संभरि अवन। निप चिंती करतार ॥
उदति दीत[1] दो पंजरह। हंस सु उड्डन हार ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

कबित्त ॥ जीव सिंघ आसिंघ। सीह उज्जंत[2] तत्तनय ॥
या फुरमान अपीस। बाच चंदन बर दानय ॥
जोइ सिंघ आसिंघ। राज सिंघं नन जानं ॥
बच्च सिंघ सो सिंघ। सेन सिंधसि पुनि पानं ॥
छचीस अम्म छची धरै। बचन भट्ट जंपै लिया ॥
देहंन छीन भग्गै सया। भग्गै सा पंचन चिया ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

(१) ए० कृ० को० दीव।
(२) ए० कृ० को० उज्झत लात।

तत्तार खा का खिझकर दरबार से उठ जाना।

झुकि ततर षा उट्ठि। हाथ सिर झारि सीस धुनि ॥
वर मुक्कै दरबार। गई सुरतान मत्ति षुनि ॥
विधि विधान नृप्पान। मत्ति षुट्टी पैगंबर ॥
बोलि पान षुरसान। दिष्षि तत्तार भिस्ति घर ॥
कविचंद राज चहुआन पै। सर अद्भुत उच्चार पिय ॥
घरियार एक सत सर इकै। वर वर वद[1] भारे सरिय ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

शाह का कवि को पान देना कि हमनें दिया तुम राजा से मागो।

दूहा। उहै दैन नृप्पति कह्यौ। उहि मग्यौ फुरमान ॥
सु कविचंद सरसे मिलै। पानि साहि चहुआन ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

कवित्त ॥ भयौ चंद मुष चंद। दद गय काम सपत्तौ ॥
पाति साहि गोरी नरिंद। दियौ बोल निरत्तौ ॥
तबहि चंद बरदाइ। बहुरि राजन पै आयौ ॥
ज कछु तत को मत। अति कहि कहि समझायौ ॥
मै दियौ दान चिता न करि। छोड़ चंद सहै निरति ॥
फुरमान कग्ग अग्गैं परौ। देहि साहि मग्गै न्रिपति ॥
छं० ॥ ४५५ ॥

कवि का राजा को लिवा कर रंगभूमि में आना।

पद्धरी ॥ कवि चल्यौ राज प्रथिराज लेन। मिलि चले सुरथ सुर सबै गेन ॥
बुझ्झवै राज लै चल्यौ भट्ट। उम्मरा[2] मौर सब मिले थट्ट ॥
छं० ॥ ४५६ ॥
जान्यौ सुअत प्रथिराज अप्प। किन्नौ जुगत्ति द्रुग्गा सुजप्प ॥

(१) ए० कृ० को—वेद। (२) मो०—उमराव।

रोमंच अस्स उभार अंग । सूरंत अत्ति बध्यौ सुरंग ॥
छं० ॥ ४५७ ॥

चहुआन तेज देष्यौ अनूप । तिम भयौ[1] हित्त सुरतान रूप ॥
भुज धर्‌यौ चंद कवि चाहुआन । उल्लस्यौ सीस सजि आसमान ॥
छं० ॥ ४५८ ॥

सुरतान निजरि चहुआन आन । भैभीत कालसह सथ्थ जानि ॥
आकूत बजि बर क्रिसल्ल बाग । जानयौ सथ्थ निप बर बिभाग ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

प्रथिराज सब्ब देष्यौ सु[2]आव । अंतक्क रूप सवगुन सहाव ॥
रुप्पयौ राज मधि[3] रंगभोम । कौतिग्ग सब्ब देषत व्योम ॥
छं० ॥ ४६० ॥

संवत अट्ठावन माघ मास । अनसित्त पष्ष दसमी सुभास ॥
दिन घटिय पंच पल्ल आदि जात । तारक्क मूल्ल चिव तिथ्थ पात ॥
छं० ॥ ४६१ ॥

प्रथिराज आनि मधि रंगभोम । साहाब उंच गहकंत व्योम ॥
घरियार घात बंधे ससुष्ष । पठई कमान साहाब पुष्ष ॥
छं० । ४६२ ॥

हुजाब का राजा के हाथ में कमान देना और राजा का कई कमान तोड़ देना ।

कवित्त ॥ प्रथम राज कम्मान । आनि दिन्ही हुजाबं ॥
गहिय राज चहुआन । तानि भंजी तर आबं ॥
अवर आनि कम्मान । सोन बलराज समानं ।
इम भंजिय दह पंच । अतिहि काठिन्य कमानं ॥
उच्चर्‌यौ बान मीरान इम । हयौ तात हम जेन रन ॥
अच्छं कमान हम ग्रह गहअ । सोइ समथ्थौ साहि इन ॥
छं० ॥ ४६३ ॥

(१) मो० तिन्नयौ । (२) ए० कृ० को० जु ।
(३) ए० कृ० को० अंग ।

राजा को मीरा की कमान दी जाना और राजा का उसे चढाना ।

तब सुनि साहिब साहि । मगि सित्ताव कमान ॥
तत षिन आनि समपि । अत्ति काठिन्न उतान ॥
ग्रहिय राज कम्मान । जानि मनि आनंद मान ॥
मनु विछुर्‌यौ मिलि मित्त । हित्त समकाल दसान ॥
उर वपि चुवि सिर धरिग न्नप । ग्रहिय पान मग्यौ सु सर ॥
निज पानि साहि बिन इच्छ करि । नष्यौ पहु प्रथिराज पुर ॥
छ० ॥ ४६४ ॥

दूहा ॥ फिरि ततार देषै न्नपति । रस अद्भुत सुलतान[1] ॥
हुकम साहि कहि वान वर । गहन कहौ चहुआन ॥
छ० ॥ ४६५ ॥

पृथ्वीराज का कमान को तानना और उसे देखकर मीरा का कहना कि यदि घरियार फोड दिए ता शाह राजा को छोड देगा और कुछ और भी देगा ।

कवित्त ॥ वचन अप्पि सुविहान । वचन चहुआन व दि लिय ॥
तिन मगि पुन्न कम्मान । साहि लीनौ सुजुद्ध बिय ॥
सो कमान वर तानि । जीर दिट्ठी न अप्प वर ॥
कजानौ कम्मान । पान दीनिय सु अप्प कर ॥
गहि वान कमान कसीस कसि । हसौ चित माया सवर ॥
ता दिनह चद वरदाय भनि । वहु विरह गोरी सुवर ॥
छ० ॥ ४६६ ॥

दूहा ॥ वान गहन चहुआन लषि । रीझ विलदी खान ॥
[2]हनौ सुवर घरियार जौ । तौ छडै सुरतान ॥ छ० ॥ ४६७ ॥
वोल वचन सुविहान सुनि । सो रीझवै प्रमान ॥
आप उचित दैहै अधिक । जो वेधै चहुआन ॥ छ० ॥ ४६८ ॥

(१) मो०—चहुआन ।
(२) ए० कृ० को०—हनौ सुवर घरियार तौ जो छडै सुविहान ।

कवि का कहना कि राजा को निज कमान दिया जाय यही बहुत है।

चवै चंद बरदाइ इम। सुनि मीरन सुरतान॥
दै कमान चौहान कौं। साहि दियै कछु दान॥
छं० ॥ ४६९ ॥

राजा को हुंजाब का वही कमान देना और तत्तार का पुनः कहना कि यह तमाशा न देखो इस में मारे पड़ोगे।

कवित्त ॥ असद सुअन कम्मान। आनि दीनी हुज्जावं॥
निरषि ताम गोरी नरिंद। तत्तार सितावं॥
अति प्रमान उत्तान। भार अनभूत इष्षि वर॥
गुन गुरान धन प्रान। टंक पचीस जोर जुर॥
इष्षे बिसाहि आचिज्ज मन। दैन राज प्रसंस किय॥
उच्चर्यौ ताम तत्तार तमि। धुन्नि सीस क्रत कंपि जिय॥
छं० ॥ ४७० ॥

अहो साहि साहाब। सुनौ अरदास हित्त हर॥
अरि हू[1] इहै आरिष्ट। दिष्षि अनभूत तेज नर[2]॥
इह कमान उत्तान। जोर जुत्तान समानं॥
नन दीजै या हथ्थ। चिंति प्राक्रम्म पुमाग[3]॥
कम्मान[4] याहि संगह सजै। सु जनु नाग लष्षिय मनी॥
सम पंष चिल्ह संगह मिलै। चिंति काल क्रत अप्पनी॥
छं० । ४७१ ॥

काल व्याल दसा कराल। समपंष कोप सम॥
ता आनन अंगुरी। कोइ मेलै सुमंत क्रम॥
आय अभुत्त[5] उम्मरा। सोम पंष्षलि सब सज्जै॥
क्रोध सज्जि करिवान। मत्त मारहि[6] विन कज्जै॥

(१) ए० कृ० को० जु। (२) ए० तर।
(३) ए० कृ० को०—प्रमानं, पुरानं। (४) ए० कृ० को०—प्रम्मान।
(५) ए० कृ० को०-या अमुत्त। (६) ए० कृ० को०—मारन।

बच्चै सुसाहि तत्तार तुअ। मम करि चित ततार जुअ॥
बिन नयन बान इच्छे गुनै। सो नन विद्धै धात तुअ॥
छ० ॥४७२॥

सकर बद्धयौ सिध। ताहि पोलिय रस पिल्लै॥
कौन सुग्रम जग्गावै। कोप करि तासम पिल्लै॥
याहि न रथ्यौ साहि। रोस बट्टै सूरत्तन॥
याहि न पेयौ निजरि। याहि नह मिलियै बत्तन॥
पल दुष्ट एह चहुआन कौ। मम करि सग कमान प्रम॥
क्रित दुष्ट भट्ट सगह सज्यौ। जौ घन बुझ्झै मति मरम॥
॥छ० ॥४७३॥

कवि की उक्ति।

तबहि साहि साहाव। हुग्गाव हजूर सदि॥
दिय कमान तिहि हथ्थ। देहु चहुआन बाच बदि॥
काल कला किय प्रान। तन्न बुझ भिय मोह मन॥
दिय दिल्लेसह पान। धर्यौ जीवनि साहि जन॥
हिकमति अनेक बचत कहत। जु कछु साई निम्मान सुधि॥
मेटै न मिटै हाकिम हसम। बल अनेक जो करै बुधि।
छ० ॥४७४॥

राजा का अपनी कमान पाकर परम प्रसन्न हो-ना और निसुरत्त खा का राजा के हाथ में तरकस भी देना।

पद्धरी॥ सगहे पान कम्मान राज। उम्भरे अग अतर बिराज॥
आलिग बुबि उर चपि अप्प। बद्धेव तेज तामस दप्प॥
छ० ॥४७५॥

कर धरे स धनु आनद चित्त। बिछुर्यै मिल्यौ चिरकाल मित्त॥
कम्मान राज मिलि तेज ताय। अरि मक्कि बिटि मिलि मनु सहाय॥
छ० ॥४७६॥

आवरे सूर अगह असेस। मन त्रिद्ध त्रिद्धि बामन विसेसि॥
तन जग्गि रोम उम्भारि बीर। लग्गिय सुतप्प मन पास नीर॥
छ० ॥४७७॥

आवृत्त वरन सम किरन वैन । प्रवलप्प सप्प पारस्स नैन ॥
फारकंत अधर थरकंत बाह । मंतक्कि सूर मंडल सुराह ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

चिंतै जु इष्ट मन जंपि जाप । तामंस तेम तन-तेज ताप ॥
कर रोहि पान धारै कमान । गुंधरै गयन धुंधरि दिसान ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

ब्रिष दाह विषम समबहि समीर । संपात चक्र उल्लका सभीर ॥
आसंन घट्टि मिलिअंत साहि । बुझ्झै न मोह मतिमंद ताह ॥
छं० ॥ ४८० ॥

आमूढ चित्त उम्मरा मीर । टगटगिय लग्गि अंतर उरीर ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अपार । ढंकेव मोह मैं काल भार ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

सनमुष्ष आनि सज्जे घरयार । भुअ पान असिय न्रिप अंतरार
चढ़ि उंच कज्ज कौतिग हरम्म । सम बाल वृद्ध सज्जे सरम्म ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

उद्धर्यौ राज सम चंद ताम । मंगल्ल सु बान मम करि बिराम ।
बरदाय साहि अरदास कीन । न्रप देहु बान कौतिग्ग चिन्ह ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

तब साहि ताम बच्चयौ अभीर । निसुरत्ति देहु तरकस्स तीर ॥
निसुरत्ति आनि दिय साहि हथ्थ । तरकस्स तीर गोरी गुरथ्थ ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

राजा का कमान लेकर उसे संधानना, कविचंद का राजा को ज्ञान समझा कर दृढ़ता देना।

॥ ग्रहिय तीर गोरीस । कीन बिन इच्छ अप्प कर ॥
कीन अंत पल्ल प्रेम । बुद्धि भग्गिय समोह गर ॥
दिषि नंध्यौ दिल्लीस । धरिय सज्जै सु सीस कवि ॥
कर दीनौ चहुआन । प्रान बढ्यौ सुईस तब ॥
तामंस रज्ज तन ताम तन । धन बीरत्त उभार भर ॥

सुरतान प्रान कीरन प्रलय । जनु जम सज्यौ दंड कर ॥
छं० ॥ ४८५ ॥

दूहा ॥ लगी टगटगी सोहि तन । अरु भ्रत लग्गे भीर ।
कित्त[1] रूप मुझ्झै मन[2] । भरिय[3] घटी अति भीर ॥
छं० ॥ ४८६ ॥

ग्रहिय चंद दीनौ नृपति । धरयौ पानि प्रथिराज ॥
चंपि अग्र मुष सलित विया । करन काज अरि काज ॥
छं० ॥ ४८७ ॥

इल घसि पानि पविष्ट किय । सिंगिनि सर गुन बंधि ॥
चरचि चंद मुषचंद भय । मिलिय राज मन तंधि ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

म्रित सुधरै सब सुहरै । कहै राज अब धारि ॥
सुर नर मुनि वर जात सब । राजन मरन सुधारि ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

कवित्त ॥ बंधन सच्च तन कच्च । सिद्धि साधक इम अप्पय ॥
वापी कूप तटाक । देव सुर नर म्रित भप्पय ॥
पंच तत्त किय पिंड । तथ्य षोडस आधार ॥
सुनि मंडल पट चक्र[4] । वाय मंडल अधिकार[5] ॥
पिल्लैजु काल सिर उप्परै । कहि चंद तेन पट तरै ॥
प्रथिराज नृपति धीरज्ज धरि । बोल रापि कल, अतरै ॥
छं० ॥ ४९० ॥

चंद्रायना ॥ बात सबै प्रथिराज सुनी । सर इक्कै आईय ।
सर चुक्कै नृप पाछली । मामूर गमाइय ॥
कोरि पवारा[6] किद्दते । अरि भजे जद्दे ॥
इहि सर आइ बिल बिया । नहीं तर सह गड्डे[7] ॥छं०॥ ४९१॥

(१) ए० कृ० को० चकित । (२) ए० वसन ।
(३) ए० कृ० को० भइय ।
(४) पो० चत्र । (५) ए० कृ० कौं० पठवर ।
(७) ए० को० काडि पवाडा ।
० नइ तरु गड्डे ।

दूहा ॥ कहि राजन महि मंडलै । निसिपत्ती रवि सप्प ॥
जौ मारै सुरतान कौं । सकल चाव तौ रप्पि ॥

छं० ॥ ४९२ ॥

सुनि राजन कविचंद कहि । बेल एक इह बेलि ॥
करि धीरज मारे बनै । रज पाछिली उबेलि ॥

छं० ॥ ४९३ ॥

बेली बहुरि न पाइहै । इहै जानि तुम बात ॥
दिल्लीपति जुग जुग अमर । उग्गारौ[1] अपियात ॥

छं० ॥ ४९४ ॥

वेत्त ॥ अहंकार मद मोह । लोभ माया घटि लग्गी ॥
काम क्रोध भय त्रिषा । पुधानीयं तन जग्गी ॥
दुष सुष बंध्यौ जीव । दुष्य अंतर सुष पावै ॥
सुष अंतर दुष होय । निगम सुर नर इम गावै ॥
सुष दुष रहइ घटिकासु जिम । राजन एह परंपरा ॥
करि मग्ग अचल संभरि धनौ । गयौ जावन आईय जुरा ॥

छं० ॥ ४९५ ॥

राजा का कहना कि मित्र अब वह पुरुषार्थ नहीं है क्या करूं ।

दूहा ॥ अंषि विनट्टी हीन मति । हुअ पुरषातन मंद ॥
सुग्रह मुट्टि द्रिढ़ न रहै । क्यौं मारहु कविचंद ॥

छं० ॥ ४९६ ॥

सिर तुट्टै षचिय न्रिपति । अरियन गहि दाबंत ॥
गयन ग्रस्य सुनि सिंघ जिम । तलपि[2] तप्पि जिय दिंत ॥

छं० ॥ ४९७ ॥

श्रवन सवद जौ संभरौ । अरिमुष बोलै सोइ ॥
तौ मारौं कविचंद जौ । वह कमान बल होइ ॥

छं० ॥ ४९८

[१] ए० कृ० को०-उच्चारौ । (२)मो०-तलपि तम्मि जिय दुई

कवि का कहना कि तुम वाण सधानों मैं तुम्हें वैसाही न करदू तो कवि नहीं।

सद्द तीन सुरतान के। श्रवन सुनाऊ तुझ्झ ॥
सोइ कमान सो बल करहू। तौ जानै कवि मुझ्झ ॥
छ० ॥ ५०० ॥

पुरुष बोल इक्कै कहै। बार बार बच देाय ॥
धरि धीरज मै प्रथम कहि। साहि बुलाऊ मुष्य ॥
छ० ॥ ५०१ ॥

कवि का राजा को पुन समझाना और उत्कर्ष देना।

बुद्धिहीन फिरि फिरि बुझै। श्रम छडिय धरि धीर ॥
श्रप्प सवारथ मेल्हि दै। परम ततव गहि तीर ॥
छ० ॥ ५०२ ॥

श्रप्प मरन सब कौ दियै। लज्जी जीय धरत ॥
सभरेस कविचद कहि। विरले मार मरत ॥
छ० ॥ ५०३ ॥

अरिग्रह जौ वासुर बसै। श्रप्प सुआरथ काज ॥
सो जीवत न्रप मतक सम। गत मजाद गत लाज ॥
छ० ॥ ५०४ ॥

जौ पिचिय अरि सबद सुनि। जोइ लाज छोरत ॥
ता जननी को देाय न्रप। कछुक जाति महि मति[1] ॥
छ० ॥ ५०५ ॥

तो तन सब सज्जिय न्रपति। सबद बेध औ हाथ ॥
अरि रोपै घरियोर अप। मारि अमाने बात ॥
छ० ॥ ५०६ ॥

सर फुट्टा बिन माम मति। बल प्रौरुष पडियोह ॥

(१) ए०—मूति।

झूकर ज्यों अरियन तनी । पापत लप्पडि योह ॥

छं० ॥ ५०७ ॥

कवित्त ॥ पवन संधि धरि ध्यान । मंडि छल बल करि भूपति ॥
जल थल महिल सुझंति । रहे सु सबद देवंगति ॥
इन पहिली किहि विजै । घरी ऐसी नह पाइय ॥
इह बासुर इह जाम । तुझ्झ बपतें इह आइय ॥
दिढ़ राषि जीव संभरि धनी । सो संठी अरिमुप जड़ी ॥
सामंत नाथ कविचंद कहै । रहै जुगै जुग बत्तड़ी ॥

छं० ॥ ५०८ ॥

पृथ्वीराज का उत्तेजित होकर कहना कि मैं शत्रु को अवश्य मार गिराऊंगा ।

दूहा ॥ लग्गा बोल सु लग्गना । घट उट्ठी धन अग्गि ॥
उस सेबर मुष बुल्लयौ । नृप गय नंगन लग्गि ॥

छं० ॥ ५०९ ॥

चंद्रायना ॥ तो जानै कविचंद मौ मुष तीर लगाउं ।
गंग धरन रबि चंद लग्गि कलि बोलि रहाउं ॥
इह बासुर बेला घड़ी धौं बहुरि न पाउं ।
ताराइन जिम तूट तौ अरिधरनि धुकाउं ॥

छं० ॥ ५१० ॥

कवि का पुनः राजा को उत्तेजित करना ।

दूहा ॥ बार बेर असपति ग्रहिय । सब नृप लग्गे पाइ ॥
गुअ भुज बल अचरिज्ज कह । अब इह मारि गिराइ ॥

छं० ॥ ५११ ॥

कवित्त ॥ जस काजें कलि कन । भार सोवन नद अप्पौ ॥
सिवर कप्पि अप्पयो । सीस जगदेव समप्पौ ॥

(२) ए० कृ० को—छरकर ।

विक्रम राव नरिंद। कट्टि पर दुप जस झल्लै ॥
राजा रावल राव। सुजस कारज पपि चल्लै ॥
पायो न इतौ तिनह्न सुजस। काढ्यो चद सो दिट्ठइय ॥
सर एक बीच दुरयो सुजस। डारि तीर किन कट्टइय ॥
छ० ॥ ५१२ ॥

दूहा ॥ सुरतानह सुर सुवद दै। अरु मिलि इष्य कमान ॥
अब सूरप कि सोच मन। समझ सधि चहुआन ॥
छ० ॥ ५१३ ॥

पृथ्वीराज वचन।

फेरि राज इह वत्त कहि। वरदिय दै वर कान ॥
हनों साहि घरियार सो। जो अप्पौ विय बान ॥
छ० ॥ ५१४ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ एक बान चहुआन। राम रावन उथप्पे ॥
एक बान चहुआन। कुन्न सिर अर्जुन कप्पे ॥
एक बान चहुआन। चिपुर सिर सकर विद्धिय ॥
एक बान चहुआन। समर लप्पन पारद्धिय।
सो एक बान सभरि धनी। तियो बान नह मुक्कियौ ॥
घरियार एक इक मुग्गरिय। एक बान नृप चुक्कियै ॥
छ० ॥ ५१५ ॥

पृथ्वीराज बचन।

दूहा ॥ कहै राज कविराज सुनि। मो बल सकति अपार ॥
अप्पै सभरि धीरहर। सत्त हनों घरियार ॥ छ० ॥ ५१६ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ द्रोनाचारिज पास। बान विद्या पढि पडव ॥

पराक्रम पारथ्थ । लोह मैं वथ्थ सु मंडव ॥
साधा सत्ताईस । सवा लष पच्च सोष प्रति ॥
पच्च पच्च परिमान । भार मन सवा लथ्थ धृति ॥
जपि बान मंच अरजुन्न तब । धनुष पंचि जंपिय सुवल ॥
कविचंद कहत प्रथिराज सुनि । पचि पचि छेदिय सकल ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

कविचन्द का राजा को समझाना कि सात नहीं एक को वेध ।

अरिल्ल ॥ तिहि अर्जुन समान तूं रज्जन । जो सर संधि हनै पति गज्ज
सत्त घरयार तनौ अचरज्जन । अचरिज प्रान मान सम तज्ज
छं० ॥ ५१८ ॥

कवित्त ॥ इक फोरि संभरी । सत्त फोरै जस नासय ॥
ते दीहा संभलै । जे अंग मलयो गिर बासय ॥
[1]सिर हरयो झंषवै । उरह अरि समौ न बुझ्झै ॥
मूओ न जीवे कोइ । मोहि परमथ्थल सुझ्झै ॥
इम जंपै चंद बरहिया । वेहो कंधै धवलहर ॥
औसांन न बुझ्झै रे हिया । इक्कन फोरै इक्क सर ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

षत्रि होय परधान । षाय षंडो दिषलावै ॥
साह होय परधान । भरे घर राज थँभावै ॥
कायथ होय प्रधान । अहो निस रहै पियंतो ॥
बंभन होय प्रधान । सदा रथ्थवै[2] अचिंत्यो ॥
नाई प्रधान कीजै नहीं । चंद बिरद सच्चो चवै ॥
चहुआन बान गुन सट्टवै । मम चुक्किस मोटै तवै ॥
छं० ॥ ५२० ॥

जेन बान भारथ्थ । वाय पुत्तह पग बिंध्यो ॥

(१) ए०—सिर हयोप झपै । (२) ए०-दथ्थवै ।

जेन बान अियरथ्थ । धरा उप्पर हरि सध्यौ ॥
जेन बान भारथ्थ । ग्रहै कौरव कुल पोयौ ॥
परदूपर ताडिका । तास सुप अंत समोयौ ॥
सुरतान प्रान तिन बान गहि । सु कविचंद सच्चो चवै ॥
सोई जवान तुअ कर चढै । मम चुक्किस मोटै तवै ॥
छ० ॥ ५२१ ॥

श्लोक ॥ मादहे चित्त पुरानानि । नीति कालानि सचयं ॥
अप्पए बान बानानि । कि प्राण मुक्कन श सरं ॥ छ० ॥ ५२२ ।

कवित्त ॥ सभरि नरेस करि रीस । सीस धुन्नहि नह सकहु ॥
चलहु चित्त नद करहि । मोहि अच्छरि मन अकहि ॥
उत्तमग कर असिय । वाह उप्पर बामन्नहि ॥
सैल वत्त सचरै । राय भुअपति सब सुन्नहि ॥
सुरतान पान गुर ध्यान गहि । गुर अच्छिर चढ़ह मनिय ॥
मुक्कहि नसत्त सर सत्त कह । तू सामंत सूरन धनिय ॥
छ० ॥ ५२३ ॥

प्रथीराज कम्मान । बान दृढ मुट्ठि गहिय कर ॥
जिन विसमौ मन करहि । करहि भुअपत्ति अप्पु वर ॥
जु कछु दियौ कैमास । कियौ अप्पनो सु पायौ ॥
सोइ सभरिय सहाय । तुहिज अम्मरपुर आयौ ॥
विधिना विधान मेटै कवन । दीनमान दिन पाइयै ॥
सर इक्क फौज सभरि धनी । सत्तह जुग्ग रहाइयै ॥
छ० ॥ ५२४ ॥

कवि के इशारे पर राजा का शाह की तरफ मुख करना ।

गिरनारा लगि गौड । देस जीता जगल थल ॥
लंका गढ जित्तयौ । समद जित्तौ उर सलियल ॥
हथिना बर जित्तयौ । सीम कधारा बधिय ॥
मथुरापुर जित्तयौ । एक सुप धारन सधिय ॥

अथिराज सुनवि संभरि धनी। सुहिनैही मम जानि सुप ॥
इम जंपै चंद बरहिया। सजि आलंधर देस मुप[1] ॥
छं० ॥ ५२५ ॥

दूहा ॥ जल बिन भट्टसु[2] भट्ट सें। करि अप्पहि सुप वन्न ॥
परम तत्त सुक्ख्यौ नृपति। संगहि फुरमानंन ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

पृथ्वीराज का कमान ले सन्नद्ध होकर शाह के हुक्म की प्रतीक्षा करना।

गाइरी ॥ फुरमान मान मंग्यौ सु चंद। चपहु अति अंध चप भइय इंद ॥
ठगठगिय लगी बुधि भगिय साहि। फुरमान दियौ मनों करज गाहि
छं० ॥ ५२७ ॥

कवि का डमरू बजाकर शाह से हुक्म देने के लिये प्रार्थना करना और राजा को उत्कर्ष देना।

दूहा ॥ मानि नृपति बरचंद कहि। डंवरू गहि बर हथ्थ ॥
महि मथ्थै गोरी सु बर। कहि कहि जंपि सु अथ्थ ॥ ५२८ ॥
कवित्त ॥ हुंकारै सु गिरद्ध। राम जल सायर बद्धौ ॥
गिर तोल्यौ हनवंत। देव हुंकारै दिद्धौ ॥
हुंकारै लषिमन्न। भवर गय नंगन पार्यौ ॥
हुंकारै कलि कृन्न। मेर चिट अंगुलि चार्यौ ॥
चहुआन रान संभरि धनी। बह सुबान तुअ कर लह्यौ ॥
छंदै न तीर सत्तह तवै। अत्तपति हुंकारौ दयौ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

बादशाह की आज्ञा से पृथ्वीराज का सर संधानना और कवि का बिरदावली पढ़ना।

हुकम साहि गोरी नरिंद। अप्पै फिरि दीनौ ॥

(१) मो०-सुप। (२) ए०-भट्टहि।

वान सु वर प्रथिराज । काज अप्पनै सु लीनौ ॥
तब पढि वीर नरिंद । छंद विरदावलि पुव्वह ॥
सुनत भयौ ज्यौ नाग । नाग मंतर सुनि तव्वह ॥
अवदात पोर सभ्भय नहीं । जीहा सेस सहस्र कहि ॥
लवलेस कत्थ कारन भनहु । छंद पढ्ढरिय जत्ति महि ॥
छं० ॥ ५३० ॥

पढ्ढरी ॥ जित्तए जूह गोरी नरिंद । पुरसान जीति गति करिय मंद ॥
आरत्त काल भजि मत्ति जीत । दिप्पियै रूप भै भै अभीत ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

जुत्ति कन्न जोग तुट्टी नरिंद । नव्वयो भोम उडि छूर दंद ॥
वधयौ शाप रय[1] जुत्त वीर । जिहि वध्यौ तिमिरलिंगत्त भीर ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सुर जीति असुर सुर भौ प्रमान । सत समद वाच दिट्ठतु वपान ॥
चहुआन वधि तिहि कियौ वध । पुग्गी जु साहि जिन पुट्ठि सुद्ध ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

चढि जग पग जिहि भग कीन । परवत्त पारि जिहि हेम लीन ॥
द्विदवान हद्द परवत प्रमान । तहाँ लग्गि कीन सुरतान आन ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

पुरसान हथ्थ नव्वी पिछान । गजपत्ति वधि कै वेर आनि ॥
पुरसान मीर पसु सम सतीन । सौ सूर जीत चतुरंग कीन ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

सुरतान टेक ढाहे सुपास । अद्भुत चरित्त मुक्कै न गास ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

शाह के हुंकार देने पर राजा का उसके तालू पर निशाना लक्ष करना ।

दूहा ॥ वधन घरी चथुआन पै । वचन समप्पै साहि ॥
चित्त तोस तालुक्क रयि । सव्व[2] सँपत्तौ आय ॥ छं० ॥ ५३७ ॥

(१) ए० कृ० को० नथ । (२) ए० कृ० को० सच्च ।

पहिले हवस पर राजा का सर संधानना, दूसरे पर चढ़ाना और तीसरे पर शाह का तालू वेध देना।

हनूफाल ॥ सुरतान अग्ग प्रथिराज । जनु मत्त मद गजराज ॥
बिन चष्प उम्भौ मेर । चिहुं कोद अरिगन फेर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

रुपि घटिय षान ततार । कविचंद बैन उचार ॥
कर करषि न्रप कोवंड । धर धरनि थर ब्रह्मंड ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

दिव देव जै जै बैन । व्योमान सुरछरि ऐन ॥
करि करषि धनु पर बान । सुत सक्र पानि प्रमान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

कहि चंद जंपत साहि । फुरमान धरहु सु वाहि ॥
मुष उच्चरै सुरतान । मैं देउं तिय फुरमान ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

सै अंग साहि जलाल । मुष उच्चरै सद आल ॥
फर फरकि उष्ट फराल । जनों सुपत गजवत काल ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

फिर चंद राजन पास । इक बान इक घरियास ॥
फुरमान इक भय साहि । सुनि सबद्द श्रवन्न चाहि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

भय उभय बर फुरमान । इक इष्प धनु कर कान ॥
सुनि चतिय बैन अतिंत । सुरतान भूमि पतंत ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

वरषंत अंबर ऐन । पहु पंजली बर गैन ॥
सुर सूर सुरपति सोषि । दिन प्रबल प्रथुपति आषि ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

सुरतान गौ हरि साज । भिन करै आतम राज ॥
चहुआन भर सुरतान । इक जोति मद्धि समान ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

नव वाक नव रस छद । सरसे मिलै कविचद ॥
छ० ॥ ५४७ ॥

दूहा ॥ चितिय साहि फुरमान सुप । जिम कह्यौ सुर काल ॥
हन्यौ तांमि प्रथिराज तमि । बचन बचन सुप ढाल ॥
छ० ॥ ५४८ ॥

कवित्त ॥ भयौ एक फुरमान । बान जोगिनिपुर सध्यौ ॥
सोइ सबद अरु बान । अन अविचल करि बध्यौ ॥
भयौ वियौ फुरमान । तानि रप्यौ श्रवन तरि ॥
तियौ भयौ अनभयौ । पर्यौ पतिसाहि धरतरि ॥
लै दसन रसन तालुअ सघन । सीस फट्टि दह दिसि गवन ॥
सुरतान पर्यौ पां पुकरै । भयौ चद राजन मरन ॥
छ० ॥ ५४९ ॥

शाह के प्राणहीन होकर गिर पड़ने पर कवि का राजा को हठयोग द्वारा प्राण त्याग करने को कहना ।

दूहा ॥ सिलक बेधि फट्टिय प्रथुक । नयन तोल अ्रुति-मन्नि ॥
लवन कठि किद्धिय विकल । ढल्यौ साहि सम धुन्नि ॥
छ० ॥ ५५० ॥
पर्यौ साहि धर देपि कवि । समझायौ नृप जोग ॥
आसन बधि उलट्टि चक्र । छडि प्रान उद्धलोक ॥
छ० ॥ ५५१ ॥

राजा का कहना कि यह मुझसे कैसे होसकता है ।

तब राजन कविराज सौ । कहै भेद पर ग्यान ॥
राजस विच सातुक करन । क्यो आवै कवि जान ॥
छ० ॥ ५५२ ॥

शाह के मरने पर महा हाहाकार होना ।

कवित्त ॥ परत धरनि सुरतान । पान मिलि पलक पिट्टि सिर ॥
मैं बरज्यौ बहु बार । साहि दुसमन असप बर ॥

अस्ति सकल सामंत । तेज प्रथिराज वीर विय ॥
बल विक्रम अति सूर । जौह कविचंद प्रमान ॥
एक ठाम उपज्जै । एक थल मरन निधान ॥
सजाल काल ढिल्ली रहौ । चौसट्ठा टोडर समनि ॥
दैवत्त पट्ट दैवान गति । दैव गत्ति जोगह सघनि ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

रिन जित्यौ कमधज्ज । साहि बध्यौ गहि गोरी ॥
मैवाती मठ किद्ध । दौरि सो झत्तिय तोरी ॥
थट्टै भज्यौ भीम । धरा गुज्जर दिसि धायौ ॥
इहै करी अपियात । कलस कुल नृपति चढायौ ॥
कीयो न किछ्छ करिहै न को । जग जित्तै जुग जस लियौ ॥
सभलौ सकल भूपति बयन । कोज्जै ज्यौ पिथ्थल कियौ ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

भुजंग ॥ पर्‌यौ सभरी राइ दीसै उतंगा । मनो मेर बज्जी किय शृंग भृंगा
जिनैं वारवार सुरत्तान साह्यौ ॥ जिनैं भंजि के भीम चालुक्क गाह्यौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

जिनै भंजि मैवात द्वै वार बध्यौ । जिनै नाहर राइ गिरनार सध्यौ ॥
जिनै भंजि थट्टा सु कब्यौ निकंद । जिनैभंजि महिपाल रिनथंभ दंद ॥
छं० ॥ ५६० ॥

जिनै जीति गढ्ढौ ससीव्रत्त आनौ । जिनै भज्जि कमधज्ज रथ्यो जु पानं
जिनै भंजि पंडा सु उज्जैन माही । परमार भीम गंपुची विवाही ॥
छं० ॥ ५६१ ॥

जिनै दौरि कमधज्ज साहाय कीयौ । जिनै कंगुरा खेय हम्मीर दीयौ ॥
जिनै बोलि कंजबालका पेत ढाह्यौ । जिनै गाहि रा पंग स जोग लायौ ॥
छं० ॥ ५६२ ॥

भए राइ राजा अनेक सु थान । किने शब्द कै सथ्थ मुक्यौ न बान ॥
इने सभरी राइ साहाव हन्यौ[1] । उभै दीन जास पराक्रम मन्यौ ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए कृ को सध्यौ, व यौ ।

सब देव हूरं पुहपपं बंधाए । मुरं जोति जोतिं सजोतिं समाए ॥
तिनक्की उपमा कवीचंद भाषी । मिले हंस हंसं रवी चंद साषी ॥
छं० ॥ ५६४ ॥

कवित्त ॥ नयन बिना नरघात । कहौ ऐसी कहु किद्धी ॥
हिंदू तुरक अनेक । हए पै सिद्ध न सिद्धी ॥
धनि साहस धनि हथ्थ । धनि जस वासन पायौ ॥
ज्यों तरु छुट्टै पत्त । उड़ै अप सत्तियौ आयौ ॥
दिष्यैं सु सथ्थयौ साह कौं । मनु नछित्र नभ तें टर्यौ ॥
गोरी नरिंद कविचंद कहि । आय धर धर द्रुम पर्यौ ॥
छं० ॥ ५६५ ॥

हरफ षान कहि वत्त । प्रात पहिलै दिन भुल्लै ॥
भट्ट देषि दरबार । फेरि देतह किम फुल्लै ॥
फुनि पहिलौ सनमंध । बार बारह सु गह्यौ अब ॥
सहि सहाब छंडयौ । दियौ भरि दंड तुमहि तब ॥
कम्मान कहर कर सर बरह । गज्जनेस पत तो बह्यौ ॥
बहुवास भलय चंदब अगर । दुज कंध भट राजन दह्यौ ॥
छं० ॥ ५६६ ॥

सुन्यौ हंस हंसनिय । हंस बिन हंसप सुक्कै ॥
दसम द्वार उडि हंस । पंच मिलि पंचह रुक्कै ।
इंद्र आप उद्धार । ढुंढ ढिल्लिय ब्रज कंतिय ॥
जथ्थ कथ्थ निस्सये । आय जुग्गिनपुर वत्तिय ॥
डंडूर वाय तिन बहु उड़े । वाय भग्गि तिन तथ्थ परि ॥
संजोग जंत भंजि जंच वर । भगी सार तत्तौ निवरि ॥
छं० ॥ ५६८ ॥

ति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके पातिसाहि बानवेध मरन राजाचंद सुजसकरण पश्चात् बधनो नाम सड़सठवों प्रस्तावः समाप्तः॥ ६७ ॥

अथ राजा रयनसी नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

[अड़सठवा समय]

पृथ्वीराज के पकड़े जाने पर और कवि के कांगड़े से छूट आने पर राजा रयनसी का पाट बैठना ।

दूहा ॥ पुन्न कथा प्रारभ कहि । सि घालोकन कथ्थ ॥
जब ते गज्जन वै ग्रह्यौ । असपति दिल्ली नथ्थ ॥
छ० ॥ १ ॥

ज्यौ रेवा गज अहिय मनि । चातक पावस नभ्भ ॥
ज्यौ दरिद्र सपत्ति यै[1] । यो गज्जन प्रथु लभ्भ ॥
छ० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ ग्रहिय राज सुरतान । गयौ गज्जन गज्जन वै ॥
प च पथ्थ प जाव । थान थप्पिय तज्जन वै[2] ॥
पब्बिय पां पीरोज । सोव साहिब करि म डिय ॥
लगि लाहौर दिसान । मौर मौरन पर छ डिय ॥
पथ इद्र कोस सत इक्क पर । मेछ सेन पारस सरिय ॥
रुकि रहै रे न राजन रवद । मनो सिघ सिघह अरिय ॥
छ० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ जोगिनिपुर राजै रयन । चपि न सक्कै कोय ॥
कलह केलि नित नित करै । रज वढ रप्पै सोय ॥
छ० ॥४ ॥

भावी गति भव न्निभ्भयौ । छुटि आयौ कविचद ॥
सुप्प कद सुक्कै सु कवि । दुप[3] पगुरि वर कद ॥
छ० ॥ ५ ॥

(१) ए० कृ० को० सपति पयै । (२) ए० कृ० को० तद्वित वै ।
(३) ए० कृ० को० सुप ।

राजक्रित्य कारन सकल । करिय रयन चहुआन ॥
दान न्हान गो ब्राह्मनह । दिए विविध परिवान ॥
छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ राज देव प्रोहित्त । आय आभासि उचारं ॥
ढिल्ली धर ढिल्लरिय । होइ निरधार अधारं ॥
सबै सूर सामंत । रेन राजन आचारं ॥
करिय एक मन सब्ब । रीति राजन व्यवहारं ॥
सुभ दिवस लगन सिंधासनह । घरि मूढ़ा गादी सरिय ॥
कढ्यौ तिलक सामंत मिलि । मेघाडंभर सिर धरिय ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवि चन्द के कौशल से शाह और पृथ्वीराज का मरण सुनकर रयनसी जी का सब सामंत मंडली से सलाह करना ।

कितक दिवस अति बिषम । गए पल षग्ग षटक्कै ॥
सुन्यौ राज बरदाइ । हन्यौ सुरतान सटक्कै ॥
रोस[1] रुद्र उप्पज्यौ । भयौ बीरां रस सारं ॥
धन्नि राज[2] प्रथिराज । गिल्यौ साहाब सुतारं ॥
उक्कसे रयन सामंत सब । भंत मंडि धर धुंसियै ॥
संजुरे बीर अभासि भर । नाम प्रथ्थुक परसंसियै ॥
छं० ॥ ८ ॥

उत्तराधिकारी सामंत मंडली का वर्णन ।

बोलि भान पुंडीर । बीर पावस कौ जायौ ॥
बोलि पुत्त रनधीर । अनुज धीरत्त सवायौ ॥
सामंत सौं गहिलोत । महन सुअ मथन महन रंभ ॥
जैत करन पांवार । सार परताप रयन षंभ ॥
बीरोधि हड्ड सुअंर सदि । वीर चंद जैसिंघ सजि ॥
संकरौ सिंघ बनबीर बर । धंधे रोजग भन्नि रजि ॥ छं० ॥ ९ ॥

(१) मो०-पिस । (२) ए० कृ० को०राह ।

भान तेज चालुक्क । धक्क अरितम्म अहारन ॥
पारिहार रनधीर । भौर भर[1] रेन सधारन ॥
सारग दे गप्परी । टा करन डाक बजावन ॥
कूर भा रघुवस । वध रन सिघ कहावन ॥
ता अनुज बधि राजसि कुंअर । राजदेव राम दुज सुअ ॥
सब आय सथ्थ सिरदार लै । वड गुज्जर भोजल्ल भुअ[2] ॥
छ० ॥ १० ॥

दूहा ॥ ईसरदास अनत वर । भुज ढिल्लिन चहुआन ॥
मत तत बुझ्झै नृपति । कहौ कन्ह विधि जान ॥
छ० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कहत भान चालुक्क । वार लहिय हम याहिय ॥
सारंग दे गप्परी । तेग तत्ते होइ साहिय ॥
धधेरौ धुमकेस । वेस वहुही वहुआ ॥
इनकै मत मरन्न । करनपूर वलि चहुआ ॥
लपलेन तुरिय चुकै पुरिय । इह अचभ नन मानियै ॥
रनभग लाज रजपूत जौ । फनि अभग रन ठानियै ॥
छ० ॥ १२ ॥

युवक सामंत मडली का मत होना कि शाही सेना से छेडछाड की जावे ।

दूहा ॥ इक सो नौ अरु सा पुरिस । भग्गा फेरि जुरत ॥
कायर पप्पर काच कन । मन भग्गा न मिलत ॥
छ० ॥ १३ ॥

कहै भान पुडीर मति । अरु मिलि ईसरदास ॥
पुडीरा रनधीर कहि । राजन मुक्कै पास ॥
छ० ॥ १४ ॥

सेवक सामि सवग धरि । चिह दिसि चोट अहुट्टि ॥
अनिय धार अड्डौ अरै । टूक टूक होयतुट्टि ॥ छ० ॥ १५ ॥

(१) ए० ऊ० को० रन । (२) ए० क० को० भोजिल्ल अभुअ ।

इह मति करि सज्जौ सु दल। कहि सुमेर परताप ॥
संकर[1] सिंघ सामंत सौ। अरिवल तोलै आप ॥
छं० ॥ १६ ॥

धवल दीह संमुह धवल। रथ सामंत सरंध ॥
यों लहि राजन बंस धुर। धवल रतन नव कंध ॥
छं० ॥ १७ ॥

उधर गजनी में शहाबुद्दीन के उत्तराधिकारी का तख्तनशीन होना।

उत गोरी गज्जन दिसा। थप्पिय बिनै सहोब ॥
भेछ मछ्छरति दीन मति। धर्यौ गौरि साहाब ॥
छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ धरिय गौरि साहाब। षान मिलि षलक पिट्टि सिर ॥
सहस पंच इक लष्ष। करह बंगरिय टूक षिरि ॥
चिहुर रोम उष्षार। भई सब भेष दिवानै ॥
तन तोबह झूरंत। अहों हिंदू परवानै ॥
उष्षारा मीर अछह उमरि। इन अभूत क्रम मानयौ ॥
दुसमन विसास सुविहान किय। तब कुमंत हम जानयौ ॥
छं० ॥ १९ ॥

दूहा ॥ तिया भरोसौ ना करे। अरु दुरजन बेसास ॥
पुब्ब विरोध न बीसरै[2]। ते लभ्भै सुष वास ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ तब मिलि षान ततार। षान निसुरत्ति सजोरिय ॥
रुस्तम षान हुजाब। षान षानौ मिलि गोरिय ॥
मीर मलिक मीरंन। हदफ षां हद षुरेसी ॥
कालन षां मारूफ। षान सारूफ सुरेसी ॥
षुरसान षान षुरसान षां। जंद जिहाज जादुल्लपति ॥
पब्बीय पंच साहाब सुदि। प्रथुक जात इक नाम भति ॥छं० ॥ २१ ।

(१) ए०-संक। (२) मो० वीसरै।

साइत सोधि सहाव । पूछि काजी कुतवानिय ॥
नवल तपत नव रोज । छत्र चामर सो भानिय ॥
पढि कुतवा फातिया । बिनै साहाव सुनाम ॥
गज्जनेस गरुअत्त । करै काथावर काम ॥
दिल्लिय दिसान सल्लै सरस । अहनिसि नीद न चप धरहि ॥
छिद्वान राज उप्पर रयन । उक्कसि उक्कसि असिग्रह करहि ॥
छ० ॥ २२ ॥

सलाह पक्की होजाने पर राजा रयनसी का शाही सेना पर आक्रमण करने को सन्नद्ध होना ।

दूहा ॥ तपत रयनसी राज वर । चित सालत चहुआन ॥
बोल बोल चीवट परै । ज्यौ भग्गै पापान ॥
छ० ॥ २३ ॥

परहसा पप्पै सरै । एह अनागत वत्त ॥
कट्ठ जलै कोइल[1] करै । बलै लोह लहि धत्त ॥
छ० ॥ २४ ॥

पत्त परप्पन रयन रिधि । वैर बहोरन सल्ल ॥
गति अतर पतर पवित । बछे पुत्र नवल्ल ॥
छ० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ वे सामत समथ्थ । जेन सुरतान जु साहिय ॥
वे सामत समथ्थ । बोल बोले निरवाहिय ॥
वे सामत समथ्थ । जुग्गा जुग कीरति रप्पिय ॥
वे सामत समथ्थ । चद सूरिज जिहि सप्पिय ॥
इम रयन काज रप्पहि धरह । अब धीरत्तन मडियै ॥
धर थान पथ्थ पजाव लगि । पग्ग[2] मग्ग पल पडियै ॥
छ० ॥ २६ ॥

(१) ए० कृ० को०—कोइ लक्करै ।　　(२) कृ० को०—पग्ग ।

दूहा ॥ रयन राज इह मंत सुनि । मन डम्भरि असमान ॥
मंत सबै एकांत करि । दल[1] भंजों सुलतान ॥
छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ तंतु एक जो ग्रहै । चिरीय बंधन पग तोरै ॥
सहस मेलि बल भरै । बंधि गजराज अहोरै ॥
एकाकी बल करै । बहुत अग्गैं पग छोरै ॥
मिलनि सूर सामंत । करैं बरढान ढंढोरै ॥
सत मत्त मंच हम अरन मत । इह सुअम्भ रजपूत नहि ॥
जीवंत धरा भोगै अवर । बलिय रयन इह बात कहि ॥
छं० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ रजवट चूरी काच की । भग्गी फिरि न सँधाइ ॥
मनिया नाहीं लाष की । कौंजे आंच तपाइ ॥
छं० ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ फुनि जंपिय रतनेस । सुनहु सामंत सूर भर ॥
दिग्ग विजय रावन करत । बोलि नारद रिषेसर ॥
सुर नर पंनग बंधि । कहा बड़ बिरद बुलावहु ॥
तौ जानिहिं बलवंत । जीति अंतक पुर आवहु ॥
सुनि तमकि जुद्ध लंकाधिपति । करिय काल सो चाल बँधि ॥
तसलीम तीन करि छुट्टयौ । संजमनी पत षेत मँधि ॥
छं० ॥ ३० ॥

गाहा ॥ दस दस कोरिम सट्टयं । इक कंजुरिय रथ्थि संरिनयं ॥
द्यौ निसान निसंकं । सुरतान थान भाजनं काजं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ गागरि सद्धि प्रगट्टि रिषि । सागर करि अचवंन ॥
अनल कुंड उतपन्न अग । पग रिन रुपै[2] कवन्न ॥ छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए० कृ० घर । (१) ए० उपौ ।

राजा रयनसी जी का सब सेना तैयार करके पंजाब की सरहद पर स्थित शाही सेना पर आक्रमण करने के लिये कूच करना।

कवित्त ॥ बजि निसान घन आन । उमडि आषाढ डडुर ॥
धमकि धराधर धर हरै । पिट्ठ तट्टि कछ कूरर ॥
हलकि सूर हय चढे । किलकि जोगिनि वेताल ॥
झलकि तेग हथ झले । नचि नारद वेताल ॥
ओपंत टोप सजोसमधि । मनु भद्रव घन भान सरि ॥
नवतीय सहस दल वल अतुल । चलिय रयन सव साज करि॥
छ० ॥ ३३ ॥

पद्धरी ॥ करि सेन साज चलि रयन राज । वज्जै अनंत वाजंत वाज ॥
सूरिवा सुभट अग्गै विराज । मन धरे सामिधर ध्रम्म काज ॥
छ० ॥ ३४ ॥

पह धूरि पूरि पिथ्थयन भोन । धर धरिय धरा मिलि आसमान ॥
सलसलिय सेस कसमस करान । दिगपाल दंति पनिय डरान ॥
छ० ॥ ३५ ॥

कूरंभ करथ्थय पिट्ठपान । फिरि जगे वीर वेताल आन ॥
जोगिनिय गहे पत्तर पयान । सँग चले गिद्धि सिद्धी सयान ॥
छ० ॥ ३६ ॥

सुर असुर जुद्ध देषन उमद्दा गड्ड अडै मत्त जानै किभद्द ॥
हनहनय सद्द हैहै हिंसान । पर सद्द धरा वज्जै प्रमान ॥
छ० ॥ ३७ ॥

घहरंति घट घूघरन सोर । पावस्स जानि बोलत मोर ॥
सज्जिय सनाह घन जेम स्याह । बगयंति भंति आवधि अथाह ॥
छ० ॥ ३८ ॥

घनु धनु हरत रत पीत तेज । फहरंति फिरै जनु अम्भतेज ॥

इथनारि गोर जंबूर सथ्थ । छुट्टंत अभ्भ पावै न पथ्थ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिल्लिय धरान चढि चाहुआन । संबोधि बोधि सब्बै भरान ॥
सुर सहस गज्ज सय मीन सुथ्थ । जानै कि कूट पब्बय सरुथ्थ ॥
छं० ॥ ४० ॥

नष सत्त सहस सेना सुभार । पायक सहस्स सुर पंच सार ॥
पंचह सुअनी बंधी दिसान । मधि अनिय रयनसिय चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

सुष अग्र भार पुंडीर सथ्थ । दाहिनी फौज ईसर समथ्थ ॥
रघुबंध बीर सुर बाम कोद । उन पीठ सकल सामंत मोद ॥
छं० ॥ ४२ ॥

छुट्टंत बाय बेगी तुषार । दह कोस उभय संध्या सवार ॥
फिरि उहटि डोरि ज्यौं गुडी हथ्थ । धुम्मलहि देस फिरि मिलहि सथ्थ ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दिल्लिय दिसान सें तीन कोस । म्लेछान भंजि उम्भरे रोस ॥
थनथान थान सुबिहान कुक्कि । साहाब बिनै सुनियौ उभ्भकि ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अिगसाष जान बिंछिय चटक्कि[1] । उछर्‌यौ भूमि तें हाथ इक्क ॥
कोकाल ग्रह्यौ जगयौ सजीव । प्रज्जर्‌यौ जानि अग्गीव घीव ॥
छं० ॥ ४५ ॥

हुंकार हाक नासा फुंकार । सुर चलै जानि मारुत प्रजार ॥
कोपयौ कहर असपति गुरेस । सहि सकै कौन पल्लटयौ भेस ॥
छं० ॥ ४६ ॥

भ्रुकुटिय कराल बल घालि मुच्छ । चंपयौ काल जानें कि पुच्छ ॥
आतुर अनंत बोल्यौ सु दाउ । चापरे करिग नीसान घाउ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

(१) ए० चलक्कि ।

राजा रयनसी का शाही सेना को मार भगा कर लाहौर पर अपने थाने बैठना और इस बात का गजनी में समाचार पहुचना ।

दूहा ॥ घरि निसान सुविहान कर । हय गय इभय पलानि ॥
झलहलिय सायर तपत । प्रलय पलट्टिय जानि ॥
छ० ॥ ४८ ॥

रतन सेन चहुआन वर । रोपि अप्पने वीर ॥
पच पथ्थ सुरतोन वर । घन मडिय हम्मीर ॥
छ० ॥ ४९ ॥

धर धुसे चहुआन वर । पथ भग्गि तन पडि ॥
धर गज्जनी नरिंद वर । रतन लियै अव[1] दडि ॥
छ० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ पजाव थान सव साहि मडि । उट्ठए सकल रयनस पडि ॥
किय चप साहि ढिल्लिय भरान । अच्छै जु खूर तपि चाहुआन ॥
छ० ॥ ५१ ॥

लाहोर लीह छडिय सुधाइ । ग्रिह मडि अप्पव जनु पिट्टराइ ॥
चहुआन सवर दिन दिन प्रकार । गोरी नरिंद दर गइ पुकार ॥
छ० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ विनय खूर साहाव । साहि पुक्कार प्रपत्तिय ॥
मग्ग भजि सु विहान । छडि पजाव जुद्ध तिय ॥
हसम हयग्गय थान । देस लुट्टे सुलतानिय ॥
पुल भग्गा नदि सिंधु । आन सज्जिय हिंदवानिय ॥
तुरकान तेज तत्तार वर । करिय रनह भग्गत निरि ॥
आहट्ट वीर दुसमन वलिय । वर लग्गौ गोरी सुगिरि ॥
छ० ॥ ५३ ॥

(१) मो०—रत्तन लियै अदड ।

उक्त समाचार पाकर शाह का कुटवार खां को अपना प्रतिनिधि बनाना और अन्य सरदारों को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना।

निसा अद्ध उत्तरिय। मेद चहौ चहुआन ॥
कुंची अप्पि नरिंद। बीर कुटवारति षानं ॥
पच्छी षां पीरोज। लोह लीनौ पुनि भग्गौ ॥
अप्पानं वर थान। दई दुसमन फिरि लग्गौं ॥
ढिल्ली वछित्त भग्गा सुवर। षान षान गोरी सुवर ॥
साहाब बिनै साहाब सुनि। तोन बंधि बंधन सुभर ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बोलि षान तत्तार। लग्ग साहाब साहिबर ॥
बोलि षान षुरसान। लग्ग षुरसान कंध भर ॥
बोलि मीर भारूफ। जिनें बंधे चहुआनं ॥
बोलि हवसि जादुल्ल। सत्त[1] बर सहस समानं ॥
साहाब सहित साहाब षट। सा लिन्ने संभारि क्रम ॥
रत रतन बीर बंधन सुदिन। सुनिय सथ्थ पथ्थयनि[2] अम ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पत्ति प्रौढ[3] तत्तार। मंति तजि तमकि तोन बंधि ॥
जल जोबन साहाव। दुहुं साहाब तेज संधि ॥
करि मिलान सुबिहान। आनि हिंदवान सुसंकिय ॥
बर निवाज करि बीर। तुंग सुबिहान हथ्थ लिय ॥
पच्छिम एराक पुच्छै नपति। पुब्ब दिसा पालान बर ॥
द्रिगपाल हल्लि हल्लिय दिसा। चलिय बत्त अरि घरन घर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

(१) मो० तत्त। (२) ए० कृ० को० पथ्थहाति।
(३) ए० ऊढ़। (४) मो० मन्नि।

शाही सेना का हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना।
शाही सेना के कूच का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ धवलीय सेन चलि धवल सूर। दो मिलिय अट्ठ दिस लगि कहूर।
सुझ्झै न भान विधि भान तेज। बिच्छुरहि चक्क वर मिलि सुरेज॥
छ० ॥ ५७ ॥

हस्सैति नाग गति गिरि समान। रवि रथ्थ स्रम रज रुक्कि मान॥
बर स्याम पीत धवली हरत्त। सोभत सेन चतुरग मत्त॥
छ० ॥ ५८ ॥

नच्चैति वीर नारद चग। जट जूट ईस सिर नच्चि गग॥
नच्चही वीर चक्रवाक नद। आनद रहित ग्रह चक्कि चद॥
छ० ॥ ५९ ॥

उरझै कुरग पय बिच तुषार। सिर ढरै नीग लचि नमै भार॥
झुकि कीय नद सुर बज्जि रग। सहनाय नद मोहै कुरग॥
छ० ॥ ६० ॥

त्रयवक्क ढोल बज्जे प्रकार। बज्जत तबल सुद्दह टँकार॥
बज्जै स्वदग औपम्म चग। मडिय सुरत्ति नारद प्रसग॥
छ० ॥ ६१ ॥

मुह अरिय सद्द मुह चग मोर। कट तार तार मजीर हीर॥
बसुरिय बज्जि सारग भेरि। बज्जत सिघ झ,झ्झर फेरि॥
छ० ॥ ६२ ॥

बज्जिय निसान गुडीर सद्द। बज्जे जजीर जरि गज्ज मद्द॥
बज्जत घट घूघरन सोर। पप्पर निसद्द सद बधि मोर॥
छ० ॥ ६३ ॥

साहाब विनै साहाब सूर। उतर्यौ सेन सह सिधु पूर॥
साहाब विनै साहाब दीन। फ,रमान हिंदु बंधन सुकीन॥
छ० ॥ ६४ ॥

अल्लाह अग्ग भौ अप्पहीन । करतार तुंब करि एक दीन ॥
उत्तरे सिंधु हथ विहथ साहि । मुक्कै बिवाह चिन्हाव धाइ ॥
छं० ॥ ६५ ॥

सतनंज सतन जिम करि प्रमान । चर कहैं धाइ सुनि चाहुआन ॥
छं० ॥ ६६ ॥

शाही सेना के चढ आने का समाचार पाकर रयनसी जी का राजपूत सरदारों से सलाह करना ।

कवित्त ॥ कर बलवान ततार । हबस हरबल हज्जाविय ॥
बीच बिनै साहाब । फौज बंधी दरियाविय ॥
कूंच कूंच हिंदवान । दिसा दष्षिन पंजाबी ॥
जोर सोर सुरतान । सुनिय आवंत सिताबी ॥
रस उभै सहस गज हय सुरंग । द्वादस लष सहसंग गिनि ॥
पाइक अनंत कहि गिननि मति । चलिय फौज हिंदवान मनि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

रयनसी जी का कहना कि ऐसा मंत्र करना चाहिए जिसमें बात रहै और हँसाई न हो ।

तब सुनि रयन सहाब । आव उत्तरि जुरि भग्गं ॥
सोइ सुमंत किज्जियै । मंत सुद्धरै जुअग्गं ॥
आगे ही छिज्जिया । दूर सामंत सुभारी ॥
हम कंधै इल भार । दियो प्रथिराज विचारी ॥
तुम करौ मंत भर इक्क होय । ज्यौं रजवट वट सुद्धरै ॥
विन मंत घत पुज्जै नहीं । बोल सु बोला उद्धरै ॥
छं० ॥ ६८ ॥

सोचि सब्ब भर सुभर । मूल रष्षन मत मंडौ ॥
पावस सूअ सहाय । कन्ह जौगिनपुर छंडौ ॥
धर पद्धर मुक्कियै । जोध मंडब धर बंकी ॥

सवर सुनौ सुलतान । पुत्र वर जमी इहक्का ॥
सामंत बिना सेा मत करि । पट्टी पुत्र न पोइयै ॥
हिंदवान सबै हँसिहै द्रुअन । जुद्ध मुकिय बल जोइयै ॥
छ० ॥ ६९ ॥

सब सामंतों का युद्ध करने पर उद्यत होना और दिल्ली के किले में ही युद्ध होने की बात पक्की होना ।

दूहा ॥ धवल दीह दीये सुवर । धवल होय पुत्रोय ॥
धवल लीह लीहै ग्रहै । मरन धवल यों होय ॥
छ० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ जैत पुत्त पावार । जैत सम जैत सवायौ ॥
सत सामंत न ध्रम्म । ध्रम्म छत्री छिति पायौ ॥
बीर वक्क बसुमती । बीर वकाही वकौ ॥
बीरनि वर पइरौ । बीर लिय बीग सकौ ॥
पइरौ भूमि वकेति भट । धर वकौ न्रप मति नहीं ॥
जोगिनिय थान जोगिनि पुरह । दुझ सामि बल बल जिहीं ॥
छ० ॥ ७१ ॥

दूहा ॥ रुधि छटौ प्रथिराज नै । धर अप्पौ सुलतान ॥
कछू छीन घटि तू तपै । पूरन करि चहुआन ॥
छ० ॥ ७२ ॥

अनंत बली अहुआन नै । मुक्षि खूर ससि वेस ॥
सधातक सभरि सुरस । बर आन दे रेस ॥
छ० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ कहै मत्त पावार । रतन रप्पौ लजि रतनह ॥
जस सुध्रम्म प्रथिराज । तुम प्रगटौ सुम तानह ॥
रतन दीप प्रगटियै । कित्ति चिहु मग्गह सुझ्झै ॥
मरन महन मो पुरष । मोहि परमप्पर[1] सुझ्झै ॥

(१) ऍ० कृ० को०—परमठर ।

सत बरस आव थानस धटी । अद्ध बाल विरधत्त गय ॥
संताप सुष्ष माया विस्रम । सेष न मुक्कहि लोय अय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

धीरं जो रनधीर । बंध पावस उच्चारिय ॥
स्वामि रनह्न नंधवै । हथ्थ अष्षं लगि गारिय ॥
भरन तत्तहय सूर । राज रष्षौ राजानिय ॥
करि काया बल भंग । रहे छुट्टै सुलतानिय ॥
सनमंध जीव जीवन मरन । बर बिधान वर लष्ष पर ॥
सत सत्त सत्ति कीजै नही । सत कीजै रजपूत बर ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इंद्रायन्ना ॥ थंभ मंडि बर कित्ति सु सोभेसं बरं ।
सूर अथ्थि दिल्ली जस जीतियै डंबरं ।
इसौ संभरी नाथ राज प्रथिराजरं ।
मंडि रत्तन धष्ष यौ जुग ईवल अंबरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली वै ढिल्ली करी । बर ढिल्ली वै तथ्थ ॥
रहै जैत षंभह जितैं । सिंध प्रान मति जथ्थ ॥
छं० ॥ ७७ ॥

रज रष्षन रहि राजसी । ढिल्लिय ढिल्ली नथ्थ ॥
पावासर ऊपर चढैं । रतन सेन सब सथ्थ ॥
छं० ॥ ७८ ॥

ईसर दास महेस कहि । हम मति इत्ती सार ॥
ढिल्ली गढ़ गढ्ढौ ग्रहै । तौ हम जुडैं सार ॥
छं० ॥ ७९ ॥

बित्त ॥ तब सुभान पुंडीर । बीर रनधीर पुंडीरं ॥
चालुक्का भर भान । बोलि जै सिंघ सुधीरं ॥
करन सुभर परताप । बीर चंदं बन बीरं ॥
सारंग दे गष्षरी । टांक चाटा उत नीरं ॥
सुनि मंत मंन एकंत करि । भलौ भलौ भर सब्ब कहि ॥
रयनसी राज ढिल्ली सुबर । गढ़ संग्रही सो चित्त लहि ॥
छं० ॥ ८० ॥

शाही सेना के दूत का आना और राजा रयनसी का युद्ध का प्रस्ताव स्वीकार करना।

दिल्लीय दिसि सुलतान। साजि चल्ले चतुरंगिय॥
वज्जि बीर नौसान। पान पुरसान अभंगिय॥
रेउ बर उत्तरत्त। धाइ चर आय सुगोरिय॥
कहा गयौ चहुआन। बीर पावस रस जोरिय॥
आलम पयान पाताल कँपि। सूर कंपि पन्नग डरिय॥
दुसमन सुदेव गढ सज्जयौ। बंधि चाल समुह भरिय॥
छं० ॥ ८१ ॥

शाही सेना का किले को घेर लेना।

गढ उप्पर सुलतान। चपि चतुरंग चलाए॥
हय गय घट ठनकि। सूर पप्पर गहराए॥
नेजा बर बैरप्प। उडिय धुधरि दिसि धोरिय॥
मुर मारत मुरि चले। घोर उज्जल ढरि चोरिय॥
सारस मिलत सारस विछुरि। चकी चक्क चित चंद बर॥
रुक्कयौ रतन बर भान अरि। राह रूप गोरीत भर॥
छं० ॥ ८२ ॥

सुरिल्ल ॥ सक्कि सुवर पावा सर बीर। परि पारस सुलितान सुमीर॥
गढ गढ्ढो देषै पंवार। राजसिघ चढ्ढे तिहि बार॥
छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ जोर बरस बर गोरी प्रमान। 'ग्रह ग्रहन राह चहुआन भान
रज कज्ज धाइ रज्जौर पान[2]। असि मन्नि तिष्य धारह मिलान[3]'
छं० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ बिनै साहि साहाव। उपटि दरिया हिल्लोरै॥
गढ घेर्‌यौ चिहु कोर। प्रलै जनु मेर सुबोरै॥
गोर नार छूटत। मरत मेछाइन भारी॥

(१) मो०—ग्रह ग्रहन भान रह चाहुआन। (२) ए० कृ० को०—पति।
(३) ए० कृ० को०—मिलत।

इन हिंदू पति राज । घात लग्गी सुकरारी ॥
आवट्टि सेन अध अद्ध अध । बज्ज कोट भेदै नहीं ॥
सुविहान तमक्कि तत्तार पर । हम हलान बत्ता कही ॥
छं० ॥ ८५ ॥

पद्धरी ॥ रत पीत धवल बर झरि प्रमान । दिसि उभै चारि मंडेति पा
सुभ्भरन भरन आवृत्त जोट । मनों पावस्स काल बर विंटि कोट
छं० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ सरद काल कौ चंद । परी पारस बर सुद्धल ॥
तिमर भान बिंटयौ । कूट बिंटे रुकि बद्दल ॥
कै इंद्र पूर विटंयौ । बलीसोहं बलि रावं ॥
कै जलपति विंटयौ । मद्धि बड़वानल पावं ॥
कै भ्रमाल धारि संकरत बर । इह उप्पम राजंत गढ़ ॥
कवि कहै चंद बरदाइ कर । कै कोट बिंट मुन्नार मढ़ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सात महीने दो दिन पर्य्यन्त किला न टुटने पर तत्तार ए का सुरंग लगा कर किले की दीवार उड़ा देना ।

दूहा ॥ सपत मास दिन उभय बर । ढोहन मंड्यौ बीर ।
बजे असप्पति साम दह । गज्जि सुगोरी बीर ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ तब तत्तारहि कसति । सार सोधड़ मुष मारिय ॥
करि सुरंग संचार । मद्धि दर मंझ सुधारिय ॥
करिय सज्ज सब सेन । आनि आतस संचारिय ॥
लगि क्रसान पाषान । उड़ि य असमान अँगारिय ॥
आघात सोर सारां सुबज्जि । लेहु लेहु मुष मेछ कहि ॥
हिंदवान प्रान अब तुच्छ हैं । फते नाम सुविहान लहि ॥
छं० ॥ ८९ ॥

सुरंग से किले की पश्चिम दीवार का टूटना ।

चढ़ि मध्यान सुलतान । साहि फुरमान अप्पि भर ॥

बाहि बीर परतग । गज्जि आयास लग्गि वर ॥
नर भर गज आहुटिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
दिसि पच्छिम सुलतान । बान सुधा रबि छुट्टिय ॥
पर कोट भग्गि पाषान उड़ि । नर सभेट बर उडि चलिय ॥
जानै कि चग रस बाय बँधि । पह सुमग्ग नर चिक्क[1]लिय ॥
छ० ॥ ९० ॥

षा ततार तिहि बार । मडि फुरमान पान लिय ॥
फिरि चिहु मग्ग सु दिष्पि । चिति दिसि बान थान बिय ॥
विना[2] भीति गढ, मग्ग । नारि जबूर लगाइय ॥
अप्प सथ्थ बर अद्ध । कोट पह मग्ग उडाइय ॥
तिहि थान कोट पुडीर भुज । धीरज ही धीरज्ज बर ॥
चढ्ढे सु सथ्थ सुरतान भर । लोह सार मच्चिय विधर ॥
छ० ॥ ९१ ॥

किले की दीवार टूट जाने पर दोनों तरफ से तलवार का युद्ध होना ।

लग्गा वर सावाति । आनि सूरन मुष रोह्यौ ॥
थक्कि गोर जबूर । पूर पति साह छ छोह्यौ ॥
जग्गि सेर सा वाति । पान दोरे पग साहे ॥
उत हिन्दू आलोल । सामि छल प्रम्म समाहे ॥
पुडीर भान परतग धरि । अरि ततार अड्डो असम[3] ॥
सजुरिय झोक झझर बजिय । वहे धार धारह रसम[4] ॥
छ० ॥ ९२ ॥

दूहा ॥ मग्ग असग्ग करि रु धयौ । मेछ न लभ्भत पार ॥
झर लग्गो पावस झरत । पग्ग न पडत धार ॥
छ० ॥ ९३ ॥

(१) ए०—नर चित्त कल्यि । (२) ए० कृ० को०—चित्त ।
(३) ए०—असस । (४) ए० को०—समर ।

युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ धार धार मिली, सोर छक्कै मिली ॥
ओन धारा चली, बोलि षग्गं षुली ॥
छं० ॥ ९४ ॥

आयुधे अत्तली, बोल बोलै बुली ॥
बंवरी उच्छली, मुंछ भोंहा मिली ॥
छं० ॥ ९५ ॥

काल कंकं कली, ० ० ० ॥
भट्ट चट्टं परी, बथ्थ बथ्थे अरी ॥
छं० ॥ ९६ ॥

धिंग धक्की धरी, कढ्ढियं दुज्जरी ॥
जीन सोइं करी, हड्ड हड्डं जरी ॥
छं० ॥ ९७ ॥

बार पारं करी, लुथ्थि लुथ्थं परी ॥
भान पुंडीरयं, षान षंडीरयं ॥
छं० ॥ ९८ ॥

षान तत्तारयं, पिंड पच्छारयं ।
दूर हुल्लारयं, अछरी पारयं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

चौसठी चारयं, पथ्थरं सारयं ।
ईस सीसं लियं, कंठ माल कियं ।
छं० ॥ १०० ॥

वित्त ॥ जुरत षान तत्तार । भान पुंडीर जुरंतह ॥
अस्त वस्त रुधि मंस । सानि एकंग करंतह ॥
पंच सत्त परि भीर । हिंदु सयतीन परंतह ॥
अवर हयग्गय जुथ्थ । षंड मुष परे अनंतह ॥
उप्पर पुंडीर रनधीर करि । सँगि समाहि आयौ समुह ॥
मा[illegible] सुष्ष मरदान मिलि । मनुं अनष्ष सौकीभ[1] मुह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए० कृ० को० सौकीन मुंह ।

बीर रनधीर का दरवाजा रोकना और शाही सेना के कई सरदारों को मार कर आप मरना।

मोतीदाम ॥ इते रनधीर समाहिय सेल। उते मारूफ कियौ पग मेल ॥
उझट्टिय ओडन पग्ग सुझारि। निकस्सिय सिगि फुटे धरपारि ॥
छं० ॥ १०२ ॥

धुकतय पान समाहिय तेक। हयौ हथ दष्पिन अगुरि एक ॥
पर्यौ धर मारूफ पान विहल्ल। उभौ रनधीर जुधै अरि सल्ल ॥
छं० ॥ १०३ ॥

वकारिय बबरि उट्ठिय बीर। जुकालन मीर समाहिय तीर ॥
कारिय कमान छुटौ सर वेग। लग्यौ फुटि टट्टर लौनिय तेग ॥
छं० ॥ १०४ ॥

दुहथ्थल झारिय कट्टकवारि। सुकालन मीर ढर्यौ धर गार ॥
उते रनधीर पर्यौ धर वेत। इते बर सामँत बधिय नेत ॥
छं० ॥ १०५ ॥

भिरै त्रित अप्प उभै दिभि जान। सु ज्वारिय षेत लुनत किसान॥
पचारिय सामँत बोलिय पान। अर्यौ निसुरत्ति ऊभै घटिजान ॥
छं० ॥ १०६ ॥

करष्पिय पजर पजर भीडि। लगे वथ अथ्थ पछारिय मीडि ॥
हयौ निसुरत्ति सुरत्तिन काय। जु सामँत पजर हस उडाय ॥
छं० ॥ १०७ ॥

रहे दोय कठनि कठ लगाय। मनो हित वटहि प्रेम मनाय ॥
किधौ कठ साल जरे काल लाइ। जुरै सथ सामँत सिह थवाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

पर्यौ निसुरत्ति सत मुरघायि। * * * ॥
सिरप्पर नाग चढे जु हुआव। कहै ठग लेहु सिताव सिताव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करन्न पवार पटोधर जैत। उभै पग्ग झारि महापथ षेत ॥
छिल्यौ गजराज हुआव पचारि। सरोस न झारि करन्न पचारि ॥

छं० ॥ ११० ॥

उभै दंत षंड भसुंड सुभारि । भरी कंध पव्वय भंग सुढारि ॥
ढर्‌यौ गजराज करी सु चिकार ॥ * * * *

छं० ॥ १११ ॥

परंत हुजाब अजाब औसान । गुरुआ समाहि उठ्यौ असमान ॥
करन्न सिर धर भारिय भाक । किरच्च किरच्च कर्‌यौ तन पाक ॥

छं० ॥ ११२ ॥

सटोप सकुचि अकुचिय माहि । अच्छौ धुकि धान हुजाब समाहि ॥
षवास पबार सुकेसर नाम । हयौ षग मीर पर्‌यौ धर ताम ॥

छं० ॥ ११३ ॥

हुजाब परंत हुआ हयकार । सुनी सुरतान हुजाब पुकार ॥
सबै दल एक हजार हुजाब । कढ्यौ दोउ कोद सुश्चित्त अजाब ॥

छं० ॥ ११४ ॥

करन्न परंत उभै सत सूर । अहै सिर ईस भिदे तन सूर ॥
परंत करन्न प्रताप कैमास । तनै सुत संगि समाहिय ताम ॥

छं० ॥ ११५ ॥

रुच्यौ दल रुस्तम काटिय तौर । हयो परताप निकस्सिय सौर ॥
लगे सरु धक्कि चलाइय संगि । समेत तुरंग ढह्यौ लगि अंग ॥

छं० ॥ ११६ ॥

दुहूं भर जुट्टत षुट्टन नाहि । बहै धर षंड जु ओन प्रवाहि ॥
करे पनमीर मलिक्क अचंक । करें जनु सोर लियै कपि नंक ॥

छं० ॥ ११७ ॥

हजार उभै सत तीन जमंन । परे कटि हिंदु सतं सतमंन ॥

छं० ॥ ११८ ॥

प्रथम दिन के रनधीर के युद्ध में मृत योद्धाओं के नाम

दूहा ॥ उभय सहस सत तीन सौं । रुस्तम वर जुधवान ॥
सें सत्तर हिंदू परिग । हय गय रुद्धि विहान ॥

छं० ११९ ॥

शाही सेना का किले में पैठने के लिये अग्रसर होना और बीर चन्द का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ परि कै मास प्रताप। ठान गोरी ढढोरिय ॥
घ्रमत मेछ धन धाय। बाल जनु भभा भौरिय ॥
लेहु लेहु मुष मेछ। मार मुष अपहि सारे ॥
धुअ सुमेर सामत [1]डिगै नहि पाय सुधारे ॥
कोपयौ कहर अतपति जहर। हुकम हक्कि मिल्ल कह कर्‌यौ ॥
[2]वज्रग ओट धरकोट सम। आय वीर चदह अर्‌यौ ॥
छ० ॥ १२० ॥

दूसरे दिन वीरचद के साथ कई राजपूत सरदारों का काम आना और यवन सेना का बल बढना।

मोतीदाम ॥ अयौ अड कोटह बीर सुचद। मनो त्रिकुटाचल इद सुनद ॥
फरस्सिय ओडन हथ्थ करार। वहै जनु कट्टत कूर कवार ॥
छ० ॥ १२१ ॥
मिलिक्कय मीर हए दुजनेज। समेत फरस्सि हन्यौ करि तेज ॥
पर्‌यौ धर मीर मलक्क सुमार। मनो चक भांड-उतारि कुलार ॥
छ० ॥ १२२ ॥
अनेक परक्रम चद सुबीर। अधाय सुधाय कर्‌यौ भवतीर ॥
सुमेर जादुल हुयौ दिठ मेल। उनें उन उन्नहि भेद्दिय सेल ॥
छ० ॥ १२३ ॥
मनो नट[3] भगुर मडिय षेल। उरा पर दीसहि अकुर केलि ॥
धुनें धुनि दोउ परे धर छोनि। अधाय सुधाय उड्यौ हँस देनि ॥
छ० ॥ १२४ ॥
हठी हडराउ सुषेत परत। उभै सुर सत्त मलेछ करत ॥
इक सत हिंदुअ सज्जिय सार। मिटे सम लब्भिय कोपि दुवार ॥
छ० ॥ १२५ ॥

(१) मो०—हिडै। (२) ए० कृ० को० वजग आठ घर कोट सम। (३) ए०—नग।

जै सिंघ पचारि दुआरि अरंत। मच्यौ जुध भारथ साषि भरंत॥
षनं षन गोरिय जोरिय सार। इसौ जुध जानि महोदधिवार॥
छं० ॥ १२६ ॥

गरै षग धार चिनंग क्रिसान। मनो निसि कूटहि लोह तपान॥
घरी अध जुद्ध मच्यौ अनिवार। परे होउ भौंछ सुरासुर धार॥
छं० ॥ १२७ ॥

ग्रहै असि दास महेस अरिंम। करी कुटवार षनेस परिंम॥
बधे दिसि संकर सिंघ सुछार। मुषें मँडि मीरन षान छंछार॥
छं० ॥ १२८ ॥

होज दिसि जुद्ध अनुद्ध अपार। हुओ सिलि दोंउ न एकं कार॥
दुनै सुष उच्चहि मार सुमार। * * * ॥
छं० ॥ १२९ ॥

बकै सुबिहान कि आन प्रमान। महाभर आन बकै चहुआन॥
महाजुध जुद्धहि भौछ करूर। कटे धर षंड विहंड गरूर॥
छं० ॥ १३० ॥

बरै बनबीर पचार किवार। ग्रहै कर आवध लै सथवार॥
पचारिय मेछ धर्‌यौ धर पार। अहुट्टिय षेंड पचास सुवार॥
छं० ॥ १३१ ॥

भगे भगि मेछ समाहिय तीर। फिर्‌यौ षां दप्फ सुबुद्धन मीर॥
मची सुहमेल पर्‌यौ बनबीर। तिलं तिल अच्छरि बंटि सरीर॥
छं० ॥ १३२ ॥

जगं मनिराव धँधेरिय आइ। मिल्यौ ततरोस दुसंमन घाइ॥
झर्‌यौ षंड दप्फ सुदष्षिन पाइ। हयौ तिन तेग जगंमनि राइ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पर्‌यौ बनबीर जगंमन देषि। भर्‌यौ भर चालुक मान विसेष॥
सारूफ सक्कत्तिय झल्लि सरोस। भिरै जनुराह रु भान सकोस॥
छं० ॥ १३४ ॥

सहाव बिनै धर षुट्टिय षानि। इतें दल भष्षिय चोलुक भान॥
पर्‌यौ षुरसान लधू दरसान। सरूफ पर्‌यौ धर षैजि प्रमान॥
छं० ॥ १३५ ॥

परयौ भर चालुक मारथ पेषि। नच्यौ रनधीर ग्रहै कर तेक ॥
जुरे परिहार घुरेसिय पान। परे रन पच हजार पठान ॥
छ० ॥ १३६ ॥

सवे दल हिंदुअ सत्त सतान। कमान पठान करप्पिय बान ॥
लग्यौ रनधीर फ,औ परवान। मनो जल जारिय मछ परान ॥
छ० ॥ १३७ ॥

पिक्षे समसेर घुरेसिय रूक। हन्यौ मध उह करो दोइ टूक ॥
इसौ जुध ढिल्लिय कोट ढरत। मच्यौ भर मेछ सुहिंदु जुरत ॥
छ० ॥ १३८ ॥

पलच्चर भूचर षेचर देव। पर म महन न दिट्ठौ केव ॥
अघाइय सद्द करै जैकार। चवट्टिय पप्पर पूरि प्रचार ॥
छ० ॥ १३९ ॥

परे गज जुथ कटे हय थाट। चले वहि श्रोन नदीरय थाट ॥
सहावनि जे भर पोष समूर। परे कटि मडल लैग्रहि सूर[1] ॥
छ० ॥ १४० ॥

गयौ भर भार उतारिय सूर। लयौ चहुआन सु कित्ति परूर ॥
सहाव न मडिय दिल्लिय आस। न छोरिय रेन परौ पंड पास ॥
छ० ॥ १४१ ॥

परिग्गह सूर परे पथरार। परौ मनु मेर अडिग्ग अपार ॥
दुहू दिसि तक्कहि मेछ झुझार। करी मझ सिध मनो सु गुंजार ॥
छ० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ उभय दीह रन लग्गि। सेन आलुथ्थि लुथ्थि पर ॥
हिंदु मेछ रन तोल। बीर बज्जे[2] अभग धर ॥
बर आलम नरिंद। दद्द बज्जे विरझान ॥
कोट ओट छुट्टयौ। सार संमुप चढि पान ॥
धन धार धार सिव वास वर। असि पहार धारह चढे ॥
संग्राम रवनि भारथ्थ भिरि। कुल सँग्राम सगुर बढे ॥
छ० ॥ १४३ ॥

(१) ए० कृ० को० हूर। (२) ए०कृ०को० भज्जे।

किला टूटा हुआ जानकर राजा रयनसी जी का राजगुरु को बुलाकर मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ गढ़ टुट्टत जान्यौ सुभर । कट्टै रतन न जाइ ॥
राज गुरु बर बोलि कै । तत्त सुमत्त उपाइ ॥
छं० ॥ १४४॥

प्रोहित का मंत्र देना कि कट मरना सलाह है ।

कवित्त ॥ सुनौ रतन चहुआन । पूर बैरी नदिय तिय ॥
राज रष्षि बर तत्त । मुरै सुर सुम्भर कित्तिय ॥
गगुलि[1] सूर साभंत । गिल्यौ पहु गोरी राहं ॥
उगलि छुट्टि बर भान । चिंति सुविहान सु साहं ॥
न्निब्बार वीर फल छोड़ फुनि । फूल मुहुंगे बीय बर ॥
ज्यौं छोड़ सोड़ जो उब्बरै । जोरब्बर धोवै न धर ॥
छं० ॥ १४५ ॥

मति घट्टिय रजपूत । सार संसार मरन बर ॥
मुक्ति पदारथ मुक्ति । दीनहु ज्यौं न घर घघर ॥
सार इहै संसार । पत्त मन सथ्थ सुआइय ॥
पति धट्टत मन रहै । जंम धोयौ जिहि जाइय ॥
बर चौर चौर अच्छरे ढरै । बरह बरह जरि झग्गरै[2] ॥
तिसना ह तेज भाया पमुक्ति । मुगति काल जित उब्बरै[3] ॥
छं० ॥ १४६ ॥

राजा रयनसिंह का जौहर करना ।

जोहर चिंति रयन्न । गढ़ सांध्यौ रतन्न हुअ ॥
सकल सबै रजपूत । करै अस्तुति तहेव भुअ ॥
कित्ति जित्ति तन मंडि । [4]काल घट-घटै न घट्टै ॥
असिवर अरि हाकंत । जन्म बंधन वर छुट्टै ॥
सब संत गार इक सट्टिब्बर । बिष प्रवरत प्रवरत्त हुअ ॥

(१) ए०-उगलि । (२) मो०-जग्गरै ।
(३) मो० कालति उब्बरै । (४) ए० कृ० को० काल टूटै न घट्टै ।

दिन दसमि जीव दिन अद्ध निस। जोइर रचि वर सामि तुअ ॥
छ० ॥ १४७ ॥

चाल बधि अरि बधि। पास बधे सुष बधे ॥
इह काया कारमौ। जानि भ्रम मारग सधे ॥
जम्म जार तुट्टयौ। भिदै रवि मंडल सथ्थ ॥
अच्छरि बर सग्रहै। सुकति लट्टी निधि हथ्थ ॥
रन धवल धवल कट्टैति सिर। असुर खूर सुमुह भिरै ॥
उचरी वार बड़, गुज्जरह। ऊक अग्गि लग्गा फिरै ॥
छ० ॥ १४८ ॥

दोपहर ढरते रयनसी का किले से निकलना और मुस्लमानों का उसे पकडने के लिये धावा करना।

दूहा ॥ विपहर नमत रवि नमत तम। दीत अदीत वसान ॥
सह सु रट्ट परिवार उत। पच पच पन पान ॥
छ० ॥ १४९ ॥

पड मुषै नग नग करौ। करि पल षट्ट प्रमान ॥
अब सहाव झूकि यों कह्यौ। विगह ग्रहौ चहुआन ॥
छ० ॥ १५० ॥

कवित्त ॥ तब सहाव सुनि पच। नाम एकै जति न्यारिय ॥
हबसी औरसि नौर। तौय गजनी सभारिय ॥
मक्कह लोदी एह। आप समवरि अधिकारिय ॥
पुरसाना पानेस। जोर धरि जवन हँकारिय ॥
तब पैज करिय अब अग्ग हौ। तुम लज्जा पच्छा फिरै ॥
इहकारि हाक झुझ्झौ सजुर। महि हिंदू जिंदू भिरै ॥
छ० ॥ १५१ ॥

हिन्दू और मुस्लमान दोनों का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

भुजगी ॥ भिरे हिंदु मेछान रोस पचारी। रघूबीर रासि घ राजैस भारी॥

(१) मा० अब ग्रहौ।

बलीभद्र कूरंभ रारै न आगै। करै हाक गाकं मुरै मेछ भागै ॥
छं० ॥ १५२ ॥

दिसा दष्षिनं राव सारंग नेतं। गुरं गष्षरं पष्षरं बंधि षेत ॥
बड़ गुज्जरं भोज रा राम सुत्तं। दिसा वाम मंष्षौ मनौं इंद्र पुत्तं
छं० ॥ १५३ ॥

दुजं राम सुत्तं दिवं राज तथ्थं। पुरं जुध द्रोन भए जानि पथ्थं।
भरं ईसरं दास का कन्ह जायं। चिहुं पारसं कोट चहुआन रायं।
छं० ॥ १५४ ॥

ठिक्यौ टाक चाटा सुपं नाट पायं। नटै नाट कोदा चिहुं षग्ग धायं
चंपे चोहुआनं सहाबं पचानं। अरे ओडनं नंषि कट्टै क्रिपानं
छं० ॥ १५५ ॥

रघुबीर कूरंभ नैबंध तथ्थं। बजे आवधं आवधं लग्गि बथ्थं ॥
मची हाय हायं लगै घाय धायं। नही अप्प पारं सुधं जुद्ध तारं
छं० ॥ १५६ ॥

गरं लग्गि साहाब कुरंभ एकं। हन्यौ हब्बसी जाति जुद्ध सुतेकं
दुती बंध रनसिंघ सिंधं पचारै। तिनें एक साहाब मार्‌यौ पछारै
छं० ॥ १५७ ॥

मुरं राजसी बंध साहाब गाजी। तिनं तेग तेगं अनो अन्य बाजी
लग्गे बीर रष्षं कठं तार तारं। कटे कंध कामंध छीगी पयारं[1] ॥
छं० ॥ १५८ ॥

बड़ गूजरं भोज भक्कौ सहाबं। दुनै सामि लाजं दुनै मुष्ष आवं
दुनै सज्जरी षंजरी पंजरीयं। दुनै दुज्जरी मह ज्यौं दब्बि कीयं
छं० ॥ १५९ ॥

दुनै दंत दंत ग्रहै कंठ देसं। उड्यौ हंस हंसं दुनै बाल बेसं ॥
दुजं राज साहाब लो दीस नूरं। दिसा वाम आयौ मनोराह सूरं
छं० ॥ १६० ॥

दिसा वामयं षा गूरज प्रकारं। कर्‌यौ पुट्टि घाया पर्‌यौ दुज्ज धा
गजे टाक नाटं चिहूं कोछ राजं। तबै छंडियं षंड सुलतान पा
छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए० कृ० को०-पछारं।

मची मार मार मुर्‌यौ सत्त पाय। इसौ च पिह सेन चहुआन राय॥
जुटे भारथ ईसर दास सूर। उते मेछ झंडा गडे वट्टि नूर॥
छ० ॥ १६२ ॥

विनै साहि साहाव आन कहूर। भिरे मेछ मस्मद गात गरूर
उते ईसर दास का कन्ह पुत्त। गयौ गज्जनेस हन्यौ गज्ज नेत।
छ० ॥ १६३ ॥

रपैं रेन टेक मुरे पक नाहीं। इसौ जुद्ध आनुद्ध चहुआन साही
वढे आन पुरसान पां रोस धायौ। तिन ईसर दास रा पूर धायौ
छ० ॥ १६४ ॥

टिक्यौ टाक पुरसान सौं मेल धाये। सबैं सस्त्र तुट्टै ढिगे नाहि पाये
घरी एकसो टांक सिर सार तुथ्यौ। परी जानि सम्मथार धरियार कुथ्यौ
छ० ॥ १६५ ॥

उतै छेढ हज्जार मेछान पारे। परे सात से पेत छिट्ट पचारे॥
छ० ॥ १६६ ॥

कन्ह के पुत्र ईसरदास एव अन्य वीरों का पराक्रम से काम आना।

दूहा ॥ ईसर दास जु कन्ह कौ। लगि पुज्यौ पतिसाह॥
मनौं गयंद के सघन सरि। करि दहवट्ट दुराह॥
छ० ॥ १६७ ॥

चढत मेछ तिन दिनह वर। सभ्भ सुमिटि भारथ्थ॥
पथ्थ पोय कूरभ रहि। बध तीन पारथ्थ॥
छ० ॥ १६८ ॥

वढे आनि पुरसान पति। पां पुरसोन पुरेस॥
दिसि दच्छिन धवलिय सयन। चपि सभरी नरेस॥
छ० ॥ १६९ ॥

दल भग्गो चहुआन भिरि। रन तच्चौ भगि सार॥
रयन सेन नन भज्जई। जानि सुवज्जन हार॥
छ० ॥ १७० ॥

उभै परिग्गह रयन सौं । लज्ज परिग्गह कोरि ॥
जस भावी तस ब्रिग्गयौ । सत्तिय सत्त न छोरि ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चौपाई ॥ आनीय तेलनि चढि वीरं । गय लज्जी सिसु आव न मीरं ।
लग्गि न कली फूल बर वीरं । लज्जी गहन रयन भुज मीरं ॥
छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ भय नाटक लज टंक । टंक भय लज्ज सुमेरं ॥
चाव हिसि रवि सामि । घाव चहुँ दह वेरं ॥
ढंढोरिय बर ढाल । माल हर बंधि कमल वर ॥
इंद्र लोक जम लोक । लोक हरि छंडि ब्रह्मधुर ॥
रजपूत सोइ रजपूत वट । बट्ट चुक्कि[1] पावै न बर ॥
सो करो कित्ति ज्यौं उब्बरौ । कहियै जिहि रवि चक्क तर ॥
छं० ॥ १७३ ॥

शाह के आज्ञानुसार पीरोज खां का रयनरी के सामहने आकर प्रचारना और रयनरी का उसे मार गिराना ।

परे षान षुरसान । पर्यौ बड गुज्जर भोजं ॥
चंपे बर चहुआन । आन रंग रोस सरोजं ॥
देषे बर चहुआन । षान षुरसान सु उप्पर ॥
भुष पब्बी पीरोज । धरे सुविहान भुज्ज पर ॥
रे हिंदु दंद असपत्ति अग । को दरिया भुज बर तिरै ॥
तसलीम बिनै साहाब करि । सस्त्र छोरि जिय उब्बरै ॥
छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ रे पब्बी पीरोज सुनि । हूंढिली पिथ पुत्त ॥
जिन गज्जन वै बंधयौ । क्यौं बोलै मति गत्त ॥
छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ पब्बिय षाँ पीरोज । रवन सम्हौ असु नंषिय ॥
दो भरदानी दिष्ट । उभै अंकुरि आरुष्षिय ॥

(१) ए० कृ० को-मुक्कि ।

सधि बान कम्मान । प्रान गुन मुच न धारिय ॥
ठट्ठर लगि चहुआन । वीर मन्नाह उभारिय ॥
प्रथिराज राज सम बान गहि । फटि ठट्ठर सधि मीर सिर ॥
लग पप मीर बाहिर रही । मनु राह सूर अधपत्ति सिर ॥
छ० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ परत पान पीरोज कै । दौरिय पान जिहाज ॥
सैद सेप सीनौर मिलि । रुक्यौ रयनसी राज ॥
छ० ॥ १७७ ॥

यवन सेना का रयनसी को घेरना और बड़े पराक्रम से हथियार करत हुए रयनसी जी का मारा जाना ।

मोतीदाम॥रुक्यौ मिलि भेछ रयन्नह राज । करै मनुसिंघ करी पर गाज
उभो सम रंगन अप्पन एक । लियै दुरजोधन की मनु टेक ॥
छ० ॥ १७८ ॥

जराव को मीर बँध्यौ उतमग । उगै ग्रहनो कि समेर कौ शृंग ॥
झलक्कत ढाम बनी गजगाह । घटा घन मानहु गग प्रवाह ॥
छ० ॥ १७९ ॥

रच्यौ पुल बागो रँग्यौ कसमीर । जन उड्यौ मुत्तिय माल सभीर ॥
पलक्कत सोवन सकर पग्ग । झलक्कत बीच अमोलिक नग्ग ॥
छ० ॥ १८० ॥

दिपै दू बनै तिहि वेर को भूप । कहत बनत न रूप अनूप ॥
घड़ा अवरी बर भोर अनीन । दल प्पर गौरिय बाग सुलीन ॥
छ० ॥ १८१ ॥

जपे मथुरेसर नप्पि वृहास । तरक्कित जानि कि वीर अयास ॥
परी अनचित पलट्टल माथ । टगट्टग लग्गिय उट्ठि न हाथ ॥
छ० ॥ १८२ ॥

गये सब कायर भज्जि समूर । मनो उडि पच्छ पवन्न बघूर ॥
रह्यो रुपि एकल पान जिहाज । जिने भुज मडिय गज्जन लाज ॥
छ० ॥ १८३ ॥

तिनें नषि सायक षंचि कमान। गयौ चुकि बाम भुजा चहुआन
बियो सर षंचि कै नंषत जाम। पहुचिय आय कै अंतक ताम
छं० ॥ १८४ ॥

भरे नग रोस प्रहारिय सेल। तुरंग समेत कियौ धर मेल ॥
बरच्छिय अच्छिय लग्गिय अंग। रह्यौ थगि हेंवर षान दुजंघ ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पर्‌यौ इ रह्यौ धर पंजर जानि। गयौ मनु हंस उडे असमान
चह चह चंबक बज्जत तूर। चल्यौ रिन राज सुरातन पूर ॥
छं० ॥ १८६ ॥

उह्यौ सिर बंबरि मुच्छ सुबंक। रँगे मग मद्द कि वीय मयंक ॥
अद्दम वरन्न भए द्रिग अंत। मनों बड़वागिनि मद्धि धषंत ॥
छं० ॥ १८७ ॥

प्रगट्टिय आनन द्वादस सूर। भृगुट्टिय चट्ठि कपाल करूर ॥
कह्यौ परिवार परिग्गह देषि। बिचारिय जीवन अप्प अलेष ॥
छं० ॥ १८८ ॥

करों कोइ अज्ज बडी अषियात। हनों असपत्ति धरें मन बात ॥
चल्यौ हय हक्कि दिसा गजनेस। रह्यौ रथ षंचि गयन्न दिनेस ॥
छं० ॥ १८९ ॥

कमे सँग अच्छरि झूरन झूल। लिये कर कग्गल चोंसर फूल ॥
हयग्गय मेछ फवज्जिय ठेलि। मनों बिन गेहरि होरिय षेलि ॥
छं० ॥ १९० ॥

उडे रज डंभर अंबर छाय। मनो घन बद्दर पावस आय ॥
चल्यौ गज ऊपर देषि हमीर। छरे किलकार हँकारिय बीर ॥
छं० ॥ १९१ ॥

पुरी नष बाजि धरन्नि धसक्कि। पर्‌यौ सिर भार षनंग कसक्कि ॥
उभै नरनाह महा बलवंत। उभै मन मंडिय भारथ षंति ॥
छं० ॥ १९२ ॥

उभै सिरदार रमाइन केक। उभै मद मोकल आनि अरेकि ॥

उभै इक तांक गुमान अमान । उभै कढि पापन छेह रिसान ।
छ० ॥ १९३ ॥
उभैइ पितान को वैर सँभारि । अनो अनि तोलि उभै तरवारि
कर्‌यौ नग को नग घांव पहिल्ल । गयो कटि दंत भसुंड सुढल्ल ।
छ० ॥ १९४ ॥
सहाव बिनै करि फेरि के घाइ । गयौ कटि कै सिर सभरि राय
परोइ के मुंजि कि डोरि दिलेस । कर्‌यौ रुंडमाल कौ मेरु महेस
छ० ॥ १९५ ॥
उठी रत छिछकमंध उतंग । मनो बल छुट्टिय जावक रंग ॥
बिना सिर्‌पे गपरे महाराज । उन गिय तेग अजब्ब विराज ॥
छ० ॥ १९६ ॥
जहा तह वाहत मद्द दुरद्द । जहां तह मारन मौर मरद्द ॥
जहा तह घायल घाइ धुजंत । जहा तह कायर भाजि लुकंत
छ० ॥ १९७॥
जह तह लोहिन के मचि कीच । जहा तह गिद्ध कलेवि तिन बीच
जहा तहाँ लोथि उलट्ट पुलट्ट । जहा तह कीन सुघट्ट कुघट्ट ॥
छ० ॥ १९८ ॥
जहा तह कालिज फेफर बूक । जहा तह आमिष अंत जँबूक
जहा तह मुंड रुंडब्बड तुंड । जहां तह बांह बगत्तर षंड ॥
छ० ॥ १९९ ॥
जहा तह चौसठि जोगिनि झुंड । जहां तह नारद मंडव तंड
जहां तह अच्छरि छर हमल्ल । जहां तह विद्दवरे भल भल्ल ॥
छ० ॥ २०० ॥
जहां तह लेत करीन की गाल । जहा तह सकर गूथत माल
जहां तह वीर बैताल डकार । जहा तह सिंधु अराग उचार ॥
छ० ॥ २०१ ॥
जहां तहं सार कौ बूर उडाय । जहां तहं दारत ही सुदिपाइ ॥
इसौ हथ वाह वहंत छछौह । हियै चढि कौन करै तह लोह
छ० ॥ २०२ ॥

तबै अप कुप्पि कही सुरतान । करौं किन इल्ल सबें तुरकान' ॥
करिक्करि मेछ कलाप करोर । परी करि अड्ड करीन किकोर ॥
छं० ॥ २०३ ॥

तुबक्क जँवूरति तीरनि मारि । रयन्न कमद्ध धरा पर ढारि ॥
उरा पर दीसत छेक अनेकि । मनो घट रूप घरूल बनेकि ॥
छं० २०४ ॥

कटे नग राज तुरंग समेत । घने कटि धाट मेछायन षेत ॥
करे रवि मंडल अंदर राह । बिराजिय आय कौं बैकुंठ माह ॥
छं० ॥२०५॥

धनिद्धनि जंपत देव विमान । बधावत फूल करंत वषान ॥
रहैम सुरा सुर मान बगात । रहै न सुमेर धराधर सात ॥
छं० ॥ २०६ ॥

जिसौ अप पिथ्थ परट्टिय पट्ट । तिसौ भुजभार निवाहि निपट्ट
सँसार असार में कथ्थ उगारि । भयौ रज रज्जन पाइ लगारि ॥
छं० ॥ २०७ ॥

पराक्रम पार न पाइय सेस । कहां लगि जंपिय चंद कवेस ॥
बजे असुराइन जीति निसान । परे चहुआन फिरी धर आन ॥
छं० ॥ २०८ ॥

लूटो बन संक हयग्गय देस । रजवट्ट रष्षि गयौ रयनेस ॥
छं० ॥ २०९ ॥

रयनसी के मरने पर दिल्ली पर मुसलमानी पञ्जा होना ।

नवित्त ॥ चवर ढारि तजि चवर । नष्षिय षग लागि सुबथ्थ ॥
धर नंषिय चहुआन । पच्छि पारिय सह सथ्थ ॥
भिरि गट्टे चहुआन । बल्लिय कट्टे निरग्गारिय ॥
बर पंचाइन थक्कि । भ्रिग्ग चंपे उरझारिय ॥

(१) ए० कृ० -सुरकान ।

अरि ढारि अच्छरि बरै बाहि बाहि वेहथ्थ बत ॥
ढहि वाज नग्ग बर राज वर । उज्जारे वर मत्त जत ॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ सिर लुट्टत्त सुत्तिय सुवरि । सुट्ठि हयग्गय रोज ॥
जीति वद्दे नीसान नद । कर यौ साहि बर काज ॥
छं० ॥ २११ ॥

घर दिल्ली पतिसाह घर । घर सुट्टै चढि हथ्थ ॥
नवौ नवेरौ थप्पिहै । इह सुविहानी सथ्थ ॥
छं० ॥ २१२ ॥

लगि जोहर भारथ्थ मचि । ग्रस्सै काल मनो जग्ग ॥
दिल्ली घर मेछन गहिय । परिय पराक्रम लग्गि ॥
छं० ॥ २१३ ॥

दिल्ली कब्जे में करके कन्नौज पर मुसलमानी सेना का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ जीति पथस्सै सथ्थ । हथ्थ पुर पच विलग्गौ ॥
सुट्ठि थान पुरसान । पान चहुआन सु अग्गौ ॥
दिसि कनवज कमधज्ज । सज्जि जैचद सु उप्पर ॥
सुनि अवाज भय राज । आज भज्जत नर कुप्पर ॥
इह मेछ मत्त वारुन विरद । जुद्ध जोर पुज्जै न वर ॥
सनमुख्ख सजौं अप्पन सुभर । करौं झार उभ्भार धर ॥
छं० ॥ २१४ ॥

उभय दिवस सोरम । राय जयचद प्रपत्तौ[1] ॥
इत गज्जन वै सेन । धाइ चर पवरि नियत्तौ ॥
उभय चतिय दिन प्रात । मात कालिंदी तट्टह ॥
मिले पग पतिसाह । बहै धर ओन उपट्टह ॥
जुद्ध त जोध दिन सत्त भय । झर रम नन रडरिय ॥

(१) ए० कृ० को०—दिपत्तौ ।

हर रुंड माल गुंथत गहर। रंक जेम रतनं रुरिय॥
छं० ॥ २१५ ॥

असिय लष्ष तोषार । सजड़ पष्षर सायद्दल ॥
सहस हस्थि चवसट्ठि । गरुअ गज्जंत महाबल ॥
पंच कोटि पाइक्क । सुफर पारक्क धनुद्धर ॥
जुध जुधान बर बीर। तोन बंधन सद्दन भर ॥
छत्तीस सहस रन नाइबौ । विहि निम्मान ऐसो कियौ ॥
जैचंद राइ कविचंद कहि । उदधि बुद्धि कौ धर लियो ॥
छं० ॥ २१६ ॥

कहि न ईस कहि इंद । कह न ब्रह्मा सावित्री ॥
गन गंधर्व अपछरा । बत्त नारद्द निरत्ती ॥
कहि न मेर मह महन । मनिष मनषैं को गिलियौ ॥
कहौ उडियन आकास । जलनि कौतें जेलिलियौ ॥
संग्राम मिले सुरनर असुर । अनल पंष दिट्ठौ अरनि ॥
जैचंद राव किहि परि हुअौ । कहि निसंक सचौ धरनि ॥
छं० ॥ २१७ ॥

इस मुसलमानी आक्रमण में जैचन्द का लड़ कर मारा जाना।

इंद्र पष्ष धर लिद्ध । रयन सष्षों असुरायन ॥
दिसि कनवज आवंत । सुन्यौ जैचंद पराइन ॥
सयन सनम्मुष आय । जुद्ध भारथ भर मच्चौ ॥
जित्यौ विनय सहाब। परत धर सिर बर नच्चौ ॥
भगान पान भावी विगति । असिय लष्ष जित्त असुर ॥
जैचद कमध सचह सहस । हनिय लग्गि गय धार धुर ॥
छं० ॥ २१८ ॥

सु सिर पर्यौ रिन भुअन । तेह गिर धरनि उचायौ ॥
गिरधन अपछर लेत । राव चाहत्त न पायौ ॥
गिरिधनि कर हवि छुट्टि । पर्यो गंगा जल भीतर ॥
गंगह लियो उछंग । लैन चाहै सिर संकर ॥

गंगा सुपास लिय चय नयन । हर उछाह किय आप कौ ॥
गल रुंड माल लै सठयौ । वह सुसीस जयचंद कौ ॥
छं० ॥ २१९ ॥

ग्रंथसमाप्ति उपसंहार ।

धनि हिंदू प्रथिराज । जिने रजवह उजारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज । बोल कलि मझ्झ उगारिय ॥
धनि हिंदू प्रथिराज । जेन सुविहानह सध्यौ ॥
बार बार ग्रहि मुक्कि । अंत कालह सर बध्यौ ॥
रनसिंह रयन राजन सुधनि । जिन घर सिर सट्टै दईय ॥
करि सकाय कोय मच्छर मरद । तौ जुग किति वेलिय वईय ॥
छं० ॥ २२० ॥

प्रथम वेद उद्धार । बंभ मछह तन किन्नो ॥
दुतिय बौर बाराह । धरनि उद्धरि जस लिन्नो ॥
कौनारक नभ देस । धरम उद्धरि सुर सप्पिय ॥
कूरम सूर नरेस । हिंद हद उद्धरि रप्पिय ॥
रघुनाथ चरित हनुमंत कंत । भूप भोज उद्धरिय जिम ॥
प्रथिराज सुजस कवि चंद कित्त । चंद नंद उद्धरिय इम ॥
छं० ॥ २२१ ॥

पद्धरी ॥ नवरस विलास रासौ विराज । एकेक भाष अनेक काज ॥
जो सुनय विविध रासौ विवेक । गुन अनंत सिद्धि पावहि अनेक
छं० ॥ २२२ ॥

सूरत्त दान विग्यान मौन । नाटक्क गेय विद्या विनान ॥
चातुरी भेद बचनह विलास । गति गरम नरम रस हास रास
छं० ॥ २२३ ॥

गति साम दान भर दंड भेद । सब काम धाम निब्बान वेद ॥
वाचंत कवित[1] हारंत गोप[1] । बर बिनय बिद्धि बुभ्भय सदोष ।
छं० ॥ २२४ ॥

(१) ए० क० को०—कारन्त गोप ।

विधि सरूच सार रिन बहन भार। गतिभान दान निरवानकार
चौबरन धरम कारन विवेक। रस भाय भेय विग्यान नेक॥
छं०॥ २२५॥

पौरान सकल कथ अष्टथ भोय। भारथ्थ अष्टथ वे बन्नताय॥
कलि काव्य रस्स प्राहास रंग। बंधनिय छंद बुझ्झै सुअंग॥
छं०॥ २२६॥

विव्वेकदान बिचार चार। गति वाम वाम रति रंग भार॥
नव सपत कला विचार वेद। विग्यान थान चौरासि भेद॥
छं०॥ २२७॥

गति पंच अरथ विग्यान मान। उप्पमा जेव मति अंग थान॥
रितु रस रसानि वेलास गत्ति। मंतन सुमंत आभासि अत्ति॥
छं०॥ २२८॥

भोगवन पहुमिति विचार विद्धि। अरु इष्ट देव उप्पाय सिद्धि॥
गंधर्व्व कला संगीत सार। पिंगलह भेद लघु गुरु प्रचार॥
छं०॥ २२९॥

पित मात पत्ति परिचरत भेय। राजंग राज राजंत जेय॥
परब्रह्म ध्यान उद्धार सार। विधिभगति विस्व तारंन पार॥
छं०॥ २३०॥

आधुनह वेद हय गय विनान। ग्रह गत्ति मत्ति जोतिग्ग थान॥
कलि सार सार बुझ्झहि विचार। संभलहि भूप रासौ सुधार॥
छं०॥ २३१॥

पावहि सुअरथ अरु धग्ग काम। निरमान मोष पावहि सुधाम॥
आवरत चारि जौ सुनहि राज। पावहि सुचित्त बंछहि सुकाज॥
छं०॥ २३२॥

असुमेध जग्य सम फल प्रमान। तुलदान प्रान ब्रह्मंड वान॥
वद्रिका जात फल जगन्नाथ। रामेस सेत पावै समाथ॥
छं०॥ २३३॥

कासीय महाफल माथुरात। अवगाह पुन्य पावै सनात॥
उज्जैनि तिष्थ माया सुकांति। द्वारिका अयोध्या सुअन भांति॥
छं०॥ २३४॥

ए तिथ्थ मोछद्दायक कहत । ते पुरस सुनत रासो लहत ॥
हर सिद्ध मात तुलजा विख्यात । कसमीर कँगुर हिँगुलाज मात
छं० ॥ २३५ ॥

ज्वाला अनेक मुष कुंड अेह । परस्यौं प्रमान फल लहै तेह ॥
मन वाच क्रम सुनहौ सुराज । पावहि सुचित्त अभिलाष काज ॥
छं० ॥२३६॥

प्रतिपदा चंद दिपि सुरह गाय । नौलिक जटत नौलहिल पाइ
पयपान मैद ज्यौं हंस जानि । सभलै राजराजन सुजानि ॥
छं० ॥ २३७ ॥

इह ग्रंथ उदधि लहरीत रंग । बाचत सुनत उपजै सुरंग ॥
नन सुनै मूढ मतिमंद कान । आलसू अधिक निद्रा विराम ॥
छं० ॥ २३८ ॥

लालचि लछन गुन हीन देह । नन सुनै कान रासौ सुतेह ॥
सभलै सूर दातार रास । कवियन विलास पूरवन आस ॥
छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ प्रथीराज गुन सुनत । होय आनन्द सकल मन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । करय संग्राम स्यार रन ॥
प्रथीराज गुन सुनत । क्रयन कपटय ते खुलय ॥
प्रथीराज गुन सुनत । हरषि गुगौ सिर डुलय ॥
रासो रसाल नवरस सरस । आजानौ जानप लहै ॥
निसटौ गरिष्ट साहस करै । सुनहु सत्ति सरसति कहै ॥
छं० ॥ २४० ॥

सुनि रासौ सुर राय । रिझ्झ ब्रह्मा हरि सकर ॥
उमया धरि हरि भाव । सुनिय नारद गुनकर ॥
जु कछु तत्त गुर ग्यान । दान मानन मन रंजन ॥
सस्त्र कला साधन । मानि अरियन दल भंजन ॥
सब रस विचार विद्या भुअन । मंत्र जंत्र साधन सुतन ॥
कवि चंद छंद बंधिय जुगति । पढ़त गुनत पावै सुमति ॥
छं० ॥ २४१ ॥

रामोइन भारथ्थ । ग्रंथ अठ दसै प्रमानं ॥
सुनत सिद्धि घर रिद्धि । होय रासौ सनमानं ॥
अठ सठ तीरथ न्हाय । गाय गुन गोविंद गानं ॥
ता सम वरि श्रोतान । लिषत बाचत विधि जानं ॥
गंगा सनान दिन प्रति लहय । जे नरिंद रासो सुनय ॥
डाकिनिय भूत बेताल छल । रोग सोग दोषन कुनय ॥
छं० ॥ २४२ ॥

मंत्र सकति या मंझ । धूप अष्षर उष्षेवय ॥
सुनै श्रवन गुन एह । दान श्रद्धा करि देवय ॥
एक चित्त करि भाव । भाव या मझ्झह पावय ॥
अरथहीन ब्रनहीन । हीन छंदह नन गावय ॥
पिंगल प्रमान बहु भांति जुति । रस रूपक नव नव सरस ॥
बरदाय माय रसना रसिक । परचि प्रीति पावै सुरस ॥
छं० ॥ २४३ ॥

चिरजीवहु श्रोतान । काम मन वांछित पूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान । दुष्ष आपद भय चूरय ॥
चिरजीवहु श्रोतान । पुत्र परिवार सहेतौ ॥
चिरजीवहु श्रोतान । दान कवियन जन देतौ ॥
है पाट घाट भंडार भरि । आस सास सफली फलय ॥
धरि ध्यान जोग साधय जुगति । जरा मृत्य तन ना कलय ॥
छं० ॥ २४४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासके राजकुँअर श्री रेनसी अभिषेक दिल्ली नगर वासे गोरी सहाब गौरी धरनम्, बिनय सहाब पातिसाह तखत धरनम्, परस्पर युद्ध जुरनम्नम्, दिल्ली जोहर जरनम, राजा, श्रीरेनसी मरणम्, राजा जैचन्द गंगा सरनम् नाम अड़सठवों प्रस्ताव संपूरणम् ॥६८॥

अथ महोबा समयो लिख्यते ।

चौहान और चँदेल कुल में कैसे झगड़ा पड़ा इसकी सूचना ।

दूहा । कहै चद गुन छद पढि । क्रोध उदगल सोइ ॥
चाहुआन चदेल कुल । कदल उपजन कोइ ॥

छ० ॥ १ ॥

विवाह के अनन्तर सुलतान को कैद करके पृथ्वीराज की सेना का महोबा में पहुँचना ।

समुद सिपर गढ परनि नृप । पकरि साहि लिय सग ।
चलि बहीर आई महुब । चढिव रग वहु, रग ॥

छ० ॥ २ ॥

समुद्र सिषरगढ से विवाह करके चलने पर सुलतान का बीच में आ घेरना, उसे जीत कर पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर चलना ।

कवित्त । समद सिपरि गढ परनि । राज दिल्ली दिसि चल्लिव ॥
पातिसाह सुनि पवरि । धाइ बिचही रनि मल्लिव ॥
सकल सिमिटि सामत । चद कैमास बुद्धिवर ।
लहिव जुद्ध चहुआन । गहिव प्रिथीराज साहि कर ॥
रजपुत छडि पचीस रन । लूटि जवन सेना घनिय ॥
पठ्ठान सात हज्जार पर । जीति चल्यौ दिल्ली धनिय ॥

छं० ॥ ३ ॥

* इस समय की घटना का सम्बन्ध तो पृथ्वीराज के जीवनचरित से अवश्य है पर अने
ों ने इस कथा के वर्णन में अपनी कवित्व शक्ति दिखाई है पर नाम अपना न देकर च
ई ही का दिया है । इसलिये इस समय के चन्द की रचना होने में स देह है अतएव यह अ
या जाता है ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना, कुछ घायल सरदारों का रास्ता भूल कर महोबे में आपहुँचना, वहां भारी वर्षा होनी, सरदारों का विकल होकर परमाल राजा के बाग में छाया में ठहरना, मालियों का रोकना, बातों बात बढ जाने पर मालियों का गाली दे बैठना, सरदारों का माली को मार गिराना, मालिन का रानी मल्हन देवी के पास आकर सब वृत्तांत कहना, रानी का राजा को बुलाकर समाचार सुनाना, राजा का अपने वीरों को इन रागों के पकड़लाने की आज्ञा देना।

पद्धरी। वरनी विवाह चहुआन रान। व्यास बचन जौ करि प्रमान॥
जद्दव गरब्ब भानियौ बीर। कंमोदनीति जीते गहीर॥
छं० ॥ ४ ॥

रन कट्टि पंच सत्तह हजार। जद्दव कमोद दल करि दुसार॥
सुलतान पकरि नृप लियो आप। रुल्लाम ततार मिटि पाइ ताप॥
छं० ॥ ५ ॥

जुग्गिनि पुरेस दिसि रज धाइ। भूली वहीर महोवे सुआइ॥
घाइल कितेक रजपूत संग। दासी सुमंजरी अति उमंग॥
छं० ॥ ६ ॥

पहुंचे सु महवे नगर आइ। बरसियौ मेह बूंदनि अघाइ॥
भए विकल लोग घाइल उताप। उपवाग मांझ चलि गए आप॥
छं० ॥ ७ ॥

जहं महल ठाम उत्तंग नेक। षलभलिय जोध चढि चलिय नेक॥
बरजियौ जाइ मालीन सोइ। बोलियौ बोल अति क्रुद्ध होइ॥
छं० ॥ ८ ॥

गारी सुदीन उत्तंग हथ्थ। विरचियौ बाहि पथ्थर समथ्थ॥
लग्गी सुजाय रजपूत सीस। धायौ सु तेग करि करि वरीस॥
छं० ॥ ९ ॥

दीनी सु सीस दुह्न घालि सोइ। उडि पर्‌यौ मध्य धरि विगरि ह
भइ कूक सुनी परिमाल राज। पट्ठयौ जोध करि हुकुम साज॥
छ० ॥ १० ॥

च देल वैस जागरां सूर। चेरे सुसहस इक मल्हन नूर॥
सौलपी जद्दव सजि अनेक। सजि गहरसार गोहिल अनेक॥
छ ॥ ११ ॥

बाजियौ बनाफर जुद्ध ताइ। हरदास भगेलौ वीर विभाइ॥
आए सु सज्जि द्रवार सोइ। गुहरिय बत्त दरवान दोइ॥
छ० ॥ १२ ॥

रानी मल्हन देही हजूर। गुहरिय बात दरवान दूरि॥
उचे अवास छाजे सु सुद्ध। परिमाल राज बैठे विरुद्ध॥ छ० ॥१३
मालिन पुकारी करि नवीन। परिमाल जुद्ध पर हुकम दीन॥
छ० ॥ १४ ॥

परिमाल देव की आज्ञा से सरदारों को पकड़ने के लिये सेना का आना, घोर युद्ध होना, परिमाल की तीन हजार सेना का मारा जाना, पृथ्वीराज के तीस वीरों को मारा जाना और सत्रह का घायल होना, यह समाचार पाकर परिमाल देव का क्रोध कर अपने प्रसिद्ध बीर ऊदल को बुलाकर उन घायलों के सिर काट लाने की आज्ञा देना, ऊदल का कहना कि यह घायलों को मारना वीर धर्म के विरुद्ध है, राजा का कुछ भी न सुनना।

दूहा ॥ पकरि वाग रजपूत सब। क्रोध जानि परिमाल॥
सिर लग्गो असमान को। पग लग्गौ पायाल॥ छ० ॥ १५ ॥
तोदाम ॥ किये परिमाल सुहुक्कम गाजि। चले सब रावत जग पै साजि॥
च देल बनाफर मुष्य सुहूर। वघेलरु गोहिल लोह नूर॥
छ० ॥ १६ ॥

चले भर जागर मल्हन सोइ । सजे भरभद्दव भद्दव होइ ॥
निवाजिय वैस नरेस हुकम्म । सनम्मुष सुक्क सु वक्क रुकम्म ॥
छं० ॥ १७ ॥

चले हरदास वधेल बलिष्ट । पचारै सक्क उचारै इष्ट ॥
सुनौ रजपूतन बात कुढंग । बंधे वपु घाव सुधाव सुअंग ॥
छं० ॥ १८ ॥

कहैं रजपूत सुनौ जब धर । सुनो परिमाल करौ जिन वैर ॥
सुनौ चहुआन न छंडहि दाव । करौ मति अब्ब चँदेल उपाव ॥
छं० ॥ १९ ॥

करौ प्रिथिराज सौं काज विरुद्ध । भजौ जन षेंत जुरौ जब जुद्ध ॥
इसौ सुनि वानि कियें रत नैन । कहे नृप मारहु मारहु बैन ॥
छं० ॥ २० ॥

चले सब साजि चँदेल की फौज । मिलै रजपूत सनम्मुष चौज ।
मिली जब दिष्ट सौं दिष्ट करूर । जुरे रजपूत भरद्द भरूर ॥
छं० ॥ २१ ॥

मिले मुष आइ मुछाल जवान । उछालत आवत क्रुद्ध कमान ॥
लगैं सर साइक छत्तिय आइ । किधौं बिष आसिय पासिय पाइ ॥
छं० ॥ २२ ॥

लगैं उर आनि सकत्तिय सेल्ह । दुहौ कर वीर इहं विधि षेल ॥
कटक्कत घाइल षग्गन काटि । षटक्कति सेलनि षेलनि राट ॥
छं० ॥ २३ ॥

गटक्कति चोटिय गिद्धनि दौरि । घटक्किति घाइल दाइल मौर ॥
चटक्कत चौप वहै करमाल । नटक्कत नाचइ घाइ मुछाल ॥
छं० ॥ २४ ॥

छटक्कत खूर धरप्पर आइ । जटक्कत गुंथय जुग्गिय धाइ ॥
भटक्कत इक्कन कौं गहि एक । नटक्कत लुट्टय कुट्टय मेक ॥
छं० ॥ २५ ॥

ठठक्कत कोइर देषिव युद्ध । उडक्कत डौरुय वाजि विरुद्ध ॥
ढढुक्कय ढुक्कय रुक्कय पाय । रनंकत रुंड षनंकत काय ॥
छं० ॥ २६ ॥

तथेई नाचत बीर तमक्कि । थरथ्थर काइर जाइ रमक्कि ॥
दरधर दौरिय वीर दुरंत । धरहर चालि भयानक रत्त ।
छ० ॥ २७ ॥

नरहर नूर करूर लधाइ । परप्पर फट्टत जुट्टत काइ ॥
फरप्पर फौज पुरप्पुर मार । वरप्पर बाजत घाइन तार ॥
छ० ॥ २८ ॥

भरभ्भर भाजिव सैन चँदेल । मरभ्भर सुद्धिव विद्धिव षेल ॥
वरधर छेदिव धाइल धाइ । लरै प्रिथीराज कि सैन सुभाइ ॥
छ० ॥ २९ ॥

तबै उमरावन पाइव चाल । भजी सब फौज लपी परिमाल ॥
हज्जार सुतीन परे धर मद्धि । भजी परिमाल की फौज प्रसिद्ध ॥
छ० ॥ ३० ॥

कटे रन धाइल तीसक सोइ । रुपे रन वीसक पडव होइ ॥
गह्यौ गुन मजरि पानिय धाइ । उठावति प्यावति किए सुचाइ ॥
छ० ॥ ३१ ॥

लगे सर सेल्ह सुसचह गात । करी गुन मजरी जुग्गिनि बात ॥
निवाजिय वैस च देल रतन्न । बली हरदोस से कीन पत्तन्न ॥
छ० ॥ ३२ ॥

तबै नृप ऊदिल लीन बुलाइ । सुनौ तब कान पयादेउ आइ ॥
पठाइव मल्हन दे तरवारि । रहै नहि घाइल लीजियै मारि ॥
छ० ॥ ३३ ॥

कहै तब उदिल बैन प्रसिद्ध । सुनौ नृप ए रजपूत अवद्ध ॥
नहीं द्रढ राजन कौ भ्रम ताफ । करौ इनकी अब चुक सुमाफ ।
छ० ॥ ३४ ॥

कहै परिमाल सुबैन नपीन । हनी इन फौज हजार सु तीन ॥
हनौ इन कारन उद्दलसोइ । तबै द्रग चैन लहै मम दोइ ॥
छ० ॥ ३५ ॥

ऊदल का फिर कहना कि एक तो धायल को मारना पा
है दूसरे ये पृथ्वीराज के दूत हैं उनसे विरोध न कीजिए
और इन लोगों को जीव दान दीजिए।

कवित्त ॥ तब उदिल्ल उच्चरिग। सुनहु परिमाल अरज इक ॥
धाइल कह्यव अवद्ध। कहिय परिमाल व्यास अक ॥
होइ चोप चहुआन। रोस सामंत सभारिय ॥
अतुल तेज प्रिथिराज। करौं विनती हित कारिय ॥
चंदेल राइ मानहु अरज। अरथ सरै सोइ कीजिये ॥
रजपूत दूत हनिये नहीं। जीव दान नृप दीजिये ॥
छं० ॥ ३६ ॥

ऊदल के शत्रु महला और भोपति ने राजा के कान भ
कि ऊदल जी पुराता है और कुछ बात नहीं है।

चौपाई ॥ सुनि ऊदिल की बानी सोई। महला भोपति बोले दोई ॥
हम दरबार भये दो दंडय। रजपूतन परिवारन मंडिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

राजा का महला और भोपति की बात मानकर ऊदल क
आज्ञा देना कि तुम तुरंत जाकर धायलों को मारो।

दूहा ॥ महला भूपति की सुनीव। रिस पाइव परिमाल ॥
दोरहु उदिल्ल मारिये। घाइल घाइ विहाल ॥
छं० ॥ ३८ ॥

आज्ञा मानकर ऊदल का बाग को जा घेरना और राजपूत
को ललकारना, फिर घोर युद्ध होना और कनक चौहान
की चोट से ऊदल का मूर्छित होना।

भुजंगी ॥ सुनी बत्त चंदेल भूपत्ति भाषी। चल्यौ वेगि उद्धाइ है बैन साषी
गहौ तेग हथ्थं सुमथ्थं सधावौ। लहो बाग षग्गं तमासो दिषावं
छं० ॥ ३९ ॥

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4-22

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B A

With the assistance of Kunwar Kanhaya Ju

CANTO LXIX

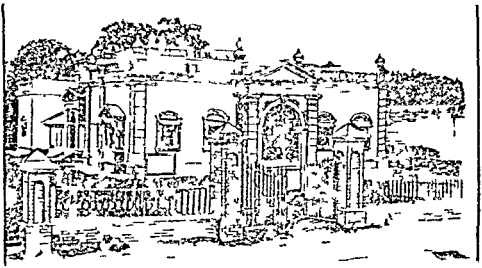

महाकवि चंद वरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६९

PRINTED BY PT BAIJNATH JIJJA MANAGER AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA, BENARES

1913

सूचीपत्र ।

o

महोबा खंड	....	...	पृष्ठ २५१३ से	२६१५ तक
रासोसार	....	....	,, ४५५ ,,	४७३ ,,
छठे भाग का सूचीपत्र आदि			१ ,,	१४

o

निवेदन ।

इस भाग के साथ यह ग्रंथ और इसका सारांश समाप्त होता है। अब केवल इसकी भूमिका का प्रकाशित होना बाकी है। इसे लिखने का भार पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने अपने ऊपर लिया था पर गत दिसंबर मास में उनका शोकजनक मृत्यु के कारण यह काम न होसका। इधर ६ महीने से अधिक हुआ कि मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। अतएव मैं भी अभी तक इस काम में हाथ नहीं लगा सका हूं। ईश्वर की अनुकंपा से स्वास्थ्य ठीक होने पर इस काम में हाथ लगाने का संकल्प है और उसे यथासाध्य शीघ्र समाप्त करके रासो के प्रेमियों की सेवा में उपस्थित करने की इच्छा है—आगे उस लीलामय की लीला वही जाने—

२५-७-१३

श्यामसुन्दर दास ।

दियो राज फुरमान डेरा सिधारे। किये कवच अग निहग हकारे।
दिये पच हज्जार सथ्थ चंदेल। चले वाग काजै समाजै सुझेल।
छ० ॥ ४० ॥

निकट्ट सुवाग वचन्न पुकारे। कढौ वेगि रजपूत प्रिथिराज वारे॥
सुनौ कन्ह वानी गुमानी चलाये। अभग वली वाहु जग मिलायें
छ० ॥ ४१ ॥

करै पड पड भसुडैनि भारै। हथ्थार धरै वीर जदल हकारे॥
सुनौ नद जस राज के लारवालौ। प्रिथीराज कौ लौन पग्गा उजालै
छ० ॥ ४२ ॥

इहै बोलि वानी दल मध्य आयौ। चिरचे वली वाहु अस्व चलायें
चलावत स्रुधी वंदूकै विरत्ती। परै फुट्टि न्यारी उडै लागि छत्तं
छ० ॥ ४३ ॥

वर तीर मारे वरन्न वनके। उर फुटि सन्नाह धरती पनके॥
लगौ सेल छत्तौ समती भनारे। मनो जावक माठ कौनै पनारे॥
छ० ॥ ४४ ॥

वहै तेग कध करै सीस न्यारे। परे टूटि तरबूज धरती पनारे।
लगे हीक जमदाढ पीक अटारी। किधौ दुलहनी हथ्थ कट्टे कटारी
छ० ॥ ४५ ॥

जटारी धर रजक वार नावै। मनों सर्पिनी तक्र पूछ बनावै॥
सिर खूर प्रिथिराज को नौन कीजै। तजें रजक जौध वाथौन लीजै
छ० ॥ ४६ ॥

भये लथ्थ वथ्थ दुहौं सेन वारे। किधौं आमिष काज जुट्टे सुनारे
लगे पजर पजर वार कारे। भुजा जारकै तोर मुक्की उरारे॥
छ० ॥ ४७ ॥

भगी फौज चंदेल की जद्द जानी। लयौ नैन परिमाल मस्सहन्न रानी
चल्यौ सैन रन तै पिल्यौ जद्द भारी। गह्यौ सेल हथ्थ सुमेल पचारी।
छ० ॥ ४८ ॥

उतै कनक चहुआन रजपूत धायौ। वर वीर उदल्ल पै कूदि आयौ

लग्यो कनक चहुआन उदिल्ल भारी। हन्यौ सेल छत्री सुवत्ती प्रचारी।
छं० ॥ ४९ ॥

हन्यौ उद्द नै अंध धरती मिलायौ। कियौ जुद्ध चहुआन रजपूत चायं
लग्यौ हीक उदिल्ल को आप नेजां। पर्यौ फूटि चहुआन धर अंतसेजा
छं० ॥ ५० ॥

लगी तेग कनकेस की वंकवारो। भयौ मूरछित उदिल धरनीन भारो॥
छं० ॥ ५१ ॥

चंदेल के बहुत वीरों का मारा जाना और पृथ्वीराज के बीस घायल सरदारों का कनक चौहान के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ कटे षेत चंदेल सूर। इक सहस अमानह।
गिरे बनाफर साठ। इक उद्दल परमानह॥
परि परिहार पचास। परे चेरा सत सोई।
गहरवार सत दोइ। खोइ अंतह सिर होई॥
चहुआन परे घाइल कनक। वीस और सँग पग्गई॥
कविचंद कहत परिमाल सौ। प्रिथीराज सौं लग्गई॥
छं० ॥ ५२ ॥

दूहा ॥ परे बीस घाइल समर। और कनक चहुआन॥
गिरे जद्द रन मूरछा। कटि दासी वपुयान॥ छं० ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥ कटि दासी वपुयान। लषे परिमाल अवासह॥
सहस एक चंदेल। सेन षेल्हैं करितासह॥
लगी राइ परि माल। चाइ प्रिथिराज सु तुग्गार।
कहैं चंद वरदाय। वीस घाइल परि सग्गार॥
सनमद्ध देह जथ्थप परनि। पर घाइल महुवे गवन।
दौनौ बिरुद्ध चहुआन सौं। भविषि वात मिट्टिहि कवन॥
छं० ॥ ५४ ॥

चौपाई ॥ परे बीस घाइल रजपूतह। सहस एक चंदेलहि धूतह॥
गहरवार सत दोइ सुभानौ। साठि इक्यौबन सो अति जानौ॥
छं० ॥ ५५ ॥

यह समाचार सुनकर कि चंदेलों ने मेरे घायल वीरों को मारा पृथ्वीराज को क्रोध हुआ।

दूहा ॥ कहै प्रिथ्थु कानन सुनौ । घाइल हनत सुजान ॥
चाहुआन चंदेल सौ । कलि जगौ अति मान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह चौहान को बुलाना और सब सामंतों को इकट्ठा करके यह समाचार कह कर परामर्श करना।

कवित्त ॥ सुनिय वचन चहुआन । करिय चंदेल विरुद्धह ॥
हन धाइल विन चूक । और दासी तिन सथ्थह ॥
सुनौ कन्ह कैमास । सुनौ जादौ रा जाम ॥
सुनौ चंद पुंडीर । सुनौ गुज्जर रा राम ॥
चावंड राइ सुनियौ श्रवन । सलप पजून विचारियव ॥
सजम्म राइ निहुर सुनौ । तत्त सुमत्त विचारियव ॥
छं० ॥ ५७ ॥

सामंतों का महोबे पर चढाई करने और परिमाल देव को मार गिराने की सलाह देना, पृथ्वीराज का शुभ मुहूर्त दिखलाकर कूच करना और पहिले दिन बाग में डेरा देना।

गाथा ॥ उच्चर बधेल लष्षन समथ्थ । मनियौ देस महवौ सुहथ्थ ॥
उच्चरिय वत्त चहुआन कन्ह । भजिये भूप महुवौ सुयन्न ॥
छं० ॥ ५८ ॥
चावंड बोलि विरदालि वंक । धारहू टेक मारहु निसंक ॥
बुल्लियौ चंद पुंडीर वीर । पक्करि नरेस परिमाल धीर ॥
छं० ॥ ५९ ॥
सज्जिय राइ बोलिव विरत्त । कट्टिये भूप चढिये सुरत्त ॥
सारंग बोलि वानी विराट । कट्टिये माल परिमाल थाट ॥
छं० ॥ ६० ॥
सुनि मत्त गुमद निहुरि नरेस । मारिये वेस महुवौ सुदेस ॥

बोल्यौ सुजैत मतनेस सुद्ध । कीजिय जु वेगि चहुआन जुद्ध ॥
छं० ॥ ६१ ॥

अचलेस बोलि भट्टी सुरद्ध । भौंहा चँदेल बुल्लिय विरुद्ध ॥
दाहिय सुदेस चंदेल हीर । गोइंद बोलि रावत्त वीर ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कीजिये राज परिमाल साज । कट्टिए वीर चढिए समाज ॥
हहसो सु सांपुला कहिय सोइ । चढ्ढिये राइ अति क्रोध होइ ॥
छं० ॥ ६३ ॥

सामंत सूर अति विरत होइ । थप्पये मत्त कयमास सोइ ॥
दाहिमा बोलि अग्गै नरेस । चितंयौ मत्त भरसू धनेस ॥
छं० ॥ ६४ ॥

जैचंद करिय ऊपर चँदेल । किजिये मत सविधान बेल ॥
कनवज्ज और महुवौ सुवेस । भंजिये भूप नृप विनय देस ॥
छं० ॥ ६५ ॥

थप्पये मत्त चहुआन सुद्ध । धरिये परम्म चंदेल जुद्ध ॥
बुल्लाइ चंद बरदाइ सोइ । भव भवषि बात तिह अगम होइ ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बुल्लाय राम गुरराय राज । कढ्ढिये महूरत बेग साज ॥
रचि कुंड मुंड सुचि होम सार । साकिल्ल कीन भारन विचार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

बनजाय निमष सिवदास चाढि । उत कुंभलान काढीय काढि ॥
अहि अरत माल जपि रुंडमाल । त्रियलोक विजय भुव मंडिपाल
छं० ॥ ६८ ॥

केतगी पुहप्प हर पर चढाइ । कांसेक फूल हित करि चढाइ ॥
चक्कोर आप नृप दरस दीन । षंजन सिषंड वपु प्रसन कीन ॥
छं० ॥ ६९ ॥

रवि जोग पुहप तिय थान चंद । पंचमौ सूर आनंद कंद ॥
सातमौ सुक्र दस गुरु जान । नौमौ सुबुद्ध बल अधिक पान ॥
छं० ॥ ७० ॥

तीसरौ सनीचर छठौ केत। पचमौ भौम अरि दहन नेत ॥
ग्यारहो राहु वल अति अनद। पारथ्य जेमि वल चढय द्वद ॥
छ० ॥ ७१ ॥

कीनौ मुकाम नृप वाग आय। सुचौय वस हेमर मगाय॥
छ० ॥ ७२ ॥

रात को वहां रहकर कर घडी रात रहे उठ नित्य क्रिया कर सब सरदारों को पृथ्वी राज ने बुलाया ।

कवित्त ॥ गैर महल प्रिथीराज। सपौ सब कारन दिन्नव ॥
कुसुम पटा सिर पाग। लाग कद्रप रस किन्नव ॥
पहर निसा रहि जागि। सुकीन क्रिया कुम अगह ॥
सौप दीन सुदरिय। चीर कीनौ वपु जगह ॥
कयमास बोलि अग्गौ लियव। दीरघ नाद वजाइ यव ॥
चहुवान कन्ह नृप राम गुरु। सब सामत सुहाइव ॥
छ० ॥ ७३ ॥

सब सरदारों को इकट्ठा करके सभों की सवारी के लिये घोड़े बाँटना और कूच की तयारी करना।

हनुफाल ॥ नृप जग वम्म कराय। कयमास अग्ग बुलाय ॥
चहुआन कन्हर चद। गुरु राज आनँद कद ॥
छ० ॥ ७४ ॥

साहनी सर्व हिय साज। विलहना वटन राज ॥
हय मोर कन्हर दीन। ऐराक वस नवीन ॥
छ० ॥ ७५ ॥

सिरताज आरब सुद्ध। कयमास दीन विवुद्ध ॥
हयराज चावँड कज्ज। पधार उपजिव मज्ज ॥
छ० ॥ ७६ ॥

हय रतन चद पुडीर। पज्जून सिह मर हीर ॥
हय मुकट गोइँद राज। मान्निक वाज समाज ॥
छ० ॥ ७७ ॥

हय सूर नरसिंध दीन । तुरकी सुकोइ कहीन ॥
हंस राज जैत पमार । लट्टिया सुवेगिन मार ॥
छं० ॥ ७८ ॥

मनहार निंडुर लाइ । अस कहा धर उपजाइ ॥
है तेज रूप सुरज्ज । दिय राज देवन कज्ज ॥
छं० ॥ ७९ ॥

हंजिया सहि मतनेस । वड़ गुज्जरं कनकेस ॥
तूरान के अस दून । समपियौ राय पज्जून ॥
छं० ॥ ८० ॥

बगसी मलेसी काज । समप्पियौ मानिक वाज ॥
अश्व कुसम अरि दल ढेल । विलहना भौंह चंदेल ॥
छं० ॥ ८१ ॥

चहुआन हरि पद काज । समप्पियो मोतिय बाज ॥
सह सिंह हेमर लीन । अचलेस कारन दीन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

सुरषा सुसनमुष सूर । दिय अलह कारन तूर ॥
नवलेस को हय दीन । नृप हेम सरभरि लीन ॥
छं० ॥ ८३ ॥

हाहुलिय कारनि हीर । ताजी सुतेज गहीर ॥
हम्मीर काजै हंस । उपज्जियौ सुतुरकी वंस ॥
छं० ॥ ८४ ॥

गम्भीर काज तुरंग । रेसमी रंग सुरंग ॥
साषुल सहस मल काज । दिए धुरी राज सुवाज ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सावंत और कुलीन । अन्नेक हयवर लीन ॥
मग्गाम पील नरिंद । वकसीस कीन सुचंद ॥
छं० ॥ ८६ ॥

गुरराय कारन कीन । दोय सहस हेमर दीन ॥
मग्गाय पाट सिगार । मदगलति गति जिमि मार ॥
छं० ॥ ८७ ॥

जत्त ग गिरवर अ ग । मनु सिषर काजर र ग ॥
सिर चरचि लाल सिँदूर । मनु तडित घन मैं पूर ॥
छं० ॥ ८८॥

असवार है प्रिथिराज । कयमास स ग समाज ॥
ता समय धू धुव पच्छ । चौकीर देवन अच्छ ॥
छ० ॥ ८९ ॥

सनमुष्य सारद सद । अद्द जीवनू फन मद ॥
जा सीस बैठिव देवि । जलजात पजन सेवि ॥
छ० ९० ॥

कग दपिन ऊचौ पाउ । मुप सै मलो भँप चाउ ॥
जल मांझ चकवन मिलि । सज करिय हित अति केलि ॥
छ० ॥ ९१ ॥

भए सगुन आनँद कद । हँसि गठि वधिय चद ॥
छं० ॥ ९२ ॥

धूमधाम से चंदेल को जीतने के लिये पृथ्वीराज का कूच करना ।

दूहा ॥ चलिव साजि सम्हरिधनिय । सामँत सूर सकज्ज ॥
ब्यौर नयन चदेल को । लोपिय सागर लज्ज ॥
छ० ॥ ९३ ॥

बीस हज़ार वीरों के साथ पृथ्वीराज का कूच करना। सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ चढिव राज चहुआन । लीन सामत सूर वर ॥
अतुल तेज बल अतुल । सतुल सुर धरम महावर ॥
बीस सहस सब सग । अ ग कग्गल कसि भारिव ॥
चाहुआन, राठौर । गौर, कूरम, वडवारिव ॥
गहलौत, बघेलौ, वग्गरिय । बडगुज्जर आदिक मिलव ॥
तौमर, पहार, पौंची, मलहन । दाहि पाम हाडा चलिव ॥
छ० ॥ ९४ ॥

मोतीदाम ॥ चल्यौ प्रिथिराज सुसज्जिय सेन । सजै सब सँामत सूर सतेन

सजैं चहुआन सुकन्ह समथ्थ । सजै कछवाह सु पज्जुग सथ्थ ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सजे सँग चालुक सारँग देव । सजे सकवार सुलप्पन पैव ॥
सजैं सँग दाहिम चावँड सूर । सजे कयमास लिये सुघ नूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

सजे सकमधुआ सु निहुर राव । सजे वर संग सुकित्तिव चाव ॥
सजे सँग भौंह चंदेल सुधीर । सजे अंचलेस सु भट्टिय वीर ॥
छं० ॥ ९७ ॥

सजे परिहार सुअल्ह कुँवार । सजे सह साषुल साभँत लार ॥
सजे सुवघेलय लाषन लाय । सजे चहुआन सु संजमराय ॥
छं० ॥ ९८ ॥

सजे अतिताइय सूर सतन्न । सजे सँगहाहुल राव रतन्न ॥
सजे सँग गंभिर हाडहठाल । सजे भरजद्द हमीर सुचाल ॥
छं० ॥ ९९ ॥

सजे सँग चंद पुँडीर मरद्द । सजे सँग गौरस गाहिल हद्द ॥
सजे हरिचंद मलैसिव हद्द । सजे सँग नाहर राय समद्द ॥
छं० ॥ १०० ॥

सजे परसंग सुमल्हन देव । सजे सँग माल विसाल सुयेव ॥
सजे सँग जादव जाम मरद्द । सजे गहलौत सगोयँद हद्द ॥
छं० ॥ १०१ ॥

सगे सँग बुद्धय राय पगौर । सजे बिडराज सुषेत षँगार ॥
सजे सँग बग्गर सादुल सोइ । सजे सँग भाल चंदेल सुजोइ ॥
छं० ॥ १०२ ॥

सजे सँग भट्टिय भान गहीर । सजे सँग सूर रठौर सुवीर ॥
सजे निरवान सुबीर भवाह । सजे सँग वीर प्रसन्न अथाह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

सजे परिहार सुपीय मरद्द । सजे भर भीम जँघाल सुहद्द ॥
सजे सँग मोरिय सारँग सूर । सजे सँग तेजल डोड करूर ॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजे बलिभद्र सुमल्ल सर्दस । खलभ्भल पूरन मल्ल महेस ॥
सजे सँग धाधुल राव परम्म । सज्यौ सग रावत राम गुरम्म ॥
छ० ॥ १०५ ॥

लिये सग सावँत सूर सपन्न । किए जुध चाव उपाव मगन्न ॥
चले दर कूच किये चहुआन । चँदेलन ऊपर क्रोध निदान ॥
छ० ॥ १०६ ॥

भजे भुमिया निज छाडिकै देस । बसै वन मदिर कदर भेस ॥
चले मगल्लद सुघट्ट रु वाट । पिले दल सावँत दारुन ठाट ॥
छ० ॥ १०७ ॥

सुनौ परिमाल कौ थानव ताम । सिरस्सव कोपि दयो बड़ ठाम ॥
छ० ॥ १०८ ॥

ीराज की सेना की चढाई का समाचार परिमाल देव को नेलना, परिमाल देव का अपने सब सरदारों को इकट्ठा करके सलाह करना । महला भोपति की चुगली से आल्हा और ऊदल का अलग होना ।

त्त ॥ मलिब्बान सुनिपत्त । मत्त बजरग उपाइव ॥
पौथौरा पा धरै । सैन चौरै सजि आइव ॥
नही आल्हन ऊदल । करहि उप्पर भर सगह ॥
महला भोपति चुगल । चारि परिहार सुअग्गह ॥
अरिसि घ बोलि नरसि घ । विर सिघ मत्त सुलिज्जियव ॥
जयसि घ सूर बधव बली । मिली अनी किहि किज्जियव ॥
छ० ॥ १०९ ॥

ाई ॥ मलिबान अरिसि घ बुलायव । नरसि घ हरौसिघ सब आयव ॥
जयसिघ बोलि कीयौ मप गट्टव । प्रिथीय राज जुद्ध करि विट्टव ॥
छ० ॥ ११० ॥

रेमाल देव की सेना का तयारी करना, पृथ्वीराज और परिमाल देव की सेना का सामना होना, घोर युद्ध होना,

पृथ्वीराज के सरदारों का परिमाल देव के बड़े बड़े सरदारों को मार गिराना ।

भुजंगी ॥ सुनी मल्लिषानं करन जुद्ध मंडे । अरीसिंध विरसिंध नरसिंध दंडे
सजे अंग जयसिंघ भाई सुपंचौ । करैं नौन परिमाल कौ आज संचौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

सहस्र सजे संग भाई भतीजे । सहस्र सजे सूर असवार बीजे ॥
बँधी फौज थट्टं गरद्दं चलायौ । सजे कंगलं अंग नैनं छिदायौ ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कियौ नंद नीसान फौजें सुफेरी । भिदी दिष्टि सौं दिष्ट चहुआन केरी
सुषं अग्र कन्हं सुकैमास बीरं । नरं नाह चामुंड कंनकं गहीरं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

बरीसिंध वीरंम गोयंद राजं । इतें अग्र सामंत रचि बुद्धि साजं ॥
बरं बीर सारंग मोरी महन्नं । पवारं सलष जैत जुद्धं सहन्नं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

पजूनं बरं कच्छवाये सपीयं । जुरे जाम जद्दू दिसा दिष्षिनीयं ॥
धरंधीर धम्मार पुंडीर चंदं । अचल्लेस भट्टी पहारं सुइंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

बघेला लषन भीम मारू महन्नं । भरं हाडुली और हम्मीर पैनं ॥
इते कीन सावंत बांई भुजानं । रची फौज चंदेल गोयं रिसानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

विचै राज प्रिथीराज सज्जै सयन्नं । बज्जे नंद नीसान गज्जं गयन्नं ।
लष्यौ मल्लषानं दिष्यौ चाहुआनं । उठौ वाग वीरं गहीरं गुमानं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

लषौ फौज चंदेल कौ वीर पिल्ले । धराधीर पत्ती वरावीर मिल्ले ॥
करे षंड षंडं भसुंडै न भारी । छकं छाक लग्गैं बजै षग्ग तारी ॥
छं० ॥ ११८ ॥

अन्धौ अनवारी कहै वीर दोई । कटं काट कट कूट घट धूम होई ॥
सटं भागि लग्गे षटं बारि छत्ती । पटं पंक रंती विहौ अंग मत्ती ॥
छं० ॥ ११९ ॥

घटक्कै पट सो विहो खूर वारे। गटक्कति गिद्धनि दोऊ खूर सारे
चटक्कति धावति नट वीर नचै। चरथी चपैया चट चार सचै॥
छ० ॥ १२० ॥

जट उवान कै सीस जट्टाल लेई। झरझ्झार झारैं उभारै सुतेई।
टट आय रथ्थे रहे अच्छरेस। घट खूर धावत नावत तेस॥
छ० ॥ १२१ ॥

उडक्कत डौरू चहू फेर सद्द। ढढक्कत ढुक्कत सुक्कत मद्द॥
रनक्कत रोस करे पैज धावै। तटक्कत छोह सुलोह मनावै॥
छ० ॥ १२२ ॥

घट काटि चदेल कौ साथ सारौ। दढ दाठ कन्ह मिल्यौ जुद्ध भारौ
धक मल्ल सानं जुधावै रसानौ। नट जेम नाटत आचेत मानौ।
छ० ॥ १२३ ॥

पट वीच कन्हं वट विच्चि आयौ। हन्यौ अग मल्लियान धरनी मिलायौ
भग्यौ सर्व थान सुपरिमाल वारौ। चल्यौ खूर नरसिंघ पग्ग सुमारौ॥
छ० ॥ १२४ ॥

लषे देइ नरसिंघ विरसिंघ वीर। लषे चदपुडीर सुद्ध गहीर॥
गह्यौ कुत चद हन्यौ हीक सोई। गिर्यौ सिंघ नरसिंघ चकचूर होई॥
छ० ॥ १२५ ॥

लष्यौ चद पुडीर वरसिंघ तैसौ। हन्यौ धाइ पग्ग घट धाइ एसौ॥
लग्यौ चद कै घाइ घुम्यौ सुअग। पछै मारियौ चद वरसिंघ जग।
छ० ॥ १२६ ॥

उतै देषि चामुड जयसिंघ धायौ। तजे आयुध मारु वध्य भरायौ॥
लरै मल्ल जग अभंगे सुसोई। धरक्कै सुधरनी धरक्के सुदोई॥
छ० ॥ १२७ ॥

अन्यौ अन्य सुक्की वर वीर बाहै। गहीर गुमानी अमानी उगाहै॥
उतै दौरि चामुड चरन गहायौ। समान हय दाटि धरनी मिलायौ।
छ० ॥ १२८ ॥

हन्यौ राय चामुड जैसिंघ भाई। तबै अग वरसिंघ जग भगाई॥
मुर्यौ सिंघ अरिधग दाड पलाई। लयौ सिरसवा नग्र चहुआन चाई॥
छ० ॥ १२९ ॥

सिरसा के टूटते, बहुतसी सेना मारी जाने पर अरिसिंह का भागकर महोबे जाना।

दूहा ॥ तोरि सिरसवा नग्र नृप । हनै सैन रन भाइ ॥
अरिसिंध भाइ मराय कै । भग्यौ महोबै जाइ ॥
छं० ॥ १३० ॥

अरिसिंह का परिमाल देव से सिरसा के युद्ध में मलखां वीरसिंह नरसिंह जैसिंह आदि वीरों के मारे जाने और पृथ्वीराज की विजय का समाचार कहना।

कवित्त ॥ मल्लषान रन परेउ । जान छत्री पन सिध्धव ॥
करौ तौन हल्लाल । ल्याल देवन गन दिध्धव ॥
परि विरसिंध नरसिंघ । परे जैसिंध अमानह ॥
भगि अरिसिंघ से भाइ । गयौ चंदेल सुथानह ॥
परि छौढ सहस ठाकुर अवर । चारि सहस संगी रहव ॥
पचास गिरे प्रिथीराज के । लरि सुरपुर इतने गयव ॥
छं० ॥ १३१ ॥

चौपाई ॥ मल्लिषान अरिसिंध बिरसिंघ परि। परि जैसिंध अंग धोवन झरि॥
छोढ हज्जार वंध परि अंगिय । च्यारि हजार सु ठाकुर[1] संगियं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

भगि अरिसिंघ महोवै आइव । सिरसवाह भाई मरिवाइव ॥
सो परिमाल सुनी इह कानह । अंतर उर उपज्यौ चहुआनह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

फिरि फिरि वेगि पुकार सु आइव । प्रिथीराज सब देस दुहांइव ॥
सो परिमाल नृपति सुध लिज्जिय । सनमुष साज जूझ बल किज्जिय॥
छं० ॥ १३४ ।

परिमाल देव को यह सब समाचार सुनकर अपने बेटों और

(१) रासो के और समयों में ठाकुर शब्द कहीं नहीं आया है।

सरदारों को बुलाकर परामर्श लेना कि अब क्या करना चाहिये।

कवित्त ॥ सुनिव वत्त परिमाल। काल आयौ प्रिथिराजह ॥
मल्लिपान कौ मारि। मारि विर सिंघ सु साजह ॥
भजि सिरसवा नग्र। गजि नरसिंघ वीर रन ॥
हनि जयसिंघ दुवोह। देस दब्बियौ लुट्टि धन ॥
चहुआन सबल सम्मार करन। पातिसाह गहि छडियव ॥
बुलाइ कुँवर परिगह सकल। जूझ किहौ विधि मडियव ॥
छं० ॥ १३५ ॥

चौपाई ॥ सुत चंदेल बुलाइव दोइय। महला भोपति परिगह सोइय ॥
कोइय श्रीवासह कलियानह। उच्चरि वचन राज मलियानह ॥
छं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ बुल्लि सुतन परिमाल। बुल्लि कोइय कल्यानह ॥
बुल्लि वैस नारैन। गौर सारँग मलियानह ॥
गहर वार गोयंद। भाट जगनक ढिग बुल्लिव ॥
प्रोहित केशव समुझि। राज वनिय वर खुल्लिय ॥
आइयौ सेन चहुआन सजि। जुध जालिम सब हारियव ॥
हित होइ सोइ जोई कहौ। तत्त सुमत विचारियव ॥
छं० ॥ १३७ ॥

रानी मल्हनदेवी का कहना कि दो महीना युद्ध बन्द करके जगनक को भेजकर आल्हा को बुलाइए और पृथ्वीराज के पास मल्हन को भेजकर दो महीना लड़ाई बन्द रखने को कहलाइए। राना का मत सब के मन में भाया।

चौपाई ॥ रानी मल्हन दे यह भाषिय। राजा जूझ मास दोय राखिय।
जगनक पठयव आल्ह बुलाइव। पंग काज अर दास पठाइव ॥
छं० ॥ १३८ ॥

रानी बात कही सब मानिव । पौथल कौं सौगात पठाइव ॥
जल्हन पठय नजरि सब दिज्जय । मास दोय मुक्काम सुकिज्जिय ॥
छं० ॥ १३९ ॥

पचास हजार पान, गुलाब, बन्दूक, बछे और कच्छी घोड़े सौगात में लेकर जल्हन का पृथ्वीराज के पास जाना और पत्र देना ।

पान हजार पचास पठाइव । जे महु छंदनि महु सब गाइव ॥
अन गुलाब बंदूक बरच्छिय । हेमर वाय चढन के कच्छिय ॥
छं० ॥ १४० ॥

लै सौगात जल्हन चल्लिय । प्रिथियराज सु नदी परि मिल्लिय ॥
दै कागद सब नजरि सु दिन्नय । सब प्रमोद मिलन कौ किन्नय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

जल्हन का पृथ्वीराज से कहना कि बनाफर (आल्हा ऊदल) रूठकर कन्नौज जा बैठे हैं उन्हें लाने को राजा ने जगनक को भेजा है सो आप क्षत्रियधर्म के अनुसार उनके आने तक युद्ध बन्द रखिए ।

राजा जगनक कनवज पठयौ । जहां बनाफर रूठ सु वठयौ ॥
अल्हा आए जुग्गा विचारौ । जो पौथल छत्री भ्रम धारौ ॥
छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज ने नजर रख ली और आल्हा के आने तक युद्ध बन्द रखना स्वीकार किया ।

पौथल नजरि सौंज सब रष्यय । वचन जल्हन सौं श्रीमुष अष्यय ।
सब सामंत लरन कौ भरियौ । आवइ आल्ह जबहिं जुध करियै
छं० ॥ १४३ ॥

जल्हन का महोबे लौट आना, पृथ्वीराज का वहीं डेरा डाल कर रहना ।

दूहा ॥ कागद लै जल्हन चल्यौ । रह्यौ महोबै ठाम ॥
डेरा करि सरिता निकट । पौयल कियौ मुकाम ॥
छं० ॥ १४४ ॥

पृथ्वीराज का चंद वर्दाई से पूछना कि आल्हा ऊदल चदेल से क्यों रूस गए हैं ।

फिरि राजन वरदाय सौ । बानी बोल्यौ एम ॥
आल्ह ऊद चदेल सौ । रूसि गयौ सो केम ॥ छं० ॥ १४५ ॥

चन्द का कहना कि पहिले चन्देल के यहा दसराज सेनापति था उसने गोंड लोगों की लड़ाई मे बड़ी बीरता की, सिर कटजाने पर धड़ही से सहस्रों वीर शत्रुओं को मारकर चन्देल राजा की विजय कराई ।

कवित्त ॥ कान मंड चहुआन । कहिय वरदाइ मत्त गति ॥
प्रथम देस परिमाल । रहै दसराज सेनपति ॥
गढ्ढौ लौ नृप जाय । करी गोंडन सौ जगह ॥
परयौ चाल चदेल । शेल घन रन अपु अवह ॥
रुक्कियौ तेन अरि सेन सब । माम मरन जुद्धिय धरिय ॥
पिल्लयौ घ्याल बिन सीस धर । काम आय फत्तें करिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ गढा नगर चदेल सुलग्गिव । गौड सिमिटि जुध कारन पग्गिव ॥
भगिव सैन लग्यौ जस राजह । दीनौ सीस स्वामि के काजह ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ चालु परै रुक्यौ सबै । काम आय जसराज ॥
मारि गौड लीनौ गढा । सिर दै स्वामि सुकाज ॥
छं० ॥ १४८ ॥

राजा विजय करके महोबे आया और आल्हा ऊदल को बुला कर बड़ा आदर किया और सेनापति बनाया।

चौपाई। राजा जीति महोवै आइव। आल्हा उदिल पाय लगाइव॥
दै जसराज महातम सारौ। सैनापति धरती रखवारौ॥
छं० ॥ १४९ ॥

रानी मल्हन देवी आल्हा ऊदल को अपने बेटे ब्रम्हानन्द की तरह मानती थी।

करै प्यार मल्हन दे रानीय। ब्रह्मानंद जेम सुत मानिय॥
सब धरनी मह हुकुम सुसाजौ। सुजस जेमि मल्हन कर साजौ॥
छं० ॥ १५० ॥

महला और भोपति ने राजा से चुगली की कि आल्हा ऊदल के पास पांच बछेड़े ऐराकी घोड़े के बेड उत्तम हैं।

ऐराकी घर धेरिय जाय। पांच बछेरा लगै सुहाय॥
महिला भूपति चुगुली कीन्निय। सो परिमाल मानि सब लिन्निय॥
छं० ॥ १५१ ॥

राजा कालिञ्जर देखने को गया और वहां आल्हा को बुला कर उन पांचों बछेड़ो को मांगा और बदले में बहुत घोड़े लेने को कहा।

नपति कलिंजर देखत किन्नव। राजा आल्ह बुलाइ सु लिन्नव॥
पाच बछेरा मांगै दीजै। उनकै साटै हय बहु लीजै॥
छं० ॥ १५२ ॥

आल्हा की मां का बेटे से कहना कि बछेड़े कदापि न दो बरञ्च देश को छोड़ दो और कन्नौज चलकर रहो।

घर बैठे देवल दे षिज्जिय। पूत बछेरा दै नन किज्जिय॥

वास छाडि कनवज्ज कहँ चलिव । राजा दस पंगुर सह मिलिव ॥
छ० ॥ १५३ ॥

परिमालदेव ने फिर कहा कि या तो बछेड़ा दो या हमारा देश छोड़ दो ।

नृप परिमाल कह्यौ सुप बानिय । आल्हा देव-बछेरा आनिय ॥
ना तर वास छाडि कै चलिये । आनहि ठाम ठिकानो करिये ॥
छ० ॥ १५४ ॥

आल्हा यह सुन घर लौट आया और अपने घोड़े आदि सब साज़बाज़ लेकर कन्नौज की ओर चल पड़ा ॥

सुनि करि वचन आल्ह घर आये । छड्यौ वास पयान कराये ॥
साहन वाहन सबहीं लीनौ । कनवज दिसा पयानौ कीनौ ॥
छ० ॥ १५५ ॥

भोपति की जागीर नष्ट कर सारा नगर उजाड़ दिया ॥

जागीरी भोपति की मारिय । वसती मारि सबैं उज्जारिय ॥
परिपाटी परिहार सु बुड्डिय । उहिल सुप काहू नहि रुक्खिय ॥
छ० ॥ १५६ ॥

आल्हा ऊदल का कन्नौज पहुचना, जैचन्द का बड़े आदर से उन्हें अपने पास रखना ।

कवित्त ॥ आल्ह गयौ कनवज्ज । छाड़ि परिमाल-वास वर ॥
भोपित की जागीर । बाध उज्जार जारि घर ॥
करि आदर जैचंद । दियव बड देस सुभारिय ॥
घोरे पाच मगाय । दीय हथ्थिय हितकारिय ॥
मोतिन माल उतग अति । हीरा पहुची सजरिय ॥
दसराज सुतन अरचौ अधिक । मिलि भाइ मगल भरिय ॥
छ० ॥ १५७ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि यह कारण आल्हा के बिगड़ने का है पर वह फिर मनाकर आवेगा और घोर युद्ध मचावेगा।

दूहा ॥ चंद कहै प्रिथीराज सुनि। विरस आल्ह कौ गाय ॥
मनौ बनाफर आइहै। रुंडन मुंड नचाय ॥ छं० ॥ १५८ ॥

जगनक ने कन्नौज पहुंच कर चिट्ठी आल्हा को दी और सब रामायण कहकर महोबा चलने के लिये परिमाल की बिनती सुनाई।

कवित्त ॥ गय जगनक कनवज्ज। दीन आल्हा कर पचिय ॥
ऊदल ईदल जोग। दई देवल दे मंचिय ॥
पीथोरा पद्धरिय। साजि महुवे वर आइव ॥
मल्लिधान बरि सिंध। बली नरसंध जुझाइव ॥
भनि भज्जि सिरसवा संभरिय। देस चंदेल दहाइव ॥
परमाल थाम दुइ मास रण। मो तुव पास पठाइव ॥
छं० ॥ १५९ ॥

चौपाई ॥ अब तुम आल्ह बिसरु करि चल्लि। मल्हन दे अति दुष रुष घल्लि॥
बैठौ महलै बाट सु जोवै। कनवज्ज दिसा देषि करि रोवै ॥
छं० ॥ १६० ॥
जब दल जोरि पिथोरा आइव। सिगरौ देस उजारि दहाइव ॥
भग्यौ मद चंदेलन को सब। आल्हा सुनि पछिताय महा तब ॥
छं० ॥ १६१ ॥
सो गुदराय करौ तुव जाइव। जयचंद कौ अरदास पठाइव ॥
कुमक मांगि कैसे गह लीजै। षग्ग न घाल बनाफर कीजै ॥
छं० ॥ १६२ ॥

जगनक की बात सुनकर आल्हा ने कहा कि खेद है कि महोबा लुटा और चन्देल का गुमान टूटा, बिना अपराध हमारा देश उजड़ाया, हमारी कुछ भी सेवा न मानी अब भी पुगलों को

दूर करै सूर सामतों को आगे करके बेखटके चौहान से लड़ै।

कवित्त ॥ सुनि जगनक किय वत्त। आलह वुल्यौ करि वानि य॥
लुट्यौ महोवौ नगर। कुट्ट चंदेल गुमानिय॥
बिना चूक परिमाल। किये फिर देसह न्यारे॥
काम आइ जसराव। सबै नृप काम सुधारे॥
परिहार सैन आनइ धरइ,। चुगुली चाहिन कान लहु॥
सामंत सूर सनमुष्यहु। जुद्ध करहु चहुवान सहु,॥
छं० ॥ १६३ ॥

चौपाई ॥ सुनु जगनक यह वात सुमानिय। हमनै राज कछु नहि जानिय॥
हम सिर वांधि महोवै रष्खिव। नृप चंदेल चुगल दिसि दिष्खव॥
छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ हम मारे सब गोंड। देवगढ दाबा चारिव॥
हस जादौ रन भंजि। धरा हिंडोल उजारिव॥
हम कटहरिये काटि। थापि परिमाल देस दल॥
हम कूरम किरवान। दाढि लीनों सु महाबल॥
लीनै सु पील जयचंद के। असी लाष गनिये सु तुछ॥
सुनि वह भट्ट रजपूत की। राजन जानी नांहि कछु॥
छं० ॥ १६५ ॥

हम आगैं पतिसाह। फौज भग्गिय दस बारह॥
हम निसरत घां लूटि। किये दल कूटि वषारह॥
हम जीते घर गोय। दहिव सो प्रवल पठानह॥
हम रेवा तन वैर। वली हन्निव सुरतानह॥
मेवात मारि हिंडोरधर। अतरवेद दहाइव॥
वध्यल मारि वसुधा परिय। घर चंदेलन ल्याइव॥
छं० ॥ १६६ ॥

चौपाई ॥ राजा दस जीते जसराजह। लीनी धर कंचन नग साजह॥
जाकौ फल राजन इह किन्नव। हमको देस निकारो दिन्नव॥
छं० ॥ १६७ ॥

जिन पाछै हम षेल सु कीनव । राजा जीत चालीसक लीनव ॥
सात वार घाइल परि अंगह । हम जित्यौ परिमाल सु जंगह ॥
छं० ॥ १६८ ॥

सात वार उहिल जुध किन्नव । अैतपत्र चंदेल सु दिन्नव ॥
तीन वार गढ भंजिव भारिय । अंत दया नृप की रषवारिय ॥
छं० ॥ १६९ ॥

कवित्त ॥ सात वार परि घाव । लगे चौरासी गातह ॥
जीति राज इक दैस । इसि कहि सैन सपातह ॥
स्वामि धर्म्म संग्रहव । सह्यौ दुज्जन दल जोरह ॥
गौंड मारि उज्जारि । पारि निसरति जंग तीरह ॥
बाजिय जोह तेरह बरस । पंचासन लगि छोह किय ॥
चंदेल चुगुल मानिय कहिय । तापर हम परदेस दिय ॥
छं० ॥ १७० ॥

जगनक का समझना कि तुम्हारे पिता ने चंदेल का बहुत कुछ सहायता की और चंदेल ने तुम्हारा भी आदर किया । तुम्हारा कहना ठीक है पर इस समय स्वामी को छोड़ना क्षत्रियों के धर्म नहीं है ।

पद्धरी ॥ सुनि बत्त उधर भट्ट ताम । आल्हा नरेस सुनि श्रवन काम ॥
परिमाल छाडि बालक बाप । जंमाय धरा जसराज आप ॥
छं० ॥ १७१ ॥

चांदा सु पास लिय देहु दंड । वारी सुदेस गढ कीन षंड ॥
रेवा सुपार लिन लुट्टि सर्व । भज्जौ सुजोर जोरा सु गर्व ॥
छं० ॥ १७२ ॥

आटवा राइ षज्जनि षिपाय । मेवात मारि धर लिये जु धाय ॥
पंचाल देस पंजाब थान । बैराठ देस कौमल दिवान ॥
छं० ॥ १७३ ॥

मालवा देस लिय पास मारि । उदया पमार को घर उजारि ॥
फिरि गढा मारि गढ पेस कीन । चंदेलराय बल्लाय दीन ॥

छ० ॥१७४॥

यह वत्त सुन्नि परिमालराज । आए सु काम दसरथ्थ राज ॥
सिर धुनिय आल्ह लीनौ बुलाय । आपनो देस सुदखल पाय ॥
छं० ॥ १७५ ॥

तरवारि व ध सिर तिलक दीन । गैयर मग्गाइ वह वीर दीन ॥
किय लोइ अग्ग सिरदार सुद्ध । वाजियौ वनाफर नाव जुद्ध ॥
छं० ॥ १७६ ॥

वैठे सु पाट आल्हा नरेस । मारियो जाइ पूरब्ब देस ॥
पट्ठान गया के जेर कीन । तह दर्व कोटि तिय लुट्टि लीन ॥
छ० ॥ १७७ ॥

सम सहावाद पग्गनि पिपोय । जीतयौ जुद्ध निसरत्ति जाय ॥
लीनौ सु पील जयचद दौरि । केहरि कठेरि कौ मान मौरि ॥
छ० ॥ १७८ ॥

लूटी सु सिद्ध नव निद्धि भाय । हिडवन देस जद्दव दहाय ॥
मारे सुवेस दल सवल दाहि । वघ्घेल वाघ वारी धराहि ॥
छ० ॥ १७९ ॥

चालूक सिंघ कौ गर्व गारि । पतिसाहि फौज कै बार मारि ॥
सत वार पेत परियौ सु द्वद । धरि स्वामि धर्म जस राजनद ॥
छ० ॥ १८० ॥

यह भभषि वात वर लहै कीइ । सकरै सामि छडै न कोइ ॥
साकरै सामि को छडि जाय । अधघोर नरक रजपूत पाय ॥
छ० ॥ १८१ ॥

साकरै परयौ चदेल राय । तुम सहौ आज कनवज रहाय ॥
तुव होत वधाई नृपति कीन । सत लष्य हेम भिष्षु कान दीन ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रनवास आइ सव गान कीन । कर चाव मल्हन दे प्रवीन ॥
करि चाउ मल्हन दे कह्यौ मोहि । सो मात दिवल दे कह्यौ मोहि ॥
छ० ॥ १८३ ॥

जगनक ने आल्हा की माता देवल दे से कहा कि रानी मल्हन

देवल दे ने तुम से कहा है कि इस समय चन्देल पर संकट है तुम्हें आना चाहिए।

दोहा ॥ देवल दे कानन सुनौं। कहि मलहन दे मोंहि॥
भारि परी चंदेल पै। है मिलिबे की तोंहि॥
छं० ॥ १८४ ॥

चौपाई। देवल दे तुम वाचा वंधिय। धर परमाल धरा नहि छंडिय॥
गढ कौ आनि लगै कोइ राजह। आलहा सीस दियौ तुम काजह॥
छं० ॥ १८५ ॥

वाचा सार व्यास मुष गाइव। वाचा जग मैं मुक्ति वताइव॥
जे कोइ वाचा हार न करई। चंद सूर ते नरक सु परई॥
छं० ॥ १८६ ॥

देवल दे ने यह सुन बेटों से कहा कि महोबा चलो और पृथ्वीराज से लड़कर स्वामी का काम बनाओ।

सुनि वाचा देवल दे बुल्लिय। आलहा सुतन महोबे चल्लिय॥
प्रिथीराज सौ जुद्ध जु किज्जय। स्वामि धरम कौ जस बहु लिज्जय॥
छं० ॥ १८७ ॥

ऊदल ने फिर कहा जिस दुर्दशा से महोबे से परिमालदेव ने निकाला था वह भूल गईं, जगनक तुम महोबे लौट जाओ।

तब उदिल फिरि बोलिय वानिय। देहु महौबे कौ चक्क धानिय॥
बुरे हाल काढे परिमालह। सो अब भूलि गईं वह ब्यालह॥
छं० ॥ १८८ ॥

जगनक भट्ट अवै घर जावहु। नगर मोहबा लगे अभावहु॥
घर घट्टय दसराज उथप्पिय। हम कन्नवज उतन कर थप्पिय॥
छं० ॥ १८९ ॥

देवल दे ने यह कहकर कि मैं बांझ क्यों न हुई, मेरे बेटे

क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध बात कहते हैं और संकट में स्वामी को छोडते है, रो दिया।

देवल दे कहि बाझ न रष्यिय। छत्री धर्म करम मय भष्यिय॥
सामि साकरै देह न कट्टिय। हौ करतार कूपि किम फट्टिय॥
छ० ॥ १९० ॥

माता दीन वचन करि रोई। तुम सब वनाफरन की योई॥
जग वचन सुनि कै नहि नचय। ते रजपूत धरम नहिं सचय॥
छ० ॥ १९१ ॥

दोहा ॥ सामि सौकरै जानि कै। रहे अवर घर सोइ॥
सो रोनौ फिर तो लहौ। कुल रजपूत न होइ॥ छ० ॥ १९२ ॥

मां की बात सुन कर दोनो भाई सूखगए और महोवे चलने का निश्चय कर जयचन्द से सीख लेने जगनक के साथ गए।

कवित्त ॥ आला ऊदिल सुनिव। उठे मुरझाय वीर दुहु॥
माता सुप मन मानि मरै। उहा जाइ कुटम सहु॥
लरै जाइ सनमुष्य। करैं अपवात धरा वहु॥
धरैं सामि ध्रम सीस। कटै किरवान पान रहु॥
सोमत वश्य धसै विहस। रहसि सूर स मर अनिय॥
उजियालि दुहू कुल में सुघर। जरन भेंट सम्भरि धनिय॥
छ० ॥ १९३ ॥

दूहा ॥ चलन महीवै कौन मत। देवल सीष उपाय॥
अरज करन जयचद सौ। चलै सु दोनौ भाय॥
छ० ॥ १९४ ॥

रपत वपत सब साज करि। कगल अग हुलास॥
जगनक को सग लै चले। पागुराय के पास। छ० ॥ १९५॥

जयचन्द ने पूछा कि आज क्या है जो रणसज्या से आप दर्बार में आए हैं। आल्हा ने कहा कि पृथ्वीराज ने चढाई की है सा परिमालदेव ने हमलोगों को बुलाया है।

कवित्त ॥ दिष्षि नयन जयचंद । बुल्लि आल्हन सहि बानिय ॥
क्यौं आवहि दरबार । उट्ठ पावार गुमानिय ॥
सजे कवच किमि अंग । जंग लग्गे भट भारिय ॥
बिहा किये कहु नांहि । नांहि पुक्कारह कारिय ॥
इम कही बनाफर जाइ कर । लेन सु जगनक आइयव ॥
प्रिथीराज महोबे जुद्ध कहु । हम परिमाल बुलाइयव ॥
छं० ॥ १९६ ॥

जयचन्द ने कहा तुम लोग मरने के लिये महोबे न जाने पाओगे ।

चौपाई ॥ नयन रत्त करि बुल्लय बानिय । मरिबे काज महोबे ठानिय ॥
अच्छल गढ़ हमारौ गायो । चंदेलन ढिग लग्गहु लायौ ॥
छं० ॥ १९७ ॥
सगरी नाव जाय बंध किज्जय । आल्ह उदिल उतरन नहि दिज्जय ॥
छावनि करौ हमारे पास । छांडौ अब महुवा की आस ॥
छं० ॥ १९८ ॥

यह सुन आल्हा की आँखें लाल होगईं और उसने कहा कि पहिले कन्नौज लूट कर तब महोबे में युद्ध करेंगे ।

तब आल्हन रस कीनै नैनह । सुनि जयचंद नृपति के बैनह ॥
कनवज लूटि अद्धि सब हरिहौं । पाछै जुद्ध महोबै करिहौं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

इतने में जगनक ने पत्र दिया जिसमें परिमालदेव ने पृथ्वीराज से लड़ने के लिये जयचन्द से सहायता मांगी थी ।

जब जगनक कह बिरद बिसालह । दीनी अरज लिषी परिमालह ॥
करैं चाकरी सेवा ठाइय । पिथ्थल पर सुइ कुमक पठाइय ॥
छं० ॥ २०० ॥

पत्र पढ़कर जयचन्द ने कहा कि पृथ्वीराज से लड़ने के लिये मैं अवश्य आल्हा के साथ सेना भेजूंगा और दीवान

को बुलाकर आल्हा के साथ सेना भेजने की आज्ञा दी।

कवित्त ॥ वचि अरज जयचंद। कहिय सुप वचन भाट वर ॥
करहि चाकरी प्रगट। करहु उप्पथ आतुर कर ॥
पौथोरा वध वीर। मलख वड जौ मस किन्नव ॥
कूटि सिरसवा नग्र। लूटि धरती निधि लिन्नव ॥
पठ्ठाय कुमक सँग आल्ह के। जूझ समर भार लगत इव ॥
सभरी गाजि विजपाल सह। तुव सुज्जर जुरि पुगइव ॥
छ० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ वचि अरज जयचंद नृप। बोलि दिवान जरूर ॥
विदा करौ सेना सजौ। आल्हा संग गरूर ॥
छ० ॥ २०२ ॥

बहुत भारी सेना, सिरोपाव आदि देकर और जगनक को सिरोपाव आदि देकर आल्हा को जयचन्द ने बिदा किया।

पद्धरी ॥ विदा किय आल्हन पगुर राय। दिये दस हेमर साज बनाय ॥
दिये दोउ पील सु उज्जल दंत। छहुरित छाक रहै मद मंत ॥
छ० ॥ २०३ ॥
दई दस वीनि कै मुत्तिय माल। दई कर पौचिय वज्र विसाल ॥
दिये सिर पावक सज्जिय सात। निरप्पत चंद सुसकत जात ॥
छ० ॥ २०४ ॥
कटारि जराव की दीनिय सोइ। रयौ तुम आल्ह छतौ ध्रम होइ ॥
बुलाइव लापनसी कमधज्ज। धरौ धम सीसह छत्र धरज्ज ॥
छ० ॥ २०५ ॥
दई सग फौज पचास हजार। दिये दस डील दँतार जुझार ॥
दिये सँग मोरिय रूप सि सुद्ध। दिए सँग चालुक के सब जुद्ध ॥
छ० ॥ २०६ ॥
दिये सग तोवर वोहिथ वीर। दियौ सँग जादव हद्द गहीर ॥
दियौ किरवार सु कूवर पाल। दियौ सँग वैसन पगु सकाल ॥
छ० ॥ २०७ ॥

दियो संग ताल्हन नेज पठान । दिये सत भाव भतिज्ज ववान ॥
हजार पचास दिये असवार । धरैं कुल स्वामि धरमा दुतार ॥
छं० ॥ २०८ ।

दिये नृप आल्ह को पान मंगाइ । लई नय सीष चंदेल सहाइ ॥
जगनक्क कारन पील मँगाइ । समप्पिय पंगुर साज बनाइ ॥
छं० ॥ २०९ ॥

दिये सिरपाव तुरी दोइ सुद्ध । दिये द्रव साठ हजार सु सुद्ध ॥
दिये दस गांव अखंडलि पाइ । समप्यौ भाट कौ पंगुर राइ ॥
छं० ॥ २१० ॥

उठे जयचंद बिदा कर आल्ह । समप्यो सैन वहै तत काल ॥
पधारिव आल्ह हये लिय सुद्ध । धरै मन मांझ पियौर सु जुद्ध ॥
छं० ॥ २११ ॥

हवेलिय आइ बनाव सु कीन । मंगाइ कै पालिकी पंच नवीन ॥
चपाय कै देस चल्यौ रन सूर । दुहै ठकुरायनि मेल जरूर ॥
छं० ॥ २१२ ॥

दिये सँग ऊदिल जोध दुवाह । गही सु महोबह की फिरि राह ॥
कराय कै पारथ पूजन आल्ह । अगनि कौ आवध दै ततकाल ॥
छं० ॥ २१३ ॥

बँधी किरवान चढे हय सोइ । चढे चलि ऊदिल मुदित होइ ॥
चढे जगनक्क किये जुध चाव । अवै सुध मानि चंदेलनि राउ ॥
छं० ॥ २१४ ॥

निकस्सि कन्नौज कै बाहरि सोइ । तहां भय दारुन स्वान सुरोइ ॥
सनंमुष काग कराल्लिय कूक । भयो द्रग जीवन दौर अलूकं ॥
छं० ॥ २१५ ॥

ठट्ठकिय भाट निरष्षि सगुन । लषी जब आल्ह मुसक्कि वदन ॥
छं० ॥ २१६ ॥

चौपाई ॥ हँस्यौ आल्ह जब बुल्लिय बानिय । तैं कछू होनहार पहचानिय ॥
सावँत सूर जु इष्ट सु रष्षव । अरु कविचंद भवानी भष्षव ॥
छं० ॥ २१७ ॥

इनि सौ जुद्धनि जीतै कोइय। हिंदू तुरक मिलै भर दोइय॥
पातिसाह लरि उनि सौ हारिव। कनवज पति कौ गरब जु गारिव॥
छ० ॥ २१८॥

दूहा॥ होनहार ऐसी लषी। कही जु आलह उपाय॥
हम सावंत सब जूझिहैं। राज चंदेलन जाय॥
छ० ॥ २१९॥

आल्हा का कहना कि जैसे दुर्योधन ने कहा न माना और नाश हो गया वैसे ही ऊदल ने बहुत समझाया पर चुगल-खोरों के मारे घायलों का न मारने की बात न सुनकर परिमाल देव ने अपने हाथ से सब बात बिगाडी।

कवित्त॥ दुरजोधन परिमाल। सुतौ वर ज्यौ नहि मानिय॥
जब धाइल मरवाइ। कुबुधि तब ही हम जानिय॥
फिरि ऊदिल बरजियो। कही विनती हितकारिय॥
चुगलनि चुगली करिय। बात बिगारिय भारिय॥
हम जीवत परिमाल कौ। राज दुष्य देषैन हिय॥
सुनि भट्ट वत्त रजपूत कौ। विहँसि आलह ऐसी कहिय॥
छ० ॥ २२०॥

जगनक ने कहा कि होनहार प्रबल है। अस्तु सब का गङ्गा तट पर डेरा डालना और वहा लाखनसी और तालनसी स मित्रता होनी।

चौपाई॥ जगनक कह मैं सबही जानिय। होनहार अविगति नहि मानिय॥
गंगा जू तटि डेरा दिज्जय। सुनो बनाफर ढिल्ल न किज्जय॥
छ० ॥ २२१॥
गंगा तट डेरा करवाये। कुमक दई सो आनि मिलाये॥
लाषनसी ताषनसी दोइव। इन मिलि आलह मित्रता होइव॥
छ० ॥२२२॥

नदी उतर कर जयचन्द की कुमक साथ लिए महोबा ओर सब चले ।

दूहा ॥ देवल मिजमानी करी । सब सँग एकै काज ॥
अंन धन्न जपट करिव । बहु पकवान समाज ॥
छं० ॥ २२३ ॥

राति रहै उतरे नदी । चलै महोबा वार ॥
कुमक लिए जयचंद की । क्रमै सुवीर जुझार ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आल्हा ऊदल का रोना साहिरा पहुंचना, परिमाल देव का दूत का आल्हा ऊदल और कन्नौज की सेना के आने का समाचार देना ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चले आल्ह उहिल सोइ । उर स्वामि धर्म्म रत बिरत होइ ॥
गाजिव गम्हीर वाजिव निसान । सज्जिव जवान अति जोरवान ॥
छं० ॥ २२५ ॥

धरि पीर अंग पचास पांच । आरन्य मांझ धारीन आंच ॥
जीवनो साजि सारस्स कौन । सेमली लष्ष मुछ भष्ष हीन ॥
छं० ॥ २२६ ॥

चक्कव विछट्टिय दिसा मांझ । हय नयन झरय विन विपत मांझ ॥
फिक्करी दौरि आडी सु आइ । जंबूक सबद बोले कुभाइ ॥
छं० ॥ २२७ ॥

सूरज मध्य एक कुमद दिष्ष । यह चरित जोय लष्षन विलष्ष ॥
हँसि कहिय आल्ह यह हाल गाय । रजपूत मरन मंगल बताय ॥
छं० ॥ २२८ ॥

यह बार सोच कीजै न कोइ । रजपूत वद्ध इक विकट होइ ।
दर कूंच कूंच कीने पयान । धरि युद्ध चाव अति बिबुध मान ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कहुं इक्क दिवस विलमें न चाय । परिमाल हेत वँधि नेत वाय ॥

तारँत तुरिय मारत मृग्ग। भव भवपि भोग तैसा सुरग्ग ॥
छ० ॥ २३० ।

परिमाल प्रतिग्य किय जुद्ध जोध। षट्ट आन पान लपि विषम बोध॥
पट्टाय दीन कासिद्द एक। परिमाल जोध लिपि अज्ज मेक ॥
छ० ॥ २३१ ॥

केसरिँ मगाय केसर्यां कीन। पूजत ईस सेवा अधीन ॥
उच्छाह अधिक किय भ्रात दोय। साकरैं स्वामि जान्यौ सुलोय ॥
छ० ॥ २३२ ॥

कासिद्द आइ परिमाल पास। बैठई भूप ऊँचै अवास ॥
गुदराय बैठ दरबार जाइ। आए बनाफर दोय भाय।
छ० ॥ २३३ ॥

दरबान जाइ बुलयौ दूरि। आये सु आल्ह सेना हजूर ॥
सुनि राज हर्ष मन अधिक कीन। कासिद्द बोलि हज्जूर लीन ॥
छ० ॥ २३४ ॥

उच्चरै बात चंदेल राय। कित्तनै सैन आल्हन मिलाय ॥
बुल्लयौ बैन कासिद्द पाय। पचास सहस दिय पगुराय ॥
छ० ॥ २३५ ॥

यह कह बचन्न कासिद्द आन। चंदेल भूप हिय सुष्य सान ॥
लषन भतीज नृप सग दीन। सिरदार आठ दुवलार कीन ॥
छ० ॥ २३६ ॥

दूत से समाचार पाकर राजा का प्रसन्न होना।

दूहा ॥ सुनि वानिय कासिद्द की। किये नगरिते नैन ॥
साज बाज सब सुज्ज है। सजि आवो सब सैन ॥
छ० ॥ २३७ ॥

अगवानी के लिये नकीब आदि को तैयार करना।

चद्रायना ॥ दौरि नकीब बुलाये परिमाल के।
साहन वाहन सज्जि करी इह हाल के ॥
आवै मिलि दरबारि कि सामंत सूरिमा।

परिहा साजि सनाह सरीर झलकै पूरिमां ॥

छं० ॥ २३८ ॥

आल्हा की मां देवलदे के आने का समाचार पा मल्हनदे का आगे से मिलने को चलना ।

दूहा ॥ देवल दे संग भाटकै । चली महौबै आइ ॥
मल्हन दे सुनि कै षबर । साम्हौ भई सुभाइ ॥

छं० ॥ २३९ ॥

देवल दे का पुत्र रो कहकर जगनक के साथ पालकी में बैठ कर बाग में आकर रानी से मिलना ।

चौपाई ॥ तब देवल दे बुल्लय वानिय । आगे चलौं मिलन कौ रानिय ॥
जगनक संग पठावहु मो कहं । राजा की सुनि कहिहौं तोकहं ॥

छं० ॥ २४० ॥

दूहा ॥ मिली बाग मैं आइकै । वपु सों अंग लगाय ॥
एक पालकी बैठि कै । भूप भवन चढि आइ ॥

छं० ॥ २४१ ॥

जगनक का राजा से कहना कि चलकर लाखनसी से मिलिए।

जगनक भाट हजूर गौ । कही खबर जा सोइ ॥
डीलनि राज पधारिये । मिलिये लाषन लोइ ॥

छं० ॥ २४२ ॥

राजा का ब्रह्मानन्द के साथ सवार होकर आल्हा को लेने और लाखनसी ताल्हनसी से भेट करने को चलना ।

असवारी राजा करी । संग ब्रह्मानंद लीन ॥
तुरी बैठि परिमाल जू । आल्हनि लावो कीन ॥

छं० ॥ २४३ ॥

आल्हा का लाखनसी ताल्हनसी को साथ लेकर आगे बढ़ना और बीच में राजा परिमाल से मिलना ।

सुनी अरज साम्हैं चले । लायन तालन सग ॥
मिल आइकै बीच म । भेटे राजन अग ॥
छ० ॥ २४४ ॥

हनूफाल ॥ चढि चले आल्ह अमान । परिमाल आये जानि ॥
सिर पाव कौन सुअग । चढि चले आल्हन सग ॥
छ० ॥ २४५ ॥

मिल्लियौ सु आल्हन आइ । परिमाल हीय लगाइ ॥
मिलि टाक रूप नवीन । चदल आदर कीन ॥
छ० ॥ २४६ ॥

चालुक्क केसवदास । परिमाल मिलिय हुलास ॥
तोवर सु वोइथ्थ आइ । लगि नृपति कै मिलि भाइ ॥
छ० ॥ २४७ ॥

चलि जादवा दुव झाइ । मिलि हेत करि परि भाइ ॥
चहुआन मगल आइ । मिलिवे नरेसुर जाइ ॥
छ० ॥ २४८ ॥

वडगुज्जर सौनिग्ग । मिलिये सु राजन अग्ग ॥
मिलि सत्र कुवरु सु पाल । मिलिये सुराजन लाल ॥
छ० ॥ २४९ ॥

सैगर सुराय अमान । मिलि रूप भूप अमान ॥
ढिग आइ आल्हन तेग । पट्टान हित मिल वेग ॥
छ० ॥ २५० ॥

नव किए हैवर हद्द । इक हरत ससत दुरिद्द ॥
जयचद कुसल पुछाइ । फुरमान सौस चढाइ ॥
छ० ॥ २५१ ॥

दिय आल्ह कारन पाय । परगनै चारि मँगाय ॥
मँगाय हथ्थिय दोय । समपियौ आल्हन सोय ॥
छ० ॥ २५२ ॥

मँगाय मुत्तिय माल । हीरानि पौचि विसाल ॥
सिर पेंच पना पान । मिलि जोंति झाइय तान ॥
छ० ॥ २५३ ॥

सिरदार लगियौ पाइ । नृप लियौ सीस चढाइ ॥
दिय तुरी तेरह साज । सेवन सोज समाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

रानी सुनिकट बुलाइ । निछावर करि दी भाइ ॥
किय अरज मलहन एव । अहबात आल्हा देव ॥
छं० ॥ २५५ ॥

फिरि आल्ह बुल्लिय ताम । मो सीस तुअरे काम ॥
मोतीनि आरति कीन । यह भांति आदर दीन ॥
छं० ॥ २५६ ॥

दूहा ॥ आल्हन कज्ज बिदा करि । नृपति हवेली काज ॥
फौज उतारी पंगु की । वागह माउ समाज ॥
छं० ॥ २५७ ॥

देवल रानी गोट रहि । कहि कनवज की बात ॥
बचन कहे जयचंद नै । सो पुनि किय विख्यात ॥
छं० ॥ २५८ ॥

परिमालदेव का जगनिक को बहुत कुछ गांव हाथी आदि देना ।

जगनक कौ हाथी दिए । चारि गाम आघाट ॥
थाट निवाजि चंदेल नै । करी बडाई भाट ॥
छं० ॥ २५९ ॥

आल्हा के आने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का कन्ह कैमास आदि को बुलाकर युद्ध की तैयारी करने के लिये कहना ।

आल्हा आये सात दिन । भये मुनी प्रथिराज ॥
बोलि कन्ह कैमास भर । कियौ लरन कौ साज ॥
छं० ॥ २६० ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह चहुआन । बोलि कैमास महाभर ॥
बोलि चंद पुंडीर । बोलि चामुंड पुंड वर ॥

बोलि सलप प मार। बोलि पज्जून महाभति ॥
बोलिव सभरराय। बोलि कनकेस विरदपति ॥
कमधुज्जराय निडुर बुलिव। अरु बरदाई बुलियव ॥
सब मिले सूर सामंत वर। भत्त तत्त सब मंतियव ॥
छ० ॥ २६१ ॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि अब युद्ध में देर न कीजिए, आल्हा कन्नोज से पचास हजार सेना लेकर सात दिन हुए आ गया है।

दूहा ॥ कहै चंद प्रिथिराज सुनि। ढील न करिए नेति ॥
आयो आल्ह कनोज तैं। सहस पचास समेति ॥
छ० ॥ २६२ ॥

चौपाई ॥ आल्हा सहस पचासक ल्यायो। पग जग पर सैन पठायो ॥
आल्हा आय सात दिन बीते। कीजै जुद्ध चंदेल कहीते ॥
छ० ॥ २६३ ॥

पृथ्वीराज का परिमालदेव को पत्र भेजना कि क्षत्रिय धर्म विचार कर हमने दो महीना युद्ध बन्द कर प्रतीक्षा की अब या तो लड़ो या महोबा छोड़ दो।

दोय मास हम छावनि कीनी। छत्री धरम कारनै चीनी ॥
अब चंदेल जुद्ध वर माँडौ। नातर नगर महोबो छाँडौ ॥
छ० ॥ २६४ ॥

गुन मंजरि मोहि सालै दासी। धाइल हनै अनाहक तासी ॥
पहले जौम लरन कौ कीनौ। अब चंदेल कहा बलहीनौ ॥
छ० ॥ २६५ ॥

कवित्त ॥ लिषि पठौ प्रिथिराज। जोग परमाल सु किज्जव ॥
छत्रि धरम धरि सूर। जद्ध सुरलोकहि दिज्जव ॥
करै जुद्ध पाधरी। चंदेले घेल झेल कुल ॥
नातर घर तजि ठाम। रहौ आधीन सेव तुल ॥
धरिये धीरज धारना। कादरता सब छंडियै ॥

बुलाय कुमक कामधुज्ज की । सिंध नाद नृप गज्जिये ॥
छं० ॥ २६६ ॥

चौपाइ ॥ छत्री धरम धरो परिमालह । करी नरेस घग्ग रन घ्यालह ॥
कै तौ ठाम महौबो छंडौ । कै सब साज लरन कौ मंडौ ॥
छं० ॥ २६७ ॥

पत्र पढ़कर परिमालदेव का आल्हा आदि अपने सब सरदारों को बुलाकर परामर्श करना और लड़ाई आरम्भ करने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

लिय परिमाल पत्रिका बंचिय । सोच करौ सज्जन दिल पंचिय ॥
अपनी परिगह सकल बुलाइय । संभरि काज कियौ मति ठाइय ॥
छं० ॥ २६८ ॥

नाराच ॥ बुलाय राज अल्हयं । करंत मत्त धालयं ॥
बुलाय उद्द लीनयं । कुमार दो प्रवीनयं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

बुलाइ काइथं कली । सुचार बुद्धि है भली ॥
बुलाइ राज सीहयं । अनेक जुद्ध जीययं ॥
छं० ॥ २७० ॥

बुलाइ भाट लीनयं । नरेस थप्पि कीनयं ॥
बुलाय वैस वीरयं । चंदेल चीर धीरयं ॥
छं० ॥ २७१ ॥

बुलाय साह सुंदरं । करंत बात अंदरं ॥
गहैरवार रूपयं । सुधग्गगी गजूपयं ॥
छं० ॥ २७२ ॥

तहां समत्त कीनयं । अनेक भर्म लीनयं ॥
पियौर दूत आययं । जुरन्न जुद्ध ठाययं ॥
छं० ॥ २७३ ॥

सिताब जुद्ध मंडियं । नहीं तौ ठांम छंडियं ॥
बुले सु आल्ह नूपयं । सुनौ चंदेल भूपयं ॥
छं० ॥ २७४ ॥

विचारि लोग आयनौ । अरिं दल उथप्पनौ ॥
परमार गोहि गोहिल । वघेल जोर मोहिल ॥

छं० ॥ २७५ ॥

कमद्ध कूर मामिले । वघेल वागरी चले ॥
जद्दा सुचन्द पौचिय । भिधौर वैस बौचियं ॥

छं० ॥ २७६ ॥

ससावुला हडावय । बनाफर जुझारय ॥
गरूर गोहिलोतय । पवै पनीर होतय ॥

छं० ॥ २७७ ॥

बरनि वाल नौतय । चिरत डोड होतय ॥
न्निपान नद वानिय । कठोर लोह जानिय ॥

छं० ॥ २७८ ॥

पुंडीर दाहिमा मिले । जमहि सिघु लैचलै ॥
पिलत पारिहारिय । चदेल सैंन भारिय ॥

छं० ॥ २७९ ॥

सबै सयन्न मिल्लिय । हज्जार साठि हल्लिय ॥
पंचास दीन पगुस । कुमक्क राज सगय ॥

छं० ॥ २८० ॥

गयद तीन सेहल । जिल सुपाट जंवल ॥
चंदेल दोई रीसय । दल असेक दीसय ॥

छं० ॥ २८१ ॥

करै संग्राम सुद्दय । पिथौर सौ विद्दय ॥
चदेल चेत कीनय । निकस्सि डेर दीनय ॥

छं० ॥ २८२ ॥

लिपी पिथौर काजय । करै रन समाजय ॥
मिलत लोह दीतय । दिवस्स दोइ बीतय ॥

छं० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ लिपी पिथौरा कारनैं । सुनि संभरि के राव ॥
दीत वार एकादसी । करै जुद्ध को चाव ॥

छं० ॥ २८४ ॥

चौपाई ॥ पचि लिषि कासीद पठायौ । सिर धरि दिल्लीसुर ढिग आयौ ॥
सुद्ध चाव चंदेल सु कीनौ । यह परिमाल लिओ करि दीनौ ॥
छं० ॥ २८५ ॥

पत्र पढकर पृथ्वीराज को आवेश आना और शुक्रवार नौमी को नगारे पर चोट दे लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना ।

दूहा ॥ लियो वाचि सम्हर धनिय । कियौ युद्ध कौ चाव ॥
मानौ रावन ऊपरै । कोप्यौ रघुकुल राव ॥
छं० ॥ २८६ ॥

सुक्रवार नौमी निवटि । सम्हर वीर नरिंदु ॥
वैरन धरि परिमाल कौ । भयो नगारे नंदु ॥
छं० ॥ २८७ ॥

सेना की तयारी, वीरों के हृदय में युद्ध के उत्साह तथा अप्सराओं के उल्लास का वर्णन ।

चावर नाराच ॥ कीनौं निसानं मद्द पानं विहसि सामंत सूरयं ॥
मरदन कार ए अंग न्हाये पुनि सुठाये पूरियं ॥
उत सुनिय अपछर करिय सुछर अंग मंजन कीजयं ॥
बहु फिरै हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥
छं० ॥ २८८ ॥

हरषे कपाली षुले ताली रुंड माली पूरिनै ॥
चौसठि अंगं वधि उछंगं पान पत्रं नूरनै ॥
पलचरा धावै गीत गावै चित्त आवै मंगलं ॥
चहुआन चंदेलं षेल षेलैं मिले मेल उदंगलं ॥
छं० ॥ २८९ ॥

चौपाई ॥ सावंत सूर बज्यौ जुध चावह । सार समाहि संभरी रावह ॥
इते सुघट कब अंगहु लीनौ । सामंत सबै उसाहति दीनौ ॥
छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ सूरा कवच बनाय तन । मंगल कीनौ चाव ॥

उतै अपछरा तन सजै । अंजन कीनैं भाव ॥
छ० ॥ २९१ ॥

भुजंगी ॥ इतै सूर न्हाए करैं दान ध्यान । उतै अपछरा अंग मंजो सुतान ॥
इतै टोप टंकार कसि सिर उतंग । उतै अपछरा कंचुकी कसि अंग ॥
छ० ॥ २९२ ॥

इतै सूर मोजाव नावंत भाये । उतै अपछरा नूपुर पारि धाये ॥
इतैं सूर रागं बंधे तापतंग । उतै अपछरा चरन पा पहरि जंग ॥
छ० ॥ २९३ ॥

इतै पाग पेंच समारंत सूर । उतै सीस फूलं गुंधावंत हूर ॥
इतै सूरमा पाग पै झिलम डारै । उतै झुंडर रंभ मागै संवारै ॥
छ० ॥ २९४ ॥

इतैं सूर सरव परे पग माँजैं । उते अपछरा भाल पै तिलक साजै ॥
इतै ढाल सूर अलो वच्छ टावै । उतै अपछरा अवन ताटंक नावै ॥
छ० ॥ २९५ ॥

इतैं सूर दसतान इच्छ सुकीये । उतें अपछरा इच्छ मेहदी सुदीये ।
इतै सूर कारके हरी नप लीनै । उतें अपछरा ककन पान कीनै ॥
छ० ॥ २९६ ॥

इतै सूर वरछी लिये है अन्यारी । उतै अपछरा हाथ वरमालधारी ॥
इतै सूर तुलसीनि की मालनाई । उतै अपछरा हाथ मोती बनाई ॥
छ० ॥ २९७ ॥

इतै सूर किरवान कम्मान नाई । उतै अपछरा चमकि नैन निचाई ॥
इतै तंग सामंत घोरन लीय । उतै अपछरा साजि विम्मान कीय ॥
छं० ॥ २९८ ॥

कही कव्वि चंद निरव्यी सुसोई । वरनी समान परी सूर दोई ॥
छ० ॥ २९९ ॥

उधर परिमालदेव का सेना सजना और नौमी शुक्रवार को आगे बढ़कर दो कोस के अन्तर पर डेरा डालना ।

चौपाई ॥ परी सूर वरनै कवि दोऊ । उत परिमाल सजै दल सोऊ ॥

दोय कोस कौ बीच जु कीन । दुइ दल आय पयानौ दीन ॥
छं० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ नौमी तिथि सुक्रह दिवस । सजे सकल चढि सूर ॥
दोय कोस अंतर करिव । करि मुकाम वल पूर ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

परिमालदेव का आल्हा आदि सब अपने सरदारों को इकट्ठा करके परामर्श करना कि अब क्या कर्तव्य है ।

कवित्त ॥ करि मसलति परिमाल । आल्ह ऊदिल ढिग बुल्लिव ॥
अरु कांइथ कलियान । धरम धर प्रोहित मिल्लिव ॥
बुल्लिव जगनक भट्ट । बुल्लि लाषन कमधुज्जह ॥
बुल्लिव ताल्हन तुरक । बुल्लियौ भोपति सज्जह ॥
रानी सुबोलि परदै रषी । देवल ढिग्ग विचारियौ ॥
परिमाल कहै सामंत हौ । तत्त सुमत्त विचारियौ ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

चौपाई ॥ बुल्लौ भामासाह सुजान । राजा आल्हा भानु सुमान ॥
दावै कारन ढिग बैठारौ । पाछ लरन मतौ सु विचारौ ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

राजा का आल्हा को साथ ले महल में रानी के पास जाना और परामर्श करना ।

राजा उठि भीतर को आये । धावै ढिगां आल्ह बैठाये ॥
रानी मल्हन ढिगां बुलाये । पाछें चाते मते सुलाये ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

तेज पिथौरा कौ अति कहिये । तासों जुद्ध किही विधि ठइये ॥
हारे नगर महोबा छूटै । डंड दिये तैं अपजस फूटै ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अय तू स्वामि सांकरै छंडै । आपन आय फेरि घर मंडै ॥
पवन नीर लौं नरकै परई । ताकौ साषि व्यास इह धरई ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

फिर देवल दे बुल्लिय बानिय । सुनौ श्रवन राजा श्रु रानिय ॥
नीकौ होइ सो करौ विचार । परिगह बोलि मतौ उचार ॥
छ० ॥ ३०७ ॥

आल्हा का कहना कि जो स्वामी को विपत्ति में छोडता है वह अनन्त काल तक नर्क भोगता है और जो प्राण का मोह छोड लड़ाई मे मरता है वह सूर्यमंडल को भेदता है।

सुनियो मात आल्ह यों भाषिय । रामायन मारथ की साषिय ॥
स्वामि साकरै छाडन कहियै । चद सूर तौलो नरक सहियै ॥
छ० ॥ ३०८ ॥

खाइ धान परनोन निहारै । अपनौ अग जूझ सौ टारै ॥
जासौं जार जाति सौ कहियै । असल बीज रजपूत न कहियै ॥
छ० ॥ ३०९ ॥

स्वामी रापै आपन मरै । छत्री धर्म सीस पर धरै ॥
माया घर की दूरि सुषेदै । वै नर सूरज मडल भेदै ॥
छ० ॥ ३१० ॥

मा का कहना कि मुझको बेटों का मोह नहीं है ।

मोहि आस राजा की भावै । बेटा की कछु दया न आवै ॥
वे जीवत सती कहि नारी । पारवती कौ अस निहारी ॥
छ० ॥ ३११ ॥

आल्हा का कहना कि मैं पृथ्वीराज की फौज को मार गिराऊंगा सब सावतों को जीतूंगा, माता तुम्हारी लज्या निबाहूगा।

बोल्यौ आल्ह सुनौ तुम माता । कलि माझ रापै अस बाता ॥
संभरीस की फौजा मारौ । सामतनि बिहड करि डारौ ॥
छ० ॥ ३१२ ॥

मै कुल काज चढाऊं पानी । भुव मडल सब होनै जानी ॥
ईदल की रखवारी कीजौ । देवल दे की लज्ज निहिज्यौ ॥
छ० ॥ ३१३ ॥

रानी मल्हन दे का कहना कि दंड देकर देश की रक्षा करो उनके सामंतों की वीरता की बड़ाई बहुत सुनी जाती है।

मल्हन दे फिरि बोली बानिय। आल्हा सुनौ हमारी बानिय॥
राषा देस दंड दे गुनिये। सामंत सूर विषम अति सुनिये॥
छं० ॥ ३१४ ॥

ऊदल का तमक कर कहना कि यह बात धांधलों के मारने के समय मैंने कही थी तब क्यों न मानी। अब क्या है, अब लड़ो। यह निश्चय जानो कि हम दोनों भाई मार लेंगे तब राजा का कुछ होगा।

ऊदिल तमकि बैन सुनि कही। पहिलै ऐसी काहि न लही।
धाइल मारत मैं बरजानै। अब क्यों माता भयो सयानै॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दूहा ॥ च्यार वार बिनती करी। मानी नहीं लगार॥
अब क्यों राजा समझियो। लषि सामंतन भार॥
छं० ॥ ३१६ ॥

हम उभैं निरषैं नहीं। तुमरी बुरी नरेस॥
कामि आवतैं छंडिहैं। नगर महोबा देस॥
छं० ॥ ३१७ ॥

तुम जागैं परिमाल नृप। मरिहैं दोनो सज्ज॥
अवस बरैं सुर अछरी। राज चंदेल सुकज्ज॥
छं० ॥ ३१८ ॥

देवलदे का कहना कि होनहार टल नहीं सकती, हे बेटा! तुमलोग चंदेल का नमक अदा करो।

होनहार कैसे मिटै। कहि देवल दे सुद्ध॥
लौन सीस चंदेल कौ। पूत उजालो दुद्ध॥
छं० ॥ ३१९ ॥

राजा, आल्हा, तथा ऊदल का बाहर आना, प्रजा का आकर पुकार करना कि शत्रु ने गाँव जलाकर असंख्य धन लूट लिया अब दौड़िए देर न कीजिए।

मसलति करि बाहर कढे । ऊदिल आल्ह नरेस ॥
उत रैयत्ति पुकारि कै । चावड जार्‌यौ देस ॥
छ० ॥ ३२० ॥

जारि उजारि जु गाव सब । लूटी निद्दि अचेत ॥
धरौ लरौ च देस तुम । थोरे जोरे हेत ॥
छ० ॥ ३२१ ॥

आल्हा का आवेश में आकर उठना, राजा का रोकना कि आज शनिवार है कल्ह लडाई करना।

उठे आल्ह वरजे नृपति । आजु सनीचर वार ॥
कालिह करै चहुआन सौ । चौरै जूझ विचार ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

आल्हा का कहना कि अपने देश को जलते देखना क्षत्रिय धर्म नहीं है। इस प्रकार उत्साह के अनेक वाक्य कहकर सब वीरों को उत्तजित करके आल्हा ने प्रतिज्ञा की कि कल्ह मैं पृथ्वीराज की सेना को उथल पथल कर डालूंगा।

जा धरती को पाय करि । धूवा जु देपै सोइ ॥
कहै आल्ह परिमाल सौ । छत्री धर्म्म न होय ॥
छ० ॥ ३२३ ॥

पावँद की देषे धुरी । अग रखावन सूर ॥
कहै आल्ह रजपूत कौ । दीजे नरक करूर ॥
छ० ॥ ३२४ ॥

पावँद घर को ताकि कै । इंद्रिय रस न कराय ॥
कहै आल्ह उन नरन कौ । गहरे नरक पराय ॥
छ० ॥ ३२५ ॥

बिगरी देखे नृपति की। चाकर कसक न होय॥
साठि सहस लौ नर्क में। भ्रमत रहै नर सोय॥
छं० ॥ ३२६ ॥

वैरी सौं हाँसी करे। यार धनी कौ सुद्ध॥
कहै आल्ह उन नरन कौ। कीजै स्वान प्रसिद्ध॥
छं० ॥ ३२७ ॥

चौपाई॥ एती मैं बानी उचारी। अब लगि यह मैं सबै समहारी।
काल्हि फौज पीथल की घंडौ। सामंतनि के जुद्ध बिहंडौ।
छं० ॥ ३२८॥

दूहा॥ आल्ह कही सबही सुनत। पन की मन की बात।
सूरज मंडल भेदिहैं। तें क्षत्री साक्षात॥
छं० ॥ ३२९ ॥

राजन आगैं पैज करि। कही बनाफर सोय॥
प्रात करौं प्रिथीराज सौं। जंग बिरुद्ध न होय॥
छं० ॥ ३३० ॥

राव को विदा कर राजा का महल में जाकर रानी से परामर्श करना, रानी का कहना कि अब इस समय शयन कीजिए सवेरे शत्रुओं का नाश कीजिए।

सबको यह नृप सीष दै। गेर महल फिरि होय॥
रानी सों मसलति करै। मन धरि चिंता होय॥
छं० ॥ ३३१ ॥

चौपाई॥ बोल चंदेल सुनौ हौ रानिय। अबतौ दिवस पाछिलौ मानिय॥
आय चढ्यौ चहुआन अषारौ। करता बिन कोऊ न उबारौ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

रानी कहै सुनौ नृप राज। करिये सैन सुएन समाज॥
प्रात जुद्ध करियौ अद्भूतह। मिलियौ आन दुहु दल दूतह॥
छं० ॥ ३३३ ॥

आल्हा ऊदल अपने महल में गए, और भोजन कर अपनी स्त्रियों के साथ भोग विलास मे उन्होंने आनन्द से रात बिताई।

आल्हन गये हवेली आपन। उदिल देवल मिलै सु जातन ॥
भोजन किए इकट्ठे होइ। चौथौ उदिल मिलियौ सोइ ॥
छ० ॥ ३३४ ॥

भोजन करिकै पौढौ जाइ। आप आप की चियें बुलाइ ॥
गैर महल है कद्रप घुले। अधरा रस अमृत फल फले ॥
छ० ॥ ३३५ ॥

परस परसपर आरस कीनौ। यह विधि ऊदिल रँग रस भीनौ ॥
अधरनि लागि सुप्रेम बढायौ। पाछे भष चीरा रस ढायौ ॥
छ० ॥ ३३६ ॥

पहर रात रहे स्नान कर गोरक्षनाथ का ध्यान, होम, नवग्रह पूजन आदि कर, चौहान का साम्हना करने को घोडे पर सवार हो दोनो भाई का चलना।

कवित्त ॥ पहरि निसा पाछिलिय। न्हान कौ नीर मँगायौ ॥
करि दातौन सनान। ध्यान गोरष को ध्यायौ ॥
कियव बनाफर होम। नवग्रह पूजा कीनव ॥
हनूपताषा जच धारि। करि कठह लीनव ॥
आइयौ तुरिय पहलै पहल। समर समै तापर चढय ॥
चहुआन पास लै पहु चहौ। सूरन पर धायन चढय ॥
छ० ॥ ३३७ ॥

ऊदल का मा को आकर प्रणाम करना, मा का कहना कि जाओ पृथ्वीराज से युद्ध कर स्वामी का काम बनाओ और मेरा मुख उज्ज्वल करो।

ऊदिल वीर बुलाय। बोलि इंदल सुत लीनौ ॥
देवी आगे आय। चाप प्रन्नाम सु किनौ ॥
पौथौरा ऊपरौ। पैज करिकै चढि जावहु ॥

सामंतनि सौं करै । स्वामि छट भारि दइ।वहु ॥
उज्जल जस जस राज कौ । देवल दे उज्जल करहु ॥
परचंड बात परिमाल करि । सीस ईस रुंडह धरहु ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ऊदल का कहना कि मैं सब सामंतों से खड्ग के साथ खेलूँगा और पृथ्वीराज को भगाऊँगा ।

चौपाई ॥ इह सुनि ऊदिल बचन उचारिव । भाई तुम नीकौ जु बिचारिव ॥
सांमतनि सौं षग्गन षेलहुं । प्रिथीराज के थट्टनि पेलहुं ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

देवल दे का दोनों बेटों से कहना कि आज नमक अदा करो स्वामी के काम में सिर देकर स्वर्ग का राज्य करो ।

देवल कहै सुनौं पुत दोइय । नौन हलाल करौ तुम सोइय ॥
षावंद आगैं सीस जुदीजै । निरभै राज सुरग कौ लीजै ॥
छं० ॥ ३४० ॥

ऊदल की स्त्री का कहना कि जो स्त्री पति का मरना सुन कर राती नहीं होती वह नर्क में पड़ती है ।

ठकुरानी ऊदिल की बोलिय । सुनियहु सास बचन यह षोलिय ॥
निहचैं बेद नरक तेहि भाषे । पिय कौ मरत जिया तन राषै ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

दूहा ॥ पीयहिं मरत जीया रहै । करै पुत्र की आस ॥
वह नारी निहचै करै । घोर नरक में बास ॥
छं० ॥ ३४२ ॥

पियन छोड़ जो ना मरै । नारी सती न होय ॥
अगत जाय भटकत फिरै । कही गोरजा सोय ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का सबेरे उठकर नगारे पर चाट दिलाना और अल्हा को बुलाना ।

चौपाई ॥ राजा जागि नकरो कीनौ । आल्हा काजै आइस दीनौ ॥
सिंघ नाद बाजी सहनाइ । बनी पघ्घरै हेमर ठाई ॥
छ० ॥ ३४४ ॥

आल्हा ऊदल को बुलाकर नागौर की ओर बढने की तैय्यारी करना । तैय्यारी का वर्णन ।

पद्धरी ॥ बुल्लाय आल्ह ऊदिल्ल राज । कीनौ नगोरा चहु बम्म साज ॥
साजियौ साज अन्नेक जोध । सामंत सूर करि करिव क्रोध ॥
छ० ॥ ३४५ ॥

बुल्लाय आल्ह नृप अग्ग लीन । बिलहन्न राज बाटन्न कीन ॥
अरि दिट्ठ दीन आल्हन्न काज । मानिक्क दीन पन्नान साज ॥
छ० ॥ ३४६ ॥

दलठेल तुरिय आरब्ब उच्च । समपियौ राज उद्दिल समुच्च ॥
हारिद काज हरि बाज दीन । पधार बस उपज्यौ नवीन ॥
छ० ॥ ३४७ ॥

गोयद काज दिय मृग्गराज । पर काज देस टट्ठी समाज ॥
वो दला दीन नव लेस सोय । उपजियौ कच्छ वर सुभट लोय ॥
छ० ॥ ४८ ॥

इंजि पास दीन मोपत्ति काज । कलिंघी जंच नृप लियौ बाज ॥
तारैन काज दिये तेज रूप । ऐराकि जात लियो नप्प नूप ॥
छ० ॥ ३४९ ॥

जगनक्क काज हय मोर दीन । दस ठेलि तुरी मुष अग्ग कीन ॥
पासे सु तुरिय ग्यारह हजार । दीनै सुबाट करि अरि बिचार ॥
छ० ॥ ३५० ॥

हज्जार साठि परिमाल सैन । सज्जियौ सार चदेल तैन ॥
पच्चास सहस पगुर सुदीन । चदेल काज परनाम कीन ॥
छ० ॥ ३५१ ॥

पचास पांच धरि पील अग्ग । गाजंत मह चालै सुरग्ग ॥
बैठियौ वीर हय आल्ह सोय । परिमाल राज ऊचर्‌यो लोय ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

पंचसी पील चढि, जसरथ्थ नंद । चापू चलाइ जुर करह, दुंद ॥
उच्चरै बनाफर सुनि चंदेल । हेमर चलाय दल करौ ठेल ।
छं० ॥ ३५३ ॥

परिहार उच्च सब सुनिव राज । असुर सु आल्ह चर रहिव बाज ॥
बैठंत पील पच सबद पूर । परिहि भीरतौ सीस सूर ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

यह सुनिय वीर चहुआन रान । बज्जाय वन्न सामुह चलान ॥
पष अग्ग कग्ग पुंडीर चंद । बिहसियौ बीर सुनि कान सुद्ध ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

दिष्षी सुफौज चंदेल राव । कापंत देह डग मगत पांव ॥
द्रग मूंदि कंपि आल्हा बुलाय । कालिंज मेल सुख मोहि लाय ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

दिज्जिय सुदंड प्रिथिराज काज । छंडहि सुराज सग्गर समाज ॥
दिज्जिय सुताह अधदेस बांटि । चहुआन सँग संगरन मंडि ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

परिमाल देव का डर से काँपते हुए आल्हा से कहना कि जो पृथ्वीराज को जीतकर मुझे कालिञ्जर पहुँचाओगे तो मैं आधा राज्य, पचास लाख रुपया और अपनी कन्या तुम्हें दूँगा।

चौपाई ॥ कॉपि कह्यो परिमाल नरेसह । आल्हा आधो दीजै देसह ॥
लाष पचास द्रव्य अरु कन्या । दै चहुआन मिलाइसु मन्या ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

दूहा ॥ देषि कान्ह परिमाल नृप । वचन कहै अति अंध ॥
मोहि कलिंजर मेलियै । दै धर अद्ध सबंध ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चन्देल की सेना का आगे बढना ।

महला भोपति सग है । दल सौ कढिव चँदेल ॥
पिली फौज चदल की । झिली बनाफर षेल ॥
छ० ॥ ३६० ॥

चन्देल की सेना आते देखकर पृथ्वीराज का व्यूह रचना और लड़ाई के लिये सेना सजना । उधर आल्हा और ब्रम्हानन्द का अपनी सेना को सजना ।

मोतीदाम ॥ दिपि राजन फौज चँदेल पिली । दरियाव समान अमान हली ॥
इक लष्य बिलोकिय सैन घनौ । चहुआन बनाइय चारि अनौ ॥
छ० ॥ ३६१ ॥
मुष अग्ग सु कन्ह अमान कियौ । भर चद महीसुर सग दियौ ॥
कमधज्ज सु निड्ढुर लाषन ये । अँग सजमराय सुभाषन ये ॥
छ० ॥ ३६२ ॥
कनक वडगुज्जर सारग ये । जहँ आल्ह कुँआर से तारग ये ॥
अचलेस नवल्ल हरीसिघ ये । जहँ जादौ राम रिपौ रिष ये ॥
छ० ॥ ३६३ ॥
इतनै सिरदार अगै धरिये । फिरि दाहनि बाजुवकौ भरिये ॥
कछवाह पजून रू पाल्ह नय । नरसिघ पहारसुत वरय ॥
छ० ॥ ३६४ ॥
तहँ धावर धीर समो बरिय । विझुराज समाज समो धरय ॥
पम्मार सलष्य सुय वरय । हनवत समान हठी वरय ॥
छ० ॥ ३६५ ॥
तहँ पीचिय देव रजैत पिले । सँग हाहुलि राउ हमीर चले ॥
दिसि दाहन सामत ए करिय । दिसि बाइय भौह चँदेल किय ॥
छ० ॥ ३६६ ॥
अचलेस मलेसिय सग दिय । दसि दच्छिन सावँत भूमि रय ॥
दोय वीर हमीर गभीर नर । अति ताइय सभरि इँस वर ॥
छ० ॥ ३६७॥

तहँ माल चंदेलय पूरनयं । तहं बाम दिसा मुख नूर नयं ॥
सइ साँमल साँषुल संग दियं । इतनें सिरदार सुधाम कियं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

कयमास कमधवज विक्रमयं । तहं टाकं सु चाड, सु विक्रमयं ॥
जहां गोड सपत्तिय मोर दयं । तहं षेत षगार सुचार भयं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

कयमासु रू सम्हरि मध्य हुवं । चतुरंगिय सैन दिठालि दुवं ॥
हलकारिय सैन नरेसु रयं । भर चाँवंड राय बली धरयं ॥
छं० ॥ ३७० ॥

उत आल्हन फौज सु देाय कियं । हलकारि बनाफर लोह लियं ॥
कमधज्ज सुलाषन अंग कियं । चहुआन सुमंगल संग दियं ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

तहँ रूप मौ कूंवर वांम सियं । सिकवाल सों कूंवर पाल हियं ।
तहँ चालुक सारँग वीर वरं । जहँ जादव रैनिसि सीस धरं ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

वर ताल्हन वेग हरोल कियं । हय बीस हजार सु संग दियं ॥
बिचि तीन हजार की गोल रची । सिरदार सुलष्षन मध्य सची ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

तिन पूछि सु आल्ह बनाफरयं । जिन अग्ग सु जुद्ध लिये भरियं ॥
दिसि बांइय मोहन दास कियं । सिर कासी लुद्ध प्रताप लियं ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

अरि सिंघ सु संग समाज बरं । पंमार सुसाजि चल्यो अमरं ॥
तहं सैंगर राय अमान भये । जहं वांम दिसा भरनैन लिये ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

दिसि दाहनि वीरम वैर पुरं । द्वतियं दलकाइ पतेज नरं ॥
भरनं अति तोवर मोहनयं । परिमाल सबै दल सोहनियं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

महकुन्न सु वागरि धारि हियं । इतनै भर दाहनि फौज कियं ॥
बड़ गुज्जर देव करन्न मिले । दस देाइ हजार चँदेल चले ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

चौपाई ॥ ब्रह्मानन्द आल्ह विचि सार । आगैं उद्दिल वधु सुधार ॥
वाय दिसा कौ मोहन कोनौ । दक्षन पूरनमल्ल सु दीनौ ॥
छ० ॥ ३७८ ॥
पग हजार पचास चले मिलि । और पचास चदेलन के मिलि ॥
चारि फौज आल्हन सजि सार । प्रिथीराज के बीस हजार ॥
छ० ॥ ३७९ ॥

परिमाल देव का पृथ्वीराज की सेना देखकर डरकर दस हजार सेना ले कालिञ्जर की ओर भाग जाना ।

दूहा ॥ देषि फौज परिमाल जू । कापि चल्यौ तजि पान ॥
दस हज्जारह सग लै । तज्यो महोवौ थान ॥
छ० ॥ ३८० ॥

कुँवर ब्रह्मानन्द का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना ।

ब्रह्मादिति फिरि आइयौ । सिर छत्री धूम धारि ॥
प्रिथीराज सो पा धरै । वज्जावन तरवारि ॥
छ० ॥ ३८१ ॥

युद्ध आरम्भ होना । कन्ह चौहान का घोर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ दुहौ सेन मिल्ले दुहौ बाग लीनौ । दुहौ धारि भ्रम्म वर द्रष्ट कीनौ ॥
दुहौ सांगि कढ्ढी दुहौ कोरवट्टी । दुहौ वार बानी सबद्द उचट्टी ॥
छ० ॥ ३८२ ॥
बजै भेरि नीसान जगी तवल्ल । बजै नाद तुरही नफेरी सुवुल्ल ॥
दुहौ नाद कीनै सुर सप भारी । दुहौ नाम हक्कै सुहांहां उचारी ॥
छ० ॥ ३८३ ॥
कहै चद कब्बी सुमो चाहुवान । चलायो गरट बांधि बांई सुजान ॥
सुप पाठ जपै सु ईस भवानी । मिलायै बली बाहु धावै जुवानी ॥
छ० ॥ ३८४ ॥
अगो कौन चदेल सेना सुहथ्थी । रहै पुट्टि असवार भर भार सथ्थी ॥
चलायो सुप कन्ह पट्टी उठाई । किधौं रावनै राम भौहै चढाई ॥
छ० ॥ ३८५ ॥

अगे आय हाथीन पै हथ्थ वाहै। बर दंत तानें उठानं अमाहै ॥
उपारंत दंतं बजा वाहु जोरं। गहैं पूछ सुंडं वजावैं अमोरं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कहूं जे भुसुंडन्नि पै तेग तावैं। कहूं कोपि करि तक्षि धरनी मिलावैं॥
कहूं भाव सहैं कहूं जाय मारैं। कहूं धीक बक्कैं कहूं कौ प्रचारैं॥
छं० ॥ ३८७ ॥

चहूआन बल सौं कियौ पील कानी। मुषं मंच बोलंत संकर भवानी॥
हकं हांक बक्कं दहै सैन सोई। बजावै बरं लोह निरमोह होई ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

करै षंड षडं धटै धाउ धारै। बिकट्टं बली बाहु पट्टं निहारै ॥
चलावंत तीरं गहीरं गुमानी। षनक्कंत धरनी भनक्कै सु बानी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

उरं सेल लग्गौ परं पार होई। गिरै नट्ट वासे कला चूक होई ॥
बहै कंध किरवान वंधं षुलावै। परै मुंड धरती सुरुंडं नचावै ॥
छं० ॥ ३९० ॥

गुरज्जै वहै सीस रीसं रमानी। सिरं होत चूतं बिषूतं जवानी ॥
वहै सुंदरंगं सार धारत्त छत्तौ। परै पील मसवार धरनी विरत्तौ ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

करै बार हांकं कटारी करूरं। करै मार मातौ परै चक्क चूरं ॥
इसी भांति जुद्ध कियौ कन्ह भारी। मिथ्यो धयान मानं षुली रुद्र तारी ॥
छं० ॥ ३९२ ॥

कन्ह का अपनी वरिता रो रोना गौ हलचल गाया देना। युद्ध का वर्णन।

दूहा ॥ कन्ह कटक कीन्हौ कहर। हटक परी दल मांहि।
भटक वीर भागे बली। कोउ पलट्टै नांहि ॥
छं० ॥ ३९३ ॥

रसावला ॥ कन्ह कोप्यौ तबै। कौन जुद्धं जबै ॥

धाय खूधो वली । सर्व फौजै हली ॥

छ० ॥ ३९४ ॥

चाय पाय गहै । ढारि धरनी महै ॥
कोय वज्ज किय । पाय सैना लिय ॥

छ० ॥ ३९५ ॥

गाय रामं दुपं । धाय हट्टे सुप ॥
वीर नाद जचै । चाय कोय मकै ॥

छ० ॥ ३९६ ॥

छाय सुरगा रह्यौ । आय हस नह्यौ ॥
धाय बोलै घटं । ठाय पन्न पट ॥

छ० ॥ ३९७ ॥

ठाय रावै नर । बाय वाहै वर ॥
छाय नापै दलं । ताय तेग कल ॥

छं० ॥ ३९८ ॥

धाय वीर वली । दाप दीय दुली ॥
धाय पारे धर । नाय वय्य वर ॥

छ० ॥ ३९९ ॥

पाप टूटै फह । फाय वेल फह ॥
घाय वज्जै वर । भाय दोरै वर ॥

छ० ४०० ॥

पाय नारी मल । ज्वाप ज्वान जल ॥
सैन कपै सवै । कन्ह देषे जवै ॥

छ० ॥ ४०१ ॥

पाय लीने पग । हस लागे मग ॥
सैन कपै सवै । कन्ह देषे जवै ॥

छ० ॥ ४०२ ।

दूहा ॥ कान्ह पानि देष्यो जवै । भग्यो सेन चदेल ॥
हनि हाथी हल कान के । सुरिमोहरा रन ठेल ॥

छ० ॥ ४०३ ॥

आपनी सेना को कटते देख कर आल्हा का अपनी ओर के सरदारों का इकट्ठा करके ललकारना ।

कवित्त ॥ देषि पराक्रम आल्ह । मद्र लाषन सौ बुल्लिव ॥
ता लनि बेग पठान । रूप येतौ पग षुल्लिव ॥
सौलंषी केहरी । बैस कल्यान वीर वर ॥
बोइथ तौंवर वेहसि । सूर सैंगर गुमान धर ॥
धुर धवल सीस धारवि धरनि । मुत्ति आस संगर करिय ॥
सब सूर बीर एकत्त हुव । धारा तीरथ आदरिय ॥
छं० ॥ ४०४ ॥

दूहा ॥ आल्हनि जदलि जायकै । सँभाल्यो सब सैन ॥
सकल सूरमा टेरिकै । रन मन आन्यौ हैन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

पद्धरी ॥ धावंत आल्ह सम्हारि सैन । सिरदार चारि बर कह्यौ तैन ॥
गोयंदू राउ हरियंदू सोय । येकल चलाय दल लध्ध लोय ।
छं० ॥ ४०६ ॥

मोरीय रूप सैंगर असान । जादवा इंद बल लह्यौ पान ॥
मंगल चुहान तोवर समथ्थ । लालक्क केस रन समर पथ्थ ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

बड़गुज्जर रन महाबाहु । सुक्कल बैस बड़ समर चाहु ॥
नर हरिय गौड़ कायथ कल्यान । सैंगर बरेह जे जल्ह ज्वान ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

बघेल और पूरन असीर । षग्गा सषग्ग परमा सनीर ॥
लोधी सु धीर बर धरे धर्म्म । ईदल सुसोम वंसी सु कर्म्म ॥
छं ॥ ४०९ ॥

गोतम जुझार पल्हन पमार । गोकुल सु बघेला व्यरचि सार ॥
भगवान सूर चंदेल चित्त । डोंगरसि देव दीवान रत्त ।
छं ॥ ४१० ॥

जगनक्क भट्ट जल्हन जवान । ईसुर सुवान यौ रोर पान ॥
कायथ्थ कैसना क्रम्म चद । मकरद और श्रीवास द्वद ॥
छ० ॥ ४११ ॥

वरही सुदेव कृत दुरित जोर । गोवा क्रपाल जूझन अमोर ॥
वल्ल गोत जुद्ध जुत तेग वाह । अठ भौ पाहनि मत राय गाह ॥
छं० ॥ ४१२ ॥

भिष्यौ सु भूपनि रनय स्वूर । कछवाह रामा लिये तूर ॥
गम्हीर वेग आजानवाह । सुर कौ वसत नित समर चाह ॥
छ० ॥ ४१३ ॥

अनुरुद्ध सिंघ सैंगर भुवाल । विरसिंघ कट्ट है आल्ह काल ॥
जटवार जाट कमनेत पूर । धवरा सु राय धुरवस स्वूर ॥
छ० ॥ ४१४ ॥

ऐते सु इकट्ठे भये जोध । सामत स्वूर पर करह क्रोध ॥
परिमाल सव्य समरथ्थ देषि । सामत स्वूर सव नयन पेषि ॥
छ० ॥ ४१५ ॥

कैमास चद पुडीर जोय । निड्डुरह जैत पज्जून होय ॥
हाहुली राय हम्मीर वीर । सुलप पम्मार सज्ज्यौ गहीर ॥
छ० ॥ ४१६ ॥

रावत्त राम तौवर पहार । सजम्म राय रन विषम सार ॥
है अतिताय चहुआन वक । नरनाह कन्ह अग्गे निसक ॥
छ० ॥ ४१७ ॥

चावड राय उप्पर अमान । उप्पर कारन्न सौना सुजान ॥
निड्डुरह राय चहुआन सग । लप्पन कमद्ध दल दयो पग ॥
छ० ॥ ४१८ ॥

परिमाल सग लप्पन सु धाय । प्रिथिराज सैन निड्डुर सहाय ॥
भाई सु देाय वगमेल कीन । गह चरन हक्कि किरवान लीन ॥
छ० ॥ ४१९ ॥

जयचन्द के भतीजे लाखनसी का घोर युद्ध करना । लाखनसी की वीरता का वर्णन ।

दूहा ॥ लाखनसी परिमाल जू। निड्डुर डर चहुआन ॥
दुप सामंत सु आहरे। कमधुज सैन सुजान ॥
छं० ॥ ४२० ॥

चौपाई ॥ लाषन जैचंद बंधव नंदन। निड्डुर राय भतीजा द्वंदन ॥
दोऊ बीर बाहुरे जंगह। दल चंदेल सम्हारी अंगह ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

मोतीदाम ॥ मंडि निड्डुर लाषन सीह नरं। चहुआन चंदेल सु निरषि भरं
कमधुज्ज सो दोउय बार अरे। बहु लाज जंजीरन सौं जकरै ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

हलकार कियं बल धारि बपं। निरषै चहुआन चंदेल अपं ॥
बर जंचिय मंचिय लाग उरं। बपु फुट्टय बीर बंबार परं ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

लगि तीर सनाह न पार रुषं। मछरी बर जार मै काढि मुषं ॥
लगि सैन दुहौं बप पेलि कियं। निकसै फन पंनग बार बियं ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

किरवान लगैं बलवान हयं। चब्बूज मनों ढरकंत जयं ॥
जमदाढ़ लगै करि गाढ़ सहू। दुसही कर काढ़ि अटारि वहू ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

इक सथ्थ लरैं बल वाथ वली। तहं श्रोनित की सलिता जु चली ॥
गहि दंत सुमंत उपारि लियं। कटि पीलनि डील प्रहार कियं ॥
छं० ॥ ४२६ ॥

उचकाय कै पूछ बली धुरयं। हनवंत सुद्रोनगिरी गहियं ॥
हय के गहि पाय पटक्क धरं। उड़ि हंस चले मिलिकैं अगरं ॥
छं० ॥ ४२७ ॥

गहकै कर दोय उपाटि लियं। अरि सेन समूह सबै दहियं ॥
उड़रेनु अकास अपार छयं। नहि सूझत अच्छन भास अयं ॥
छं० ॥ ४२८ ॥

यह भांति लरैं कमधुज्ज बली। चहुआन चंदेल की फौज हली ॥

अप अप्प विगारि कै रोस रुध । विफरै वर वग्घ सु दोइ जुध ॥
छ० ॥ ४२९ ॥

दूहा ॥ लापन निड्डुर राय दुहु । कमधुज सुदेव जवान ॥
आइरिए समर सकज्ज । अमर सीस समान ॥
छ० ॥ ४३० ॥

कवित्त ॥ निड्डुर राय कमधज । वधु जयचंद सुतन कहु ॥
लापन सी राठौर । अनुज पगान मान सहु ॥
चाहुआन चंदेल । मिले दल मेल पेल सजि ॥
भाई भाई विरचि । वीर निस्सान पान गजि ॥
पिष्पत अनिय दोई धनिय । लपि लेय चढा परिये प्रगट ॥
परिमाल और प्रिथिराज ढिल । स्वामि काम सौपत धटि ॥
छ० ॥ ४३१ ॥

लापन सौ उप्परै । भरि तालनसी आयव ॥
मोरिय रूप जुधीर । द्वद जादव चलायव ॥
मगलसी षहुआन । तँवर उथ्थान नाह नर ॥
कुवर पाल सिकवार । दोत चालुक केसो भर ॥
वड़ गुज्जर सौनिग सरस । सैंगर राय अमान सजि ॥
लापन हमीर येते भिरन । आय पगु कुमक्क सजि ॥
छ० ॥ ४३२ ॥

निड्डुर राय सहाय । चले सामंत मत्त धरि ॥
कन्ह जयत कैमास । लप नरसिह वच करि ॥
पालन धौ पज्जौन । वीर तौवर पहार वर ॥
पिले पते सामंत । हथ्थ साम हजार कर ॥
दुहु सैन एन दिप्पियव । नयन धाय पग्गे सुहथ ॥
चहुआन वीर चंदेल ढिल । प्रथम लोहि लीनौ सुमथ ॥
छ० ॥ ४३३ ॥

पद्धरी ॥ विरचियौ लोह लापन सुधाय । तासीथ कोपि निड्डुर सहाय ॥
वज्ज वजावहु गल गरजि नाग । सज्जियौ सैन उत्तग बाग ॥
छ० ॥ ४३४ ॥

हलकारि श्रिष्ट किलकारि दीय। हनुवंत सकति पढि उकति सोय॥
लष्मन जरद्द बजरंग वीर। निहुर अराधि सकती गहीर॥
छं॥ ४३५॥

हंकारि सद्द बल करत हांक। तिहु लोक मद्धि चलि बढ़िय धांक॥
बिध फुरैं बीर वानैति वाहि। मंगल तुरंग सब दिये ढाहि॥
छं०॥ ४३६॥

पारंत दंत मारंत पील। धारंत तेग अति तेग डील॥
गहि सुंड मुंड फेरंत पाइ। गहि लोमछ हाथ्थिनि गाहि॥
छं०॥ ४३७॥

हंभर उठाय पटकेत भूमि। अस्वार देह हेाय फांक गंभि।
वाहंत वान बलवान एक। टूटंत अंग फट्टंत फेक॥
छं०॥ ४३८॥

छूटैत बंदूकैं सलक कद्द। धरनी पताल पर पूर सद्द॥
करि सेल षेल बगमेल देाय। निकरंत पार वर नाग लोय॥
छं०॥ ४३९॥

दुहुं तेग बेग लगि कंध गुंड। कहेरत पिंड धर परत मुंड॥
लागत कटारि तन हीक वार। जची अटारि जनु षुले द्वार॥
छं०॥ ४४०॥

रज्जिक बसन्न पीटंत कोपि। फन करत नाग भीजंत रोपि॥
वादंत मुष्टिका रूष्टि भाल। निकरंत आंच द्वै श्रोन लाल॥
छं०॥ ४४१॥

जादवां द्वंद मोरी सरूप। मंगल चहुआन मडि मँगल रूप॥
बोइथ तौंबर भर हथ्थ वाहि। कूंवर सुधाय जादौं सहाय॥
छं०॥ ४४२॥

सौंनिग्ग राव सेरं सु लाज। तालन पठान सजि समर काज॥
हज्जार संग पचास भीर। लाषन सुबीर सजि बंग भीर॥
छं०॥ ४४३॥

बाहंत तेग बिकरंत आप। इक सथ्थ होय दौरे उताप॥

इक्कलौ कियौ निट्ठ, रस चौज । पचास सहस जयचद फौज ॥
छ० ॥ ४४४ ॥

धावत तेग बाहत रूक । लपटत लाय उट्ठत ऊक ॥
इक्कलो लग्यौ निढ्ढुर नरेस । दौरयौ सुकन्ह कैमास तेस ॥
छ० ॥ ४४५ ॥

पज्जून सलघ मिलि जैत जोर । नरसिध सिध चलियौ अमोर ॥
कीने सु चले सामत चोज । रुक्कियौ आय बिचि पग फौज ॥
छ० ॥ ४४६ ॥

घुलिये सु अघ्घि पट्टी सु कन्ह । उठत रोस भए लाल वन्ह ॥
सांमह पिल्यो तालन्ह वेग । आयौ सुकन्ह पर कट्टि तेग ॥
छ० ॥ ४४७ ॥

कीनौ सह मगल गरजि चाय । दीनौ सुकन्ह कै कध आय ॥
घूमियौ कन्ह किरवान चोट । पीछै सु वन्ह हनि कुत चोट ॥
छ० ॥ ४४८ ॥

पुथ्यो पट्टानह भर समेति । भेदी सुधत्त तरवारि षेत ॥
फिरि दई आय कयमास तोर । सिर पर्यो टूटि उठियौ सु घोर ॥
छ० ॥ ४४९ ॥

हनियौ पठान सैनीय देषि । चलियौ सु साजि सैगर सु षेषि ॥
आयौ पजौन सैगर सु अग्ग । लागियौ कुत छत्री सुलग्ग ॥
छ० ॥ ४५० ॥

पज्जौन दई किरवान धाय । दीनौ समेत सगर षपाय ॥
दिप्पिये रूप मोरी पजौन । आइयौ सत्त सामत तौन ॥
छ० ॥ ४५१ ॥

मोरियौ रूप मगल चुहान । जादुवा इद चदेल मान ॥
मालून सुकेसव समर सोय । अठभैया अत्ति उम्मडि दोय ॥
छ० ॥ ४५२ ॥

नारैन नर बदनि चाढि वीर । पज्जौन सीस साजिय गंभीर ॥
मचकत धरा चलकत सेस । कसकत फरक चदेल देस ॥
छ० ॥ ४५३ ॥

वाज्जंत वज्ज कर सवर सात । मनु करत अंत परवत निपात ॥
पज्जौन कोपि लिय तेग हथ्थ । मारियौ राय सैंगर समथ्थ ॥
छं० ॥ ४५४ ॥

फूट्यौ सुदेह कथो तुरंग । धर भई लोल रत्ती सुरंग ॥
जादवा इंद चंदेल मानि । पकरयौ मथ्थ पज्जून पान ॥
छं० ॥ ४५५ ॥

हेमर समेति धर परिय राय । फेरिय सुसीस कर मसकि ताय ॥
भजि सुसथ्थ किय समर छाड़ि । उभ्भै पजौन रन माहि टाड़ि ।
छं० ॥ ४५६ ॥

जैयचन्द की सेना का भागना ।

कवित्त ॥ हनि ताल्हन पठान । कन्ह काढ़े सुप्रान रन ॥
सैनह संगर रूप । मानि चंदेल परे तन ॥
भाल्हन केसव दास । पासि परिगह सम सुम्भव ॥
करबाहै कूरम्म । जोर जम लोकह जुत्तव ॥
बारह हजार रजपूत कटि । हाथी पंच जु देस दल ॥
जयचंद सेनि मुरि करि चलिय । परिय फौज सामंत हल ॥
छं० ॥ ४५७ ॥

दूहा ॥ हाथी पंच तुरंग सथ । अर रजपूत पचास ॥
भइ पजून सौं मोरछा । इते परे संग पास ॥ छं० । ४५८ ॥

अपनी सेना को भागती देख लाखन सी का ललकारना । सेना का फिर लौटकर लड़ने के लिये डँट जाना ॥

भगिय फौज लष्षन लषिय । ताल्हन आए कामि ॥
हांक मारि जयचंद दल । बल करिकैं फिरि आनि ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

चौपाई ॥ ताल्हन परे पठान सु जंगह । पंच परे सिरदार उमंगह ॥
बारह सहस जंग रन खूते । हाथी तीस मतंगह हूते ॥
छं० ॥ ४६० ॥

मुरछे राय पजून सु सोई । हाथी पंच महामद होई ॥

सगुत परे पचास जवानह । ऊपर रन कौनौ चहुवानह ॥
छ० ॥ ४६१ ॥

भाजी फौज पग की सोई । सो लाषन देषौ दग दोई ॥
बानी कही रत्त करि नैना । फिरि यौ आव पग की सेना ॥
छ० ॥ ४६२ ॥

दूहा । बानी सुनि सैंना फिरी । लाषन कही निराट ॥
घेरयौ निढ्ढुर आय के । फिरे सोमुहै थाट ॥ छ० ॥ ४६३ ॥

युद्ध का वर्णन । लाखन सी का मारा जाना । जयचन्द की सेना का भागना ॥

मोतीदाम ॥ सुनी दल लष्षन बानी सोय । किये अग पील चले रिस होय ॥
पिलै उंग पील चले सरदार । पर्यौ सिर निढ्ढुर ऊपर भार ॥
छ० ॥ ४६४ ॥

हजार छतीस सजे रन सुद्ध । जुरे सब आय रूपे कमधज्ज ॥
कठेरिय बावुअ जोर जवाने । विरचियौ गौतम श्रीभगवान ॥
छ० ॥ ४६५ ॥

जुरे दल पत्तिय वैस भरद्द । जुरे अठ भाया हुते नरवद्द ॥
नरायनदास वियौ बंधु लार । मुकद सी कायथ झिल्लिय सार ॥
छ० ॥ ४६६ ॥

लये नरनाह सु कन्ह दुवाह । चले कयमास विय सैंचाह ॥
पिल्ले भर चद पुडीर सु सोइ । महाभर निढढुर कौ रन जोइ ॥
छ० ॥ ४६७ ॥

उतै रुच लष्षन नासिय सुद्ध । इतै रुपि निढ्ढुरराय सो जुद्ध ॥
वहै किरवान जु वानिन हथ्थ । कियौ रन ऊपर जै जै पथ्थ ॥
छ० ॥ ४६८ ॥

भभक्किय सैन सु छुट्टित तोप । करक्किय जच्चिय खूरन लोप ॥
भरक्कय बाननि पंजर छेदि । करक्कय सेल दुहो उर भेदि ॥
छ० ॥ ४६९ ॥

लगै वलि सग्गि सु पील गिरंत । सनम्मुष खूर उपारह दंत ॥
वहै अब्बार सुपारहि मार । करे किलकार सु जुग्गिन लार ॥
छ० ॥ ४७० ॥

वहै किरवान परै सिर सूर । करै वपु होस दुहो दल पूर ॥
मिल्यौ षग निढ्ढुर लष्षन आय । निरष्षहिं नूर वियौ रस पाय ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

गही किरवान सुलष्ष नरेस । दई किरवान भुकट्टिय केस ॥
लगी किरवान पगी बल मार । चल्यौ भर सूर भ्रम्यौ सत वार ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

गही कर निढ्ढुर वीर गुरज्ज । दई वर लष्षन सीस भुरज्ज ॥
हजारक टूक भये सिर सोय । परयौ धर लष्षन लष्षन लोय ॥
छं० ॥ ४७३ ॥

भयौ धर मूर्छित निढ्ढुरराय । गिरे धर लष्षन अंत सुपाय ॥
गही किरवान सु कन्ह नै कोपि । चले कयमास रु चंद सुजोपि ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

उतै सनमुष्ष सु बाबुव साजि । भये भगवान हरौल सु गाज ॥
जुरे दलपत्ति लिये किरवान । चले नरबद्द नरायन तान ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

भुकंदसि कायथ अग्ग सु होय । हुतौ कासीदल पंग कौ सोय ॥
मि यौ वर कन्ह पुडीर सु चंद । कठेरिया बाबूअ रोकियौ दंद ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

इतै भगवानिय गोतम गाजि । नरब्बद और नरायन साजि ॥
लई कर संगि सु कन्ह नै कोपि । दई भगवान के सीस पै रोपि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

भइ सिर पार परयो धर मध्य । इतै चलि आइयौ बाबुअ रद्धि ॥
नरायनदास नरब्बद कोपि । मिले तिहि आनि कै कन्हर जोपि ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

मुद्गर कन्ह पै तीन नवाहि । गही तन कन्ह सुधौपियौ पाहि ॥
गहै तब कन्ह नै तीन चरन्न । पटक्किय लै करि उत्त थरन्न ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

भये सिर चून हयंसिस तीन । किये नरजीव वली वपु हीन ॥
भजी जयचंद की सेन विराट । कियौ नृप लाषन निढ्ढुर काट ॥
छं० ॥ ४८० ॥

दूहा ॥ लायन सी रन पौढियौ । नरवद और नरैन ॥
परि घाइल निठ्ठुर कमध । दो अठ भैया तेन ॥
छ० ॥ ४८१ ॥

चौपाई ॥ परे कठरी बाबू जग । अरु गोतम अगिवान अभग ॥
नरवद अरु नारैन सुकट्टिव । पगु काम रन तान उपट्टिव ॥
छं० ॥ ४८२ ॥

जयचन्द के सरदार कायस्थ मकरन्द का घोर युद्ध करना । युद्ध का वर्णन । मकरन्द का मारा जाना ।

कवित्त ॥ दौरि दलपति वीर । वैस दाउन दल भाई ।
सनमुष ह्वै औवार । हतौ वकसी दल सोई ॥
लपि कायथ मकरद । चद पुडीर अषोई ॥
कर लेपनि किरवान । दत सावतन वोई ॥
उचर्यौ इष्ट गिरजा सुमुष । करुष करुष क्रोध सै लिय ॥
जयचद लौन धरि सीस पर । प्रगट लोह सभरह किय ॥
॥ ४८३ ॥

भुजगी ॥ पिल्यौ वैस दलपत्ति सनमुष्य सूरौ । गह्यौ तेग हथ्थ समथ्थ करूर
वियौ जपियौ जोध मकरद वीर । अघोर मडवे विचारे गहीरं ॥
छ० ॥ ४८४ ॥

हलाल कियौ नौन पग नितब्ब । भयौ पाज चहुवान दलरोकि सब्ब
गजै नालि गाला बदूकैं बरक्कै । किते कायर अग जघ धरक्कै ॥
छ० ॥ ४८५ ॥

वहै नाव-कठाव कतौर सोरै । लगै अग अग मनौ सर्प कोरै ॥
मिले हथ्थ-हथ्थ विहथ्थ सुवानी । किधौ ज्याल षेलैत होरी रवानी ॥
छ० ॥ ४८६ ॥

विकट्ट वहै-पग्ग घट्ट सुलग्गी । सिर फारि अग हय देव पग्गी ॥
झुलै झूलजूझै सुझूलै झट्टकै । चर चूरिया चाय आघाय चुक्कै ॥
छ० ॥ ४८७ ॥

ठठकै नही सूर लपि लोह अष्षौ । टटक्कै पर टूटि मकरद दिष्यौ ॥

इतै चंद पुंडीर मकरंद देष्यौ। अमोर भुजाते वचन्न सुभष्यौ ॥
छं० ॥ ४८८ ॥

गह्यौ चंद ने काइथं पग्ग केरौ। लष्यौ आज षंगा सवै सैन तेरौ ॥
इतैचंद मकरंद मुष मेल कीनौं। दुहौं हथ्थ किरवान वलवान लीनौ॥
छं० ॥ ४८९ ॥

दई चंद्र कै सीस पै वीस वानी। किधौं वीज आकास की षीज पानी॥
लटक्कै सुचंद धरा मोर छायं। लष्यौ वीर कै मास वाजी सुतायं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

दई दौरि कै मास मकरंद सीसं। करी आप सीसं सुदेवी सगीसं ॥
लई फाक अंग हथं फार षग्गी। षहा षग्ग चली धरा आय लग्गी ॥
छं० ॥ ४९१ ॥

पर्‌यौ देषि मकंद दलपत्ति धायौ। मुषं मेल लीनौ करं सेल सायौ ॥
हन्यौ आय कयमास कै अंग भारी। वरं भेदि अंग निहंगं करारी ॥
छं० ॥ ४९२ ॥

कट्‌यौ सेल कयमास हथ्थं गहायौ। मुषं मेल कीनौ फिरं सेल सार्‌यौ
हन्यौ काइथं वैस कयमास भारी। फबी जीत चहुआन प्रम्मान सारी॥
छं० ॥ ४९३ ॥

मकरन्द का मारा जाना और कैमास का विजयी होना।

चौपाई ॥ हनि मकरंद काइथं जंगह। दलपति वैस दवनि किय अंगह ॥
जहा चंद घाइल मुझ्झानै। भई जीत कयमास सुभानै ॥
छं ४९४ ॥

तीस सहस लाषन के संगं। सम्मर भांझ परे कटि अंगं ॥
हाथी परे तीस पर पांच। बोले चंद बदन वर सांच ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

निढ्ढुरराय का घायल होना, कन्नौज की सेना का काम आना। पृथ्वीराज की विजय का वर्णन।

घाइल निढ्ढुरराय अचेत। वासठि षेर कमद्धज षेत ॥

कनवज कुमक कामि सब आइय । फते लई चहुआन अचाइय ।
छ० ॥ ४९६ ॥

आल्हा का कहना कि लाखन सी तो काम आए पर कुछ चिन्ता नहीं मैं तो अभी तयार हू ।

दूहा ॥ आए लाषन काम रन । उचरे आल्ह सुमाय ॥
हम आवेगे काम सब । राज चद नहि जाय ॥
छ० ॥ ४९७ ॥

आल्हा का सब सरदारो को इकट्ठे करके उत्तेजित करना ।

चौपाई ॥ उचरै आल्ह सुनो सब सगी । पौथोरा की फौज उमगी ॥
मारे लाषन ताल्हन सूर । नायक निरवाहे सब पूर ॥
छ० ॥ ४९८ ॥
जगनक भाट बुलाये आगे । बाइक कहि कनवज्जहि जागै ॥
लाषन आल्हन वचन निवाहे । पौथल दल पग्गन सो ढाहै ॥
छ० ॥ ४९९ ॥

आल्हा का कुँवर ब्रह्मादित्य से कहना कि आप घर लौट जाइए मैं लडाई को देख लूगा ।

कवित ॥ उचरि आल्ह सु बचन । ब्रह्माजित करिये कानह ॥
आप युद्ध छडिये । जाहु जीवत घर मानह ॥
हम करिहैं सग्राम । ताम आवै घर काजइ ॥
भूमि कलिजर जाहु । मिलौ परिमाल समाजइ ।
किज्जियौ सेव तजि जोम को । दड दिव्य दै भषियहु ॥
किज्जियौ सेव तन सैहुडा । नगर महोवा राषियहु ॥
छ० ॥ ५०० ॥

ब्रह्मादित्य का कहना कि मैं अभी पृथ्वीराज की सेना को काट गिराता हूँ मैं पीठ नहीं देन का ।

चौपाई ॥ उचरे वचन ब्रह्माजित लोइ । सुनिये आल्ह अवन दै सोई ॥

तुम ऐषत षग्गनि तन षंडौं । संभरिया को सैन विहंडौ ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

लाषन ताल्हन काम सो आये । अरु मंचौ मकरंद कटाये ॥
अबै बनाफर ढील न कीजै । निरभै राज सुरग कौ कीजै ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

ब्रह्माद्दित्य की वीर रस सानी बातें सुनकर आल्हा का सब सरदारों को इकट्ठा करके उत्तेजना के वाक्य कहना ।

पद्धरी ॥ उच्चरै ब्रह्मजित सुनौ आल्ह । चल्लिये जंग छचौन चाल ॥
लीजिये वाग सब मोह छंडि । सूरमा लोक भेदो सु तंडि ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

सुनि बैन आल्ह उद्दिल बुलाय । दीनौ सुवोज भारथ्थ भाय ॥
केसवादीत चंदेल सूर । वोइथ्थ वीर परवार पूर ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

कोपियौ राय सलगौर लोह । ईसरह दास लोधी सुतोह ॥
माल्हन बोलि भोपत्ति भूप । बोलियौ वैस नरपाल रूप ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

रूसतग्ग षान पट्टान पाय । माल्हन बीर सत साल आय ॥
सकतेस सोम बंसी मरह । जगते जस जाय गोतग्ग सह ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

प्रौहित्त सु प्रमानंद नाम । मायर मरह काइथ्थ ताम ॥
वोलियो गंग बनिया परग्ग । जगनक्क भाट धारै सरग्ग ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

जल्हन वोलि बिय वंध ताम । मिलिये आय परिमाल काम ॥
सेना सुसाठि हज्जार तोल । उच्चरै आल्ह जिन संग बोल ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

कनवज्ज नाथ दिय कुमक्क सुद्ध । आये सुकामि सावंत जुद्ध ॥
लाषन कमद्ध तोलन पठान । पहिलै सुटुट्ट परियौ जठान ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

च देस नौन कीजै इलाल। कीजिये जुद्ध आवध विसाल ॥
लीजिये लोह इक सत्त होय। वाहो तजि घर वारह्न सोय।
छ० ॥ ५१० ॥

चौपाई ॥ सुनिय आल्ह कौ वानी भारिय। तुलसी दल मैं सैन सम्हारिय ॥
एकमत ह्वै जुरि जुद्ध जु कीजै। छत्रिय धर्म्म काज जिय दीजै ॥
छ० ॥ ५११ ॥

आल्हा का उत्तेजन सुनकर सब का मरने कटने के लिय प्रस्तुत होजाना।

दूहा ॥ आल्हन मत सुनियौ सवन। चित दिय सेसन पेल ॥
आजि वरौ सुर अच्छरी। नौन इलाल च देस ॥
छ० ॥ ५१२ ॥

आल्हा का शास्त्रो की आज्ञा सुनाना कि जो राजपूत लडाई से हटता है वह नर्क में पड़ता है और जो बीरता से मारा जाता वह स्वर्ग का राज्य भोगता है और जीतता है तो पृथ्वी भोगता है और जिसको भागना हो अभी से चला जाय।

भुजंगी ॥ कहौ वत्त आल्ह सुनो ब्रह्म जीत। धरो बत्तचीत लहौ मत्त मीत ॥
अतुल जुद्ध सामत सज्जे सुभारी। करैं जुध परिमाल नंद विचारी॥
छ० ॥ ५१३ ॥

वय षोडस राजकुमार सोई। महा तेज चहुवान वलवान होई ॥
तज्यौ जुद्ध सामंत नृप सग जावौ। पछै राज परिमाल नौकै जमावौ॥
छ० ॥ ५१४ ॥

धरै भार राजपूत स्वामिही निकारै। झिलै लोह अग निहग सम्हारैं ॥
धरै धर्म्म सीस सु छत्रीय हूरै। उवारत वामी अपारै हजूरै ॥
छ० ॥ ५१५ ॥

भजै रज्जपुत धनी काम आवै। वसे रतिवन काम गहरे परावै ॥
अवै आहु सग कुमार तु देई। मरै देसकाज समाज सलोई ॥
छ० ॥ ५१६ ॥

सुनी कुवर वानी ब्रह्मानंद सारी। तबै आलह सौं वैन बोल्यौ हकारी॥
धनी होय धरतीनि के भोग भोग। मरैं नांहि जातैं हसै सर्व लोगं॥
छं० ॥ ५१७ ॥

नही बीज रजपूत को ताहि मानै। लीयौ नारि किन्नौ सुकूरं वषानै॥
सुनी व्यास बानी बड़े मुष्य गाई। सबै लोग मानी पुरानीनि गाई॥
छं० ॥ ५१८ ॥

चौपाई ॥ जा धरती को भोगै भोग। जा तन मरे नही कोइ लोग।
सो धरनी नै किन्नौ लयौ। वेदव्यास निरनै यह कियौ ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सो रजपूत न गति को पावै। जम को डंड सीस पर लावै ॥
चौरासी औननि मैं भटकै। क्रम पर देही दर दर भटकै ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दूहा ॥ राजन धर जातन मरै। करै सुरग को भोग ॥
दुनियां मैं जस विस्तरै। हँसै न दुरजन लोग ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

जा धरती को षाइ कै। मरै न जापै कोइ ॥
अंत काल नरकह परै। जग मे अपजस होइ ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

चौपाई ॥ धरती जा तन राजा मरइं। नाम सु जार जाति सब धरइं ॥
अंतकाल वह नरकह परै। ताकी साषि व्यास मुनि भरै ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

दूहा ॥ उदिक उतारत ना मरै। ब्राह्मन जोगी भाट ॥
जीवत भुव भटकत फिरै। मरै नरक मैं वास ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

कवित्त ॥ कहत ब्रह्मदिति वानि। मानि चालहन सब लिज्जहि ॥
करैं पैज-पन धारि। मारि सामंतनि लिज्जहि ॥
वरौं सुरग अच्छरिय। हरौ चहुवान गरब सब ॥
धरूं ईस गल मुंड। सूर मंडल भेदौं तब ॥
परिमाल-नंद इम उच्चरय। षंड षंड पिंडह करहुं ॥

कढ्ढौ सुदत हस्तीनि के। मल्हन दे निरमल तरहु ॥
छ० ॥ ५२५ ॥

ब्रह्मादित्य का सब सरदारो और सेना से कहना कि आल्हा ऊदल जो कहैं वही करना चाहिए। सब सरदारों का इकट्ठे होना और लडाई का तयारी करना।

मोतीदाम ॥ कहै ब्रह्मदित्ति सुवैन हुलास। सुनौ सब सैन चँदेलन पास ॥
सुनौ उचवानिय ऊदिल आल्ह। सबै चलौ जोध छचौ ग्रम चाल ॥
छ० ॥ ५२६ ॥
बुलायव केसव दीन चँदेल। कर परिहार सो चौ अथ मेल ॥
लिय राय सबैहि लगोउ बुलाय। मिले वय ईसर लोधिय जाय ॥
छ० ॥ ५२७ ॥
दिये सब भूपति मल्हन पूर। मिलायव वैस नरद्वद नूर ॥
लिये चहुवानह रूप गहीर। दिये दस वाइथ ए भरभीर ॥
छ० ॥ ५२८ ॥
सु रुस्तम पान पठान दलेल। भए सत साल सु मल्हन मेल ॥
सकत्ति सव सिय सोम विवुद्ध। जगत्तिय गौरय समर सुद्ध ॥
छ० ॥ ५२९ ॥
सु प्रोहित वै परमाँनद पूर। दिये दिसि दाहिनी ए दल सूर ॥
लिय भर माधव काइथ वाह। भये भर वानिय गग उमाह ॥
छ० ॥ ५३० ॥
जहा मिली जल्हन भाट बिकट्ट। मिले दल दिट्ठि अभग सटट्ट ॥
कियौ सु चँदेल इते भर सोय। लिये चष कोइ न लाज सहोय ॥
छ० ॥ ५३१ ॥
भए अग ऊदिल सावत ठेल। वर चक्रपानि वघेल समेल ॥
दला गहलोत भुजाधर भारा। मिल्यौ जगनक्क सुभाट जुझार ॥
छ० ॥ ५३२ ॥
दल उर दाहिवाइ उए दीन। इते सिरदार हरौल सु कीन ॥

बिचै ब्रह्मादित कूंवर सूर। दलं सिर मौर सु आल्हन पूर ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

अमान सुराय पमार सु प्रग्ग। चले सुध स्वामित चाल धरग्ग ॥
सबै दल साठि हजार सपूर। मिले रन संग अभंग सु सूर ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सब साठ हजार सेना का राजना।

चौपाई ॥ सात सहस चंदेल सुकीनै। अरु दस सहस वाम दिसि दीनै ॥
ग्यारह सहस दाहिनै सोई। आठ हजार हरील सुहोई ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

दूहा ॥ चतुर विंस श्रुतिमोल में। ब्रह्मादित जहं आल्ह ॥
साठि सहस सेंना सबै। हरकारी तत काल ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

आल्हा का मरने का सामान करके अर्थात तुलसी सालिग्राम सिला आदि सिर पर बाँध करके लड़ाई के लिये आगे बढ़ना। ऊदल का लड़ने के लिये आगे होना।

पद्धरी ॥ हलकारी आल्ह सैना स पूर। सब किये जोध आगे जरूर ॥
सिर बाँधि गल्लिका सिला सोय। तुलसी सिर मंजरि मेलि लोय ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

मौजा सभरे मौहर निस पूर। किये मरन साज कूंवर करूर ॥
हलकारी सैन सब इक कीन। अप अजुद्ध रन भए लीन ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

कंगल सुअंग सिर टोप लोय। प्राचीर छांह मिलि छांह दोय ॥
आगे सु चंद बढि लईय वाग। करि तेज तुरिय करक चवषाग ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

दुवसैन मिलिव सागर समान। कूदियौ अग्र पय मंडि कान ॥
हग्गार वीस उद्दिल समाज। कूदे सु पंगु पर उमगि साज ॥
छं० ॥ ५४० ॥

सत सहस कूदि सामंत सैन। उतरे धरिवर बिरतोर नैन ॥

नरनाह कन्ह पुडीर चद । पज्जोन जैत भोहा सु दद ॥
छ० ॥ ५४१ ॥

गोयद राज गहलोत सूर । कनकेस सुभर भुख उमगि नूर ।
स जम्म राय हाहुलि हमीर । तोवर पहार हाडा गम्हीर ॥
छ० ॥ ५४२ ॥

नरसिंघ दाहिमा मत्त कीन । इतनैनि सुभट हय छडि दीन ॥
उदिल चक्रपान वघेल । गहलोत दला भोपत्ति मेल ॥
छ० ॥ ५४३ ॥

राथसल गौड नरवद वैस । दाहिमा राय डाहरसमैस ॥
दस मत्त पान पट्टान सग । ववदास सूर रन करि उमग ॥
छ० ॥ ५४४ ॥

सकतेस सौम वसी भुभार । जगतेस गौरव सी सभार ॥
प्रोहित परमानंद सच्च साल । जगनक्क भाट विद्या विसाल ॥
॥ छ० ॥ ५४५ ॥

आमान राय परिहार सोय । जाल्हन्न जोरवर वह लोय ॥
भुन्नग भदौरिया विरचि भार । इतनै कूदि उदिल लार ॥
छ० ॥ ५४६ ॥

हज्जार वीस ठाकुर समाज । कूदिय सुजग्ग कह पहरि साज ॥
उतरे जोध देाज दिसान । अप अप्प इष्ट वर करत आन ॥
छ० ॥ ५४७ ॥

उत अग मग सन्नाह सधि । रूपे पयाल पग सभर वधि ॥
छडिये तुरिय मडिये जुद्ध । विहसे सु वुद्ध सावत कुद्ध ॥
छ० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ ऊदिल कूदे छडि हय । इत कूदे सामत ॥
नौनव धार्यौ सीस पर । कियौ लरन कौ मत ॥
छ० ॥ ५४९ ॥

ऊदल की लडाई आरम्भ होना । ऊदल की बीरता का वर्णन ।

त्रोटक ॥ सजिय हय ऊदिल कन्ह नर । गहिये किरवान सु ढाल कर ॥

उमगे चहुआन चंदेल दलं । अप अप्प ससैन कराय हलं ॥
छं० ॥ ५५० ॥

गजराज हरौलनि पंति लगी । वरभद्दव जानि घटा उमगी ॥
अति उज्जल दंत समंत सधे । बगुला घन में जनु पंति बंधे ॥
छं० ॥ ५५१ ॥

वरलाल विसाल धजा रमकी । तड़िता मनु बादल में दमकी ॥
हसती सत दोय हरोल दियं । तिन ऊपर कन्ह सो कोप कियं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

गहि दंत उषारहि मत्त बलं । कढ़ई जान, भौलनि कंद फलं ॥
पटकै गहैयौं गर पानि करं । हनवंतव गावत पानि गिरं ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

विरभ्यो वर कन्ह अमान बली । डर मानि चंदेल की फौज हली
मिलियं उत ऊहिल कोप कियं । उमगे वड रावत बीचि लियं ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

करैं वपु घाव सदाव सम्हारि । किधौं वन कटिये कंटक वारि ॥
वहै किरवान अमान सहथ्थ । परें धर ऊपर सीस समत्थ ॥
छं० ॥ ५५५ ॥

करष्षि कमान कर कर छट्टि । षरक्कि स भूमि दुहौं धट फट्टि ॥
गनं गन जुत्थ सु अच्छर धाय । वनै घट धाइन देह घमाई ॥
छं० ॥ ५५६ ॥

नरं नर नूर सो लोहन पूर । चरच्चर चुट्टय सीसनि छूर ॥
छल्ल बल्ल षेलहि झेलहि सार । जुरंत जुवान झिलै धर भार ॥
छं ॥ ५५७ ॥

झलझल्ल तेग झलाहल झेल । ठटट्ट रथ्थ अपच्छर षेल ॥
ठटट्ट मिल्लिय पिल्लिय पाय । डरं उर कायर देषि डराय ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

ढरक्कय सुंड निरष्षय नैन । तरक्कय तीर वरक्कय वैन ॥
थिरं दुव सैन मुरक्कति नांहि । दरद्दर दौरि परै दल मांहि ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

धरहर धारहि मार सुधीर । कारकर वाहित सागिरु तीर ॥
नचै रन सूर सचेत सपूर । धरहर धावत अग्गहि सूर ॥
छ० ॥ पूई० ॥

वरहर वेदल आवध टूटि । भरम्भर भाजत नाहिनै रूठि ॥
मरम्मर छेदहि मार मुछाल । जरज्जर नाचत घाय जटाल ॥
छ० ॥ पूई१ ॥

उर उर फटुति सागि सु लग्ग । सुरा सुर देषत षेलत षग्ग ॥
षरी करि पाति उपैदल दोय । हरी हरि वानि उचारत सोय ॥
छ० ॥ पूई२ ॥

पिले वलवंत सु सजमराय । इतै गहलोत दयो उमगाय ॥
मिल्यौ मुष आइय मद्दन मेल । तजी किरवान गह्यौ कर सेल ॥
छ० ॥ पूई३ ॥

लगायउ सजमराय क मार । सह्यौ तहा मार कियौ फिरि वार ॥
दई दलपत्ति के सीस मैं दौरि । लियौ सिर झेलि सदासिव गौरि ॥
छ० ॥ पूई४ ॥

लग्यौ तब भोपति कौ नौय रीस । दई फिरि दौरि कै सजमसीस ।
भग्यौ तब वार समूरछ मान । चढ्यौ नरसिंघ तहा यक तान ॥
छ० ॥ पूई५ ॥

दई नरसिंघ गुरज्ज की सीस । पर्यौ गहलोत लियौ मन रीस ॥
लये चक्रपानि नरसिंघ सोय । भिरे भरवथ्थ समथ्थइ लोय ॥
छ० ॥ पूई६ ॥

किये भुज पानि बधल्ल अमान । इते वपु दाहिम इंद्र समान ॥
लय बय होइ जुरे मिलि जुद्ध । गिरे धर दोइय वीर विवुद्ध ॥
छ० ॥ पूई७ ॥

दुहौ जम दाढ दुहौ डर सोय । हन्यौ चक्रपानि सो षजर जोय ॥
छ० ॥ पूई८ ॥

चक्रपानि का मारा जाना । ब्रह्मादित्य का क्रोध करके अपनी सेना को ललकारना ।

दो ॥ चक्रपानि रन जूझि तन । आहु फौज परिमाल ॥

तब ब्रह्माजिति कोपि कौं । कहै बचन मुष ज्वाल ॥
छं० ॥ ५६९ ॥

ब्रह्मादिति हलकारिकौं । बाहुरि दल मैं आय ॥
धार स्वामि धम आल सिर । रन वर अनी बढाय ॥
छं० ॥ ५७० ॥

हनि सांवतन लषन रन । तालन प्रबल पठान ॥
सहस पचास षिपाय कौं । कलि मैं कियौ कहान ॥
छं० ॥ ५७१ ॥

कवित्त ॥ मरन धार भंग लिये । बीर ब्रह्माजिति आयव ॥
भजे नृपति परिमाल । देषि धरम सुभजाइव ॥
कटी कुमक पंग कौ । कमध लाषन जुरि जंगह ॥
तिल तिल तन टूटियव । सर कौनैं नहि अंगह ॥
तालन पठान बिन सीस रुपि । अतुल पराकम कमधि किय ॥
भाजंत सैन जीवंत महि । अहमो दुष सीलंत हिय ॥
छं० ॥ ५७२ ॥

कुँवर ब्रह्मादित्य का लड़ाई का प्रबन्ध करना । आल्हा को सेनापति बनाना । ऊदल आदि सरदारों के साथ सेना बाँट कर देना ।

पद्धरी ॥ परिमाल नंद हल कौन आय । विहंसियौ कुंवर मंगल मनाय ॥
हलकाहि सैन सब इक्क कीन । आल्हन सीस सब भार दीन ॥
छं० ॥ ५७३ ॥

सकतेस सौमवंसी सु सूर । बरगहर वार सतसल करूर ॥
वरहो सुदेव कन्न विरचि नूर । डौगर सी दल दौवा गरूर ॥
छं० ॥ ५७४ ॥

राठौर राय सल कोपि अंग । तौवर अमान मन चढि उमंग ॥
सिकवार सुरज्जन धम्म सुसुद्ध । वलिवंस डौग केसव सुबुद्ध ॥
छं० ॥ ५७५ ॥

जादव सु झाल सवाध सोय। सुर का वसंत वलवड लोय॥
जल्हन सुभाट अति तेज ताप। कायथ्थ कुम चद अतुल वाप॥
छ० ॥ ५७६ ॥

बेनिया सुभार महि बुधि उमग। इतने दीनै उहिल्ल सग॥
हज्जार बीस असवार और। गज राज होय सत महनि जोर॥
छ० ॥ ५७७ ॥

पचास तोप वड सहन अच। गोलीन पाव मन पच पच॥
हज्जार पाच दिय बान साथ। लषि विषम वाह सामथ्थ वाथ॥
छ० ॥ ५७८ ॥

इधर कन्ह के साथ सब सरदारों का लड़ाई के लिये तयार होना।

उत कन्ह चद पुडीर जैत। कन्नक वड गुज्जर सलष नैत॥
मोहा चदेल परिहार पीप। अतताइ कोपि रन अरिन जीप॥
छ० ॥ ५७९ ॥

सज्जमराय धरि दियउ युद्ध। तौवर पहार भुज धरि विरुद्ध॥
अचलेस अग उमगे सुजग। नवलेस अरह रन मन उमग॥
छ० ॥ ५८० ॥

पज्जौन मलयसी पिता पूत। कोपत जाति रघुनाथ दूत॥
छ० ॥ ५८१ ॥

दूहा॥ पच सहस प्रिथिराज के। हरबल कन्ह सुभार॥
उतै बनाफर सेन सँग। उहिल बीस हजार॥
छ० ॥ ५८२ ॥

दोऊ वीर रिसाय कैं। लए अच कर माहि॥
धोग उठाई षग्ग कढि। चढे मोह तन नाहि॥
छ० ॥ ५८३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना और युद्ध का आरम्भ।

हनूफाल॥ दल मिले दोयउ सग। बज रग वीर उमंग॥
उत कन्ह होमर डारि। आए सुवीर हँकारि॥
छ० ॥ ५८४ ॥

दल सहस ऊदिल लोइ । उत्तरे सुहेमर सोइ ॥
दस सहस हेमर फुट्टि । जिन तोप वाननि छुट्टि ॥
छं० ॥ ५८५ ॥

हय छंडि तीन हजार । चहुआन कन्हर लार ॥
असवार दोय सहस्स । रह पूट्टि रापि रहस्स ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

दिषि पिलै पैलै ताहि । भिल्लै सुकन्ह सुभाहि ॥
काढि दंत मत्तनि पानि । थल भौल कंदलि तानि ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

गहि सुंडि फेरत गाहि । हनवंत गिरवर वाहि ॥
भुव पूछ पटकै वानि । बलिदेव दुनि जिह जानि ॥
छं० ॥ ५८८ ॥

हय पकरि वाहिन फेरि । असवार जुत्थन हेरि ॥
अगहत्त पीछनि कोट । मानियौ कन्हर जोट ॥
छं० ॥ ५८९ ॥

पेले सुदल भध रत्थ । जिमि लंक वानर जुत्थ ॥
मुरकी अनी चंदेल । दल दबिब कन्हर मेल ॥
छं० ॥ ५९० ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध । चन्देल की सेना का उखड़ना । ऊदल का आगे बढ़ कर लड़ना ।

कवित्त ॥ कन्ह कोप चहुवान । हनै हथ्थी मतवारे ॥
काढि दंत जुरि वाह । डौल डौंगर से डारे ॥
हैवर हत्थ समाहि । ढाहि दल दियौ सुसैनह ॥
भगी फौज चंदेल । देष सोभंतनि नैनह ॥
मुरकत फौज ऊदिल्ल लषि । भयो बनाफर कौढ़नी ॥
सैंलोट करिय दुरजन्न भूम । रन भेटत सम्हरधनी ॥
छं० ॥ ५९१ ॥

कन्ह चौहान और ऊदल के घोर युद्ध का वर्णन ॥

मोतीदाम ॥ मिलौ रन फौज वनाफर वीर । चल्यौ सनमुष्ष मरन्न सुधीर ।
कौ परदच्छिन आल्हन काज । लिये सव रावत जग समाज ॥
छ० ॥ ५९२ ॥

चल्यौ सौमवस सकत्त सुधीर । फिर्यौ वृह्मदेव करन गहीर ॥
मिल्यौ दल डौंगरसी दोउ वाह । पिल्यौ सुअमान ह्वै तौवर ताह ॥
छ० ॥ ५९३ ॥

मिल्यौ रयसल्ल रठौर मरद्द । विल्यौ सचसाल सुवाधि जरद्द ॥
पिल्यौ सिकवार सुरज्जन सीह । पिल्यौ दल डोग सुकेसव वीह ॥
छ० ॥ ५९४ ॥

पिल्यौ दुरजन सुजादव जोर । सुरध्धि सुवीर वसत अमोर ॥
पिल्यौ दल जल्हन भाट हुलास । पिल्यौ कमचद सुकायथ जास ॥
छ० ॥ ५९५ ॥

पिल्यौ नरमल्ल सु वैस वरिष्ट । इतै पिलि उद्दिल स ग गरिष्ट ।
इतैं हय छडिय कन्ह समत्थ । उतै हय छडिय सामँत सत्थ ॥
छ० ॥ ५९६ ॥

भुजक्कल आवध सायध वाय । डगामग कायर धुक्कत पाय ॥
करष्यि कमान लई दुहु सैन । मरष्यिय कुडल कौनिय सैन ॥
छ० ॥ ५९७ ॥

चलावत सैल दिढाव पगन्न । मनों अहिवौ विय होत मगन्न ॥
चलावत हय चढि इति दुवाह । करै वपु प्रान सुभट्ट वराह ॥
छ० ॥ ५९८ ॥

वहै गउकर्न सु लग्गन हौक । मनो अहि मचिय जीह सुलौक ॥
वहै वहुते सर नावक नेह । वरष्यहि वूद सु अंत वियेह ॥
छ० ॥ ५९९ ॥

दई कर डारि कमानस तेन । गहै कर सेल लषे दोऊ सैन ॥
करै दोऊ सैन अन्यो अन्य मार । दुहू घट होत है पजर पार ॥
छ० ॥ ६०० ॥

वहै रुधि छेछ दुहौं दल वीर । लगावत तोंवर जोवर जोर ॥

लगै उर आनि सकत्तिय सूर । मनों विष आंसिव लग्गि करूर ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

अन्या अन्य सेल फो थप्पिय मार । तवैं दुहौं वीर गह्यो किरवार ॥
लगे वर कंध सुबंध पुलाय । मनौ जमराज जनेउ बनाय ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

लगै सिर ऊपर कढ्ढिहै टोप । किधौ कियौ संग सरस्वति लोप ॥
वहै किरवान सों कंधन झांक । रुपे धर रुंड वहै सिर हांक ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

वहै सिर सूरज के तजि नेत । हँकारत राहु किधौं विय केत ॥
तजौ किरवान लई जम दट्ठ । लगावत हीय किय वल गट्ठ ॥
छं० ॥ ६०४ ॥

बषत्तर फारि करै कर जोर । मनौं घन मेंडि उठी रज कोर ॥
लगावत षंजर पंजर पार । किधौं कियौ कालिका दंत निवार ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

चलावत संकल फेरि जुवान । धुमावत अंग निहंग कमान ॥
चलायव गुर्ज सु पौलन सीस । मनौं सिर तोरि पुरंदर सीस ॥
छं० ॥ ६०६ ॥

लगाय भसुंडिनि सीस नितानि । मनौं दधि फोरि गवालिय स्याम ॥
चलावत केहरि के नष पेंट । वछस्थल फारिकै डारिए ठेंट ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

लगावत राज कुंवार निदान । किधौं कटी पूंछ सुनागनि तानि ॥
यहीं विधि उहिल कन्ह लरंत । महा सुध छत्रिय धर्म धरंत ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

ठठक्किय सैन उतें चहुवान । मिले दुअ वीर प्रगट्टन आनि ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

दूहा ॥ दौव्यौ संजमराय रन । ऊदिल ऊपर आय ॥
सकत सौमवंसी मरद । झिझ्यौ बीर रिसाय ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कई सामनों और चंदेल सेना के सरदारों का वरनी वरनी से युद्ध वर्णन

भुजंगी ॥ पिल्यौ सजमराय उदिल कीनी। धरै पग्ग हथ्थ समथ्थ गुमानी ॥
लथ्यौ सजमराय सकतेस राज। लियौ बीचही प्रान जुद्ध समाज ॥
छ० ॥ ६११ ॥

दुहौ वीर गाजे वधाए सुवाह। दुहौ सूर मरन सु मज्झो उछाह।
कट काट पग्ग उमग चलावै। कथ्यौ घर सु सीस विकट्ट मिलावै ॥
छ० ॥ ६१२ ॥

गट गट्ट जुगिनी सु लोहू भरावै। घट को चिट्ठ धाउ घट्ट धरावै ॥
नट जेम नाचत वार सुधारै। चटकौ तुरी छडि पटकै सुपारै ॥
छ० ॥ ६१३ ॥

ढल ढाल बूडंत सार सु जोर। जरै जज्जर ज्वान आमान तोर ॥
हहक्कै दल दोय देयै हट्टकै। पटक्क दिहौ छूटि कोनै लट्टकै ॥
छ० ॥ ६१४ ॥

ठट्टकै दोऊ सैन देयै तमासौ। डडक्कत बाजत डौरू उमासौ ॥
ढढक्क दर ढाढर कुट्टि भरिय। ततत्थेई नाचत सावत झरिय ॥
छ० ॥ ६१५ ॥

रक्कत जोगिनी भैरौ निपारी। उमाकत नाचत दै हथ्थ तारी।
ततत्थेई नाचत ईस उरगै। थरक्के दुहौ सेन देयै रमगै।
छ० ॥ ६१६ ॥

दल दोइ द्रढै वल बाह दोई। धयै वीर धोवत आवत तोई ॥
नर नेह छडे भरा नेह न्यारे। पुलकत वाह्न अपारे पचारे ॥
छ० ॥ ६१७ ॥

फिरै नाहि होऊ फतै स्वामि अद्धे। धरी माथ हथ्थ परी पाप गद्धे ॥
हन्यौ आय सज्जम सेल समाही। तवै वीर सकतेस किरवान वाही ॥
छ० ॥ ६१८ ॥

लग्यौ सजम सेल हीक सुताथ। रुप्यौ जाय वरनो जियौ देह काय ॥
लगी तेग सजम कै अग भारी। गई छूटि सग्या पर्यौ भूम धारी ॥
छ० ॥ ६१९ ॥

प्रयौ अंत सेझं सकंतं लषायौ। तहां गहरहारं सता कोपि आयौ॥
उतै चंद पुंडीर नैनन लषायौ। तवैं कोपि करि वीर सत्ता सुधायौ॥
छं० ॥ ६२० ॥

लष्यौ चंद पुंडीर आयौ चलाई। गहर वीर चहुवान सैना हलाई॥
जष्यौ मंच हनवंत सत साल सोई। गयौ सिरह नद्दं वरं वीर लोई॥
छं० ॥ ६२१ ॥

उतैं चंद पुंडीर देवी पुजाई। तज्यौ शकरं संग किलकारि आई।
लष्यौ सचसालं विसालं वरिष्टं। चल्यौ पीप परिहार भीरं गरिष्टं॥
छं० ॥ ६२२ ॥

चल्यौ मंच करनं सहाई सछत्ता। जष्यौ मंच मुष भैरजं क्रोध रत्ता॥
किलकारि भैरूं ललकारि आयौ। हन्यौ महिष येवं बली दीन पायौ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

इतै देव करनं सता गहरवारं। उतें चंद पुंडीर पीपं पहारं॥
एते दीय परिमाल के सुभट ठाये। तिनं उप्परं चंद पुंडीर आये॥
छं० ॥ ६२४ ॥

वियौ पीप परिहार साहाय आये। लियें वीर दो ईस किरवान चाये॥
करं सचसालं कमानं सलीनं। धरयौ वान लेमं प्रहारं सुकौनं॥
छं० ॥ ६२५ ॥

लग्यौ पीप परिहार कै हीक आयौ। भिंथौ अंगरंगं धरंनौ मिलायौ।
पर्यौ पीप परिहार धरनौ अचेतं। उथौ संजमंराय पायौ सुचेत॥
छं० ॥ ६२६ ॥

लष्यौ संजमा राय धौ करन धायौ। सिरं आय संजमं के सीस नायौ।
लगी सीस तेगं सिरा फार होई। दुहौं हथ्थ फंदं गही वीर सोई।
छं० ॥ ६२७ ॥

कुवानं सतं षीचि सीसं विधायौ। दुहौं कार वेधी सचारं न धायौ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

देवकर्ण की तलवार से संजमराय का शिर फटजाना और सत्रसाल के तीर से सर जुड जाने पर उसका दोनों को मार गिराना।

दूहा ॥ देवकरन दिय दौरिकै । सजम सीस गहीर ॥
लटकी फाक निराट विय । लग्यौ सचसल तीर ॥
छ० ॥ ६२९ ॥

कवित्त ॥ देवकरन ने दौरि । सीस सजम कै दीनिय ॥
फट्यौ सीस विचि सोइ । आय नासा वगि लीनिय ॥
सचसाल सागिनि । हन्यौ विहु फाकन तीरह ॥
भयौ सीस साबित । लग्यौ विचि पाल गहीरह ॥
सज्जम सीस विचि सो विधिव । सचसाल मुजरा कियव ॥
दुहौ हाथ घालि बर धारि कर । वरही कै काधै दियव ॥
छ० ॥ ६३० ॥

पद्धरी ॥ सजम्म राय हनि सोमवस । रुप्पियो कुंत छातो उतस ॥
सकतेस दई किरवान धाय । परियौ सुघरनि सजम राय ॥
छ० ॥ ६३१ ॥

धाये सुचद पुडीर वीय । आये सु सज्जि चदेल दीय ॥
तह सचसाल आयौ सु सग । वरि हस देव करि करि उमग ॥
छ० ॥ ६३२ ॥

कम्मान पकरि सचसाल सूर । दीनो सु पीप कैं हिय करूर ॥
लग्यौ तौर धर फुट्टि लोय । परियौ सो पीप धर विगरि होय ॥
छ० ॥ ६३३ ॥

ता समे उठे सजम नरेस । मिटि गई मूरछा सरव तेस ॥
दौरे सु देव कन किये रीस । दीनो सु जाय सजम सीस ॥
छ० ॥ ६३४ ॥

ता समै सचसाल तीर वाहि । फटि गयौ तीर लति नाक चाहि ॥
परिहार तीर किये श्रवन ठाम । विधि गयौ सीस लगि तीर ताम ॥
छ० ॥ ६३५ ॥

सचसाल काज किन्नव सलाम । किरवान जाय दई कन्ह ताम ॥
लगी सु कंह नौगुन उतार । खुल गयौ कन्ह दिवकरन धार ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

कटि भो मरंन लगि रोस आय । पाषर समेत हेमर षुलाय ॥
उत चंद आय मुषमेल कीन । सचसाल सीस किरवान दीन ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परियो सु टुट्टि रन गहर वार । दौवां डोंगर सी गह्यव सार ॥
चल्लयौ वीर पुंडीर मुष्ष । दुहुं हथ्थ विरचि वाही सुरुष्ष ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

लागी सु गिल्लम मैं मध्य जाय । कढि ढाल टोप लगि कमरि आय ॥
परियौ सुचंद धर सलषि दिष्ष । चल्यौ पमार दौवा समुष्ष ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

वाही स हत्थ दौवा सु सूर । कटि टोप गिल्लम भृकुटी करूर ॥
तरवार वाहि पंमार चाय । कटि कट्टि जीन हय गय षपाय ॥
छं० ॥ ६४० ॥

धूम्यौ पंवार पग धरनि मध्य । दिष्षयौ जयत निड्डुर प्रसिद्ध ॥
चल्यो सु जैन निड्डुर नरेस । तौमर अमान चलि गयौ तेस ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

कमधुज्ज राय सलखीय सहाय । चलिये सुवीर रन सज्जि आय ॥
कीन्हौ सु कन्ह ऊपर चलाय । आयौ सु बनाफर ऊद धाय ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

कन्ह और ऊदल का युद्ध वर्णन (रोना का युद्ध)

दूहा ॥ उतै सज्जि कन्ह धायकै । इत ऊदल सजि आय ॥
अप अप नृप जै इच्छई । मंगल मरन उपाय ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

चौपाई ॥ परे सकतेस सोमवंसी रन । गहरवार द्यौ करन कटे तन ॥
डौंगरसी दौवा तन कट्टिय । सामंतनि सनमुष आवट्टिय ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

चंद पुंडीर परे मुरछाय । अहि परिहार पीप गिर ठाय ॥

सजम राय बुल्लि सिर कट्टिव । वीर वीर तन में रस पुल्लिव ॥
छ० ॥ ६४५ ॥

कन्ह के साथ के निड्डुर आदि सामतों से फिर ऊदल के साथ के कई सरदारों का परस्पर युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ लषि निडुर जयति कन्ह चलिय । कनक वड गुज्जर जै मिलिय ॥
लषि भीह पज्जौन चद वली । इतने मिलि सैन सुमुष्ष चली ॥
छ० ॥ ६४६ ॥

लषि ऊदिल जोध सन सुषय । सँग तौंवर मान वली लषय ॥
कमधुज्ज सु राय सला पिलिय । सिकुवार सु रज्जन से मिलिय ॥
छ० ॥ ६४७ ॥

वलिवड सु केसव गौड पिले । जहा जादव इद उमगि चले ।
सुरको वर वीर वसत वनै । गय जल्हन भाट समार नमै ॥
छ० ॥ ६४८ ॥

वकसी जहा कायथ कुम चद । उमग्यौ वनिया भर माल इद ॥
पिलियौ तहा ऊदिल पायन सौं । भर झेलि वनाफर रायन सौ ॥
छ० ॥ ६४९ ॥

मुष अग्नि पचासक तोप करी । ठहराइय सोरनि जोर भरी ॥
हलकारिय गोल सलोल भरी । वड कोट जँजीर तहाँ जकरी ॥
छ० ॥ ६५० ॥

अरु ज्वान सु वान दई चिनगी । दल सावत ऊपर रोस लगी ॥
रुप तोपन जाम गिलाय दई । परिये जनौ घोरनि हाव सही ॥
छ० ॥ ६५१ ॥

अरराट भयौ अति सोर रह्यौ । उलका सद अवर चाय रह्यौ ॥
धुरको धर सजम राय परे । रन पच हजार तहा जकरे ॥
छ० ॥ ६५२ ॥

हस्ती परि तीस सु समर मे । कितनै डुंडर कायर वै मन मै ॥
सव फेर सु ऊदिल वाग लई । सँग वीस हजार सौ भार तई ॥
छ० ॥ ६५३ ॥

बलिवंड करै बिय षंड रनं । षंड षंड सु पील प्रचंड करं ॥
विचले दल पीथल तेग तयो । सब भार सु जदिल गोलि लियो ॥
छं० ॥ ६५४ ॥

चहुवान हरोल अनी मुरकी । लषि संजम राय गिरे धरकी ॥
तहां चंद पुंडीर पिपासे परे । मुरछाय सुलष्य धरनि गिरे ॥
छं० ॥ ६५५ ॥

तहां कन्ह कोप कर्यौ रन में । मुरकी सब सैन दुवागर में ॥
किरवान गही हय छांड़ि दियौ । सनमुष्य सु जदिल पौं पिलियौ ॥
छं० ॥ ६५६ ॥

तहां जैत पञ्जौन मलै सी परं । रनसिंध पंहार सजौ गहरं ॥
पर हाहुली राव हमीर चले । इतने भरि जदिल पैंजु पिलै ॥
छं० ॥ ६५७ ॥

उत बीर वसंत रु क्रम चंद । बनिया वड़ भार जु माल द्वंद ॥
देवरा रंन डोंगर सी उमहे । चहुवान सु जल्हन भाट कहे ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

परिमाल सुनौ न प्रगास वलं । चहुवान सबैं भर तानि दलं ॥
मग रोकिय कन्ह कौ आजु अगैं । बिचि लीजियै आय कौं जुष्य पगै ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

सनमुष्य लहौ जु सबैं अवही । मृत लोक के भोग तजौ सबही ॥
छं० ॥ ६६० ॥

कवित्त ॥ दिगय फौज प्रिथीराज । तोप बाननि के मारिय ॥
गिर्यो सु संजम राय । चंद पुंडीर सुधारिय ॥
पर्यौ पीप परिहार । परे बड़ गुज्जर सोइय ॥
परिय सु तीस गयंद । सहस हेंवर गिर लोइय ॥
रजपूत सहस द्वौढह परे । फौज बिचिलि पाछें भइय ॥
चहुवान सहसत्ति हांक हुअ । कन्ह वीर दारुन दइय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

चौपाई ॥ मुरकी फौज देषि चहुवानं । पिलियौ हाथी अंमत तानं ॥
कन्ह जयत हाहुली हमीरह । नरसिंघ रांम मलैसी धीरह ॥
छं० ॥ ६६२ ॥

हाकि सैन नृप आगे किन्नय । चावड काजै आयस दिन्नय ॥
तुम परिमाल पकरि कर लाज । मैं उदिल कौं जग पपाज ॥
छ० ॥ ६६३ ॥

चोटक ॥ नृप हाथिय पीथल पेल वर । सब सैन सकेलि कै एक कर ॥
कैमास रु कन्ह पजौन मिले । सग हाहुलि राय हमीर चले ॥
छ० ॥ ६६४ ॥

तहां पीचीय देव प्रसग वली । विझराज सु धावत धीर हली ॥
तहां पेतर पूरन मल्ल चले । भरभालुन जुद्ध पगार मिले ॥
छ० ॥ ६६५ ॥

नृप ऊदिल ऊपर कोप किये । इतने उमराव सु सग दिये ॥
उत देपि वनाफर वै पुलिय । सग ढौंगर सी दौवां मिलिय ॥
छ० ॥ ६६६ ॥

क्रम चदव सतर जल्हनय । सिकवार सु रज्जन मल्हनय ॥
तहां भोज वनाफर भार मल्ल । ववता अज वावर कोपि दल ॥
छ० ॥ ६६७ ॥

सौ हकम्म मिले भरभार दये । इतने मिलि ऊदिल सग भये ॥
उत कन्ह चलायव कोपि किय । इत ऊदिल वीर अपार धिय ॥
छ० ॥ ६६८ ॥

विफरै चहुवान वनाफरय । धरि हथ्थन लोहपि हथ वरय ॥
चहुवान दवाय हरोल लिय । उत आल्हन पेावत जुद्ध जिय ॥
छ० ॥ ६६९ ॥

पिलिय भई भीर पजौन चली । द्रिग देपि चदेलकी फौज हली ॥
पटकै गहि हेमर भूलायं । मसलत्ति पयादिन के थलय ॥
छ० ॥ ६७० ॥

कहु हाकय धाकय वीर मुप । कहुं मारत सायक ले सुरप ॥
कहु सेल चलावत वाहु परं । करि टूटि सनाह सु फूटि मर ॥
छ० ॥ ६७१ ॥

विफरै वल वीर पजौन इतै । सिकवार सु रज्जन आय उतै ॥
सिकवार चलाइ सकत्ति कर । उर लागि पजौन कै फूटि पर ॥
छ० ॥ ६७२ ॥

धुकि राय पजौन वै कोप कियं । किरवान सु रज्जन कंध दियं ॥
परियं सिर टूटि धरनि गिरें । ततकाल वरंगिम आय वरें ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

भ्रम पाय पजौन गिरै धरनी । फिरि आयव डौंगरसी भरनी ॥
दौवा तन सायक लाइ भर्यौ । तिन ऊपर आय सुजाम अर्यौ
छं० ॥ ६७४ ॥

गहिकैं किरवान तहां वगयौ । तिन सायक डौंगर कै लगयौ ॥
किरवान बढ़ी कर जाम लियं । बिय हथ्थ गहाय कै सीस दियं ॥
छं० ॥ ६७५ ॥

धुकि तै दई डौंगरसी पग में । धर धूंमि कै जाम गिर्यौ मग में ॥
फिरि चेत कैं तेग दई सिर मैं । गिरि डौंगरसी दौवा धर मैं ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

दौवा सिर तूटि कमंध नच्यौ । उत वीर सु ईश्वर माल सच्यौ ॥
वकसी क्रमचंद सु आय गयौ । षगधार घनी रन वीचि लियौ ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

सकसैना श्रीवास दौउ उर मैं । फरफूटि सनाह कस्यौ चर मैं ॥
गह पाय सुधीर पटकि धुरं । नर चून भयौ सिर फूटि वरं ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

रन धायकैं वैस सुभार मलं । पिलियौ जु जहां प्रिथीराज दलं ॥
नरसिंघ सु दाहा देषि चषं । वरवीर सुन्यौ धर में सुरषं ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

नरसिंह गुरज्ज लई सरमैं । उत साहु सु सांगि लई कर मैं ॥
कर साह सु सांगि चलाइ उतैं । वरछा वै छूटि कैं डारैं कितैं ॥
छं० ॥ ६८० ॥

नरस्यंघ सुधाय कियौ गुरजं । सिर टूटि धरा सुपरे सुरजं ॥
भए सिर के सब टूक हजार । रहे विधि स्वामित वाजिय सार ॥
छं० ॥ ६८१ ॥

जल्हन कवि का मारा जाना और उसका ऊदल को पुकारना ।

दूहा ॥ जल्हन भाट निराश लषि । मरन सुनी सै आय ॥

सुनियौ सुत जसराज के। सुरग भोग मन ध्याय ॥
छ० ॥ ६८२ ॥

रसावला ॥ कन्ह जद्द लध्यो। नैन दोउ दिष्यो ॥
बोलि बानी वर। लीन इष्य सर ॥
छ० ॥ ६८३ ॥

कीन भारी मन। स्वामि सज्जै पनं ॥
जोध दोऊ चले। क्रोध बोल मिले ॥
छ० ॥ ६८४ ॥

इष्ट बोले मुष। ध्यान अबा रुषं ॥
बान बाह बिय। दुष्य सैना दिय ॥
छ० ॥ ६८५ ॥

वार लग्गै उर। पार पागैं पर ॥
भुमि लुट्टै बहै। अरध चद्द वहै
छ० ॥ ६८६ ॥

काक सीस लहै। सार झूटै सहै ॥
सेलि लागै हियै। प्रान छक्कै कियै ॥
छ० ॥ ६८७ ॥

सेलि वाहै वर। ज्वान धरती पर ॥
रुक वाहै कहू। ताकि मारै अहूं ॥
छ० ॥ ६८८ ॥

जम्म दाढ दिय। प्रान कढ्ढी लिय ॥
पजर मारिय। पजर फारिय ॥
छ० ॥ ६८९ ॥

रजक नावते। खूर सर धावते ॥
फौज भारी सहू। सौर कोपे विहू ॥
छ० ॥ ६९० ॥

मार मार किय। उदिस्सं विहसिय ॥
जण्हन सगय। भाट जम गय ॥
छ० ॥ ६९१ ॥

दूहा ॥ उतै कन्ह आयौ उरप । इतै सु ऊदल जोध ॥
चाहुवान चंदेल कै । मंडि सावंत करि क्रोध ॥
छं० ॥ ६९२ ॥

ऊदल और कन्ह का वरनी से युद्ध और ऊदल का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ मिले ऊदिलं कन्ह दोऊ अभंगं । विरचे सु जोधा दोऊ स्वामि संगं ॥
जपै इष्ट मंत्र उमाकंत सोई । भवानी धरै ध्यान धावंत दोई ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

उमाकंत मातं जपंतं सुधाये । विहौं वार वानंत सनमुष्ष धाये ॥
मिलौ दिष्टि सौं दिष्टि वानी उचारी । अहा कन्ह केरौ चलै जोध भारी
छं० ॥ ६९४ ॥

दलं पातिसाही सवैं तुम्ह जीते । अवै ऊदसौं ध्याल सब आव वीते ॥
यनै दिन्न पट्टी सु आंषै बधाई । अवैं ऊदलं सौं पर्यौ ध्याल आई ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

उतैं कन्ह बोल्यौ महा रोस होई । सुनौ नंदजसराज के वात सोई ॥
इहां गौड नाही गढा ठाम जानौ । अवै कन्ह चहुवान सौं जुद्ध आनौ ॥
छं० ॥ ६९६ ॥

विरंचे दुहौ जोध आवद्ध बर सें । घनें वीर जोधानि के प्रान गरसे ॥
चलावंत तीरं सकत्ती करारी । लगैं वार छत्तौ परैं फूटि न्यारी ॥
छं० ॥ ६९७ ॥

चलावंत वीरं दुहौ वीर वांके । परै फूटि धरनी दुहौ सैन धांके ॥
चलावंत सेलं दुहौं वीर जोरे । सनाहं वपू फूटि फूटंत धोरे ॥
छं० ॥ ६९८ ॥

वहै तेग वेगं सत्तूरं हकारे । मनू पंच चक्रं कुलालं उतारे ॥
चलावंत फरसा सिरं फाक होई । मनो विंटियौ वाट चबूज सोई ॥
छं० ॥ ६९९ ॥

वहै अंग सीसं सु अप्पार मारं । किधौं कन्ह फोरंत दधि ग्वाल सारं ॥
लगैं मुद्गरं मार भारी सु सीसं । कटै कै हजारं लटकै सुदीसं ॥
छं० ॥ ७०० ॥

चलाव त गुरज हकार त हाक । परी दल दुहू माझ दुहूं जोधवाकं ॥
लगै जम्म दाढ सनाह सुघुट्टै । वपू अतलै कालजे पार फुट्टै ॥
छ० ॥ ७०१ ॥

लगावंत हांके हरी नघ वारे । वरं कगल जग उर अग फारे ॥
इसी भाति कन्ह लरै उहि दोई । कटक्कै अवट्टै दुहों कोप होई ॥
छ० ॥ ७०२ ॥

उतै कन्ह की भीर कयमास आयौ । विय ठाक चाटा सिर सूर ठायौ ॥
लग्यौ जल्हन भाट कै मास सोई । लियौ बीचही आय मद्दावीर होई ॥
छ० ॥ ७०३ ॥

इते ठाक चाटा सुसुप मेल कीनौ । वली जल्हन तानि कै बीच लीनौ ॥
गही तेग दोई दुहौं वार कीनौ । तवै भट्ट विपरीति होइ पग्ग लीनौ ॥
छ० ॥ ७०४ ॥

लगी जल्हन हाथ की तेग चाई । फिर्यौ चाहुवान सुधरनी गिलाई ॥
वर ठाक चाटा सिर रूक वाही । लग्यौ वीर जल्हन पर्यौ भूमि माही ॥
छ० ॥ ७०५ ॥

उते आय कयमास सेल चलायौ । वली जल्हन षेत धरनी मिलायौ ॥
पर्यौ जल्हन देषि ऊदिल्ल धायौ । वली कन्हकै कंध मै पग्ग नायौ ॥
छ० ॥ ७०६ ॥

भ्रम्यौ सात वार सु कन्ह नरेस । गह्यौ ऊदिल धाय हथ्थ सुवेस ॥
भए लथ्थ वथ्थ सु ऊदिल कन्ह । इतै आइयौ दौरि परिहार नन्ह ॥
छ० ॥ ७०७ ॥

वली दूसरै वीर कयमास आयो । उर उद्द कै आय सेल लगायो ॥
गही तेग कन्ह सिर वार कीनौ । पर्यौ ऊदिल टूटि धरनी नवीनौ ॥
छ० ॥ ७०८ ॥

रह्यौ रुंड धरनी सिर हाक मार । भयौ मेर ठाढौ सु ऊदिल हकार ॥
इत ऊदिल रुंड धायौ सम्हारी । वली तेग कयमास कै कंध झारी ॥
छ० ॥ ७०९ ॥

पर्यौ मूरछा दाहिमा भूमि आयौ । गह्यौ रुंड कन्ह धरनी मिलायौ ॥
हन्यौ ऊदिल कन्ह कयमास दोई । भजी सरब चंदेल की फौज सोई ॥
छ० ॥ ७१० ॥

उदल का कबंध खड़ा होना, फिर उसका चौहान सेना के एक हजार सिपाहियों को मारना।

दूहा ॥ ऊदिल कौ नाच्यौ कमध। गिर्‌यौ सीस धर सूर ॥
हनि सैना प्रिथीराज की। एक हजार सपूर ॥
छं० ॥ ७११ ॥

चौपाई ॥ पहिलैं ऊदिल कन्ह धूमायौ। पृथीराज सिर खग्ग लगायौ ॥
चितिय कन्ह परिहार नवीनौ। भए मूरछा सामंत तीनौ ॥
छं० ॥ ७१२ ॥

दूहा ॥ तीनौ मिलिकै मारियौ। रन जसराज कुमार ॥
मारे भर प्रथीराज के। सिर विन एक हजार ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

ऊदल का मरना जानकर कुंवर ब्रह्माजीत का गोरखे पर आना।

कवित्त ॥ सुनि ब्रह्मादिति वत्त। काम ऊदिल रन आइव ॥
गै हरवल सब तूटि। सार सामंतनि धाइव ॥
सचसाल सकतेस। पर्‌यौ थौ करन अमानैं ॥
सुरजन डौंगर परिव। परिव जल्हन नर पानैं ॥
धर परे पील सै दोय रन। दस हजार हैवर वहर ॥
मुष वाह वाह जल्हन कहैं। कन्ह कटक कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

चौपाई ॥ ऊदिल कटे वीर रन मांहि। छत्री धरम धरे उर मांहिं ॥
ब्रह्मादिति बोले इह बानी। सुरग भोग भोगव मन मानी ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

ब्रह्माजीत की सेना का व्यूह वर्णन।

रसावला ॥ कियौ कुवार इक्कयं। चंदेल चाल चक्कियं ॥
हरोल पील कीलयं। अरी विपुट्ठि दीनयं ॥
छं० ॥ ७१६ ॥

तमंकि बाग लीनयं। सु स्वामि धरम चीनहयं ॥
बनाय वेद फौजयं। विचारि आल्ह चौजयं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

मिले मरद्द मार कै । अनेक दाव धार के ॥
वध्यौ गरट्ट मोलय । विचै स वार होलिय ॥

छ० ॥ ३१८ ॥

चढ्यौ सु आल्ह हाथय । लिय सुभाट साथय ॥
उतै चुहान चल्लिय । मरद्द मेलि मिल्लिय ॥

छ० ॥ ३१९ ॥

सव ध साजि चल्लय । कुवार वीर पिल्लिय ॥
कैमास कन्ह जैतय । हमीर जुद्ध नेतयं ॥

छ० ॥ ३२० ॥

गम्भीर कन्ह केसय । मल्लैसी वीर वैसय ॥
हाहुलि राय मल्हन । गोयंद राज जल्हन ॥

छ० ॥ ३२१ ॥

पहार राज तु वर । चले समाज कुंवर ॥
उछाह आल्ह कीनयं । वनाफर प्रवीनयं ॥

छ० ॥ ३२२ ॥

चल्यौ प्रमाल नंदय । मनू ससी सु चंदय ॥
सरग्ग भोग आसय । पिलन्न पग्ग तासय ॥

छ० ॥ ३२३ ॥

चुल्यौ वयन वाचय । सुनौ चुहान साचय ॥
जु ध्रम जुद्ध किज्जयं । वचन्न पास लिज्जय ॥

छ० ॥ ३२४ ॥

सुलाय जोध जोधय । करै हथ्यार सोधय ॥
अध्रम्म जुद्ध छंडिय । सुध्रम्म जुद्ध मंडिय ॥

छ० ॥ ३२५ ॥

भाई का मरण जानकर आल्हा का पसर करना ।

दूहा । उद्दिल कामि सु आइये । दई पवर प्रतिहार ॥
अव सुकाज परिमाल कौ । सव तेरे सिर भार ॥

छ० ॥ ३२६ ॥

भुजंगी ॥ पर्यौ उद्दिल पेत सौ आल्ह जान्यौ । कियौ क्रोध रन मरन सुठान्यौ ॥

लियौ नीर हथ्थं बुल्यौ बीर वानी। करी पैज मन में करी अंत जानी॥
छं० ॥ ७२७ ॥

धरैं ईस मुंड गलैं आजु मेरो। उधारौं अबैं नौन चंदेल तेरो॥
इसे बोल आल्हन सबकौं सुनाये। धरे स्वामि धर में समर मध्य आये॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चलाये दुहौ वीर बाँधै गरिष्टं। चलाए चमू के वली बाँधि थट्टं॥
करैं षंड षंड भसुंडैं निनारै। पिले वीर जोधा करी कुंभ कारै॥
छं० ॥ ७२९ ॥

नगाकैं भसुंडैंनि टूट्टै वरच्छी। लगै उंकवारं परैं वरत रच्छी॥
सरद्दं घटा जेमि गाजंत गाजं। बली बाहु तोरं सुवौ रंसमाजं॥
छं० ॥ ७३० ॥

घटा सेंन बंधी दुहौं वीर धाये। मनों पुब्ब पच्छाह घन उमँडि आये॥
दमंकै लगैं सींगि लग्गैव मोरा। बरं फूटि सन्नाह फूटंत धोरा॥
छं० ॥ ७३१ ॥

मिले सूर सूरं सु पूरैं अषारैं। गहैं सूंड़ मत्ती सुदंती चिकारैं॥
उतैं कन्ह चहुवान कैमास धायौ। पचारैं करंत अपारैं मिलायौ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

कहूं की भुजा तोरि जोरे उपाटैं। किते एक जोधा जिन के सीस काटे॥
किते डोल गहि पील नाषंत धरनी। तरफ्फै करैं नीर ज्यों मच्छ करनी॥
छं० ॥ ७३३ ॥

कहूं हिमरंतानि गहि तानि चाहैं। कहूं पाप प्याद्दे गहैं धरनि माहैं॥
कहूं सांगि बाहैं कहूं कूदि दारैं। कहूं वान छाडैं सुथाट सुमारैं॥
छं० ॥ ७३४ ॥

कहूं सीस गुरजं कियौ पानि वाहैं। सिरं चून करतै विषूनं दुगाहैं॥
कहूं काट तैं सीस रीसं अभोरं। कहूं बर बली बीर बाहंत जोरं॥
छं० ॥ ७३५ ॥

कहूं संकरं सार वाहै अमानौ। मनों कीन मतवार सब्बै समानौ
कहूं कंध पैबंध नावंत फरसी। कहूं जग्गराजं सबै सैन गरसी॥
छं० ॥ ७३६ ॥

कहू अकुस मारि कै पेचि लेते। कहू अरगला तोरि सिर माहि देते
कहू वीर वाहै भसुडौ निकारी। कहू कपिनी हूल हक अवारी॥
छ० ॥ ७३७ ॥

कहू सागि उमगी वाहै असोर। कहू मागिसै चीलगावत जोर॥
किधौ वीर किरतोन कर मोनि वाहै। परे मुड धरनी सुरज नचाहै॥
छ० ॥ ७३८ ॥

अटारी किय अग उर जात नामी। षुले द्वार मानौ अटारी सुवानी॥
कहू पजर पजर मार पारै। कहू राजकं वारि हीक सुधारै॥
छ० ॥ ७३९ ॥

इसौं भाति कैमास कन्ह भलायौ। घनै सैन च देल धरनी मिलायौ॥
भगी सैन देषी चप आल्ह सोई। भए आप आगै रहे पीठि लोई॥
छ० ॥ ७४० ॥

दूहा ॥ भगी सैन आल्हन लषी। सामँत तेज अथाह॥
राषि सरन सैना सबै। भयो अथ नरनाह॥
छ० ॥ ७४१ ॥

आल्हा का कन्ह के मुकाबले में आकर उससे उत्कर्ष वचन कहना।

चौपाई ॥ आल्हन ए सेना अप सूरे। वचन कन्ह सौ बोलि कारूरे॥
सुनि चहुवान अमुत जँग कीजै। सब सेन कौ दुष न दीजै॥
छ० ॥ ७४२ ॥

आल्हा का निद्रास्त्र प्रयोग करके सब चाहुआन सेना को मूर्छित कर देना।

आल्हन सक्ति कौ सच उपाओ। सो अरजुन कौ ईस बतायौ॥
निद्रा अस्त्र प्रयोग सु कीनौ। औ धत सावत सूर नवीनौ॥
छ० ॥ ७४३ ॥

पद्धरी ॥ उचरै आल्ह वानी विराट। सुनियौ सुकन्ह कयमास थाट॥
सब सैन काज दुष देव काय। कीजियै जुद्ध मो सग चाय॥
छ० ॥ ७४४ ॥

जंपियौ सुमंत तारा सुभाय। कीनौ सु ध्यान उर मध्य लाय॥
हूंकार कियौ देवी बलिष्ट। किलकार कीन्ह हलकार द्रष्ट॥
छं० ॥ ७४५ ॥

निद्रा प्रयोग कीनौ सुधीर। धारंत सरब सामंत धीर॥
कैमास कन्ह पुंडीर चंद। पज्जौन जैत सामंत द्वंद॥
छं० ॥ ७४६ ॥

तौंवर पहार अरु जैत सोइ। भौंहा चंदेल नरस्यंध लोइ॥
परिहार पीप पंवार नन्ह। धावर सुधीर जयमाल पन्ह॥
छं० ॥ ७४७ ॥

षडरवंड निवान सामंत सार। षीची सुगौड षेता षँगार॥
सामंत इत्त क्रोधंत ताह। बजरंग वीर तजि जंग राह॥
छं० ॥ ७४८ ॥

औधंत औध चष नींद लाइ। छंडिव सु द्वंद सामंत भाइ॥
दौरे सु जोध चंदेल सैन। बलवंतबीर निरमोह तैन॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कित्तेक सीस टूटंत सार। कित्तेक अंग लै होत फार॥
केतेक चरन टूटंत जंध। केतेक हथ्थ तरफरत रंध॥
छं० ॥ ७५० ॥

केतेक सूर रन कठि हुलास। केतेक गये चहुआन पास॥
नरनाह कन्ह कैमास सोय। छंद्यौ सुजंग उनमत्त होय॥
छं० ॥ ७५१ ॥

मारंत आल्ह सजि सैन सूर। करिये नरेस ऊपर करूर॥
अचिरज्ज पाप प्रिथीराज साव। बरदाय चंद बोल्यौ सिताव॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कीन्हौ सुमत्त आल्हन अपार। सब छंडि जुद्ध सोवत मुछार॥
उच्चरै चंद सुनियो नरेस। कीनौ प्रयोग आल्हन सुवेस॥
छं० ॥ ७५३ ॥

तारा सुअरुच कीनौ उपाय। दीनौ सुमंच संकर सहाय॥
पारथ्थ कीन कौरव समध्य। सो कियौ अब्ब तुम पर प्रसिद्ध॥
छं० ॥ ७५४ ॥

अवतार सल्ल को भयो आय । दीनौ सुमच गोरष्ष राय ॥
छ० ॥ ७५५॥

कबि चन्द का आल्हा की कथा वर्णन करना, उसका कहना कि आल्हा सल्ल का अवतार है, वह गोरष से मिला था और उनकी सेवा करके उसने वरदान पाया था।

कवित्त ॥ कहै चद सुनि राज । आल्ह अवतार सल्ल भय ॥
गय सिकार इक वार । राति उद्यान भूलि रय ॥
गिरिवर ऊपर सिखर । तहा गोरख रिषि बैठिव ॥
भूलि गयौ पा धरौ । फिरत वन सिद्ध सुदिट्ठव ॥
लगिव पाय जसराज नंद । हथ्थ जोरि विनती कियव ॥
मोहि सग लेहु उपदेस करि । तजौ भवन यह उर धरिव ॥
छ० ॥ ७५६ ॥

आल्ह सीस हथ मेलि । कहिय गोरष मुष वानिय ॥
रहौ वरस लगि द्वार । देहु दरसन यह मानिय ॥
करै बनाफर सेव । रैन दिन एक चित्त करि ॥
भरत मोद मन मोह । कोह नहि होइ लेस भरि ॥
एकलौ होय करि वदगीय । अतर गत सवही लख्खव ॥
वाइस पक्ष दिष्यौनि रिष । इक्क दिवस राजौ भयव ॥
छ० ॥ ७५७ ॥

चौपाई ॥ तब गोरिष मुष बोलिय वानिय । आल्हा मागि कछू मन मानिय ॥
वरस एक लग साधव मो कहु । जो मागौ सो समपौ ता कहु ॥
छ० ॥ ७५८ ॥

गोरख का आल्हा प्रति वरदान ।

दूहा ॥ असच सस्त्र सिषर सवै । कीनौ अमर सुदेह ॥
ऊदिल लग ग्रह मे रहै । पाछे जोग सनेह ॥
छ० ॥ ७५९ ॥

चंद का पृथ्वीराज से कहना कि चामंडराय को परमाल को पकड़ने के लिये कालिंजर को भेजिये और अताताई की आल्ह की बरनी कीजिये।

चावंड को कीजे विदा। गहि ल्यावै परिमाल ॥
आताताई अग्र करि। कीजै जुद्ध विसाल ॥
छं० ॥ ७६० ॥

राजा का चंद की कही करना।

चावंड कूं जु विदा किये। कैद करन चंदेल ॥
आताताई अग्र करि। कियौ जुद्ध कौ षेल ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

अताताई और आल्हा का युद्ध वर्णन।

त्रिभंगी ॥ करि कोप तबै पृथिराज मनं। अतताई अग्र किये सजनं ॥
मुष मंत्र उचारिय आप नृपं। अरि को उपजावन देह दिपं ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

गिरजा हरि संकर ध्यान कियं। अतताई नरेसर अग्र दियं ॥
महा कालिय ध्यान धर्यौ जबहीं। अतताईय सिंधि करी तबही ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

वरवीर अराधन चंद कियं। वर बग्हन वेहल कारि दियं ॥
विकरे सब वीर चले रन में। मुष मंत्र उचारत ही पल में ॥
छं० ॥ ७६४ ॥

किलकारिय कालिका आवत की। सब नींद गई उडि सावंत की ॥
कथमास रु कग्ए गजे जबही। सब सांवत जोर बढ्यो तबही ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

विय षंड बिहंड गयंद करै। अल्ह नानन घावन सौं जकरै ॥
नंद वानिय केसव आय गये। रन मध्य कयमास उठाय लये ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

जितने अतिताईय भेल कियं। वर के सब कें सु चिह्न दियं ॥

लटक्यौ तन केसव भूमि पर्‌यौ । वलिराज चँदेल सौ आनि अर्‌यो॥
छ० ॥ ७६७ ॥

कैमास और जगनक का युद्ध और जगनक का मारा जाना ।

भर भाजत पील के दंत कढे । गहलौत सुगोयंद राज चढे ॥
गजराज पर्‌यौ धरनी थल मे । जगनक्क रुपै लायव वल्ल में ॥
छ० ॥ ७६८ ॥

भम्यौ नरनाह धरन्नि पर्‌यौ । तिह ऊपर दाहिम आनि अर्‌यौ ॥
कैमास लगाइय तेग तन । भमयौ कविराज समान रन ॥
छ० ॥ ७६९ ॥

कविराज सु सागि लई कर मे । कयमास सुडार दयौ घर मे ॥
परियौ धर दाहिम जैत सुनी । सनमुष्ष चलाइ कै तेग हनी ॥
छ० ॥ ७७० ॥

परियौ कविराज धर नि थल । जिन रुंड उठ्यौ दोय देप दल ॥
धरनी धर दीरत सीस विना । किरवान वहै रिस धारि मना ॥
छ० ॥ ७७१ ॥

वहु साँवत मूरछ पीड मही । रनकेर विजै कविराज लई ॥
विन सीस जगनक पील हन्यौ । भट सूर महा चहुवान गिन्यौ ॥
छ० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ जगनक पर्‌यौ सुसीस धर । उठ्यौ रुंड कर रोस ॥
पील हन्यौ देष्यौ न पति । कर किरवानह जोस ॥
छ० ॥ ७७३ ॥

जगनक का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ रुपि जगनक रन माहि । हथ्थ वाहै वर हथ्थिय ॥
कियौ कन्ह मूरछाइ । वियौ कयमास समथ्थिय ॥
हनियौ सैन हजार । रुंड नाच्यौ विन सीसह ॥
मानि जोर पृथिराज । पील मार्‌यौ अरि रीसह ॥
कीनौ कहाव रन साझ कढि । लोह लहरि खँड मार झरि ॥

जंपी सुचंद बानी बरनि । भाट ठाट कीनौ कहर ॥
छं० ॥ ७७४ ॥

अत्ताताई और आल्हा का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ आताताई आल्ह पर । हंकि चल्यौ बलवान ॥
वतैं वनाफर आय कें । झिल्ल्यौ बीच झिलान ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

रसावला ॥ वीर जागे वलं । पौल पागे हलं ॥
कीन ताछे कलं । होय काछे हलं ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

कीन जोरे कलं । सीस छेदे छलं ॥
व्याल रच्चं बलं । चीर नंचे नलं ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

डील विरचे बलं । हंक सारे हलं ॥
ताकि सीसं करं । विप्फुरो संभरं ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

धाक हीये धरं । नेह न्यारे धरं ॥
घाव करते घनं । जाय जुरते जनं ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

दाय देते दयं । तलप करते वयं ॥
धाव करते घटं । उल्लषीते लटं ॥
छं० ॥ ७८० ॥

चोट करते चटं । षग्ग षाटे षगं ॥
मार मारं रटं । सार सुद्धं सटं ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

सार झारं रटं । काट करते कटं ॥
झारि ओनं मथं । भान षंच्यौ रथं ॥
छं० ॥ ७८२ ॥

चाव बढ्ढे हथं । लेह लथ्थं बथं ॥
जंगरा रंगरं । भाम झंडे भरं ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

जग भारो मच्यौ । वीर नाद नच्यौ ॥
भोमि लोह मच्यौ । ईस नदी सच्यौ ॥

छ० ॥ ७८४ ॥

फाग पग्ग पिल्यौ । भूमि अग मिल्यौ ॥
मत्तवार जिह्न । धाय धूमे दुहू ॥

छ० ॥ ७८५ ॥

वीर वाहे अरै । धुक्कि धरनी गिरै ॥
भीम की चक्कही । पाव साचो वही ॥

छ० ॥ ७८६ ॥

देव देते दुहू । पाई मारे तिहू ॥
आल्ह सम्या गई । मार भारी भई ॥

छ० ॥ ७८७ ॥

आल्हा का मूर्छित होजाना ।

दूहा ॥ भए मूरछा आल्ह रन । आतातार्ई इद ॥
ता समये प्रिथीराज पुनि । वानी बुल्यौ चद ॥

छ० ॥ ७८८ ॥

कविचंद का कहना कि आल्हा की मूरछा छूटनेके पहले ब्रह्मा-जीत को मारलो ।

चौपाई ॥ आल्हा गिरे मुरछा पाई । दोज वीर गिरे धर आई ॥
ब्रह्मादिति कौ वेगे मारौ । नातर आल्ह उठौ रन हारौ ॥

छ० ॥ ७८९ ॥

दूहा ॥ ब्रह्माजित सौ जग करि । सभरि राव सम्हारि ॥
जब जगिहै आल्हन सुभट । तब हारोगे रारि ॥

छ० ॥ ७९० ॥

पृथ्वीराज का हाथी बढाकर कुंवर ब्रह्माजीत पर बाण चलाना ।

कवित्त ॥ इक्कि पील प्रथिराज । चल्यौ चहेल सनम्मुष ॥
इष्ट मत्र उच्चारि । वीरवर धारि जचरुष ॥

नरपति आप हँकारि । वान संधान पान किय ॥
षेंचि राज कोदंड । कान लगि वान पिंड दिय ॥
भेदंत हीय छेदंत तन । फुटि सनाह हय धरनि लिय ॥
सायक्क वाहि संभरि धनिय । पग्ग षोलि ढीलनि पिलिय ॥

छं० ॥ ७९१ ॥

दूहा ॥ तीर लग्यौ चंदेल उर । फूटि सनाह प्रवीन ॥
हय पाषर वेधे दुहौं । गगन मस्त वे कीन ॥

छं० ॥ ७९२ ॥

तीर लगतेही ब्रह्माजीत का पृथ्वीराज पर सांग चलाना ।

कवित्त ॥ लग्यौ तीर चंदेल । धर्‍यौ प्रिथिराज सनम्मुष ॥
कहि वायक्क हंकारि । वीर सहाय सहाव दुष ॥
आव आव प्रिथिराज । चाव पग्गनि सौं षेलव ॥
करौ जुद्ध चिसुद्ध । जुद्ध सामंतनि ठेलव ॥
किरवान कुँवर धरि कर पकर । प्रिथियराज पर चल्लियव ॥
हंकंत वीर षमसाय यह । सहरि लहरि भर मिल्लियव ॥

छं० ॥ ७९३ ॥

पृथ्वीराज और ब्रह्माजीत का युद्ध ब्रह्माजीत का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ चलायौ चँदेल मुख चाहुवानं । पिथा वान अगं उमंग उठानं ॥
लई सांगि गहियं हनी राजहीकं । भाई पार हीकं सुअंगं सुपीकं ॥

छं० ॥ ७९४ ॥

निदे कंगलं देह षूनी सलाकै । भनौ नट्ट वानट्ट षेले कलाकै ॥
धुमायौ बियं सांगि लगि चाहवानं । करी मूठराजं जर्‍यौ पूरवानं ॥

छं० ॥ ७९५ ॥

लग्यौ वान धायौ ब्रह्मादिति खूरौ । हन्यौ राज किरवान मथ्थं करूरौ ॥
लष्यौ चंद वरदाय नैनं सहूतैं । लग्यौ हीक चंदेल की पार खूतैं ॥

छं० ॥ ७९६ ॥

कियौ मंच सज्जीवनौ भट्ट राजं । तवै वीर चहुवान चल्यौ समाजं ॥
लियौ अरधचंद्रं चितौ वान हथ्थं । हन्यौ तीन चहुवानकै आय मथ्थं ॥

छ० ॥ ७९७ ॥

पर्‌यौ सीस धरनी कुमार नंवीनौ। लियौ ईस धाय वर मेल कीनौ॥
भगौ फौज पोली चहुवान जीतौ। इतौ मोरछा जग आल्हन चीतौ॥

छ० ॥ ७९८ ॥

आल्हा का अत्यत कुपित होकर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और मंत्र अस्त्र प्रयोग करना पर कवि चंद का उन्हें काट देना।

भयो चेत आल्हा इते अत्त ताई। लियौ पग्ग हथ्थ मिले लोह आई॥
हन्यौ अन्य वारे करे दोय अग। उमट्टै अहुट्टै नहो जोध जग॥

छ० ॥ ७९९ ॥

करी पोल आल्ह चल्यौ राजमुष्प। धरै स्वामि धर्म उर सूर सुष्प॥
चल्यौ सूर वानी प्रिथीराज रूप। हरीस्य घ कनकेस पाल्हन भूप॥

छ० ॥ ८०० ॥

वलीराम परिहार अचलेस भट्टी। निड्डरराय भौहा हमीर सुरट्टी॥
गम्भीर प्रसग सुजादौ जवान। तहा बग्गरी देव पेला सयान॥

छ० ॥ ८०१ ॥

तहा उन धावन्न डरौरे जवान। तहा हा हुलीराव मड्यौ उठान॥
तहा चालुके चेति सारग धायौ। इते सेलि सामंत आल्हन चलायौ॥

छ० ॥ ८०२ ॥

परे मूरछा जोग कथमास चंद। वलीराय पज्जौन वाह सु द्वंद॥
जहा निड्डर राय तोवर पहार। पर्‌यौ पील पीपा वर स्य घ भार॥

छ० ॥ ८०३ ॥

इते सूर सूते अचेत उठान। उतै सज्जम राय गोला कुटान॥
विय आय सामत आल्हन रुक्क। पचारैं विय न सवै उच्च कुक्क॥

छ० ॥ ८०४ ॥

लये सावंत आल्ह वान वर से। महावीर जोधान के प्रान ग्रसे॥
कियौ गोरिप ध्यान विघ्न पहारी। प्रयोग गिरे सरव सावत भारी॥

छ० ॥ ८०५ ॥

गुरुराज बरदाय आल्हन रायौ । लगाए सर और हस्ती फिरायौ ॥
बली राज विद्या अनेकं उपाई । गुरु चंद आगै न जानन पाई ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

भई इक्क बानी सुआनंद आई । अहो आल्ह गुरु भट्ट जीते न जाई ॥
छं० ॥ ८०७ ॥

चौपाई ॥ आल्ह मंच करिवान मँजूते । लगि लगि उर सामंत सब सूते ॥
भए मूरछा सब बरदाई । गोरिष की विद्या फैलाई ॥
छं० ॥ ८०८ ॥

चंद राम गुर आयस पूते । रुके आल्ह सम्हर मंह तेते ॥
दाव अनेक करि हरि थक्कै । अंतरीछ गोरिष है वक्कै ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

गोरखनाथ का संमुख आकर आल्हा को अपने साथ लिवा ले जाना ।

बोले गोरिष सुन रे भाई । बाम्हन भाट न जीते जाई ।
संभर छोडि जोग पथ लीजै । काया काजै अमर सुकीजै ॥
छं० ॥ ८१० ॥

फिरे आल्ह संभर तजि सूर । गोरिष नैं मत दीनै पूर ॥
देह अमर करि बन कौ धाये । छाड्यौ भोग जोग मन लाये ॥
छं० ॥ ८११ ॥

दूहा ॥ आल्ह फिरे तजि समर को । छाडि भोग को वास ॥
गोरिष संग चलिकै गये । धीर निरंजन आस ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

पृथ्वीराज के मूर्छित होने पर गिद्धिनी का उसकी आँख निकालने लगना और रंजम राय का उसे अपना मांस देकर राजा को बचाना ।

कवित्त ॥ लोह लागि चहुवान । परे मूरछा है धरतिय ॥
उड़ गीधनि वैठि कै । चुंच वाहैति विरत्तिय ॥

देखौ सजम राय । नृपति दृग दाढति पछिन ॥
अपनै तन कौ मास । काटि भषु दियौ ततछिन ॥
अपनै सु नयन देपयौ नृपति । अत समै धर्म मल्लियव ॥
आये विवान वैकुठ के । देह सहत धरि चल्लियव ॥
छ० ॥ ८१३ ॥

सजमराय का प्राणान्त ।

दूहा ॥ गीधनि कौ पलभषु दियौ । नृप कै नैन वचाय ॥
देह हँसत वैकुठ कौ । पहुच्यौ सजम राय ॥
छ० ॥ ८१४ ॥

चावंडराय का परिमाल को कालिंजर से पकड कर ले आना ॥

कवित्त ॥ चावंड राय चलाय । जाय कालीजर वैठिव ॥
दरवाजे करि व धनारि । पौरनि मध व धिव ॥
पौछ लागि दाहिमा । जाय चंदेल हकारिव ॥
आगे आये सूर । मारि कीने वट धारिव ॥
पकरियौ इच्छ ढिल्ली द्रुवनि । हय पैं डारि सु चल्लियौ ॥
तीसरै दिवस मध्यान दिन । चाहुवान सो मिल्लयौ ॥
छ० ॥ ८१५ ॥

चामंड का कालिंजर के किले को लूटकर वहा चौहान के नाम का निशान रोप देना ।

पद्धरी ॥ चावंड जीति परिमाल ल्याय । परिहार सत्थ सवही पिपाय ॥
भोपत्ति पकरि पग पटकि भूमि । लीनौ सुनेज झंडा सुझूमि ॥
छ० ॥ ८१६ ॥
लीनौ सुहत्थ चंदेल धाय । तीसरै दिवस रन मध्य आय ॥
दाहिमा लागि चहुवान पाय । दीनौ सु पकरि चंदेल आय ॥
छ० ॥ ८१७ ॥
हाथी सुतीस गाजत मद्द । घोरे हजार इकतीस सद्द ॥
पाच सौ जट रोकत दाम । पच्चास लाप लाये सुताम ॥
छ० ॥ ८१८ ॥

मानिक्क हेम पन्ना प्रवाल । हीरा अनेक अम्मोल लाज ॥
सत कोटि द्रव्य कीनौं सुमार । दाहिमा ल्याय सब जीति सार ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

चहुवान काज कीनी सलाम । सभ्भियौ आय चंदेल ठाम ॥
गुरराज डंड चामुंड आय । उचाय नृपति पाटे बँधाय ॥
छं० ॥ ८२० ॥

पृथ्वीराज का खेत झारवाकर धायल सामंतों को उठवाना ।

चहुवान हुकम कीनौ सुफेरि । ढुंढौ सम्मर सामंत हेरि ॥
कयमास कन्ह पज्जौन जैत । नरसिंघ वीर जामिनि समेत ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

तौंवर पहार पुंडीर चंद । धावर सुधीर वह परे द्वंद ॥
षेता षँगार हाड़ा हमीर । हाहुली राय धरि परिग वीर ॥
छं० ॥ ८२२ ॥

सब सुभट सूर रन पर अचेत । भयौ विषम जुद्ध रचि औन षेत ॥
वरदाय चंद गुरु राम देव । पढि मंत्र सजीवन सरब भेव ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

जग्गे सु सरब सामंत सूर । दल मलि असंषि झलहलत नूर ॥
करि कूंच नृपति दिल्ली दिसान । पज्जौन बोलि हज्जूर आनि ॥
छं० ॥ ८२४ ॥

तुम रहौ महौबे सुभट थान । धर सौंपि भार हय गय प्रमान ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को महोबे का थानापति नियत करके दिल्ली को आना ।

दूहा ॥ दियौ भार पज्जौन भुज । राषि महौवै थान ॥
डंड छंडि परिमाल कौ । कीयौ नृपति पयान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥

चाहुवान दिल्ली नगर । कीनौ नृपति प्रवेस ॥

घर घर मंगल छेल छव । आयो जीति नरेस ॥

छं० ॥ ८२७ ॥

पृथ्वीराज का संजम राय के पुत्र को आधी गद्दी का आसन और आधे राज का पट्टा देना ॥

संजम राय कुंवर कौ । बोलि इंद्र नरेस ।
छय गय मनि मानिक बहुसि । अप आसन अप देस ।

छं० ॥ ८२८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथिराज रासके महोबा का समयो संपूर्णम् ।